CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

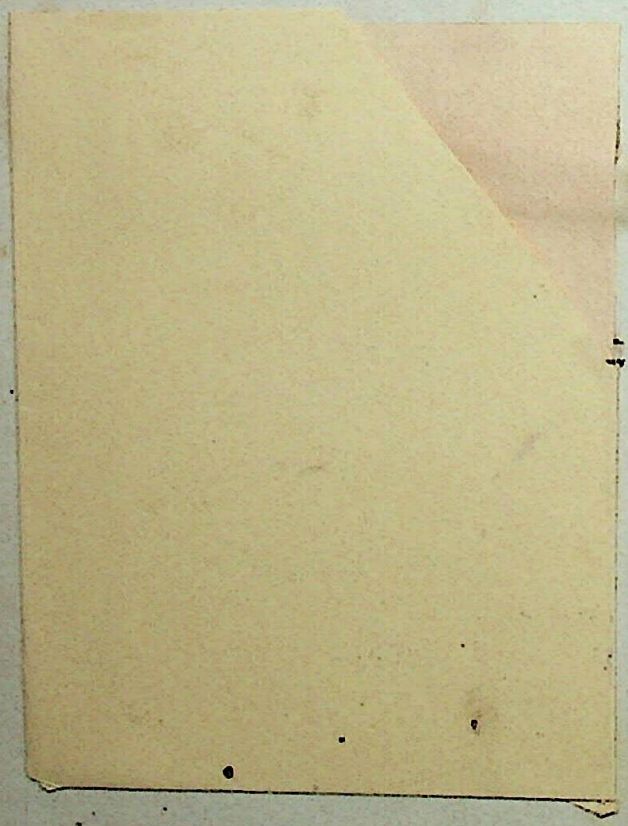

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

1368

015,1A2
152E4·1

02६0

कृपया यह ग्रन्थ नीचे निर्देशित तिथि के पूर्व अथवा उक्त तिथि तक वापस कर दें। विलम्ब से लौटाने पर प्रतिदिन दस पैसे विलम्ब शुल्क देना होगा।

मुमुक्षु भवन वेद वेदाङ्ग पुस्तकालय, वाराणसी।

मुमुक्षु भवन वेद वेदांग विद्यालय
ग्रन्थ...
आगत क्रमांक...90...
...क...

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

015,1 A2
152E4.1

मुमुक्षु भवन केन्द्रीय पुस्तकालय
आगत क्र. 0260
दिनांक 2615

P+I

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अ०	विषय	पृष्ठ
१४३	धृतराष्ट्र का पाण्डवों को वारणावत नगर में जाने की आज्ञा देना ...	२७२
१४४	दुर्योधन की आज्ञा से मन्त्री का वारणावत में लाखका घर बनवाना ...	२७३
१४५	पाण्डवों का वारणावत नगर को चलना, विदुरजीका उन्हें गुप्त भेद बताना ...	२७४
१४६	पाण्डवोंका वारणावत नगरमें पहुँचना और लाक्षागृहमें टिकना ...	२७६
१४७	विदुरजीका लाक्षागृह से बाहर निकलने को सुरंग खोदवाना ...	२७८
१४८	पाण्डवों का लाक्षागृह में आग लगाकर सुरंग की राह से चलदेना ...	२७९
१४९	पाण्डवों का नावपर चढ़कर गंगाजी के पार उतरना ...	२८०
१५०	राजा धृतराष्ट्र का पाण्डवों के जलजानेका हाल सुनकर उनका कर्मकरना और पाण्डवों का सघनवन में पहुँचना	२८०
१५१	पाण्डवों का भूख प्यास से व्याकुल होना और भीमसेनका पानी लेनेजाना ...	२८२
१५२	हिडंबाराक्षसी का भीमसेन पर कामासक्त होना	२८४
१५३	हिडंबदैत्य का भीमसेन से युद्ध होना	२८५
१५४	भीमसेन का हिडंबराक्षस को मारना और हिडंबाका उनके साथ चलना ...	२८७
१५५	भीमसेन से हिडंबाराक्षसी के घटोत्कच नामी पुत्र उत्पन्न होना ...	२८९
१५६	व्यासजी की कृपा से पाण्डवों का एकचक्रापुरी नगर में बसना ...	२९१
१५७	कुन्तीका भीमसेन से ब्राह्मण का दुःख दूरकरने को प्रतिज्ञा कराना ...	२९२
१५८	ब्राह्मण की स्त्री का ब्राह्मण को समझाकर दैत्य के पास जाने को आज्ञा मांगना और ब्राह्मणका स्त्री को हृदय से लगाकर रोना	२९४
१५९	ब्राह्मण की कन्या का मा बाप से राक्षस के पास अपने जाने को कहना ...	२९६
१६०	कुन्ती का ब्राह्मण से दुःख का कारण पूछना और ब्राह्मण का कहना ...	२९७
१६१	कुन्ती का ब्राह्मण के स्थान में भीमसेन को भेजने का वादा करना ...	२९८
१६२	युधिष्ठिर का कुन्ती के वादा को सुनकर दुःखी होना और कुन्तीका समझाना	२९९
१६३	भीमसेन का बकराक्षस के पास जाकर युद्ध करके उसे मारडालना ...	३००
१६४	बकदैत्य के मारनेका हाल सुनकर नगरवासियों का आनन्दित होना ...	३०१
१६५	पाण्डवों का अतिथि ब्राह्मण से द्रौपदी आदि की उत्पत्ति पूछना ...	३०२
१६६	ब्राह्मणका पाण्डवोंसे द्रोणकी उत्पत्ति, अस्त्रविद्या सीखने, द्रुपदसे विरोध होने और द्रुपदको जीतकर आधा राज्य लेलेनेकी कथा कहना	३०३
१६७	राजा द्रुपद का यज्ञ कराना और धृष्टद्युम्न और द्रौपदी का पैदा होना ...	३०४
१६८	उक्त कथाको सुनकर पाण्डवोंका पाञ्चालदेशको चलनेकी सलाह करना ...	३०७
१६९	व्यासजी का पाण्डवों से द्रौपदी के पूर्वजन्म का हाल कहना	३०७
१७०	पाण्डवों का पाञ्चालदेशको चलना और राहमें अर्जुनका अंगारपर्णनाम गन्धर्व से युद्ध और मित्रता करना	३०८
१७१	अर्जुन और गन्धर्व से संवर्ण और सूर्यकी पुत्री तपती की कथा कहना	३१२
१७२	राजा संवर्णको तपती का अपनी प्राप्ति के लिये उपाय बताना ...	३१३
१७३	वशिष्ठजी की कृपासे राजा संवर्ण का तपती से विवाह होना	३१४
१७४	गन्धर्वका अर्जुनसे वशिष्ठजीका संक्षेप वृत्तान्त और पुरोहित बनाने को कहना	३१६
१७५	वशिष्ठजी तथा विश्वामित्र का कामधेनु के लिये युद्धादि होना ...	३१७
१७६	विश्वामित्र का कल्माषपाद राजा से जो शाप से राक्षस था वशिष्ठजी के सौपुत्रों को मरवाना और वशिष्ठजीका अपने मरने का उपाय विचारना ...	३१९
१७७	वशिष्ठजी का अपनी पुत्रवधू को गर्भयुक्त जानकर मरने से निवृत्त होना, राजा कल्माषपाद को शाप से छुटाना और उसको एक पुत्र देना ...	३२२
१७८	वशिष्ठजी के पौत्र होना और वशिष्ठजी का उससे भार्गवों के नाश का हाल कहना	३२४

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अ०	विषय	पृष्ठ
१७६	भार्गवों के वंशमें एक पुत्रका उत्पन्न होना, उसका तपस्या करके सब लोकोंको नाश करनेकी इच्छा करना और पितरों का उसको समझाना ...	३२५
१८०	और्व्वका पितरों के समझाने पर लोकनाश से निवृत्त होना और वशिष्ठजी का पराशर को उपदेश करना	३२६
१८१	पराशरऋषिका सब राक्षसों को भस्म करनेके लिये यज्ञ करना और पुलस्त्य आदि ऋषियों का वहां आकर इस यज्ञको बन्द कराना	३२८
१८२	राजा कल्माषपाद की स्त्री का वशिष्ठजी के पास जाने का कारण ...	३२६
१८३	पाण्डवों का राह में धौम्यऋषि को अपना पुरोहित करना	३३०
१८४	पाण्डवोंका ब्राह्मणों के साथ द्रौपदी के स्वयंवर को चलना अंगीकार करना	३३०
१८५	पाण्डवों का द्रौपदी के स्वयंवर में जाना और धृष्टद्युम्नका प्रण सुनाना ...	३३१
१८६	धृष्टद्युम्नका द्रौपदी से लक्ष भेदनेवाले को बरने का उपदेश करना ...	३३३
१८७	सब राजाओं का क्रमपूर्वक उठकर लक्ष भेदने को जाना और किसी से धनुष न चढ़ने पर अर्जुन का लक्ष भेदने को उठना	३३४
१८८	अर्जुन का लक्ष भेदना और द्रौपदी सहित अपने डेरे को चलना ...	३३५
१८९	राजाओं का द्रुपद, अर्जुन और भीम से युद्धार्थ तत्पर होना ...	३३७
१९०	पाण्डवों का सब राजाओं को युद्ध में हराकर द्रौपदी सहित अपने स्थान पर आना	३३८
१९१	कुन्तीका पाण्डवोंके कहनेसे भिक्षा जानकर पांचों भाइयोंको मिलकर भोजन करनेकी आज्ञा देना, श्रीकृष्ण और बलदेवजी का पाण्डवों से मिलना ...	३४०
१९२	धृष्टद्युम्न का छिपकर पाण्डवों की शूरता की बातें सुनना	३४१
१९३	धृष्टद्युम्न का राजा द्रुपद से पाण्डवों का हाल कहना	३४२
१९४	राजा द्रुपदका पाण्डवों को परीक्षार्थ भोजन के लिये बुलाना ...	३४४
१९५	पाण्डवों का राजा द्रुपद से अपना परिचय देना और द्रौपदी का पांचों पाण्डवों के साथ विवाह करने को कहना	३४५
१९६	राजा द्रुपदका व्यासजी से द्रौपदी के विवाह का परामर्श करना ...	३४७
१९७	व्यासजी का पाण्डवों के पूर्वजन्म की कथा कहकर राजा द्रुपद को द्रौपदीका विवाह पांचों पाण्डवों के साथ करने का उपदेश करना ...	३४८
१९८	राजा द्रुपदका पांचों पाण्डवों से द्रौपदीका विवाह करना ...	३५१
१९९	श्रीकृष्णजीका पाण्डवों के पास बहुत से हाथी, घोड़े और धनादि भेजना ...	३५२
२००	द्रौपदी का विवाह पाण्डवों से हुआ जानकर दुर्योधन को बड़ी चिन्ता होना ...	३५२
२०१	राजा धृतराष्ट्रका दुर्योधन और कर्णसे पाण्डवों के निग्रहका मन्त्र पूछना ...	३५५
२०२	कर्णका पाण्डवों के निग्रह के लिये सलाह देना	३५६
२०३	धृतराष्ट्र का भीष्मजी से पाण्डवों के लिये सलाह करना	३५७
२०४	द्रोणाचार्य्य का राजा धृतराष्ट्र से पाण्डवों को आधा राज्य देने को कहना ...	३५८
२०५	विदुरजी का धृतराष्ट्र को पाण्डवों से समता करने को कहना ...	३५९
२०६	धृतराष्ट्र की आज्ञा से विदुरजी का पाण्डवों के लेने के लिये जाना ...	३६१
२०७	पाण्डवों का हस्तिनापुर में आना, आधा राज्य पा, इन्द्रप्रस्थ नगर बसाना ...	३६२
२०८	पाण्डवों के पास नारदजी का आना और उपदेश करना ...	३६४
२०९	सुन्द और उपसुन्द दैत्योंके तपस्या करने और वर पाने की कथा ...	३६५
२१०	सुन्द उपसुन्द दोनों दैत्योंके तीनों लोक विजय करने की कथा ...	३६७
२११	सुन्द उपसुन्द का वृत्तान्त सुनकर ब्रह्माजी की आज्ञा से विश्वकर्मा का तिलोत्तमा को उत्पन्न करना	३६८

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अ०	विषय	पृष्ठ
२१२	तिलोत्तमा को देखकर सुन्द उपसुन्द का आपस में कटकर मर जाना और पाण्डवों का द्रौपदी के पास रहनेका नियम करना	३६६
२१३	अर्जुन का अस्त्र लेने को महल के भीतर जाना और ब्राह्मण का काम करके अपनी प्रतिज्ञानुसार वनवास को चलाजाना	३७१
२१४	अर्जुन का हरद्वार में उलूपी नाम नागकन्या से संगम होना ...	३७२
२१५	अर्जुन का मणिपूर नगर के राजाकी कन्या से विवाह करना ...	३७४
२१६	अर्जुन का सौभद्र तीर्थ में स्नान करते में एक ग्राहका अर्जुन का पैर पकड़ना और अर्जुन के छूने से उस ग्राहका स्त्री होना	३७५
२१७	अर्जुन का पांच अप्सराओं को शापसे छुटाकर गोकर्ण की यात्रा करना ...	३७६
२१८	अर्जुनका गोकर्ण पर श्रीकृष्णजीसे मिलकर द्वारकापुरी को जाना ...	३७७
२१९	सुभद्रा को देख अर्जुन का कामासक्त होना एवं हरलेजाने का विचार करना ...	३७८
२२०	अर्जुन को सुभद्रा के हरने और बलदेवजी के क्रोध करने की कथा ...	३८०
२२१	श्रीकृष्णजी के कहने से अर्जुनका विवाह सुभद्रा से होना और सुभद्रा के एक अभिमन्यु पुत्र और द्रौपदी के पांच पुत्र उत्पन्न होना	३८१
२२२	पाण्डवों का धर्म्म से राज्य करना और एक तेजस्वी ब्राह्मण से मिलना ...	३८५
२२३	अग्नि का अर्जुन और श्रीकृष्ण से खाण्डव वन भस्म करने में अपनी रक्षा चाहनी और अग्नि के अजीर्ण की कथा	३८६
२२४	ब्रह्माजीकी आज्ञासे अर्जुन और श्रीकृष्णजीका अग्निकी रक्षा अंगीकार करना...	३८९
२२५	अपनी रक्षा के लिये अग्निदेव का अर्जुन और श्रीकृष्णजीको शस्त्र देना ...	३९०
२२६	अग्निका खाण्डववन को जलाना और इन्द्रका जल वर्षाना	३९२
२२७	अर्जुन का बाणों से वर्षाको रोकना और इन्द्रादिक से युद्ध करना ...	३९३
२२८	अर्जुन का इन्द्रादिकों को युद्ध में जीतकर अग्निकी रक्षा करना और १५ दिन तक जलते हुये वन में ६ जीवोंका जीता बचना	३९५
२२९	वैशम्पायन का राजा जनमेजय से चारों शार्ङ्गिक पक्षियों के जलने से बचने का कारण कहना	३९७
२३०	जरिताका अपने पुत्रोंको अग्नि से बचाने का उपाय न देखकर विलाप करना और पुत्रों का उसको समझाना	३९८
२३१	पुत्रों के समझाने पर जरिताका उनको छोड़कर अग्नि के भयसे कहीं अन्यत्र चलाजाना	३९९
२३२	मन्दपाल के चारों शार्ङ्गिकपुत्रोंका अग्नि की स्तुति करना और अग्निदेवका प्रसन्न होकर उनको न जलाना और उनको वरदान देना ...	४००
२३३	अग्नि के बढ़नेपर मन्दपालको पुत्रों का शोच करना और लपिता को छोड़कर पुत्रों को देखनेजाना	४०२
२३४	मंदपालका अपनी स्त्री और पुत्रोंसहित किसी और स्थान को चला जाना व इन्द्रका श्रीकृष्ण और अर्जुनका वरदान देना और उन दोनों का अग्नि से बिदा होकर मयदानव सहित नदीपर चले आना	४०४

इति आदिपर्वसूचीपत्रम् ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

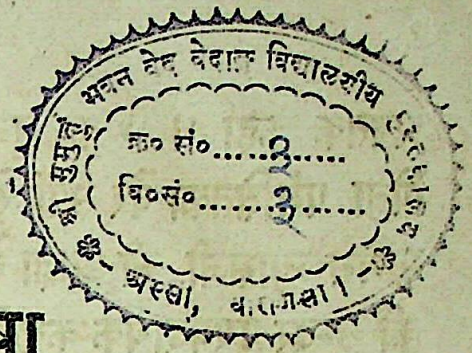

महाभारत भाषा

आदिपर्व।

मंगलाचरण।

चौ० बन्दौं मन वच गणपतिचरणा। मंगलमूल अमंगल हरणा॥
जासु प्रभाव विदित जगमाहीं। ध्यावत विघ्नवृन्द मिटिजाहीं॥
श्रीवाणी के पद जलजाता। मोहहरण बुधि वर के दाता॥
बन्दौं बार बार मन लाई। जेहि ध्यावत अज्ञान नशाई॥
बिनवहुँ गुरुहि जोरि युगपाणी। विनययुक्तकरि निजमनवाणी॥
जो पद पंकज ध्यावै कोई। उत्तीरण भव सागर होई॥
वेदव्यास पुराण मुनीशा। बन्दौं विष्णुरूप जगदीशा॥
कलिमलहरण मोक्षफलदाता। जिन भाष्यो भारत भवत्राता॥

दोहा। अलख अगोचर सर्वमय आदि ब्रह्म जगदीश।
नन्दनँदन पद पंकजन बन्दौं धरि महि शीश॥
वैशम्पायन के चरण नौमि सविनय ललाम।
भाषा में भारत करहुँ मुक्ति ज्ञान गुण धाम॥

पहिला अध्याय।

जगत्की उत्पत्ति और महाभारत के प्रकट होनेकी कथा का वर्णन॥

द्वापरयुग के अन्त में एक समय लोमहर्षण सूतके बेटे उग्रश्रवाजी तीर्थयात्रा करते हुये नैमिषारण्य क्षेत्र में जहां शौनकादिक बड़े २ तपस्वी ऋषि बारह वर्ष में समाप्त होनेवाला यज्ञ कर रहे थे पहुँचे आपसमें दण्डवत् प्रणाम होकर कुशल पूछ ऋषियोंने सूतपुत्र को अर्घ्यपाद्यादिसे पूजन कर बड़े आदरपूर्वक आसन पर बैठाया और उनके स्वस्थचित्त होने पर उन तपस्वियोंने भारत सुनने की इच्छासे विनयपूर्वक पूछा ६ कि आप कहां से आये और

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अबतक कहां थे ७ यह सुनकर सूतपुत्र बोले कि राजर्षि जनमेजयने अपने पिता परीक्षितका वैर सर्पों से लेनेके लिये सर्पयज्ञ किया था वहां वैशम्पायन मुनिने व्यासजी की आज्ञा से राजा जनमेजय को भारतसम्बन्धी विविधभांति की सुन्दर पुण्यदायक कथायें सुनाई थीं उन्हीं अमृतरूपी कथाओं के सुनने को हमने भी वहां कुछ काल वास किया ११ उपरान्त तीर्थयात्रा करके समन्त-पंचकनाम पुण्यतीर्थ जहां ब्राह्मणआदि उत्तम पुरुष रहते हैं और पहिले कौरव और पाण्डवों का युद्ध हुआ था १३ वहां होते हुये आपलोगों के दर्शनों को यहां चले आये हैं सो आपका दर्शन पाकर हम बहुत प्रसन्न हुये आप सबकी बड़ी आयु है हमारी समझ से आप सब ब्रह्मरूप हैं १४ आपके चित्त शुद्ध और तेज सूर्य के समान हैं और आप अभिषेकित होकर अग्नि में हवन कररहे हैं १५ अब पुराणोंकी संहिता अथवा धर्मार्थवाली पुण्यकथा अथवा राजऋषि और अच्छे राजाओंकी कथा जो कुछ आप कहैं सो हम आपसे वर्णन करें १६ यह सुन शौनक ऋषि प्रसन्न होकर बोले कि जो व्यासजी की बनाई हुई भारत-कथा चारों वेदोंके समान पुण्यकी देनेवाली और पापों की हरनेवाली है जिसमें वेद और पुराणोंका आशय भरा हुआ है और जिसे वैशम्पायन मुनिने राजा जनमेजयको सुनाया है वही कथा कृपा करके सुनाइये २१ यह सुनकर सूतजी अपने हृदयमें उस आदिपुरुषको जो ईशान अर्थात् मायासबल ब्रह्म प्रसिद्ध है जिसे यज्ञमें होता लोग बुलाते हैं और साक्षात् वेद मूर्तिमान् स्तुति करते हैं और जो सत्य है एक है अक्षर है ब्रह्म है व्यक्त है अव्यक्त है सनातन है सत् है सदसत् है विश्वरूप है परावर है अर्थात् परमूत्रात्मा और अवरविराटआदि घटपर्यंतका रचनेवाला है पुराणपुरुष है परम अव्यय अर्थात् अत्यंत नाश करके रहित है मंगलका देनेवाला है मंगलरूप है यज्ञरूप है वरेण्य अर्थात् मोक्षआदि चाहने-वालों के आदर करने योग्य है पापरहित है स्वाभाविक शुद्ध है हृषीकेश अर्थात् इन्द्रियोंका ईश है सब जड़ चैतन्यका गुरु है नमस्कार करके बोले कि मैं व्यासजी के पुण्य और पवित्र इतिहासको कहता हूं २५ इस इतिहास को कवियों ने पहिलेभी कहाथा अबभी कहते हैं और आगेभी कहैंगे २६ इसको तीनों लोक में सब ब्राह्मण मानते हैं २७ और अनेक शब्द और छन्द और अलङ्कारयुक्त पण्डितोंका प्यारा है २८ पहिले जगत्की उत्पत्ति आप सुनिये आदिमें केवल अँधेरा था उसमें एक जगत्का बीज अविनाशी ज्योतिमय बड़ा अंडा उत्पन्न

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हुआ वह अंडा चिकना और सब ओर से एकसा था और ऐसा अद्भुत बना था कि न कहनेमें आसक्ता है और न चिंतवन किया जासक्ता है और उसमें ऐसी चमक थी कि दृष्टि नहीं ठहरती थी सब प्रकारके जीवोंके उत्पन्न होनेका स्थान वही है भले और बुरे दोनों तरहके जीव उसमें स्थित थे और ऐसा सुनने में आया है कि जिस ब्रह्मको संसारमें सनातन और ज्योतिस्वरूप कहते हैं वह ब्रह्म उस अण्डेको रचकर उसमें प्रवेश करगया ३१ उस अण्डे से रजोगुणप्रधान जगत् के रचनेवाले ब्रह्मा और सतोगुणप्रधान जगत्के पालन करनेवाले विष्णु और तमोगुणप्रधान जगत् के नाश करनेवाले शिव उत्पन्न हुये और मनु प्राचेतस दक्ष दक्षसुत २१ प्रजापति अर्थात् १४ मनु और मरीच्यादि ७ ऋषि यह सब सृष्टिकी उत्पन्न करनेवाली ब्रह्माकी विभूतियां ३३ और आदित्य विश्वेदेवा अश्विनीकुमार और अष्टवसु यह सब जगत्के पालनकर्त्ता नाना-अवतार धारण करनेवाले विष्णुकी विभूतियां ३४ और यक्ष साध्य पितर पिशाच और गुह्यक ये सब जगत्के नाशकर्त्ता शङ्करकी विभूतियां उत्पन्न हुईं ३५ इसके अनन्तर ब्रह्मर्षि और राजर्षि और पृथ्वी जल तेज वायु आकाश दिशा ३६ संवत्सर छओंऋतु महीने शुक्लपक्ष कृष्णपक्ष राति और दिन यह सब उसी अण्डेसे उत्पन्न हुये और जो कुछ वस्तु देखने सुनने में आती हैं सब उसी से उत्पन्न हुईं ३७ इस संसारमें जो कुछ चल अचल वस्तु हैं सब युगके अन्त में उसी अण्डे में ऐसे लीन होजाती हैं जैसे कछुवा जलमें ३८।३९ इस तरह से भूतों का संहार करनेवाला यह अविनाशी संसारचक्र बेर बेर रचाजाकर और नाश होकर सदा घूमा करता है ४० फिर उसी अण्डेसे ३३ देवता उत्पन्न हुये सो ३३ के ३३०० हुये और ३३०० के ३३००० हुये जो आदि में ३३ मुख्य देवता हुये वह यह हैं ८ वसु ११ रुद्र १२ आदित्य १ इन्द्र १ प्रजापति ४१ दिवःपुत्र बृहद्भानु रवि चक्षु ऋचीक भानु विभावसु अर्क आशावह सविता आत्मा और सत्य यह १२ सूर्य उत्पन्न हुये ४२ इन सब में सत्य जो सब से छोटे थे सबसे श्रेष्ठ हुये उनके देवभ्राट पुत्र हुआ देवभ्राट के सुभ्राटनामी पुत्र हुआ ४३ सुभ्राटके तीन पुत्र बड़े प्रवीण हुये एकका नाम दशज्योति दूसरे का नाम शतज्योति और तीसरेका नाम सहस्रज्योति था ४४ दशज्योति के दशसहस्र शतज्योति के एकलक्ष ४५ और सहस्रज्योति के दशलक्ष पुत्र उत्पन्न हुये उन्हीं दशलाख पुत्रोंके वंश से यह कौरववंश यदुवंश ४६ भरतवंश

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ययातिवंश इक्ष्वाकुवंश सर्वराजर्षियों के वंश ४७ सब भूतों के रहने के स्थान तीनप्रकारके रहस्य कर्म उपासना और ज्ञान आदि काण्ड ४८ धर्म अर्थ और कामके देनेवाले अनेकशास्त्र अर्थात् स्मृति नीति मीमांसा कोकशास्त्र लोकयात्रा-विधान अर्थात् वेदशास्त्र जिनसे लोकोंको जानेका मार्ग विदित हो जैसे आयुर्वेद धनुर्वेद और गांधर्ववेद यह सब उन्हीं से उत्पन्न हुये इन बातोंको वेदव्यासजीने अपनी योगदृष्टि से जानाथा ४९ अब इस ग्रंथमें जो जो इतिहास और श्रुति वर्णन किये हैं उन सबको क्रमसे संक्षेपमात्र इस प्रथम अध्याय में वर्णन करते हैं ५० क्योंकि पण्डित लोग उसी ग्रंथको प्रिय मानते हैं जिसमें प्रथम संक्षेप और फिर विस्तारसहित कथा का वर्णन हो ५१ इस महाभारत के प्रारंभका कोई तो आस्तीकवंशकी कथा से कोई वसुचरित्र से और कोई २ और २ जगहसे भी कहते हैं ५२ सो जब इस उत्तम महाभारतको व्यासजी अपने तप और ब्रह्मचर्यके प्रभाव से बना चुके तब उनके चित्तमें यह चिंताहुई कि विना लिखे हम अपने शिष्यों को इसे क्योंकर पढ़ावेंगे सो व्यासजी इसी विचारमेंथे कि ब्रह्माजी व्यासजी को प्रसन्न करने और संसार का हित करनेके लिये उनके चित्तकी चिंताको जानकर वहां आये ५३। ५७ उनको देखकर व्यासजी ने आश्चर्य करके सब ऋषियों सहित ब्रह्माजीको प्रणाम किया और सुन्दर आसन पर उनको बड़े आदर से बैठाया ५८ फिर आपभी ब्रह्माजी की आज्ञा पाकर उनके पास शिष्यों सहित बैठगये ५९ और विनयपूर्वक यह कहा कि हे ब्रह्माजी! मैंने यह भारत इति-हासरूप काव्य बनाया है इसमें वेदों के सब अंग रहस्य उपनिषद् वेदोंकी क्रिया अनेक इतिहास पुराणोंका विचार भूत भविष्यत् वर्तमान तीनों कालों के लक्षण बुढ़ापा मृत्यु भय और रोग इनके होने न होने का निश्चय और अनेकप्रकार के धर्म और आश्रमों के लक्षण सब पुराण चारों वर्णों का विधान तप ब्रह्मचर्य की क्रिया और सूर्य चन्द्रमा ग्रह नक्षत्र और तारा आदि का युगोंके अनुसार प्रमाण और ऋग्वेद यजुर्वेद सामवेद वेदांतविद्या न्याय वैद्यक दान और पशु जीवोंके अन्तर्यामीके माहात्म्यका वर्णन देवता और मनुष्योंका कारण सहित जन्म सब तीर्थ पवित्र देश नदी पर्वत वन और सागर इनका व्याख्यान सहित कीर्तन अनेक पुरोंके युद्धकी निपुणता धनुर्वेद की रीतिसे युद्धका करना लोकयात्रा और जो कुछ सर्वगत वस्तु हैं सबका वर्णन कियाहै परन्तु इसके लिखनेके लिये कोई लेखक योग्य नहीं

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मिलता है ६०।७० यह सुनकर ब्रह्माजी बोले कि हम तुमको इस रहस्य और ज्ञानके जानने से तपस्वी मुनियों में सब से बड़ा समझते हैं ७१ और तुम्हारे जन्मही से हम तुम्हारी वाणीको वेदके कहनेवाली जानते हैं परंतु तुम ने इस वेदरूपी महाभारतको अपने मुखसे काव्य कहा इससे यह काव्यही कहावैगा ७२ परंतु यह काव्य ऐसा होगा कि कविलोग भी इसकी प्रशंसा उसी प्रकार से न करसकेंगे जैसे कि गृहस्थाश्रम के धर्मको अन्य तीन आश्रमवाले मनुष्य नहीं कहसक्के हैं ७३ अब तुम इसके लिखनेके लिये गणेशजीका ध्यान करो यह कहकर ब्रह्माजी तो अपने लोकको चलेगये ७४ व्यासजीने गणेशजीका स्मरण किया सो गणेशजी अपने भक्तोंका मनोरथ पूर्ण करनेवाले ७५ व्यासजीके ध्यान करतेही वहां आन पहुँचे व्यासजीने उनको बैठाकर पूजा की और कहा ७६ कि महाराज मैंने भारतकाव्य रचकर मनमें कल्पना कर रक्खा है आप संसारके उपकारके लिये लिख दीजिये मैं बोलता जाऊंगा ७७ यह सुनकर गणेशजीने कहा कि जो तुम बराबर बोलते जावो और हमारी कलम लिखने में रुकने न पावे तो हम लिखसक्के हैं ७८ व्यासजी बोले कि बहुत अच्छा परंतु आपभी विना अर्थ समझे न लिखना गणेशजीने कहा बहुत अच्छा इस तरहपर दोनों आपस में सम्मत करके व्यासजी जल्द बोलने और गणेशजी जल्द लिखने लगे ७९ इस महाभारत में व्यासजीने ८८०० श्लोक ऐसे कूट और कठिन जहां तहां लिखवाये कि उनके बारे में व्यासजीने आप यह कहाहै कि इनका अर्थ यातो मैं जानताहूं या शुकदेवजी जानते हैं संजयभी न मालूम जानताहै या नहीं सो ये श्लोक ऐसे कठिनहैं कि उनके अर्थकी गूढ़ता और व्यंगवाक्योंके मिलाप अबतक नहीं जानपड़ते हैं और गणेशजी यद्यपि सर्वज्ञ थे परंतु उनकोभी उनके अर्थों में क्षणभर विचार करना पड़ताथा और जब तक गणेशजी विचार करते तबतक व्यासजी अन्य बहुतसे श्लोक बनाकर लिखा देते इसप्रकारसे यह महाभारत लिखागया ८०।८३ अज्ञानरूपी अँधेरे से अंधे भये संसारको यह भारत ज्ञानरूपी नेत्रोंकी खोलनेवाली सलाई है ८४ इतनी कथा सुनाकर सूतपुत्र बोले कि हे ऋषियो! यह भारत अर्थ, धर्म और मोक्ष चाहनेवालों के अन्धकारको दूर करने में सूर्यरूप है ८५ इसीसे पुराणरूपी पूर्ण चन्द्रमा और कौरवों की मनुष्यरूपी बुद्धि का प्रकाश हुआ ८६ और इसके इतिहासरूपी दीपक से मोहरूपी अँधेरे से अंधे हुये सम्पूर्ण लोकरूपी गृहमें

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यथावत् उजेला होगया ८७ दूसरा अध्याय इस महाभारतरूपी वृक्ष का बीज है पौलोम और आस्तीक की कथा इसकी जड़है और सृष्टि के उपजने की जो कथा हैं वह इस वृक्षके बड़े २ गुद्दे हैं और सभा और वनपर्व इस में पक्षियों के रहने के घोसले हैं ८८ और १८ पर्वोंमें जो छोटे २ पर्व हैं वे इस वृक्ष की अरणीकाष्ठके रूप हैं (अरणीकाष्ठ वह है जिसमें अग्नि मथ कर तपस्वी अग्निहोत्र करते हैं) विराट और उद्योगपर्व इस वृक्षकी सार मज्जा है भीष्मपर्व इसकी शाखा है द्रोणपर्व इसका पत्ता है ८९ कर्णपर्व इस वृक्षके सफेद फूल हैं शल्यपर्व इन फूलों की सुगन्धि है स्त्रीपर्व इस वृक्षकी छायाहै शांतिपर्व इसका फल है ९० अश्वमेध पर्व इस फलका अमृतके समान रसहै आश्रमपर्व इस वृक्षके नीचे बैठनेका स्थान है मौशलपर्व में जो संक्षेप श्रुतियोंका निरूपण किया है वह इस भारतरूपी वृक्षकी बड़ी बड़ी शाखा हैं और इस महाभारतरूपी वृक्ष की उत्तम कथा के सुननेवाले महात्मा लोग इस वृक्षके फलके खानेवाले पक्षी हैं ९१ यह महाभारत वृक्ष सब कवियों का उपजीवन और मनुष्यों को मेघों के समान फलका देनेवाला होगा और अक्षय बना रहैगा ९२ इतनी कथा सुनाकर सूतजी बोले कि इस भारतरूपी वृक्षके फूल और फलों का उदय मैं आगे वर्णन करूंगा इसके अति स्वादिष्ठ और पवित्र रसवाले फलों को देवताभी नहीं तोड़सकते ९३ हे ऋषियो! पहिले श्रीव्यासजीने अपनी सत्यवती माता और भीष्मपितामह के कहने से विचित्रवीर्य और चित्रांगदकी स्त्रियों के धृतराष्ट्र पांडु और विदुर यह तीन पुत्र कुरुवंशके चलाने वाले उत्पन्न किये और आप तपस्याको चले गये ९४। ९५ और जब ये तीनों अपने पुत्र पौत्रोंसहित अनेक सुख भोगकर परमगति को प्राप्त हुये तब श्रीव्यासजीने इस महाभारत को संसार में प्रकट किया ९६ और राजा जनमेजय के यज्ञमें किसी विघ्नके मिटाने के लिये अपने शिष्य वैशंपायन से हजारों ब्राह्मणों के बीचमें यह पवित्र महाभारत सब को सुनवाया ९७। ९८ सो इस महाभारत में व्यासजीने कुरुवंशका समस्त वृत्तांत गांधारी की धर्मशीलता विदुरकी बुद्धि कुन्ती का धैर्य ९९ वासुदेव का माहात्म्य पांडवों की सत्यता और धृतराष्ट्र के पुत्रों की दुष्टता वर्णन की है १०० व्यासजीने प्रथम इस भारतसंहिताको २४००० श्लोकों में बनाया था अर्थात् इसमें जो जो विशेष कथा आनपड़ती हैं वह

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

न थीं १०१ और फिर उसी को १५० श्लोकों में संक्षेप करके यह पहिला अनुक्रमणिकाध्याय बनाया १०२ उस २४००० संहिता को व्यासजीने पहिले अपने शुकनाम बेटेको पढ़ाया फिर और २ शिष्यों को भी पढ़ाया १०३ इसके पीछे व्यासजीने इस महाभारत संहिता को साठ लाख ६०००००० श्लोकों में कहा उसमें से पन्द्रह लाख श्लोक देवल मुनि ने पितृलोकमें सुनाये १०४ तीस लाख श्लोक नारदजीने देवताओं को सुनाये चौदह लाख श्लोक शुक्राचार्यने यक्ष गन्धर्व और राक्षसों को सुनाये और एक लाख श्लोक वैशंपायन मुनि ने मनुष्योंको सुनाये वही एकलाख महाभारत हम तुमसे कहते हैं १०५। १०७ इस महाभारतके युद्ध में अधर्मरूपी वृक्षकी जड़ धृतराष्ट्र है जिसकी मति से नाश हुआ और दुर्योधन जो क्रोध द्वेष ईर्षा और निन्दासे भराहुआ था वृक्षकी पींड़ है और कर्ण शकुनि और शल्य वृक्ष की शाखाहैं और दुश्शासनादिक वृक्षके फल फूलहैं और धृतराष्ट्रके साथी जो और बहुतसे राजाहैं सो वृक्षपर वास करनेवाले पक्षी हैं और धर्मरूपी वृक्ष की जड़ श्रीकृष्ण हैं युधिष्ठिर वृक्षकी पींड़ हैं अर्जुन गुद्देहैं भीम शाखा हैं नकुल और सहदेव उस वृक्षके फल फूलहैं १०८। १०९ इतनी कथा सुनाकर सूतजी बोले कि हे ऋषियो! कौरव और पांडवोंके युद्धका संक्षेप वृत्तान्त इस प्रकारसे है कि राजा पांडुने अपनी बुद्धिबलसे बहुतसे देश जीते एक समय राजा पांडु अपनी दोनों स्त्री माद्री और कुंतीसमेत मेध्यारण्य वन में अहेर खेलने गये वहां राजाने एक मृगरूप मुनिको अपनी स्त्रीसे भोग करते समय विना जाने मारा मरते समय मृगरूप मुनिने राजाको शाप दिया कि जब तूभी अपनी स्त्रीसे भोग करैगा तब मरजायगा राजा पाण्डु उस शापसे बहुत डरकर अपने डेरेको आये और किसी समय अपनी स्त्रियोंसे भोग करके स्वर्गवासी हुये और उसी वनमें राजा पांडु के जीतेजी धर्मोपनिषद् विधि से राजा पांडु के पांच पुत्र उत्पन्न हुये अर्थात् धर्मराज, वायु और इन्द्रके वीर्य से कुन्तीके गर्भ में युधिष्ठिर, भीम और अर्जुन तथा अश्विनीकुमारके वीर्यसे नकुल और सहदेव माद्रीके गर्भ से उत्पन्न हुये और उनके जातकर्मआदि संस्कारभी वहीं हुये ११०। ११२ कुछ दिनों पीछे माद्री भी मृत्यु पागई और राजा पांडु के पांचों पुत्र उस वनमें मुनिलोगोंकी रक्षामें रहे जब बड़े हुये तब ऋषिलोग कुंतीसहित पांचों पांडवोंको राजा धृतराष्ट्रके पास लेगये और उनसे कहा ये जटिल और ब्रह्मचारी बालक

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

राजा पाण्डुके पुत्र हैं इनको अपने लड़कोंकी समान अपनी रक्षा में रक्खो ऐसा कहिके मुनिलोग चलेगये ११३। ११५ और उन पांचों पांडुपुत्रोंको देख कर कौरवलोग और पुरवासी आनन्दपूर्वक कहने लगे ११६ कि ये पांडुके लड़के नहीं हैं ये तो बड़े तेजधारी मालूम होते हैं राजा पांडु ऐसा कहां था कोइ बोले यह पुत्र तो राजा पांडुकेही हैं परन्तु इनकी माताओं के पातिव्रतधर्म से इनमें तेज अधिकहै बहुत से कुतर्की यह भी बोले कि राजापांडु को मरे बहुत दिन हुये ये थोड़ी २ अवस्थाके पुत्र किसने उत्पन्न किये ये पांडुके पुत्र नहीं हैं ११७ और बहुत से लोग उनसे यह कहनेलगे कि आपका आना अच्छा हुआ क्योंकि हमने अपने स्वामी राजा पांडु की संतान अपनी आंखों से देखी और पांचों पांडवभी उन लोगों से कहने लगे कि हमभी धन्य हैं जो तुम लोगोंके पास आये ११८ इसके पीछे चारों ओर से शब्द होने लगा और दिक्पालादि देवताओंने जय शब्द कहकर कहा कि ये पुत्र राजा पांडुके ही हैं तुम संदेह मत करो ११९ और आकाशसे फूलोंकी वर्षा हुई और दुन्दुभी आदि बजने लगीं जब पांडवों के जानेके समय यह बातें हुई और आकाशवाणी हुई तब सबके मनका संदेह दूर होगया और सबने प्रसन्न होकर आनन्दपूर्वक बड़ा शब्द किया १२०। १२१ और वे पांचों पांडुपुत्र उस हस्तिनापुर में संपूर्ण वेद और शास्त्र पढ़कर निर्भय रहने लगे १२२ और युधिष्ठिरकी पवित्रता भीमसेनका धैर्य अर्जुनका पराक्रम नकुल और सहदेवकी दीनता १२३ और कुन्तीकी श्वशुर सासुआदि बड़ों की सेवा देखकर सब पुरके लोग प्रसन्न हुये १२४ इसके उपरांत जबसे अर्जुनने राजाओं के बीचमें मछलीको बेधकर द्रौपदीको जीता १२५ तबसे अर्जुन सब धनुर्धारियोंमें पूज्यहुये और उसकी तरफ़ शत्रु ऐसे नहीं देख सकता था जैसे सूर्यकी ओर मनुष्य नहीं देख सकताहै १२६ इसके पीछे अर्जुनने सब राजाओं को जीतकर युधिष्ठिरको राजसूय यज्ञ कराया १२७ जिसमें अनन्त अन्न और अनन्त दक्षिणा दीगई १२८ इस यज्ञको युधिष्ठिरने जरासंध और शिशुपाल जो बड़े बलके घमंडमें थे श्रीकृष्णकी नीति और अर्जुन और भीमसेनके बलसे मरवा कर कराया था १२९ और जिन २ राजाओंको पांडवों ने जीता था उनके यहां से युधिष्ठिरके अर्थ दुर्योधनके पास अच्छी अच्छी मणि सुवर्ण गो घोड़े हाथी रंगबिरंगे उत्तम वस्त्र और अनेक प्रकार के कपड़ों के घर जैसे डेरे तंबू इत्यादि और अच्छे २ मृगचर्म जो राजोंके बिछाने

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

योग्य होते हैं आये १३०। १३१ इस प्रकारसे युधिष्ठिरकी बढ़ी हुई प्रतिष्ठा और ऐश्वर्य को देखकर दुर्योधन अति ईर्षा करनेलगा १३२ और मय दानवकी बनाई हुई सभा जिसमें यज्ञ हुआ था देखकर दुर्योधनके बड़ा संताप उत्पन्न हुआ १३३ और उसी यज्ञ स्थानमें दुर्योधनको रपटकर गिरते हुये देखकर धोखेसे भीमसेनने उसकी हँसी ऐसी की जैसे कोई गवांरकी हँसी करै १३४ उससे दुर्योधनको बड़ा क्रोध हुआ और वह उस क्रोध और डाहसे यद्यपि नानाभोग भोगता था और नानारत्न उसके खजाने में थे परन्तु दिन दिन दुबला और पीला पड़ने लगा राजा धृतराष्ट्र अपने पुत्र का कर्णआदिसे यह हाल सुनकर उसको राजी करने के लिये उसके कहने के अनुसार छलरूप जुआ खेलनेकी सलाह में अपना सम्मत देताभया इस बातको सुनकर श्रीकृष्णजी को बड़ा कोप हुआ १३५।१३६ परन्तु उन्होंने भी जुआआदि उपाधियों को शान्त करने के लिये कोई उपाय अपनी मायाकी प्रेरणा से समझकर नहीं किया १३७ इसके पीछे भीष्मपितामह कृपाचार्य और द्रोणाचार्य का कहना न मानकर परस्पर युद्ध में सब क्षत्री कुलों का नाश होगया १३८ और अंतमें पांडवोंकी विजय हुई जब यह अप्रिय हाल संजयसे धृतराष्ट्र ने सुना तब धृतराष्ट्र दुर्योधन कर्ण और शकुनी की सलाह को समझकर बड़ी देरतक ध्यान करके संजय से बोला कि हे संजय! तुमको मेरी बुद्धिकी निन्दा न करनी चाहिये १३९।१४० तुम सब शास्त्रों को जानते हो और तुम्हारी सलाह सब कामों में लीजाती है तुम निश्चय जानो कि मेरी इच्छा न लड़ाई में थी और न कुल के नाश होने में १४१ मेरे लेखे मेरे पुत्र और पांडुपुत्र दोनों बराबर हैं मेरी विशेष प्रीति किसी में नहीं थी परन्तु मैं बूढ़ा और अंधा होने के कारणसे अपने लड़कों के अधीन था १४२ और मेरे पुत्र क्रोधी थे मेरी निन्दा करते थे इसलिये अपने निर्वाहके लिये दुर्योधनकी कुमार्गताको सहिलेता था और पुत्र जानकर उसके मोहमें मैं भी मोहित होजाता था १४३ हे संजय! युधिष्ठिरके राजसूय यज्ञमें दुर्योधनने पांडवों का ऐश्वर्य और सभामें अपना हास्य जब देखा और क्षत्रियकुल में उत्पन्न होनेपर भी जब पाण्डवों से वह ऐश्वर्य लेने की अपनी सामर्थ्य न देखी तब क्रोध और ईर्षा से दुःखित होकर शकुनीकी सलाहसे छलरूपी जुये में पाण्डवों से वह लक्ष्मी जीती १४४। १४७ और उस जुयेसे पहिले और पीछे जो जो बातें अयश शकुनरूपी जीतकी आशा दूर करनेवाली हुई थीं सो मैं सब कहताहूं

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मैंने तो अपने मनमें तभीसे जान लिया था कि अब हमारे पुत्रोंकी जीत न होगी पहिले अर्जुनने मछलीको बाणसे छेदकर राजाओं के बीचमें द्रौपदी को जीता १४८ फिर सुभद्रा को द्वारका से ले आया और किसी यादव ने उस अर्जुनको न रोका फिर अर्जुनने कृष्ण बलदेव की सहायता से खांडव वनको जलाकर अग्निदेवको तृप्त किया और इन्द्र खांडव वनकी अग्निको बुझाने के लिये वर्षा करने को आया और अर्जुनने बाणों की वर्षा करके इन्द्रको मार भगाया १४९। १५० फिर पांचों पांडव कुन्ती सहित लाक्षागृह में जलने से बचगये और हमारे भाई विदुर उनकी प्राणरक्षा में तत्पर हुये १५१ प्रथम अर्जुनने बड़े २ शूरमा राजाओं में द्रौपदी को जीता और पाण्डवों से पांचाल देशके बड़े बड़े शूरमा राजाओं से मित्रता हुई १५२ फिर भीमसेन ने मगध देशके बड़े प्रतापी राजा जरासंध को विना शस्त्र के हाथों से मारडाला १५३ फिर पांडवों ने सब भूमि के राजाओंको जीतकर राजसूय यज्ञ किया १५४ फिर हमारे पुत्रों ने अपना नाश होनेवाला यह अधर्म किया कि रजस्वला धर्म में एक वस्त्र पहिरे हुये रोतीहुई द्रौपदी को उसके बाल पकड़कर सभा में लेआये और उसकी लज्जा दूर करने को हमारे ज्वारी पुत्र दुश्शासनने उसका वस्त्र पकड़कर खींचा और उसके वस्त्र का पार न पाकर खिसियाना होगया और द्रौपदी को नंगा न करसका १५५।१५६ फिर शकुनी ने जुये में युधिष्ठिर से सब राज्य जीतलिया और पांडवों के वनको जाने के समय युधिष्ठिर के छोटे भाई अपनी भुजाओं के बल को देख देखकर दांत पीसते थे परन्तु युधिष्ठिर की प्रीति से विना उसकी इच्छा के कुछ नहीं करते थे १५७। १५८ फिर जब युधिष्ठिर वनको गये और उनके साथ सहस्रों ब्राह्मण और भिक्षा भोग लगाने-वाले तपस्वीजन और महात्मा लोगभी गये जिनपर इन लोगों की कृपा है उनको जीतनेवाला कौन है १५९ फिर अर्जुनने किरातरूप महादेवजी से युद्ध करके उनको प्रसन्न किया और उनसे पाशुपत नाम महाअस्त्र पाया १६० फिर अर्जुन देवलोक में गया और वहां इन्द्रसे बड़े २ दिव्य अस्त्रोंके चलाने की विद्या सीखी १६१ फिर अर्जुनने कालकेय जातिके निवातकवच और पौलोम जाति के राक्षसों को जो देवताओं से कभी वरदान पाने के कारण से न हारे उनको मारकर इन्द्रसे मित्रता कर १६२ देवलोक में राक्षसोंके मारने को गया और वहां से राक्षसों को मारकर कुशलपूर्वक लौट आया १६३ फिर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पाण्डव कुबेरके सहायक बनके उस देश में गये जहां मनुष्य नहीं जासक्ता है १६४ बस हमारा पुत्र दुर्योधन कर्ण के कहने के अनुसार वनवासी पाण्डवों को अपना ऐश्वर्य दिखाने के लिये घोषग्रामोंके बैलोंकी पैंठमें रथके लिये बैल खरीदने गया और रास्ते में उसको स्त्रियों सहित गंधर्वों ने पकड़कर कैदकर रक्खा और अर्जुनने उन गन्धर्वों से युद्ध करके उसको छुटाया १६५ फिर वन में यक्षरूपसे धर्मराज आये और युधिष्ठिर से जो कुछ पूछा उसका जवाब यथोचित पाया १६६ फिर पांडव विराटपुर में द्रौपदी सहित गुप्त रहे और उनको किसीने नहीं जाना १६७ फिर अकेले अर्जुन ने विराट राजाके देशमें जो लोग हमारी ओरवालों में श्रेष्ठ गिनेजाते थे उनको रथसे भग्न कर दिया १६८ तब अर्जुनका पराक्रम देखकर विराटदेश के राजा मत्स्य ने अपनी कन्या उसको दी और अर्जुनने वह कन्या अपने पुत्र अभिमन्युके लिये लेली १६९ फिर युधिष्ठिरके साथ लड़नेको सात अक्षौहिणी दल इकट्ठा होगया यद्यपि युधिष्ठिर वनवासी और दुःखी थे १७० फिर वासुदेव जिनकी एक पग यह पृथ्वी सुनीजाती है वह पांडवों के हितमें उद्यत हुये १७१ और हमसे नारद जी ने कहा था कि हमने ब्रह्मलोक में भी श्रीकृष्ण और अर्जुनको नरनारायणरूप से देखा है १७२ फिर इस उपद्रव को मिटानेके लिये श्रीकृष्ण कौरवोंके पास आये और कौरवों ने उनका भी कहना न माना १७३ फिर कर्ण और दुर्योधन ने श्रीकृष्णजी को पकड़कर कैद करने की सलाह की और श्रीकृष्णने उनको अपना भयंकर विराटस्वरूप दिखाया १७४ फिर जब श्रीकृष्ण भगवान् लौटके चले थे उस समय रथ के सामने कुंतीको खड़ा देखकर उसे बहुत धैर्य दिया और किसी से नहीं बोले १७५ फिर पांडवोंको युद्ध के समय श्रीकृष्ण और भीष्मपितामह और द्रोणाचार्य ने आशीर्वाद जय पावनेका दिया १७६ फिर कर्णभी भीष्मपितामह से विरोध मानकर यह कहकर रणमें से चलागया कि जब तक भीष्मपितामह लड़ेंगे तबतक मैं शस्त्र न लूंगा १७७ फिर उस महायुद्ध में बड़ी महिमावाले श्रीकृष्ण बड़े पराक्रम वाला अर्जुन और बड़े गुणवाला गांडीवधनुष यह तीनों एक जगह इकट्ठे होगये १७८ फिर अर्जुन मोह से व्याकुल होकर रथके पास बैठ गया और गांडीव को रखकर अपना मन युद्धसे हटाने लगा तब श्रीकृष्णने अर्जुनको अपनी देह में सब लोक दिखलाकर उसका मोह दूर किया और युद्ध के लिये तैयार

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

किया १७९ फिर भीष्मपितामह युद्ध में दशसहस्र रथी नित्य मारते थे परन्तु पाण्डव कुलका नामी और मुख्य पुरुष उन दशसहस्रोंमें कभी कोई नहीं मरा १८० फिर भीष्मपितामह ने अपने मरने का उपाय आपही बतला दिया और पांडवों ने वही उपाय किया १८१ फिर अर्जुनने नपुंसक शिखण्डीको आगेकरके भीष्मपितामह से शूरवीर को मारलिया १८२ फिर भीष्मपितामह जो बहुत वृद्ध और महापराक्रमी थे अर्जुन के अनेक प्रकार के पर लगेहुये बाणों से बेधित होकर रथसे गिरपड़े और बाणों की शय्या पर शयनकिया १८३ फिर भीष्मपितामह ने अर्जुनसे जल मांगा और अर्जुनने बाणसे पृथ्वी छेदकर जल दिया १८४ वायु सूर्य और चन्द्रमा ये पांडवों के युद्धमें दहिने रहते थे और हमारे साथियों को अनेक तरहसे ठहराते थे १८५ द्रोणाचार्य यद्यपि अतिश्रेष्ठ अस्त्रविद्या से युद्ध करतेथे परन्तु पांडवों की मृत्यु नहीं होती थी १८६ फिर अर्जुन को मारने के लिये सात महारथी एक जगह खड़े होकर अर्जुनसे युद्ध करनेलगे और अर्जुन ने उन सातों को मारडाला १८७ फिर उस महासेनाकी अभेद्य व्यूहरचना में जिसकी रक्षा द्रोणाचार्य आप शस्त्र लेकर करते थे उसमें अर्जुन का अभिमन्यु नामी पुत्र घुसगया १८८ और वहां उस बालक को सब महारथी मिलकर अधर्म से मारकर प्रसन्न हुये और अर्जुन को न मार सके फिर हमारे पुत्रों को अभिमन्यु के मारे जाने की प्रसन्नता में कुहकारे मारते हुये देखकर अर्जुन ने यह प्रतिज्ञाकी कि मैं अपने पुत्रके मारनेवाले जयद्रथको न मारसकूं तो अग्निमें जल मरूंगा और वह प्रतिज्ञा अपने शत्रुओं में सच्ची कर दिखाई १८९। १९१ फिर अर्जुन के रथके घोड़े पियासे थे और अर्जुन ने उस महारण में घोड़े खोलकर रक्षापूर्वक उनको जल पिलाया और रथ में जोते १९२ फिर अर्जुन के रथके घोड़े थक गये और अर्जुन रथ को थामकर रथके पास बैठगया उससमय अवसर पाकर बहुतसे वीर अर्जुन को मारने गये परंतु अर्जुन ने सबको बैठे २ मार कर हटादिया १९३ फिर हाथियों की बड़ी सेना को जिसे लेकर द्रोणाचार्य युद्ध करते थे अकेला सात्यकी मारकर निर्विघ्न श्रीकृष्ण और अर्जुन के पास गया १९४ फिर कर्ण ने भीमसेनको धनुषकी कोर से मारा और बहुत से कटुवचन कहता हुआ चलागया परंतु उसे मारा नहीं १९५ फिर जयद्रथ को अर्जुन के हाथों से मरते हुये द्रोणाचार्य कृतवर्मा कृपाचार्य कर्ण अश्वत्थामा और मद्रदेश का राजा देखा किये परंतु अर्जुन

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

से उसे बचाने की किसी की सामर्थ्य नहीं हुई १९६ फिर जो शक्ति कर्ण को इन्द्रने इस प्रतिज्ञासे दीथी कि जिसपर तू इसको चलावेगा वह मरजायगा लेकिन फिर यह काम की नहीं रहेगी और कर्णने उस शक्ति को अर्जुन के मारने के लिये रक्खीथी सो श्रीकृष्णने कर्णका चित्तभ्रम कराके उस शक्ति को घटोत्कचनाम दैत्यपर चलवाकर उसे व्यर्थ कराय दिया १९७। १९८ फिर धृष्टद्युम्नने द्रोणाचार्य को रथके पास विना शस्त्र लिये अकेले बैठे देखकर अधर्म से मारडाला १९९ फिर नकुलने मंडल बांध बांध कर अश्वत्थामा से बराबरी का युद्ध किया २०० फिर द्रोणाचार्य के मरने के पीछे अश्वत्थामा ने नारायणास्त्र पांडवों के मारने को छोड़ा परंतु पांडवों का अंत नहीं आया २०१ फिर भीमसेन ने भाई दुश्शासन को मारकर उसका लोहू पिया और उसे ऐसा करने से कोई भी न रोक सका २०२ फिर उस महायुद्ध में कर्ण सा शूर भी मारा गया और निर्भय अर्जुन का बाल भी बांका न हुआ २०३ फिर युधिष्ठिर ने युद्ध में अश्वत्थामा दुश्शासन कृतवर्मा और शल्य जो कृष्ण से लड़ने का इरादा रखता था सबको जीत लिया २०४। २०५ फिर शकुनी जो जुआ और लड़ाई की जड़ था उसको सहदेवने मारडाला २०६ फिर मेरा पुत्र दुर्योधन युद्धसे थककर अकेला कमलके तलावमें उसका पानी रोककर छुपकर सोरहा और श्रीकृष्ण आदि ने उसके पास जाकर उसे युद्ध करने के वास्ते ललकारा तब वह मेरा क्रोधी पुत्र उठकर भीमसेन से गदायुद्ध करने लगा और मंडल बांधकर लड़ने पर भी श्रीकृष्ण ने उसे अधर्मयुद्ध से मरवाया २०७। २०९ फिर मेरे दुर्योधन पुत्रने अश्वत्थामा आदि से यह भयानक और अयश का देनेवाला कर्म कराया कि उन्होंने पांचाल देश के राजाके पुत्रों और द्रौपदी के पुत्रों को सोतेहुये मारडाला २१० फिर जब भीमसेन क्रोध करके अश्वत्थामा के पीछे दौड़ा और अश्वत्थामा ने ब्रह्मास्त्र चलाया और उस अस्त्र ने भीमसेन के बदले एक सींक को वन में मारा २११ फिर अश्वत्थामा के फेंके भये ब्रह्मास्त्र को अर्जुन ने स्वस्तिजय ऐसा कहकर अपने अस्त्र से गिरादिया और अश्वत्थामा की चोटी की मणि छीनली २१२ फिर अश्वत्थामाने उत्तराका गर्भ गिराने के लिये ब्रह्मास्त्र छोड़ा तब व्यासजी और श्रीकृष्णजीने उसे शाप दिया २१३ हे संजय! जब ये सब बातें हुईं तब मैंने अपने मनमें यह निश्चय समझालियाथा कि हमारे पुत्रों की जय न होगी और मेरे लिये मेरे पुत्र और पांडव एकही हैं अर्थात्

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जो पांडवों की जय हुई सो मेरीही जय है परंतु गांधारी को मरण पर्यंत बड़ा दुःख होगया क्योंकि इस युद्ध में उसके पुत्र पौत्र बाप भाई आदि सब मारेगये पांडवों ने यह महादुष्कर कर्म करके अपना राज्य अकंटक करलिया २१४ हाय बड़े दुःख की बात है कि इस युद्ध में १८ अक्षौहिणी सेना और बड़े महारथी और शूरवीर सब कटकर केवल दश आदमी बचे उन में भी हमारी ओर के केवल तीन हैं और सात पांडवोंकी ओर के हैं २१५ हे संजय! इस बात को समझकर मेरी आंखों के आगे अंधेरा और शरीर में मोह होता आता है और मेरा ज्ञान भी इस समय जाता रहा है २१६ ऐसा कहके धृतराष्ट्र बड़ा विलाप करके मूर्च्छित होगये और मूर्च्छा जागने पर बोले २१७ कि हे संजय! अब मेरेभी प्राण छूटने चाहते हैं क्योंकि संसार में अब जीना निष्फल है २१८ इतनी कथा सुनाकर सूतजी बोले कि हे ऋषियो! जब धृतराष्ट्र इस प्रकार से विलाप करके मूर्च्छित होने लगे और मोह में आकर सर्प की तरह श्वास लेने लगे २१९ तब संजय बोले कि हे राजा! आपने भी तो बड़े २ राजाओं की कथा व्यासजी और नारदजी से सुनी है २२०।२२१ कि कैसे बड़े २ प्रतापी राजा होगये हैं जिन्होंने पृथ्वी जीतकर बड़े बड़े यज्ञ किये और ब्राह्मणों को अनंत दक्षिणा दी और जिनका यश आज तक छाय रहा है परंतु सबके सब पृथ्वी पर अनेक कर्म करके कालवश हुये देखो राजा संजय शैब्य २२२।२२३ सुहोत्र रंतिदेव बाह्लीक काक्षीवान दमन शर्याति अजित नल २२४।२२५ विश्वामित्र अम्बरीष मरुत राजा मनु इक्ष्वाकु गय भरत श्रीरामचन्द्र शशिबिंदु भागीरथ कृतवीर्य जनमेजय २२६ और राजा ययाति जिससे देवताओं ने यज्ञ में बैठकर पूजन कराया और जिसके यज्ञमंडल की सीमा पर लगाये हुये वृक्ष अब तक बने हैं २२७ ये चौबीसों राजा काल के गालमें समा गये नारदजी ने भी इन चौबीसों राजाओं का इतिहास शैब्य नाम राजा से उसके पुत्र शोक दूर करने को कहा था २२८ और इन चौबीसों के पहिले भी बड़े २ बलवान् महारथी महात्मा और गुणवान् यह राजा हुये २२९ पुरु-कुरु-यदु-विश्व-गश्व-अणुह-युवनाश्व-ककुत्स्थ-रघु-विजय २३० वीतिहोत्र-अग-भव-श्वेत-बृहद्गुरु-उशीनर-शतरथ-कंकदुलिदुह-द्रुम २३१ दृम्भोद्भव-परोवेन-सगर-संकृति-निमि-अजेय-पशुपुंड्र-शम्भुदेवावृध २३२ देव-सुप्रतिम-सुप्रतीक-बृहद्रथ-नल २३३ सुमित्र-सुबल-जानुजंघ-अनरण्य-अर्कप्रियभृत्य-शुचिव्रत २३४ बलबंधु-निरामर्द्द-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

केतुशृङ्ग-बृहद्बल-धृष्टकेतु-बृहत्केतु-दीप्तकेतु २३५ अविक्षित-चपल-धर्त और श्रुतिआदि बड़े २ प्रतापी राजा हुये इनके सिवाय और भी सहस्रों अनगिनती राजा बड़े २ पराक्रमी और बुद्धिमान् हुये वे भी आपके पुत्रोंकी तरह नाश होगये २३६। २३७ और जिन २ राजाओं का कवियों ने यश पराक्रम बुद्धि दातृशक्ति सत्यता शुद्धता दया ऋद्धि और अनेक गुणों की सम्पन्नता का कीर्त्तन किया है वे भी नाश होगये अर्थात् मृत्यु को कोई न जीत सका २३८। २४० और आपके पुत्र तो बड़े क्रोधी लोभी और दुर्वृत्त थे उनका शोच करना आपको योग्य नहीं है २४१ हे धृतराष्ट्र! आप तो बड़े बुद्धिमान् और शास्त्र के जाननेवाले हैं जिनकी बुद्धि शास्त्रके अनुगत बनी रहती है वे मोह कभी नहीं करते २४२ पांडवों को तिरस्कार और अपने पुत्रों में प्रीति यह सब आप में था और आपही इसको अच्छी तरह जानते हैं इसलिये आपको शोच करना न चाहिये २४३ यह होनहार इसी प्रकार से था पूर्व किये हुये कर्मों का फल अनेक उपाय करने से भी नहीं जाता है २४४ जगत् के कर्त्ताने इस प्राणीही को शुभ और अशुभ कर्मों का फल भोगने को शुभ और अशुभ कर्म रच रक्खे हैं उनको उल्लंघन करने की किसीकी सामर्थ्य नहीं है और इस सब जगत्का काल मूल है २४५ क्योंकि सब प्राणियों को दुःख सुख ऐश्वर्य और दरिद्रता सब काल के अनुसार होते हैं जगत् का रचने और नाश करनेवाला कालही है उस कालको भी महाकालरूपी परमात्मा नाश करता है २४६ यह महाकालही सब शुभ अशुभ भावों का कर्त्ता है और प्रजाका नाशक और रचनेवाला भी यही है यहही सोते में जाग्रत्रूप है और सब प्राणियों में समान फिरता है उसको कोई उल्लंघ नहीं कर सकता है २४७। २४८ धृतराष्ट्र भूत भविष्यत् और वर्त्तमान तीनोंकालों की बातों को कालकी कीहुई समझकर आपको ज्ञान छोड़कर मोह करना उचित नहीं है २४९ सूतजी बोले हे ऋषियो! संजयने इसप्रकार से राजा धृतराष्ट्र को समझाकर उनके चित्तको सावधान किया २५० व्यासजी ने इस महाभारत में शोक से दुःखित मनुष्यों के लिये शोक दूर करनेवाला उपनिषद् वर्णन किया है २५१ और बड़े २ विद्यावान् और कवि लोग भी कहते हैं कि भारत का थोड़ा भी पाठ करने से सब पाप दूर होजाते हैं २५२ क्योंकि इस महाभारत में देवता देवऋषि ब्रह्मऋषि यक्ष और नाग इनकीही कथा का

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वर्णन है और श्रीवासुदेव भगवान् जो सत्य हैं पवित्र हैं पापनाशक हैं भाग्य के उदय करनेवाले हैं सर्वदेश और सब चीजों में परिव्याप्त हैं परब्रह्म हैं अचल हैं ज्योति के समान चैतन्य हैं सनातन हैं असत् हैं अर्थात् मुख से वर्णन नहीं किये जासकते हैं सदसत् हैं अर्थात् कारण कार्यरूप भी आपही हैं जन्म मृत्यु को देनेवाले हैं अध्यात्म हैं अर्थात् पांचों तत्त्वों के पांचकर्म चैतन्यता १ बोलना २ देखना ३ सुनना ४ और मनकी ५ वृत्तिरूप सुनने में आते हैं तिसे मायासे परे मायाशबल ब्रह्म हिरण्यगर्भरूप संसार में कहते हैं जिसे ध्यान करके यती लोगों ने मुक्ति पाई और जिसको ज्ञानी लोग अपने हृदय में इसप्रकार से देखते हैं जैसे दर्पण में मुख उसी सनातन भगवान् का इस महाभारत में कीर्त्तन है २५३।२५८ जो मनुष्य इस पहिले अध्याय का पाठ धर्म में तत्पर होकर करेंगे सुनेंगे और सुनावेंगे उनके किये हुये पाप दूर होजायँगे २५९ यह अध्याय अनुक्रमणिका अध्याय कहलाता है इसको जो आस्तिक पुरुष किसी महाकष्ट में भी सुनेगा या सुनावेगा उसका कष्ट दूर होजायगा २६० और जो कोई संध्या और सबेरे दोनों समय थोड़ा बहुतभी इसका पाठ करेंगे उनके रात और दिनके किये हुये पाप दूर होजायँगे २६१ यह अध्याय इस महाभारतका शरीर है और जिस प्रकार से दहीका सार माखन है चारोंवर्णों में श्रेष्ठ ब्राह्मण है २६२ चारों वेदों में आरण्यक नाम उपनिषत् श्रेष्ठ है ओषधियोंका सार अमृत है जैसे नदियों में समुद्र श्रेष्ठ है चौपायों में गौ श्रेष्ठ है २६३ तैसेही इतिहासों में यह महाभारत श्रेष्ठ है जो कोई पितरोंके श्राद्धमें ब्राह्मणोंको भोजन कराते में इसे सुनावें उसके पितरों को वह अन्न अक्षय होकर पहुँचता है २६४ जो कोई वेदोंको अच्छी तरह जानने चाहे वह पहिले इस महाभारत को पढ़े जो इसको विना पढ़े वेदों में परिश्रम करता है उसका परिश्रम व्यर्थ है २६५ हे ऋषियो ! इस व्यासजीके बनाये हुये महाभारत को सुनने और सुनानेवालों को चारों पदार्थ मिलते हैं और उनके भ्रूणहत्या आदि पाप भी दूर होजाते हैं २६६ जो कोई इसका पाठ प्रतिपर्व को करैगा उसको सब महाभारत पाठ करने का फल मिलैगा २६७ जो कोई इस भारतरूपी वेदको श्रद्धा से नित्य सुनता है उसकी आयु बढ़ती है संसार में कीर्ति होती है और स्वर्ग में जानेका रास्ता मिलता है २६८ पहले इस भारतको देवताओं ने एक ओर चारों वेद रखकर दूसरी ओर भारत को रखकर तोला था जब यह भारत चारों

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वेदों से अधिक निश्चय हुआ तब से इसका नाम महाभारत हुआ २६६।२७० इस महाभारत का अर्थ यहहै कि सब ग्रंथों से यह ग्रंथ बड़ा होने से इसको महत्त्व-पदवी मिली और सब ग्रन्थों से इसका अर्थ कठिन होने से भारत्व कहलाया सो महत्त्व और भारत्व दोनों मिलकर महाभारत हुआ २७१ और यदि कोई कुतर्की यह कहै कि इस महाभारत में छल प्रपंच और निग्रहहै और जहां तहां भगवत् कथाभी है तो इसको त्यागना इस प्रकार से चाहिये जैसे विष मिला हुआ अन्न त्याग दिया जाता है ऐसे कुतर्की के लिये यह उत्तर है कि जैसे तप और व्रत आदिका करना वेदों का पढ़ना वेदविधि से स्वाभाविक कर्मों का करना और भूख प्यास आदि को सहकर धनसंचय करना केवल पुण्यही है पाप नहीं है परन्तु येही सब बातें चित्त के भाव से दूषित होने पर पापरूप होजाती हैं इसी प्रकार से भारत में भी धर्म और ब्रह्मका निरूपण होने से पुण्यका देने-वाला है और कौरवों की दुष्टता और पांडवोंकी सत्यता इस निमित्त दिखलाई है कि संसारी जीव भी इसको पढ़कर युधिष्ठिर आदिका सा धर्म करैं और कौरवों कीसी अनीति न करैं और कदाचित् ऐसा करेंगे तो उनका भी कौरवों की तरह नाश होगा २७२ ॥

इति श्रीभाषामहाभारते आदिपर्वणि प्रथमोऽध्यायः १ ॥

दूसरा अध्याय।

इसमें कुरुक्षेत्र का माहात्म्य और अक्षौहिणी और महाभारतके पर्व, उपपर्व, अध्याय और श्लोकोंकी संख्या और कथा का वर्णन है ॥

शौनक बोले कि हे सूतपुत्र ! आपने पहले अध्याय में समंतपंचक तीर्थ कहा अब हमको विस्तारपूर्वक उसकी कथा सुनाइये यह सुनकर सूतपुत्र बोले कि हे ऋषियो ! सुनो त्रेता और द्वापरयुगकी संधि में परशुरामजी ने जो शस्त्र-धारियों में सबसे उत्तम हैं बड़े क्रोध से बारंबार क्षत्रियकुल को नाश किया और नाश करके पांच कुण्ड उन क्षत्रियों के लोहूसे भरे १।४ और उन कुण्डों में क्रोधसे स्नान करके लोहूसे अपने पितरोंका तर्पण किया ५ तब परशुरामजी के दादा ऋचीक आदि पितरों ने सामने आकर उस तर्पण को लिया और प्रसन्न होकर परशुरामजी से कहा कि हम तेरे पराक्रम और पितृभक्तिसे बहुत प्रसन्न हुये तुमको जो कुछ इच्छा हो सो मांगो ६।७ यह सुनकर परशुरामजी ने कहा कि जो मैंने क्रोधसे क्षत्रियों का नाश किया है ८ इसका पाप हमें न

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लगे और ये पांचों कुंड इस संसारमें तीर्थरूप होकर विख्यात हों ९ पितरों ने कहा कि अच्छा ऐसेही होगा परन्तु तुमभी क्षमावान् होकर रहो और हिंसा मत करो तबसे परशुरामजी ने क्षत्रियों का मारना छोड़ दिया १० उन पांचों कुंडों के ओर पासके जो देशहैं वेभी उन कुंडों के कारणसे समंतपंचक नाम से विख्यात हैं ११ और बड़े पवित्र देश हैं वहां पृथ्वी बराबर है और उसी देश में कलियुग और द्वापरकी संधि में अठारह अक्षौहिणीदल इकट्ठे होकर कौरव और पांडवों का बड़ा युद्ध हुआ था समंतपञ्चक का यह अर्थ है कि समेत और अन्त दोनों मिलकर समन्त हुआ जिसका यह अर्थ है कि वह जगह जहां अठारह अक्षौहिणी सेना कटी और उस जगह पांच कुण्ड होने से समंतपंचक नाम हुआ सो वह देश तीनोंलोकों में विख्यात है और बड़ा रमणीक और देखनेके योग्य है इतनी कथा सुनकर ऋषि बोले कि हे सूतपुत्र ! तुमने अठारह अक्षौहिणी दल कहा सो अक्षौहिणी किसे कहते हैं १२। १८ यह सुनकर सूतपुत्र बोले कि हे ऋषियो !॥

हाथी रथ घोड़ा पैदल

१——१——३——५ की एक पत्ति होती है
और ३——३——९——१५ का एक सेनामुख होता है
और ९——९——२७——४५ का एक गुल्म होता है
और २७——२७——८१——१३५ का एक गण होता है
और ८१——८१——२४३——४०५ की एक वाहिनी होती है
और २४३——२४३——७२९——१२१५ की एक पृतना होती है
और ७२९——७२९——२१८७——३६४५ की एक चमू होती है
और २१८७——२१८७——६५६१——१०९३५ की एक अनी होती है
और २१८७०—२१८७०—६५६१०—१०९३५०की एक अक्षौहिणीहोतीहै॥

हे ऋषियो ! इसी प्रमाण की अठारह अक्षौहिणी कौरव और पांडवों की उस समंतपंचक पृथ्वीपर इकट्ठी हुई थीं और कौरवों को केवल कारण बनाकर अद्भुत कर्म करनेवाले काल ने उन सबका वहां नाश किया १८। २९ उस युद्धमें दुर्योधनकी ओर से १० दिन भीष्मपितामहने ५ दिन द्रोणाचार्य ने २ दिन कर्णने २ प्रहर शल्य ने युद्ध किया उसके उपरांत दुर्योधन और भीमसेनसे २ प्रहर गदायुद्ध हुआ और उसी दिन रात्रिके समय अश्वत्थामा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कृतवर्मा और कृपाचार्य ने युधिष्ठिरकी सोतीहुई सब सेना मारडाली ३०। ३२ इतनी कथा सुनाकर सूतपुत्र बोले कि यह उत्तम कथा जो हमने आपके यज्ञमें कही वह राजा जनमेजयके यज्ञमें वैशंपायन मुनिसे सुनीथी इस महाभारत में राजाओंका यश पराक्रमभी वर्णन किया और आदि में मंगलाचरणरूपी पौष्य पौलोम और आस्तीकका विस्तारपूर्वक वर्णन है ३३। ३४ और इस में राजाओंकी कथा अनेक अर्थ और अनेक आख्यानोंसे युक्तहै और ज्ञानियोंको यह ऐसा प्यारा है जैसे मोक्ष चाहनेवालोंको वैराग्य प्यारा होता है३५और जैसे सब प्यारी चीजोंमें प्राण सबसे अधिक प्यारेहैं इसीतरह यह भारत सब आगम और इतिहासोंमें उत्तमहै ३६ संसारमें ऐसी कोई कथा नहीं है जो इसमें नहीं है जो कथा इसमें नहीं है वह अप्रमाणीक और झूंठी है और हे ऋषियो! कविलोगोंके लिये कोई नई बात कहनेको न रहने के कारणसे कविलोग इस महाभारतको इसप्रकार सेवन करते हैं जैसे निर्धनी मनुष्य धनीकी सेवा तन मनसे धन पानेके लिये करते हैं अब हम इस व्यासजी के बनाये हुये वेदार्थभूषित उत्तम महाभारतके पर्वआदिकी संख्या वर्णन करते हैं इस महाभारतका यह पहला अध्याय अनुक्रमणिकापर्व और दूसरा अध्याय पर्वसंग्रहपर्व कहलाताहै ३७। ४१ श्रीवेदव्यासजी ने महाभारतमें कथारूपी सौ अनुपर्व वर्णन कियेहैं और यह सब अनुपर्व १८ महापर्वोंके अंतर्गत आतेहैं उनके नाम हम नीचे वर्णन करते हैं पौष्यपर्व-पौलोमपर्व-आस्तीकपर्व-अंशावतारणपर्व-संभावपर्व-जानुषपर्व-हिडम्बवधपर्व- बकवधपर्व-चैत्ररथपर्व-द्रौपदीस्वयंवरपर्व-वैवाहिकपर्व-विदुरागमनपर्व-राज्यालाभपर्व-अर्जुनवनवासगमनपर्व-सुभद्राहरणपर्व-हारिकपर्व-खांडववनदाहपर्व-सभापर्व-मंत्रपर्व--जरासंधवधपर्व-दिग्विजयपर्व-राजसूयिकपर्व-अर्घाभिहरणपर्व-शिशुपालवधपर्व-द्यूतपर्व-अनुद्यूतपर्व-आरण्यककिर्मीरवधपर्व-अर्जुनतपस्यागमनपर्व-कैरातपर्व-इंद्रलोकाभिगमनपर्व-नलोपाख्यानपर्व-युधिष्ठिरतीर्थयात्रापर्व-जटासुरवधपर्व-यक्षयुद्धपर्व-निवातकवचयुद्धपर्व-अजगरपर्व-मार्कण्डेयसमागमपर्व-द्रौपदीसत्यभामासंवादपर्व-घोषयात्रापर्व- मृगस्वप्नपर्व--श्रीहिद्रोणिकआख्यानपर्व--ऐन्द्रद्युम्नपर्व-द्रौपदीहरणपर्व-जयद्रथमोचनपर्व-पतिव्रतामाहात्म्यपर्व-सावित्रीमाहात्म्यपर्व-रामोपाख्यानपर्व-कर्णकुंडलहरणपर्व-अरणीहरणपर्व-वैराटपर्व-पांडवप्रवेशपर्व-समयपालनपर्व-कीचकवधपर्व-गोग्रहणपर्व-अभिमन्युविवाहपर्व-उद्योगपर्व-पांडवसमीप संजयआगमनपर्व-धृतराष्ट्र

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

चिन्तापर्व-सनत्सुजातपर्व-यानसंधिपर्व-भगवत्यानपर्व- मालतीउपाख्यानपर्व-गालवपर्व-सावित्रपर्व-वामदेवपर्व-वैन्योपाख्यानपर्व-जामदग्न्योपाख्यानपर्व-षोडशराजकपर्व-कृष्णस्यसभाप्रवेशपर्व-विदुलापुत्रशासनपर्व-उद्योगपर्व-सैन्यनिर्याणपर्व-श्वेतोपाख्यानपर्व-कर्णश्रीकृष्णविवादपर्व-रथातिरथसंख्यापर्व-उलूकदूतागमनपर्व-आमर्षविवर्धनपर्व-अंबोपाख्यानपर्व-भीष्माभिषेचनअद्भुतपर्व-जंबूखण्डपर्व-भूमिपर्व-भगवद्गीतापर्व-भीष्मवधपर्व-द्रोणाभिषेचनपर्व-संसप्तकवध-पर्व-अभिमन्युवधपर्व-प्रतिज्ञापर्व-जयद्रथवधपर्व-घटोत्कचवधपर्व-द्रोणवधपर्व-नारायणास्त्रमोक्षपर्व-कर्णपर्व-शल्यपर्व-दुर्योधनह्रदप्रवेशपर्व-गदायुद्धपर्व-सरस्वतीपर्व-तीर्थवंशानुकीर्तनपर्व-सौप्तिकपर्व-ऐषीकपर्व-जलप्रदानिकपर्व-स्त्रीविलापपर्व-और्द्ध्वदेहिकश्राद्धपर्व-चार्वाकनिग्रहपर्व-युधिष्ठिराभिषेचनपर्व-गृहविभागपर्व-शांतिपर्व-राजधर्मानुशासनपर्व-आपद्धर्मपर्व-मोक्षधर्मपर्व-शुकप्रश्नानुगमनपर्व-ब्रह्मप्रश्नानुशासनपर्व-प्रादुर्भावपर्व-मायासंवादपर्व-आनुशासनिकपर्व-भीष्मस्वर्गारोहणपर्व-अश्वमेधपर्व-अनुगीतापर्व-आश्रमवासपर्व-पुत्रदर्शनपर्व-नारदागमनपर्व-मौशलपर्व-महाप्रास्थानिकपर्व-स्वर्गारोहणपर्व-हरिवंशपर्व-विष्णुपर्व-कंसवधपर्व-भविष्यपर्व ४२। ८८॥

महाभारत का पहला पर्व आदिपर्व कहलाता है उसमें २२७ अध्याय ८८८४ श्लोक और उक्त अनुपर्वोंमेंसे प्रथम १७ अनुपर्व हैं उनके नाम और जिस जिसमें जो कथाहै वह आगे कहते हैं १३१। ३२१॥

१-पौष्यपर्व-इस पर्वमें उत्तंकका माहात्म्य वर्णन कियाहै ८९॥

२-पौलोमपर्व-इस पर्व में भृगुवंशकी कथाहै ९०॥

३-आस्तीकपर्व-इस पर्व में नागों और गरुड़की उत्पत्ति और समुद्रमथने और जनमेजय के सर्पसत्र यज्ञ और उच्चैःश्रवा घोड़े के जन्म होनेकी कथा का वर्णनहै ९१। ९२॥

४-अंशावतारणपर्व-इस पर्व में उन मनुष्योंकी कथाहै जो देवताओं के अंशसे उत्पन्न हुये ९३॥

५-सम्भवपर्व-इस पर्व में दैत्य दानव यक्ष नाग सर्प गंधर्व पक्षी और भरतजी जिनसे भरतवंश हुआ इनकी उत्पत्ति और राजा शंतनुके घरमें गंगाजी से वसुओंकी उत्पत्ति भीष्मउत्पत्ति और भीष्म करिके चित्रवीर्य और चित्रांगद रक्षा उन दोनोंका मरण और भीष्मप्रतिज्ञा और व्यासजी के वरदान से

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

धृतराष्ट्र पांडु और विदुर का उत्पन्न होना और पांडवों की उत्पत्ति यह सब वर्णन किया है ९४। १०१ ॥

६–जातुषपर्व–इस पर्व में दुर्योधन का पांडवों के मारने को वारणावत-पुरी में लाखका घर बनवाना राहमें विदुरजी का म्लेच्छ बोली में उस घरसे बचने का उपाय पांडवोंसे कहना पांडवोंका सुरंगकी राह से निकलकर बचना और उस लाखके घरमें एक निषादनी का अपने पांचों पुत्रों सहित जलकर मर जाने और पुरोचन के जलजाने की कथाहै १०२। १०५ ॥

७–हिडम्बवधपर्व–हिडम्ब राक्षस को भीमसेन ने जिसप्रकार से मार-कर उसकी बहिन हिडंबा से विवाह किया और उससे घटोत्कच पुत्र उत्पन्न हुआ और फिर व्यासजी का दर्शन हुआ सो सब कथा इस पर्व में कही है १०६। १०७ ॥

८–बकवधपर्व–भीमसेनका बक दैत्य को वध करना और द्रौपदी और धृष्टद्युम्न के जन्मकी कथा १०८। १०९ ॥

९–चैत्ररथपर्व–इस पर्व में पांडव द्रौपदी का स्वयंवर सुनके पांचालदेश को गये और राहमें अंगारपर्ण गंधर्वसे अर्जुनका युद्ध हुआ और फिर मित्रता हुई ११०। ११२ ॥

१०–द्रौपदीस्वयंवरपर्व–इस पर्वमें वशिष्ठ और और्वका आख्यान पांडवों का पांचाल नगरमें पहुँचना वहां सब राजाओंके बीच में अर्जुनका बाण से आमकयंत्र पर घूमती हुई मछलीको बेधकर द्रौपदीका पाना और सब राजाओं समेत कर्ण और शल्यसे भीम और अर्जुनका युद्ध करना और उनसे पांडवों का विजय पाना वर्णन किया है ११३। ११५ ॥

११–वैवाहिकपर्व–इस पर्व में कृष्ण और बलरामका यह शंका करना कि इनका पराक्रम अमानुषहै ये पांडवही हैं ऐसा समझकर उनके आश्रममें जाकर उनसे मिलाप करना राजा द्रुपद का द्रौपदी का विवाह पांचों पाडवों के साथ करनेसे निषेध करना फिर द्रौपदी से पांचों पांडवोंका अमानुष विवाहहोना वर्णन किया है और इसी में पांच इन्द्रों के उपाख्यानका भी वर्णन है ११६। ११८ ॥

१२–विदुरागमनपर्व–इस पर्व में विदुरजी को कौरवों ने पांडवों को लाने के लिये भेजा और विदुरजी पांडवों के पास आये और वहां श्रीकृष्ण का दर्शन किया ११९ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

१३–राज्यलाभपर्व–इस पर्व में कौरवोंका पांडवों को आधा राज्य बांटना और नारदमुनि का आकर पांचों पांडवों में एक स्त्री होने से आपसमें झगड़ा न होनेके कारण एक एक महीना द्रौपदी के पास रहनेका नियत कर देना वर्णन किया है १२० ॥

१४–अर्जुनवनवासपर्व–इस पर्व में प्रथम सुंद और उपसुंद दोनों भाइयों की कथाहै फिर एक ब्राह्मणके काम करनेके लिये अर्जुन घर के भीतर शस्त्र लेनेको चलेगये उससमय द्रौपदी के पास रहने की युधिष्ठिरकी बारी समझ कर अर्जुन अपने मनमें ग्लानि मानकर वनको चलेगये और वहां उलूपी नाम एक कौरव्य नागकी कन्यासे अर्जुनका संगम हुआ और उसमें एक बभ्रुवाहन नाम पुत्र हुआ और तीर्थोंकी यात्रा और पांच अप्सरों का शापमोचन और प्रभासतीर्थ में कृष्णसे मिलाप होनेकी कथा हैं १२१। १२५ ॥

१५–सुभद्राहरणपर्व–इस पर्वमें अर्जुनका द्वारकामें पहुँचने और श्रीकृष्ण की बहिन सुभद्राका रूप देखकर अर्जुनका मोहित होने और पीछे सुभद्रा के हरनेकी कथा वर्णन की है १२६ ॥

१६–हरणहारिकपर्व–इस पर्व में यादवोंने श्रीकृष्णजी के कहनेसे सुभद्रा का विवाह अर्जुन से करादिया और इसी में अभिमन्यु और द्रौपदीके जन्म की कथा है १२७ ॥

१७–खांडववनदाहपर्व–इस पर्व में श्रीकृष्ण और अर्जुनका यमुनातट को विहार करने जाने और अर्जुनको गांडीवधनुष और कृष्णको सुदर्शनचक्र मिलने और खांडववन जलाकर अग्निदेव के तृप्त करने और मयदानवके मिलने और शार्ङ्गीके पुत्रोंकी उत्पत्तिकी कथाका वर्णन है १२८। १३० ॥

महाभारतका दूसरा पर्व–सभापर्व कहलाता है उसमें ७८ अध्याय २५११ श्लोक और ९ अनुपर्व हैं उनके नाम और जिस २ में जो २ कथा है वह आगे कहते हैं १३१। १३२ ॥

१–सभापर्व–इस पर्वमें पांडवों और लोकपालों की सभाका आख्यान और किंकरनाम राक्षसों के दर्शनकी कथाहै १३३ ॥

२–मंत्रपर्व–इस पर्वमें राजसूय यज्ञ करने को मंत्र विचारने और यज्ञके प्रारम्भ करनेकी कथा है १३४ ॥

३–जरासंधवधपर्व–इस पर्व में मगधदेश के राजा जरासंध के मारेजाने

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

और उसके बन्दीखाने से देश २ के कैदी राजाओं के छुड़ाने की कथा है॥

४–दिग्विजयपर्व–इस पर्व में पांडवों करके चारों दिशाओं के राजाओं के जीतने की कथा है १३५॥

५–राजसूयिकपर्व–इस पर्व में देश २ के राजाओं का आना और यज्ञ होनेकी कथा है॥

६–अर्घाभिहरणपर्व–इस पर्व में राजसूययज्ञ में श्रीकृष्णका पूजन जो पाद्य अर्घ्य आदि क्रमसे होना चाहिये उसको शिशुपाल ने रोका॥

७–शिशुपालवधपर्व–इस पर्व में शिशुपालने श्रीकृष्णको गाली दी और श्रीकृष्णने उसका शिर काट डाला १३६॥

८–द्यूतपर्व–इस पर्वमें दुर्योधनने भीमसेनकी हँसीका युधिष्ठिरके राजसूय यज्ञ में बुरा मानकर छलमय जुआ रचा और उस जुएमें दुर्योधन के मामा महाज्वारी शकुनी ने युधिष्ठिर से सब राज्य और धन जीतलिया १३७।१३८॥

९–अनुद्यूतपर्व–इस पर्व में द्रौपदी को सभामें बुलाकर दुश्शासन ने उसका पट खींचा और उस पटका पार न पाया फिर धृतराष्ट्र ने द्रौपदीको सबके समझानेसे ३ वरदान दिये और फिर दुर्योधन के कहनेसे युधिष्ठिरसे फिर दुबारा जुआ धृतराष्ट्रने कराया और उसमें पांडवोंसे सब जीतकर उन को वनवास दिया १३९। १४१॥

महाभारत का तीसरा पर्व वनपर्व कहलाता है उसमें २६९ अध्याय ११६६४ श्लोक और १९ छोटे छोटे पर्व हैं उनके नाम और जिस जिसमें जो जो कथाहैं वह आगे कहतेहैं २०५। २०६॥

१–आरण्यपर्व–इस पर्व में पांडवोंका वनको जाना उनके साथ ब्राह्मण और हस्तिनापुर के लोगों का जाना उनके लिये अन्नके वास्ते युधिष्ठिर को सूर्य का आराधन करना विदुरजी को दुर्योधन करके निकालना और फिर बुलाना पांडवों के मारनेकी सलाह होना उस खोटे कामके न करनेके लिये व्यासजी का निषेध करना और मैत्रेयजीका आना और दुर्योधन को समझाना और उनका कहा न माननेके कारण से मैत्रेयजीका दुर्योधनको शाप देना यह सब कथा वर्णन की है और इसी पर्व में भीमसेनने किर्मीरदैत्य को मारा और युधिष्ठिरके पास पांचालदेशके आदमी और यादवलोग और श्रीकृष्णजी आये और कृष्णके सामने द्रौपदीने विलाप किया और द्रौपदी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

को कृष्ण ने समझाया और सुभद्रा को कृष्ण द्वारका लेगये और द्रौपदी के पुत्रोंको धृष्टद्युम्न लेगया और द्रौपदी युधिष्ठिर और भीमसेन का संवाद हुआ और युधिष्ठिरके पास व्यासजी आये और व्यासजी ने युधिष्ठिर को मंत्रविद्या दी और पांडव द्वैतवनको गये १४३ । १५७ ॥

२–अर्जुनका तपस्यागमनपर्व–इस पर्व में अर्जुन दिव्य अस्त्र मिलने के लिये तपस्याको गये १५८ ॥

३–कैरातपर्व–इस पर्व में महादेवजी किरात का रूप धरके अर्जुनके पास आये और उसके युद्ध से प्रसन्न होकर पाशुपतआदि अस्त्र दिया १५९ ॥

४–इंद्रलोकाभिगमनपर्व–इस पर्व में अर्जुन अस्त्रविद्या सीखने के लिये इन्द्रलोक को गये और धृतराष्ट्र को यह सुनकर बड़ी चिन्ता उत्पन्नहुई और युधिष्ठिरने जुएकी यादकरके विलाप किया इसी पर्वमें नल और दमयन्तीकी कथा है और फिर पांडवों के पास स्वर्ग से लोमश ऋषि आये और उन्हों ने अर्जुनका स्वर्गमें अस्त्रविद्या सीखनेका संदेशा कहा १६० । १६४ ॥

५–युधिष्ठिरतीर्थयात्रापर्व–इस पर्वमें अनेक तीर्थोंका माहात्म्य और यात्रा का फल कहाहै और पांडव पुलस्त्यतीर्थ को गये और गयऋषि के यज्ञ अगस्त्यऋषि शृंगीऋषि और परशुरामका वर्णन और सहस्रबाहुका वध और प्रभासतीर्थमें पांडवों और यादवों का मिलाप और च्यवनऋषिकी कथा और राजा मान्धाता और जंतूका आख्यान और राजा शिबिके धर्मकी परीक्षा और अष्टावक्रसंवाद और गंधमादन पर्वतकी यात्रा और नारायणनाम आश्रममें वास करने की कथा और भीमसेन और हनूमान्‌जी का मिलाप यह सब बातें इस पर्व में वर्णन की हैं और इसी पर्व में भीमसेनसे बड़े २ राक्षसों और मणिमत आदि महाबलवान् यक्षोंसे युद्ध हुआ १६५ । १८० ॥

६–जटासुरवधपर्व–इस पर्व में भीमसेन ने जटासुर दैत्यको मारा और भीमसेनको द्रौपदी ने उत्साह बढ़ाया इसी पर्व में राजऋषि वृषपर्वाके गमन और पांडवोंके आर्ष्टिषेणके आश्रममें जानेकी भी कथा है १८१ । १८२ ॥

७–यक्षयुद्धपर्व–इस पर्व में पांडव कैलास पर्वत पर चढ़गये और वहां मणिमतआदि यक्षों से बड़ा युद्ध हुआ और अर्जुनका मिलाप हुआ १८३ । १८४ ॥

८–निवातकवचयुद्धपर्व–इस पर्व में अर्जुन ने निवातकवच नाम दैत्यों

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

को मारकर गुरुदक्षिणा दी और युधिष्ठिर को स्वर्ग से लाये हुये सब अस्त्र दिखलाये १८५। १८६॥

९–अजगरपर्व–इस पर्व में पांडव गंधमादन पर्वतसे उतरे और वहां भीमसेनको एक अजगरने पकड़ा और युधिष्ठिरसे उस अजगरसे प्रश्नोत्तर हुये और अजगर दिव्य देह पाकर स्वर्गको चलागया और पांडव काम्यवन में आये और वहां श्रीकृष्णसे मिलाप हुआ १८७। १९१॥

१०–मार्कण्डेयसमागमपर्व–इस पर्वमें मार्कण्डेयजी का पांडवों से मिलाप हुआ और मार्कण्डेयजीने पांडवों से राजा पृथु के समेत अनेक उपाख्यान कहे जिसके कारणसे यह संवाद एक भिन्न पुराण कहलाता है-और इसी में ऐन्द्रद्युम्न और धुन्धुमार और मत्स्यका भी उपाख्यानहै १९२। १९४॥

११–द्रौपदीसत्यभामासंवाद–इस पर्व में सत्यभामाने द्रौपदी से पतिव्रता माहात्म्य और आंगिरस आख्यान वर्णन किया है और पांडवोंके द्वैतवन में आनेकी भी कथा है १९५॥

१२–घोषयात्रापर्व–इस पर्व में दुर्योधन बछड़ा मोल लेने को पैंठ को बड़े ठाटसे जाता था राहमें उसको सब साथियों सहित गंधर्वों ने बांधिरक्खा तब उन सबको अर्जुनने छुटाया १९६॥

१३–मृगस्वप्नपर्व–इस पर्व में वनके मृगोंने युधिष्ठिरको स्वप्न दिया कि तुम यहां से चलेजाओ तो हमारे प्राण बचें और युधिष्ठिर उस वनसे भाइयों सहित दूसरे वनको चलेगये १९७॥

१४–व्रीहिद्रोणिकआख्यानपर्व–इस पर्व में व्रीहि और द्रोणकी कथा बड़े विस्तार से कही है और दुर्वासा ऋषि की भी कथा इसी में है १९८॥

१५–द्रौपदीहरणपर्व–इस पर्वमें जयद्रथ द्रौपदीको इकल्ला देखकर हरलेगया और भीमसेनने पकड़कर उसका शिर मूड़कर उसके पांच चोटी रखदीं और उसे छोड़दिया १९९। २००॥

१६–रामोपाख्यानपर्व–इस पर्व में रामचन्द्रावतार की सब कथा विस्तारपूर्वक कही है २०१॥

१७–सावित्रीमाहात्म्यपर्व–इस पर्वमें सावित्रीकी महिमा कही है॥

१८–कर्णकुंडलहरणपर्व–इस पर्वमें कर्णने इन्द्रको अपने कानोंके कुंडल देदिये और इन्द्रने कर्णको एक शक्ति दी और यह कहा कि इससे तू जिसे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मारैगा वह मरजायगा परंतु यह शक्ति फिर दूसरेके मारनेके कामकी न रहेगी॥

१६–अरणीहरणपर्व–इस पर्व में धर्मदेव ने मृगरूप धरकर ऋषियों के अरणीकाष्ठ हरलिये और युधिष्ठिर ने मृगरूपी धर्म के प्रश्नों का उत्तर देकर अरणीकाष्ठ दिलवाये और पांचों पांडवों को वरदान मिला और पांचों पांडव वहां से पञ्चाल की ओर चलदिये २०२। २०४॥

महाभारतका चौथापर्व विराटपर्व कहलाता है उसमें ६७ अध्याय २०५० श्लोक और ६ छोटे २ पर्व हैं उनके नाम और जिस जिसमें जो जो कथाहैं वह आगे कहते हैं २०५। २०६॥

१–विराटपर्व–इस पर्वमें पांडवोंके विराटनगर जानेकी कथा है॥

२–पांडवप्रवेशपर्व–इस पर्व में पांडवों ने अपने अस्त्र चिताभूमि पर एक ढोकर के वृक्षपर छिपाकर रखदिये और विराटनगर में प्रवेश किया॥

३–समयपालनपर्व–इस पर्व में पांडवोंने अनेक अनेक छल के रूप धरकर उस नगर में वास किया २०७। २०८॥

४–कीचकवधपर्व–इस पर्व में भीमसेन ने कीचक नाम दैत्यको जो द्रौपदी से मिलने की प्रार्थना करताथा मारडाला और इसी पर्व में दुर्योधन ने पांडवों को ढूंढ़ने के लिये बड़े चतुर दूत भेजे परन्तु पता नहीं पाया २०९। २१०॥

५–गोग्रहणपर्व–इस पर्वमें विराट राजा की गौयें त्रिगर्तलोग हरलेगये उसपर बड़ा युद्ध हुआ और त्रिगर्तलोग राजा विराटको पकड़लेगये तब भीमसेनने युद्ध करके राजा विराटको और गौओंको छुड़ाया २११। २१२॥

६–अभिमन्युविवाह–इस पर्व में राजा विराट का गोधन कौरवलोग लेगये और अकेले अर्जुन ने जाकर सब कौरवों को मारभगाया और अकेला गौयें भी छुड़ालाया तब राजा विराट ने अपनी बेटी उत्तरा अर्जुन को दी और अर्जुनने उसका विवाह अपने बेटे अभिमन्यु से करा दिया २१३। २१५॥

महाभारतका पांचवां पर्व उद्योगपर्व कहलाता है उसमें १८६ अध्याय ६६९८ श्लोक और १३ अनुपर्व हैं उनके नाम और जिस जिस में जो जो कथा है वह आगे कहते हैं २१६॥

१–उद्योगपर्व–इस पर्व में पांडव और दुर्योधन दोनों युद्धमें श्रीकृष्ण से सहायता मांगने गये और कृष्ण उन दोनों की रुचिके अनुसार दुर्योधनको १ अक्षौहिणी सेना देकर पांडवों के मंत्री बने और राजा शल्य वचन हारकर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दुर्योधन का साथी युद्ध में हुआ और पांडवों से कहा कि तुम जीतोगे और पांडवोंने कौरवोंके पास पुरोहित भेजा २१७। २२५॥

२–पांडवोंके समीप संजयआगमनपर्व–इस पर्वमें धृतराष्ट्र ने इस उपाधिके मिटानेके लिये संजयको पांडवोंके पास भेजा २२६। २२७॥

३–धृतराष्ट्रचिन्तापर्व–इस पर्व में धृतराष्ट्र को इस उपद्रव के उठने से बड़ी चिन्ता हुई और धृतराष्ट्र को विदुरजी ने और सनत्सुजात मुनि ने समझा कर उनके मनकी चिन्ता दूर की और संजय ने सभा में श्रीकृष्ण और अर्जुन की परम प्रीति का हाल कहा २२८। २३१॥

४–भगवत्यानपर्व–इस पर्व में श्रीकृष्ण आप इस युद्धके शांत करनेको कौरवोंके पास गये और दुर्योधन और कृष्णसे प्रश्नोत्तर हुये २३२। २३३॥

५–मातलिउपाख्यान–इस पर्व में मातलि के वर ढूंढ़ने और दंभोद्भव की कथाहै २३४॥

६–गालवपर्व–इस पर्व में गालव महात्मा का चरित्र और विदुरजी का अनुशासन वर्णन कियाहै २३५॥

७–कर्णश्रीकृष्णविवादपर्व–इस पर्व में दुर्योधन ने कर्णआदिकी सलाहसे कृष्ण के पकड़ने की सलाह की और कृष्णने अपना विराट स्वरूप सब को दिखलाया और फिर श्रीकृष्णने कर्ण को अकेले में लेजाकर समझाया परन्तु उसने वहां भी उत्तर दिया और कहना न माना २३६। २३७॥

८–कृष्णसभाप्रवेशपर्व–इस पर्व में श्रीकृष्ण हस्तिनापुरसे लौटकर पांडवों के पास आये और सभा करके कौरवों का सब वृत्तान्त कहा २३८॥

९–उद्योगपर्व–इस पर्व में पांडवों ने श्रीकृष्ण की सलाह से सब युद्ध की तैयारी की २३९॥

१०–सैन्यानिर्याणपर्व–इस पर्व में पांडव और कौरवों की सेना का कुरक्षेत्र में युद्ध के निमित्त जाने का हाल वर्णन किया है २४०॥

११–उलूकदूतागमनपर्व–इस पर्व में दुर्योधन के उलूक नाम दूत को पांडवों के पास भेजने की कथा है २४१॥

१२–रथातिरथसंख्यापर्व–इस पर्व में रथी और महारथियोंकी संख्या की गई है॥

१३–अंबोपाख्यानपर्व–इस पर्व में अम्बाकी कथा और शिखण्डीकी उत्पत्ति वर्णन की है २४२॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

महाभारत का छठा पर्व भीष्मपर्व कहलाता है उसमें ११७ अध्याय ५८८४ श्लोक और ५ अनुपर्व हैं उनके नाम और जिस २ में जो २ कथा है वह आगे कहते हैं २५३। २५४॥

१–भीष्माभिषेचनपर्व–इस पर्व में दुर्योधन ने भीष्मपितामह को सेनापति किया है २४५॥

२–जम्बूखण्डपर्व–इस पर्व में संजयने जम्बूखण्डका निर्माण और युधिष्ठिर की सेनाका विषाद वर्णन किया है २४६॥

३–भूमिपर्व–इस पर्व में सब द्वीपों का फैलाव कहा है॥

४–भगवद्गीतापर्व–इस पर्व में अर्जुन को मोह हुआ और उसने युद्ध करने से मनको खींचा तब श्रीकृष्ण ने गीतामें मोक्षदर्शी कारण दिखाकर अर्जुन को फिर युद्ध करने को तैयार किया २४७। २४८॥

५–भीष्मवधपर्व–इस पर्व में भीष्मपितामहने १० दिन घोर युद्ध किया फिर अर्जुनने श्रीकृष्णके वचनों के अनुसार शिखण्डी को आगे करके भीष्मपितामह को रथसे गिरादिया और भीष्मपितामहने उत्तरायण सूर्य में प्राण छोड़ने की इच्छासे बाणोंकी शय्यापर शयन किया २४९। २५२॥

महाभारत का सातवां पर्व द्रोणपर्व कहलाताहै उसमें १७० अध्याय ८९०९ श्लोक और ८ अनुपर्व हैं उनके नाम और जिस २ में जो २ कथा है वह आगे कहते हैं २६६। २६७॥

१–द्रोणाभिषेचनपर्व–इस पर्व में भीष्मजी के गिरजाने से दुर्योधनने द्रोणाचार्य को सेनापति करके अभिषेक तिलक किया २५५॥

२–संसप्तकवधपर्व–इस पर्व में द्रोणाचार्यने युधिष्ठिरको पकड़कर दुर्योधन को देनेकी प्रतिज्ञा की और दुर्योधन ने संसप्तकोंको आज्ञा दी कि अर्जुन को युधिष्ठिर के पास से दूर लड़ाते हुये लेजावो क्योंकि अर्जुन जबतक युधिष्ठिरके पास रहेगा तबतक द्रोणाचार्य युधिष्ठिरको नहीं पकड़ सकेंगे और इसी पर्वमें अर्जुनके हाथसे राजा भगदत्तके मारेजानेकी भी कथाहै २५६। २५७॥

३–अभिमन्युवधपर्व–इस पर्व में अर्जुनका बेटा अभिमन्यु व्यूहमें घुसगया और वहां उसको सात महारथियों ने मिलकर मारा २५८॥

४–प्रतिज्ञापर्व–इस पर्व में अर्जुन ने अपने पुत्र अभिमन्युको मारनेवाले जयद्रथके मारनेकी प्रतिज्ञा की॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

५–जयद्रथवधपर्व–इस पर्व में अर्जुन ने अपनी प्रतिज्ञा के अनुसार सात अक्षौहिणी सेना मारकर जयद्रथको मारा और इसी पर्व में भीमसेन और सात्यकी युधिष्ठिरकी आज्ञा से अर्जुनकी सहायता करने को व्यूह तोड़कर फौज के भीतर घुसगये २५९। २६०॥

६–घटोत्कचवधपर्व–इस पर्व में संपूर्ण संसप्तक राजा अलंबुष, शुतायु, जलसंध, सोमदत्ति और अन्य बहुतसे राजा और अंतमें घटोत्कच मारेगये॥

७–द्रोणवधपर्व–इस पर्व में राजा द्रुपद और विराट नगर का राजा और अन्य भी बहुत से राजा मारेगये फिर अंतमें द्रोणाचार्य मारेगये २६१।२६२॥

८–नारायणास्त्रमोक्षपर्व–इस पर्व में द्रोणाचार्य के मारेजाने पर उनके पुत्र अश्वत्थामाने उग्र नारायण अस्त्र चलाया और इसी में रुद्रजीका माहात्म्य व्यास जीका आगमन और श्रीकृष्ण तथा अर्जुनकी महिमा भी कही है २६३।२६५॥

महाभारत का आठवां पर्व कर्णपर्व कहलाता है उसमें ६९ अध्याय और ४९६४ श्लोक हैं इसमें कोई अनुपर्व नहीं है और इस पर्व में राजा शल्य और कर्णका आपसका विवाद पांड्य और दण्डसेन और दण्डराजाओं का अश्वत्थामाके हाथ से वध और कर्णका युधिष्ठिरको सब धनुर्द्धारी राजाओं के देखते हुये अत्यंत संशयकराना और युधिष्ठिर और अर्जुन दोनों में परस्पर क्रोध करना और श्रीकृष्णका अर्जुनको नीति सिखाना और भीमसेन का अपनी प्रतिज्ञाके अनुसार दुश्शासनको मारकर उसके हृदयका लोहू पीना और अन्त में कर्णका अर्जुन के हाथसे माराजाना यह कथा वर्णन की है २६८।२७५॥

महाभारत का नवां पर्व शल्यपर्व कहलाता है उसमें ५९ अध्याय ३२२० श्लोक और ५ अनुपर्व हैं उनके नाम और जिस २ में जो २ कथा है सो आगे कहते हैं २८४। २८५॥

१–शल्यपर्व–इस पर्व में सब शूरवीरोंके मारेजानेसे दुर्योधन ने राजा शल्यको सेनाका आज्ञा देनेवाला अधिपति बनाया और इसी पर्व में कुरुवंशके सबमुखिया लोग मारेगये और राजा शल्य भी युधिष्ठिरके हाथ से मारागया २७६।२७७॥

२–दुर्योधनह्रदप्रवेश–इस पर्व में दुर्योधन अपने मामा शकुनी को सहदेवके हाथ से मराहुआ और सेनाको बहुत थोड़ी रहगई देखकर, एक तालाब में पानी रोककर जा सोया २७८। २७९॥

३–गदायुद्धपर्व–इस पर्व में किसी पारितोषिक चाहनेवाले मनुष्यने दुर्यो-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

धन के तालाबमें जा सोनेका हाल कृष्णसे कहा और कृष्ण युधिष्ठिर और भीमसेन ने वहां जाकर उसको बुराभला कहकर युद्ध करने को ललकारा और वह क्रोध से खड़ा होकर भीमसेन से गदायुद्ध करनेलगा और दो प्रहर युद्ध के बाद भीमसेनने अपनी गदा से दुर्योधन की दोनों मोटी जांघें तोड़डालीं और इसी पर्व में बलरामजी भी तीर्थयात्रा करके लौट आये ॥

४–सरस्वतीपर्व–इस पर्व में सरस्वतीतीर्थकी कथा और महिमा है ॥

५–तीर्थवंशानुकीर्तनपर्व–इस पर्व में बहुत से तीर्थों की उत्तमता और पवित्रताका हाल वर्णन किया है २८०। २८३ ॥

महाभारत का दशवां पर्व सौप्तिकपर्व कहलाता है उसमें १८ अध्याय ८७० श्लोक और २ अनुपर्व हैं उनके नाम और जिस जिस में जो २ कथा है सो आगे कहते हैं ॥

१–सौप्तिकपर्व } इन दोनों पर्वों में दुर्योधन की जंघा टूटने के पीछे उस
२–ऐषिकपर्व } के पास अश्वत्थामा कृपाचार्य और कृतवर्मा आये और दुर्योधन का हाल देखकर अश्वत्थामा ने सब पांडव आदि को नाश करने की प्रतिज्ञा की उपरान्त वहां से वनमें जहां पाण्डवी सेनाथी आकर छुप रहे और वहां अश्वत्थामा ने रात्रि में अपने पिताका मरना याद किया और क्रोधित होकर सबके नाश करने के लिये विरूपाक्ष नाम रुद्रका तत्काल आराधन किया और वरदान पाकर युधिष्ठिर की सब सेना और पांचाल देश के राजा के पुत्र और द्रौपदी के पुत्र सबको रात्रि में सोते हुये मारडाला फिर द्रौपदी अपने भाई और पुत्रों के मरने के शोक में अपने पांचों पतियों के सामने बैठकर रोनेलगी और भीमसेन यह देखकर गदा लेकर अश्वत्थामा के पीछे दौड़े और अश्वत्थामाने सब पांडवों के मारने को (अपांडवाय इति अस्त्रम्) यह मन्त्र कहकर ब्रह्मास्त्र मारा और कृष्णने नैव ऐसा कहकर उस ब्रह्मास्त्रका तेज दूर करदिया और अर्जुन ने उस ब्रह्मास्त्र को अपना अस्त्र छोड़कर शांत किया और अश्वत्थामा को पकड़कर उसकी चोटी की मणि निकालकर द्रौपदी को दी २८६। ३०५ ॥

महाभारत का ग्यारहवां पर्व स्त्रीपर्व कहलाता है उसमें २७ अध्याय और ७७५ श्लोक और ५ अनुपर्व हैं उनके नाम और जिस २ में जो २ कथा है वह आगे कहते हैं ३१६। ३१७ ॥

१–स्त्रीविलापपर्व–इस पर्व में राजा धृतराष्ट्र और उनकी स्त्री गांधारी ने

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

विलाप और क्रोध किया और श्रीकृष्ण और विदुरजी ने मोक्षदर्शी कारण कहकर उसके क्रोध को शांत किया और इसी पर्व में सब क्षत्रियों की स्त्रियोंने रणभूमि में आ अपने पिता पुत्र आदि सब सम्बन्धियों को मराहुआ देखकर बड़ा विलाप किया और इसी पर्वमें धृतराष्ट्रने भीमसेन को मारना विचारकर उससे मिलाप चाहा और श्रीकृष्ण ने उनका वह भाव जानकर उनसे मिलने को भीमसेन की लोहेकी मूर्ति बनवाकर दी ३०६। ३१२॥

२–जलप्रदान और और्ध्वदैहिक श्राद्धपर्व } इस पर्व में युधिष्ठिरने सब मरेहुओं का दाह शास्त्रविधि से कराया और सबको जलांजली दान किया और कुन्तीने कर्णको व्यासजी से कहवाकर युधिष्ठिरसे अंजली दिलवाई ३१३। ३१५॥

महाभारत का बारहवां पर्व शान्तिपर्व कहलाता है उसमें ३२९ अध्याय और १४७३२ श्लोक और ३ अनुपर्व हैं उनके नाम जिस २ में जो २ कथा है सो आगे कहते हैं ३२२। ३२३॥

१–शांतिपर्व–इस पर्व में राजा युधिष्ठिर को सब भाई मामा आदिके मारे जाने से बड़ा खेद हुआ और भीष्मपितामह ने उनके दुःखको अनेक २ धर्म कहकर दूर किया ये धर्म राजाओं को अवश्य जानने चाहियें ३१८। ३१९॥

२–आपद्धर्मपर्व–इस पर्व में भीष्मपितामह ने वे धर्म युधिष्ठिर से कहे हैं जिन का विचार आपत्काल में मनुष्य को करना चाहिये मनुष्य इनको जान कर सर्वज्ञ होजाता है ३२०॥

३–मोक्षधर्मपर्व–इस पर्व में भीष्मपितामह ने मोक्षके साधन वर्णन किये हैं ३२१॥

महाभारत का तेरहवां पर्व अनुशासनपर्व कहलाता है इसमें १४६ अध्याय और ८००० श्लोकहैं इस पर्व में अर्थ धर्म के व्यवहार, सब दानों के फल, सत्य बोलने की परमगति, गो, ब्राह्मणों का माहात्म्य और सब धर्मों और रहस्यों का वर्णन यह सब भीष्मपितामह ने युधिष्ठिर से कहा है और इसी पर्व में भीष्मपितामह देहत्याग करके स्वर्गवासी हुये २२४। २३०॥

इसके आगे महाभारत का चौदहवां पर्व आश्वमेधिक है उसमें १०३ अध्याय और ३३२० श्लोक हैं इस पर्व में प्रथम संवर्तमरुतीयका आख्यान है फिर पांडवोंको सुवर्ण के खजाने मिलने की कथा है इसी पर्व में परीक्षित का

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जन्म हुआ और अश्वमेध यज्ञ करने को अर्जुन सेना लेकर दिग्विजय को गये और वहां अनेक राजाओंसे युद्ध हुआ और अर्जुन को युद्धमें उलूपी गंधर्विणी के पुत्र बभ्रुवाहन ने पराजय का सा भय दिखाया और अश्वमेध यज्ञ समाप्त हुआ इसी पर्व में नकुल का भी आख्यान है २३१। २३५॥

महाभारत का पन्द्रहवां पर्व आश्रमवासपर्व कहलाता है उसमें ४२ अध्याय १५०६ श्लोक और ३ अनुपर्व हैं उनके नाम और जिस २ में जो २ कथा है सो आगे कहते हैं ३४२। ३४३॥

१–आश्रमवासपर्व–इस पर्व में राजा धृतराष्ट्र युधिष्ठिरका राज्य छोड़कर विदुरजी के साथ गांधारी सहित वनको गये और उनकी सेवाके लिये कुन्ती भी अपने पुत्रों के राज्यका सुख छोड़कर चली गई ३३६। ३३७॥

२–पुत्रदर्शनपर्व–इस पर्वमें स्वर्ग से धृतराष्ट्र के सब पुत्र और सब राजा भी धृतराष्ट्रसे मिलनेको वनमें आये और उनसे मिलनेके उपरान्त धृतराष्ट्र का शोक दूर होगया फिर धृतराष्ट्र विदुर और संजयने अन्त में परमगति पाई ३३८। ३४०॥

३–नारदागमनपर्व–इस पवमें युधिष्ठिरके पास नारदजी आये नारदजीने ५६ कोटि यादवोंके नाश होनेकी भविष्यबात सुनाई ३४१॥

महाभारत का सोलहवां पर्व मौशलपर्व कहलाता है उसमें ८ अध्याय और ३२० श्लोक हैं इस पर्वमें सब यादवलोग ब्राह्मणके शापसे खारी समुद्रके किनारे मद्य पीकर आपसमें कटकर मरगये और श्रीकृष्ण बलराम यद्यपि कालको भी जीतने में समर्थ थे परन्तु नरदेह धरकर उसके धर्मको न छोड़ा और कालको अंगीकार किया फिर द्वारकाको अर्जुन गये और उनकी गति देखकर अर्जुनको बड़ा दुःख हुआ फिर अर्जुनने सबकी क्रिया कर्म करनेको अपनी सामर्थ्य न देखकर वसुदेव श्रीकृष्ण और बलराम इनकी देहका संस्कार किया और द्वारका से सब यादवकुलकी स्त्री और लड़कों को लेकर हस्तिनापुर को चले राहमें लुटेरोंने अर्जुनको लूटा उस समय अर्जुनने गांडीवधनुष और अन्य २ अस्त्र भी चलाये परन्तु किसी ने काम न दिया तब अर्जुनका मन बड़ा दुःखित हुआ परन्तु गीता का ध्यान करके संतोष किया और हस्तिनापुर पहुँचने पर सब कथा युधिष्ठिरसे कही और इसी पर्वमें युधिष्ठिर आदि पांचों पांडवों ने राज्य त्यागदिया ३४४। ३५३॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इसके आगे महाभारत का सत्रहवां पर्व प्रास्थानिकपर्व है उसमें ३ अध्याय और ३२० श्लोक हैं इस पर्वमें पाण्डवोंने द्रौपदी सहित राज्य छोड़कर लम्बीराह ली और बीचमें लाल समुद्रके पास अग्निदेव से मिलाप हुआ और अर्जुनने अग्निदेवको गांडीव धनुष देदिया और फिर पांचों पांडव हिमालयमें पहुँचे और वहां युधिष्ठिर ने अपने चारों छोटेभाइयों को द्रौपदी सहित हिमालयमें गिरकर मरजाते देखा और मोह छोड़कर युधिष्ठिर आगे को चलेगये ३५४।३५८॥

महाभारत का अठारहवां पर्व स्वर्गारोहणपर्व कहलाता है इसमें ५ अध्याय और २०६ श्लोक हैं इस पर्व में युधिष्ठिर के रथपर चढ़कर स्वर्गके जाने और धर्मराज करके युधिष्ठिर के धर्म की परीक्षा कुत्तेका रूप धरकर करने और युधिष्ठिर के मानसी गंगामें स्नान करके मनुष्य सम्बन्धी शरीर को छोड़ कर दिव्यरूप धारण करने की और स्वर्ग में देवताओं से पूजित रहने की कथा है ३५६। ३६६॥

इन अठारह पर्वों के उपरान्त १२००० श्लोक हरिवंश पुराण के हैं इसमें श्रीकृष्णचरित्र और भविष्य बातें कही हैं हरिवंश पुराण तो बहुत है परन्तु महाभारत में १२००० भविष्यवृत्तान्त तक लिया जाता है और इसी को मिलाकर एक लाख भारत पूरा होता है इतनी कथा सुनाकर सूतपुत्र बोले कि हे ऋषियो! मैंने यह उत्तम और पुण्य के देनेवाले महाभारत का पर्व संग्रह और संक्षेप कथा सुनाई कि जिसमें युद्ध की इच्छा से १८ अक्षौहिणी इकट्ठी हुई और १८ दिन युद्ध हुआ ३६७। ३६६ यही कथा अब आगे विस्तारपूर्वक कहेंगे इस महाभारत को जो मनुष्य न जानता हो और सब वेद आदि उसने अच्छीतरह देखे हों तो इस एक के न जानने से वह अज्ञानी रहता है ३७० क्योंकि इस महाभारतमें सब वेद सब शास्त्र सब पुराण और सब धर्मोंका निचोड़ व्यासजी ने कहा है और सबका इसमें आश्रय है ज्ञानी लोग इसको पढ़कर दूसरे आख्यानों को इस तरह नहीं सुनते जैसे कोयलकी वाणी सुनकर कौवेकी बोली अच्छी नहीं लगती और कविलोग इसकी प्रशंसा इस प्रकार से नहीं करसक्के जैसे गृहस्थाश्रम के धर्मको अन्य तीन आश्रमवाले नहीं कहसक्के हैं इसके पढ़ने से मनुष्यकी बुद्धि धर्मको ग्रहण करती है और वह धर्म ही परलोक में जाता है इससे इसका जानना अवश्य है इस महाभारत के पाठ करनेवाले को पुष्कर तीर्थ का स्नान करना कुछ आवश्यक नहीं

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

क्योंकि इसका पढ़नेवाला पवित्र होजाताहै जो इसका पाठ रात्रि में करता है उसके दिनके किये हुये पाप दूर होजाते हैं और जो दिनमें पाठ करै उसके रात्रि के कियेहुये पाप मिटजाते हैं हे ऋषियो! यदि कोई मनुष्य सौ गौ नित्य सुवर्ण से सींग मढ़ाकर वेद और शास्त्र के जाननेवाले ब्राह्मणको दे और दूसरा मनुष्य इस पुण्यरूपी महाभारत को सुनता हो तो दोनों का पुण्य बराबर है यह पर्व संग्रह अध्याय इस निमित्त कहा गया है कि जिससे समुद्र में नावकी तरह इस समुद्ररूपी महाभारतके अठारह पर्वों की कथा इस संक्षेप वृत्तान्त को जानने से जल्दी समझमें आवे और जो फल सब भारत के पाठ करने का है वही इस एक अध्याय का है क्योंकि इसमें सब भारतकथा संक्षेप करदी है ३७१। ३८४॥

इति श्रीभाषामहाभारते आदिपर्वणि द्वितीयोऽध्यायः॥ २॥

तीसरा अध्याय।

इसमें जनमेजय के यज्ञ में कुतियाका शाप देना और धौम्यऋषि के तीन शिष्य और राजा पौष्यके कुंडलदान की कथा का वर्णन है॥

इतनी कथा सुनाकर सूतपुत्र बोले कि हे ऋषियो! राजा जनमेजय कुरुक्षेत्र में सर्पसत्र यज्ञ कररहा था उसके भाई श्रुतसेन उग्रसेन और भीमसेन उस यज्ञ के प्रबन्धमें थे उस समय उस यज्ञमें एक कुत्ता चला आया १ उसको राजाके तीनों उक्त भाइयोंने मारकर भगा दिया वह कुत्ता रोता हुआ अपनी माके पास पहुँचा २ और कहा कि मुझको राजा जनमेजय के भाइयों ने मारा है वह कुतिया अपने बेटे की बात सुनकर बोली कि तैंने कुछ उनका बिगाड़ा होगा ३। ५ कुत्ता बोला कि हे माता! मैंने किसी यज्ञकी सामग्री की तरफ आंख उठाकर भी नहीं देखा खाना तो कहां ६ वह कुतिया यह बात सुनकर राजा जनमेजय के पास गई और कहा कि आपके भाइयोंने मेरे बेटे को विना अपराध क्यों माराहै उसने आपकी किसी यज्ञकी सामग्री की तरफ आंख उठाकर भी नहीं देखा ७। ८ यह सुनकर उस कुतियाकी बातका किसीने जवाब नहीं दिया सब चुपके हो रहे तब वह कुतिया बोली कि तुमने मेरे लड़के को विना अपराध मारा है इससे तुमको भी अकस्मात् भय होगा ९ कुतिया का यह शाप सुनकर राजा जनमेजय को बड़ी चिन्ता रहने लगी सब इन्द्रियां शिथिल होगईं और शरीर में व्याकुलता और क्रोध रहने लगा और मन में

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यह ज्ञान हुआ कि हमने यह सर्पों की हत्या निरर्थक की है सो उसका फल हम को मिला १० इसके उपरान्त राजा जनमेजय अपना यज्ञ समाप्त करके हस्तिनापुरको आये और किसी ऐसे ब्राह्मणको अपना पुरोहित बनानेके लिये ढूंढ़ने लगे जो इस शापसे छुटावे और इस हत्याको निवारण करे ११ एक दिन राजा जनमेजय अहेर खेलनेको वन में गये और वहां एक आश्रम देखा १२ उस आश्रम में श्रुतिश्रवा नामी एक ऋषि रहते थे और उनके सोमश्रवा नाम एक पुत्र था १३ राजा उस आश्रममें गये और सोमश्रवा से अपना पुरोहित बनानेकी प्रार्थना करके उनके पिता श्रुतिश्रवाजी से कहा कि मेरी आप से भी यही प्रार्थना है कि आप अपने इस पुत्र को मेरा पुरोहित बनने की आज्ञा दीजिये १४। १५ ऋषि यह सुनकर बोले कि हे राजा ! हमारा यह पुत्र सर्पिणी के गर्भ से उत्पन्न हुआहै सर्पिणी ने हमारे वीर्य को खालिया था उसके प्रभावसे इसकी उत्पत्ति है और यह बड़ा तपस्वी तेजधारी और अपने स्वाध्याय को अच्छी तरह जानता है और महादेव जी के किये हुये दुःख के सिवाय और सब दुःख और पापों को यह दूर कर सक्ता है १६। १७ परंतु इस का नियम यह है कि जो कोई ब्राह्मण इससे कुछ मांगता है यह उसको वही देता है जो तुम इस बातको अंगीकार करो और सहसको तो यह आपका पुरोहित बनसक्ता है १८ यह सुनकर राजा जनमेजय ने कहा कि बहुत अच्छा १९ और सोमश्रवाको अपनेसाथ लेकर घरको आये और अपने भाइयों से कहा कि हमने इन ऋषिपुत्रको अपना उपाध्याय और पुरोहित बनाया है ये जो कुछ आज्ञा दें उसको विना विचारे करना यह आज्ञा देकर राजा जनमेजय तक्षशिला नाम देशके विजय करनेको गये और उस देशको विजय किया २० इतनी कथा सुनाकर सूतजी बोले कि हे ऋषियो ! यह कथा तो यहां समाप्त हुई अब दूसरी कथा यह है कि एक धौम्यनाम ऋषि थे वह केवल जल पीकर रहते थे और उनके तीन शिष्य थे २१ एकका नाम उपमन्यु दूसरेका आरुणि और तीसरे का नाम वेद था सो उन धौम्यऋषिने पहिले अपने शिष्य आरुणि की गुरुभक्ति की परीक्षाके लिये उसको आज्ञा दी कि अमुक खेत में जल बहुत भराजाताहै तू जाकर उसकी मेड़ों को ऐसी ऊंची करदे कि उस खेत में बहुत जल न भरने पावै जो जल बहुत भर जायगा तो बीज गल जावेगा २२ यह सुनकर वह आरुणि उस खेतपर गया और उसकी मेड़ों को ऊंची

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

करने लगा परन्तु ऋषिने उस जलको अपने तपोबल से ऐसा प्रबल करदिया कि आरुणि उसको न रोकसका परंतु वह शिष्य विना झुंझलाये उपाय करता रहा जब देखा कि जल किसी प्रकार से नहीं रुकता है तब वह शिष्य उस जलके जानेके रास्ते पर मेड़बनकर आप लोटगया और अपने शरीर से उस जलको रोके रहा और यह समझकर कि जो यह कार्य बिगड़जायगा तो गुरुजी महाराज मुझको अयोग्य समझेंगे वहां से न उठा २३। २४ कुछ कालके उपरान्त धौम्यऋषिने दूसरे शिष्योंसे पूछा कि वह पांचाल देशका रहनेवाला आरुणि कहां है २५ शिष्योंने कहा कि महाराज ! आपहीने उसे खेतका जल रोंकनेको भेजा है यह सुनकर वह ऋषि आप उस खेतके पास गये और आरुणि आरुणि कहके पुकारने लगे २६। २७ आरुणि गुरुकी बोली सुनकर उस जलके जानेके रास्तेसे निकलकर गुरुके पास आया २८ और प्रणाम करके कहा कि मैं उस जलको अपने शरीर से रोक रहा था और किसी प्रकार से वह नहीं रुकता है आपकी टेर सुनकर उस जलके जाने के रास्ते से निकल कर आपके पास आया हूं अब जो कुछ आप आज्ञा दें सो करूं २९। ३० धौम्यऋषि उसकी गुरुभक्ति से बहुत प्रसन्न हुये और कहा कि तेरा नाम उद्दालक प्रसिद्ध होगा दोनों लोकों में कल्याण होगा और विना परिश्रम किये तुझको गुरुसेवा के प्रभाव से सब वेद और शास्त्र कंठाग्र होंगे अब जहां तेरी इच्छा हो तहां जा इस प्रकार से वह आरुणि गुरु से वरदान पाकर पंजाब देशको चला गया ३१। ३३ उसके उपरान्त धौम्यऋषि ने अपने उपमन्यु नामी शिष्यको वनमें गाय चराने की आज्ञा दी सो वह उपमन्यु अपने गुरुकी आज्ञाके अनुसार गौओं को नित्य चरा लाता ३४। ३५ एक दिन धौम्यऋषिने पूछा कि तुम क्या भोजन करते हो जिससे ऐसे मोटे बनेहो उपमन्यु बोला कि महाराज नगर से भीख मांगलाता हूं और उसे खालेताहूं तब ऋषिने कहा कि ३६। ३७ जो भिक्षा मांगकर लाया करो सो सब हमारे पास रक्खा करो और जबतक हम आज्ञा न दें तबतक न खाया करो उपमन्यु ने कहा बहुत अच्छा उस दिनसे उपमन्यु जो कुछ भीख मांग कर लाता सो ऋषि के पास रख देता और ऋषि उसे खाने की आज्ञा नहीं देते थोड़े दिनोंके उपरांत ३८। ३९ ऋषिने उपमन्यु को वैसाही मोटा देखकर कहा कि हे उपमन्यु ! भीख तो हम लेलेते हैं तुम क्या खाकर रहते हो ४० यह सुनकर उप-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मन्यु बोला पहले भीख मांगकर आपके पास रख जाताहूं और मैं अपने लिये फिर दूसरी बार भिक्षा मांगलाता हूं ऋषि बोले ४१ कि यह तुम बड़ा अनुचित करते हो तुमको लज्जा नहीं आती कि दुबारा मांगने जाते हो ऐसा करनेसे फिर कोई किसीको भीख न डालेगा ४२ यह सुनकर उपमन्यु बोला कि बहुत अच्छा अब मैं दूसरी बार भीख मांगने न जाऊंगा फिर उपमन्यु नित्य गौ चरालाता और सायंकाल बिषे गुरुको आकर दण्डवत् करता ४३ एक दिन फिर गुरुजी ने पूछा कि उपमन्यु भीख तो हम लेलेते हैं और दुबारा तुम मांगने नहीं जाते अब कहो क्योंकर निर्वाह होता है ४४ उपमन्यु बोला कि महाराज आपकी गौओंका दूध पीकर रहताहूं यह सुनकर ऋषि बोले कि हमारी गौओं का दूध विना हमारी आज्ञा तुमको पीना उचित नहीं है ४५ उपमन्यु बोला बहुत अच्छा अबसे दूधपान न करूंगा फिर जब उपमन्यु को वही काम करते २ कुछ काल बीता ४६ तब ऋषिने फिर पूछा कि अब तौ हमने तुम्हारी सब ओरसे जीविका रोंकदी अब क्या खाकर रहते हो ४७ उपमन्यु बोला कि महाराज जो बछड़े गौओं का दूध पीते हैं उस समय उनके मुखसे फेन निकलताहै उसे खाकर मैं अपनी भूख मिटा लेताहूं ४८ ऋषि बोले कि बछड़े तेरी यह चाल देखकर अपने मुखसे दूध डाल देते होंगे यह बात तुम मत करो नहीं बछड़े लटजायँगे उपमन्यु ने कहा बहुत अच्छा ४९ फिर एक दिन उपमन्यु भूख से अत्यन्त दुःखी होकर आक वृक्षके पत्ते तोड़कर खागया ५० उसके प्रभाव से उपमन्युके नेत्र अंधे होगये और वह अन्धा होने से एक कुयें में गिर पड़ा ५१ उसदिन जब रात्रि होगई और उपमन्यु नहीं आया तब धौम्यऋषिने कहा कि आज उपमन्यु अभी तक क्यों नहीं आया है हम जानते हैं कि हमने उसकी जीविका रोंकदी है इस कारण से वह क्रोधित होकर वन में रहगया है ऐसा कहके मुनि अपने और चेलों को साथ लेकर उपमन्युके ढूंढ़ने को वनमें गये और उपमन्यु २ कहकर बुलाने लगे ५२। ५३ उपमन्यु अपने गुरुकी बोली सुनकर बोला कि महाराज मैं यहां कुयेंमें गिरपड़ा हूं भूखके मारे आक के पत्ते खागयाथा सो उससे मेरे नेत्र अंधे होगये हैं यह सुनकर ऋषि बोले ५४।५५ कि हे उपमन्यु तू देवताओंके वैद्य दोनों अश्विनीकुमारों की स्तुति कर उनकी कृपासे तेरे नेत्र अच्छे होजायँगे यह सुनकर वह उपमन्यु वेदकी ऋचाओं से अश्विनीकुमार देव वैद्यों की स्तुति करने लगा ५६ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्रपूर्वगौ पूर्वजौ चित्रभानू गिरावाशंसामितपसा ह्यनन्तौ दिव्यौ सुपर्णौ विरजौ विमानावधिक्षिपन्तौ भुवनानि विश्वा १ हिरण्मयौ शकुनी सांपरायौ ना सत्यदस्रौ सुनसौ वैजयन्तौ शुक्रं वयं तौ तरसासुवेमावधिव्ययंतावसितं विवस्व तः २ अस्तासुपर्णस्यवेलनवर्तिकाममुञ्चतामश्विनौ सौभगायतावत्सुवृत्तावनम न्तमाय यावत्सुमागाअरुणाउदावहन् ३ षष्टिश्च गावस्त्रिंशताश्चधेनंवराकं वत्संसुवतेतं दुहन्ति नानागोष्ठाविहिताएकदोहनास्तावश्विनौदुहतोधर्मसुख्यम् ४ एकां नाभिं सप्तशताअराःस्रिताप्राधिष्वन्याविंशतिरर्पिता अराः अनेमिचक्रं प रिवर्तते जरं मयाश्विनौ समनक्ति चर्षणी ५ एकं चक्रं वर्तते द्वादशारं षणाभिमे काक्षमृतस्य धारणम् यस्मिन्देवा अधिविश्वे विषक्तास्तावश्विनौ मुञ्चतं माविषीद तम् ६ अश्विनाविंदुमृतं वृत्तभूयोतिरोधत्तामश्विनौ दासपत्नी हित्वा गिरिम श्विनौ गामुदाचरन्तौ तद्वृष्टिमह्ना प्रस्थितौ बलस्य ७ युवां दिशोजनयथो दशाग्रे समानं मूर्ध्निरथयानं वियन्ती तासां यातमृषयोऽनुप्रयान्ति देवा मनुष्याः क्षितिमाचरन्ति ८ युवांवर्णान्विकुरुथो विश्वरूपांस्तेऽधिक्षिपन्ते भुवनानि विश्वा ते भानवोऽप्यनुसृताश्चरन्ति देवा मनुष्याः क्षितिमाचरन्ति ९ तौ नासत्याव श्विनौ वांमहेऽहं स्रजं च यां बिभृथः पुष्करस्य तौ नासत्यावमृतावृतावृधावृते देवास्तत्प्रपदेनसूते १० मुखेन गर्भं लभेतां युवानौ गतासुरेतत्प्रपदेनसूते सद्यो जातो मातरमत्ति गर्भस्तावश्विनौ मुञ्चथो जीवसेगाः ११ ॥

(अर्थ) यह स्तुति यद्यपि अश्विनीकुमारकी कही गई है परंतु यह पर-ब्रह्म परमात्माकी स्तुति है और वही अश्विनीकुमार है और अश्विनी-कुमार की जहां स्तुति है तहां दोकी स्तुति है सो ब्रह्मभी दो प्रकार का है और यहां संस्कृत श्लोक इसलिये लिखे गये हैं कि जो कोई इस स्तोत्रको नित्य भक्ति श्रद्धा से पाठ करैगा उसकी दृष्टि दिव्य रहैगी—अब आगे ऊपर कहे हुये स्तोत्रका अर्थ लिखते हैं। आप दोनों सृष्टिके पहिले विद्यमान थे और सब से पहिले उत्पन्न हुये और आप विचित्र प्रपंचवाले आकार करके अग्निरूप होकर प्रकाशमान हैं मैं आपकी स्तुति वाणी और श्रुतियोंसे वर पावनेकी इच्छासे करताहूं आप अनन्त हैं वृत्तिपूर्वक चैतन्यरूप से प्रकाशमानहैं पक्षी की तरह शरीररूपी वृक्षपर बैठे हैं तीनों गुणों से रहित हैं आपका प्रमाण नहीं है और पराक्रमको विक्षेप अर्थात् फेंकने की शक्ति से विश्वरूप नाना प्रकारके भुवनों को गेंदकी तरह उछालते हैं १ आप हिरण्मय शकुनिनाम

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ब्रह्म हैं सबके लय होने का अधिष्ठान भूतस्थान हैं आप अश्विनीकुमार हैं आपकी नासिका अति शोभायमान है कालके भी जीतनेवाले हैं और आप सूर्य को रचकर काले सूत्ररूपी रात्रि और श्वेतसूत्ररूपी दिनके ताने बाने से संवत्सररूपी वस्त्र बुनकर लोक को सुमार्ग में करनेवाले हैं अर्थात् कालके प्रवर्तक हैं और कर्मफल के भोग देनेवाले हैं २ आप कालशक्ति से ग्रसीहुई जीवकी वृत्तिको मोक्षपदके लिये छुड़ानेवाले हैं और अज्ञानी लोग माया और इन्द्रियों के वशमें रहनेसे संसारसागरमें पड़ेरहते हैं अर्थात् सब रागोंको छोंड़कर ब्रह्म को जानने से मुक्ति मिलती है और रागोंसे लिप्त होकर जानने से बंधनकी प्राप्ति होती है ३ हे अश्विनीकुमार! आप ३६० रात्रि और दिनरूपी कर्म फलरूप दुग्ध देनेवाली गौओं से वर्षरूपी बछड़ेको उत्पन्न करनेवाले हैं वह बछड़ा सबका तपानेवाला और नाश करनेवाला है और उसीसे सम्पूर्ण कर्म उत्पन्न होते हैं ४ हे अश्विनीकुमार! आप उस वर्षरूपी चक्रके उत्पन्न करनेवाले हैं जिसकी परिधि में अहोरात्रिरूप सातसौ बीस आरा लगे हैं वह चक्र एक अवस्थापर नहीं रहता है और अविनाशी और मायारूप है और इस लोक और परलोकके जीवों को स्पर्श करता है ५ हे अश्विनीकुमार! मुझ जन्म मरण से दुःखित को उस शिशुमारचक्र से मुक्त करो जिसमें मेष वृष आदि राशि बारह आराहैं और छह ऋतुरूप छह नाभि हैं उनमें कर्मोंके फलकी धारणा है और उसमें काल के अभिमानी विश्वेदेवा ईश विराजमानहैं ६ हे अश्विनीकुमार! आप इस जगत्की आत्मा हैं कर्म और कर्मफल को लोप करते हो अर्थात् आपका ब्रह्मज्ञान होने से कर्मफल इस तरह से दूर होजाताहै जैसे रस्सी सर्परूप भ्रांति से मालूम होती है और ज्ञान होने पर वह रस्सी फिर सर्परूप नहीं मालूम होती और आप जीवरूपहैं अर्थात् चारप्रकार के साधन की उच्चता को अनादि विद्याके द्वारा त्यागकरके इन्द्रियोंको उनके विषयरूप आनन्दमें लगाते हो और उस विषय से उत्पन्न हुये सुखरूपी धनको देतेहो ७ हे अश्विनीकुमार! आपने सृष्टिके आदिमें दश दिशा उत्पन्न कीं और उन दश दिशाओंके अंतरिक्षमें रथपर चढ़कर चलनेवाले सूर्य को और आकाश को उत्पन्न किया और सूर्यसे सब दिशा प्रकाशित हुई और कालकाभी ज्ञान हुआ जिसको जानकर ऋषिलोग कर्म करते हैं देवता और मनुष्य पृथ्वीपर आचरण करते हैं ८ हे अश्विनीकुमार! आपने विश्वरूप अर्थात् राजस

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सात्त्विक और तामस रक्त श्वेत और श्यामवर्णोंको उत्पन्न किया उनसे संपूर्ण भूत उत्पन्न हुये और वे वर्ण शरीर इन्द्रियां और बुद्धिरूप विकारोंके अनुसार होकर विषयोंको भोगते हैं और देवता और मनुष्य पृथ्वीपर आचरण करते हैं ९ हे अश्विनीकुमार! आप सत्य हैं मैं आपका पूजन करताहूं आप आकाश में व्याप्त होरहे हैं नित्य मुक्त हैं और कर्मों के फल को धारण करनेवाले हैं आप मायोपरहित ईश्वर हैं आपके विना अग्नि आदि इन्द्रियों के देवता विषयोंका भोग नहीं देसक्के अर्थात् सब संसार जीव ईश्वररूप ब्रह्मही है और विना उसके संसार जड़ है १० हे अश्विनीकुमार! आप अपने मुखसे अन्न-रूप गर्भको ग्रहण करते हो और उस रक्त वीर्य रूप जड़शरीर को अपनी इन्द्रिय से उत्पन्न करते हो वह गर्भ उत्पन्न होतेही दूध पीने लगता है और जीवन के अर्थ आप उसके नेत्रोंको प्रकाशित करते हैं ११ ॥

सूतपुत्र बोले हे ऋषियो! जब उपमन्यु ने अश्विनीकुमारकी इसप्रकारसे स्तुति की तब अश्विनीकुमार प्रसन्न होकर प्रत्यक्ष आकर बोले कि हे उपमन्यु! इस अपूपको तू खाले ५७ उपमन्यु बोला कि मैं विना गुरुको भेंट किये नहीं खाऊंगा ५८ तब अश्विनीकुमार बोले कि तेरे गुरुने प्रथम हमारी स्तुति की थी हमने उसको भी खानेको अपूप दियाथा उसने उस अपूप को विना गुरुको भेंट किये खालिया था तूभी खाले ५९ यह सुनकर उपमन्यु ने कहा कि महाराज आपकी तो आज्ञा है परन्तु मैं गुरुजीको भेंट दिये विना नहीं खासक्का ६० अश्विनीकुमार उसकी गुरुभक्ति से प्रसन्न हुये और कहा कि तेरा कल्याण होगा और नेत्र तेरे खुल जायँगे और तेरे गुरुके दांत लोहे के समान काले और तेरे दांत सुनहरे होंगे ६१ ऐसा कहके अश्विनीकुमार तो अंतर्धान होगये और उपमन्युकी आँखों से दीखने लगा वह वहां से अपने गुरुके पास आया ६२ और दण्डवत् करके सब हाल कहा तब गुरुजी प्रसन्न होकर बोले ६३ कि अश्विनीकुमारके कहे अनुसार तेरा कल्याण हो ६४ और सबवेद समेत धर्मशास्त्र तुझे कंठाग्र हों ऐसा आशीर्वाद देकर ऋषिने उपमन्युको बिदाकिया ६५ और तीसरे वेद नाम शिष्यको आज्ञादी कि तू हमारे घरमें कुछ काल सेवाकर तब तेरा कल्याण होगा ६६ वह वेदनामी शिष्य गुरुकी आज्ञा के अनुसार जाड़ा गरमी भूख और प्यास आदि अनेक दुःख सहकर बहुत दिनों तक सेवा करता रहा उपरान्त गुरुके आशीर्वाद से सर्वज्ञ होकर अपने

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

घरको गया और ब्रह्मचर्यको छोड़कर गृहस्थाश्रम को अंगीकार किया उपरांत उस गृहस्थाश्रम में उसके तीन चेले हुये उसने अपने चेलों से अपने गुरु की तरह कोई काम अथवा सेवा आदि करने को कुछ न कहा ६७। ६९ थोड़े दिनों पीछे राजा जनमेजय और राजा पौष्पने वेदको अपना उपाध्याय बनाया ७० सो एक समय वह उपाध्याय यज्ञ कराने को गये और घरका सब कार्य अपने उत्तंक नाम चेले को देकर कह गये कि हमारे घरका जो कुछ काम हो सो उचित अनुचित समझ कर जब तक हम न आवें तबतक करना ऐसा कहकर उपाध्याय तो चले गये ७१। ७२ और उत्तंक अपने गुरुके घर में सब काम करने लगा एक दिन गुरुकुल की स्त्रियों ने उत्तंकको बुलाकर कहा ७३ कि तुम्हारी उपाध्यायानी ऋतुमती हुई हैं ऐसा करो कि इस ऋतुका फल व्यर्थ न जाय उत्तंक बोला कि मैं स्त्रियोंके वचन से यह अकार्य न करूंगा और ऐसा अकर्म करनेको गुरुजीनेभी मुझको आज्ञा नहीं दी है ७४। ७५ फिर थोड़े दिनों पीछे उपाध्याय यज्ञ कराके घर आये और उत्तंकका यह वृत्तान्त सुनकर बहुत प्रसन्न हुये ७६ और उसको बुलाकर कहा कि तुमने धर्मसे हमारी सेवाकी हम तुमपर प्रसन्न हुये और अब हम तुमको आशीर्वाद देते हैं कि तुम जो कुछ इच्छा करोगे सो इच्छा पूरी होगी ७७ यह सुनकर उत्तंकने कहा कि महाराज अब जो कुछ मुझको आज्ञाहो सो गुरुदक्षिणा मैं आपको दूं क्योंकि जो शिष्य गुरुदक्षिणा नहीं देता और गुरु गुरुदक्षिणा ग्रहण नहीं करता वे दोनों प्रेत होते हैं यह सुनकर वेद बोले कि अभी कुछ दिन और ठहरो ७८। ८० फिर थोड़े दिनों के उपरान्त उत्तंकने कहा कि महाराज जो कुछ आप गुरुदक्षिणाकी मुझको आज्ञा दें सो मैं दूं यह सुनकर उपाध्याय बोले कि अपनी गुरुपत्नी से पूछो वह जो कुछ कहै सो दो ८१। ८२ यह सुन कर उत्तङ्क उपाध्यायानीके पास गया और कहा कि मैं गुरुदक्षिणा देकर घरजाने चाहताहूं सो गुरुजी ने कहा है कि जो कुछ तुम्हारी गुरुमाता मांगे सो दो सो अब जो कुछ तुम आज्ञा करो सो मैं करूं यह सुनकर उपाध्यायानी ने कहा कि राजापौष्प की स्त्री के कानके कुण्डल आज के चौथेदिन मुझे लाकर दो उस दिन मैं व्रत करके उन्हीं कुण्डलों को पहिर कर ब्राह्मणों को परोसूंगी जो तुम कुण्डल उस समयतक लादोगे तो तुम्हारा कल्याण होगा नहीं तो अकल्याण होगा ८३। ८५ उपाध्यायानी की यह बात सुनकर उत्तङ्क वहां से राजा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पौष्य के पास चला राह में देखता क्याहै कि एक बड़े ऊंचे बैल पर एक बड़ा लम्बा चौड़ा आदमी बैठा चला आताहै जब पास आया उस बैल के सवारने उत्तङ्क से कहा ८६ कि तुम इस बैलके गोबरको खालो उत्तङ्क ने गोबर खाने से निषेध किया ८७ तब वह बैल का सवार बोला कि तुम्हारे गुरुने भी इसका गोबर खाया है ८८ यह सुनकर उत्तङ्क ने कहा कि बहुत अच्छा ऐसा कहके उत्तङ्क उस बैलके पीछे गया और उस बैल का मूत्र और गोबर भक्षण करके संभ्रम से खड़े खड़े आचमन करके चल दिया ८९ और राजा पौष्य के यहां पहुँचा और उसको अपने आशीर्वादोंसे प्रसन्न करके बोला ९० कि मैं आप से कुछ मांगने आयाहूं राजा पौष्यने दण्डवत् की और कहा कि क्या आज्ञा है ९१ तब उत्तङ्क ने कहा कि मुझे गुरुदक्षिणा देने के लिये आपकी रानी के कानों के कुण्डल चाहिये ९२ राजा ने कहा कि आप महल में जाकर रानी से मांगलीजिये वह आपको देदेगी यह सुनकर उत्तङ्क राजमन्दिर के भीतर गया और वहां रानी को न देखकर लौटआया ९३ और राजा पौष्य से कहा कि आपने मिथ्या कहा रानी राजमन्दिर में नहीं है राजा ने यह सुनकर क्षणभर विचार किया और फिर कहा कि मालूम होताहै कि आप अशुद्ध हैं रानी को पतिव्रता होनेसे अशुद्ध पुरुष नहीं देखसक्ता ९४। ९५ यह सुनकर उत्तङ्क बोला कि निश्चय हम अशुद्धहैं हमने चलते में खड़े से आचमन किया था पौष्य बोला कि यह आपका विपरीत धर्म है चलते में और खड़े से आचमन नहीं करना चाहिये यह सुनकर उत्तङ्क पूर्वमुख बैठ हाथ पैर धो तीन आचमन और सब इन्द्रियों से जलस्पर्श करके राजमन्दिर में गया ९६। ९७ और रानी को देखा रानी उत्तङ्कको देखकर खड़ी होगई और दण्डवत् करके बोली कि आप का आना शुभ होय मेरे लिये क्या आज्ञा है ९८ उत्तङ्क बोला कि मैं आपके कानों के कुण्डल गुरुदक्षिणा देने के लिये भिक्षा मांगताहूं रानी ने उसे गुरुभक्त और पात्र देखकर नाहीं नहीं की दोनों कुण्डल उतारकर देदिये और कहा कि इन कुण्डलों को सर्पोंका राजा तक्षक नाग बहुत चाहता है तुम सावधानी से लेजाना ९९ उत्तङ्क ने कहा कि मैं गुरुभक्त हूं तक्षक मुझे धोखा नहीं दे सक्ता १०० ऐसा कहके उत्तङ्क राजा पौष्यके पास आया और कहा कि मैं तुम पर प्रसन्नहूं राजा पौष्य बोला १०१ कि पात्र ब्राह्मण भाग्य से मिलताहै दूसरे आप अतिथिहैं थोड़ी देर ठहरो भोजन करके जाना उत्तङ्क बोला कि मुझे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जल्दी जानाहै जो कुछ भोजन तैयारहो सो लेआवो राजा पौष्प ने कहा बहुत अच्छा ऐसा कहके उत्तङ्क के आगे तैयार भोजन लाकर परोस दिया १०२। १०३ उस भोजन में बाल देखकर उत्तङ्क नें कहा कि यह अशुद्धहै और पौष्प को शाप दिया कि बाल मिलाहुआ अशुद्ध भोजन दान करने के कारण से तू अन्धा होजायगा १०४ राजा पौष्प ने कहा कि तुम निर्दोष अन्नको दोष लगाते हो इससे तुमभी अपुत्र होगे उत्तङ्क ने कहा १०५ कि तुम शाप तो देतेहो अन्न को तो देखो कि यह शुद्धहै कि अशुद्धहै यह सुनकर राजा पौष्प उत्तङ्क के पास गया और बाल मिला हुआ भोजन देखकर कहा कि निश्चय यह अन्न अशुद्धहै १०६ मैंने अज्ञानता से यह अन्न परोसा अब आप मेरे अपराध को क्षमा कीजिये और ऐसा कीजिये कि मैं अन्धा न होऊं १०७।१०८ उत्तङ्कने कहा कि हमारा शाप झूठा नहीं होसक्ता परन्तु तुम अन्धे होकर जल्दी अच्छे हो जावोगे और जो तुमने हमको शाप दिया है उसको तुमभी दूर करो १०९ राजा बोला कि हमारी सामर्थ्य अपना शाप दूर करनेकी नहीं है उत्तङ्क ने कहा क्यों राजा बोला कि ब्राह्मण का मुख तो बड़े तीक्ष्ण छुरे के अनुसार है और मन मक्खन के समानहै अर्थात् जल्दी पिघल जाताहै और क्षत्रिय का हृदय तो बड़ा कठोर होताहै और मुखसे कोमल वचन बोलता है ११०। ११२ यह सुनकर उत्तङ्क ने कहा कि हमने अशुद्ध अन्नको देखकर तुमको शाप दिया था और तुमने विना अन्न देखे हमारे शाप को सुनकर प्रतिशाप दिया और फिर अन्नको देखकर उसे अशुद्ध समझ कर हमसे अपराध क्षमा कराया इस कारण से आपका वह शाप हमको नहीं लगेगा ११३ ऐसा कहके उत्तंक वहां से चलदिये जब थोड़ी दूर पहुँचे तब देखते क्याहैं कि एक संन्यासी नंगा शरीर किये चला आताहै कभी दिखाई देने लगताहै और कभी छुप जाता है ११४ उसके उपरान्त उत्तङ्क उन कुण्डलोंको पृथ्वीपर रखकर थोड़ी दूरपर जल लेने को गया उस समय वह कपटरूपी संन्यासी लपककर आया और कुंडलों को लेकर भागा ११५ तब उत्तङ्क जल्दी से आचमनकर गुरु और देवता को नमस्कार करके उसके पीछे दौड़े ११६ और उसे पकड़ लिया पकड़तेही वह छली सर्पका रूप धरके एक बिलमें घुसगया ११७ तब उत्तङ्क दुःखी होकर उस बिलको खोदने लगे परन्तु जब वह न खुदा तब इन्द्रने उस ब्राह्मणको दुःखी देखकर अपने वज्र को उत्तङ्ककी सहायता करने की आज्ञा दी वह वज्र उत्तङ्क की लकड़ी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

में प्रवेश करगया और उस बिलको फोड़डाला ११८। १२० उत्तङ्क उस बिलमें घुसगया और अनेक प्रकारके सैकड़ों मन्दिर, हर्म्य, बलभी और निर्यूह आदि क्रीड़ाके स्थान देखता हुआ नागलोकमें पहुँचा १२१ और नागोंकी स्तुति करने लगा जिन सर्पोंका राजा ऐरावत नागहै वे सर्प बड़े शोभायमान हैं और शस्त्रोंकी वर्षा इसतरह से करते हैं जैसे बादल जल वर्षाता है १२२ उन सर्पों के सुन्दर स्वरूपहैं और अच्छे २ कुण्डल पहिरे हुये हैं और जो सर्प ऐरावतसे उत्पन्न हुयेहैं स्वर्ग में उनकी शोभा सूर्यके तुल्यहै १२३ मैं गंगाके उत्तरतट पर बसनेवाले सर्पोंकी स्तुति करताहूं १२४ ऐरावत नागके सिवाय दूसरा कौन है जो सूर्यके किरणरूप सेना में जासके और ऐरावत नागका बड़ा भाई धृतराष्ट्र जिसके उदय होने पर अट्ठाईस सहस्र आठसौ सर्प चलते हैं उन सब को और ऐरावतके बड़े भाईको नमस्कार करता हूं १२५। १२६ और कुरुक्षेत्रमें प्रथम रहनेवाले तक्षक नाग की स्तुति कुंडल पाने के लिये करता हूं १२७ और तक्षकका साथी अश्वसेन और दूसरे सर्प जो कुरुक्षेत्र में इक्षुमती नदीके किनारे रहतेथे उन सबको मैं नमस्कार करताहूं १२८ और जो तक्षक नाग श्रुतिसेन नामसे विख्यातहै उसको मैं नमस्कार करता हूं १२९ उत्तङ्क ने नागों की इस प्रकारसे स्तुति की परन्तु कुंडल न मिले तब उत्तङ्कको बड़ा खेद हुआ १३० उसी समय उत्तङ्क देखता क्याहै कि दो स्त्रियां बेमावाला यंत्र खड़ाकरके काले और सफ़ेद सूतसे कपड़ा बुन रही हैं और उसी के पास एक चक्र है उसमें बारह आरे लगरहे हैं और छह बालक खड़ेहुये उस चक्रको घुमा रहेहैं और उस चक्र के पास एक बहुत सुन्दर घोड़ा खड़ाहै और उस घोड़े पर एक बड़ा तेजस्वी पुरुष सवारहै १३१ उत्तङ्क ने उस पुरुषको देखकर नीचे लिखी हुई वेदस्तुति करके उसको प्रसन्न किया १३२॥

त्रीण्यर्पितान्यत्र शतानिमध्ये षष्टिश्च नित्यं चरति ध्रुवेस्मिन्॥ चक्रे चतुर्विंशतिपर्वयोगे षड् वै कुमाराः परिवर्तयन्ति १ ततं चेदं विश्वरूपे युवत्यौ वयत स्तन्तून्सततं वर्तयन्त्यौ॥ कृष्णान्सितांश्चैव विवर्तयन्त्यौ भूतान्यजस्रं भुवनानि चैव २ वज्रस्य भर्ता भुवनस्य गोप्ता वृत्रस्य हन्ता नमुचेर्निहन्ता॥ कृष्णे वसानोवसनेमहात्मा सत्यानृते यो विविनक्ति लोके ३ यो वाजिनं गर्भमपां पुराणं वैश्वानरं वाहनमभ्युपैति॥ नमोस्तु तस्मै जगदीश्वराय लोकत्रयेशाय पुरन्दराय ४॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इस स्तुति को सुनकर वह घोड़े पर चढ़ाहुआ मनुष्य बोला कि हम तेरी स्तुति से प्रसन्न हुये तुझको जो कुछ इच्छाहो मांग १३३ यह सुनकर उत्तङ्क बोला मैं ब्राह्मण हूं और यह चाहता हूं कि ये नाग मेरे वश में होजावें यह सुनकर वह घोड़े का सवार बोला कि इस घोड़े की गुदा में फूंकमार १३४ उत्तङ्क ने ऐसाही किया और उस घोड़े के सम्पूर्ण अंगसे अग्नि और धुआं निकलना प्रारम्भ हुआ १३५ उस अग्नि और धूमसे नागलोग बहुत व्याकुलहुये और तक्षकभी दोनों कुण्डल लेकर बिनतीपूर्वक उत्तङ्क को देगया उत्तङ्कने कुंडल लेलिये परन्तु विचार करनेलगा १३६। १३७ कि आज कुंडल उपाध्यायानी के पास न पहुँचे तो सब परिश्रम वृथाहै उस पुरुष ने उत्तङ्क को शंकामग्न देखकर कहा १३८ कि तू इस घोड़े पर सवार होजा एक क्षणभर में पहुँच जायगा १३९ उत्तङ्क अच्छा कहकर उस घोड़े पर सवार होगया और क्षणभरमें उपाध्याय के घरके निकट आपहुँचा उससमय उपाध्यायानी स्नानकर अपने बालों को कंघी से सुधार रहीथीं और उत्तङ्क को न आयाहुआ जानकर शाप देने कोथीं १४० कि उत्तङ्क ने पहुँचकर प्रणाम किया और उपाध्यायानी को दोनों कुंडल देदिये उसने कुंडल लेकर १४१ उत्तङ्क को आशीर्वाद दिया और कहा कि तेरा आना अच्छा हुआ तू पापी नहीं है इससे मैं तुझे शाप न देसकी अब तेरा कल्याण होगा और तू सिद्धि पावैगा १४२ फिर उत्तङ्क गुरुके पास गया और दण्डवत् की गुरुजी ने उसको आशीर्वाद देकर पूछा कि तेरा आना अच्छा हुआ इतनी देर कहां लगी १४३ यह सुनकर उत्तङ्कने गुरुजीको आदि से सब कथा सुनाई और फिर पूछा कि महाराज वे दोनों स्त्रियां जो पट बुनती थीं वे कौनहैं १४४ वह चक्र क्याहै और उसमें बारह आरे कैसे लगे हैं और वे छः फिरानेवाले बालक कौन हैं और वह घोड़ा और उसपर का सवार कौनहै १४५ और जानेके समय जो बैल और उसपर एक आदमी सवार मिलाथा वह कौनहै और उसने मुझे गोबर खिलाया इसका क्या कारण है यह सुन कर उपाध्याय बोले १४६।१४८ कि हे उत्तङ्क! वे दोनों स्त्रियां धाता विधाता थीं धाता चैतन्य ब्रह्मकी शक्तिहै जो तीनों लोकोंको चैतन्य कर रही है और विधाता विकारवान् मायाहै श्वेत और काले सूत्र रात और दिनहैं अर्थात् माया मोह रात्रि और आत्मज्ञान दिन वह चक्र प्रजापतिरूप वर्ष है उस में जो १२ आरे हैं वे बारह महीने हैं और छः बालक घुमाने वाले छः ऋतु

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हैं १४९ और जो पुरुष तुम ने देखा था वह आचार्यरूप ईश्वर है और घोड़ा अग्निदेव था और जो यहां से जाते समय तुमको बैल मिला था वह ऐरावत हाथी है १५० और उस पर का सवार इन्द्र है और जो तुमने उस बैल के गोबर को खाया वह अमृत था उसीके प्रभावसे तुम नागलोकमें पहुँचनेपर जीते रहे १५१ इन्द्रदेव मेरा निश्चय मित्र है उसने तेरे ऊपर यह दया की कि अमृत पान कराया जिसके प्रभाव से तू कुंडल लेकर आया १५२ अब तू अपने घर को जा तेरा कल्याण होगा उत्तङ्क गुरुको नमस्कार करके तक्षक पर क्रोध भरा हुआ हस्तिनापुरको आया १५३ और राजा जनमेजयकी सभामें पहुँचा १५४ उस समय जनमेजय तक्षशिला देश को जीत कर मंत्रियों सहित बैठे थे १५५ उत्तंकने सभा में जाकर राजाको जयका आशीर्वाद दिया और समय पाकर कहा १५६ कि जो काम तुमको करना उचित है वह नहीं करते १५७ इतनी कथा सुनाकर सूतपुत्र बोले कि हे ऋषियो! राजा जनमेजय ने उत्तंकका यथाविधि पूजन करके कहा १५८ कि मैं प्रजापालन करके अपना धर्म करताहूं आप अब क्या और करवाने के लिये यहां उपस्थित हुये हैं १५९ यह सुनकर वह ब्राह्मणोंमें श्रेष्ठ उत्तङ्क बोला कि महाराज! जिस तक्षक दुरात्मा ने आपके पिता को माराहै उससे बदला लेनेके लिये कुछ कर्म कीजिये इस दुष्ट तक्षकने आपके पिताको विना अपराध काटा है आपके पिता इस योग्य न थे बड़े मूर्तिमान् और राजऋषियों के वंशरक्षक थे उस दुष्टने उनको निरपराध काटकर पंचत्व को प्राप्त करदिया और कश्यपजी उसका विष दूर करने को आतेथे उनको राह से लौटा दिया १६०। १६५ हे महाराज! आप सर्पसत्र यज्ञ कीजिये और उस पापी तक्षकको जलती हुई अग्निमें भस्म करके पितासे उऋण हूजिये १६६ और मैं भी इसमें प्रसन्न होऊंगा १६७ उस दुरात्मा तक्षक ने मेरे भी गुरुके काम में विघ्न डाला था सो अब आप उस यज्ञकी शीघ्र तयारी कीजिये १६८ सूतपुत्र बोले हे ऋषियो! इस बातको सुनकर राजा जनमेजय ने तक्षक पर बड़ा कोप किया और अपने पिता का मरना मंत्रियों और उत्तङ्कसे सुनकर बड़े शोक में डूबकर दुःखित हुआ १६९। १७१॥

इति श्रीभाषामहाभारते आदिपर्वणि तृतीयोऽध्यायः ३॥

चौथा अध्याय।

सूतपुत्र और नैमिषारण्यवासी ऋषियों की वार्ता नैमिषारण्य क्षेत्र में

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

शौनक ऋषिने बारह वर्षमें समाप्त होनेवाला सत्र (यज्ञ) किया था उसयज्ञ में चारों ओरसे बड़े बड़े ऋषिलोग आये थे उनसे लोमहर्षण सूतके बेटे उग्रश्रवाजी जो सकल पौराणिक इतिहासोंमें अत्यन्त कुशल थे और पुराणोंको बड़े परिश्रम से पढ़ा था हाथ जोड़कर बोले कि अब आपलोग क्या सुना चाहते हैं १। २ ऋषिलोग बोले कि हम सब जानते हैं कि आप सब पौराणिकों में निपुण हैं और जो कुछ हम कहेंगे उसको आप अच्छी तरह से वर्णन करेंगे ३ परन्तु शौनकऋषि की बाट देखना चाहिये क्योंकि वे देवता राक्षस नाग गंधर्व और अन्य समस्त दिव्य कथाओं को जानतेहैं और चतुर व्रत धारण करने और विधि निषेधरूप कर्मकांड शास्त्र और उपनिषद् ज्ञानकाण्ड आदि में परमगुरु हैं ४। ६ और सत्य बोलनेवाले शांतरूप तपस्वी नियतव्रत और हम सबके मान्य हैं इस समय वे अग्निहोत्रशाला में हैं आने ही चाहते हैं जिस समय वे आकर आसन पर बैठें और आप से जो कुछ कथा पूछें वही आप वर्णन कीजियेगा ७। ८ सूतपुत्र बोले बहुत अच्छा जब वे आवेंगे तब जो कुछ वे आज्ञा देंगे वही मैं आपलोगों को सुनाऊंगा ९ इसके उपरान्त शौनक ऋषि ब्रह्मयज्ञ और जलतर्पण करिके उन महान्ऋषियों में आनकर बैठे और सूतपुत्र से बोले १०। १२ ॥

इति श्रीभाषामहाभारते आदिपर्वणि चतुर्थोऽध्यायः ४ ॥

पांचवां अध्याय ।

इसमें भृगुवंश की कथाका वर्णन और पौलमपर्व है ॥

शौनकऋषि बोले हे लोमहर्षण सूतके बेटे ! हमने तुम्हारे पितासे सम्पूर्ण पुराणों की कथा सुनीहै हम जानतेहैं कि वे सब पुराणें तुम्हारी भी अच्छीतरहसे पठित होंगी १। २ अब हम भृगुवंशकी कथा सुना चाहते हैं ३ यह सुनकर सूत-पुत्र बोले कि पहिले वैशम्पायन मुनि जो ब्राह्मणोंमें श्रेष्ठ और वेदपाठियों में उत्तम थे उन्हों ने पुराणोंको अच्छी तरह पढ़ा और सुनाया उसके उपरान्त मेरे पितानेभी उन्हीं पुराणों को पढ़ाथा और उन्हीं पुराणों को मैंनेभी पढ़ाहै अब आप भृगुवंश जो बड़ा उत्तमहै और देवता और ऋषियों में पूजितहै उसकी कथा सुनिये मैं पुराणोंके अनुसार कहताहूं ४। ७ ऐसा सुनने में आयाहै कि महाऋषि भृगु जी महाराज वरुणके यज्ञमें स्वयंभुव ब्रह्माजी से अग्नि में उत्पन्न हुये थे उनके पुत्र च्यवन हुये ८ और च्यवनके प्रमति नाम पुत्र हुये और धर्मारूढ़ प्रमति

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

के घृताची स्त्री से रुरु नाम पुत्र हुये ९ और महाराज रुरुके प्रमद्वारा स्त्री से शुनक नाम पुत्र हुये १० शुनकजी तपस्वी यशस्वी वेदके जाननेवाले ब्रह्मज्ञानियों में उत्तम धर्मात्मा सत्यवादी समाधि नियम से युक्त और उचित आहार करनेवाले थे और आपके परदादा थे ११ यह सुनकर शौनक ऋषि बोले कि भृगुजी से च्यवन के उत्पन्न होने की कथा कहिये १२ सूतपुत्र बोले कि भृगुजी के पुलोमा नाम स्त्री थी उसके भृगुजी से गर्भ रहा १३ एक समय भृगुजी महाराज पुलोमा को अकेली स्थानपर छोड़ कर चले गयेथे कि सूना घर पाकर वहां पुलामनाम राक्षस आया १४। १५ उस राक्षस से पुलोमा के पिता ने पुलोमा की बाल्यअवस्थामें डराने के लिये यह कहा था कि अरे राक्षस! इसे लेजा और उसके समर्थ होनेपर उसके पिताने विधिपूर्वक भृगुजी के साथ विवाह करदिया था सो वह राक्षस पुलोमा को देखकर कामासक्त होगया और अपने मनमें उसका हरना विचारा पुलोमाने उस राक्षस को अतिथि समझ कर कन्द मूल फल भोजन करने को दिये वह राक्षस उनको खाकर प्रसन्न हुआ और पुलोमा को हरलेजाने के विचार से अग्निहोत्रशाला में गया और वहां जलती हुई अग्नि देखकर अग्नि से कहने लगा १६। २१ कि तुम सब देवताओं का मुख हो और सब जीवों के भीतर पुण्य और पापके साक्षी हो सत्य सत्य कहो कि यह कौनकी स्त्री है यह वही पुलोमा है या नहीं जो इसके पिता ने पहले मुझे दी थी और फिर भृगुजी को ब्याहदी और जिसे भृगुजी अधर्म से विवाहि लाये क्योंकि इसके पिताने पहले इसे मुझको दिया था आप कृपा करि के सत्य सत्य कहिये मैं आपके सम्मुख आज इसको हरकर लेजाऊंगा २२।२९ यह सुनकर अग्निदेव भृगुजी के शाप और झूठ बोलने के अधर्म से डरते हुये ३० कि हे दानवनन्दन! यह पुलोमा पहले तुमनेही वरी थी परन्तु तुमने इसे मन्त्र विधिसे नहीं पाया था ३१ और इसके पिताने वरके लोभ से इसे तुमको नहीं दी और हमको साक्षी करके मन्त्रविधि से भृगुजी को विवाह दी ३२। ३३ मैं झूंठ नहीं बोलताहूं क्योंकि झूंठ बोलना अच्छा नहीं है यह पुलोमा वही है जो पहिले तुमने वरी थी ३४॥

इति श्रीभाषामहाभारते आदिपर्वणि पञ्चमोऽध्यायः ५॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

छठा अध्याय।

पुलोमाके हरेजाने और भृगुजीका अग्निको शाप देनेकी कथा का वर्णन॥

सूतपुत्र बोले हे ऋषियो! वह राक्षस अग्निकी बात सुनकर अपना रूप धारण करके मनवायुके वेगसे पुलोमा को हरकर ले चला १ और पुलोमा का गर्भ जो सूर्य के तुल्य तेजवान् था अपनी माताकी यह गति देखकर गिरा और अपने तेजसे उस राक्षस को भस्म करदिया इसीसे उसका नाम च्यवन हुआ २। ३ उपरान्त पुलोमा उस भृगुनन्दन च्यवन को गोदी में उठाकर रोती हुई चली ४ उसको विकल देखकर ब्रह्माजी वहां आये और अपनी वधू को पुचकारा और उसके दुःखको दूर किया हे ऋषियो! पुलोमाके आंशुओं से वहां एक नदी बह निकली ब्रह्माजीने उसका नाम वधूसरा रक्खा वह नदी च्यवन ऋषिके आश्रमके समान है ५। ८ इसके उपरान्त भृगुजी स्नान करके अपने आश्रमको आये और सब वृत्तान्त सुनकर पुत्रका नाम च्यवन रक्खा और बड़े क्रोधसे पुलोमासे पूंछा कि उस दैत्यको तुझे किसने बताया जल्दी बता मैं उसको शाप दूंगा वह कौन है जो मेरे शापसे न डरा ९। ११ पुलोमा बोली कि महाराज! मुझको अग्निने बताया और वह दैत्य मुझ रोती हुई को लेकर भागा १२ तब आपके इस पुत्रने उसे भस्म करके मुझे बचाया १३ सूतपुत्र बोले हे ऋषियो! भृगुजी यह बात सुनकर बड़े क्रोधयुक्त हुये और अग्नि को शाप दिया कि तू सर्वभक्षी हो १४॥

इति श्रीभाषामहाभारते आदिपर्वणि षष्ठोऽध्यायः ६॥

सातवां अध्याय।

भृगुजी के शाप से अग्नि के लोप होने और फिर प्रकट होने की कथा॥

सूतजी बोले हे शौनकऋषिजी! अग्निदेव भृगुजीका शाप सुनके बड़े क्रोधसे बोले कि विना विचारे इस प्रकार से एकाएकी साहस करना आपको उचित न था धर्मवाले और कहनेवाले दोनों को सत्य बोलना उचित है इसमें जो मैंने उसके पूंछने से सत्यवार्ता कही तो मेरा इसमें क्या दोष है जो मनुष्य साक्षी होकर किसी बात में झूंठ बोलता है उसकी सात नीचे और सात ऊपरकी पीढ़ियां नरक में पड़ती हैं और जो कोई किसी कार्य में जानकर सच या झूंठ जैसा हो नहीं कहता है उसको भी यही पाप लगता है १। ४ मैंभी शाप देसक्ता हूं परंतु ब्राह्मण मेरे मान्य हैं इससे मैं तुमको शाप नहीं देताहूं आप जानते

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हैं कि मैं मूर्तियों में अग्निहोत्र और उन यज्ञों में जिनमें बहुत से कर्म करनेवालों से यज्ञ की क्रियाका साधन होता है गर्भाधान कर्म और ज्योतिष्टोम आदि यज्ञों में योगके द्वारा अनेक प्रकारसे वास करताहूं और घी दूध आदि जो कुछ हवि वेदोक्त विधिसे मुझ में होमा जाता है उससे देवता और पितर तृप्त होते हैं ५।७ पौर्णमासी को देवता और अमावस्या को पितर लोग जो कुछ मुझमें होमा जाता है उसे भोगते हैं तात्पर्य यह है कि मैं वेदकी रीति से देवता और पितर दोनोंका मुखहूं उक्त दोनों तिथियों में होमे हुये पदार्थ को देवता और पितर मेरेही मुखसे खाते हैं फिर इन मुख होने से मैं सर्वभक्षी क्योंकर होसक्ताहूं ८।११ सूतपुत्र बोले हे ऋषियो ! ऐसा कहिके अग्निदेव ने कुछ काल ध्यान किया उपरान्त अपना आत्मसंहार करडाला अर्थात् लोप होगये अग्निदेव के लोप होजाने से सब संसार में अग्निहोत्र यज्ञ सत्र की क्रिया में वषट्कार स्वाहा और स्वधा ये सब बन्द होगये और इनके बन्द होने से संसार में बड़ा दुःख हुआ १२। १३ ऋषिलोग इस बात को देखकर देवताओं के पास गये और उनसे कहा कि अग्निके नाश होने से तीनों लोक भ्रांतहैं इससे आप सब लोग जो कुछ उचित समझें सो इसमें बहुत जल्दी करैं यह सुनकर सब देवता ऋषियों सहित ब्रह्माजी के पास गये १४। १५ और कहा कि महाराज ! भृगु जीने किसी कारण से अग्निदेव को सर्वभक्षी होने का शाप दिया था उसके कारणसे अग्निदेव यह अनुमान करके कि हम देवमुख और यज्ञकी हवि के भोगनेवाले होकर सर्वभक्षी क्योंकर होंगे लोप होगये और उनके लोप होजाने से सब क्रिया संसार में बन्द होगई १६। १७ ब्रह्माजीने उन सबके यह वचन सुन करके अग्निका आवाहन किया और कहा १८ कि हे अग्निदेव ! तुम सब लोकों के आदि अन्तकर्ता हौ सब लोकों के धारण करनेवाले हौ और सब क्रियाओं के करानेवाले हौ १९ तुम हवि के भोगनेवाले हौ समर्थ हौ तुम ऐसे विमूढ़ क्यों हौ ऐसा करो जिसमें क्रियाका लोप न हो २० तुम सदैव पवित्रहौ और सब प्राणियों की गतिहौ तुम्हारे सबरूप सर्वभक्षी न होंगे जो तुम्हारी ज्वाला अपनी वायु में रहती है वह और तुम्हारा कव्यादि नाम शरीर येही सर्वभक्षी होंगे कव्यादि नाम शरीर वह है जिसमें मुर्दे भस्म किये जातेहैं और हे अग्निदेव ! जैसे सूर्यकी किरणोंसे छुआ हुआ सब पदार्थ पवित्र माना जाता है इसी प्रकारसे तुम्हारी ज्वालासे जली हुई भी सब चीजें

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

015.1A2 152 E41

पवित्र मानी जायँगी तुम सबतरह से समर्थ हो अपने तेज से ऋषिके शापको सत्य करो और देवताओं के लिये यज्ञमें होमी हुई हवि को अपने मुखमें ग्रहण करो २१। २४ यह सुनके अग्निदेव बोले कि बहुत अच्छा २५ हे ऋषियो! इस प्रकार से अग्निदेव और सब देवता प्रसन्न होकर चलेगये और ऋषिलोग पूर्वके समान सब कर्म करने लगे नरलोक में सब मनुष्य प्रसन्न हुये और अग्निदेवभी निष्कलंक होजाने से प्रसन्न हुये २६। २८॥

इति श्रीभाषामहाभारते आदिपर्वणि सप्तमोऽध्यायः ७॥

आठवां अध्याय।

प्रमद्वरा का उत्पन्न होना और प्रमद्वरा और रुरुके विवाह का वर्णन॥

सूतपुत्र बोले हे ऋषियो! च्यवनजी के सुकन्यानाम स्त्री से प्रमतिनाम बड़ा तेजस्वी पुत्र हुआ और प्रमतिके घृताची स्त्रीसे रुरुनाम पुत्र उत्पन्न हुआ १ और रुरुके प्रमद्वरा स्त्री से शुनक नाम पुत्र हुआ यह सब भार्गवों में पराक्रमी तीव्र व्रत का करनेवाला और यशस्वी हुआ २ इससे अब हम रुरु महाराजकी कथा विस्तारपूर्वक थी उसको कहते हैं ३ स्थूलकेश नाम एक ऋषि जो तपस्वी और विद्यावान् थे ४ एकदिन वे नदी के किनारे पर गये वहां एक मेनका नाम अप्सराके विश्वावसु नाम गंधर्वराजके गर्भ से एक कन्या उत्पन्न हुई उस कन्याको वह निर्दया और निर्लज्ज मेनका नदीके किनारे पर छोड़कर आप स्नान करके चली गई ५। ७ स्थूलकेश ऋषि उस अत्यन्त सुन्दर कन्या को उस निर्जन देश में पड़ी हुई देखकर अपने आश्रम में उठा लाये थोड़े दिनों में वह कन्या बड़ी हुई ८। १० और स्थूलकेश ऋषिने उसके जातकर्म आदि सब क्रियाओंको विधिपूर्वक किया ११ जब वह कन्या और बड़ी हुई तब वह सब स्त्रियों से सुंदर लगने लगी ऋषिने इस कारण से उसका नाम प्रमद्वरा रक्खा १२ एक दिन उस प्रमद्वरा को स्थूलकेश ऋषिके आश्रम में रुरुने देखा और कामासक्त होगये १३ और अपने मित्रों द्वारा अपने पिता प्रमति से सब हाल कहवाया प्रमतिने स्थूलकेश ऋषि से वह कन्या अपने पुत्र रुरुके लिये मांगी १४ स्थूलकेश ऋषिने कन्या देना अंगीकार करके कहा कि उत्तराफाल्गुनी नक्षत्रमें विवाह होगा १५ विवाहके पक्के होने उपरांत एक दिन वह कन्या सखियों के साथ खेल रहीथी खेलते खेलते दैवयोगसे उसका पैर विना जाने एक सर्प पर जापड़ा जो रास्ते में सो रहा था १६। १७ उस सर्प ने पैर पड़तेही काटा और वह कन्या उस सर्पके विषसे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मूर्च्छित होकर गिरपड़ी वर्ण और का और होगया कहा वह कन्या दर्शन योग्य थी कहां ऐसी होगई कि उसकी ओर देखा नहीं जाता था १८ । २० उस कन्याके पिता स्थूलकेश और उसके श्वशुर प्रमति और स्वस्ति, आत्रेय, महाजानु, कुशिक, शंखमेखल, उद्दालककठ, श्वेत, भरद्वाज, कौण, कुत्स्य, आर्ष्टिषेण, गौतम आदि और अन्य वनवासी ऋषि और ब्राह्मण लोग उस कन्या के देखनेको आये और सर्प के विष से उसे मरा हुआ देखकर सब रोने लगे रुरु वहांसे बाहर को चले गये और अन्य सब ऋषि वहीं बैठ गये २१ । २८ ॥

इति श्रीभाषामहाभारते आदिपर्वणि अष्टमोऽध्यायः ८ ॥

नवां अध्याय ।

रुरुका प्रमद्वराको आधी आयु देने और रुरुके विवाहकी कथा ॥

सूतपुत्र बोले हे ऋषियो ! जब सब महात्मा ब्राह्मणलोग वहां बैठगये तब रुरु ऋषि वहांसे उठकर वनमें चलेगये और बड़ा विलाप करके कहनेलगे कि अब इससे भी अधिक और क्या दुःख होगा कि मेरी प्यारी स्त्री पतली कमरवाली पृथ्वी पर मुरदा पड़ी है १ । ३ मैंने आजतक जो कुछ दान तप जप गुरु आदि की सेवा की है उसके प्रभावसे मेरी प्यारी स्त्री जी जावे ४ जब रुरुऋषि इस प्रकारसे अपनी स्त्रीके लिये वनमें विलाप कररहे थे उसी समय उनसे एक देवदूतने आनकर कहा हे रुरु ! तुम यहां वृथा रो रहे हो पुण्य देदेनेसे मृतक नहीं जीता है हां एक और उपायहै उसको देवताओंने पहिले भी कियाथा तुम भी वही करो तो प्रमद्वरा जी जावे यह सुनकर रुरुऋषि बोले कि वह कौनसा उपायहै कृपा करके कहो मैं भी वही करूंगा देवदूत बोला कि तुम अपनी आधी आयु उसको दो तो वह जीजावे ५ । १० यह सुनकर रुरुऋषिने कहा कि अच्छा मैं अपनी आधी आयु देताहूं ११ मेरी प्यारी प्रमद्वरा शृङ्गारसहित जी उठे इसके उपरांत सूतपुत्र बोले कि हे ऋषियो ! वह देवदूत और सत्तम गंधर्वराज दोनों रुरुकी यह बात सुनकर धर्मराज के पास गये और बोले कि आप आज्ञा दें तो रुरुऋषि की स्त्री प्रमद्वरा जो मरगई है रुरुऋषि की आधी आयु पाने से जी उठे धर्मराजने कहा कि जो तुम यह चाहते हो तो रुरुऋषि की आधी आयु से प्रमद्वरा जीवै सूतपुत्र बोले हे ऋषियो ! धर्मराज के कहने से वह प्रमद्वरा रुरुकी आधी आयु पाकर सोवतीसी तुरंत उठ बैठी १२ । १६ रुरुके भविष्य में यह लिखा था कि इसकी आधी आयु भार्या के अर्थ लोप होजायगी इसके उपरांत उन दोनोंका

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

विवाह उनके पिताओंने करादिया १७ और वे दोनों परस्पर बड़ी प्रीतिसे रमण करने लगे और रुरुने सर्पोंके मारने का प्रण किया जो सर्प जहां पावें वहीं मारडालें एक दिन रुरु बड़े वनको गये १८। २० वहां एक बूढ़े डुंडुभनामी सर्पको देखकर बड़ाभारी सोंटा लेकर मारने को चले तब वह सर्प बोला कि महाराज मैंने आपका कुछ अपराध नहीं किया है आप मुझे क्यों मारते हैं २१।२२॥

इति श्रीभाषामहाभारते आदिपर्वणि नवमोऽध्यायः ९॥

दशवां अध्याय।

रुरुको सर्पों के मारने की कथा॥

सूतपुत्र बोले हे ऋषियो! रुरु उस सर्प की यह बात सुनकर बोले कि हमारी प्राणप्यारी स्त्रीको सर्प ने डसा था उस समय हमने यह प्रतिज्ञा की थी कि मैं सर्पों को सदैव मारूंगा इस कारण से मैं तुझको भी मारना चाहताहूं तू किसी तरह नहीं बचैगा १। २ तब वह सर्प बोला कि काटनेवाले सर्पोंकी दूसरी जाति है हम डुंडुभ जातिके सर्पहैं हम काटना तो दूरहै किसीको गंधसेभी दुःख नहीं देते आप धर्मके जाननेवाले हो हम विषहीन सर्पों को मारना आपको उचित नहीं है ३। ४ सर्पकी यह बात सुनकर रुरुने उसे ऋषि जानकर भय किया और नहीं मारा ५ उपरांत चित्तको शांत करके बोले कि तुम पूर्वजन्म में कौन थे और यह देह तुमको क्योंकर मिली ६ वह सर्प बोला कि पूर्वजन्म में मैं सहस्रपाद नाम ऋषि था ब्राह्मण के शापसे यह देह पाई है ७॥

इति श्रीभाषामहाभारते आदिपर्वणि दशमोऽध्यायः १०॥

ग्यारहवां अध्याय।

डुंडुभसर्पका ब्राह्मण के शाप से छूटकर दिव्य देह पाना॥

सूतपुत्र बोले हे ऋषियो! उस सर्पकी यह बात सुनकर रुरुने पूंछा कि ब्राह्मणने तुमको क्यों शाप दिया और यह शरीर तुम्हारा कबतक रहेगा वह सर्प बोला कि खगमनाम एक ब्राह्मण का पुत्र मेरा मित्र था वह बड़ा तपोबल रखता था और वाणी उसकी बड़ी तीक्ष्ण थी १। २ एक दिन वह अग्निहोत्र कररहा था मैंने हँसीसे तिनके का सांप बनाकर उसको डराया वह मोहित होगया ३ जब उसको ज्ञान हुआ तब वह मुझपर बड़ा कुपित हुआ और मुझको शाप दिया कि जैसा बलवान् सर्प तैंने हमारे डरानेको बनायाहै वैसाही हमारे शापसे तू होजा ४। ५ मैं उसके तपोबल को जानता था उसका शाप सुनतेही

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दुःखित होकर बड़ी दीनता से उसके सम्मुख गया और हाथ जोड़कर कहा कि मित्र मैंने हँसी से आपका यह अपमान किया था ६।७ मेरा अपराध क्षमा करो और अपने शापको लौटा लो यह सुनकर वह ब्राह्मणभी दुःखित हुआ और बोला कि हमारा कहा तो किसी प्रकारसे झूंठ नहीं होसक्ता ८।९ परन्तु अब तुम अपने मनमें ध्यान रक्खो कि थोड़े दिनोंमें प्रमतिऋषि के रुरुनाम पुत्र होगा उसको देखकर तेरी शाप से मोक्ष होगी १०।११ सो तुम प्रमति-ऋषि के पुत्र रुरु हो तुम्हारा दर्शन हमको मिला अब मैं अपने स्वरूप को पाकर तुम्हारे हितकी बात कहूंगा १२ ऐसा कहिके उस ऋषिने सर्पदेह छोड़-कर सुन्दर प्रकाशमान स्वरूप धारण किया १३ और रुरुसे कहा कि अहिंसा परम धर्म है १४ ब्राह्मण को किसी जीवका मारना उचित नहीं है ब्राह्मणोंका परम धर्म यहहै कि वेदोंकी धारणा अहिंसा सत्यवचन और क्षमा और जो धर्म क्षत्रियोंका है वह तुमको न करना चाहिये दण्ड धारण उग्रत्व और प्रजाको पालना यह क्षत्रियों का धर्म है १५।१८ पहिले राजा जनमेजय ने सर्पसत्र यज्ञ किया था उसमें सर्पोंकी हिंसा बहुत हुई और जो सर्प डरेहुये थे उनकी आस्तीक ब्राह्मणने जो बड़े तपोबल के रखनेवाले थे और वेदवेदांग के जाननेवाले थे रक्षा की १९।२० ॥

इति श्रीभाषामहाभारते आदिपर्वणि एकादशोऽध्यायः ११ ॥

बारहवां अध्याय।

रुरुका वनमें मूर्च्छित होना और फिर घर आनेका वृत्तान्त ॥

रुरुने उस ऋषिसे पूछा कि राजा जनमेजय ने क्यों सर्पोंकी हिंसा की थी और सर्पोंकी वहां इसप्रकार से क्यों मृत्यु हुई और आस्तीकने सर्पोंको क्यों बचाया कृपा करके यह सब वर्णन कीजिये वह ऋषि बोले कि यह सब कथा तुमको एक ब्राह्मण मिलेगा वह सुनावेगा ऐसा कहिके वह ऋषि अन्तर्धान होगये और रुरु उनको उस वन में इधर उधर दौड़ दौड़कर ढूंढ़ने लगा जब कहीं पता न मिला तब मूर्च्छित होकर गिरपड़ा और मूर्च्छा जागनेपर अपने घर आया और सब वृत्तान्त अपने पिता प्रमतिसे कहा और प्रमतिने रुरुको वह सब कथा सुनाई १।६ ॥

इति श्रीभाषामहाभारते आदिपर्वणि द्वादशोऽध्यायः १२ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तेरहवां अध्याय।

आस्तीकवंशके वर्णनमें जरत्कारकी कथा ॥

इतनी कथा सुनकर शौनकऋषि बोले कि राजा जनमेजय किसका बेटा था और उसने यह सर्पों का संहार किसलिये किया था और आस्तीक किसके पुत्रथे और उन्होंने सर्पोंको जलतीहुई अग्निसे क्यों बचाया १। ३ यह प्रश्न सुनकर सूतपुत्र ने कहा कि हम आपलोगों को आस्तीक की कथा सुनाते हैं मैंने यह इतिहास अपने पितासे सुना था और हमारे पिता लोमहर्षण जो व्यासजी के शिष्य हैं उन्होंने इस इतिहास को नैमिषारण्यवासी ब्राह्मणों को सुनाया था यह कथा बड़ी पवित्र है और पापों की हरनेवाली है ४। ८ आस्तीक का पिता ब्रह्मचारी यताहार उग्रतप का करनेवाला बड़ा तपस्वी था उसका नाम जरत्कार था (यायावर उसे कहते हैं जो एक राति के सिवाय किसी ग्राम में वास नहीं करते और पन्द्रहवें दिन होम करते हैं) यायावरों में वह सब से श्रेष्ठ हुआ वह पृथ्वीपर तीर्थयात्रा करता हुआ फिरता था और एक रात्रि से अधिक कहीं नहीं ठहरता था जहां सायंकाल होजाता वहीं उसका घर था ९। १२ और उस तीर्थयात्रा की अवस्था में ऐसे २ दीक्षित कर्म करता था कि उनका अशुद्ध अंतःकरणवाले पुरुषसे होना बड़ा कठिनहै अर्थात् वायु भक्षण करके निराहार रहता था रात्रि दिन जागता था और अपने शरीरको सुखाताथा १३ एक दिन उस जरत्कार ने एक जगह एक गड़हले में नीचे को मुख और ऊपर को पैर करके अपने दादा परदादाको लटकते हुये देखा और देखकर उनसे बोला कि आप कौनहैं जो इस गड़हले में नीचे को मुख करके लटके हुये हो १४। १६ पितर बोले कि हम शांसितव्रत यायावर नाम ऋषिहैं हमारी संतान क्षय होनेवाली है इसकारण से हम पृथ्वीपर अधोगति पावेंगे १७ हमारे अब जरत्कार नाम से एक संतान रह गई है वह मूढ़ है केवल तप करता है १८ और विवाह की इच्छाभी नहीं करता है जिससे सन्तान का आगे होना संभव हो इसकारण से हम सब मंदभागी जरत्कार ऐसे अल्पभाग्य संतान के होने से संतानके क्षय होनेपर पृथ्वीपर अधोमुख होकर गिरेंगे और तुम कौन हो जो हमलोगों को देखकर भाइयोंकीसी तरह हमारी विपत्ति पर शोचकर ऐसा पूंछतेहो १९। २१ जरत्कारने कहा मैं आपही जरत्कारहूं और मुझे निश्चय मालूम हुआ कि आप मेरे पिता और पितामह हैं अब मेरे लिये जो कुछ

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आज्ञाहो सो मैं करूं २२ पितर बोले कि पुत्र! तुम अब अपना विवाह करो और हमारे और अपने लिये संतान उत्पन्न करो २३ संसार का यही धर्म है बहुतसे तप और धर्मोंके करने से वह गति नहीं मिलती है जो एक पुत्रके होनेसे मिलती है २४ इससे तुम अब संतानके निमित्त अपना विवाह करो हमारा इसमें परमहित है २५ जरत्कारने कहा कि मैं अपनी देही के सुखके लिये धनका संचय और स्त्री से विवाह नहीं करूंगा परन्तु आपलोगों के हितके लिये जो कोई मुझे मेरेही नामकी कन्याको विना मांगे भिक्षामें देदेगा उससे मैं विवाह करलूंगा २६।२८ मुझ दरिद्री को रूप गुणवती कन्या कौन देगा और जो कोई देगा तो आपके हितके लिये अवश्य लेलूंगा और उसके निश्चय ऐसा पुत्र होगा जिसके कारणसे हमारे पितर तरकर आनन्दपूर्वक स्वर्गवास पावेंगे २९।३१ ॥

इति श्रीभाषामहाभारते आदिपर्वणि त्रयोदशोऽध्यायः १३ ॥

चौदहवां अध्याय।

जरत्कारसे वासुकि नागकी बहिनसे विवाह होना ॥

सूतजी बोले हे ऋषियो! इसके पीछे जरत्कार विवाहके अर्थ पृथ्वीपर घूमतेरहे परन्तु किसीने उनको अपनी कन्या न दी १ एक दिन जरत्कार अपने पितरों के वाक्य याद करके वनमें गये और तीनबेर धीरे २ विवाहके अर्थ कन्या की भिक्षा मांगी २ तब वासुकिनाग अपनी बहिन को उठालाया और जरत्कार से कहा कि हम यह कन्या आपको देते हैं आप कृपा करके ग्रहण कीजिये यह सुन कर जरत्कार ने विचार किया कि हमको अपने नाम की स्त्री की इच्छाहै इसका नाम न जाने क्या है ३। ४ इसलिये वासुकि से पूंछा कि तेरी बहिन का क्या नाम है ५ वासुकि बोला कि इसका नाम जरत्कारहै और पहिले से इसकी रक्षा आपके लिये कीगई थी आप इसको ग्रहण कीजिये इसके उपरान्त जरत्कारने उस कन्या का पाणिग्रहण वेदोक्तविधिसे किया ६। ७ ॥

इति श्रीभाषामहाभारते आदिपर्वणि चतुर्दशोऽध्यायः १४ ॥

पन्द्रहवां अध्याय।

आस्तीकके उत्पन्नहोने और सर्पोंको आगमें जलने से बचानेकी कथा ॥

सूतपुत्र बोले हे ऋषियो! पहिले किसीसमय सर्पोंकी माताने सर्पोंको यह शाप दिया था कि राजा जनमेजय के यज्ञमें तुमको अग्निदेव जलावेंगे १ सो वासुकि नागने अपनी बहिन उस महात्मा ऋषि जरत्कारको उस शापके शान्ति करने

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

के निमित्त दीथी २ और जरत्कारने जब उसको वेदोक्त विधिसे ग्रहण किया तब उसके उस स्त्री से आस्तीक नाम पुत्र उत्पन्नहुआ ३ आस्तीक बड़ा तपस्वी महात्मा वेद वेदाङ्गोंका जाननेवाला सबपर समान दृष्टि रखनेवाला और माता पिताके भयका दूर करनेवाला था ४ ऐसा सुनाहै कि इसके पीछे राजा जनमेजयने सर्पों को नाश करनेवाला सर्पसत्र यज्ञ किया ५ उस यज्ञ में आस्तीकने अपने तपके प्रभावसे अपने मामाभाई और अन्य सर्पोंको भी जलनेसे बचाया और अपने पितरों को तारा और अनेक व्रत करने और वेदके पढ़ने से सबसे अनृण हुआ बड़ी २ दक्षिणा जिनमें दीजाती हैं ऐसे यज्ञोंको करके देवताओंको ब्रह्मचर्य रहकर ऋषियों को और संतान से पितरों को तृप्त किया इसके उपरांत जरत्कार भी आस्तीक नाम पुत्रके होने से पितरों के बड़े भारको दूरकर अपने पितामहाओं के साथ स्वर्गवासी हुए ६। १० जरत्कार ने स्वर्गवास बहुत दिनोंमें पाया इतनी कथा सुनाकर सूतपुत्र बोले कि आस्तीक की कथा हम आपको सुना चुके अब आप जो कुछ और कहैं सो सुनावें ११॥

इति श्रीभाषामहाभारते आदिपर्वणि पंचदशोऽध्यायः १५ ॥

सोलहवां अध्याय।

कश्यपजीसे कद्रूविनताका विवाह और कद्रूसे सर्प और विनतासे गरुड़जीकी उत्पत्तिकी कथा॥

शौनकऋषि बोले हे सूतपुत्र! तुम कथा बहुत अच्छी तरह जैसे तुम्हारे पिता कहतेथे कहते हो तुम्हारे मुख से अक्षर और सब पद बहुत मधुर निकलते हैं हमने इस कथा को तुम्हारे पिता से जो हमारी सेवामें सदैव लगे रहते थे सुनी थी अब तुमभी इस आस्तीक की कथा को विस्तारसहित जैसे तुम्हारे पिताने सुनाई थी सुनाओ सूतपुत्र बोले बहुत अच्छा मैंने जिस प्रकार से इस कथा को अपने पितासे सुना है उसी प्रकार आपसे विस्तारसहित कहताहूं १। ४ पहिले देवयुग में प्रजापति के दो बेटीथीं एकका नाम कद्रू और दूसरी का नाम विनता था प्रजापतिने उन दोनोंका विवाह कश्यपजी से करादियाथा वे दोनों ब्रह्माके समान पति पाकर आपस में प्रीति से रहने लगीं और पतिकी सेवा करने लगीं एक समय कश्यपजीने उन दोनों से वरदान मांगने को कहा तब प्रथम प्रसन्न होकर कद्रूने कहा कि महाराज! मेरे बराबर पराक्रमवाले सहस्र सर्पपुत्र होवें ५। ८ और विनताने कहा कि मेरे दो पुत्र होवें परंतु कद्रू के पुत्रोंसे बल पराक्रम में अधिकहों ९ कश्यपजीने कहा ऐसाही

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

होगा १० इसके उपरांत दोनों को गर्भ रहा और कश्यपजी यह कहके कि गर्भका अच्छी तरह से यत्न करना वनमें तपस्या करने को चलेगये इसके बहुत दिन पीछे कद्रूने सहस्र और विनता ने दो अंडे दिये ११। १३ दासियोंने उन अंडों को गरम बरतनों में रखकर पांचसौ वर्षतक रक्खा रहने दिया १४ उपरांत कद्रूके सहस्रपुत्र उन अंडों के बाहर निकले और विनता के पुत्र न निकले १५ तब विनताने पुत्रके देखने की इच्छा से एक अंडे को छेदकर देखा १६ उसमें जो पुत्रथा उसका उस समय तक आधा शरीर बनाथा वह पुत्र अपनी माता से क्रोध करके बोला कि तैंने मुझको आधे शरीर की अवस्था में बाहर निकाला इससे तू अपनी सौति की पांचसौ वर्षतक दासी रहैगी और जो इस दूसरे अंडेको अभी न फोड़ेगी तो पांचसौ वर्ष पीछे इसमें से बड़ा बलवान् पुत्र होगा और वह तुझको दासीपने से छुटावेगा १७। २१ ऐसा कहके वह विनता का पुत्र आकाश को उड़गया और सूर्यका सारथी हुआ वही प्रभातके समय अरुणरूप दीखता है इसके उपरांत सर्पों को खानेवाले गरुड़जी उत्पन्न हुये २२। २३ वे उत्पन्न होतेही अपनी माता विनता को छोड़कर अपने भोज्य को खाने के लिये जो उनके लिये ब्रह्माजीने पहिले से रच रक्खाथा आकाश में चलेगये २४॥

इति श्रीभाषामहाभारते आदिपर्वणि षोडशोऽध्यायः १६॥

सत्रहवां अध्याय।

कद्रू और विनताका उच्चैःश्रवा सूर्यके घोड़ों को देखने और समुद्र मथने की कथा॥

सूतपुत्र बोले हे ऋषियो! एक समय कद्रू और विनता साथ जारही थीं उस समय उन दोनों ने सूर्य के उच्चैःश्रवा घोड़े जो क्षीरसमुद्र से मथकर अमृत निकालने के समय उत्पन्न हुये थे देखे उत्तम जगत् में श्रेष्ठ श्रीमान् अजर दिव्य सब लक्षणों से पूजित घोड़ों की सब देवताओंने मिलकर पूजा की १। ३ यह सुनकर शौनक ऋषि बोले कि देवताओंने अमृत किस प्रकार से कहां मथकर निकालाथा जहां उच्चैःश्रवा बड़े पराक्रमी घोड़े उत्पन्न हुये ४ सूतपुत्र बोले कि सुमेरु पर्वत जो अत्यंत प्रकाशमान अचल उत्तम सोने के सदृश उजली चोटियोंसे सूर्यके तेजको निरादर करनेवाला देवता और गंधर्वों के रहनेका स्थान है उसे अधर्मी मनुष्य नहीं देखसक्के जिसमें बड़े बड़े सर्पों के रहनेका स्थान है और बड़ी बड़ी उत्तम ओषधियां उत्पन्न होती हैं और इतना

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ऊंचा है कि आकाश को छूताहुआ विदित होता है जिसपर अनेक नदी और वृक्ष लगे हैं और बहुत से पक्षी जहां तहां अनेक २ मीठी २ बोलियां बोलते रहते हैं उसकी रत्नजटित एक बड़ी ऊंची चोटीपर एक समय सब देवता बैठकर अमृत निकालनेका उपाय सोचरहे थे ५। १० उस समय नारायण बोले कि सब देवता और दैत्य मिलकर समुद्र को मथें तो उसमें से अनेक रत्न निकलेंगे और पीछे से अमृतभी निकलेगा ११। १३ ॥

इति श्रीभाषामहाभारते आदिपर्वणि सप्तदशोऽध्यायः १७ ॥

अठारहवां अध्याय।

समुद्र मथकर चौदह रत्न निकलने और भगवान् के मोहनी रूप धारण करने की कथा ॥

सूतपुत्र बोले हे ऋषियो! इसके उपरांत समुद्र मथनेके लिये सब देवता मंदराचलपर्वत को लेने के लिये गये वह पर्वत अतिउत्तम अपनी उँचाई से आकाश को छूताहुआ अनेक वृक्षों की लताओं से शोभित पक्षियों की अनेक प्रकार की मधुर बोलियों से घोषित मृग हाथी व्याघ्र वाराहआदि अनेक डाढ़वाले जीवों से व्याप्त किन्नर अप्सरा और देवताओं से अत्यन्त शोभित दश सहस्र योजन पृथ्वी से ऊंचा और सहस्र योजन पृथ्वी में दबाहुआथा १। ३ उसको देखकर देवताओं की सामर्थ्य उसे उखाड़ने को न हुई तब सब लौटकर ब्रह्माजी और विष्णु भगवान् से बोले कि महाराज! वह पर्वत बड़ा भारी है हमारी सामर्थ्य उसे लानेकी नहीं है आपही उसे मँगाने का यत्न कीजिये ४। ५ उस समय ब्रह्माजी और विष्णु भगवान्ने शेषजीसे पहाड़को उखाड़ कर लाने को कहा उनके कहने से पराक्रमी शेषजीने अपने बलसे उस पर्वत को मृग पक्षी आदिसहित उखाड़लिया और उठाकर समुद्र के किनारे रखदिया ६। ८ तब सब देवताओं ने समुद्र से कहा कि हम जल मथकर अमृत निकालेंगे ९ यह सुनकर समुद्र बोला कि आप लोग अमृत मंदराचल पर्वत से बिलोकर निकालेंगे इसलिये इसका भ्रमण सहने के लिये आप कूर्मराज से कहैं कि वे इसको अपनी पीठपर धरैं तब सब देवता और दैत्यों ने कूर्मराज से मंदराचल पर्वतका बोझ उठाने को कहा कूर्मराज बोले कि बहुत अच्छा तब सब देवताओं और दैत्योंने उस पर्वत को समुद्र में कूर्मराज की पीठपर रखकर उससे समुद्र को बिलोने के लिये उस पहाड़ में वासुकि सर्प को लपेटा जिधर वासुकि का मुखथा उधर दैत्योंने और जिधर पूंछथी उस ओर देवताओं ने पकड़ा और

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बड़े वेग से बिलोने लगे शेषजी वासुकि नागके मुखके पास खड़े हुये और उसके मुखसे निकले हुये झागों को पृथ्वी से पोंछतेथे और उसके श्वासकी गरमी को सहते थे १०। १५ इसके उपरांत बिलोने के श्रम से उस वासुकि नाग के मुखसे वायु और धुआं निकला वह बिजली और मेह होकर देवताओं पर वर्षनेलगा १६। १७ इसके पीछे उस पहाड़के फूल टूट टूटकर देवताओं के ऊपर गिरने लगे और सब देवता और दैत्य उन फूलों से ढकगये १८ उससमय समुद्र के बिलोने का ऐसा शब्द होताथा जैसे बादल गरजता है १९ और उस पहाड़ की धूमसे जल के और वरुणलोक पाताललोक में रहनेवाले सब जीव जन्तु पिसकर मर गये २०। २१ पहाड़ के ऊपर के सब वृक्ष आपस में टक्कर खा खाकर टूटकर गिरपड़े २२ और उन वृक्षों की टक्कर से ऐसी अग्नि उत्पन्न हुई कि सब पहाड़ चारों ओरसे जलने लगा २३ और मृग व्याघ्र सिंह वाराह आदि सब जीव उसमें जलकर भस्म होगये २४ उस अग्नि को इन्द्रने जल वर्षा करके बुझाया २५ और समुद्र का जल पहाड़ पर से अनेकवृक्षों के गोंद नानाप्रकार की ओषधियों और रसों के गिरने से मीठा होकर दूधके अनुसार होगया तब उसमें से घृत निकला २६। २८ इतनी कथा सुनाकर सूतजी बोले कि हे ऋषियो! देवता और दैत्योंने बड़ी देरतक समुद्र मथा जब थकगये तब ब्रह्माजी से कहा कि महाराज! हमलोगोंने सिवाय विष्णु भगवान्के इस समुद्रको बड़ी देरतक मथा परंतु इसमें से अभी अमृत नहीं निकला और हम सब थकगये २९। ३० यह सुनकर ब्रह्माजी विष्णु भगवान् से बोले कि आप इनको अपना बल दें नहीं तो इनकी सामर्थ्य मथने की नहीं है ३१ तब विष्णु भगवान् ने कहा कि हम बल देते हैं इन सबको चाहिये कि मंदराचलको अच्छेप्रकार से घुमाघुमाकर समुद्र को बिलोवें ३२ विष्णुके यह वचन सुनकर सब देवता और दैत्योंने बड़े वेग से उस पहाड़को समुद्रके जलमें घुमाया ३३ उसके घुमाने से उस समुद्र में से पहिले लाख किरणधारी प्रसन्नात्मा और उज्ज्वल चन्द्रमा उत्पन्नहुआ ३४ इसके अनन्तर श्वेतवस्त्र धारण किये हुये लक्ष्मी सुरादेवी श्वेतघोड़ा ३५ कौस्तुभमणि जिसको नारायण ने गलेमें धारण किया ३६ धन्वन्तरि एक हाथमें श्वेतकमण्डलुमें अमृत लिये हुये चार दांत वाला ऐरावत हाथी और कालकूटविष यह सब क्रमसे उत्पन्न हुये लक्ष्मी सुरा चन्द्रमा और घोड़ा सूर्यके पास निकलकर खड़ेहुये और अमृतको देखकर सब दैत्य

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कहने लगे कि यह हमारा है और ऐरावत हाथी को इन्द्रने अपनी सवारी में रक्खा ३७। ४० और जब कालकूटविष उत्पन्न हुआ उसकी गन्धसे तीनों लोक मोहित होगये फिर उसको शिवजीने ब्रह्माजी के कहने से पी लिया और अपने कण्ठमें रक्खा उस विषसे शिवजी का कण्ठ नीला होगया तब से भगवान् शिवजी का नाम नीलकण्ठ विख्यात हुआ ४१। ४३ इसके अनन्तर सब दानव लक्ष्मी और अमृत को लेनेके लिये देवताओं से बड़ा झगड़ा करने को उद्यतहुये ४४ नारायण ने उन दोनों का झगड़ा देखकर बड़ा अद्भुत मोहनीरूप स्त्रीका धारण किया और दैत्योंके पास खड़े होकर उनके मनको मोहिलिया और उन मूढ़ दैत्य दानवों ने वह अमृत उस मोहनीरूप स्त्री को दे दिया ४५। ४६॥

इति श्रीभाषामहाभारते आदिपर्वणि अष्टादशोऽध्यायः १८॥

उन्नीसवां अध्याय।

भगवान्का देवताओं को अमृतपान कराने और देवता और दैत्यों के युद्धकी कथा॥

सूतपुत्र बोले हे ऋषियो! इसके उपरान्त सब दैत्य और दानव नाना अस्त्रशस्त्र लेकर देवताओं से घोर युद्ध करने को तय्यार हुये १ और मोहनी रूप भगवान् ने वह अमृत देवताओं को पिलाया पिलाते समय एक राहुनाम दानव देवताओं का स्वरूप धारण करके उनके बीचमें आबैठा और अमृत पीने लगा २। ४ तब सूर्य और चन्द्रमाने नारायण से कहा कि वह दैत्य देवरूप धरके अमृत पीता है अमृत उसके कंठतक पहुँचा था कि नारायण ने यह बात सुनकर सुदर्शनचक्र से उसका शिर काट लिया ५। ६ वह शिर आकाश में जाकर बड़ा घोर शब्द करनेलगा और शरीर पृथ्वी पर गिरपड़ा परन्तु अमृत के प्रभाव से मरा नहीं वह दोनों राहु और केतुके नाम से प्रकट हुये और सूर्य चन्द्रमा से वैर मानकर अबतक ग्रसते हैं ७। ९ इसके उपरान्त खारी समुद्रके किनारे देवता और दैत्यों का बड़ा घोर तुमुल युद्ध होने लगा और श्रीनारायणने भी अपना मोहनीरूप छोड़कर उन दैत्यों को अनेक शस्त्रों से भयभीत किया १०। ११ इसके पीछे देवता और दैत्यों के परस्पर युद्ध करने से दैत्योंका नाश होनेलगा बहुत से दैत्य तलवार बरछी और गदासे टुकड़े टुकड़े होकर रुधिर उगलते हुये पृथ्वीपर गिरतेथे १२। १३ बहुत से दैत्य मारो छेदडालो हटाओ गिराओ दौड़ो ऐसे कह कहकर युद्ध करतेथे उसी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

समय उस युद्धमें नर नारायण भी आपहुँचे १४।१६ और बाणों से दैत्यों को मारने लगे विष्णु भगवान् ने नरके धनुषबाणों को देखकर अपने सुदर्शन चक्र को याद किया २० और वह यादकरतेही आपहुँचा भगवान्ने उस शत्रुके नाश करनेवाले बड़े बलवान् तेजयुक्त भयंकर सुदर्शन चक्र को दैत्योंकी सेना में बारबार फिराकर मारा और वह दैत्यों को अग्निकी समान जलाने और नाश करने लगा २१।२३ दैत्य यह देखकर आकाश से बड़े बड़े पहाड़ों को वृक्षों सहित देवताओंपर फेंकनेलगे उन पहाड़ों के पृथ्वीपर गिरने से पृथ्वी हिलनेलगी उस समय श्रीभगवान्ने सुवर्ण लगेहुये बाणों से उन पहाड़ों को काट डाला २४।२८ और दैत्यों के वध के लिये आकाश में सुदर्शनचक्र को छोड़ा सुदर्शनचक्रने उन दैत्यों को काट काटकर पृथ्वीपर गिरादिया यह दशा देखकर बहुत से दैत्य खारी समुद्रमें गिरपड़े बहुत से पृथ्वीपर जाबैठे और बहुत से इधर उधर भागगये २६ इसप्रकार से हे ऋषियो! देवताओं की जय हुई इसके पीछे देवता मन्दराचल पर्वत को जहांका तहां रखआये और जय पाकर प्रसन्न होकर स्वर्ग को गये और अमृत के घड़े को रक्षासहित रखने के लिये इन्द्रआदि सब देवताओंने भगवान् नरको दिया ३०।३१॥

इति श्रीभाषामहाभारते आदिपर्वणि ऊनविंशोऽध्यायः १६॥

बीसवां अध्याय।

कद्रूका विनतासे दासी होनेका प्रण रोपकर सूर्य के घोड़ेका रंग पूछने की कथा॥

सूतपुत्र बोले हे ऋषियो! उस महापराक्रमी घोड़े के उत्पन्न होने का हाल सुनकर एक दिन कद्रूने विनता से पूंछा कि सूर्य के घोड़ेका क्या रंगहै १।२ विनता बोली कि श्वेत रंगहै और जो तुम जानती हो सो तुमभी कहो ३ कद्रू बोली सूर्य के रथके घोड़ेकी पूंछ काली है विनता बोली अच्छा कल चलकर देखेंगी जो हारजाय सो दासी बनै ४ इस प्रकार से आपस में प्रण करके कद्रू ने अपने पुत्रों को बुलाकर कहा कि तुम जाकर सूर्य के घोड़े की पूंछसे लिपट जाओ जिससे उसका काला रंग दीखने लगे और मैं दासी होने से बचजाऊं उनमेंसे बहुत से सर्पोंने माताका कहना न माना और उनको कद्रूने शाप दिया कि पांडवों के वंशमें आगे राजा जनमेजय सर्पसत्र यज्ञ करेंगे उसमें तुम सब अग्निमें जलोगे ५।८ ब्रह्माजी कद्रूका यह शाप सुनकर जगत्का हित समझकर सब देवताओं सहित कद्रूके पास आये और उसकी बड़ाई करके कहा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कि तेरा दियाहुआ शाप सचाहो क्योंकि ये सब सर्प बड़े विषधारी हैं और संसारी जीव इनसे अत्यन्त दुःखी हैं सैकड़ों जीवोंको ये नित्य मारते हैं यह काम तैंने बड़ा योग्य किया नहीं तो ये जगत्का नाश करदेते ऐसा कहके ब्रह्माजी कश्यपजी के पास गये और उनसे कहा कि ये तुम्हारे पुत्र बड़े विषधरहैं दिन-रात संसारी जीवोंको दुःख देते हैं इनकी माता कद्रूने किसी कारणसे जनमेजय के यज्ञमें नाश होनेका इनको शाप दियाहै सो आपको क्रोध करना उचित नहीं है यह होतव्य ऐसीही है और दुःखदाइयोंका नाश होना उचितहै इसप्रकार से ब्रह्मा जी कश्यपजीको समझाकर उनको विष हरनेवाली विद्या देकर चलेगये ९।१६॥

इति श्रीभाषामहाभारते आदिपर्वणि विंशोऽध्यायः २०॥

इक्कीसवां अध्याय।

कद्रू और विनताका सूर्यके घोड़ेका रंग देखने को जानेकी कथा॥

सूतपुत्र बोले हे ऋषियो! जब सबेरा हुआ तब कद्रू और विनता दोनों सूर्य के घोड़ोंको देखने चलीं और आकाशमार्गसे समुद्रको देखा जो वायुसे उठी हुई लहरों से शोभायमान मगर आदि सहस्रों जीवों से भराहुआ बड़ा गहरा भयानक सब तरहके रत्नोंकी खान वरुण और नागों के रहनेका स्थान महारमणीक, नदियोंका मालिक, पातालकी अग्नि असुर और भयंकर जीवोंके रहनेका आलय, अव्यय, शुभ, देवताओं के अमृत निकलनेका स्थान, शुद्ध जलयुक्त, अतिगंभीर, अप्रमेय, अचिन्त्य आकाश के तुल्य प्रकाशमान सहस्रों नदियों से मिलाहुआ अव्यय, योगनिद्रा से सेवित विष्णुके सोनेका स्थान वज्रसे डरेहुये मैनाक पर्वत को अभय करनेवाला युद्धसे भागे हुये दैत्योंका परायण कल्याण-रूप अगाध अपार चारों ओर से अत्यंत पूर्ण और अनन्तथा १।१८॥

इति श्रीभाषामहाभारते आदिपर्वणि एकविंशोऽध्यायः २१॥

बाईसवां व तेईसवां अध्याय।

विनताका कद्रूसे हारने और गरुड़जी की उत्पत्ति की कथा॥

सूतपुत्र बोले हे ऋषियो! इसके उपरांत सर्पोंने यह विचारा कि माताका काम न होगा तो माता क्रोधसे हमको भस्म करदेगी और काम होजानेपर माता हमसे प्रसन्न होकर हमको अपने दिये हुये शापसे छुटादेगी ऐसा सोचकर सर्प सूर्यके घोड़े की पूंछसे जालिपटे इस अन्तरमें कद्रू और विनता दोनों उत्तम विशेषणवाले समुद्र को नांघकर १।१२ आकाशमार्ग से सूर्य के घोड़े के पास

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पहुँचीं और उसकी पूंछ काली देखकर विनता चकितसी रहगई और वचन हारने के कारण से कद्रूकी दासी होकर रहने लगी १३। १६ इसके उपरांत समय बीतनेपर दूसरे अंडेको फोड़कर गरुड़जी उत्पन्न हुये १७ उनका पराक्रम अतुल और तेज सब दिशाओं में उजेला करनेवाला था जहां चाहें तहां जावें और जो चाहें सो रूपधारण करनेमें समर्थ थे रूप उनका अतिडरावना और तेज अग्नि की राशिके समान था नेत्र पीततड़ितके समान थे थोड़े दिनोंमें वे गरुड़नाम महा-पक्षी बड़े होकर आकाश में गये उनके अत्यन्त घोर शब्द करनेवाले भयानक और अग्नि के समान प्रकाशित स्वरूप को देखकर सब देवता भयभीत हुये और अग्नि के पास जाकर विनयपूर्वक बोले १८। २१ कि आपने हमलोगोंको कभी नहीं जलाया था अब यह आपका तेजपुंज प्रलयकाल के समान सबको जलाया चाहता है इस अपने स्वरूप को आप अन्तर्द्धान कीजिये २२ यह सुनकर अग्नि-देव बोले कि तुम डरो मत यह हमारे समान तेज का रखनेवाला कश्यपजीका पुत्र देवताओं का हित दैत्यों का अहित और सर्पोंका नाश करनेवाला गरुड़ है चलो हमारे साथ चलकर देखो यह सुनकर सब देवता अग्नि के साथ गरुड़जी के पास गये और वेदविधिसे उनकी स्तुति करने लगे २३।२६ आप ऋषि हौ सब मंत्रों के जाननेवाले महाभागहौ देव हौ पक्षियों के ईश्वर हौ प्रभु हौ नाश करने वाले हौ सूर्य हौ परमेष्ठी हिरण्यगर्भ हौ प्रजापति हौ इन्द्र हौ हयग्रीव अवतार हौ बाण हौ जगत्पति हौ मुख हौ ब्रह्मा हौ विज्ञानी हौ अग्नि हौ पवन हौ धाता विधाता हौ विष्णु हौ महातत्त्व हौ अहंकार हौ सनातन हौ अमृत हौ यशवान् हौ सूर्य आदि का तेज हौ बुद्धिवृत्ति हौ रक्षणरूप हौ अनुत्तम हौ बलकी ऊर्मि हौ साधु हौ ऐश्वर्यवान् हौ युद्धमें अजित हौ मोक्ष और बंधनरूप हौ उत्तम हौ तेज हौ मृत्यु हौ प्रधान पुरुष हौ कुपित सूर्य के समान अपने तेजसे जलाते हौ भयंकर हौ प्रलय की आगि के समान उठे हौ काल के भी काल हौ बड़े पराक्रमी हौ अग्नि के समान तेजस्वी हौ बिजली कीसी चमक रखनेवाले हौ आकाशगामी हौ कार्यकारणरूप हौ वरके दाता हौ अजित पराक्रमी हौ हम सब देवता आपकी शरण आये हैं आप अपने इस तेजस्वरूप से हमारी रक्षा करौ आपसे सब देवता डरकर भागनेवाले हैं इसकारण से आप अब क्रोध को त्याग करके जगत् की रक्षा करो २७। ३५ आपके वज्रके समान शब्द से सब दिशा आकाश स्वर्ग और यह पृथ्वी कांपरहे हैं और हम सबका हृदय धड़कता

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

है और आपके काल के समान कुपित तेज को देखकर हमें व्याकुलता होती है अब आप कृपा करो और इस स्वरूप को गुप्त करो ३६। ३७ इतनी कथा सुनाकर सूतपुत्र बोले हे ऋषियो! देवताओं की यह स्तुति सुनकर गरुड़जी ने अपने तेज का संहार किया ३८॥

इति श्रीभाषामहाभारते आदिपर्वणि द्वाविंशत्रिविंशावध्यायौ २२। २३॥

चौबीसवां अध्याय।

कश्यपजी के पुत्र अरुण की सूर्य के सारथी होनेकी कथा॥

सूतपुत्र बोले हे ऋषियो! गरुड़जीने देवताओंकी स्तुति सुनकर और अपने तेज को आप देखकर अपने उस तेज को घटादिया और कहा १ कि प्राणियों के चित्तका डर दूर करने के लिये मैंने अपने तेजको घटादिया २ और उपरांत पिताके घरसे अपने अरुणनाम भाई को अपनी पीठपर बैठाकर इच्छानुसार बल करनेवाले आकाशगामी गरुड़जी समुद्र के उस पार अपनी माता के पास लेगये और जब सूर्यने अपने तेजसे सब लोकों को जलाना चाहा तब उस अरुण को पूर्वदिशा में बैठादिया ३। ४ इतनी कथा सुनाकर सूतपुत्र बोले हे ऋषियो! यह सब इतिहास जो मैंने तुमको सुनाया है सो सब प्रमित भार्गवने अपने पुत्र रुरुभार्गव को सुनाया था जब रुरु इतना वृत्तान्त सुन चुके तब अपने पितासे बोले कि देवताओं ने क्या अपराध किया था जिससे सूर्यने इतना क्रोध करके लोकोंको जलाना चाहा ५ प्रमति बोले जब देवताओं ने अमृत पिया था उस समय उनके बीच में राहु दैत्यभी देवताका स्वरूप बनाकर आबैठा और अमृत पीने लगा उसको देखकर सूर्य और चन्द्रमाने विष्णुभगवान् को बता दिया कि यह राक्षस है इस कारण से राहु, सूर्य और चन्द्रमा से वैर मानकर उन को ग्रसने लगा तब सूर्यने विचार किया कि हमने देवताओं के उपकार के लिये राहु को बताया था वह अब हमको वैरभाव से ग्रसता है और देवता सब देखते हैं परन्तु सहाय कोई नहीं करता है हमभी अपने तेज से सबलोकों को कल भस्म कर देंगे ऐसा विचारकर सूर्य अस्त होगये ६। १० और ऋषिलोग इस बातको जानकर देवताओं के पास गये और उन सबको लेकर ब्रह्माजी के पास जाकर बोले कि महाराज! सूर्य कल उदय होतेही अपने तेजसे सबलोकों को भस्म करदेंगे ब्रह्माजी बोले कि तुम सत्य कहते हो सूर्यका ऐसाही विचार है परंतु हमने उसका प्रबंध पहिलेही से करदिया है अर्थात् कश्यपजी के अरुण

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नाम बड़े तेजस्वी पुत्र को पूर्व में बैठादिया है वह सूर्यका सारथी बनकर अपने तेज से सूर्य के तेज को हरेगा ११। १६ यह कहकर प्रमति बोले कि इस ब्रह्माजी की आज्ञा से अरुण सूर्य का सारथी होगया और उदय होनेपर सूर्य अरुण से ढकगये १७। १८॥

इति श्रीभाषामहाभारते आदिपर्वणि चतुर्विंशोऽध्यायः २४॥

पच्चीसवां अध्याय।

नागों के स्थानको जाते समय नागों के मूर्च्छित होने और कद्रू करके इन्द्रकी स्तुति करने की कथा॥

सूतपुत्र बोले हे ऋषियो! गरुड़जी अपनी माता के पास जो प्रण हारकर कद्रूकी दासी होकर रहतीथी गये और वहां रहने लगे १। २ एक समय कद्रू विनतासे बोली कि हे कल्याणी! मुझे समुद्रमें जहां नागोंका बड़ा रमणीकस्थान है लेचल विनताने यह सुनकर कद्रूको अपने कंधेपर चढ़ालिया और अपनी माताकी आज्ञा से गरुड़जीने सर्पोंको कंधेपर रखलिया ३। ५ और वहांसे सूर्यके सन्मुख होकर चले सूर्यके तेजसे सब सर्प मूर्च्छित होगये ६ कद्रू यह देखकर इन्द्रकी स्तुति करनेलगी हे इन्द्र! मैं तुमको नमस्कार करती हूं तुम सब देवताओं के ईश्वरहो बलके मारनेवाले हो ७ सहस्राक्ष हो शचीपति हो हमारे बड़े रक्षक हो बहुत जलको उत्पन्न करने की सामर्थ्य रखनेवाले हो मेघ हो वायु हो अग्नि हो बिजली हो बादलों के समूह को फैलानेवाले हो महाघन हो घोर वज्र हो गरजनेवाले मेघ हो लोकों के रचने और संहार करनेवाले हो अपराजित हो सब प्राणियोंकी चैतन्य आत्मा हो सूर्य और अग्नि हो महत्तत्व हो आश्चर्यरूप हो राजा हो पालनेवाले हो प्रकाशवान् हो परायण हो सर्व हो अमृत हो चंद्रमा हो ८। १३ मुहूर्त्त और तिथि हो लव हो क्षण हो शुक्ल और कृष्णपक्ष हो कलाकाष्ठारूप हो वर्ष ऋतु महीना दिन और रात हो १४ पृथ्वी हो आकाश हो महासमुद्र हो १५ यशस्वी हो प्रसन्न मन और बुद्धिमान् हो बड़े २ ऋषियोंसे पूजित हो यज्ञमें स्तुति कियेजाते हो अपनी ईश्वरतासे वषट्कार और हव्यों को ग्रहण करनेवाले हो १६ ब्राह्मणों से पूजित हो वेदों में गायेगये हो और आपकी प्राप्ति के लिये अग्निहोत्री ब्राह्मण वेदके अंगों को पढ़ते हैं आप कृपा करके जल वर्षाकर मेरे पुत्रोंके दुःखको हरो १७॥

इति श्रीभाषामहाभारते आदिपर्वणि पंचविंशोऽध्यायः २५॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

छब्बीसवां अध्याय।

इन्द्रका जल वर्षाना और सर्पोंको मूर्च्छा से जागना ॥

सूतपुत्र बोले हे ऋषियो ! इन्द्रने कद्रूकी विनय सुनकर आकाश को नीली घटाओं से ढकदिया १ और अमृतरूपी जल वर्षाने की आज्ञा दी इन्द्रकी आज्ञा से मेघ परस्पर गर्जने लगे बिजली चमकने लगी और मेघ अखंडधारा होकर वर्षने लगा २। ४ उस जलके गिरनेसे सूर्य चंद्रमाका प्रकाश मंद होगया और सर्प सब प्रसन्न हुये वह जल रसातल तक पहुँचा सब पृथ्वी जल से ढकगई और सर्प माताके साथ सुखपूर्वक रमणीकनाम द्वीपमें जाय पहुँचे ५। ८ ॥

इति श्रीभाषामहाभारते आदिपर्वणि षड्विंशोऽध्यायः २६ ॥

सत्ताईसवां अध्याय।

सर्पों का मकरावासनाम द्वीप में विहार करना और गरुड़जी का सर्पों से अपनी माता का दासीभाव छुटाने का उपाय पूछना ॥

सूतपुत्र बोले हे ऋषियो ! इसके अनन्तर सर्प गरुड़पर सवार हुये मकरावास द्वीप में पहुँचे और घोर लवणासुर और मनोरम कानन को देखा उस वन को समुद्र अपनी लहरोंसे सींच रहाथा अनेक पक्षी चित्र विचित्र बोली बोल रहे थे अनेक प्रकारके फल फूलों के वृक्षों की पंक्ति लग रही थीं तालाबों में सुंदर कमल फूल रहे थे शीतल मंद सुगंध वायु चल रहीथी बहुतसे सुगंधित फूल हवा से उड़कर जहां तहां छिटके हुये थे हवा के झोंकेसे जहां तहां फूलों की वर्षा होरही थी अनेक मस्त भौंरे जहां तहां गूंज रहेथे उस पवित्र मनोहर रमणीक कल्याणरूप क्रीड़ायोग्य वनको गरुड़के साथ कद्रू के पुत्र सर्प देखकर बड़े प्रसन्न हुये और उसमें विहार करने लगे फिर अन्य द्वीप में विहार करने की इच्छासे सर्प गरुड़जी से बोले १। १० हे आकाशमें चलनेवाले गरुड़ ! तुमने बहुत से द्वीप देखे हैं अब हमको उस द्वीपमें ले चलो जो इस द्वीप से भी रमणीक हो ११ यह सुनकर गरुड़जी अपनी माता विनता से बोले कि माता क्या कारण है जो हमको सर्पोंकी आज्ञा दासों के अनुसार पालन करनी पड़ती है १२ यह सुनकर विनता बोली कि मैं अपनी सौति कद्रू से सर्पों के छल करने के कारणसे प्रण हारकर उसकी दासी होगई हूं यह सुनकर गरुड़जी दुःखी होकर सर्पोंके पास गये और उनसे कहा १३। १४ कि ऐसी कौनसी वस्तु है जिसको लाने अथवा जानने या उसमें अपना बल दिखलाने से

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हमारी माता दासीभावसे छूट जावै १५ यह सुनकर सर्प बोले कि तुम अमृत लाओ उसके लानेपर तुम दासभावसे छूट जाओगे १६ ॥

इति श्रीभाषामहाभारते आदिपर्वणि सप्तविंशोऽध्यायः २७ ॥

अट्ठाईसवां अध्याय।

क्षुधा मिटानेके लिये गरुड़जीका निषादोंको भक्षण करना ॥

सूतपुत्र बोले हे ऋषियो ! गरुड़जी सर्पोंकी यह बात सुनकर अपनी माता के पास आये और कहा कि माता ! मैं अमृत लेनेको जाना चाहता हूं मुझे कुछ भोजन बता १ यह सुनकर विनता बोली कि इस समुद्रमें आगे एकांतमें सहस्रों निषाद रहते हैं उनको भक्षण करके अमृत लेने चला जा २ परन्तु देखियो ब्राह्मण को न मारियो ब्राह्मण सब प्राणियोंका गुरु और अवध्य है ३ क्रोध होनेपर ब्राह्मण अग्नि सूर्य विष और शस्त्र के तुल्य होजाता है और जिस प्रकार शंसितव्रत ब्राह्मण क्रोधके वशमें भस्म करसक्ता है उस प्रकार अग्नि सूर्यादि नहीं कर सक्ते वह ब्राह्मण वेदपाठी वर्णों में श्रेष्ठ प्राणियों में प्रथम उत्पन्न पिता और गुरु है यद्यपि ब्राह्मण तुझे नहीं मारसक्ते हैं परन्तु तुझे ब्राह्मणों से किसी प्रकार द्रोह न करना चाहिये ४। ७ गरुड़जी बोले हे माता ! ब्राह्मण के जानने की क्या पहिचान है उसका रूप, शील और पराक्रम कैसा है और वह कभी सौम्यदर्शन और कभी अग्नि सदृश प्रकाश क्योंकर करता है ८। ९ विनता बोली हे पुत्र ! भक्षण करते समय जो पुरुष तेरे गलेको अग्निके समान जलावै और कंठमें ऐसी पीड़ा करै जैसे मछली का कांटा गले में छिद जानेसे होती है और जो पेटमें जाने पीछे पचे नहीं उसे श्रेष्ठ ब्राह्मण जानियो १०।१२ ऐसे कहके विनता अपने पुत्रके पराक्रमको समझकर आशीर्वाद देने लगी हे पुत्र ! तेरे परोंकी वायु, पीठकी सूर्य और चन्द्रमा, शिरकी अग्नि और सब शरीरकी अष्टवसु रक्षा करें १३। १४ मैं यहां बैठीहुई तेरा कल्याण मनाऊंगी तू अब निर्विघ्न जा १५ इतनी कथा सुनाकर सूतपुत्र बोले हे ऋषियो ! गरुड़जीने माताकी बात सुनकर अपने परोंको झहराया और पवन के समान आकाश मार्ग से निषादालय को चले जब उसके पास पहुँचे तब उसे देखकर प्रसन्न हुये और निषादों को खानेकी इच्छा से अपने परोंकी वायु से वृक्षों को हिलाया और बहुतसी धूल उड़ाकर अँधेरासा करदिया और अपना मुख फैलाकर राह रोककर बैठगये उस समय निषाद अपने घरको जातेथे धूल के अँधेरे में

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

किसी को गरुड़जीका मुख मालूम नहीं हुआ सबके सब उनके मुख में चले गये तब गरुड़जीने अपना मुख बंद करलिया १६। २० ॥

इति श्रीभाषामहाभारते आदिपर्वणि अष्टाविंशोऽध्यायः २८ ॥

उन्तीसवां अध्याय।

निषादों को खाते में गरुड़जी के मुख में एक ब्राह्मण का चलाजाना गरुड़जीका उसको बाहर निकालना और एक बड़े हाथी और कछुवे को लेकर सुमेरु पर्वतपर जाकर एक वृक्षपर बैठना और उस वृक्षकी शाखा का टूटना ॥

सूत बोले हे ऋषियो ! जब गरुड़जी ने अपना मुख बन्द करलिया तब उनके गले में एक ब्राह्मण अपनी स्त्री सहित अंगारे के समान जलाता हुआ पहुँचा गरुड़जी उसे ब्राह्मण जानकर बोले १ कि हे ब्राह्मण ! तू मेरे मुख में से जल्दी बाहिर निकल आ यदि ब्राह्मण पापी भी हो तो भी मेरा अवध्य है २ ब्राह्मण बोला महाराज ! मेरी निषादिनी स्त्री भी है विना उसके क्योंकर निकलूं गरुड़जी बोले तू उसेभी लेकर जल्दी निकल ३। ४ यह सुनकर वह ब्राह्मण अपनी स्त्री सहित गरुड़जी के मुखसे निकल आया और गरुड़जी को आशीर्वाद देकर किसी देशको चला गया ५ तब गरुड़जी अपने परों को फहराकर आकाशमार्गी हुये ६ राहमें कश्यपजी मिले उनको देखकर गरुड़जीने प्रणाम किया और कुशल सुनाई उपरांत कश्यपजीने आशीर्वाद देकर पूछा कि पहले भोजन की कुशलता कहो मनुष्यलोकमें बहुत अन्न होता है ७। ८ गरुड़जी बोले कि माता और भाई सब अच्छीतरह हैं परन्तु भोजन अच्छी तरह नहीं मिलता ९ आज तो माताकी आज्ञा से सहस्रों निषादों को भक्षण किया है परन्तु तृप्ति न हुई अब मैं अपनी माता को दासीभाव से छुटाने के लिये सर्पों का भेजा हुआ अमृत लेने जाताहूं १०। ११ आप कोई ऐसा पदार्थ भोजन के लिये बतलाइये जिसे खाकर मैं तृप्त होजाऊं और अमृत लासकूं १२ यह सुनके कश्यपजी ने कहा कि यह सरोवर बड़ा पवित्र है और देवलोक में भी विख्यात है इसमें एक कछुवा जो तीन योजन ऊंचा और दश योजनका मंडल रखता है वह रहता है और एक हाथी छः योजन ऊंचा और बारह योजन लम्बा इस तड़ाग के किनारे पर आता है पूर्वजन्म के वैरसे कछुवा हाथी को देखकर पानी के ऊपर आजाताहै और हाथीभी उसे देखकर पानीमें चलाजाता है और फिर क्रोध करके दोनों महायुद्ध करते हैं पूर्व जन्म

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

में कछुवा विभावसु नाम बड़ाक्रोधी ऋषि और हाथी सुप्रतीक नामी उस ऋषि का छोटा भाईथा धनके विभागके झगड़े में परस्पर क्रोधकर शाप देने के कारण से बड़ाभाई छोटेके शापसे कछुवा और छोटाभाई बड़े के शापसे हाथी होगया है हे पुत्र! ये दोनों आपस में एक दूसरेको मारना विचारते हैं तू इन दोनों को भक्षण करके अपनी क्षुधाको मिटा और अमृत लेने को चला जा ऐसा कहके कश्यपजी ने गरुड़जी को आशीर्वाद दिया १३। ३२ कि देवताओं से युद्ध करने में तुझे जल से भराहुआ घड़ा ब्राह्मण गौ आदि जो मंगलकारी वस्तु हैं उनके मिलने का फल हो और यजुर्वेद सामवेद की ऋचा पवित्र हविष् सब रहस्य और सब वेद तुझे देवताओं से युद्ध करने में बल दें और तेरा शुभ कल्याण हो ३३।३५ ऐसा आशीर्वाद देकर कश्यपजी तौ चले गये और गरुड़जी उस सरोवर के किनारे पहुँचे जिसके निर्मल जलमें अनेक प्रकार के पक्षी क्रीड़ा कर रहेथे ३६ गरुड़जी अपने पिताका वचन स्मरण करके एक नख से हाथी को और दूसरे से कछुवे को उठाकर आकाशमार्गी हुये और सुमेरु पर्वत पर अलंवती तीर्थ के देववृक्षों के पास पहुँचे ३७। ३८ उन वृक्षों की सुनहली शाखा गरुड़जीके परोंकी वायु के वेगसे हिलने लगीं और वृक्ष इस भय से कि गरुड़जी हमको तोड़ न डालें भयभीत हुये उपरांत गरुड़जी अन्य बड़े २ लम्बे चौड़े वृक्षों के पास गये जिनकी शाखा वैडूर्यमणि की थीं और उनमें रुपहले सुनहले फल लगे हुये थे और अत्यन्त चमकदार थे अर्थात् जैसे देवताओं के सूक्ष्म प्रकाशवान् शरीर होते हैं इसी प्रकार से वहां के वृक्षभी सूक्ष्म शरीरवाले और ज्योतिमय होते हैं ३९। ४१ उनको देखकर एक वट वृक्ष बोला कि मेरी यह शाखा सौ योजन लम्बी है इसपर बैठकर तुम इस हाथी और कछुवे को खाओ ४२। ४३ यह सुनकर गरुड़जी उस वृक्ष की शाखापर सहस्रों पक्षी बैठेहुये थे पत्तोंसे बड़ी सघन होरही थी बैठगये और वह शाखा गरुड़जी के बैठतेही टूटगई ४४॥

इति श्रीभाषामहाभारते आदिपर्वणि ऊनत्रिंशोऽध्यायः २९॥

तीसवां अध्याय।

गरुड़जीका एक कछुवे और एक हाथीको भक्षण करना और देवताओं का अमृतकी रक्षा करने के निमित्त युद्धमें तय्यार होना॥

सूतपुत्र बोले हे ऋषियो! जब वह शाखा गरुड़जी के बैठतेही टूटगई

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तब गरुड़जी ने उसको अपने मुखसे पकड़ लिया और उस शाखा में नीचे को मुख कियेहुये बालखिल्य नाम ऋषियों को लटकते हुये देखकर उनके नाश होने के भयसे उस शाखा को न छोड़ा मुखसे शाखा को और नखों से हाथी और कछुवेको पकड़े हुये वहां से चले १। ५ उनके इस कर्मको जो देवताओं से भी होना कठिनहै देखकर उन ऋषियों ने उस आकाश में बड़ेभारी बोझको लेकर उड़नेवाले पक्षीका नाम गरुड़ रक्खा ६। ७ वहांसे गरुड़जी कछुवा आदिको लियेहुये पहाड़ों को हिलाते अनेक देशोंमें फिरे परन्तु कहीं उस शाखा के रखनेका स्थान गरुड़जी को नहीं मिला उपरान्त घूमते हुये गन्धमादन पर्वतपर जहां कश्यपजी तपस्या कररहे थे पहुँचे कश्यपजी उस दिव्यरूप ८। १० आकाश में मनके वेगके समान चलनेवाले बल वीर्य से भरेहुये पहाड़के तुल्य अति भयानक स्वरूपवाले रौद्र अग्निके समान प्रकाशवान् देवआदि से अजय पहाड़ों को फोड़ने और समुद्रका जल सुखानेवाले मृत्युके समान दर्शनवाले अपने पुत्रको देखकर बोले ११। १४ कि पुत्र! साहस और जल्दी मत करियो सूर्यकी किरणोंके भोजन करनेवाले बालखिल्य ऋषि तुझे क्रोधसे भस्म करदेंगे और फिर पुत्र जानकर कश्यपजी उन ऋषियों से बोले कि हे तपोधन! गरुड़जीका यह आरंभ प्रजाके अर्थ है बड़ा कर्म करना चाहते हैं आप कृपा करके इनको आज्ञा दें १५। १७ यह सुनकर बालखिल्य ऋषि उस शाखा को छोड़कर तपस्या के लिये हिमालय को चले गये १८ तब गरुड़जी ने कश्यपजी से पूंछा कि महाराज! अब ऐसा स्थान बताइये जहां मैं इस शाखा को छोड़ूं १९। २० कश्यपजी बोले कि बरफके पहाड़ पर जहां मनुष्य नहींहैं छोड़ दो २१ यह सुनकर गरुड़जी उस पर्वतकी ओर चले और थोड़ेही काल में उस मोटी शाखा को जिसका पेटा सौ गायके चमड़े की रस्सी में भी नहीं आसक्ताथा अपने मुख में लिये हुये एक लक्ष योजन चलकर उस पहाड़ पर पहुँचे और पिताके कहने के अनुसार उस शाखाको वहां छोड़ दिया २२। २५ उस शाखाके गिरने से उस पर्वतकी चोटियां जो मणि और कांचनके सदृश थीं फटगईं और बहुत से सोने की प्रभावाले वृक्ष जिन में अनेक प्रकार के सुनहले रुपहले फल लगरहे थे उस शाखा से टूटकर पृथ्वी पर गिरपड़े और पहाड़ के हिलने से उसके ऊपर के वृक्षों के फूल गिरने से फूलों की वर्षा हुई २६। २९ सूतपुत्र बोले हे ऋषियो! इसके पीछे गरुड़जी ने उसी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पहाड़के शिखरपर बैठकर उस हाथी और कछुवे को खाया ३० और खाकर वहां से देवलोक को उड़कर चले ३१ और देवताओं को भय करनेवाले अपशकुन दिखाई देने लगे इन्द्रका वज्र डरसे प्रज्वलित हुआ ३२ दिन में धूम्र ज्वाला सहित उल्का गिरने लगे आठ वसु ग्यारह रुद्र बारह सूर्य साध्यगण और मरुद्गण आदिक देवताओं के शस्त्र आपस में भिड़ने लगे ३३।३४ निर्घात शब्दके साथ हवा चलने लगी विना बादल आकाश में गर्जना होने लगी भयानक मेघ रक्त वर्षाने लगे ३५।३६ देवताओं की माला मलीन और तेज नष्ट होगया और रज ने उड़ २ कर देवताओं के मुकुट मलीन करदिये ऐसी ऐसी भयसूचक बातें देख कर इन्द्र बहुत उद्विग्नचित्त होकर बृहस्पतिजी से बोले कि महाराज ! हमको कोई ऐसा शत्रु दिखाई नहीं देता है जो हमारा सामना कर सके यह क्या कारण है जो ऐसे घोर उत्पात दिखाई देतेहैं ३७।३९ बृहस्पतिजी बोले तेरे अपराध और प्रमाद और बालखिल्य ऋषियों के तपके कारण से कश्यपजी का बड़ा पराक्रमी आकाश में चलनेवाला पुत्र तुमसे अमृत छीनने को आता है ४०।४१ वह अमृत हरले जासक्ता है और संसार में जो कुछ असाध्य कार्य हैं उनको भी करसक्ता है ४२ बृहस्पतिजी की यह बात सुनकर इन्द्र आदि सब देवता जिनके शरीर जलते हुये अग्नि के समान प्रकाशमान थे अपने अपने सुनहली वैडूर्यमणि से जटित कवच पहिन लिये और ढाल चक्र परिघ त्रिशूल परश्वध बरछी करबाल और उग्र दर्शन गदा आदि अनेक प्रकाशमान तीक्ष्ण अग्रधारवाले ज्वालायुक्त अस्त्र शस्त्र लेकर अमृत को घेरकर उसकी रक्षा करने को खड़े हुये ४३।५२॥

इति श्रीभाषामहाभारते आदिपर्वणि त्रिंशोऽध्यायः ३०॥

इकतीसवां अध्याय।

अरुण और गरुड़जी के बालखिल्य ऋषियों की तपस्याके फल और कश्यपजी के संकल्प से उत्पन्न होने की कथा॥

शौनक ऋषि बोले हे सूतपुत्र ! इन्द्रका क्या अपराध और क्या प्रमाद था और गरुड़जी बालखिल्य ऋषियों के तपसे कैसे उत्पन्न हुये १ सब प्राणियों के कैसे अधृष्य अवध्य और इच्छानुसार बल करनेवाले हुये २।३ यह सुनकर सूतपुत्र बोले कि यह पुराणों का विषय है इसकी विस्तारपूर्वक कथा कहताहूं आप सुनिये ४ एक समय कश्यपजी महाराज ने पुत्र उत्पन्न

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

करने के लिये यज्ञ किया था उसमें सब देवता गन्धर्व और ऋषिलोग जुड़े थे कश्यपजी ने इन्द्रादि सब देवताओं और ऋषियों को समिध लाने के लिये आज्ञा दी इन्द्र अपने पराक्रम से पहाड़ के समान बोझ लकड़ियों का थोड़ेही कष्टसे लेआये ५।७ फिर अंगूठेके समान अतिकृश शरीर तपोधनी बालखिल्य ऋषियोंको जो एक साथ एक बड़ी लम्बी लकड़ीको लिये चले आते थे उसको एक गौ के चरणजल से भरे तड़ाग में तरते देखकर आश्चर्य करके अपने पराक्रम के अभिमान से उन ऋषियों की अपमानसहित हँसी करके लांघगये ८।१० इस अपमान को देखकर बालखिल्य ऋषियोंने बड़ा क्रोध किया और अपने तपके बलसे इच्छानुसार पराक्रम करनेवाला इच्छानुसार चलनेवाला इन्द्रको भय दिखानेवाला और मनके समान वेगवाला दूसरा इन्द्र उत्पन्न करने के लिये बड़े बड़े मन्त्रों से हवन प्रारंभ किया ११।१४ इस बात को इन्द्र जानकर अत्यन्त दुःखी होकर उन कश्यपजी महाराजके पास गया जिनकी तपस्या बड़ी तीक्ष्णथी १५ और उनसे सब हाल कहा कश्यपजी इन्द्र की बात सुनकर बालखिल्य ऋषियों के पास गये और कहा कि आपका कार्य सिद्ध हो १६ बालखिल्य ऋषि बोले आपका कहा सत्य होवे १७ उपरांत कश्यपजीने शांतिपूर्वक कहा कि यह इन्द्र ब्रह्माजी की आज्ञा से तीनों लोकों पर शासन करने को नियत कियागया है १८ और आपभी इन्द्रही के लिये यत्न कर रहे हैं परन्तु आपको ब्रह्माजी का वाक्य मिथ्या करना उचित नहीं है १९ और आपका संकल्पभी मिथ्या नहीं होसक्ता इससे आप इस देवराज पर कृपा करें और आपके तपरूप फल से उत्पन्न हुआ इन्द्र पक्षियोंका इन्द्र हो २० ऋषि यह सुनकर कश्यपजी का पूजन करके बोले कि हमारा संकल्प इन्द्र के अर्थ था और आपका पुत्र की उत्पत्ति के लिये इस कारण से हमारे इस तप के फल को आपही लेवें २१।२३ इतनी कथा सुनाकर सूतपुत्र बोले हे ऋषियो! उसीसमय में कश्यपजी की विनतानाम स्त्री तप करके पुत्रकी कामना से ऋतुस्नान करके अपने पति के पास आई कश्यपजीने कहा कि बालखिल्य ऋषियों के तप और हमारे संकल्प के प्रभाव से तेरे दो पुत्र एक गरुड़ पक्षियों का इन्द्र और दूसरा अरुण सूर्य का सारथी आकार में चलनेवाले और बड़े पराक्रमी होंगे इस गर्भ को तुम बड़ी सावधानी से रखना इसके उपरान्त कश्यपजी ने इन्द्र से कहा २४।३० कि ये दोनों तेरे भाई बड़े पराक्रमी होंगे और सदैव तेरे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सहायक रहैंगे और इन्द्र तूही रहेगा परन्तु तुझको ब्रह्मऋषि महात्माओं का अपमान करना उचित नहीं है ३१।३२ इन्द्र यह बात सुनकर प्रसन्न हो स्वर्ग को गये और विनता के थोड़े काल में दो पुत्र अरुण और गरुड़ नामी उत्पन्न हुये अरुण सूर्य का सारथी हुआ और गरुड़ पक्षियों के इन्द्र हुये ३३। ३५॥

इति श्रीभाषामहाभारते आदिपर्वणि एकत्रिंशोऽध्यायः ३१ ॥

बत्तीसवां अध्याय।

देवताओं और गरुड़जी के युद्ध की कथा ॥

सूत बोले हे ऋषियो! गरुड़जी उस हाथी और कछुवेको भक्षण करके अमृत लेने के लिये स्वर्ग को गये और वहां सब देवताओं को अमृत की रक्षा के लिये युद्ध करने को तय्यार देखकर उनसे युद्ध करने लगे १ देवताभी गरुड़ जी को देखकर कांपउठे और चारों ओर से अस्त्र शस्त्र मारने लगे २ गरुड़जी ने पहिले अमेयात्मा नाम विश्वकर्मा को जो बिजली और अग्नि के समान तेज रखता था अपने नख और चोंच से घायल करके गिरादिया ३। ४ उपरान्त अपने परों से धूल उड़ाकर अंधकार करदिया जिसके कारणसे एक दूसरे को कोई नहीं देखसक्ता था ५ और देवताओं को पर और चोंच मारकर घायल और व्याकुल करदिया ६। ७ इन्द्रने यह देखकर वायुको आज्ञा दी कि तुम जल्दी इस धूल को हटाकर अंधकार दूर करो ८ वायुने ऐसाही किया और उजेला होने पर इन्द्रादि देवताओं ने गरुड़जी को पट्टिश परिघ शूल गदा प्रज्वलित क्षुरप्र आदित्यरूप चक्र और नानाप्रकार के अनेक अस्त्र शस्त्रों से ढक दिया गरुड़जी उनके अस्त्र शस्त्रों से व्याकुल न होकर तुमुल युद्ध करते हुये आकाशमें मेघ के समान गर्जे और देवताओंको अपने पर और चोंचसे मारकर व्याकुल किया देवता बड़े घायल होकर डरकर भागने लगे ९।१५ साध्यगण और गन्धर्व पूर्व दिशा को अष्टवसु और रुद्र दक्षिण दिशा को बारह सूर्य पश्चिमको और बड़े पराक्रमी अश्विनीकुमार उत्तर दिशाको भागगये १६।१७ इसके उपरांत अश्वक्रंद, रेणुक, क्रथन, शूर, तपन, उलूक, सनाभ, निमेष, प्ररुज, पुलिन आदि यक्षोंसे युद्ध करके शिवजी के तुल्य पराक्रमवाले गरुड़ने अपने पर नख और चोंचसे सब देवताओं को घायल करडाला १८। २० और वे देवता रुधिर वर्षानेवाले बादलों के सदृश दिखाई देनेलगे २१ इसके उपरांत अग्निने अपना उग्ररूप धरकर चारों ओरसे ज्वाला प्रकट की और वह

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ज्वाला वायुसे प्रेरित चारों ओर उछलने लगी २२।२३ गरुड़जीने उसे देखकर अपने शरीर में एक सहस्र एक सौ मुख करके पहिले नदियों को पिया पीछे उन नदियों को छोड़कर अग्नि को शांत किया और फिर अपना स्वरूप छोटा करलिया २४। २५॥

इति श्रीभाषामहाभारते आदिपर्वणि द्वात्रिंशोऽध्यायः ३२॥

तेंतीसवां अध्याय।

सब देवताओं को जीतकर गरुड़जीका अमृतका घड़ा लेकर जाना और राहमें विष्णुभगवान् के मिलने और परस्पर वरदान देनेकी कथा॥

सूत बोले हे ऋषियो! इसके उपरान्त गरुड़जी जिनके देह की चमक सूर्यकी किरणों के समान थी अमृत लेने को ऐसे वेगसे चले जैसे नदियां समुद्र में गिरती हैं और वहां पहुँचकर देखा कि अमृत के चारों ओर एक लोहे का बड़ा तीक्ष्ण चक्र घूमरहा है उसकी सूर्य के समान प्रभा देखकर गरुड़जी उसके चारों ओर घूमनेलगे और अत्यन्त छोटासा रूप धरके उस चक्रके आरोंकी संधि में होकर भीतर चलेगये १। ४ वहां जाकर देखते क्या हैं कि दो सर्प जिनकी प्रभा अग्नि के समान जीभ बिजलीसी आंखें और मुख दीप्त बड़े क्रोधी पराक्रमी और ऐसे विषधारीथे कि जिसकी ओर एकदफे दृष्टि करें वह तत्काल भस्म होजावे अमृतको रखारहे हैं ५। ७ गरुड़जी धूलसे उनकी आंखों को ढक दबाकर मार उस चक्रको हटाकर बड़े वेगसे उस अमृतके घड़ेको उठाकर ८। १० और वहां से उड़े सूर्यकी किरणों को कुछ न मानकर सन्मुख होकर चले ११ थोड़ी दूरपर आकाशमें विष्णुभगवान् मिले और गरुड़के कामसे प्रसन्न होकर बोले कि वर मांग गरुड़जी बोले कि मैं आपकी ध्वजा में रहूं १२। १३ और विना अमृत पिये अजर अमर होजाऊं १४ विष्णुभगवान्ने कहा कि ऐसाही होगा तब गरुड़जी बोले कि महाराज! मुझसे भी आप वर मांगें विष्णुभगवान् बोले कि तुम हमारे वाहन हो १५। १६ गरुड़जीने कहा ऐसाही होगा उपरान्त नारायणने गरुड़जी को अपनी ध्वजामें रक्खा और गरुड़जी नारायणके वाहन हुये इसके उपरान्त गरुड़जी उस अमृतके घड़े को लियेहुये आगे बड़े वेग से चले इन्द्रने उनको अमृत लिये हुये जाता देखकर अपना वज्र मारा उसके प्रहारको सहकर गरुड़जी हँसतेहुये बोले कि मुझे इस वज्रपात से जराभी कष्ट नहीं हुआहै परन्तु हे इन्द्र! तेरे वज्रका और उस ऋषिकी हड्डियोंका जिससे यह वज्र बनाहै मान रखने के लिये

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अपना एक पर छोड़ताहूं १७। २१ ऐसा कहके गरुड़जीने अपना एक पर छोड़ दिया उस पर को सुन्दरताको देखकर प्राणियोंने उनका नाम सुपर्ण रक्खा और इन्द्र उसके अतुल पराक्रमको देखकर बोला कि मैं तेरे बलको जानना चाहताहूं और तेरे साथ मित्रता किया चाहताहूं २२। २५॥

इति श्रीभाषामहाभारते आदिपर्वणि त्रयस्त्रिंशोऽध्यायः ३३॥

चौंतीसवां अध्याय।

गरुड़जीका अमृत लेकर सर्पोंको देना व अपनी माताको दासीभावसे छुटाना और इन्द्रको अमृत के हरनेकी कथा॥

सूतजी बोले हे ऋषियो! गरुड़जी इन्द्रकी यह बात सुनकर बोले कि हमने तुमको अपना सखा बनाया और जो तुमने हमारा बल पूंछा यद्यपि साधु लोग अपने बल और पराक्रम की स्तुति आप नहीं करते हैं परन्तु तुम्हारी मित्रताके कारणसे हम कहते हैं हमारा बल अप्रमाण और न सहने के योग्य है मैं इस पृथ्वी को जल वन पर्वत और समुद्रों सहित और तुमको भी एक परमें लटकाकर ले चल सक्ताहूं १। ४ और जड़ चैतन्य जीवों सहित चौदहों लोकों को पिंडी कर विना थके लेजासक्ताहूं ५ यह सुनकर श्रीमान् इन्द्र बोले कि आपका कहना यथार्थ है आप जो चाहें सो करसक्ते हैं अब आप कृपा करके हमारी मित्रता को ग्रहण कीजिये ६। ७ और इस अमृतसे आपको कुछ कार्य न हो तो इसे हमें देदीजिये क्योंकि जिस किसी को आप अमृत देंगे वहही हमको बाधा करेगा ८ गरुड़जी बोले कि मैं अमृत किसी को न दूंगा एक कारण से इसे लिये जाताहूं ९ आज जहां इसको मैं रखदूं वहां से तुम हरलाना १० गरुड़जीकी यह बात सुनकर इन्द्र प्रसन्न होकर बोले बहुत अच्छा हम अमृत हरलावेंगे आप हमसे अब वर मांगिये ११ यह सुनकर गरुड़जी ने कद्रू के पुत्रोंकी दुष्टता वा छल और अपनी माता के दासी होनेका वृत्तान्त याद करके कहा कि १२ ये सर्प मेरे भक्ष्य होवें १३ इन्द्रने कहा ऐसाही होगा और मैं अब आपके साथ चलताहूं सो जहां आप अमृत धरेंगे वहीं से मैं अमृत हर कर लेआऊंगा ऐसा कहके इन्द्र गरुड़जी के साथ हुये और गरुड़जी शीघ्र अपनी माताके पास १४। १६ पहुँचकर सर्पोंसे बोले लो यह अमृत हम तुम्हारे कहने के अनुसार लेआये यहां कुशोंपर यह रक्खाहै १७ तुम सब स्नान करके इसको ग्रहण करना और अब आज के दिनसे मेरी माता अदासी होवे यह सुन

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कर सर्प बोले तथास्तु ऐसाहीहो और अमृत लेनेकी लालसा से स्नान करने को गये इस अवसर में इन्द्र उस अमृतके घड़ेको उठाकर लेगये १८। २० जब सर्प स्नान करके अमृत के पास गये और उसे वहां न पाकर और यह जान कर कि इन्द्र हर लेगया है और यह हमारे छलका बदला है उन कुशाओं को जिनपर अमृत रक्खाथा चाटने लगे उस कर्म के करने से सर्पों के दो जीभ होगई २१। २३ और तभी से अमृतका स्पर्श होनेसे कुशा पवित्र मानीगई और गरुड़जी प्रसन्नतापूर्वक अपनी माता सहित उस वन में बहुत काल तक विहार करतेरहे २४। २५ इतनी कथा सुनाकर सूत बोले हे ऋषियो ! जो कोई मनुष्य इस गरुड़जी महाराज के माहात्म्य को सदैव सुनैगा और अच्छे ब्राह्मणों की सभा में पढ़ैगा वह निश्चय गरुड़जी के प्रसाद से स्वर्गवास पावैगा २६ ॥

इति श्रीभाषामहाभारते आदिपर्वणि चतुस्त्रिंशतितमोऽध्यायः ३४ ॥

पैंतीसवां अध्याय।

प्रधान प्रधान नागों के नामोंकी कथा ॥

शौनक ऋषि बोले हे सूत ! तुमने कद्रू विनता के वर पाकर उनके पुत्र उत्पन्न होनेकी कथा तो सब विस्तारसहित कही अब कृपा करिकै उन नागों के नाम जो प्रधान प्रधान हैं क्रम से वर्णन कीजिये १। ३ यह सुनकर सूत बोले हे ऋषियो ! सर्पोंके बहुत होनेसे सब नाम नहीं कहसक्ताहूं जो मुख्य और प्रधान प्रधान हैं उनके नाम कहताहूं सुनो ४ पहिले तो शेषजी उत्पन्न हुये उनके पीछे वासुकि, ऐरावत, तक्षक, कर्कोटक, धनञ्जय ५ कालिय, मणिनाग, अपूरणनाग, पिंजरकनाग, एलापत्र, वामन ६ नील, अनील, कल्माष, शवल, आर्यकउग्रक, कलशपोतक ७ सुरामुख, दधिमुख, विमलपिंडक, आप्त, कर्कोटक, शंख, बालिशिख ८ निष्टानक, हेमगुह, नहुष, पिंगल, बाह्यकर्ण, हस्तिपद, मुद्गरपिंडक ९ कंबल, अश्वतर कालीयक नाग, वृत्त दोनों संवर्त्तक जिनको पद्मनाग भी कहते हैं १० शंखमुख नाग, दूसरा कूष्मांडक, क्षेमक नाग, पिंडारक नाग ११ करवीर, पुष्पदंष्ट्र, बिल्वक, बिल्वपाण्डुर, मूषकाद, शंखशिरा, पूर्णभद्र, हर्यादक १२ अपराजित, ज्योतिक, श्रीवह, कौरव्य, धृतराष्ट्र, शंखपिण्ड १३ विरजा, सुबाहु, शालिपिंड, हस्तिपिंड, पिठारक, सुमुख, कौणपाशन १४ कुठरकुंजर, प्रभाकर, कुमुद, कुमुदाक्ष, तितिरि, हलिक १५ कर्दममहानाग, बहुमूलकनाग, कर्कर, अकर्कर, कुंडोदर, महोदर १६ आदि

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

क्रमसे उत्पन्न हुये हे ऋषियो ! इन नागोंकी संतान और उस संतान की संतान की संख्या सहस्रलक्ष अर्बुद होने के कारण से कही नहीं जायसक्ती १७।१९ ॥

इति श्रीभाषामहाभारते आदिपर्वणि पंचत्रिंशंतितमोऽध्यायः ३५ ॥

छत्तीसवां अध्याय।

शेषजीका तपस्या करना ब्रह्माजीका उनको वर देना शेषजीका पृथ्वीको अपने मस्तकपर धारण करना ॥

शौनक बोले हे सूतपुत्र ! आपने नागों के नाम तो कहे अब कृपाकरके यह कहिये कि उन सर्पोंने अपनी माता कद्रूके दियेहुये शापको जानकर फिर क्या किया १ सूतपुत्र बोले हे ऋषियो ! शेषजी अपनी कद्रू माताको छोड़कर बड़ा उग्र तप करने लगे केवल वायु खाकर रहते थे और जितेन्द्रिय होकर निरंतर सावधानी से व्रत करते थे प्रथम तो शेषजी ने गंधमादन पर्वत पर तप किया फिर बदरिकाश्रम में किया उपरांत गोकर्ण और पुष्करवन और हिमालय में किया २।३ उनके उग्र तपको देखकर ब्रह्माजी वहां आये शेषजीको तपमें बैठे हुये जिनकी देहीका मांस और चमड़ा सूखगया था देखकर बोले हे शेष ! तेरे उग्र तप से सब संसार तपरहा है हम तेरे ऊपर प्रसन्न हैं जो तेरी इच्छा हो सो हमसे मांग ४।६ यह सुनकर शेषजी बोले हे पितामह ! मेरे सबभाई मंदबुद्धिहैं आपस में परस्पर द्वेष और ईर्षा रखते हैं विनता माता से भी वे शत्रुता रखते हैं और हमारा आकाश में चलनेवाला भाई बड़ा बलवान् गरुड़ है उसे भी नहीं देखसक्ते इस कारण से चाहताहूं कि मैं उनकी सूरत न देखूं और मैं अब तपके बीच में अपने इस शरीरको छोडूंगा यह मैं चाहताहूं कि इस शरीरको छोड़ने पर मेरा उनसे किसीतरह समागम न हो ७।११ यह सुनकर ब्रह्माजी बोले कि हम तेरे भाइयों की कुरीति को जानते हैं और जो कद्रू ने सर्पोंके नाश होनेका शाप दिया है उसे भी हम जानते हैं उसके दूर होने का भी यत्न हमने पहिले से कर रक्खाहै तुम इसकी कुछ चिंता मत करो जो कुछ अब तेरी इच्छा हो सो हमसे मांगले १२।१४ तू बुद्धिमान् है और तेरी बुद्धि धर्ममें है शेष जी बोले हे ब्रह्माजी ! मेरी बुद्धि धर्म अन्तःकरणके निरोध और तपमें रहै यह सुनकर ब्रह्माजी बोले कि मैं तेरे इस वर मांगने से बहुत प्रसन्न हुआ अब तू मेरी आज्ञा से प्रजाके हितके लिये इस डामाडोल पृथ्वी को समुद्र पर्वत और वनों सहित अपने शिरपर रखकर अचल कर १५।१८ शेषजी बोले कि आप वर-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दाता प्रजापति महीपति और जगत्पति हैं आपकी आज्ञाका मैं पालन करूंगा आप इस पृथ्वी को मेरे शिरपर रख दीजिये १९ ब्रह्माजी बोले कि तुम इस पृथ्वी के नीचे चले जाओ यह तुमको जाने को आप राह देगी २० यह सुनकर शेषजी पृथ्वी में बिलके राह घुसकर पृथ्वी के नीचे पहुँचे और पृथ्वी को समुद्र आदि सहित अपने शिरपर रख लिया २१ सूतजी बोले हे ऋषियो ! इस बातको देखकर ब्रह्माजी बोले मैं तेरे ऊपर बहुत प्रसन्नहूं तुम आजके दिन से नागों में उत्तम धर्मदेव शेष कहाओगे और जो तुमने इस पृथ्वी को अपने शिरपर रखकर इसको अचल किया है इस कारण से तुमभी जैसा मैं हूं और इन्द्र है वैसेही तुमभी होगे २२ इतनी कथा सुनाकर सूतपुत्र बोले हे ऋषियो ! तब से शेषजी इस पृथ्वी के नीचे बसते हैं ब्रह्माजी ने इसके उपरांत गरुड़जी से और शेषजी से मित्रता करादी २३। २४॥

इति श्रीभाषामहाभारते आदिपर्वणि षट्त्रिंशोऽध्यायः ३६॥

सैंतीसवां अध्याय।

सर्पोंकी माताके शापसे बचने के लिये मंत्र विचारने की कथा॥

सूतजी बोले हे ऋषियो ! वासुकि नाग ने अपनी माता का शाप सुनकर सब सर्पों को बुलाकर बैठाया और कहा कि अब कोई ऐसा मन्त्र विचारो जिससे यह शाप हम लोगों को बाधा न करे १। २ क्योंकि सब शापों के दूर करने को तो बहुत से यत्न हैं परन्तु माता का शाप किसी तरह दूर नहीं हो-सक्ता ३। ४ सिवाय इसके माता ने यह शाप हमको जरामरण से रहित श्रीब्रह्माजी के सन्मुख दिया है ब्रह्माजी ने भी माता को ऐसा शाप देने से मना नहीं किया इससे हम निश्चय जानते हैं कि यह शाप हम लोगों का नाश करैगा इस हेतुसे जबतक राजा जनमेजय यज्ञ न करने पावैं तबतक ऐसा यत्न विचारना चाहिये जिससे हम सब अग्नि में जलने से बच जावैं ५। ६ सूतजी बोले हे ऋषियो ! वासुकि के ऐसा कहने पर सर्पों के मुखिया मुखिया सब सर्प सलाह करने लगे एक बोला कि हम उत्तम ब्राह्मण बनके जनमेजय के पास जायँ और उससे यह भिक्षा मांगें तेरा यज्ञ न होवै १०। ११ दूसरे ने कहा हमारी समझ से मनुष्यरूप धरकर राजा के पास चलें और उसके हित के मन्त्री बनकर उसको ऐसी सलाह दें जिसमें वह यज्ञ न करै १२। १३ और उसको इस लोक और परलोक के बहुत से भयानक दोषों को दिखलाकर उस

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

की यज्ञ करनेकी बुद्धिको दूर करें १४। १५ अथवा जो सर्पसत्रका जाननेवाला राजयज्ञ में उपाध्यायहो उसको कोई सर्प काटखाय उसके मरजाने से यज्ञ न होगा १६। १७ और जो कोई और भी सर्पसत्र यज्ञका विधान जाननेवाला यज्ञ कराने आवै उसको भी इसी तरह काटैं १८ तीसरा बोला यह बात अज्ञानताकी है ब्रह्महत्या अच्छी नहीं होती १९ आपत्तिकालमें ऐसा काम करना चाहिये जिसका फल धर्म हो अधर्म न हो २० चौथा बोला कि हमलोग बिजली और बादल बनकर ऐसी वर्षा करें कि यज्ञकी जलतीहुई अग्नि बुझ जावै २१ और रात्रिमें कुछ सर्प जाकर स्रुवाआदि यज्ञके पात्रों को चुरालावें ऐसा विघ्न होने से यज्ञ न होगा २२ अथवा उस यज्ञ में सैकड़ों सर्प चलकर सब मनुष्यों को काटें २३ अथवा सर्पसंस्कार कीहुई यज्ञकी हविको अपने मूत्र और विष्ठासे अपवित्र करदें २४ पांचवां बोला कि राजा के यहां ऋत्विज् बन कर चलो और यज्ञको उलटा करायकर राजा से दक्षिणा मांगो २५ छठा बोला कि जब राजा जल में स्नान करने जावे उस समय उसको पकड़कर इस लोक में बांधकर लेआवें सातवां बोला २६। २७ कि राजा को पकड़कर काटखाओ उसकेमरने पर यहसब अनर्थमिटजायगा २८ सूतजी बोले हे ऋषियो! इस प्रकार से सब सर्प अपनी अपनी सलाह देकर वासुकि नागसे बोले कि अब आगे जो कुछ आपका विचारहो सो कीजिये २९ वासुकिनाग बहुत देर तक अपने मन में विचार करके बोला ३० कि तुम्हारी एककी भी सलाह हमारी रुचिकारी नहीं हमें इनमें से किसी सलाह में कल्याण नहीं दीखता है ३१ हमारी समझसे कश्यपजी के पास चलो और वह जो कुछ आज्ञा दें वह करो तुम्हारी सलाह के अनुसार हम नहीं किया चाहते हैं हम तो उस बात के करने में हैं जिससे तुम लोगों का भलाहो और मुझे बड़ी चिन्ता इस कारण से है कि अन्त में बुराई भलाई हमारे शिरपर आवैगी ३२। ३४॥

इति श्रीभाषामहाभारते आदिपर्वणि सप्तत्रिंशोऽध्यायः ३७॥

अड़तीसवां अध्याय।

शापसे बचनेके लिये एलापत्रनागका वासुकिनागको अपनी बहिन जरत्कार ऋषिसे विवाह करने के लिये सलाह देना॥

सूतजी बोले कि हे ऋषियो! एलापत्र नाम नाग उन सब नागोंकी सलाह और वासुकि नाग का उत्तर सुनकर बोला १ कि यज्ञ अवश्य होगा और वह

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

राजा जनमेजय पाण्डववंशका है जैसा तुम विचाररहेहो तैसा करिके उसके यज्ञ को विध्वंस नहीं करसक्ते हो २ दैवहत प्राणी को चाहिये कि दैवही का आश्रय ले दूसरा यत्न करने से कुछ नहीं होसकता ३ हमलोग सब दैवहत हैं इससे हमको भी दैवकाही आश्रय करना चाहिये सुनो जिस समय माताने शाप दिया था उस समय मैं माताकी गोद में था उसके शापको सुनकर सब देवता माता को यह नाम धरते कि कद्रू बड़ी तीक्ष्ण है ब्रह्माजी के पास गये और कहा महाराज! कद्रू के सिवाय इस संसारमें ऐसा कौन क्रूर होगा जो अपने प्यारे पुत्रों को ऐसा शाप देगा परन्तु आपने भी पास होनेपर उसको ऐसा शाप देने से निषेध न किया और यह कहा कि ऐसाही होगा यह बड़े आश्चर्यकी बातहै इसका क्या कारणहै ४। ८ ब्रह्माजी बोले कि सर्प अब बहुत होगयेहैं और बड़े विषधारी हैं सब संसारको दुःख देरहे हैं इससे हमने उनके नाश होने के शाप देने को निषेध नहीं किया परन्तु उन्हीं सर्पों का नाश होगा जो काटने का स्वभाव रखनेवाले नीच और पापी हैं और जो धर्मात्मा सर्प हैं उनको यायावर ऋषिके कुलका जरत्कार नाम ऋषिका पुत्र आस्तीक उस भयसे छुटावैगा ९। १३ यह सुनकर देवता बोले कि वह जरत्कार ऐसा महात्मा पुत्र किस स्त्री से उत्पन्न करैगा ब्रह्माजी बोले जरत्कारऋषि अपनासा नाम रखनेवाली वासुकि नागकी बहिन के गर्भ से ऐसा पुत्र उत्पन्न करैगा एलापत्र नाग बोला कि ब्रह्माजीकी यह बात सुनकर देवता बोले कि ऐसाही होय और ब्रह्माजी स्वर्गको चलेगये इससे हे वासुके! सर्पोंकी आपत्ति दूर करने के लिये आप अपनी जरत्कार नाम बहिन को भिक्षा मांगते हुये जरत्कार नाम मुव्रतऋषिको देदीजिये १४। १९॥

इति श्रीभाषामहाभारते आदिपर्वणि अष्टत्रिंशोऽध्यायः ३८॥

उन्तालीसवां अध्याय।

वासुकि नागका जहां तहां सर्प भेजकर जरत्कार ऋषिको ढुंढवाना॥

सूतजी बोले हे ऋषियो! एलापत्र नागके यह वचन सुनकर सब सर्प बहुत अच्छा बहुत अच्छा कहने लगे १ और वासुकिनाग भी प्रसन्न होकर उस जरत्कार नाम कन्या को अपनी रक्षामें रखने लगा २ इसके उपरान्त थोड़े दिनों पीछे देवता और दैत्योंने वासुकिनाग को रस्सी बनाकर समुद्र को मथा जब यह कर्म समाप्त होगया तब सब देवता वासुकिनाग को ब्रह्माजी के पास

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लेगये और कहा कि महाराज! यह वासुकिनाग हमारा बड़ा मित्र और हितकारी है परन्तु इसको अपनी माताके शापका भयरूपी ज्वर दिनरात चढ़ा रहताहै और आप भी इस जाति के सर्पोंका हित चाहते हैं इससे कृपा करके आप इसके मनका दुःख दूर करें ३। ७ यह सुनकर ब्रह्माजी बोले कि जो एलापत्र नागने वासुकि से पहिले कहाथा वह मेरेही मुखके कहे हुये वचन थे ८ समय आनेपर पापी सर्पोंका नाश होगा और धर्मचारियों का नाश न होगा ९ जरत्कार नाम ब्राह्मण संसार में उत्पन्न होकर उग्र तप कररहा है समय आनेपर वासुकि अपनी जरत्कार नाम बहिन उसको देदे १० और जो कुछ बातें एलापत्रने सर्पों के हितकी कही हैं वे सब सच हैं और वैसाही होगा ११ सूत बोले हे ऋषियो! वासुकिनाग ब्रह्माजी की यह बात सुनकर अपने घरको आया और सब सर्पोंसे उक्त वृत्तांत कहकर बहुत से सर्पोंको जरत्कार ऋषिके ढूंढ़ने को नियत किया और कहा कि जब उस ब्राह्मण को विवाह करने की इच्छा होय तभी हमको खबर देना १२। १४॥

इति श्रीभाषामहाभारते आदिपर्वणि एकोनचत्वारिंशोऽध्यायः ३९॥

चालीसवां अध्याय।

परीक्षितका वनमें अहेर खेलने जाना और अज्ञानता से मरा हुआ सर्प एक ऋषिके गले में डालना॥

इतनी कथा सुनकर शौनक ऋषि बोले हे सूतपुत्र! तुमने जरत्कार नाम वर्णन किया है अब कृपा करिकै जरत्कार शब्दका अर्थ कहिये १। २ यह सुनके सूत बोले हे ऋषियो! जरत्शब्द का अर्थ शरीर और इन्द्रियों की शक्तिका क्षय होना है और कारशब्द का अर्थ दारुण है अर्थात् उसका शरीर जो कामबल से दारुण होरहा था उसको उसने धीरेधीरे तीव्र व्रत करके दुर्बल कर दिया और वासुकि की बहिन भी ऐसीही थी ३। ४ यह सुनकर शौनक ऋषिने हँसकर कहा बहुत श्रेष्ठ अब आप आस्तीक की उत्पत्तिका वृत्तांत कहैं ५। ६ सूत बोले हे ऋषियो! वासुकिने अपनी बहिन को जरत्कार को देना विचारकर बहुत से सर्पोंको बुला कर कहा कि तुम लोग जहां जरत्कार हो वहां रहो जब वह विवाह-की इच्छा करै तभी हमसे आकर कहो और जरत्कार भी उसी समय में उग्र तपस्या करते थे यद्यपि सब पृथ्वीपर भ्रमण करते थे परंतु स्त्री की इच्छा कभी नहीं करते थे उनका अंतःकरण बड़ा शुद्धथा ७। ९ इसी अवसर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

में पांडवों के वंशमें एक परीक्षित नाम बड़ाप्रतापी राजा हुआ १० उसको भी अपने पिता दादाकेही तुल्य अहेर खेलनेका अत्यंत व्यसन था ११ नित्य मृग वाराह भैंसा आदिको अहेर मारकर लाता था १२ एक दिन राजा परीक्षितने एक मृगको बाणसे मारा वह मृग उसको न मिलने के कारण से राजा उसको ढूंढ़ता हुआ बड़े घने वनमें चलागया यद्यपि राजा परीक्षितका बेधाहुआ मृग जीताजी कभी भीतर वनमें नहीं जासक्ता था परंतु जैसे रुद्र भगवान् यज्ञ मृगको भेदकर स्वर्ग को गये उसीतरह इस मृगको बेधकर राजा भी अपने स्वर्ग जाने के कारण को प्राप्त करने के लिये हाथमें धनुष लियेहुये उस मृगको देखता देखता वनमें दूर निकलगया और भूंख प्यास आदि से व्याकुल हुआ थोड़ी दूरपर उसने एक आश्रम देखा उसमें एक बड़े तपस्वी ऋषि जो बछड़ों के दूध पीते में मुखसे निकले हुये झागों को चाटकर रहतेथे वास करतेथे राजा भूंखा प्यासा जल्दी से उन मुनिके आश्रम में चलागया और अपना धनुष उठाकर बोला कि महाराज मैं अभिमन्युका पुत्र परीक्षितहूं १३। १६ मेरे बाणसे बिधा हुआ मृग मिलता नहीं है आपने तो इधर आते नहीं देखा मुनिने मौनव्रत रखने के कारण से कुछ उत्तर नहीं दिया २० राजाने क्रोध करके एक मरेहुये सर्प को अपनी धनुषकी कोटसे उठाकर ऋषिके गले में डालदिया २१ ऋषि इस पर भी कुछ न बोले परीक्षित कुछ देर तक उनको उसी अवस्था में देखता रहा उपरांत क्रोध छोड़कर उन मुनिको उसी अवस्था में छोड़कर अपने नगर को आया २२ उन महामुनि ने अपना अपमान भी देखकर राजाको शाप नहीं दिया २३ और राजा उस धर्मपरायण ऋषि को जानता नहीं था इस कारण से ऐसा अपमान किया २४ सूत बोले हे ऋषियो! उन मुनिका एक शृङ्गी नाम पुत्र था वह अति तीक्ष्ण, तेजधारी, महातपस्वी, बड़े व्रतवाला, महाक्रोधी और दुःखसे प्रसन्न होनेवाला था २५ राजा के जाने के पीछे वह ब्रह्मलोक से ब्रह्माजी की आज्ञा पाकर घरको आता था मार्ग में उसके कृशनाम मित्र ने हँसते खेलते किसी बातपर क्रोध करके ताना देकर कहा तुम क्या गर्व करते हो तुम्हारा पिता कैसा तेजस्वी और तपस्वी है जो उस के कंधेपर मराहुआ सर्प धराहुआ है २६। २६ तुम हमसे सिद्ध और ब्रह्मज्ञानी ऋषिपुत्रों के बीच में कुछ मत कहो तुम्हारा वह पराक्रम और गर्वके वचन अब कहां गये जो अपने पिता को इस अवस्था में देखरहे हो और मुझको बड़ा दुःख इस बातसे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

और मालूम होताहै कि तुम्हारे पिता ने उसको शाप नहीं दिया ३०।३२॥

इति श्रीभाषामहाभारते आदिपर्वणि चत्वारिंशोऽध्यायः ४० ॥

इकतालीसवां अध्याय।

राजा परीक्षितको शृङ्गीऋषिके शाप देने की कथा ॥

सूतजी बोले हे ऋषियो! शृङ्गीऋषि कृशसे अपने पिताके कंधेपर मराहुआ सर्प धरे जाने का हाल सुनकर बड़ा क्रोधित हुआ और पूछने लगा कि अब मेरा पिता कैसे है कृश बोला कि उसके कंधेपर मराहुआ सर्प अभीतक रक्खाहै १।३ शृङ्गी बोला मेरे पिताने उस अधर्मी राजा का क्या बिगाड़ा था जो उसने ऐसा किया मुझसे तुम सत्य२कहो और मेरे तपका बल देखो ४ यह सुनकर कृश बोला कि अभिमन्युका बेटा राजा परीक्षित अहेर खेलने को आयाथा उसने एक मृगके बाण मारा वह मृग उस तीर को खाकर वनकी ओर भागा और राजा भी उसके पीछे २ भागा जब यहां पहुँचा तब तेरे आश्रममें तेरे पिताको बैठेहुये देखकर राजा ने उस मृगका हाल कईबार पूछा परन्तु तेरे पिता ने मौनव्रत रखनेके कारण से कुछ जवाब नहीं दिया तब राजा ने भूख प्यास और श्रम से दुःखी होने से क्रोध के आवेशमें एक मरा हुआ सर्प अपनी धनुष की नोक से उठाकर तेरे पिता के कंधेपर रख दिया ५।८ राजा हस्तिनापुर को चला गया और तेरे पिता उसी तरह बैठे हैं ९ शृंगी यह हाल सुनकर बड़ा दुःखित हुआ और क्रोध से लाल आंखें करके आचमन कर राजा परीक्षित को शाप देता भया १०।११ कि जिस पापी और ब्राह्मणों का निरादर करनेवाले राजा ने मेरे पिताके कंधे पर मरा हुआ सर्प धराहै उस को सर्पों का राजा तक्षक जो बड़ा क्रोधी और विषधारी है आज की सातवीं रात को मेरे वाक्यबल से प्रेरित होकर काटकर यमलोक में पहुँचावेगा १२।१४ ऐसा शाप देकर शृंगी ऋषि अपने आश्रम को गया और वहां गोशाला में बैठेहुये अपने पिता के कंधे पर उस मरे सर्पको देखकर दुःखित होकर रोने लगा और बोला कि आप के इस अपमान को सुनकर मैंने राजा को यह शाप दियाहै कि आज की सातवीं रात को उसे तक्षक काटकर यमलोक को पहुँचावेगा शृंगी के यह वचन सुनकर १५।१९ शमीकऋषि बोले हे पुत्र! तैंने यह काम हमारी इच्छा के अनुसार नहीं किया तपस्वियों का यह धर्म नहीं है हम उसके देश में बसते हैं २० और वह हमारी रक्षा करता है हमारी ओर से राजापर हमेशा क्षमा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

होनी चाहिये जो राजा धर्मसे रक्षा न करे तो हम लोग सुखपूर्वक कोई धर्म नहीं करसक्के और धर्मात्मा राजा की रक्षा में रहकर बड़े २ धर्म करतेहैं और उस धर्म में से कुछ भाग राजा को भी मिलताहै इस कारण से राजा तो सदैव क्षमा योग्य है २१। २४ और यह परीक्षित तो विशेष करके क्षमाके योग्य इस कारण से है कि वह अपने दादा की तरह प्रजाका पालन और धर्म की रक्षा करताहै २५ उसने हमारा यह अपमान केवल भूंख प्याससे दुःखी होने और मेरे मौनव्रतको न जानने के कारण से कियाथा २६ हे पुत्र! जिस देशमें राजा नहीं होता वहां चोरी आदि बड़े २ दोष निरन्तर हुआ करते हैं राजा ही केवल दण्ड देकर इन उपाधियों को दूर करताहै जब राजा के दण्ड देने से स्वस्थता होजाती है तब सब लोग निर्विघ्न धर्म करते हैं इस से धर्मका होना राजा ही के होने से होता है और धर्मसे स्वर्ग वास मिलता है धर्मात्मा राजा होने ही से यज्ञ होते हैं यज्ञों से देवता प्रसन्न होते हैं २७। २९ देवताओं के प्रसन्न होने से वर्षा होती है वर्षा के होने से अन्नादि उत्पन्न होते हैं और अन्नादि के होने से सब जीवों का पालन होता है मनुजी ने कहा है कि जो राजा मनुष्योंका पालन करे और धर्म से राज्य करे वह दश वेदपाठियों के बराबर है तैंने यह बुरा किया जो ऐसे राजाको शाप दिया ३०। ३३॥

इति श्रीभाषामहाभारते आदिपर्वणि एकचत्वारिंशतितमोऽध्यायः ४१॥

बयालीसवां अध्याय।

शमीकऋषिका अपने शिष्यको राजा परीक्षितके पास भेजकर शृङ्गीऋषिके शापका हाल कहवाना और राजाका शोक करके उसका यत्न करना॥

सूतजी बोले हे ऋषियो! शृंगीऋषि अपने पिताकी उक्त बातें सुनकर बोले महाराज मुझ से जो यह कर्म साहस का या बुरा आपका प्रिय अथवा अप्रिय बनपड़ाहै वह अब झूंठ नहीं होसक्ता क्योंकि मैं हँसी मेंभी कभी झूंठ नहीं बोलता हूं यह तो शापथा १। २ यह सुनकर शमीक ऋषि बोले कि मैं जानता हूं कि तू सत्यवादी और उग्र प्रभाव वाला है तेरा कहा झूंठ न होगा ३ परन्तु पिता को जो पुत्र जवान भी होगया हो तो भी समझाना उचित है इससे मैंने तेरे बालकपन और तेरे साहस को देखकर तुझको समझाया है ४। ६ अब तू शमरूप होकर वनमें रह और वनफल खाकर अपने क्रोध को मार क्रोध करने से तप और धर्म क्षीण होजाता है और परगति नाश होजाती है और

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

क्षमारूप रहनेवाले को दोनों लोकों में कल्याण होता है जो मनुष्य जितेन्द्रिय होकर क्षमापूर्वक रहते हैं उनको ब्रह्माजी के पास के लोकों में वास मिलता है ७। १० इसके पीछे शमीक मुनि ने अपने सौम्य स्वभाववाले गौरमुख नाम शिष्य को बुलाकर कहा कि तू जल्दी से राजा परीक्षित के पास जाकर यह सब वृत्तान्त सुनाकर कहियो कि मुनिने तो शांत किया था परन्तु उनके क्रोधी पुत्र ने बालस्वभाव से तुमको शाप दिया है सो अब जो कुछ तुम योग्य समझो सो करो ११। १४ वह शिष्य मुनि की आज्ञा पाकर वहां से तुरन्त राजा परीक्षित के राजमन्दिर में पहुँचा और द्वारपालकों से अपनी खबर कराई १५ राजाने सुनते ही उसे भीतर बुलालिया और उसको यथाविधि पूजन करके जब आने का हेतु पूंछा तब वह शिष्य सब मंत्रियों के सामने बोला कि महाराज आपके देश में एक जितेन्द्रिय शांत और बड़े तपस्वी शमीक नाम ऋषि रहते हैं १६। १७ जिनके कंधेपर आप मराहुआ सर्प रख आये थे उन्होंने मुझे यह कहनेको आपके पास भेजा है कि हम ने तेरे अपराधको क्षमा किया था परन्तु हमारे पुत्रने क्षमा न करके १८। १९ आप को यह शाप दियाहै कि राजा को सात रात्रि में तक्षक सर्प काटैगा और राजा मरजायगा २० सो आपका मरण निश्चय होगा आप रक्षाका यत्न कीजिये २१ और मुनीश्वर ने आपके पास मुझे इसी कारण से भेजा है कि यह शाप अन्यथा न होगा आप यत्नकरें २२ राजा इस बातको सुनकर और उस मौन-व्रतधारी मुनि की कथा और अपने अपराध को जानकर अत्यन्त दुःखी हुआ और अपने मरने का इतना शोच नहीं किया जितना उस अपराध के करने का शोच किया २३। २६ इसके पीछे राजाने गौरमुख को बिदा किया और मुनीश्वर से कहला भेजा कि आप इसी प्रकार कृपा किया करें २७ इसके पीछे राजा ने मंत्रियों को बुलाकर सलाह की और सलाह करके एक मंदिर एक खंभका ऐसा बनवाया कि और जीव की तो क्या गति है वायु भी वहां नहीं जासक्ती थी राजा उस में स्थित हुआ और चारों ओर से रक्षा के लिये बड़े २ रक्षक नियत कर दिये और बड़े २ वैद्य और नाना प्रकारकी विष दूर करनेवाली ओषधि और बड़े २ मंत्र सिद्ध ब्राह्मणों को रक्षाके लिये इकट्ठा किया राजा जो कुछ राजकाज होता वहीं बैठाहुआ करता २८। ३२ जब सातवां दिन आया तब काश्यप ऋषि इस हाल को सुनकर यह विचार करते

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हुये चले कि आज राजा को तक्षक के विष से अच्छा करके धन आदि जो कुछ मुझे इच्छा होगी सो लूंगा ३२। ३५ राह में तक्षक ने वृद्ध ब्राह्मण का स्वरूप धारण करके उन से पूछा कि आप ऐसी जल्दी २ कहां को जाते हैं ३६।३७ काश्यपजी बोले कि आज सर्पों का राजा तक्षक परीक्षित को काटेगा और मैं उसको उसके विषसे अच्छा करूंगा यह सुनकर तक्षक बोला कि तक्षक मैंही हूं तू अपने घरको लौटजा मेरे काटे की चिकित्सा नहीं है ३८। ४० यह सुनकर काश्यपजी बोले कि मेरे विद्याबलको देखियो तेरे काटेकोही तत्काल अच्छा करूंगा ४१ ॥

इति श्रीभाषामहाभारते आदिपर्वणि द्विचत्वारिंशतितमोऽध्यायः ४२ ॥

तैंतालीसवां अध्याय।

तक्षक सर्प का राजा परीक्षित को काटना ॥

सूतजी बोले हे ऋषियो! काश्यपजी की बात सुनकर तक्षक बोला कि ऐसाही पराक्रमी तेरा मंत्रहै और तू मेरे काटे हुये की चिकित्सा कर सक्ताहै तो ले मैं इस बड़के पेड़ को काटता हूं तू अपने मंत्रका बल दिखा १। २ काश्यप जीने कहा अच्छा फिर तक्षक ने उस बड़के पेड़को काटा और वह वृक्ष विषकी अग्नि से जलने लगा जब जलकर राख होगया तब तक्षक बोला कि लो अब इस वृक्षको जिवाओ ३। ६ यह सुनकर काश्यपजी ने उस जले हुये वृक्ष की राख को इकट्ठा किया और फिर अपनी विद्या से जिला दिया पहले उस राख में अंकुर उत्पन्न हुये फिर दोपत्ते का वृक्ष हुआ उपरांत क्रम से जैसा वृक्ष था वैसा ही होगया तक्षक काश्यपजी का यह काम देखकर बोला कि आप सामर्थ्यवान् हैं यह काम आप का कुछ अद्भुत नहीं है आप मेरे अथवा दूसरे सर्प के विष को निश्चय अच्छा करसक्ते हैं परन्तु उस राजा की आयु क्षीण है इस कारण से जो आप की विद्या ने वहां काम न दिया तो आप का सूर्य रूपी यश राहुग्रसित के समान अस्त हो जायगा इससे आपको जो कुछ राजा से मांगना हो वह मुझ से ही लेकर लौट जाइये मैं आप को दुर्लभ पदार्थ भी दूंगा ७। १५ यह सुनकर काश्यपजी बोले कि मैं धन के लिये वहां जाता था जो तुम मुझ को दो तो मैं लौट जाऊं १६ तक्षक बोला कि जितना तुम धन चाहते हो उस से अधिक मैं दूंगा १७ सूतजी बोले हे ऋषियो! काश्यपजी ध्यान से राजा परीक्षित को क्षीणायुष जानकर तक्षक से धन ले-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कर लौटगये १८। २० और तक्षक वहाँ से हस्तिनापुर को गया और राजा को बड़े २ मंत्र और विष हरनेवाली ओषधि से रक्षित सुनकर उपाय सोचने लगा थोड़ी देरमें उपाय सोचकर उसने नागों को बुलाकर कहा कि तुम लोग तपस्वियों का रूप धरके राजा को आशीर्वाद देकर जलकुश और फल दो नागों ने वैसाही किया २१। २५ और राजा ने दण्डवत् करके वह जलकुश और फल लेकर अपने पास रखलिये २६ और उन तपस्वीरूप नागों को धन देकर बिदा किया उपरान्त राजा ने अपने भाई बन्धु और मन्त्रियों को बुलाकर कहा देखो ये तपस्वियों के लाये हुये फल कैसे सुन्दर हैं आप लोग इनको भोजन करें हम भी एकदो खायँगे यह सुनकर सब लोग उन फलों के खाने को बैठे २७। २९ दैवयोग और मुनि के शाप से राजा ने वही फल लिया जिसमें बैठकर तक्षक आया था ३० जब उस फल को तोड़ा तब उस में से एक लाल रंगका कीड़ा जिसकी आंखें काली २ थीं निकला उस को हाथ में लेकर परीक्षित बोला कि अब सूर्य अस्त होने का समय है अब विषका तो भय हमको हैही नहीं यही कीड़ा हम को काटकर मुनि के वचन को सत्य करै ३१। ३३ मंत्रियों ने भी काल से प्रेरित होकर अपना यही सम्मत दिया उपरांत राजा ने भी उस कीड़ेको अपनी गरदन पर रखकर उस को देखकर हँसने लगा उसी समय तक्षक ने भी अपना स्वरूप धरकर राजा को लपेट लिया और बड़ा शब्दकरके काट खाया ३४। ३६॥

इति श्रीभाषामहाभारते आदिपर्वणि त्रिचत्वारिंशतितमोऽध्यायः ४३॥

चवालीसवां अध्याय।

राजा परीक्षितके मरनेपर उसका कर्म होने और उसके पुत्र जनमेजय के राज्याभिषेक होने की कथा॥

सूतजी बोले हे ऋषियो! राजा के सब मंत्री उस विष से उठी अग्नि और उस तक्षक के नादको सुनकर भयभीत होकर भागे और अत्यन्त दुःखी होकर रोने लगे और वह तक्षक जिसके काटने से राजा ऐसे गिरपड़ा जैसे कोई बिजुली गिरने से गिरपड़े राजा को काटकर चमकताहुआ आकाशमार्ग होकर चला उसको जाते हुये सब मंत्रियों ने देखा १। ४ इस के उपरान्त सब ब्राह्मण राजपुरोहित और मंत्रियों ने मिलकर उस राजाका परलोकसम्बन्धी कर्म किया ५ और अच्छा शुभ मुहूर्त्त देखकर उस के पुत्र का राजतिलक किया

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

और उसका नाम जनमेजय रक्खा ६ वह राजा यद्यपि बालक था परन्तु अपने प्रपितामह राजा युधिष्ठिर के समान राज्यशासन करने लगा ७ मंत्रियों ने उसके तेजको देखकर काशी के सुवर्णवर्मा नाम राजा से उसकी वपुष्टमा नाम कन्या जनमेजय से विवाह करने को मांगी ८ और सुवर्णवर्माने भी धर्मपरीक्षा करके उस कन्याका विवाह जनमेजय से कर दिया जनमेजयने उसको पाकर फिर दूसरी स्त्री की तरफ दृष्टि न की ९ और उसके साथ इसप्रकार से विहार किया जैसे पहिले राजा पुरूरवा ने उर्वशी के साथ किया था १० और वह पतिव्रता वपुष्टमा भी राजा जनमेजय को पाकर विहार के समय प्रीति से रमण करने लगी ११ ॥

इति श्रीभाषामहाभारते आदिपर्वणि चतुश्चत्वारिंशतितमोऽध्यायः ४४ ॥

पैंतालीसवां अध्याय।

जरत्कारका पृथ्वीपर भ्रमण करना और एक गढ़हेले में नीचेको मुँह कियेहुये अपने पितरों को लटकते हुये देखना ॥

सूतजी बोले हे ऋषियो ! इसी अवसर में जरत्कार ऋषि भी उग्र तप करने लगे केवल वायु खाते थे दिन रात पृथ्वीपर तीर्थादिकों में घूमा करते थे जहां सांझ होजाती वहीं टिकरहते थे और ऐसे २ आचरण करते थे जो अशुद्ध अंतःकरणवाले मनुष्य कभी नहीं करसक्ते हैं और निराहार रह २ कर जरत्कार ने अपनी देहीको बिल्कुल सुखादिया था एक समय वह जरत्कार घूमते हुये एक स्थान में पहुँचे वहां देखते क्या हैं कि कुछ मनुष्य एक गढ़हेले में नीचे को मुख किये एक खस के खम्भेके आश्रय लटकरहे हैं १।२ उनको देखकर उनकी दीनतापर दया करके जरत्कार उनके पास गये और कहा कि आपलोग कौन हैं जो इस गढ़हेले में इस प्रकार से लटके हुये हैं इस खसके खम्भे में अब केवल एक जड़ बाकी रही है उसे भी चूहा बिलसे निकल २ कर काटेडालता है ४।७ उसके कटजानेपर आपलोग सब नीचे गिरपड़ोगे ८ आप अपनी आपत्ति का हाल कहिये जो मेरी तपस्या के चौथाई तीसरे अथवा आधे हिस्से से या पूर्ण तपस्या से आपका दुःख दूर होसके तो मैं देने को तैयारहूँ ९।११ यह सुनकर वे लोग बोले कि आप ब्रह्मचारी हैं और हमारी आपत्ति पर तरस खाकर हमारी रक्षा करना चाहते हैं परन्तु तपके फल से कुछ नहीं होसक्ता १२ हमारे पास भी तपका फलहै परन्तु हमारी तो यह गति संतान के नष्ट होने से

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हुई है १३ हम लोग यायवर ऋषि हैं हमारे अब संसारमें केवल एक पुत्र रहगया है नाम उसका जरत्कार है वह बड़ा तपस्वी और वेदों का जाननेवालाहै परन्तु उसके स्त्री नहीं और न कोई पुत्र या भाई है यह जो खस के खम्भे में जिसके आश्रय हम लटके हुये हैं एक जड़ रहगई है वह केवल हमारे कुलमें वही एक पुत्र रहा है और उसको भी चूहारूपी महाकाल दिनरात्रि भक्षण करता चला जाता है इससे हे महाराज! आपने जो हमपर दया की है तो कृपा करके अगर आपको जरत्कार मिले तो उससे हमारा सब दीन वृत्तान्त कहकर उसे ऐसा उपदेश कीजियेगा जिसमें वह अपना विवाह करै और ऐसा न करने से वह भी कुछ कालमें मरकर नरकमें पड़ैगा विना संतानके तरना दुर्लभहै और आपने हमपर ऐसी दया करके जैसे कोई अपना भाईबंधु करताहै हमारा दुःख पूछा इस कारण से हम भी जानना चाहते हैं कि आप कौन हैं १४। ३३॥

इति श्रीभाषामहाभारते आदिपर्वणि पंचचत्वारिंशोऽध्यायः ४५॥

छियालीसवां अध्याय।

जरत्कारका पितरों के कहने से विवाह का स्वीकार करना॥

सूतजी बोले हे ऋषियो! उन लोगोंकी यह बात सुनकर जरत्कार बोले कि महाराज आपका पापी और दण्ड देने के योग्य पुत्र मैंही हूं मेराही नाम जरत्कार है आपलोग निश्चय मेरे पितर हैं मेरी इच्छा परलोकके मिलने की तौ थी परन्तु विवाह करने की न थी परन्तु अब आपके इस दुःखको देखकर मैं ऐसी स्त्री से विवाह करूंगा जिसका नाम मेरासा हो और उसका भरण पोषण मुझे न करनापड़े ऐसी स्त्री को पाकर मैं अवश्य अपने ब्रह्मचर्यको छोड़दूंगा और आपकी इच्छा पूरी करने के लिये उस स्त्री से पुत्र उत्पन्न करूंगा १। १० ऐसा कहिके जरत्कार वहां से चलदिये और भ्रमण करने लगे परन्तु कोई कन्या नहीं पाई तब दुःखी होकर वनमें चलेगये और धीरे २ कहा कि मैं अपने पितरोंका दुःख दूर करनेको अपना विवाह पितरों के कहने से करना चाहता हूं मुझ दरिद्री को कोई अपनी कन्या जिसका भरणपोषण मुझे न करनापड़े और जिसका नाम मेरासा हो भिक्षामें दे ११। १८ सूतपुत्र बोले हे ऋषियो! जरत्कार के ऐसा कहने पर वासुकि नागके भेजे हुये सर्प वासुकि के पास आये और कहनेलगे कि महाराज जरत्कार विवाहके लिये अब कन्या ढूंढ़ते फिरते हैं १९ यह सुनकर वासुकि अपनी बहिन को वस्त्रादिक

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पहराकर जरत्कारके पास लेगया और कहा कि इस कन्याको आप लीजिये जरत्कारने उसको नहीं लिया और कहा कि मैं ऐसी स्त्री चाहताहूं जिसका नाम मेरासा होवे और मुझे उसके खानेपहिरनेका उपाय न करनापड़े २०।२३॥

इति श्रीभाषामहाभारते आदिपर्वणि षट्चत्वारिंशोऽध्यायः ४६ ॥

सैंतालीसवां अध्याय।

वासुकिकी बहिनका जरत्कार से विवाह होना उसका गर्भ धारण करना और जरत्कार का तपस्याको चलाजाना॥

सूतजी बोले हे ऋषियो! जरत्कार की यह बात सुनकर वासुकि नाग बोला कि मैं अपनी बहिनका पालन पोषण करूंगा आप इस बातकी चिन्ता न करें जरत्कार बोले अच्छा परन्तु जो यह तेरी बहिन हमारी कोई किसी तरह की अवज्ञा करैगी तो फिर मैं इसको छोड़दूंगा वासुकिने कहा बहुत अच्छा आप इसके साथ विवाह कीजिये यह सुनकर जरत्कार वासुकि के साथ उसके घर चलेगये १।४ और वेदविधिसे उसका पाणिग्रहण किया ५ और वासुकिने उनके रहने के लिये एक बहुत सुंदर रमणीक घर जिसमें सब सम्पत्ति और विहार की चीजें रक्खी थीं और एक बहुत सुन्दर मनको लुभानेवाली सेज बिछ रही थी बतादिया जरत्कार अपनी स्त्री सहित उस स्थान में गये ६।७ और अपनी स्त्रीसे कहा कि मेरी इच्छा के विपरीत न करना जो ऐसा करोगी तो मैं तुमको छोड़कर चलाजाऊंगा ८। ९ यह सुनकर वासुकि की बहिन बोली कि बहुत अच्छा मैं सदैव आपकी इच्छा के अनुसार करूंगी १० इसके उपरांत वे दोनों आनन्दपूर्वक वहां रहने लगे वासुकि की बहिन बहुत भयभीत रहकर मुनिकी सेवा करती थी और कभी उनकी आज्ञा के विपरीत नहीं करतीथी ११ ऋतुस्नान के आनेपर वासुकि की बहिन के गर्भ रहा वह गर्भ अग्नि के समान चमकताथा और दिन २ ऐसे बढ़ताथा जैसे शुक्लपक्षमें चन्द्रमा बढ़ताहै १२।१४ एकदिन जरत्कार अपनी स्त्री की जांघपर शिर रखकर सो गये जब सायंकाल हुआ और सूर्य अस्त होने लगे १५ उस समय संध्या करनेका समय जानकर वह भयभीत होकर विचारने लगी १६ कि जो मुनिको जगातीहूं तो मुनीश्वर मुझपर क्रोध करेंगे और जो नहीं जगातीहूं तो संध्या छूट जानेसे धर्मका लोप होगा और इस प्रकारसे कुछ देर संकल्प विकल्प करके अंतको धर्मका लोप होना बड़ा दोष समझकर अत्यन्त मधुर बोली से अपने प्राणपति को जगाने

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लगी हे महाराज ! अब सायंकाल होगयाहै सूर्य अस्त होनेवाले हैं उठ करके सूर्यको अंजली दीजिये १७। २१ यह सुनकरके जरत्कार क्रोधयुक्त होकर उठे और अपनी स्त्रीसे बोले कि तैंने मेरा बड़ा अपमान किया २२। २४ स्त्री बोली महाराज मैंने आपका अपमान नहीं कियाहै आपके धर्मका लोप समझ कर आपको जगायाहै जरत्कार बोले कि सूर्य मेरी अंजली लिये विना अस्त नहीं होसक्ते हैं जहां हमारे ऐसे मनुष्योंका अपमान होता है वहां हम नहीं रहते हैं हमारा कहना झूंठ नहीं है अब हम तुझे छोड़ते हैं तू अपने भाई के घरमें रह और कुछ शोच मत कर २५। ३२ यह कहकर जरत्कार चलने लगे उनकी स्त्री यह देखकर रोनेलगी कंठ सूखगया और फिर गद्गद वाणी करके विनयपूर्वक बोली महाराज आपको मुझे छोड़ना उचित नहीं है मैं निरपराध और धर्मरत हूं और जिसलिये वासुकि ने मुझे आपको दिया है वह भी नहीं हुआ अब वासुकि मुझसे क्या कहैगा उसने मुझे आपको आपसे एक पुत्र उत्पन्न होने के लिये दिया था जो महाराज आपसे मेरे एक पुत्र होजाता तो मेरे कुल के लोग सुखपूर्वक रहते गर्भ न होने के कारण से वे लोग अब अत्यन्तही दुःखी होंगे सो हे महाराज ! मुझ निरपराध को छोड़ना आपको उचित नहीं है ३३। ४० यह सुनकर जरत्कार बोले कि तू इस बात की चिन्ता मत करै तेरे एक पुत्र बड़ा तपस्वी सुन्दर और सूर्यके समान तेज रखनेवाला उत्पन्न होगा मेरा कहा झूंठ नहीं होता ऐसा कहके जरत्कार वहां से तपस्या करने को चलेगये ४१। ४३ ॥

इति श्रीभाषामहाभारते आदिपर्वणि सप्तचत्वारिंशोऽध्यायः ४७ ॥

अड़तालीसवां अध्याय।

आस्तीक के उत्पन्न होने की कथा ॥

सतपुत्र बोले हे ऋषियो ! जरत्कार के चलेजाने पर उनकी स्त्री अपने भाई वासुकि के पास गई और वासुकि से सब हाल रोरोकर कहा १ वह सुनकर बड़ा दुःखी हुआ और बोला कि तू जानती है कि किसलिये तुझे मैंने जरत्कार को दियाथा जो उस महात्मा से तेरे एक पुत्र उत्पन्न हो तो वह हम सबकी सर्पोंके यज्ञ में रक्षा करै २। ४ यद्यपि यह बात तुझसे पूंछनी अयोग्य है परन्तु बड़ा काम होने से मुझे यह बात तुझसे पूंछनी पड़ी कि तुझे उस महात्मा से गर्भ भी है या नहीं मैं तेरे पतिके पीछे पीछे उसे लानेको नहीं जासक्ताहूं क्योंकि

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उनका स्वभाव उग्र है ऐसा न हो कि मुझसे अप्रसन्न होकर मुझे शाप दे दें ५। ७ अब जो कुछ उन्होंने तुझसे चलते समय कहाहै वह कहकर मेरे संदेह को दूर कर ८ यह सुन कर वासुकि की बहिन बोली कि मैंने पुत्रके हेतु उनसे चलते समय पूंछा था सो वह (अस्ति) कहके चलेगये उनका कहा हुआ सहजमें भी झूंठ नहीं होता है पूंछीहुई बात वह झूंठ क्योंकर कहेंगे इस से तुम अपने मनका संदेह दूर करो तुम्हारा मनोरथ निश्चय सिद्ध होगा ९। १३ यह सुनकर वासुकि और सब नाग बहुत प्रसन्न हुये और नानाप्रकार की मणि लेकर अपनी बहिनका पूजन किया १४। १५ सूतजी बोले हे ऋषियो! थोड़े दिनों में उस वासुकि की बहिनका गर्भ शुक्लपक्षके चन्द्रमाकी तरह बढ़कर सुन्दर लग्न में उस गर्भसे एक पुत्र उत्पन्न हुआ और उसका नाम आस्तीक रक्खा क्योंकि उसका पिता जरत्कार उसकी माता से अस्ति ऐसा कहकर वनको चलागया था थोड़े दिनों में जब आस्तीक अपने मामा के घर में बड़ा हुआ तब उसने च्यवन ऋषि से सब वेद और वेदांग पढ़लिये १६।१८ और नागोंकी रक्षामें रहकर आनन्दपूर्वक नागलोकमें विचरनेलगा और सब सर्पोंको शिवजीके समान बढ़कर सुख दिया और सर्प उसके कारण से सर्पसत्र यज्ञसे निर्भय होकर रहनेलगे १९। २२॥

इति श्रीभाषामहाभारते आदिपर्वणि अष्टचत्वारिंशोऽध्यायः ४८॥

उञ्चासवां व पचासवां अध्याय।

राजा जनमेजयका अपने मंत्रियों से अपने पिताके मरनेका हाल पूंछना॥

शौनक ऋषि बोले हे सूतपुत्र! अब यह कृपा करके राजा जनमेजय का अपने मंत्रियों से अपने पिता के मरने का हाल पूंछने की कथा कहिये सूत बोले १। २ हे ऋषियो! एक समय राजा जनमेजय ने अपने मंत्रियों से कहा कि आप लोग हमारे पिता के मरने के सब हाल को अच्छी तरह जानते हो मैं भी सुनाचाहता हूं आप उसको कहिये मैं सुनकर अपने कल्याण का काम करूंगा विपरीत नहीं करूंगा ३। ४ यह सुनके धर्म के जाननेवाले मंत्री बोले कि महाराज आपके पिता प्रजाका पालन अच्छी तरह करते थे चारों वर्णों की धर्म से रक्षा करते थे बड़े पराक्रमी थे पृथ्वी की रक्षा करते थे, उनके न बहुत वैरी थे और न वे किसी से वैरभाव मानते थे, प्रजापति के समान थे और सब से एकसा भाव रखते थे उनके राज्य में ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य और

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

शूद्र अपना अपना कर्म सावधान होकर करते थे विधवा स्त्री दीन अनाथ अंगहीन पुरुषों का पालन पोषण करते थे उनको देखकर मनुष्य ऐसे प्रसन्न होतेथे जैसे चन्द्रमाको देखकर चकोर प्रसन्न होती है उन्होंने महाराज कृपाचार्य से धनुर्विद्या पढ़ी आपके पिता गोविन्दभक्त शास्त्रनीतिके जाननेवाले जितेन्द्रिय और बुद्धिमान् थे साठ वर्ष उन्होंने इस पृथ्वीका राज्य किया उपरांत परम धामको चले गये ५। १७ उनके पीछे आप राजा हुये अब आप इस पृथ्वीपर हजार वर्ष राज्य कीजिये १८ यह सुनकर जनमेजय बोला कि इस कुलमें कभी ऐसा कोईभी राजा नहीं हुआ जिसने प्रजाका पालन आदि राज्य कर्म धर्म से न किये हों जैसा कि हमने अपने दादे परदादोंका हाल सुनाहै अब आप यह कहिये कि हमारे पिता कैसे मरे १९। २० यह सुनकर मंत्रियों ने राजा परीक्षितके अहेर खेलने जाने एक मृगके बाण मारने उसके वहांसे वन में भागने राजाका उसका पीछा करने वहां मृगका हाल मौनव्रत ऋषिसे पूंछने उनके कुछ न बोलनेपर राजाका उनके गले में मरा सर्प डालने उस हालको सुनकर ऋषिके पुत्र शृंगीका राजाको शाप देने मुनिका राजाके पास अपना शिष्य भेजकर शापका हाल कहने राजाका शापकी निवृत्तिका उपाय करने तक्षकका राजाको काटने आने राहसे कश्यपमुनिको जो राजाको अच्छा करने को आते थे तक्षक से धन पाकर लौटजाने और तक्षकके काटने से राजाके मर जाने का सब हाल जो हम तुमसे पहले वर्णन करचुके हैं क्रमसे कहा २१।६२ यह सुनकर राजा जनमेजय बोला कि कश्यपजी और तक्षकका संवाद तो वन में हुआथा यहां कैसे मालूम हुआ ६३। ६४ हम जानते हैं कि तक्षकने कश्यपजीका मंत्रबल देखकर यह विचारा कि मेरे काटेहुये को यह जियादेंगे तो मेरी हँसी होगी इससे उसने कश्यपजी को राहसे धन देकर लौटा दिया हम अब उपाय करके तक्षक को दण्ड देंगे यह कहिये कि यह हाल यहां किसने आकर कहा ६५। ६९ यह सुनकर मंत्री बोले कि यहां का एक लकड़िहारा उसी वृक्षपर लकड़ी तोड़ने चढ़ाथा उसको न तक्षकने देखा और न कश्यपजीने तक्षकके काटनेपर उस वृक्षके साथ वह भी भस्म होगयाथा और जब कश्यपजीने उस वृक्षको सजीवित कियां तब वह मनुष्य भी उसके साथ जी उठा उसने यहां आकर यह सब वृत्तान्त कहा था अब जो कुछ आपकी इच्छा हो सो आप करें ७०। ७४ सूतजी बोले हे ऋषियो! यह बात सुनकर राजा जनमेजय शोक

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

में डूबगये आंखोंसे आंसू बहनेलगे और क्रोधसे दोनों हाथोंको मल मलकर बोले ७५ कि आप लोगों से मैंने अपने पिताके मरनेका हाल सब सुना अब मेरी इच्छा उस दुष्ट तक्षकको दण्ड देनेकी है क्योंकि उसने छल करके शृंगीऋषि के शापको केवल हेतु बनाकर हमारे पिताको डसा ७६। ८० उस तक्षकका कुछ बिगड़ न जाता जो कश्यपजी हमारे पिताको अपनी औषधके बलसे जियादेते परन्तु उस दुष्ट तक्षक ने उनको धन देकर राह से लौटादिया इस कारण से मैं उत्तंक और आप लोगोंकी प्रसन्नता और अपने पिताके वैर लेने के लिये तक्षकको दण्ड दूंगा ८१। ८५॥

इति श्रीभाषामहाभारते आदिपर्वणि एकोनपञ्चाशत्तमोपञ्चाशत्तमोऽध्यायः ४९। ५०॥

इक्यावनवां अध्याय।

राजा जनमेजयके सर्पसत्र यज्ञ रचनेकी कथा॥

सूतजी बोले हे ऋषियो! राजा जनमेजयने मंत्रियोंसे प्रसन्न होकर सर्पसत्र यज्ञ करने की प्रतिज्ञा की १ और अपने पुरोहित और ऋत्विजों को बुलाकर कहा कि तक्षकने अपनी दुष्टता से हमारे पिताको विना अपराध अपनी विषकी अग्नि से काटकर जलादिया इससे मैं भी चाहताहूं कि अपने पिताका बदला लेने के लिये उस तक्षक को भाई बन्धुओं सहित जलती हुई अग्नि में जलाऊं आपलोगों को ऐसा कर्म कराने की विधि मालूम है या नहीं यह सुनकर ऋत्विज् बोले कि इस काम के करने के लिये सर्पसत्र यज्ञ पुराणों में विख्यात है २। ६ हमलोग उस यज्ञ को करासक्ते हैं और आप ऐसे राजा के सिवाय उस यज्ञ को और कोई नहीं करसक्ता है यह सुनकर जनमेजय प्रसन्न हुये और उसी समय से तक्षक को भस्म हुआ मानकर ७। ८ ऋत्विजों से बोले कि मैं उस यज्ञ को करूंगा आप उसकी सामग्री इकट्ठी कीजिये ९ सूतजी बोले हे ऋषियो! ऋत्विजों ने यह सुनकर उस सब देश को नापकर यज्ञ करने के योग्य पृथ्वी शोधी १० और उस पृथ्वी पर यज्ञशाला बनवाई इसके पीछे वहां वस्त्र धन धान्य आदि सब यज्ञ की सामग्री इकट्ठी कीगई और बहुत से वेदके जाननेवाले तपस्वी ऋषिलोग इकट्ठे हुये ११। १२ ऋत्विजोंने राजा के सर्प-सत्र यज्ञ का फल पाने के लिये राजा को दीक्षा दी १३ और राजाने सब यज्ञ करनेवालों का वरण किया और यज्ञ प्रारम्भ होने के पहिले शिल्पशास्त्र के जाननेवाले यज्ञशाला के बनानेवाले कारीगरों ने एक शकुन देखकर कहा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कि एक ब्राह्मण के कारण से यह यज्ञ समाप्त न होगा १४। १६ यह सुनकर राजा जनमेजय ने दीक्षा लेने के पहिले द्वारपालकों को आज्ञा दी कि हमारी विना आज्ञा यज्ञ में कोई न आने पावै १७॥

इति श्रीभाषामहाभारते आदिपर्वणि एकपञ्चाशत्तमोऽध्यायः ५१॥

बावनवां अध्याय।

राजा जनमेजय के सर्पसत्र यज्ञ करने की कथा॥

सूत बोले हे ऋषियो! इसके पीछे यज्ञ होनेलगा सब ब्राह्मण अपने अपने कर्मों को करने लगे १ और ऋत्विजों ने जिनके धूम्रसे कपड़े काले और आंखें लाल होगई थीं मन्त्र से अग्नि में होम किया २ और अग्नि के मुख में सर्पोंका आवाहन किया ३ और सर्प मंत्र के बलसे निर्बल होकर आ आकर अग्निकुण्ड में गिरने लगे ४ बालक तरुण और बूढ़े श्वेत काले और नीले अनेक प्रकार के सर्प कोई एक कोस कोई एक योजन और कोई गौके कान की बराबर लंबे जिनका आकार किसीका घोड़े किसीका हाथी किसीका हाथी की सूंड़के समानथा एक दूसरे को बुलाते फड़कते श्वास लेते परस्पर लिपटते चिल्लाते पुकारते लाखों प्रयुतों अर्बुदों असंख्य सर्प अवश होकर कोई पूंछ की ओर से और कोई मुखकी ओर से उस अग्निकुण्ड में मन्त्रबल से गिर गिरकर भस्म होगये ५। १०॥

इति श्रीभाषामहाभारते आदिपर्वणि द्विपञ्चाशत्तमोऽध्यायः ५२॥

तिरपनवां अध्याय।

जनमेजय के यज्ञके ऋत्विज् और सदस्यों के नाम॥

इतनी कथा सुनकर शौनक बोले हे सूतपुत्र! उस भयानक सर्पयज्ञमें ऋत्विज् और सदस्य कौन कौनथे १। २ सूत बोले सुनो भृगुवंश में एक चण्ड नाम ब्राह्मण बड़े वेद के जाननेवाले और तपस्वीथे वे उस यज्ञमें होता अर्थात् होम करनेवालेथे ३। ५ जैमिनिजी जो बड़े विद्वान् और वृद्ध थे वह सामवेदी ऋत्विज् थे सांगरजी ब्रह्मा और पंगलऋषि यजुर्वेदी ऋत्विज् थे ६ और अपने शिष्यों सहित व्यासजी महाराज, उद्दालक, प्रमतक, श्वेतकेतु, पिंगल, असित, देवल, नारद, पर्वत, आत्रेय, कुंड, जठर, कालघट, वात्स्य, श्रुतश्रवा, कोहल, देवशर्मा, मौद्गल्य, समसौरभ और २ बहुत से वेदके जानने वाले ब्राह्मण उस यज्ञके सदस्य थे ७।१० हे ऋषियो! उस यज्ञ में सहस्रों सर्प

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

चिल्लाते हुये आकाश से अग्नि में गिरते थे उनकी चर्बी की नदी उस अग्नि-कुंड से बह निकली और सर्पों के जलने की बड़ी कड़ी गंध चौतरफ़ फैल गई ११। १२ और तक्षक जनमेजयके यज्ञका हाल सुनकर इन्द्र के पास गया और अपनी रक्षाके लिये इन्द्रकी शरण चाही इन्द्रने उसे शरण देकर उससे कहा कि तू भय मत कर यहां तुझको यज्ञ बाधा नहीं करसक्ता १३। १६ हम तेरे बारे में ब्रह्माजी से पहिलेही कहिचुके हैं यह सुनकर तक्षक सुखपूर्वक इन्द्रके स्थान में रहने लगा १७। १८ इसके उपरान्त सर्पों के बहुत से जलने पर वासुकि नाग को जिसका परिवार थोड़ासा रहि गयाथा मोह हुआ १९ और उस मोह में अत्यन्त दुःखी होकर अपनी बहिन से बोला कि राजा जनमेजय यज्ञ कर रहा है उससे मेरे सब देहमें जलन उठी है मुझे दिशा नहीं सूझती चक्कर आते हैं और हृदय फटाजाता है मैं जानता हूं कि मैं भी अब उस यज्ञकी घोर अग्नि में गिरकर मरूंगा २०। २२ अब यह वही समय आया है जिसके लिये मैंने तुझे जरत्कार को दियाथा इसलिये अब तू अपने पुत्रको जो वेद वेदांग के पार होगया है बुलाकर उससे हमारी सकुटुम्ब रक्षा कर तेरा आस्तीक पुत्र निश्चय उस यज्ञ को बन्द करसक्ता है क्योंकि ब्रह्माजीने मुझसे पहले इस बातको कहाथा २३। २६॥

इति श्रीभाषामहाभारते आदिपर्वणि त्रिपञ्चाशत्तमोऽध्यायः ५३॥

चौवनवां अध्याय।

वासुकि की बहिनका अपने पुत्रसे सर्पोंकी यज्ञसे रक्षा करने को कहना और आस्तीकका जनमेजय के पास जाना॥

सूतजी बोले हे ऋषियो! वासुकि की बहिनने अपने भाई की बात सुनकर अपने पुत्र आस्तीक को बुलाया और उससे कहा हे पुत्र! तेरे मामाने मुझे तेरे पिताको एक कारण पाकर दियाथा उस कारणका समय अब आन पहुँचा है इस समय में तुझको भी उचित कर्म करना चाहिये १। २ यह सुनकर आस्तीक बोला मेरे मामाने तुमको क्यों मेरे पिताको दियाथा और वह क्या काम है जो मुझे अब करना चाहिये माता बोली ३। ४ हे पुत्र! सर्पों की माता कद्रूने अपने पुत्रों को आज्ञा न मानने के कारण से यह शाप दियाथा कि तुम सब यज्ञकी जलतीहुई अग्नि में भस्म होगे और ब्रह्माजीने कद्रू माता से उस समय यह कहाथा कि तेरा शाप सच्चा होगा ५। ८ उपरान्त मेरे मामा वासुकि ने

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

देवताओं की शरण ली देवता तेरे मामा को ब्रह्माजी के पास लेगये ९। १० और उनसे तेरे मामा की ओरसे बहुत कुछ कह सुनकर तेरे मामा को शाप से छूटने की प्रार्थना की ११। १२ तब ब्रह्माजीने कहा कि वासुकि की बहिन जरत्कार नाम जरत्कारऋषि को विवाही जावेगी उसका पुत्र सुकर्मी सर्पों को शापसे छुटावेगा १३ हे पुत्र! इस कारण से तेरे मामाने मुझे तेरे बड़े तपस्वी पिता जरत्कार को दियाथा १४ अब वही समय आगया है राजा जनमेजय सर्पसत्र यज्ञ कररहा है तुझे चाहिये कि अपने मामा आदि के कुटुम्ब को उस यज्ञकी अग्नि से बचा और उस निमित्तको पूराकर जिस निमित्त मेरा दान तेरे पिता को हुआ था १५। १६ यह सुनकर आस्तीक अपनी माता से बोला कि बहुत अच्छा मैं ऐसाही करूंगा और फिर अपने मामा वासुकि से कहा १७ कि मैं आपको शापसे छुटाऊंगा आप अब स्वस्थ होकर बैठें और भयको छोड़दें मैं कभी हँसी में भी झूठ नहीं कहताहूं मेरे कहे को आप सत्य मानें मैं अभी जनमेजय के पास जाताहूं और उसे अपनी वाणी से प्रसन्न करके उसका यज्ञ बंद कराताहूं १८। २२ वासुकि यह सुनकर बहुत प्रसन्न हुये मानो किसीने जीवदान दिया और यह बोले कि मेरा शरीर घूमरहा है हृदय फटा जाता है मुझे ब्रह्मदण्डकी पीड़ा से दिशा दिखाई नहीं देती हैं २३ यह सुन कर आस्तीकने कहा कि आप किसी तरहका भय और संताप न करें मैं आप की अग्निके भय को दूरकरके अग्निकी समान तेज रखनेवाले ब्रह्मदण्ड के तापको नाश करूंगा २४। २५ सूतजी बोले हे ऋषियो! ऐसा कहिके आस्तीकने वासुकि के दुःखको उसकी देहसे उतारकर अपने शरीर पर रखलिया और सर्पों की रक्षाके लिये वहां से राजा जनमेजय के पास चले २६। २७ जब यज्ञशालाके पास पहुँचे तब द्वारपालने कहा कि विना महाराज की आज्ञा भीतर जानेकी आज्ञा नहीं है आप ठहरें मैं खबर किये देताहूं ऐसा कहिके द्वारपालने राजासे खबर की राजा ने कहा अच्छा आनेदो आस्तीक राजा की आज्ञा पाकर भीतर यज्ञशाला में जहां बड़े बड़े तपस्वी सदस्य और ऋत्विज् बैठे थे यज्ञकी प्रशंसा करते हुये पहुँचे २८। ३०॥

इति श्रीभाषामहाभारते आदिपर्वणि चतुःपञ्चाशत्तमोऽध्यायः ५४॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पचपनवां अध्याय।

आस्तीक का यज्ञमें पहुँचकर सदस्य ऋत्विज् यज्ञ और राजाकी स्तुति करना ॥

सूतजी बोले हे ऋषियो! आस्तीक यज्ञमें पहुँचकर यज्ञ सदस्य ऋत्विज् और राजाकी स्तुति करनेलगे हे राजन्! तेरा यह यज्ञ ऐसा हुआ है जैसे पूर्वकाल में चन्द्रमा वरुण प्रजापति इन्द्र यमराज हरिमेध रंतिदेव गय शशिबिन्दु कुबेर नृग अजमीढ़ रामचन्द्र यज्ञश्रुति युधिष्ठिर अजमीढ़वंशी और व्यासजी आदि यज्ञ हुये हैं हम तुमसे अपने प्यारों का कल्याण चाहते हैं ये १।७ आपके यज्ञ करानेवाले ऋत्विज्लोग सूर्यके समान तेज रखनेवाले हैं पृथ्वीपर कोई विधि ऐसी नहीं है जिसे ये न जानते हों इनको दान दिया हुआ कभी नाश नहीं होता ८ और व्यासजी महाराज सबके शिरमौर हैं जिनकी दीक्षा पाकर ब्राह्मण ऋत्विज् होजाते हैं और पृथ्वीपर अनेक शुभ कर्म कराते हैं ९ और अग्निदेव जिनके नाम विभावसु, चित्रभानु, हिरण्यरेता, हुतभुक्, कृष्णवर्त्मा, प्रदक्षिणावर्त्त शिखा हैं तेरी होमी हुई हव्यको देवताओं को देते हैं १० प्रजाके पालन में बराबर इस नरलोक में कोई राजा नहीं है हम तुम्हें देखकर प्रसन्न हुये तू धर्मराज और वरुण के समान उदार है ११ इन्द्र और लोकपाल के समान प्रजापालक है तू बड़ा वीर है तेरी बराबर धैर्यधारी कोई नहीं है १२ तेरा तेज खट्वांग, नाभाग, दिलीप, ययाति और मान्धाताके तुल्य है तू भीष्मके समान तेजस्वी वाल्मीक के समान पराक्रमी वशिष्ठ के समान क्रोध को वशमें करनेवाला इन्द्र के समान प्रभुताका रखनेवाला नारायण के समान कांतिधारी यमराज के तुल्य धर्मचारी कृष्ण के समान गुणनिधान लक्ष्मी और यज्ञोंका वासस्थान परशुराम के समान अस्त्र शस्त्र जाननेवाला तेजस्वी अत्रि और और्वऋषियों के तुल्य तपस्वी और भागीरथ के समान दुर्धर्ष है १३।१६ सूतजी बोले हे ऋषियो! आस्तीक की यह स्तुति सुनकर सब सदस्य ऋत्विज् राजा और अग्नि प्रसन्न हुये और जनमेजय उन सब ब्राह्मणों के मानसी संकल्प को जान कर बोला १७॥

इति श्रीभाषामहाभारते आदिपर्वणि पञ्चपञ्चाशत्तमोऽध्यायः ५५ ॥

छप्पनवां अध्याय।

आस्तीकका राजा जनमेजय से वर मांगकर सर्पसत्र यज्ञको बंद करना ॥

सूतजी बोले हे ऋषियो! राजा जनमेजय सब ऋत्विजों से बोला कि यह

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बालक वृद्धों की तरह बात कहता है इससे मैं इसे वृद्धही मानकर वर देना चाहताहूं आपकी क्या आज्ञा है १ सदस्य और ऋत्विज् बोले कि राजाओं को ब्राह्मणका बालक भी मान्य है और जो विद्वान् है वह तो सर्वथा पूजन योग्य है आप बुद्धिमान् हैं आपसे और क्या कहा जाय तक्षक भी आयाही चाहता है यह सुनकर राजा आस्तीक को वर देने को ही था कि इतने में होता व्यग्रचित्त होकर बोला कि महाराज तक्षक नहीं आता है २। ३ यह सुनकर जनमेजय बोला कि हे ब्राह्मणो ! अब ऐसा करो जिसमें तक्षक आकर अग्नि में गिरै यह यज्ञ समाप्तहो ४ ऋत्विज् बोले महाराज हम लोग बहुत प्रकार से मंत्र पढ़ते हैं परन्तु तक्षक नहीं आता है वह भय से पीड़ित होकर इन्द्र की शरण गया है इन्द्र ने उसे यह वर दिया है कि तुम यहां निर्भय बसो यहां मंत्रबल नहीं चलैगा इससे जानपड़ता है कि जो यज्ञकुण्डके बनाने के समय पुराण के जाननेवाले सूतने और ब्राह्मणों ने कहा था वही होनहार है ५।७ यह सुनकर राजा जनमेजय ने क्रोध किया और होतासे कहा कि अब ऐसा उपाय करो जिसमें वह सर्प इन्द्र सहित चलाआवै यह कहकर राजा ने मंत्रके जाननेवाले ब्राह्मणों से फिर क्रोध करके कहा महाराज ! तक्षक तो इन्द्रके घर गयाही है अब आप ऐसा करैं कि तक्षक सहित इन्द्र का आवाहन करिके दोनों को अग्नि में होमदो ८। ११ राजा की यह बात सुनकर होता ने इन्द्रका आवाहन किया और इन्द्र तक्षक सहित जिनके अंग महामंत्र से किलगये थे स्वर्ग से चले कुछदेर तक देवेन्द्र आकाश में दुःखित रहे उपरान्त उस यज्ञको देखकर भयभीत हो तक्षक को छोड़ चले गये इन्द्रके चलेजाने पर तक्षक मंत्रवश से सब घमंड भूलगया और व्याकुल अंग होता हुआ अग्नि के पास पहुँचा १२।१५ उसको देखकर ऋत्विजों ने कहा हे राजा ! तेरा कार्य तो सिद्ध हुआ अब तुम इस ब्राह्मण को वर दो १६ जनमेजय ने कहा महाराज ! आप वर मांगिये मैं आपको जो मांगोगे सो वही दूंगा १७ राजा यह कहने ही पाये थे कि इतने में ऋत्विज् फिर बोले देखो राजा तक्षक स्वर्ग से चिल्लाता चला आता है और इन्द्र के छोड़जाने से विकल मूर्च्छित और घुमेरखा खाकर ऊंचे श्वास लेता है १८। १९ सूत बोले हे ऋषियो ! जब आस्तीकने देखा कि तक्षक अग्नि के समीप आपहुँचा है थोड़ाही अंतर है तब वह जनमेजयसे बोला २० कि आपने जो वर हमको देने कहा था सो दीजिये हम

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यह वर मांगते हैं कि तुम्हारा यह सर्पसत्र यज्ञ अब बंद होवै और इस समय से पीछे इसमें सर्प न गिरे २१ यह सुनकर जनमेजय बोला कि आप सोना चांदी गाय और जो कुछ इच्छा हो सो लेलीजिये परन्तु हमारे यज्ञ को न बंद कीजिये २२। २३ आस्तीक बोले कि हमको यह कुछ नहीं चाहिये हम तौ केवल आपका यज्ञ बंद करना चाहते हैं २४ राजा ने बारबार यही कहा कि और जो वर इच्छा हो सो मांगलो परन्तु हमारा यज्ञ बन्द न करो परन्तु आस्तीकने यही उत्तर दिया कि मुझे और वर नहीं चाहिये २५। २६ इसके उपरान्त सब सदस्य और ऋत्विज् बोले कि हे राजा! अब कुछ चिंता न करो वरदो और सर्पसत्र यज्ञको बंद करो उनकी बात सुनकर राजा ने ब्राह्मण को वर दिया और सर्पयज्ञको समाप्त किया २७॥

इति श्रीभाषामहाभारते आदिपर्वणि षट्पंचाशत्तमोऽध्यायः ५६॥

सत्तावनवां अध्याय।

उन मुख्य २ सर्पों के नाम जो यज्ञाग्नि में भस्म हुये॥

इतनी कथा सुनकर शौनकऋषि बोले कि मैं उन सब सर्पों के नाम सुना चाहताहूं जो उस यज्ञकी अग्नि में गिरकर भस्म हुये १ सूत बोले उस यज्ञ में तौ अर्ब खर्ब से भी अधिक असंख्य सर्प गिरकर भस्म हुये उन सबके नामोंको नहीं कहसक्ताहूं २ परन्तु उनमें मुख्य मुख्य सर्प थे उनके नाम ये हैं ३ पहले वासुकिनाग के कुलके सर्पों के नाम कहताहूं जो नीले काले और श्वेतआदि अनेक रंगों के बड़े विषधारी और कायाधारी थे प्रधान प्रधान उनके नाम ये हैं कोटिश, मानस, पूर्ण, शल, पाल, हलीमक ४। ५ पिच्छल, कौणेय, चक्रकालवेग, प्रकालन, हिरण्यबाहु, शरण, कक्षक और कालदंतक ६ और तक्षककुल के सर्पों के मुख्य सर्पों के नाम ये हैं पुच्छांडक, मंडलक, पिडसेक्, आरभेणक ७। ८ उच्छिक, शरभ, भंग, बिल्वतेजा, विरोहण, शिली, शलकर, मूक, सुकुमार, प्रवेपन, मुद्गर, शिशुरोमा, सुरोमा और महाहनु ९। १० और ऐरावत सर्प के वंश के नागों के प्रधान नाम ये हैं पारावत, पांडर, हरिण, कृश, विहंग, शरभ, मेद, प्रमोद और संहतापन और कौरव्यकुलके मुख्य मुख्य ये नाम हैं ११। १२ एरक, कुंडल, वेणी, वेणीस्कन्द, कुमारक, बाहुक, शृङ्गवेर, धूर्तक, प्रात, आतक, धृतराष्ट्र और नागवंश के मुख्य सर्पों के नाम ये हैं १३। १४ शंकुकर्ण, पिठरक, कुठार, मुखसेचक, पूर्णांगद, पूर्ण-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मुख, प्रहास, शकुनिदरि, प्रमाहठ, कामठक, सुषेण, मानस, अव्यय, भैरव, मुंडवेदांग, पिंशग, उद्रपारक, ऋषभ, वेगवान्नाग, पिंडारक, महाहनु, रक्तांग, सर्वसारंग, समृद्ध, पटवासक, वराहक, वीरणक, सुचित्र, चित्रवेगिक, पराशर, तरुणकमणि, स्कंध और अरुणि १५। १६ सूत बोले हे ऋषियो ! मुख्य मुख्य नागों के नाम मैंने कहे इन सबके पुत्र पौत्रादिक असंख्य थे किसी के तीन किसी के सात और किसी के दश शिर थे और उनका विष कालाग्नि के समान था कोई पहाड़ की शिखरके समान था कोई एक योजन और कोई दो योजन लम्बे थे ऐसे ऐसे कोटिन सर्प जिनकी संख्या कोई नहीं कहसक्ता है माता के शाप से जनमेजय के यज्ञ में आये और भस्म होगये २०। २४॥

इति श्रीभाषामहाभारते आदिपर्वणि सप्तपंचाशत्तमोऽध्यायः ५७॥

अट्ठावनवां अध्याय।

आस्तीकका जनमेजय से सर्पयज्ञ बंद करनेका वर मांगना और जनमेजय का वरदान देकर यज्ञ समाप्त करना॥

सूत बोले हे ऋषियो ! आस्तीकने एक और बड़ी अद्भुत बात की वह भी सुनो इन्द्र आस्तीक को वर मिलने में देरी देखकर भय से तक्षक को छोड़कर चले गये और बड़ी देर हो गई परन्तु तक्षक अग्नि में नहीं गिरा तब राजा के मन में बड़ी चिन्ता यह हुई कि मंत्र से आवाहन करने पर भी तक्षक स्वर्ग से अग्नि में क्यों नहीं गिरता है १। २ यह सुनकर शौनकऋषि ने पूंछा कि हे सूतपुत्रजी ! क्या ब्राह्मण मंत्रविधि भूल गये थे जिससे ऐसा हुआ ४ सूत बोले नहीं जब आस्तीक ने देखा कि तक्षक अग्नि में गिरने चाहता है तब तीन बेर तिष्ठतिष्ठ अर्थात् ठैरठैर कहा ५ उसके वचन से वह तक्षक आकाशमें ठैर गया ६ इसके पीछे राजा सब सदस्य ऋत्विजोंके कहने से बोला कि आस्तीकका कहना सत्य होय ७ हमारा यह कर्म पूरा हो और सर्प निर्भय होय आस्तीक प्रसन्न होय और वह सूतकी पहली कहीहुई बातभी सच्ची होवै ८ यह वरदान देने पर वह यज्ञ पूर्ण हुआ राजा प्रसन्न हुआ और बड़ा आनन्ददायक कोलाहल शब्द हुआ ९।१० सूत बोले हे ऋषियो ! राजा जनमेजयने सब ऋत्विज् और सदस्यों को बहुतसा धन देकर उनका सन्मान किया और उस सूत पत्थर बनानेकी विद्या जाननेवालेको जिसने यज्ञकुण्ड बनाते समय यह कहा था कि यह यज्ञ एक ब्राह्मण के कारण से निवृत्त होगा वस्त्र भोजन और धन देकर बिदा किया

CC-0: Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इसके पीछे राजाने यज्ञ पूरा होने का वेदविधि से स्नान किया ११। १४ और उस बुद्धिमान् प्रसन्नचित्त आस्तीक को बहुतसा सन्मान करके बिदा किया और कहा कि आप फिरभी कृपा कीजियेगा मैं बड़ा अश्वमेध यज्ञ करूंगा उस यज्ञ में आप मेरे सदस्य होवें १५। १६ आस्तीक अपना काम साध राजा को प्रसन्नकर बहुत अच्छा ऐसा कहि वहांसे चल दिया १७ और अपनी माता और मामाके पास पहुँचकर उनके चरणछू जो कुछ धन राजा के यहांसे मिला था सब उनके सामने रखदिया १८ इस बातको देखकर जितने सर्प वहां मौजूद थे सब बहुत प्रसन्न हुये और आस्तीक से बोले कि जो वर मांगोगे सो हम देंगे १९। २० यह सुनकर आस्तीक बोला कि जो ब्राह्मण अथवा और मनुष्य इस चरित्रको सबेरे और सांझको पढ़ें उनको सर्प का कुछ भय न होवे २१ सर्पों ने तथास्तु कहकर यह भी कहा कि जो मनुष्य तेरा नाम लेंगे सर्प उनके घर न जायँगे २२ और सर्पोंके दूर करने का यह मंत्र है (मंत्र) असितश्चार्तिमन्तश्च सुनीथश्चापि यः स्मरेत्। दिवा वा यदि वा रात्रौ नास्य सर्पभयं भवेत्॥ यो जरत्कारुणा जातो जरत्कारौ महायशाः। आस्तीकसर्पसत्रेव पन्नगान्योभ्यरक्षत। तं स्मरन्तं महाभाग! न मां हिंसितुमर्हथ २४ सर्पाय सर्पभद्रन्ते दूरं गच्छ महाविष। जनमेजयस्य यज्ञान्ते आस्तीकवचनं स्मर २५ आस्तीकस्य वचः श्रुत्वा यः सर्पो न निवर्तते। शतधा भिद्यते मूर्ध्नि शिंशवृक्षफलं यथा २६॥

इतनी कथा सुनाकर सूत बोले हे ऋषियो! सर्पोंसे यह वरदान पाकर आस्तीकऋषि वहां से चलेगये और पुत्र पौत्र युक्त होकर कुछ काल में स्वर्गवासी हुये २७। २८ इस आस्तीक के चरित्र सुननेवालेको सर्पों का भय कभी न होगा २९ इस कथा को प्रमितिनाम भार्गवने जैसे अपने पुत्र रुरुको सुनाया था वही मैंने तुमसे भी कही है ३०। ३१ यह वही आस्तीककी कथा है जो डुंडुभ सर्प ने कही थी और उसके सुनाने को आपने मुझसे कहा था ३२। ३३॥

इति श्रीभाषामहाभारते आदिपर्वणि अष्टपञ्चाशत्तमोऽध्यायः ५८॥

उनसठवां अध्याय।

शौनकऋषिका सूतपुत्रसे महाभारतकथामें कुरुपांडववृत्तांत सुननेकी इच्छा करना॥

शौनकऋषि बोले कि हे सूतजी! भृगुवंशकी सब कथा सुनकर हम तुम से बहुत प्रसन्न हुये अब तुम कृपा करके महाभारतसम्बन्धी कुरुपाण्डववृत्तान्त जिसे राजा जनमेजय ने अपने सर्पसत्र यज्ञ में व्यासजी से पूछा था और

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

व्यासजी महाराज ने अपने शिष्य वैशम्पायन को उसे सुनाने की आज्ञा दी वर्णन कीजिये सूतजी बोले बहुत श्रेष्ठ मैं आदिसे सब कथा कहता हूं आप सुनिये मुझेभी इस कथा के कहने में आनन्द होता है १। १० ॥

इति श्रीभाषामहाभारते आदिपर्वणि एकोनषष्टितमोऽध्यायः ५९ ॥

साठवां अध्याय।

व्यासजीका राजा जनमेजयके यज्ञमें जाना और जनमेजय का कुरुपांडवीय वृत्तान्त पूंछना ॥

सूतजी बोले हे ऋषियो ! राजा जनमेजय को सर्पसत्र यज्ञ करने के लिये दीक्षित सुनकर श्रीव्यासजी महाराज जो पराशर मुनि से यमुनाके द्वीप में सत्यवती माताके कुमार अवस्था में उत्पन्न हुये थे अपने शिष्यों सहित वहां आये व्यासजी अपनी माताके उत्पन्न होतेही बड़े होगये और विना वेद पढ़े अथवा तपस्या किये सब वेदांगों में पार होगये व्यासजी सगुण निर्गुण ब्रह्मके जाननेवाले ब्रह्मऋषि कवि सत्यव्रत और पवित्र थे उन्होंनेही वेदके चार भाग किये और राजा शांतनुके कुलको बढ़ानेके लिये पाण्डु धृतराष्ट्र और विदुरको उत्पन्न किया सो व्यासजी अपने वेद वेदांगों के जाननेवाले शिष्यों सहित उस यज्ञ में जहां राजा जनमेजय बड़े २ ब्रह्मकल्प सदस्यों के बीच में ऐसे बैठा था जैसे देवताओं में इन्द्र १। ९ राजा उनको देखकर ऋषियोंसहित उनके पास आया और बड़े आदरसे उनको लेजाकर सुनहले विष्टरवाले आसनपर बैठाया और विधिपूर्वक जैसे इन्द्र बृहस्पति का पूजन करता है पाद्य अर्घ्य आचमन और मधुपर्क आदि विधिसे राजाने उनका पूजन किया १०। १३ व्यासजी उस पूजाको ग्रहण करके प्रसन्न हुये १४ राजा पूजन करके उनके पास बैठ गया और उनसे कुशल पूंछी व्यासजीने भी राजासे कुशल पूंछी १५ उपरान्त सब सदस्योंने आकर व्यासजीका पूजन किया और व्यासजीने भी उनका शिष्टाचार किया इसके पीछे राजा जनमेजय ने हाथ जोड़कर व्यासजी से विनय की १६ कि महाराज ! आपने कुरु और पाण्डवों को आंख से देखा है कृपा करके उनकी कथा कहिये १७ कि वे लोग बड़े बुद्धिमान् थे फिर किसलिये आपस में ऐसा विरुद्ध हुआ कि उनके युद्ध में सब राजाओं का नाश हो गया १८ यह सुनकर व्यासजीने अपने वैशम्पायन शिष्यको पास बुलाकर कहा कि जो कुरु पाण्डवों के भेद होने की कथा तुमने हमसे सुनी है उसको राजा जनमेजय को सुनाओ १९। २१ यह सुनकर वैशम्पायनजी गुरुकी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आज्ञा शिर पर रखकर कुरु पांडव इतिहास वर्णन करने लगे २२ । २३ ॥

इति श्रीभाषामहाभारते आदिपर्वणि षष्टितमोऽध्यायः ६० ॥

इकसठवां अध्याय।

वैशंपायनका जनमेजयसे कुरुपांडवयुद्धका संक्षेप कारण वर्णन करना ॥

सूतजी बोले हे ऋषियो ! वैशम्पायनजीने गुरु और ब्राह्मणों को नमस्कार की और जनमेजय से कहा कि मैं महात्मा व्यासजी के बनाये हुये इतिहास को प्रसन्नतापूर्वक कहताहूं तुम सुनो हम तुमको सुनने के योग्य समझते हैं १। ३ कुरुपांडवों में भेद होने और पृथ्वी की क्षय करनेवाले युद्धकी प्राप्तिका संक्षेप कारण इस तरह पर है ४। ५ कि राजा पांडु के वन में मरजाने के पीछे उनके पुत्र हस्तिनापुर में गये और थोड़ेही काल में सब वेद और धनुर्विद्या पढ़कर बड़े प्रवीण होगये ६ उनकी लक्ष्मी यश देह बल उत्साह जितेन्द्रियता और बल देखकर पुरवासी बड़े प्रसन्न हुये परन्तु धृतराष्ट्रके दुर्योधनादिक पुत्र उनको न देखसके ७ और दुर्योधन कर्ण और शकुनीकी सलाह से कुलंग पक्षीके समान जो सिंहकी दाढ़का भी मांस निकालने के लिये यत्न करता है अनेक उपाय करके पांडवों को दुःख देने लगे ८। ९ पहिले दुर्योधन ने भीमसेन को मारनेके लिये विष दिया भीमसेन उसको पचायगये १० और गंगाके तटपर प्रमाणकोटि घाट पर सोगये दुर्योधनने उस सोते हुये वीरको बँधवाकर गंगाजी में डालदिया ११ वह वीर जागने पर बंधन तोड़कर चला आया और फिर सोरहा तब दुर्योधनने उसको विषधारी सर्पों से कटवाया परन्तु वह न मरा १२। १३ विदुरजी पांडवों की रक्षा इस प्रकार से करते थे जैसे इन्द्र मनुष्यों की करता है १४। १५ उनकी रक्षाके कारण से दुर्योधनादिक सब प्रकार के गुप्त और प्रकट उपाय करके थकगये परन्तु पांडवों को न मारसके १६ इसके पीछे दुर्योधनने शकुनी और कर्णकी सलाहसे धृतराष्ट्र की आज्ञा लेकर पांडवों को वारणावत नगरको भिजवाया १७। १८ और वहां उनको लाक्षागृह में रहने को आज्ञा दी पांडव वहां गये और एक वर्षतक उस गृह में रहे उपरांत विदुरजी के कहने के अनुसार जो पांडवों से हस्तिनापुर से चलते समय उस गृह से बचनेका उपाय बता आये थे उस घर में आग लगाकर पुरोचनको जलाय आप सुरंगकी राह माता सहित निकलगये और दुर्योधन के डरसे अपने को प्रकट न करने के लिये रात्रि में चलादिये राहमें हिडंब नाम

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

राक्षस को मारा १९। २४ और उसकी बहिन हिडंबाको भीमसेन ने ग्रहण किया जिससे घटोत्कच उत्पन्न हुआ वहां से पाण्डव चलकर एक चक्रापुरी नगरमें २५ एक ब्राह्मणके यहां ब्रह्मचारी होकर बसे और भीमसेन ने उस नगर के मनुष्यों के खानेवाले बकनाम राक्षसको मारा और पुरवासियों को सुख दिया इसके पीछे पाण्डव पाञ्चालदेश के राजाकी कृष्णा नाम कन्या का स्वयंवर सुनकर २६। २९ वहां गये और द्रौपदी को पाकर एक वर्षतक वहां रहे ३० उपरान्त जब वे प्रकट होगये तब वहां से हस्तिनापुरको गये हस्तिनापुर जाने पर भीष्मपितामह और धृतराष्ट्र ने उनसे कहा कि तुम खाण्डवप्रस्थ नगर में जाकर बसो और मत्सरता छोड़कर रहो ३१। ३३ पाण्डव उनके कहे अनुसार सब प्रकार के रत्न लेकर अपने सुहृदजनों के साथ खाण्डवप्रस्थ नगर में जाबसे ३४ और अपने शस्त्रके प्रतापसे बहुत राजाओं को वशमें करके रहने लगे ३५। ३६ भीमसेन ने पूर्व अर्जुन ने उत्तर नकुल ने पश्चिम और सहदेव ने दक्षिण दिशाओं के सब राजाओं को जीतकर विजय की ३७।३८ पांचोंपाण्डव सूर्यके समान तेजधारी होने से यह पृथ्वी उस समय में छः सूर्य रखनेवाली हुई ३९ इसके पीछे युधिष्ठिर ने अर्जुन को जो प्राण से भी अधिक प्यारा था किसी कारण से वनको भेजा ४०। ४१ वहां अर्जुन ने बारह वर्षतक वास किया उपरान्त वहां से अर्जुन द्वारका चलेगये ४२ और वहां श्रीकृष्णजी की छोटी बहिन सुभद्राको हरा उसको लेकर ऐसे शोभायमान हुये जैसे लक्ष्मी सहित विष्णुकी शोभा होवे ४३। ४४ इसके अनन्तर अर्जुन ने श्रीकृष्ण के साथ खाण्डव वनको जलाकर अग्निदेवको तृप्त किया ४५ और वासुदेव की सहायता से इन्द्रके वनको भस्म कर दिया ४६ अग्निदेवने प्रसन्न होकर अर्जुन को गाण्डीवधनुष दो तरकश जिसमें बाण कभी खाली न हों और एक रथ जिसकी ध्वजापर हनुमान्‌जी की मूर्त्तिथी दिया ४७ और अर्जुन ने मयनाम दैत्यको अग्नि में जलने से बचालिया था उसने पाण्डवों को एक बहुत सुंदर रत्नजटित सभा बना दी ४८ उस सभा में दुर्योधन ने लोभ किया और पीछे शकुनी के साथ जुआ खेलकर युधिष्ठिर से छलकर सर्वस्व हरलिया और बारह वर्ष का वनवास दिया ४९ पाण्डव बारह वर्ष तक तो वन में रहे तेरहवें वर्ष में विराट् नगर में गुप्त होकर रहे और चौदहवें वर्ष में युधिष्ठिर ने वनसे लौटकर अपना सब धन और राज्य मांगा और वह न मिलने के

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कारण से युद्ध हुआ उस युद्ध में पाण्डवोंने क्षत्रीकुल को मारकर राजा दुर्योधन को मारा ५०। ५१ और सम्पूर्ण राज्य लेलिया हे जनमेजय! इसप्रकार से कुरुपाण्डवों में भेद होकर युद्ध हुआ ५२॥

इति श्रीभाषामहाभारते आदिपर्वणि एकषष्टितमोऽध्यायः ६१॥

बासठवां अध्याय।

जनमेजयका वैशंपायन से महाभारतकथा विस्तारसहित पूंछना और वैशंपायन का महाभारतमाहात्म्य कहना॥

सूतजी बोले हे ऋषियो! इतनी कथा सुनकर राजा जनमेजय वैशंपायन जी से बोले कि महाराज! आपने कुरु और पाण्डवों का वृत्तान्त संक्षेप करके सुनाया परन्तु मैं सम्पूर्ण महाभारतकथा जो व्यासजीने कही है सुनना चाहता हूं १।२ कोई बड़ा कारण मालूम होताहै जिससे पाण्डवों ने भीष्मादिक बड़े २ अवध्य योद्धाओं को मारा और समर्थ होने पर भी बड़े २ क्लेश सहे ३। ५ परन्तु क्रोध न किया भीमसेन को दशहजार हाथी का बलथा तिसपर भी उन्हों ने क्रोध को रोंका ६ और द्रौपदी सब प्रकार से समर्थ थी परन्तु उसने महाक्लेश सहे और उन दुरात्मा कौरवों को अपने तेज से न जलाया ७ युधिष्ठिर जुयेमें चारों भाइयों को हारगये वे चारों महापराक्रमी होनेपर भी चलेगये और कौरवों को न मारा युधिष्ठिर धर्मावतार थे और क्लेश सहने के योग्य न थे परन्तु उन्होंने भी क्लेश सहा इन सब चरित्रों को कारणसहित कहिये और यह भी वर्णन कीजिये कि अर्जुन ने जिनके सारथी श्रीकृष्ण थे किसप्रकार से बहुतसी सेना को यमपुर पहुँचाया और उन सब महारथियोंने किसप्रकार से युद्ध किया और कब कब क्या २ चरित्र किया ८। ११ यह सुनकर वैशंपायनजी बोले कि हे राजा! मैं एक लाख व्यासजी के बनाये हुये महाभारत को जो सब लोकों में पूजितहै कहता हूं आप एकाग्रमन करके सुनिये १२। १४ इस कथा के सुनने और सुनानेवाले दोनों ब्रह्मलोक पाकर देवतों के तुल्य होजाते हैं १५ यह महाभारत वेदोंकी तरह पवित्र और उत्तमहै और सबके मनने के योग्यहै क्योंकि सब ऋषियों ने इसकी प्रशंसा की है १६ और इसके पढ़ने से मनुष्य को अर्थ काम मोक्षसम्बन्धी बुद्धि और ज्ञान प्राप्त होताहै १७ विद्वान् लोग इस महाभारत को दानशील सत्यशील अनास्तिक और अक्षुद्र मनुष्यों को सुनाकर धन पाते हैं १८ इसके सुनने से भ्रूणहत्या का पाप दूर हो जाता है

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

और सब पापों से ऐसे छूटजाता है जैसे राहु से छूटकर चन्द्रमा निर्मल होजाता है इसके सुनने से जय चाहनेवाले की जय होती है १९। २० वह पृथ्वी को जीतकर शत्रुओं को मारता है और सन्तान चाहनेवालों के सन्तान होती है २१ जो राजा और रानी इसको सुनै तो उनके बड़ा वीर पुत्र अथवा बड़ी भाग्यवान् कन्या होती है २२ यह व्यासकृत महाभारत धर्मशास्त्र अर्थशास्त्र और मोक्ष-शास्त्र है २३ इसके सुनने और सुनानेवालों के मन वाचा और कर्म के किये हुये पाप जल्दी दूर होजाते हैं और उनके आज्ञाकारी और सेवा करनेवाले पुत्र होते हैं २४। २५ उनके पास व्याधि नहीं आती है २६ व्यासजीने इस इतिहास को मनुष्यों के पुण्य आयु यश और धन देने को बनाया है यह पांडव आदिक बड़े २ क्षत्रियोंका कीर्त्तन करनेवाला है और सब विद्याओं का देनेवाला है जो कोई इस पुण्य कथाको ब्राह्मणों को सुनाता है उसको परम गति मिलती है जो कुरुवंशकी कथा को पढ़ता है उसको बड़ा उत्तम वंश मिलता है और जो चातुर्मास्यमें इसको सुनता सुनाता है उसके सब पाप दूर होजाते हैं २७। ३१ इस महाभारतके पढ़नेवाले को वेदपारग जानना चाहिये क्योंकि इसमें देव ब्राह्मण ऋषि विष्णु देवी और गौका माहात्म्य वर्णन किया है ३२। ३५ जो कोई इस इतिहास को श्राद्ध में ब्राह्मणों को सुनाता है उसके पितर अक्षय तृप्त होजाते हैं ३६ और जो मनुष्य ज्ञान या अज्ञान से इन्द्रियों के वश होकर पाप करते हैं उनके पाप तुरन्त छूटजाते हैं ३७ इसमें भरतवंशियों के महाजन्म की कथा होने से इसका नाम महाभारत हुआहै इस अर्थ को जानने से मनुष्य के पाप इसप्रकार से भागते हैं जैसे सूर्य के तेजके लगने से शीत चला जाता है ३८। ३९ श्रीव्यासजी ने इस इतिहास को नियम करके तप में स्थित हो तीन वर्ष में बनाया है इससे ब्राह्मणों को भी नियम धरिके कहना और सुनाना चाहिये ४०।४१ ऐसा करने से सब पाप दूर होजाते हैं धर्म की इच्छा रखनेवालों को इसे अवश्य सनना चाहिये क्योंकि इसके सुनने से सिद्धि मिलती है मनुष्य स्वर्गगति से ऐसे भोग नहीं भोगता है जैसे भोग इस महाभारत के पढ़ने से मिलते हैं ४२। ४४ इसके सुनने सुनाने से अश्वमेध और राजसूय यज्ञोंका फल मिलता है यह पवित्र और वेदों के तुल्य महाभारत ऐसे पुण्यकी खानिहै जैसे समुद्र और सुमेरु पर्वत रत्नोंका है ४५। ४७ जो कोई महाभारत की पुस्तक पढ़ने को दान देता है उसे सब पृथ्वीदान करने का फल मिलता है हे राजा!

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यह कथा अद्भुत और पावन है और पुण्य विजय और चारों फलों को देने-वाली है और जो धर्म अर्थ काम और मोक्षका सिद्धान्त इसमें है वही और जगह भी है और जो इसमें नहीं है वह कहीं नहीं है ४८। ५१॥

इति श्रीभाषामहाभारते आदिपर्वणि द्विषष्टितमोऽध्यायः ६२॥

तिरसठवां अध्याय।

व्यासजीकी उत्पत्ति और कुरु पांडवों के युद्धके मुख्य मुख्य राजाओं के जन्मकी संक्षेप कथा॥

वैशंपायन बोले हे राजा! पूर्व कालमें वसुनाम एक पुरुवंशका बड़ा धर्मात्मा राजाथा उसको अहेर खेलनेका बड़ा व्रतथा समय पाकर वह राज्य छोड़कर उग्र तप करने लगा उसके तपको देखकर इन्द्रको शंका हुई और इसी कारणसे इन्द्र सब देवताओं सहित राजाके पास आये और सामवचन कहके उसको तप से हटाया १। ४ पहिले देवता बोले कि राजा! आपका यह धर्म नहीं है आपका तौ पूर्वही क्षत्रीधर्म है जिससे सब जगत् की रक्षा होती है ५ फिर इन्द्र बोले हां राजा! आपको राजनीतिके अनुसार चलना और लोकका पालन करना चाहिये ऐसा करनेसे तुमको पुण्य और सनातन लोक मिलेंगे ६ हम स्वर्ग-वासी हैं और आप पृथ्वी के रहनेवाले हैं अब आप मेरे मित्र होकर इस पृथ्वीपर जो चंदेरी नाम सुन्दरदेश है वहां बसिये यह देश पशुओं का हितकारी पुण्यसारी और धनधान्यकारी है यहांकी पृथ्वी धन रत्न और अनेक गुणों से युक्त है ७।६ और उसमें धर्म और शीलवान् मनुष्य और बड़े संतोषी साधुलोग रहते हैं झूठ कोई नहीं बोलता है सब गुरुभक्त होते हैं पुत्र पितासे जुदे नहीं रहते बैलको धुरीमें नहीं जोतते सब वर्णोंके लोग अपना अपना धर्म करते हैं और मैं तुम को अपना विमान जो देवताओंके योग्य है और स्फटिककी तरह उजला है देता हूं इसपर चढ़कर तुम नररूपधारी देवता की तरह विचरो १०। १४ और यह वैजयन्तीमाला जिसके कमल कभी नहीं मुरझाते लो इसको पहिरकर जब लड़ाई में जाओगे तब यह शस्त्रोंसे तुम्हारी रक्षा करैगी १५ इसे पहिरेहुये जो कोई तुमको देखेगा वह तुमको धन्य कहैगा १६ इन्द्रके ऐसा कहनेसे राजाने चंदेरीदेशमें वास किया और इन्द्र ने उससमय राजाको एक बांसकी लठिया दी १७ और कहा कि यह लठिया साधारण नहीं है हर संवत् के बीतने पर इस लाठीको तुम पृथ्वी में गाड़कर मेरा आवाहन इसमें करना और मणि भूषण और वसनसहित षोड़श उपचार से मेरा पूजन करना दूसरे दिन राजा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

चंदेरीने बड़े उत्सवसे उक्तरीतिसे इन्द्रका पूजन किया उसको देखकर इन्द्रने प्रीतिसे कहा कि राजा चंदेरी की समान जो राजा मेरा पूजन करेगा उसके लक्ष्मी और विजय होगी और उसके देशमें सदा आनन्द रहेगा तब से उत्तम राजाओं के यहां अबतक इन्द्रका पूजन उसी प्रकार से होता है राजा चंदेरी इन्द्र से ऐसा सत्कार पाकर बड़े प्रसन्न हुये और हर संवत् में इन्द्रका पूजन और प्रजा का धर्म से पालन करनेलगे १८।२८ इसके पीछे राजाके पांच पुत्र बड़े पराक्रमी और तेजस्वी हुये एक का नाम बृहद्रथ जो मगध देश में विख्यात है दूसरे का नाम प्रत्यग्रह तीसरे का नाम कुशांब जिसको मणिवाहन भी कहते हैं चौथे का नाम मावेल्ल और पांचवें का नाम यदु था इन पांचोंको राजाने अलग अलग राज्य देकर राजा किया और वे पांचों अपने अपने राज्यमें अपने अपने नामके नगर बसाकर राज्य करने लगे उन पांचोंके पांच अलग अलग वंश हुये २९।३२ राजा वसु इन्द्रके दिये हुये विमानपर आकाश में बैठे रहते और विचरा करते थे और उनके पास गन्धर्व और अप्सरा आती थीं ३३ इसके पीछे राजा का नाम उपरिचर विख्यात हुआ उस राजाके चंदेरी नगरके समीप एक शुक्तिमतीनाम नदी बहती थी उस नदीको कामके वश होकर कोलाहलनाम पर्वतने रोका ३४ राजाने कोप करके उस पर्वत को लात से मारा और उसमें एक विवर होगया कि उसकी राह वह नदी बह निकली ३५ कोलाहलके संगम करनेसे उस नदी के गर्भ रहा और उसके एक पुत्र और एक पुत्री उत्पन्न हुई नदीने उन दोनों को राजाकी प्रीतिके कारण से राजाको निवेदन किया ३६ राजाने लड़के का नाम वसुप्रद रखकर उसको अपना सेनापति किया ३७ और उस गिरिका कन्याको अपनी पत्नी बनाया थोड़े दिनोंमें वह गिरिका ऋतुमती हुई ३८ परन्तु जिस दिन वह गिरिका ऋतुस्नान करने को थी उस दिन पितरों ने राजा से आकर कहा कि आज मृग मारकर श्राद्ध करो राजा उनकी आज्ञा के अनुसार वनको चलागया और गिरिका के रूपको याद करके राजा कामवश हुआ ३९।४० जब वनमें पहुँचा तब देखता क्या है कि वसंतऋतुने उस वनको अत्यन्त शोभायमान कर रक्खा है अनेक तरह के मीठे फल देनेवाले वृक्ष जैसे अशोक, चम्पक, आम, अतिमुक्त, पुन्नाग, बकुल, दिव्यपाटल, पाटल, नारिकेल, चन्दन, अर्जुन आदि लगेहुये हैं चारों ओर भौंरे गूंजरहे हैं और कोकिलाओं के झुण्ड के

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

झुण्ड जहां तहां मधुर घोष कररहे हैं ४१ । ४३ राजा कामाग्नि से आविष्ट उस आनन्द को देखता हुआ दैवयोग से एक अशोक वृक्ष के पास पहुँचा वह अत्यन्त सुगन्धित फूलों के गुच्छों से फूला हुआ था राजा उसके नीचे बैठगया और मैथुन के आनन्द को पानेलगा उपरांत उस वनमें घूमते हुये राजाका वीर्य गिरा ४४ । ४७ राजाने इस बातको जानकर वीर्य को वृक्षके पत्ते में लेलिया ४८ और इस विचारसे कि मेरा वीर्य और मेरी सुकुमार स्त्रीका ऋतुकाल व्यर्थ न हो ४९ अपने विमानपर बैठे हुये श्येननाम पक्षी से कहा कि यह मेरा वीर्य है इसको तू जल्दी लेजाकर मेरी गिरिका नाम स्त्री को दे ५० । ५२ श्येन पक्षी यह सुनकर वहां से वह वीर्य लेकर जल्दी से उड़ा ५३ राह में उसको जाते हुये एक दूसरे श्येनपक्षी ने देखा और उस वीर्ययुक्त पत्ते को मांस समझकर उसके सामने आया ५४ पास पहुँचने पर वे दोनों चोंच से लड़नेलगे और वह वीर्य यमुना में गिरपड़ा ५५ दैवयोग से उस जगह जहां वीर्य गिरा था एक आद्रका नाम अप्सरा जो एक ब्राह्मण के शाप से मछली होगई थी यमुना में फिरती हुई वहां आपहुँची ५६ और उस वीर्य को निगल गई ५७ जब दश महीने हुये तब उस मछली को दैवयोग से धीमरों ने पकड़ा और उसका पेट चीरने पर उसके पेट में से एक कन्या और एक पुत्र उत्पन्न हुये उनको देखकर धीमरों ने आश्चर्य किया और उन दोनों को लेजाकर राजा के अर्पण किया ५८ । ५९ राजा ने उस लड़के को लेलिया वही लड़का धर्मात्मा और सत्यसंकल्प मत्स्यनाम राजा हुआ और वह अप्सरा जो शाप से मछली होगई थी और भगवान् ने उससे यह कहा था कि तू दो मनुष्यों को उत्पन्न करेगी उस समय तू इस शाप से छूटजायगी धीमरों के पेट काटनेपर दिव्यरूप धारण करके आकाश को चलीगई ६० । ६३ और उस कन्या को जो बड़ी गुणवान् और रूपवती थी राजाने धीमरों को देकर कहा कि यह तुम्हारी कन्या हो ६४ । ६५ धीमरों ने उसको लेलिया और अपनी कन्या के समान पाला और उसका नाम सत्यवती रक्खा परंतु उसका जन्म मछली से होनेके कारण उसका थोड़े दिनों तक मत्स्यगंधिनी नाम रहा ६६ थोड़े दिनों में वह कन्या सयानी हुई और पिताकी आज्ञासे पिताकी नावको महात्माओं की सेवाके लिये यमुना में चलाया करती थी एक समय वहां पराशरऋषि तीर्थयात्रा करते हुये आये और उस कन्याके सुंदर स्वरूप और मृदु मुसक्यान को देखकर मोहित हो

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

गये ६७। ६८ और जब नाव में बैठकर बीचधारा में पहुँचे तब कामवश होकर बोले कि हे कल्याणी ! तू मेरे साथ रमण कर वह कन्या यह सुनकर बोली कि महाराज ! वार पार दोनों ओर ऋषिगण खड़ेहुये हैं उनके देखते हुये मेरा आपका समागम क्योंकर होवे यह सुनकर पराशरजी ने ऐसा निहार प्रकट किया कि चारोंओर महाअन्धकार छागया ६९। ७१ सत्यवती उस अन्धकार को देखकर चकित हुई और उनको बड़ा तपस्वी समझकर लज्जित होकर ७२ बोली कि महाराज मैं अभी कन्याहूं और पिताकी आज्ञा के अनुसार चलती हूं आपके साथ संगम करने से मेरा कन्याभाव मिटिजायगा और कन्याभाव मिटने पर क्योंकर घर जाऊँगी और जीतीरहूंगी ७३। ७४ इस बातको आप विचार करलीजिये फिर जो चाहे सो कीजिये यह सुनकर मुनीश्वर प्रीतिपूर्वक बोले कि तू जो मैं कहूं सो कर तेरा कन्याभाव न जायगा और जो कुछ तुझे वर मांगना है सो मांग ७५। ७६ मेरा कहा कभी झूंठ नहीं होता सत्यवती ने कहा कि महाराज मेरी देह सुगन्धित होजाय ७७ मुनीश्वर ने उसको मनोवांछित वर दिया और वर पाकर उसकी देही अत्यन्त सुगन्धित होगई और उसका नाम गंधवती पृथ्वी पर विख्यात हुआ उपरांत जब मनुष्यों ने उसकी देहकी गंधको एक योजन की दूरीसे सूंघा तबसे उसका नाम योजनगंधा विख्यात हुआ ७८। ८० इसके उपरान्त पराशरऋषिने उस कन्यासे उसी जगह यमुना के द्वीप में भोग किया और उस कन्याने तुरन्त गर्भको धारण करके उसी यमुना के द्वीपमें व्यासजी को उत्पन्न किया व्यासजी उत्पन्न होते ही वहां से तप करने को चलेगये और मातासे यह कहगये कि जिससमय तू याद करैगी मैं आजाऊँगा ८१। ८३ व्यासजी का नाम द्वैपायन मुनि होने का यह कारण है कि वह यमुना के द्वीप अर्थात् टापू में उत्पन्न हुये और इसके पीछे जब उन्होंने ब्राह्मणों पर अनुग्रह करके मनुष्यों की आयु और शक्ति को और युगों के अन्त में धर्म की हानि देखकर वेदका विस्तार और विभाग किया तबसे उनका नाम व्यास विख्यात हुआ ८४। ८५ उन चारों वेदोंको और इस पांचवें महाभारत वेदको व्यासजी ने सुमंतु, जैमिन, पैल और वैशम्पायन आदि शिष्यों को और अपने पुत्र शुकदेव को पढ़ाया और वैशम्पायन के द्वारा यह पांचवां महाभारत वेद संसार में प्रकट हुआ ८६। ८७ इतनी कथा सुनाकर सूतजी बोले हे ऋषियो ! इसके उपरान्त बड़े यशस्वी तेजस्वी और

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पराक्रमी भीष्मजी गङ्गाके गर्भ से अष्टवसुओंके अंशसे राजा शांतनुके पुत्र उत्पन्न हुये ८८ और धर्मराज शूद्रयोनि में अवतार लेकर विदुरके नामसे प्रकट हुये शूद्रयोनिमें जन्म लेने का कारण यह था कि एक अणीमाण्डव्य नाम बड़े यशस्वी ब्रह्मवेत्ता और वेदपाठी ऋषि थे उनको चोरी का झूंठा पाप लगाकर शूली दीगई जब यमराज के पास पहुँचे तब ऋषिने कहा कि हमने कोई पाप संसारमें नहीं किया था हां बालापन में एक समय एक टीहरी को तिनके से छेदाथा सो वह थोड़ासा पाप क्या हमारी महाउग्र तपस्या से भी नाश नहीं हुआ ब्राह्मणका वध करना पीड़ा देना और अपमान करना सब संसारी प्राणियों के वध से अधिक है इस कारण से हम तुमको शाप देते हैं कि तुम पृथ्वीपर जाकर शूद्रयोनि में जन्म लो ८९। ९३ इसके पीछे गवल्गणसे मुनियों के समान सञ्जय सूत उत्पन्न हुये ९४ और कुंतीके गर्भ से कुमारअवस्था में सूर्य के वीर्य से कुण्डल और कवच धारण किये हुये कर्ण प्रकट हुआ ९५ इसके उपरान्त श्रीविष्णुभगवान् जो अनादि, नाशरहित, जगत्का कर्ता, प्रभु, अप्रकट, अविनाशी, ब्रह्म, प्रधान, त्रिगुणात्मक, आत्मा, अव्यय, प्रकृति, उत्पत्ति का निमित्त, प्रभु, पुरुष, विश्वकर्मा, तत्त्वयोग, ध्रुवाक्षर अर्थात् प्रणवनाम ब्रह्माक्षरके अक्षर, अनन्त, अचल, देव, हंस अर्थात् संन्यास आश्रमरूप, नारायणप्रभु, धातार, अज, अव्यक्त, अव्यय, कैवल्य, निर्गुण, विश्वरूप, अनादि, अज, अव्यय, पुरुष, समर्थ, कर्ता और सब प्राणियों के पितामह हैं उन्होंने धर्म की रक्षा और संसारी जीवोंका कल्याण करने के लिये वृष्णिवंश के क्षत्रियों में देवकी और वसुदेव के यहां अवतार लिया ९६। १०० फिर सत्यक के वंश में सात्यकी और हृदिकके वंश में कृतवर्मा बड़े पराक्रमी और अस्त्र और शस्त्रविद्यामें अतिनिपुण उत्पन्न हुये और भरद्वाजऋषिका वीर्य पहाड़की खोह में गिरने से द्रोणाचार्य और गौतमऋषिका वीर्य शरस्तंबपर गिरने से अश्वत्थामा की माता और कृपाचार्य प्रकट हुये और द्रोणाचार्य के अश्वत्थामा बड़ा वीर पुत्र उत्पन्न हुआ १०१।१०४ इनके पीछे होमकी अग्निसे अग्निका सा तेज रखनेवाला द्रोणाचार्यके मारने के लिये धनुषबाण लिये हुये धृष्टद्युम्न और अत्यन्त सुन्दरी कृष्णा प्रकट हुई १०५। १०६ फिर प्रह्लादके शिष्य नग्नजित् और सुबल उत्पन्न हुये १०७ इनकी संतान दैवके कोप से धर्मनाशक हुई और गांधार देशके राजा सुबलके शकुनिनाम पुत्र और एक गंधारीनाम

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कन्या उत्पन्न हुई उसका विवाह धृतराष्ट्रसे हुआ और उसके दुर्योधनादिक पुत्र हुये और फिर व्यासजी से विचित्रवीर्य की स्त्रीके गर्भ से धृतराष्ट्र और पाण्डु और शूद्रयोनि से विदुरजी उत्पन्न हुए विदुरजी धर्मवान् और निष्पापथे १०८।११० इसके उपरान्त राजा पाण्डुके दो स्त्रियों से पांचपुत्र देवताओंके तुल्य पराक्रमी उत्पन्न हुए एकका नाम युधिष्ठिर उससे छोटे दूसरे का नाम भीमसेन तीसरे का अर्जुन चौथे का नकुल और पांचवें का नाम सहदेव था इनमें से पहिले तीनों क्रम से धर्मराज वायु और इन्द्र से और पिछले दोनों अश्विनीकुमार से उत्पन्न हुए १११।११३ और धृतराष्ट्रके भी सौ पुत्र दुर्योधनादिक और युयुत्सु और कर्ण उत्पन्न हुए ११४ इनमें से ११ पुत्र जो महारथी थे उनके नाम ये हैं कर्ण, दुश्शासन, दुःसह, दुर्मर्षण, विकर्ण, चित्रसेन, विविंशति, जय, सत्यव्रत, कुरुमित्र और वेश्यापुत्र युयुत्सु ११५। ११६ इनके पीछे श्रीकृष्ण का भानजा और पाण्डवों का पोता अभिमन्यु सुभद्रा के गर्भ से उत्पन्न हुआ ११७और द्रौपदीकेभी पांचों पांडवोंसे पांचपुत्र अत्यन्त स्वरूपवान् उत्पन्न हुये ११८ इनमें से युधिष्ठिर के पुत्रका नाम प्रतिविन्ध्य भीमसेनके पुत्रका नाम सुतसोम अर्जुन के पुत्र का नाम श्रुतकीर्ति नकुलके पुत्र का नाम शतानीक और सहदेवके पुत्रका नाम श्रुतसेनथा और उसी समयमें हिडम्बा राक्षसी के भीमसेन से घटोत्कचनामी पुत्र उत्पन्न हुआ ११९। १२० और राजा द्रुपदके शिखण्डी कन्या उत्पन्न हुई और उसको स्थूणनाम यक्षने अपना पुरुषत्व देकर पुरुष किया १२१ इतनी कथा सुनाकर सूतजी बोले हे ऋषियो! कुरु और पांडवों के युद्धमें कई लाख राजा इकट्ठे हुयेथे उनके नाम वर्षोंमेंभी मैं नहीं कहसक्ता हूं परन्तु जो जो उनमें मुख्यमुख्यथे उनको मैंने ऊपर वर्णन किया १२२।१२३॥

इति श्रीभाषामहाभारते आदिपर्वणि त्रिषष्टितमोऽध्यायः ६३ ॥

चौंसठवां अध्याय।

असुरोंका पृथ्वीपर जन्म लेना व पृथ्वीका उनके अधर्म से दुःख पाकर ब्रह्माजीके पास जाना और ब्रह्माजीका सब देवताओं को पृथ्वीका भार दूर करनेको पृथ्वीपर जन्म लेनेकी आज्ञादेना॥

सूतजीने कहा हे ऋषियो! राजा जनमेजय ऊपर वर्णन कीहुई कथा सुनकर वैशम्पायनजी से बोला कि महाराज मैंने इनलोगोंका वृत्तान्त तो सुना परन्तु और बहुतसे महारथी राजालोग जिन्होंने देवताओंके सदृश पृथ्वीपर जन्म लिया उनकी कथा भी सुनना चाहता हूं कृपा करके उनकी कथा भी सम्मुभाय

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कर कहिये १। २ यह सुनकर वैशम्पायनजी बोले कि हे राजन्! यह देवताओं की गुप्त बात है मैं ब्रह्माजीको नमस्कार करके तुम्हारे सामने वर्णन करताहूं ३ जब जमदग्निके पुत्र परशुरामजी महाराज इक्कीस बेर पृथ्वीको क्षत्रियोंसे रहित करके महेन्द्रपर्वतपर सौम्य स्वभाव धारण करके तपस्या करनेको चले गये ४ तब सब क्षत्रियोंकी स्त्रियां ऋषियों के पास गईं ५ और कहा कि महाराज ऐसा कीजिये कि जिसमें क्षत्रियोंका वंश पृथ्वीपर स्थिर रहे उन महातपस्वी ऋषियों ने उनकी यह बात सुनकर ऋतुस्नान करनेपर उनके साथ भोग कर करके वीर्य दान दिया परन्तु किसी ने उनके साथ कामवश होकर भोग नहीं किया उन क्षत्रियों की हजारों स्त्रियों ने गर्भ धारण किया और उनसे हजारों बड़े २ पराक्रमी क्षत्रीपुत्र और कन्या उत्पन्न हुई और थोड़ेही कालमें धर्म करने से वह क्षत्रीलोग ऐसे बढ़े कि सम्पूर्ण पृथ्वी वन और पहाड़ोंमें समुद्रतक भरगये और उनके शरीर नीरोगी और आयु लाखवर्ष की होती थी क्योंकि वह लोग धर्म पर चलते थे और स्त्रीके साथ संगम ऋतुस्नान करने पर करतेथे कामवश होकर कभी कोई स्त्रीके साथ भोग नहीं करता था ६। १३ राजालोग पृथ्वीका पालन धर्मसे करते थे दण्डयोग्य मनुष्यों को धर्मसे दण्ड देते थे ऐसा करनेसे ब्राह्मण आदि चारों वर्ण उनके राज्य में आनन्दपूर्वक रहते थे १४। १५ राजालोगोंके इसप्रकार धर्मके साथ राज्य करने से इन्द्र सब देशोंमें अच्छीतरह वर्षा करते थे और उससे प्रजाका पालन होताथा १६ उस समय में कोई मनुष्य बालअवस्था में नहीं मरताथा और न कोई स्त्री छोटी उमरमें बच्चा जनती थी पुरुषलोग स्त्रियों के साथ संगम युवावस्था के प्राप्त होने पर करते थे १७ क्षत्रीलोग बड़े २ यज्ञ जिनमें बड़ी २ दक्षिणा दीजाती हैं करते थे ब्राह्मण लोग विना धन लिये वेद पढ़ाते थे और वेदों का उच्चारण शूद्रों के सामने नहीं करते थे १८। २० बनिये खेती बैलों से करते थे परन्तु आप बैलोंको धुरीमें नहीं जोतते थे जो बैल दुबले होते थे उनसे काम नहीं लेते थे और उनका पालन करते थे और गायों का दूध तबतक नहीं दुहते थे जबतक बछड़े का आधार केवल दूध रहता था और वणिक् लोग कभी कपट के बांटों से सौदा नहीं तौलते थे २१। २२ सब काल में अपनी २ ऋतुके फल और फूल अच्छीतरह होतेथे गौ और स्त्री अपने २ कालपर बच्चा जनती थीं इसप्रकार से सब पृथ्वीमें सुख और आनन्द रहता था चारों वर्ण अपने २ धर्मों को अच्छीतरह करते थे २३। २५

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इसप्रकारसे जब पृथ्वीमें सत्ययुग व्यापरहाथा उस समय पृथ्वी में उन दैत्योंने आकर जन्म लिया जो देवताओंसे युद्धमें हारने के कारणसे स्वर्ग से निकाल दियेगयेथे उन दैत्यों ने आकर मनुष्य घोड़ा हाथी गाय भैंस ऊंट गधा और मृग आदि सब योनियों में जन्म लिया और उनके पीछे दिति और दनु के पुत्र दैत्योंने राजा लोगों में जन्म लिया थोड़े दिनोंमें ये दैत्य पृथ्वीपर जन्म लेलेकर समुद्रतक पृथ्वीपर फैलगये और अधर्मका आचरण करनेलगे उन पराक्रमी घमण्डी मदमत्त और विवेकहीन असुरों से ब्राह्मण आदि चारों वर्णों को बड़ा दुःख हुआ वहलोग जीवों को मारने और ऋषियों को दुःख देनेलगे जब ऐसे २ अनेक अधर्म पृथ्वीपर होनेलगे तब पृथ्वी उन दैत्योंके बोझको न सह सकी और सब देवताओंके पितामह ब्रह्माजी के पास गई २६। ३६ और उनकी सभा में जहां उत्तम ब्राह्मण बड़े २ ऋषि संपूर्ण देवता गंधर्व और अप्सरा बैठीथीं जाकर ब्रह्माजी की वंदना की और लोकपालों सहित शरणागत होकर अपनी व्यवस्था सुनानेलगीं ४०। ४२ परन्तु ब्रह्माजी जो संपूर्ण जगत् के रचनेवाले स्वयम्भू प्रधानात्मा, ईश अर्थात् विष्णु, शम्भु और प्रजापति हैं पृथ्वीकी सब व्यवस्था को पहिलेही जानगये और उससे बोले ४३। ४५ कि हे पृथ्वी! मैं जानता हूं जिस कारण से तू यहां आई है अब तू जा और मैं तेरे कामके करने के उपाय में देवताओं को नियुक्त करता हूं ४६ ऐसा कहकर ब्रह्माजी ने पृथ्वी को बिदा किया और सब देवताओं को आज्ञा दी ४७ कि तुमलोग पृथ्वीका भार दूर करने को अपने अपने अंश से मृत्युलोक में जन्म लो ४८ और गंधर्व अप्सराओं कोभी बुलाकर यही आज्ञा दी ४६ देवताआदि सबोंने ब्रह्माजीकी आज्ञा को शिरपर रखलिया और ५० वहां से सब के सब देवता श्रीविष्णुभगवान्के पास जो शंख चक्र गदा पद्म और पीतांबर के धारण करनेवाले, तीक्ष्ण प्रभावाले, पद्मनाथ, असुरनाशक, बड़ी चौड़ी छातीपर दृष्टि रखनेवाले, प्रजापतिके पति, देव, सुरनाथ, महाबली, श्रीवत्सांक, हृषीकेश और सब देवताओं से पूजित हैं वैकुंठधाम में जाकर विनय की कि आप भी पृथ्वी का भार दूर करने को जन्म लीजिये विष्णुभगवान् ने कहा अच्छा ऐसा ही करेंगे ५१। ५४॥

इति श्रीभाषामहाभारते आदिपर्वणि चतुःषष्टितमोऽध्यायः ६४॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पैंसठवां अध्याय।

सब सुर असुर दैत्य दानव गंधर्व और अप्सराओं के अंशावतारणकी कथा ॥

वैशंपायन बोले हे राजा जनमेजय! इन्द्रआदि सब देवताओं का विष्णु-भगवान् के साथ मंत्र होने के पीछे इन्द्रने सब देवता और गंधर्वआदिको मृत्यु-लोक में जन्म लेनेकी आज्ञा दी और आज्ञा देकर वहांसे चलेगये १।२ इसके पीछे सब देवताओंने अपनी अपनी रुचिके अनुसार स्वर्ग से पृथ्वी में जाकर ब्रह्मऋषि और राजऋषियोंके वंश में अवतार लिया और सब दैत्य दानव और राक्षसोंको मारडाला और दैत्यलोग उन प्रबल देवोंको बाल अवस्थामें भी न मारसके ३।६ यह सुनकर राजा जनमेजयने कहा कि महाराज मैं सब सुर असुर दैत्य दानव गंधर्व अप्सरा और मनुष्योंके अवतारकी कथा विस्तारपूर्वक सुना चाहता हूं आप कृपाकरके उनके संभवकी कथा वर्णन कीजिये ७।८ यह सुनकर वैशम्पायन बोले हे राजन्! मैं ब्रह्माजी को नमस्कार करके सब देव-ताओं के सम्भव की कथा कहता हूं सुनो ९ पहले ब्रह्माजी के ६ मानसी पुत्र उत्पन्न हुये एक का नाम मरीच दूसरा अत्रि तीसरा अंगिरस चौथा पुलस्त्य पांचवां पुलह और छठा क्रतु था फिर मरीचके कश्यपजी पुत्र हुये और कश्यप जीसे यह सब सृष्टि हुई और दक्षके १३ कन्या उत्पन्न हुई उनके नाम ये हैं १०।११ अदिति १, दिति २, दनु ३, काला ४, दनायु ५, सिंहिका ६, क्रोधा ७, प्राधा ८, विश्वा ९, विनता १०, कपिला ११, मुनि १२, कद्रू १३ इन सबका विवाह कश्यपजीसे हुआ और उनके पुत्र और पौत्र अनगिनती हुये १२।१३ अदिति के बारह सूर्य जो भुवनेश्वर कहलाते हैं उत्पन्न हुये उनके नाम येहैं १४ धाता १, मित्र २, अर्यमा ३, शक्र ४, वरुण ५, अंश ६, भग ७, विवस्वान ८, पूषा ९, सविता १०,। १५ त्वष्टा ११, विष्णु १२ इन सबमें छोटे आदित्य गुणमें सबसे अधिक हैं १६ और दिति के एक पुत्र हि-रण्यकशिपु नामी बड़ा प्रतापी हुआ और उसके पांच पुत्र हुये पहला प्रह्लाद दूसरा संह्लाद तीसरा अनुह्लाद चौथा शिवि और पांचवां वाष्कल था १७।१८ प्रह्लादके तीन पुत्र हुये एकका नाम विरोचन दूसरेका नाम कुंभ और तीसरेका नाम निकुम्भ था १९ विरोचन के बड़ा प्रतापी बलिनाम पुत्र हुआ और बलिके सुरबाण नाम पुत्र हुआ वह शिवजीका बड़ा भक्त था जिसका नाम महाकाल भी विख्यातहै और दनुके ४० पुत्र हुये उनमें से जो विख्यात २ हैं उनके नाम

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ये हैं विप्रचित्त, शंबर, नमुचि, पुलोमा, असिलोमा, केशी, दुर्जय, दानव, अयःशिरा, अश्वशिरा, अश्वशंकु, क्रतुमान, स्वर्भानु, अश्व, अश्वपति, वृषपर्वा, अजक, अश्वग्रीव, सूक्ष्म, तुहुण्ड, एकपाद, एकचक्र, विरूपाक्ष, महोदर, निचंद्र, कुपट, कपट, शरभ, शलभ, सूर्य और चन्द्रमा २०। २६ जिन सूर्य और चन्द्रमाकी गिनती देवताओं में है वे सूर्य और चन्द्रमा दूसरे हैं २७ दनु के पुत्रों में जो पुत्र वंशकर्ता हुये उनके नाम ये हैं एकाक्ष, मृतपवीर, प्रलम्ब, नरक, वातापी, शत्रुतपन, महाअसुर, शठनाम, गविष्ठ, वनायु, दीर्घजिह्व, दानव और इन दशोंके पुत्र पौत्र असंख्य हुये २८। ३० और सिंहिका के ४ पुत्र हुये पहला सूर्य और चन्द्रमा को मर्दन करनेवाला राहु, दूसरा सुचन्द्र, तीसरा चन्द्रहन्तार और चौथा चन्द्रप्रमर्दन था ३१ और क्रोधा के क्रूर स्वभाव रखनेवाले अनगिनती पुत्र पौत्र उत्पन्न हुये ३२ और इनके पीछे दनायु के चार पुत्र विक्षर, बलवीर और वृत्रनामी सब दानवों में उत्तम हुये ३३ इनके पीछे कालाके चार पुत्र विनाशन, क्रोध, क्रोधहंता और क्रोधशत्रुनामी बड़े बलवान् विख्यात और काल के तुल्य प्रहार के करनेवाले प्रकट हुये ३४। ३५ इन असुरों के ऋषिपुत्र शुक्रजी उपाध्याय हुये और शुक्रके चार पुत्र त्वष्टा, अधर, अत्रिनामी और दो और जो सूर्यके समान तेजस्वी और ब्रह्मलोकमें रहते थे असुरों को यज्ञ करानेवाले हुये ३६। ३७ इतनी कथा सुनाकर वैशम्पायनजी बोले हे राजन्! यह असुरोंके वंशकी कथा जो हमने पुराणोंमें सुनी थी आपके सामने कही परन्तु इन सबकी संतान का हाल नहीं कहसक्ताहूं क्योंकि उनकी गिनती नहीं होसक्ती ३८। ३९ विनता के पुत्रों के नाम ये हैं तार्क्ष्य, अरिष्टनेमि, गरुड़, अरुण, अरुणि और वरुणि ४० और शेष, वासुकि, तक्षक, कूर्म और कुलिक कद्रूके पुत्रहैं ४१ इनके पीछे मुनि देवी के १६ देव गंधर्व उत्पन्न हुये उनके नाम ये हैं भीमसेन, उग्रसेन, सुपर्ण, वरुण, गोपति, धृतराष्ट्र, सूर्यवर्चा, सत्यवाक्, अर्कपर्ण, प्रयुत, भीम, चित्ररथ, शालिशिरा, पर्यन्य, कलि और नारद ४२। ४४ इसके उपरान्त प्राधाके ७ पुत्री और १० पुत्र उत्पन्न हुये उनके नाम ये हैं पुत्रीनामानि॥ अनवद्या, मनुवंशा, असुरा, मार्गणप्रिया, अरूपा, सुभगा और भासी पुत्रनामानि॥ सिद्ध, पूर्ण, वर्हि, पूर्णायु, ब्रह्मचारी, रतिगुण, सुपर्ण, विश्वावसु, भानु और सुचन्द्र ४५। ४७ प्राधा के ये पुत्र देवगंधर्व कहलाते हैं और इनके उत्पन्न होने के पीछे प्राधाके देवऋषियों से अप्स-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

राओंके वंश उत्पन्नहुये उनके नाम हम आगे वर्णन करते हैं ४८। ४६ अलंबुषा, मिश्रकेशी, विद्युत्पर्णा, तिलोत्तमा, अरुणा, रक्षिता, रम्भा, मनोरमा, केशिनी, सुबाहु, सुरता, सुरजा और सुप्रिया और गंधर्वों में अतिबाहु, हाहा, हूहू और तुंबरु बड़े नामी हुये ५०। ५१ इतनी कथा सुनाकर वैशंपायनजी बोले हे जनमेजय! मैंने तुमको अमृत ब्राह्मण गो गंधर्व अप्सरा और कपिला की संतान की कथा पुराणों के अनुसार सुनाई और सम्पूर्ण प्राणी, गंधर्व, अप्सरा, सर्प, सुपर्ण, रुद्र, मरुद्गण, गो ब्राह्मण और पवित्र पुरुषों के उत्पन्न होने का हाल भी वर्णन किया यह सब कथा आयु के बढ़ानेवाली और धन और सुख के देनेवाली और सदा सुनने के योग्य है जो मनुष्य इस कथा को ब्राह्मण और देवता के समीप पढ़ेगा उसको लक्ष्मी यश संतान और शुभ गति प्राप्त होगी ५२। ५६॥

इति श्रीभाषामहाभारते आदिपर्वणि पञ्चषष्टितमोऽध्यायः ६५॥

छाछठवां अध्याय।

देवता असुर धर्म अधर्म और पशु पक्षियों के उत्पन्न होनेकी कथा॥

वैशंपायन बोले हे राजा जनमेजय! मरीच, अंगिरा, अत्रि, पुलस्त्य, पुलह और क्रतु ये ६ पुत्र ब्रह्माजी के और मृगव्याध, सर्पनिर्ऋति, अजैकपाद, अहिर्बुध्न्य, पिनाकी, दहन, ईश्वर, कपाली, स्थाणु और भग यह ११ पुत्र शिव जी के उत्पन्न हुये १। ४ इसके पीछे बृहस्पति, उतथ्य और संवर्त ये तीन पुत्र बड़े व्रतधारी अङ्गिरा के और मनुज, व्याघ्र, वानर, राक्षस, किन्नर और यक्ष पुलस्त्यजी के और शलभसिंह, किंपुरुष, व्याघ्र, ईहा और मृग पुलहजी के और सत्यव्रतधारी बालखिल्य ऋषि जो सूर्य के साथ फिरा करते हैं क्रतुजी के और वेदके जाननेवाले बड़े २ महाऋषि अत्रिजी के उत्पन्न हुये ५। ६ और उसीसमय में ब्रह्माजी के दहिने अंगूठे से दक्षऋषि और बायें अंगूठेसे दक्ष की भार्या उत्पन्न हुये और उन दोनों के ५० कन्या हुई १०। ११ दक्ष उन सब सुन्दरी कन्याओं को पुत्रभाव से रखते थे और सयानी होने पर दक्षने १० कन्याओं का विवाह धर्मराज से २७ का चन्द्रमा से और १३ का कश्यपजी से वेदविधि से करदिया १२। १३ जो कन्या दक्ष ने धर्मराज को दी उनके नाम ये हैं कीर्ति, लक्ष्मी, धृति, मेधा, पुष्टि, श्रद्धा, क्रिया १४ बुद्धि, लज्जा और मति ब्रह्माजी ने दशों धर्म के द्वार इनहीं को कहा है १५ और जो २७ कन्या

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

चन्द्रमा को दीथीं वे लोकयात्रा में समय के क्रमसे नक्षत्रों में फिरा करती हैं अर्थात् अश्विनी भरणी रोहिणी आदि जो २७ नक्षत्र कहलाते हैं वह दक्ष की वही सत्ताईसों कन्या हैं जो चन्द्रमा को दीथीं १६ और पुत्र दक्षप्रजापति के जो आठ पुत्र हुये वेही अष्टवसु कहलाते हैं और उनके नाम ये हैं १७ धर, ध्रुव, सोम, आप, अनिल, अनल, प्रत्यूष और प्रभास १८ इनमें से धर और ध्रुव धूमा से चन्द्रमा मनस्वी से श्वसन श्वासा से अहरता से हुताशन शांडिली से और प्रत्यूष और प्रभास प्रभाता से उत्पन्न हुये १९। २० इसके पीछे धर के द्रवण और हुतहव्य और ध्रुव के काल और चन्द्रमा के वर्चा और मनोहरा के शिरस प्राण और रमण और अह के ज्योति, शम, शांत और मुनि और अग्नि के मानकुमारजी जो ६ कृत्तिकाओं से उत्पन्न होने के कारण से कार्त्तिकेयनाम से विख्यात हुये और अनिल के शिवा स्त्री से मनोजव और अविज्ञात गति और प्रत्यूष के देवल और प्रभास के बृहस्पति की बहिन से जो ब्रह्मवादिनी और योगयुक्त थी विश्वकर्माजी पुत्र उत्पन्न हुये इनके अनन्तर चन्द्रमा के पुत्र वर्चा के वर्चस्वी पुत्र और कार्त्तिकेयजी के शाख विशाख और नैगमेयनामी पुत्र और प्रत्यूष के पुत्र देवल के क्षमावान् और मनीषीनाम पुत्र उत्पन्न हुये और प्रभास के विश्वकर्माजी जो पत्थर बनाने की विद्या में बड़े निपुण हुये और हजारों ऐसे ऐसे पत्थर बनाये जिनको जानकर मनुष्य अपनी जीविका करते हैं और विश्वकर्मा का आराधन करते हैं उन्होंने देवताओंके लिये उत्तम उत्तम विमान बनाये २१। ३० इसके अनन्तर ब्रह्माजी के दहिने स्तन को फोड़कर नररूपधारी धर्म उत्पन्न हुये ३१ उनके शम, काम और हर्षनामी तीन पुत्र बड़े मनोहर और तेजस्वी हुये ३२ और इन तीनों का विवाह प्राप्ति और रति और नन्दानाम स्त्रियों से हुआ ३३ और मरीच के पुत्र कश्यपजी कश्यप के सुर और असुर उत्पन्न हुये जो कि सृष्टि के कारण कहलाते हैं ३४ इसके पीछे सूर्य के तुष्ट्री नाम स्त्री से दोनों अश्विनीकुमार आकाश में उत्पन्न हुये ३५ और अदिति के इन्द्रादिक बारह पुत्र हैं उनमें सबसे छोटे विष्णु हैं ३६ इतनी कथा सुनाकर वैशम्पायन बोले हे राजन्! अब मैं तुमसे देवताओं के गण और पक्षों के नाम कहता हूं वह ये हैं रुद्रगण, मरुद्गण, साध्यगण, भार्गवपक्ष, वसुपक्ष, विश्वेदेवा विनता के पुत्र गरुड़ और अरुण बृहस्पति जो आदित्यों में गिने जाते हैं दोनों अश्विनीकुमार गुह्यक

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

और सब ओषधी और पशु ३७। ४० मनुष्य इनका कीर्त्तन करने से सब पापों से छूटजाता है और भृगुजी ब्रह्माके हृदय को फोरकर निकले ४१ उनके कविनामी पुत्र और कविके शुक्रनामी पुत्र उत्पन्न हुआ यह शुक्र वर्षा अवर्षा भय और अभयसूचक कार्यों के लिये ब्रह्माजी से नियुक्त होने के कारण से चौदहों भुवनों में घूमते हैं और यही शुक्र योगसिद्धि से दो रूप धरकर सुर और असुरों के गुरु हैं ४२। ४३ इसके पीछे भृगुजी के च्यवन नाम बड़ा तपस्वी और धर्मात्मा पुत्र उत्पन्न हुआ जिन्होंने बड़े क्रोधित होके गर्भसे गिरकर अपनी माता को असुर से छुटाया ४४। ४५ इसके अनन्तर भृगुजीका विवाह मनुकी कन्यासे हुआ और उससे भृगुजीके और्वऋषि बड़े तेजस्वी और पराक्रमी ऊरुको तोड़कर उत्पन्न हुये ४६। ४७ उनके पुत्र ऋचीक हुये और ऋचीक के जमदग्नि और जमदग्नि के चार पुत्र उत्पन्न हुये उन चारों पुत्रों में सबसे छोटे परशुरामजी बड़े गुणवान् सब शास्त्रों में निपुण और सब पृथ्वी के क्षत्रियों को नाश करनेवाले और वशमें रखनेवाले हुये और और्वऋषि के सौ पुत्र थे उनमें जमदग्नि सबसे बड़ेथे और उन पुत्रों की अनगिनती सन्तान पृथ्वी पर फैली ४८। ४९ इसके पीछे ब्रह्माजी के दो पुत्र धाता और विधाता नाम से उत्पन्न हुये ये दोनों मनुजी के संग रहते हैं ५० उनकी बहिन कमलमें रहनेवाली लक्ष्मी थी उसके आकाशमें चलनेवाले मानसी पुत्र उत्पन्नहुये ५१ इसके उपरांत वरुण के बड़ी स्त्री से एक बल नामी पुत्र और सुरानामी पुत्री जिसे देखकर देवता परमानन्द पाते हैं उत्पन्न हुये ५२ और अन्न न होने के कारण से जब प्रजा क्षुधित हुई और प्रबल निबल को भक्षण करने लगी तब सब जीवों का नाश करनेवाला अधर्म उत्पन्न हुआ ५३ उसका विवाह निर्ऋति नाम स्त्री से हुआ और उसके तीन पुत्र भय, महाभय और मृत्युनामी राक्षस सदैव पापकर्म में रत रहनेवाले उत्पन्न हुये मृत्यु के कोई स्त्री अथवा पुत्र नहीं हुआ वह आपही अन्तकरूप रहा ५४। ५५ इसके पीछे ताम्रादेवी के पांच पुत्री काकी, श्येनी, भासी, धृतराष्ट्री और शुकीनाम से उत्पन्न हुई ५६ काकी के उल्लूनाम के पक्षी श्येनी के श्येननाम के पक्षी भासी के भास और गृध्रनाम के पक्षी धृतराष्ट्री के सब तरह के हंस और चक्रवाकनाम पक्षी और शुकी के शुक अर्थात् तोता नाम के पक्षी उत्पन्न हुये ५७। ५९ इसके अनन्तर दक्षकी क्रोधा नाम पुत्री के मृगी, मृगमन्दा, हरी, भद्रमना, मातंगी, शार्दूली, श्वेता, सुरभि और

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सुरसानाम नव कन्या उत्पन्न हुई ६० । ६१ मृगीसे सब मृग और मृगमन्दा से रीछ और सृमरभद्रमना से देवनाग ऐरावत हाथी हरीसे वानर और लंगूर शार्दूली से सिंह व्याघ्र और द्वीपी मातंगी से हाथी श्वेतासे दिग्गज उत्पन्न हुये और सुरभि के चार पुत्री रोहिणी, गंधर्वी, विमला और अनला उत्पन्न हुई और रोहिणी के गौ बैल गंधर्वी के घोड़े विमलाके खजूर नारिकेल आदि सात प्रकार के पिंडवृक्ष और अनला के शुकीनाम पुत्री हुई ६२ । ६८ और सुरसा के कंकनामी पुत्र हुआ ६९ और अरुण की स्त्री श्येनीके महाबली संपाति और जटायू उत्पन्न हुये इसके पीछे सुरसा से नाग कद्रूसे सर्प और विनता से गरुड़ और अरुण उत्पन्न हुये हे राजन् ! यह सब सृष्टिका वृत्तांत हमने वर्णन किया जो कोई पापी मनुष्य इसको सुनैगा वह पापोंसे मुक्त होकर उत्तमगति पावैगा ७० । ७२ ॥

इति श्रीभाषामहाभारते आदिपर्वणि षट्षष्टितमोऽध्यायः ६६ ॥

सरसठवां अध्याय।

दैत्य दानव देवता गन्धर्व और अप्सराओं के पृथ्वीपर अपने अपने अंश से अवतार लेने की कथा ॥

राजा जनमेजय बोले हे वैशम्पायनजी ! अब आप कृपा करके देवता दानव गंधर्व उरग राक्षस सिंह व्याघ्र मृग पन्नग पक्षी और सब महात्मा प्राणियों के मनुष्यलोक में जन्म लेनेकी कथा वर्णन कीजिये १ । २ यह सुनकर वैशम्पायन बोले कि मैं देवता और दानवों के पृथ्वीपर जन्म लेने की कथा वर्णन करता हूं आप चित्त देकर सुनिये ३ देवताओं से दैत्योंने पहिले पृथ्वी पर जन्म लिया उनके नाम और जिस जिसने जहां २ जन्म लिया वह हम आगे वर्णन करते हैं ॥

दैत्यों के नाम और पृथ्वीपर जन्मलेने का संक्षेप वृत्तांत ॥

विप्रचित्त—यह दैत्य इस लोक में जरासंध के नाम से विख्यात हुआ ४ ॥

हिरण्यकशिपु—यह शिशुपालनामी राजा हुआ ५ ॥

प्रह्लादका छोटा भाई संह्लाद—यह वाह्लीक के वंश में शैल्य नाम से उत्पन्न हुआ ६ ॥

अनुह्लाद—यह धृष्टकेतु के नाम से विख्यात हुआ ७ ॥

शिवि—यह राजा द्रुम के नाम से विख्यात हुआ ८ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वाष्कल—यह राजा भगदत्त के नामसे विख्यात हुआ ९ ॥

अपशिरा-अश्वशिरा अयःशंकु-गगनमूर्द्धा वेगवान्— } यह पांचों दैत्य केकय देशमें उत्पन्न होकर बड़े योद्धा राजा हुये १० । ११ ॥

केतुमान—यह अमितौजा नामसे विख्यात बड़े उग्र कर्म का करनेवाला राजा हुआ ॥

स्वर्भानु—यह राजा उग्रसेन नाम से विख्यात हुआ १२ ॥

अश्व—यह अशोक नामसे विख्यात बड़ा पराक्रमी राजा हुआ १३ ॥

अश्वपति—यह हार्दिक्यनामी बड़ा राजा हुआ १४ ॥

वृषपर्वा—यह दैत्य राजा दीर्घप्रज्ञ के नाम से विख्यात हुआ १५ ॥

अजक वृषपर्वा का भाई—यह राजा शाल्व हुआ १६ ॥

अश्वग्रीव—यह दैत्य रोचमान नामी बड़ा बुद्धिमान् और कीर्तिमान् राजा हुआ १७ ॥

सूक्ष्म—यह राजा बृहद्रथ हुआ १८ ॥

तुहुंड—यह राजा सेनाबिंदु हुआ १९ ॥

इषियु—यह राजा नग्नजित हुआ २० ॥

एकचक्र—यह राजा प्रतिविन्ध्य हुआ २१ ॥

विरूपाक्ष—यह राजा चित्रधर्म नाम से विख्यात हुआ २२ ॥

वीरहर—यह दैत्य सुबाहु नाम राजा हुआ २३ ॥

सुहर—यह दैत्य वाह्लीक नाम राजा हुआ २४ ॥

निचन्द्र—यह दैत्य मुंजकेश नाम राजा हुआ २५ ॥

निकुंभ—यह दैत्य देवाधिप नाम राजा हुआ २६ ॥

शरभ—यह दैत्य पौरव नाम राजऋषि हुआ २७ ॥

कुपथ—यह दैत्य सुपार्श्व नाम राजा हुआ २८ ॥

कथन—यह दैत्य पार्वतीय नाम बड़ा तेजस्वी राजऋषि हुआ २९ ॥

शलभ—यह दैत्य प्रह्लादनामी राजा वाह्लीक के वंश में उत्पन्न हुआ ३० ॥

चन्द्र—यह दैत्य चन्द्रवर्मा नाम कांबोजदेशों का राजा हुआ ३१ ॥

अर्क—यह दैत्य ऋषिक नाम राजऋषि हुआ ३२ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मृतया—यह दैत्य पश्चिमानूपक नाम राजा हुआ ३३ ॥
योगविष्ट—यह दैत्य द्रुमत्सेन नाम राजा हुआ ३४ ॥
मयूर—यह दैत्य विश्वनाम राजा हुआ ३५ ॥
सुपर्ण—यह दैत्य कालकीर्त्ति नाम राजा हुआ ३६ ॥
चन्द्रहन्ता—यह दैत्य शुनक नाम राजा हुआ ३७ ॥
चन्द्रविनाशन—यह दैत्य जानकि नाम राजा हुआ ३८ ॥
दीर्घजिह्व—यह दैत्य काशिराज नाम राजा हुआ ३९ ॥
सिंहिका का बेटा राहु—यह ग्रह क्राथ नाम राजा हुआ ४० ॥
अनायुका पुत्र विक्षर—यह दैत्य वसुमित्र नाम राजा हुआ ४१ ॥
दूसरा विक्षर—यह दैत्य पाण्डयराष्ट्राधिप नाम राजा हुआ ४२ ॥
बलीनर—यह दैत्य पौंड्रमात्स्यक नाम राजा हुआ ४३ ॥
वृत्त—यह दैत्य मणिमान नाम राजऋषि हुआ ४४ ॥
क्रोधहंता—यह दैत्य दण्ड नाम राजा हुआ ४५ ॥
क्रोधवर्द्धन—यह दैत्य दंडधार नाम राजा हुआ ४६ ॥

कालेयनाम आठदैत्य—यह आठों दैत्य आठ बड़े बड़े पराक्रमी राजा हुये उनके नाम ये हैं पहला मगधदेश में जयत्सेन नाम राजा दूसरा अपराजित नाम राजा तीसरा भीम नाम निषादों का राजा चौथा श्रेणिमान नाम राजा राजऋषि पांचवां महौजा नाम राजा छठा भीरुनाम राजऋषि सातवां समुद्रसेन नाम धर्म और अर्थ के तत्त्व को जाननेवाला राजा और आठवां बृहन्नाम बड़ा धर्मात्मा राजा उत्पन्न हुआ ४७। ५५ ॥

कुक्षि—यह दैत्य पार्वती नाम राजा हुआ ५६ ॥
क्रथन—यह दैत्य सूर्याक्ष नाम राजा हुआ ५७ ॥
सूर्य—यह दैत्य दरद नाम वाह्लीक राजा हुआ ५८ ॥

क्रोधवशा नाम दैत्यगण—इस गण के दैत्योंने पृथ्वीपर बहुतसे राजाओं में जन्म लिया उनके नाम ये हैं ५९ मद्रक, कर्णवेष्ट, सिद्धार्थ, कीटक, सुवीर, सुबाहु, महावीर, वाह्लिक ६० क्रथविचित्र, सुरथनील, चीरवास, कौरव्य ६१ दन्तवक्र जो दुर्जयदानव का अवतार था, रुक्मी, जनमेजय ६२ आषाढ़, वायुवेग, भूरितेजा, एकलव्य, सुमित्र, बाठधान, गोमुख ६३ कारूष, क्षेमधूर्त्ति, श्रुतायु, उद्धह, बृहत्सेन ६४ क्षेमोग्रतीर्थ, कुहर, कलिंगपति और ईश्वर ६५

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ये सब राजा बड़े पराक्रमी और कीर्त्तिमान् क्रोधवश नाम दैत्यों के गण से उत्पन्न हुये ६६ ॥

कालनेमि—यह दैत्य उग्रसेन का पुत्र कंस नाम से महाबली विख्यात हुआ ६७ ॥

इतनी कथा सुनाकर वैशम्पायनजी बोले हे राजन् ! दैत्योंके पृथ्वीपर जन्म लेने के पीछे सब देवताओं ने भी अपने अपने अंश से अवतार लिया उनके नाम और जहां जहां जिसने जन्म लिया वह आगे वर्णन करते हैं ॥

देवताओं के नाम और पृथ्वीपर अवतार लेने का हाल ॥

गंधर्वपति—यह अवतार लेकर देवक नाम राजा हुआ ६८ ॥

बृहस्पति—इनका अवतार द्रोणाचार्य है जो भरद्वाज के वंश में अयोनिज उत्पन्न हुये ६९ ॥

महादेव अन्तक काम और क्रोध—इन चारों देवताओं के अंश से संपूर्ण वेदशास्त्र और अस्त्रविद्याके जाननेवाले द्रोणाचार्य के महावीर और बड़ा तेजस्वी अश्वत्थामा नाम पुत्र उत्पन्न हुआ ७० । ७३ ॥

अष्टवसु—यह आठोंवसु वशिष्ठजी के शाप और इन्द्रकी आज्ञा से राजा शांतनु के यहां गंगाजी के गर्भसे उत्पन्न हुये उनमें सबसे छोटे सब शत्रुओं को जीतनेवाले और कुरुओं को अभय करनेवाले भीष्मजी थे जिन्होंने सब शस्त्र विद्याके जाननेवाले जमदग्निके पुत्र परशुरामजी से युद्ध किया था ७४ । ७६ ॥

रुद्रगण—ब्रह्मऋषि कृपाचार्य रुद्रगणके अवतार थे ७७ ॥

द्वापर—इनका अवतार शकुनिनाम महारथी राजा था ७८ ॥

मरुद्गण—इन देवताओं के अंशसे वृष्णिकुल में सात्यकी और राजर्षि राजा द्रुपद, राजा कृतवर्मा और राजा विराट् उत्पन्न हुये ७९ । ८३ ॥

हंसनाम गंधर्वपति जो अरिष्टाका पुत्र था } इस देवताके अंशके व्यासजी का पुत्र धृतराष्ट्र नामी बड़ा तेजस्वी माताके दोष और ऋषिके कोपसे अंधा उत्पन्न हुआ ८४ । ८५ ॥

हंसनाम गंधर्वपतिका छोटा भाई—इस देवताके अंशसे राजा पांडु सत्यधर्ममें रत बड़ा तेजस्वी उत्पन्न हुआ ८६ ॥

सूर्यके बेटे धर्मराज—इनके अंशसे विदुरजी उत्पन्न हुये ८७ ॥

कलियुग—इसके अंशसे धृतराष्ट्रका पुत्र दुर्योधननाम उत्पन्न हुआ वह

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बड़ा दुर्बुद्धि दुर्मति कुरुकुलको अपयश देनेवाला सब पृथ्वी के क्षत्रियों का नाश करनेवाला और महाभारत युद्धका रोपनेवाला था ८८। ८९॥

रावणके पुत्र आदि—इनके अंशसे धृतराष्ट्रके दुश्शासन आदि सौ पुत्र बड़े खोटे कर्म करनेवाले उत्पन्न हुये और युयुत्सु जो वेश्या से उत्पन्न हुआ था वह इन सौ पुत्रों से अधिक था ९०। ९१॥

इतनी कथा सुनकर राजा जनमेजय ने कहा कि मैं धृतराष्ट्र के सौ पुत्रों के नाम क्रमसे सुना चाहताहूं यह सुनकर वैशम्पायनजी बोले कि उनके नाम ये हैं दुर्योधन १, युयुत्सु २, दुश्शासन ३, दुस्सह ४, दुश्शल ५, दुर्मुख ६, विविंशति ७, विकर्ण ८, जलसंध ९, सुलोचन १०, बिंद ११, अनुबिंद १२, दुर्द्धर्ष १३, सुबाहु १४, दुःप्रधर्षण १५, ९२। ९४ दुर्मर्षण १६, दुर्मुख १७, दुष्कर्ण १८, कर्ण १९, चित्र २०, उपचित्र २१, चित्राक्ष २२, चारुचित्र २३, अंगद २४, ९५ दुर्मद २५, दुःप्रहर्ष २६, विवित्सु २७, विकट २८, सम २९, ऊर्णनाभ ३०, पद्मनाभ ३१, नन्द ३२, उपनन्द ३३, ९६ सेनापति ३४, सुषेण ३५, कुण्डोदर ३६, महोदर ३७, चित्रबाहु ३८, चित्रवर्मा ३९, सुवर्मा ४०, दुर्विरोचन ४१, ९७ अयोबाहु ४२, महाबाहु ४३, चित्रचाप ४४, सुकुण्डल ४५, भीमवेग ४६, भीमबल ४७, वलाकी ४८, भीम ४९, विक्रम ५०, ९८ उग्रायुध ५१, भीमशर ५२, कनकायु ५३, दृढ़ायुध ५४, दृढ़वर्मा ५५, दृढ़क्षत्र ५६, सोमकीर्त्ति ५७, अनूदर ५८, ९९ जरासंध ५९, दृढ़संध ६०, सत्यसंध ६१, सहस्रवाक ६२, उग्रश्रवा ६३, उग्रसेन ६४, क्षेममूर्त्ति ६५, १०० अपराजित ६६, पंडितक ६७, विशालाक्ष ६८, दुराधन ६९, १०१ दृढ़हस्त ७०, सुहस्त ७१, वातवेग ७२, सुवर्चस ७३, आदित्यकेतु ७४, बह्वाशी ७५, नागदत्त ७६, अनुयायिन ७७, १०२ कवची ७८, निषंगी ७९, दंडी ८०, दण्डधार ८१, धनुर्ग्रह ८२, उग्र ८३, भीमरथ ८४, वीर ८५, वीरबाहु ८६, अलोलुप ८७, १०३ अभय ८८, रौद्रकर्मा ८९, दृढ़रथ ९०, अनाधृष्य ९१, कुण्डभेदी ९२, विरावी ९३, दीर्घलोचन ९४, १०४ दीर्घबाहु ९५, महाबाहु ९६, व्यूढ़ोरु ९७, कनकांगद ९८, कुण्डज ९९, चित्रक १०० धृतराष्ट्र के ये सौ पुत्र थे और एक पुत्र युयुत्सुनामी वेश्या से था इसप्रकार से सब पुत्र १०१ थे और एक कन्या दुश्शलानामकी थी १०५। १०६ इन सब की बड़ाई छुटाई नामों के अनुसार है अर्थात् जिसका नाम पहले है वह अपने पीछे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वाले से बड़ा है धृतराष्ट्र के ये सब पुत्र बड़े शूरवीर युद्ध अस्त्र शस्त्र विद्या के जाननेवाले और वेद शास्त्र में निपुण थे १०७। १०८ इन सबका विवाह इनके अनुरूप स्त्रियों से किया गया और दुश्शलानाम धृतराष्ट्र की पुत्री का विवाह शकुनी की रायसे सिंधुदेश के राजा जयद्रथ के साथ किया गया १०९। ११० ॥

धर्मराज—इनके अंशसे राजा युधिष्ठिर उत्पन्न हुये ॥

वायु, इन्द्र और अश्विनीकुमार—वायु के अंश से भीमसेन इन्द्रके अंश से अर्जुन और अश्विनीकुमार के अंश से नकुल और सहदेव जो बड़े स्वरूपवान् थे उत्पन्न हुये १११ ॥

चन्द्रमा का पुत्र वर्चा—इनके अंश से अर्जुन का बड़ा प्रतापी पुत्र अभिमन्यु नामी उत्पन्न हुआ इस अभिमन्युके अवतार लेनेके समय चन्द्रमाने देवताओं से यह कहा था कि यह मेरा पुत्र प्राणसे भी प्यारा है मैं इसको पृथक् नहीं कर सकता परन्तु तुम्हारा कार्य करने के लिये यह पृथ्वीपर अवतार लेकर अर्जुनका पुत्र होगा और १६ वर्षकी उमर में युद्ध प्राप्त होने पर नररूप अर्जुन अपने पिता और नारायण रूप श्रीकृष्णके न होने के कारणसे यह महाअभेद्य व्यूहको तोड़कर भीतर घुस जायगा और वहां जाकर बड़े बड़े शूरवीरों को यमपुरी पहुँचावेगा और उसदिन सब सेना की चौथाई सेना को अकेला मारकर संध्या होने पर मेरे पास चला आवेगा और पांडवों का वंश चलाने के लिये इससे एक पुत्र भी उत्पन्न होगा यह सुनकर देवताओं ने तारागणों के ईश्वर चन्द्रमा की पूजा की और कहा कि ऐसाहीहो हे जनमेजय ! यह अभिमन्यु तेरा पितामह अर्थात् बाबा था ११२। १२५ ॥

अग्नि—इनके अंश से धृष्टद्युम्न उत्पन्न हुआ और शिखण्डी स्त्री पूर्वजन्म का राक्षस था १२६ ॥

विश्वेदेवाओं का गण—इस गण के देवताओं के अंश से द्रौपदी के पांच पुत्र उत्पन्न हुये नाम उनके ये हैं, प्रतिविंध्य, सुतसोम, श्रुतिकीर्त्ति, शतानीक और श्रुतसेन १२७। १२८ ॥

और वसुदेवजी के पिता सूरसेन के एक पुत्री पृथानाम की ऐसी स्वरूपवान् उत्पन्न हुई कि उसकी सदृश पृथ्वीपर कोई कन्या न थी सूरसेन ने उस कन्या को उत्पन्न होने के पहिलेही अपनी फूफी के पुत्र को देने की प्रतिज्ञा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

की थी सो उस प्रतिज्ञा के अनुसार सूरसेन ने पृथाको कुंतिभोज नाम राजाको देदिया १२९।१३२ उसने उस कन्याको महात्मा और ब्राह्मण लोगों की सेवा करने के निमित्त नियत किया एक समय दुर्वासा उग्र तपस्वी ऋषि वहां आये उस कन्या ने उनकी बहुत अच्छी तरह सेवा की दुर्वासा ने प्रसन्न होकर पृथा को देववशीकरण मंत्र बताया और कहा कि इस मंत्र से तू जिस देवता को पुत्र की कामना से बुलावेगी वह आकर तेरी इच्छा को पूर्ण करेगा १३३।१३६ दुर्वासा तो चलेगये और कुंतीने उस मंत्रसे सूर्यका आवाहन किया और उनसे गर्भ को धारण करके बड़ा तेजस्वी और स्वरूपवान् कुण्डल और कवच धारण कियेहुये एक पुत्रको उत्पन्न किया और जाति बिरादरी के भयसे उसको जलमें बहा दिया १३७। १४० इसके पीछे उस बालकको जल में बहा हुआ राधाके पति अधिरथने जाते देखा वह उसको अपने घर लेआया और पुत्रभाव मानकर उसका नाम वसुषेण रक्खा थोड़े दिनों में वह बालक बड़ा होगया और सब वेद और शास्त्रों को पढ़कर सब अस्त्रधारियों में श्रेष्ठ हो गया जिस समय वह पूजा करने बैठताथा उस समय जो कोई ब्राह्मण उससे जो कुछ मांगताथा वह उसको वही देताथा १४१।१४४ उसी समयमें इंद्रने अर्जुन के हितके लिये ब्राह्मणरूप धारण करके उससे कवच और कुण्डल मांगे उसने दोनों दे दिये और इंद्रने उसके बदले में एक शक्ति दी और कहा कि देवता, मनुष्य, यक्ष, गंधर्व और राक्षस में से जिस किसी पर तू इस शक्तिको छोड़ेगा वह मरजायगा १४५। १४७ वह सुषेणनामसे पहले विख्यात रहा परंतु कुंडल और कवचके हरे जानेपर उसका नाम पृथ्वी पर वैकर्तनकर्ण हुआ १४८ वह कर्ण पृथाका पहला पुत्र था और सूतके घरमें बढ़कर थोड़े दिनोंमें दुर्योधनका मंत्री होगया हे राजन्! वह बड़ा वीर शत्रुओं का नाश करनेवाला और सब शस्त्रधारियों में श्रेष्ठ था और उत्पत्ति उसकी सूर्य के अंश से थी १४९। १५० इसके पीछे श्रीसनातननारायण भी वासुदेवनामसे पृथ्वीपर प्रकट हुये १५१॥

शेष—इनके अंशसे बलदेवजी उत्पन्न हुये॥

सनत्कुमार—इनके अंशसे प्रद्युम्नजी उत्पन्न हुये १५२॥

इनके सिवाय बहुतसे और देवताओं ने भी अपने २ अंश से वसुदेवजी के कुलमें अवतार लिया १५३॥

अप्सराओंके गण—इन सब देवियोंके अंशसे सोलह सहस्र कन्या उत्पन्न

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हुई और उन सबका विवाह श्रीकृष्णजी के साथ हुआ १५४। १५५॥

लक्ष्मी—लक्ष्मीजी ने अपने अंश से भीष्म के कुल में रुक्मिणी नाम से अवतार लिया १५६॥

शची—यह देवी राजा द्रुपदके यहां द्रौपदीनाम से यज्ञकी अग्निसे प्रकट हुई १५७॥

वह द्रौपदी श्यामा अत्यन्त सुंदरी कमललोचनी न बहुत बड़ी न अत्यन्त छोटी सब लक्षणोंसे युक्त और कमलकीसी गंध रखनेवाली थी १५८। १५९॥

सिद्धि और धृति—इन्होंने कुंती और माद्री नामसे पृथ्वीपर अवतारलिया॥

मति—यह देवी अपने अंशसे गांधारीनामसे प्रकट हुई १६०॥

इतनी कथा सुनाकर वैशंपायनजी बोले हे राजा जनमेजय! मैंने सब देवता गंधर्व राक्षस और अप्सराओंके पृथ्वीपर जन्म लेने की कथा वर्णन की यह अंशावतारणपर्व धन यश पुत्र आयु और विजयका देनेवालाहै और उन मनुष्यों के सुननेके योग्यहै जो परगुणोंमें दोष नहीं लगाते हैं परमात्मा को जानने वाला मनुष्य इसको सुनकर संसारी दुःखोंसे पीड़ा नहीं पाता है १६१। १६५॥

इति श्रीभाषामहाभारते आदिपर्वणि सप्तषष्टितमोऽध्यायः ६७॥

अरसठवां अध्याय।

कुरुवंशके चलानेवाले राजा दुष्यन्त की कथा॥

राजा जनमेजय बोले हे वैशंपायनजी! आपने देवता आदि के पृथ्वी पर अवतार लेनेकी कथा सुनाई अब आप से कुरुवंशकी कथा आदि से विस्तार-पूर्वक सुना चाहताहूं १। २ यह सुनकर वैशंपायनजी बोले हे राजा जनमेजय! इस कुरुवंश का चलानेवाला पहला राजा दुष्यन्त नामी हुआ उसने अपने बल और पराक्रमसे सब पृथ्वीको समुद्रकी सीमा और म्लेच्छोंके देशकी अवधि तक जीतकर अपने वशमें किया और उसका राज्य अनेक भोगों के साथ किया ३। ५ उसके राज्यमें न वर्णसंकर उत्पन्न होता था न खेती होती थी न पाप होता था सब मनुष्य धर्ममें प्रीति रखते थे और अर्थ धर्मको पाते थे ६। ७ चोरी कभी नहीं होती थी मनुष्यों को क्षुधा और व्याधिका भय नहीं होता था चारों वर्ण अपने २ कर्म करते थे इन्द्र समय पर वर्षा करता था और पृथ्वीपर धान्य और पशु अच्छीतरह उत्पन्न होते थे ८। १० ब्राह्मणलोग अपना कर्म ठीक करते थे और झूंठ कभी नहीं बोलते थे वह राजा ऐसा पराक्रमी और दृढ़ था कि

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मन्दराचल पर्वत को अपनी दोनों भुजाओं से उठाकर लेजासकता था गदा आदि शस्त्रों से युद्ध करने में अत्यन्त निपुण था और हाथी घोड़े आदि की सवारी भी अच्छी तरह करता था उस राजा का बल विष्णुके समान तेज सूर्य के तुल्य और अक्षोभित्व समुद्र और क्षमा पृथ्वीके अनुरूप था प्रजा उसको बहुत चाहती थी और वह प्रजा का पालन धर्म से करता था ११। १५॥

इति श्रीभाषामहाभारते आदिपर्वणि अष्टषष्टितमोऽध्यायः ६८॥

उनहत्तरवां अध्याय।

राजा दुष्यंतके वनमें अहेर खेलने की कथा॥

इतनी कथा सुनकर राजा जनमेजय बोला कि महाराज मैं भरतजी के जन्म और चरित्र और शकुन्तला की उत्पत्ति का वृत्तान्त विस्तारपूर्वक सुना चाहता हूं १ और यह भी वर्णन कीजिये कि राजा दुष्यन्त ने शकुन्तला को कैसे पाया यह सुनकर वैशंपायन बोले कि एक समय राजा दुष्यंत बहुतसी चतुरंगिनी सेना और बड़े २ शूरवीर जो खड्ग शक्ति आदि अनेक शस्त्र लिये हुये थे साथ लेकर वनमें अहेर मारने को गया २। ५ चलते समय शूरवीरों के सिंहनाद और ताल मारनेके शब्द शंख और दुन्दुभी आदि के घोष हाथियों की चिंघार और रथोंकी झंझनाहट से चारों दिशा व्याप्त होगई स्त्रियों ने अपने २ घरोंपर चढ़ २ कर राजापर फूलों की वर्षा की और आपस में कहने लगीं कि यह इन्द्र की समान वही राजा दुष्यंत है जिसका पराक्रम रण में वसुदेवता के समान है और जिसके सम्मुख कोई शत्रु नहीं ठहर सकता ६। ११ राजा उन स्त्रियों की प्रशंसा से प्रसन्न होता हुआ और ब्राह्मणों से स्तुति सुनता हुआ हाथी पर सवार वन को चला १२। १३ राजा के पीछे २ जो पुरवासी लोग आशीर्वाद देते और जय बोलते जाते थे वह राजा की आज्ञा पाकर लौट गये और राजा उस वनमें पहुँचा जो नन्दन वनके समान मनोहर था और जिसमें बिल्व, अर्क, खदिर, कैथा, धौ आदि अनेक उत्तम २ वृक्ष लगेहुये थे जहां तहां ऊँचे नीचे पत्थरों के ढेरों से पृथ्वी वहां की विषम हो रहीथी न वहां जलथा न मनुष्य और मृग और सिंह आदि अनेक वनके जीव फिरते थे १४। १८ राजा वहां पहुँचकर उस वनमें अहेर मारनेलगे और थोड़ी विलम्ब में राजा ने बाण, खड्ग, गदा और मुशल आदि अनेक शस्त्रों से सिंह व्याघ्र वराह मृग आदि अनेक जीवों को मारडाला जो जीव राजा के पास

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

होकर भागते थे राजा उनको तलवार से काट डालता था और जो दूर रहते थे उनको बाणों से भेदकर गिरा देता था इस प्रकार करने से उस वनके सब जीव व्याकुल होकर जंगल से बाहिर को भागने लगे बहुत से भूख और प्याससे व्याकुल होकर नदी और तालाब अनुमान करके रेतकी ओर दौड़कर जाते और फिर जल न मिलने के कारण से मूर्च्छित होकर गिर पड़ते १६।२७ उस समय राजा की सेना के मनुष्योंने भूखके कारणसे बहुत मृगोंको अग्नि में भूंजकर बहुतों को कूटकर और बहुतोंको वैसेही भक्षण किया वनके हाथी घायल होकर भयसे अपनी २ सूंड़ सकोड़ २ कर मूत्र और विष्ठा करते हुये भागने लगे २८।३० उनके भागने से बहुतसे मनुष्य दबकर मरगये इस प्रकार से राजाने सेनारूपी मेघ और बाणरूपी बूंदों से सब वनको ढककर मृगों को मार कर निश्शेष कर दिया ३१॥

इति श्रीभाषामहाभारते आदिपर्वणि एकोनसप्ततितमोऽध्यायः ६६॥

सत्तरवां अध्याय।

राजा दुष्यंत का एक दूसरे वनमें जाना और वहां एक बड़े रमणीक आश्रम को देखकर उसमें जाना॥

वैशंपायनजी बोले राजा दुष्यंत इसप्रकार से सहस्रों मृगों को उस वन में मारकर और अहेर करने की इच्छा से भूखा प्यासा उस वनको छोड़कर आगे को चला वनके अन्त में एक बड़ा शून्यस्थान देखा राजा वहां से भी आगे को चला गया और फिर एक दूसरे वनमें पहुँचा जहां शीतल मन्द सुगन्ध वायु चलरही थी अनेक रंगों के फूल खिलरहे थे कोकिला झिल्ली आदि बहुत से पक्षी मधुर २ बोली बोल रहे थे वृक्षों की छाया अत्यन्त सघन थी भौंरे जहां तहां गूंज रहे थे ऐसा कोई वृक्ष न था जिसपर फल फूल और भौंरे न थे राजा उस वनकी अति अद्भुत शोभा को देखता हुआ वनमें चला १।८ उस के जाने से वृक्षोंपर से फूल टूटकर राजा के ऊपर गिरने लगे मानो वृक्ष राजा पर फूलों की वर्षा कर रहे हैं ६ राजा पक्षियों के चहचहाट को सुनता सफल वृक्षों की झुकीहुई डालियोंपर गूंजतेहुये भौंरोंकी शोभाको देखता फूलरूपी वस्त्रों को पहिनेहुये वृक्षोंकी सुगंधिको सूंघता इन्द्रकी ध्वजा के समान ऊंचे वृक्षोंकी डालियों के आपसमें मिलने की शोभा को निरखता और बहुतसे स्थानों में सिद्ध चारणों के समूह, अप्सराओं के गण, गंधर्व और किन्नर आदिकोंको दृष्टि

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

करता हुआ वनमें उत्तम चलती हुई वायुको खाता हुआ और उस नदी के किनारे के ऊंचे वृक्षोंकी शोभाको देखता हुआ उस वनमें चला जाता था १०। १६ थोड़ी दूर जाकर राजाने उस वनमें एक आश्रम अति श्रेष्ठ जहां सुन्दर २ नाना प्रकारके वृक्ष लगेहुये थे पक्षी मधुर वाणी बोल रहे थे और अग्निकुण्डों में अग्नि जल रहीथी देखा १७। १८ वह आश्रम जो मालती नदी के किनारे पर बालखिल्य संन्यासियों और २ बहुतसे मुनियों के गणों से युक्तथा राजाने उस आश्रम को प्रणाम किया और उस नदी के वृक्ष पक्षी और मृग आदिकी शोभा से प्रसन्न होता हुआ राजा उस मनोहर और देवलोक के तुल्य आश्रम में गया १९। २२ जब राजा उस आश्रम के पास पहुँचा तब देखता क्याहै कि वह नदी उस आश्रम के किनारे से लगी हुई शब्द करती हुई बह रही है चक्रवाक आदि जल पक्षी और जल के जीव किलोल कर रहे हैं और वानर रीछ किन्नर शार्दूल सर्पराज और मतवाले हाथी क्रीड़ा कर रहे हैं और उस नदी के किनारे पर एक आश्रम कश्यपजी का बना हुआ है और वहां बहुतसे मुनियों के गण बैठे हुये हैं २३। २६ उस आश्रमकी शोभा नदीके कारण से ऐसी थी जैसे बदरिकाश्रम की शोभा गंगा से है राजाने उस आश्रम में कश्यपजी के दर्शन करने को जाने की अभिलाषा से अपनी सेना के मनुष्यों से कहा कि तुम लोग यहां ठहरो हम कश्यपजी के दर्शनों को जाते हैं जबतक हम न आवें तबतक कहीं न जाना २७। ३२ और आप राजचिह्नों को दूर करके अपने साथ मंत्री और पुरोहित को लेकर उस आश्रम में गया राजा वहां की शोभा को देखकर भूंखप्यास सब भूल गया ३३। ३४ जब आश्रम के भीतर पहुँचा तब देखता क्या है कि वहां यज्ञ होरहा है ऋषि और ब्राह्मण लोग सामवेद ऋग्वेद यजुर्वेद और अथर्वणवेदों के मंत्रों को पद क्रम घन आदि अलंकारों से पढ़ रहे हैं कोई संहिता का पाठ कररहा है बहुतसे ऋषि लोग जो यज्ञोंकी क्रिया में निपुण न्यायतत्त्व और आत्मविज्ञान में सम्पन्न समाहार में विशारद थे और मोक्षधर्म अपनी बातको स्थापन करना दूसरे के मतको खंडन करना और सिद्धांत मत को कहना इनके परमज्ञाता शब्द और छंदकी निरुक्ति को जाननेवाले काल का ज्ञान करनेवाले द्रव्य कर्म गुण और वानर वा पक्षियों की बोली समझनेवाले और बड़े २ ग्रंथों को विचार करनेवाले थे आपस में वार्तालाप कर रहे थे राजाने उनकी वाणी को सुनकर और शांसितव्रत

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अनेक ब्राह्मणों को उत्तम २ आसनों पर बैठेहुये जप और होम में परायण और देवमंदिरों में ब्राह्मणों की कीहुई पूजा को देखकर यह समझा कि मैं इस समय ब्रह्मलोक में हूं ३५।४८ राजा उस आश्रमकी शोभाको देखकर तृप्त नहीं होता था उपरांत उस आश्रम में राजमंत्री और पुरोहित के साथ किसी एकांत और अत्यन्त मनोहर स्थान के समीप पहुँचा ४९। ५० ॥

इति श्रीभाषामहाभारते आदिपर्वणि सप्ततितमोऽध्यायः ७० ॥

इकहत्तरवां अध्याय।

राजा दुष्यंत का शकुंतला से मिलाप होना और शकुंतला के जन्म होने की कथा ॥

वैशंपायनजी बोले कि हे राजन्! वह राजा मंत्री और पुरोहित को उसी जगह छोड़ कर आप उस स्थान के भीतर गया और वहां ऋषि अथवा किसी और को न पाकर बड़े ऊंचेस्वर से बोला यहां कौन है १। २ उस शब्द को सुन उस स्थानमें से एक कन्या परमसुंदरी लक्ष्मीकी सदृश तपस्वी के वेषमें निकली ३ और राजा को देखकर आदरपूर्वक बोली आप अच्छे आये ४ इसके पीछे उस कन्या ने राजाका पूजन पाद्य अर्घसे करके उसको आसन पर बैठाया और क्षेम कुशल पूंछने के उपरांत मन्द मन्द मुसुकान के साथ बोली कहिये आपका क्या काम है जो कुछ कहो सो करें ५। ६ राजा उस कन्याकी मधुर बोली को सुनकर बोला कि मैं कण्वऋषि के दर्शनों को यहां आया था कहो वह कहां गये हैं ७। ८ यह सुनकर वह कन्या जिसका नाम शकुंतला था बोली कि मेरा पिता ऋषि वनमें फलफूल लेने को गयाहै तुम यहां एक क्षणमात्र ठहरो वह आताही होगा ९ राजा यह सुनकर और उस कन्या की मंद मुसुकान तेज और तपसे प्रकाशमान रूप और योवनको देखकर बोला १०। ११ कि तू कौन है किसकी बेटी है और कहां से और किसलिये इस वन में आई है १२ तैंने अपने दर्शनमात्रही से मेरे मन को हरलिया है इस कारण से मैं तुझको जानना चाहता हूं १३ यह सुनकर वह कन्या हँसती हुई मधुर बोली से बोली १४ कि मैं धैर्यवान् धर्मज्ञ तपस्वी कण्वऋषि की पुत्री हूं १५ राजा ने कहा कि लोक पूजित ऋषीश्वर महाराज तो ऊर्ध्वरेता कहलाते हैं अर्थात् उनका वीर्य नीचे नहीं उतरता है और ऐसा कहते हैं कि चाहे धर्म अपनी कृत्य से डोल जावे परन्तु शांसितव्रत ऋषि अपने व्रतसे कभी नहीं डोलता है फिर तू क्योंकर ऋषि की पुत्री है १६। १७ यह सुनकर शकुंतला बोली कि

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मैं अपने जन्म और ऋषि की पुत्री होनेका वृत्तान्त वर्णन करती हूं १८ एक समय एक ऋषि यहां आये थे उन्हों ने कण्वऋषि से मेरे जन्म का हाल पूछा था मैंने उस समय कण्वऋषि के मुख से अपने जन्म का हाल सुना था वही मैं तुमसे कहती हूं १९ पहिले किसीसमय में विश्वामित्र ने बड़ाउग्र तप किया था उनके तपको देखकर इन्द्रको अपने इन्द्रासन के छीन जाने का भय हुआ और उसने इसडर से मेनका अप्सरा को बुलाकर कहा २० । २१ कि हम तुझ को सब अप्सराओं से गुण में विशेष समझते हैं तुझ से हमारा एक काम है उसको तू सुन और चित्त लगाकर उसको कर २२ आजकल सूर्यके तुल्य तपस्वी विश्वामित्र ऋषि बड़ा उग्रतप कररहे हैं मुझको उनसे इन्द्रासन छीन जाने का बड़ा भय होरहाहै इससे तू अपने स्वरूप, यौवन, मधुर बोली आदि से ऋषिके चित्तको ऐसा लुभाले कि वह अपना चित्त तपस्या से हटालें ऐसा करने से मेरा बड़ा उपकार होगा तू इस कामको जैसे बने वैसे कर २३ । २६ यह सुन कर मेनका बोली कि आप जानते हैं कि विश्वामित्रऋषि बड़े तेजस्वी तपस्वी और क्रोधी हैं २७ आपभी उनसे डरते हैं फिर मेरेडरने में क्या संदेहहै २८ हे महाराज ! यह विश्वामित्र ऋषि वही हैं जिन्होंने वशिष्ठजी के सब पुत्र मारडाले और तपके बल से क्षत्रिय से ब्राह्मण हुये २९ इन्होंने ही अपने तपके प्रभाव से कौशिकी नाम नदीको प्रकट किया ३० और फिर जब वह ऋषि तपस्या करने को किसी पहिले समयमें चलेगये थे और उस समय अकाल पड़ने पर राजर्षि मतंगने उनके कुटुम्बकी स्त्रियोंका पालन कियाथा तब तपस्यासे लौटकर आने पर ऋषिने उस नदीका नाम पारा रक्खा और मतंग को यज्ञ कराया ३१ । ३२ उस यज्ञमें आप सोम पीने को भयभीत होकर गयेथे ३३ देखो इनहीं विश्वामित्र ने क्रोधित होकर दूसरे लोककी रचना करनेको नक्षत्रोंको बनाया था ३४ भला ऐसे तपस्वी ऋषिसे मुझको क्योंकर डरन होवे इससे आप ऐसा उपाय करिये जिसमें वह ऋषि मुझको अपने क्रोध से न जलावे ३५ क्योंकि वह अपने तपके बलसे सब लोकों को जलासक्ते हैं पृथ्वी को अपने पगसे कँपाय सक्ते हैं मेरुपर्वत को फेंक सक्ते हैं और दिशाओं को घुमाय सक्ते हैं ३६ ऐसे जितेन्द्रिय और अग्नि के समान तेज रखनेवाले ऋषिको मैं क्योंकर स्पर्श करसक्तीहूं ३७ उनका मुख अग्नि नेत्र सूर्य चन्द्रमा और तारा जिह्वा काल के समान है मेरी सामर्थ्य उनको छूने की नहीं है ३८ तुम भी तौ विचार करो कि जिसके

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्रभाव से यमराज, चन्द्रमा, महर्षि, विश्वदेवा और बालखिल्य ऋषि डरते हैं उनके सम्मुख मुझसी स्त्री की क्या सामर्थ्य है जो कुछ करसके ३९ इससे आप मेरी सहायता के लिये वायु और कामदेव को भी मेरे साथ करदीजिये जिसमें वायु मेरे वस्त्रों को उड़ाकर मुझको नग्न करदे ४०। ४१ इन्द्रने वायु और कामदेव को मेनका की सहायता करने को आज्ञादी और वह सहायकों को लेकर इन्द्र का काम करने के लिये वहां से विश्वामित्र ऋषि के आश्रम को गई ४२ ॥

इति श्रीभाषामहाभारते आदिपर्वणि एकसप्ततितमोऽध्यायः ७१ ॥

बहत्तरवां अध्याय।

शकुंतला के जन्मकी कथा का वर्णन ॥

जब मेनका अप्सरा इन्द्रसे बिदा होकर वायु और कामदेव को साथ लेकर विश्वामित्रके आश्रम में डरती डरती पहुँची तब पहिले विश्वामित्र को प्रणाम किया और फिर क्रीड़ा करनेलगी क्रीड़ा करतेमें वायुने उसके चन्द्रमाके समान प्रकाशमान वस्त्रों को उड़ादिया और वह नंगी होकर वस्त्र पकड़ने को हँसती और दौड़ती हुई विश्वामित्रजी के सम्मुख आई और विश्वामित्र उसके वयरूपअनिन्दित और नंगे शरीरको देखकर कामदेवकी सहायता से काम के वश में हुये १। ७ और उसको बुलाकर उसके साथ विहार किया वह अप्सरा उनके पास बहुत दिनतक बनीरही और उनदोनों ने आपस में ऐसा विहार दीर्घकालतक किया एक २ वर्ष एक २ दिनके समान मालूम होताथा थोड़े दिनोंके पीछे हिमालय के शिखरपर मालती नदी के पास उस मेनका के एक कन्या हुई ८। ९ और वह अप्सरा देवताओंका कार्य सिद्ध जानकर उस कन्या को मालती नदीके किनारे पर छोड़कर वहांसे इंद्रलोकको चलीगई १० मेनका के चलेजाने पर वहांके पक्षी उस कन्या के पास आबैठे और उसको अपने परों से इस कारण से छिपालिया जिसमें मांस के खानेवाले जीव वहां आकर उसको खा न जावें ११। १२ उसी समय में कण्वऋषि भी वहां सन्ध्योपासन करने के निमित्त नदी के किनारे पर आये और उस कन्याको पक्षियोंसे रक्षित देखकर अपने आश्रम में लेआये और पुत्रीभाव मानकर उसका पालन किया १३ धर्मशास्त्र के मतसे तीन पिता होते हैं एक तो वह जिससे शरीर उत्पन्नहो दूसरा वह जो प्राणदे तीसरा वह जो अन्न देवे १४ इस कारण से हे राजा!

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कण्वऋषि मेरे पिताहैं और मुझमें पुत्रीभाव और मैं उनमें पिताभाव मानती हूं और मेरा नाम ऋषिने शकुंतला इस कारणसे रक्खाथा कि वनमें शकुंत अर्थात् पक्षियों ने मेरी रक्षाकी थी १५। १६ यह कहकर शकुंतला बोली हे राजन्! मैंने अपने जन्म का हाल जैसा सुनाथा तुमसे कहा मुझको तुम कण्वऋषिही की पुत्री जानो क्योंकि मैं उनहीं को अपना पिता जानतीहूं १७। १८॥

इति श्रीभाषामहाभारते आदिपर्वणि द्विसप्ततितमोऽध्यायः ७२॥

तिहत्तरवां अध्याय।

राजा दुष्यंत का शकुन्तलासे कण्वऋषिके आश्रममें गंधर्वविवाह करना॥

यह सुनकर राजा दुष्यंत बोला कि तेरे जन्म का हाल सुनने से मुझ को यह निश्चय जानपड़ता है कि तू राजपुत्री है इससे मैं चाहता हूं कि तू मेरी पत्नी होजा और मुझसे जो कुछ तू कहै सो मैं करूं १ सुवर्ण की माला, उत्तम वस्त्र, सुनहरीकुंडल, नानाप्रकार के रत्न, मृगचर्म और सम्पूर्ण राज्य जो कुछ तुझको चाहिये सो ले परन्तु मेरी भार्या होना अंगीकार कर २। ३ विवाहोंमें गान्धर्वविवाह श्रेष्ठहै इस कारण से तू अब गान्धर्वविवाह के द्वारा मुझको विवाहले ४ यह सुनकर शकुंतला बोली कि मेरा पिता वनमें फल लेने को गया आयाही चाहताहै वह निश्चय मेरा विवाह तेरेसाथ करदेगा ५ राजा ने कहा मैं तुझपर आसक्तहूं और मेरा चित्त तुझमेंही लगा हुआ है ६ देख आत्माही भाई है और आत्माही से आत्मा की गति है इससे तुझ को आत्मा से आत्मा का दान धर्म से करना चाहिये ७ धर्मशास्त्र में आठ विवाह कहे हैं ब्राह्म १ दैव २ आर्ष ३ प्राजापत्य ४ आसुर ५ गान्धर्व ६ राक्षस ७ और पैशाच ८। ८ इन आठों विवाहों को स्वायम्भुवमनु ने धर्मसे कहाहै उनमें से पहिले चार ब्राह्मण को करना चाहिये ९ पहिले से छठे तक क्षत्रिय राजाओं को इनके सिवाय राक्षस विवाह भी और वैश्य और शूद्रों को केवल आसुरविवाह करना उचित है १० मध्य के पांच विवाहों में तीन विवाह धर्मरूप और दो विवाह अधर्मरूप हैं पैशाच और आसुरविवाह कभी नहीं करना चाहिये ११ हे शकुंतला! मैंने तुझसे यह धर्मकी गति कही है क्षत्रियों को गान्धर्व और राक्षसविवाह करना धर्मरूपहै इससे मैं काम के वशमें होरहाहूं और तूभी कामदेव के वशमें है हमारे तेरे गान्धर्वविवाह होनेमें कुछ दोष नहीं तू इसको अंगीकार कर १२। १३ यह सुनकर शकुंतला बोली

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कि जो यह धर्मका मार्ग है और इसमें कुछ अधर्म नहीं है तो मैं अपनी आत्मा का दान इस नियम पर करसक्ती हूं कि जो मेरे पुत्र उत्पन्न होवे वह युवराज किया जावे अर्थात् आपके पीछे मेराही पुत्र राजा होवे १४। १६ राजा ने यह सुनकर कहा कि अच्छा ऐसाही होगा और यह कहकर कि मैं तुझको अपने नगर को ले जाऊंगा राजा ने उसके हाथ पकड़ लिये और उस के साथ भोग किया १७। १८ इसके पीछे राजा शकुंतला को बारम्बार यह विश्वास देकर कि मैं तुझको चतुरंगिणी सेना भेजकर अपने राजमन्दिर में बुलवाऊंगा चला गया १९। २० और यह चिन्ता करता हुआ कि कण्व कश्यप ऋषि आकर क्या कहेंगे अपने नगर में पहुँचा २१। २२ और यहां थोड़ी देर में कण्वऋषि अपने आश्रम में आये परंतु शकुन्तला लज्जाके मारे अपने पिता के सम्मुख नहीं गई २३ कण्वऋषि उन सब बातों को अपनी दिव्यदृष्टि से जानगये और जानकर बोले कि हे शकुंतला ! तैंने मेरा निरादर करके एकांत में पुरुषके साथ भोग किया है परंतु इसमें तैंने कुछ अधर्म नहीं किया २४। २५ क्षत्रियों को गांधर्व विवाह उस समय में जब पुरुष और स्त्री दोनों काम के वश में हों विना मंत्रों के होने में कुछ दोष नहीं है २६ और राजा दुष्यंत जो तेरा पति हुआ है वह मनुष्यों में उत्तम धर्मात्मा और महात्मा है २७ उससे तेरे एक पुत्र बड़ा प्रतापी होगा वह इस पृथ्वीका राज्य समुद्रकी सीमातक करेगा और उस चक्रवर्तीकी सेना सदैव अप्रतिहत रहेगी २८। २९ मुनिके ऐसा कहने पर शकुंतला ने ऋषिके हाथों से फूल फल लेलिये और रखकर उनके चरण धोये और जब ऋषि अपने आसनपर बैठ गये तब वह बोली कि महाराज ३० मैंने राजा दुष्यंत को अपना पति करलिया है आप उस राजा और उसके मंत्री पर कृपा कीजिये ३१ यह सुनकर कण्व ऋषि बोले कि मैं तेरे कारण से राजापर प्रसन्न हूं जो तेरी इच्छा हो सो मांग ३२ वैशम्पायन बोले हे राजा जनमेजय! शकुंतला ने मुनिके ऐसा कहने पर पौरववंशियों के हितके लिये यह मांगा कि इस वंशके राजा धर्मात्मा हों और अखंड राज्य करैं ३३ ॥

इति श्रीभाषामहाभारते आदिपर्वणि त्रिसप्ततितमोऽध्यायः ७३ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

चौहत्तरवां अध्याय।

शकुंतला के राजा दुष्यंत से पुत्र होना कण्वऋषि का शकुंतलाको दुष्यंतके घर भेजना दुष्यंतका शकुंतलाको ग्रहणकरने से निषेध करना आकाशवाणी का होना राजाका शकुंतलाको ग्रहण करना और उसके पुत्र भरतनाम को राज्याभिषेक करना ॥

वैशम्पायनजी बोले दुष्यंतके प्रतिज्ञा करके जानेके तीनवर्ष पीछे दीप्ति अग्निकी समान बड़ा तेजस्वी पुत्र राजा दुष्यंतके उत्पन्न हुआ १।२ कण्वऋषि ने उसके जातकर्म आदि संस्कार विधिपूर्वक किये ३ उसके दांत उजले और चमकते हुये थे देही सिंह के समान थी हाथों में शंख चक्र गदा और मत्स्य-रेखा पड़ी थी माथा चौड़ा था ४ और वह देवताओं के पुत्रों की समान शीघ्र बड़ा होगया छःवर्षकी उमर में ५ वह सिंह व्याघ्र वाराह हाथी और भैंसों को पकड़कर मुनिके आश्रम के पास वृक्षों में बांधता था ६ और उनपर चढ़ चढ़-कर चौतरफ क्रीड़ा करता फिरता था उस वनके वासियों ने इस कारण से कि वह सबको दमन करता था उसका नाम सर्वदमन रक्खा ७।८ कण्वऋषि ने उस लड़के का पराक्रम और अमानुषकर्म देखकर यह विचारा कि अब युव-राज होने के योग्य है और ऐसा विचार कर ऋषिने अपने शिष्योंसे कहा कि शकुन्तला को तुम उसके पुत्र सहित उसके पतिके यहां करआओ क्योंकि स्त्रियों का भाई बांधवों के घरमें रहना कीर्त्ति धर्म और शील का नाश करता है ९।१२ शिष्यों ने कहा बहुत अच्छा वह लोग शकुन्तला को पुत्र सहित लेकर हस्तिनापुर को चले १३ शकुन्तला उस देवकुमारों की तुल्य कमल-लोचन पुत्रको लेकर राजा दुष्यन्त के सम्मुख पहुँचने पर वह सब शिष्य उसे राजा को निवेदन कर चले गये उनके चले जाने पर शकुन्तला ने न्यायके अनुसार राजाकी पूजा की और बोली १४।१६ कि आपको याद होगी कि कण्वऋषि के आश्रम में मेरा आपका संगम हुआ था और आपने उस समय यह प्रतिज्ञा की थी कि जो पुत्र तेरे उत्पन्न होगा उसको मैं युवराज करूंगा सो यह पुत्र आपका मेरे उत्पन्न हुआ है अब आप उसको अपनी प्रतिज्ञा के अनुसार युवराज होनेका अभिषेक कीजिये १७।१८ यह सुनकर राजा बोला कि मुझको याद नहीं पड़ती है कि मेरा तेरे साथ धर्म काम या अर्थ से किसी प्रकार का सम्बन्ध हुआ है हे दुष्टतापसि ! तू कौन है यहां से चली जाय जो तेरे मनमें आवे सो तू कर १९।२० राजाकी यह बात सुनकर शकुन्तला

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

महादुःखित होकर अचल सी होगई क्रोध से नेत्र लाल होगये होठ फड़कने लगे और राजा की ओर तिरछी दृष्टि से देखने लगी २१। २२ और अपने भर्त्ता राजा को अच्छीप्रकार से पहिचान कर अपने तपके तेजको धारण करके दुःख और क्रोधके साथ बोली २३। २४ कि हे राजन्! तुम सब वृत्तान्त जानने परभी प्राकृत जीवों की तरह कहते हो कि मुझको कुछ याद नहीं २५ आपका हृदय झूंठ और सचको जानता होगा क्यों अपना अपमान करते हो आपको चाहिये कि धर्म को समझ कर ऐसी बात कहो जिसमें कल्याण होवै २६ जो मनुष्य अपनी कृत्यको भूलकर अन्यथा बात कहता है वह सब पापोंके करनेका भागी होता है २७ तुम यह जानते हो कि मैं अकेला था मेरे दिये हुये वचनों को कोई नहीं जानता है परंतु यह नहीं समझते कि वह नारायण अंतर्यामी जो सबके हृदय में विराजमान है सब जानताहै और सब कर्मों का साक्षी है २८ इसके सिवाय सब देवता, सूर्य, चन्द्रमा, अग्नि, स्वर्ग, भूमि, जल, हृदय, यमराज, दिन, रात्रि, दोनों संध्या और धर्म ये सब हर समय मनुष्य के बुरे और अच्छे कर्मों को देखते रहते हैं और उन कर्मों के साक्षी हैं २९। ३० जिस मनुष्यका हृदयस्थ कर्म साक्षी तृप्त होता है उसके पापों को यमराज दूर करदेते हैं और जिसका वह कर्म साक्षी तृप्त नहीं होता उसको यमराज बड़ी पीड़ा पहुँचाते हैं ३१। ३२ आप जो अपने कियेहुये कर्मको न मानकर अपना अपमान करते हैं इसमें आपका देवता कल्याण नहीं करेंगे और इसकारण से आपकी आत्माभी कल्याणकारक न होगी ३३ मैं आपकी पतिव्रता स्त्री आपके पास आई हुई हूं आप मेरा सबके सम्मुख तिरस्कार करते हैं और मेरे कहनेपर कुछ ध्यान नहीं करते इसका क्या कारण है क्या आप सुनते नहीं हैं ३४। ३५ जो आप मेरी कही हुई बात न मानेंगे तो आपका शिर सौटुकड़े होकर खिलजायगा ३६ हे राजन्! पुत्र स्त्रीके अपने पतिकी आत्मासे उत्पन्न होता है और वह पुत्र पिता और सब पितरों को पुननाम नरक से उद्धार करताहै इसकारण से उस पतिकी आत्माको ब्रह्मवेत्ता मनुष्य पुत्र कहते हैं ३७। ३९ स्त्री वही है जो चतुर पुत्रवाली और पतिव्रताहो और अपने पतिको प्राणों के समान चाहै ४० स्त्री मनुष्य की आधी देह अर्थ धर्म और कामकी दाता और संसार से तारने की मूल है ४१ जिन मनुष्यों के स्त्री होती है वे क्रियावान् गृहस्थी आनन्द के करनेवाले और लक्ष्मीवान् होतेहैं ४२ अकेले में स्त्रीही मनुष्य

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

की सखा होती है और स्त्रीही दुःखको दूर करके धर्म के कामों में पिताके समान मनुष्य का हित करती है ४३ दुर्गपथमें स्त्रीही मनुष्यका विश्राम होती है और जिसके स्त्री नहीं होती उसका विश्वास कोई नहीं करताहै इससे स्त्री पुरुषकी परम गतिहै ४४ जो स्त्री पतिव्रता होती है वह मरे हुये प्रेत और नरकमें अकेले पड़े हुये अपने पतिको नरकसे उद्धार करती है ४५ और जो पतिव्रता पति से पहले मरजाती है वह प्रेत होकर पतिकी बाट देखा करती है ४६ इसकारण से मनुष्य विवाह करते हैं और इसलोक और परलोक दोनोंमें स्त्रीको पातेहैं ४७ ज्ञानी मनुष्य ऐसा कहते हैं कि आत्मा से आत्माही उत्पन्न होती है और उसकोही पुत्र कहते हैं इस कारण से मनुष्यको चाहिये पुत्रकी माता अपनी स्त्रीको अपनी माता अर्थात् जन्मभूमि के समान समझै ४८ मनुष्य अपनी स्त्रीसे उत्पन्न हुये अपने पुत्रको देखकर उसीप्रकार प्रसन्न होताहै जैसे दर्पण में मुख को देखकर आनन्द पाताहै ४९ जो मनुष्य दुःख और व्याधि से पीड़ित होतेहैं वे भी अपनी स्त्रियों को देखकर ऐसा आनन्द मानते हैं जैसे धूपसे दुःखी मनुष्य जल में प्रवेश करने स प्रसन्न होता है ५० और जो मनुष्य क्रोधी भी होता है वहभी रतिमें प्रीति और धर्मको जानकर अपनी स्त्रीका अपमान नहीं करता है ५१ स्त्रीही मनुष्यों के जन्मका कारण है जो स्त्री हो तो ऋषियों को भी प्रजा उत्पन्न करने की सामर्थ्य नहीं होसक्ती ५२ देखो मनुष्य धूलमें भरेहुये अपने पुत्रों को गोदी में लेकर हृदय से लगाते हैं ५३ फिर क्या कारण है जो तुम अपने इस पुत्र का निरादर करते हो ५४ चींटियांभी अपने अंडोंको सेती हैं परन्तु आपसे फोड़ती नहीं हैं फिर आप तो ब्रह्मज्ञहैं आप किस कारण से अपने इस पुत्रको नहीं पालते ५५ मनुष्यको वस्त्र स्त्री और जलको हृदय में लगाने से ऐसा आनन्द नहीं होता जैसा पुत्र को गोद लेने से होता है ५६ पुत्रको छाती में लगाने से ऐसा उत्तम है जैसे मनुष्यों में ब्राह्मण चौपायों में गौ और बड़ों में गुरु ५७ इससे आपको चाहिये कि अपने इस पुत्र को छाती से लगाओ संसार में इस से अधिक सुख कोई नहीं है ५८ मैंने इस आपके पुत्र को तीनवर्ष तक पेट में रक्खा और इसके जन्म के समय यह आकाशवाणी हुई थी कि यह बालक सौ अश्वमेध का करनेवाला होगा ५९। ६० देखो परदेशी मनुष्य अपने घरपर आकर पुत्रों को गोद में लेकर प्यार करते हैं और उनके मस्तक को सूंघकर प्रसन्न होते हैं ६१ आपभी जानते हैं कि जब लड़कों के जातकर्म आदि

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

संस्कार होते हैं उस समय ब्राह्मण लोग ये मंत्र वेदकी रीति से पढ़ते हैं ६२ मंत्रः ॥ अंग अंगात्संभवसि हृदयादभिजायते। आत्मा वै पुत्रनामासि सजीव-शरदां शतम् ६३ जीवितं त्वदधीनं मे संतानमपि चाक्षयम्। तस्मात् त्वं जीव मे पुत्र सुमुखी शरदां शतम् ६४ हे राजन्! यह आपकी दूसरी देह अर्थात् पुत्र आपके सब अंगों से उत्पन्न हुआ है आपको इसे जलमें प्रतिबिम्ब की समान समझना चाहिये ६५ यह पुत्र तुमसे ऐसे उत्पन्न हुआ हैं जैसे गार्हपत्य नाम अग्नि से आहवनीय अग्नि उत्पन्न की जाती है अर्थात् आपके एक स्वरूप के इस पुत्र के होने से दो स्वरूप होगये ६६ हे राजन्! थोड़े दिन हुये आप अहेर खेलने को वनमें गये थे उस समय मेरा आपका संगम कण्वऋषि के आश्रम में हुआ था ६७ मैं मेनका नाम अप्सरा और विश्वामित्र के वीर्य से उत्पन्न हुई हूं मेनका उर्वशी आदि छः अप्सराओं में सबसे श्रेष्ठ और ब्रह्मयोनि है ६८। ६९ मेरी माता मुझको हिमालय पर्वत के शिखरपर पराये पुत्र की तरह छोड़ कर चली गई थी ७० मैं नहीं जानतीहूं कि मैंने पूर्वजन्ममें क्या पाप किये हैं जिसके कारण से बाल्यावस्था में मुझको मेरी माता ने छोड़ दिया और अब इस अवस्था में आप छोड़ते हैं ७१ हे राजन्! मुझको आप भलेही छोड़दीजिये मैं अपने आश्रम को चली जाऊंगी परन्तु आपको अपने पुत्र का त्याग करना उचित नहीं है ७२ यह सुनकर राजा दुष्यंत बोला कि मैं तेरे पुत्रको कुछ नहीं जानताहूं स्त्रियां सदैव झूंठ बोला करती हैं तेरी बातपर कौन विश्वास करैगा ७३ तेरी माता निर्दयी और बंधकी है जिसने तुझको हिमालय पर्वत के शिखर पर छोड़ दिया ७४ और तेरा पिता विश्वामित्र भी निर्दयी है जिसने क्षत्रियसे ब्राह्मण होनेका लोभ किया और अप्सरा को देखकर कामासक्त होगया ७५ जो तेरा पिता महाऋषियोंमें श्रेष्ठहै और तेरी माता अप्सराओंमें उत्तम है तो तू क्यों पुंश्चली की तरह बातें करती है ७६ तेरी यह बातें विश्वास करने के योग्य नहीं हैं तुझे ऐसी बातें बनाते मेरे सम्मुख लज्जा नहीं आती है तू दुष्ट तपसिन है यहां से चलीजा ७७ भला कहां तो वह महर्षि विश्वामित्र कहां वह मेनका अप्सरा और कहां तू दीन तपसिन ७८ तेरा यह पुत्र जो बड़ा बलवान् और बड़ा शरीर रखनेवाला है थोड़ेही दिनों में क्योंकर इतना बड़ा होगया ७९ तेरी योनि निकृष्ट है और पुंश्चली के समान बोलती है तू केवल दैवइच्छा और काम रागसे मेनका अप्सरा के उत्पन्न हुई होगी ८० तेरी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सब बातें झूंठ हैं मैं तुझको कुछ नहीं जानताहूं तेरा जहां मन हो तहां जा ८१ यह सुनकर शकुन्तला बोली हे राजन् ! तुम अपने बेलके समान छेदको तो नहीं देखते हो और दूसरे के सरसोंके बराबर छेदकी निन्दा करते हो ८२ मेनका की गिनती देवताओं में है और देवता उसके साथ रहते हैं मेरा जन्म तुमसे कहीं ऊंचा है ८३ क्योंकि तुम तो केवल पृथ्वी के चलनेवाले हो और मैं आकाश में भी बिचर सक्ती हूं मेरे तुम्हारे बीचमें पृथ्वी और पहाड़ की बराबर अन्तर रहता है ८४ मैं महेन्द्र, कुबेर, यम और वरुणके घर भी जासक्तीहूं क्षमा कीजियेगा यह सच है ८५। ८६ कि जो मनुष्य कुरूप होता है वह अपने को जबतक अपना मुख दर्पणमें नहीं देखता है दूसरे से स्वरूपवान् समझता है ८७ परन्तु जब वह अपने स्वरूप को देख लेता है तब अपने और दूसरे के स्वरूप के अन्तर को जानता है ८८ स्वरूपवान् मनुष्य दूसरेका अपमान कभी नहीं करताहै और जो दुर्वचन बोलता है वही नीच होता है ८९ मूर्ख आदमी दूसरे की शुभाशुभ बातों को सुनकर अशुभ बातोंको इस प्रकार से ग्रहण कर लेता है जैसे शूकर सब चीजोंको छोड़कर विष्ठा खाताहै ९० और ज्ञानी मनुष्य उन्हीं बातों में से उत्तम बातों को ऐसे लेलेताहै जैसे हंस पानी में से दूध निकालकर पीलेता है ९१ और दुर्जन मनुष्य दूसरों को गाली देकर उसीप्रकार से प्रसन्न होता है जैसे साधु किसी को खोटा वचन कहकर दुःख पाता है ९२ और जैसे सन्तलोग वृद्धों को नमस्कार करके प्रसन्न होते हैं उसीतरह मूर्ख सज्जनों को गाली देकर सुखी होता है ९३ जो मनुष्य दोष को नहीं समझते हैं वे सदैव आनन्द में रहते हैं और मूर्खलोग दूसरों के खोट को देखा करते हैं और सब जगत् को अपना सा जानते हैं भला इससे बढ़कर संसार में क्या और हँसी होगी कि खोटा मनुष्य अच्छों को खोटा कहै ९४। ९५ क्रोधी और अधर्मी मनुष्य से नास्तिक भी डरता है तो जो पुरुष आस्तिक है वह तो अवश्य डरैगा ९६ और पुरुष अपने सदृश पुत्रको छोड़ देता है देवता उसकी लक्ष्मी को हरलेते हैं और परलोकमें भी वह सुगतिको नहीं पाता है ९७ पितरोंने भी कहाहै कि पुत्रकुल और वंशका स्थापना करनेवाला है इससे पुत्र कभी त्याज्य नहीं है ९८ मनुजीने पांच तरहके पुत्र कहे हैं एक जो अपनी स्त्री से उत्पन्न हो दूसरा जो गोद लिया जावै तीसरा जो मोल लेकर पुत्र भाव किया जावै चौथा जो पाल लिया जावै और पांचवां जिसके उपनयन आदि संस्कार किये

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जावें ९९ पुत्र मनकी प्रीतिको बढ़ाताहै और पितरों को नरक से तारताहै १०० इस कारण से हे राजन् ! आपको सत्यधर्म विचारकर पुत्रका त्याग न करना चाहिये और ऐसा कपट करना आप ऐसे नरेन्द्रसिंहों को योग्य नहीं है १०१ देखो सौ कूओंसे एक बावली सौ बावली से एक यज्ञ सौ यज्ञों से एक पुत्र और सौ पुत्रों से सत्य श्रेष्ठ है १०२ सौ अश्वमेध और सत्य बोलना इन दोनों के फलों को तराजू में रखकर तोला तो सत्य बोलना सौ अश्वमेध से भी अधिक ठहरा १०३ हे राजन् ! सब वेदोंका जानना और सब तीर्थोंमें स्नान करना भी सत्य बोलने के समान नहीं है १०४ संसार में सत्य के समान कोई धर्म नहीं है सत्यही परब्रह्म और बड़ा नियमहै आपको सत्य प्रणको छोड़ना उचित नहीं है १०५। १०६ और जो आपको असत्यही अच्छा लगता है और मेरे कहने का कुछ विश्वास नहीं है तो मैं आप चली जाऊंगी मैं आप असत्यवादी का संग नहीं करना चाहती हूं १०७ आपके मृतक होनेपर मेरा यह पुत्र सम्पूर्ण पृथ्वीका पालन करैगा १०८ इतनी कथा सुनाकर वैशंपायनजी बोले हे राजा जनमेजय ! शकुन्तला वहांसे चलदी और उसके चलेजाने के पीछे आकाशवाणी हुई कि हे राजा दुष्यन्त ! माता केवल गर्भ के स्थापन करनेका स्थानहै और पिता पुत्र है अर्थात् जो जिससे उत्पन्न हुआ है वह वही है १०९। ११० तू अपने पुत्र को पाल और शकुन्तला का अपमान मत कर क्योंकि अपने वीर्यसे उत्पन्न हुआ पुत्र अपने पितरों को यमलोक से छुटाता है १११ शकुन्तलाने सत्य कहा है यह गर्भ तेराही है और जो पुत्र उत्पन्न होता है वह निश्चय पिताकी दूसरी देह होती है ११२ तू पुत्रका पालन कर वे लोग बड़े मंदभागी होते हैं जो जीतेहुये पुत्रको त्यागकर आप जीते हैं ११३ अब तू अपने इस शकुन्तला से उत्पन्न हुये पुत्र को हमारी आज्ञा से पाल और हमने इसके पालने की आज्ञा दी इस कारण से इसका नाम भरत रक्खो यह सुनकर ११४। ११५ राजा प्रसन्न हुआ और अपने मंत्री और पुरोहित आदि से बोला कि तुम लोगों ने भी यह देवदूत की आकाशवाणी सुनी है हमने जान लिया था कि यह हमाराही पुत्र है परन्तु लोक के भय से उसको ग्रहण नहीं किया था अब इसके ग्रहण करने से सब मनुष्य शुद्ध कहैंगे और जो हम इसको पहिलेही ग्रहण करलेते तो सब कोई शंका करता ११६। ११७ वैशंपायनजी बोले हे जनमेजय ! ऐसा कहके राजा अपने पुत्रको बड़ी प्रसन्नता

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

से ग्रहण किया और उसके जन्म आदिका संस्कार करके उसको गोदीमें बिठाया और उसके मस्तक को सूंघकर उसे अपने हृदय से लगा लिया उस समय राजा को परम आनन्द हुआ तब ब्राह्मण और बन्दीजनों ने राजा की स्तुति को पढ़ा ११८। १२० इसके पीछे राजाने अपनी स्त्री शाकुन्तलाका आदर किया और उससे यह शांतमय वचन बोला १२१ कि मेरा सम्बन्ध तेरे साथ लोकके परोक्ष में हुआथा इस कारण से मैंने तेरी शुद्धि के अर्थ लोक के भयसे तुझसे अनुचित कहा तू उसको क्षमा कर और तैंने जो क्रोध में मुझसे अनुचित बातें कही हैं उनको मैं क्षमा करताहूं १२२। १२४ ऐसा कहके राजाने उस अपनी प्यारी पटरानी को सुन्दर भूषण वस्त्र और भोजन आदि दिये १२५ इसके पीछे राजाने उस पुत्र का नाम भरत रखके उसका यौवराज्याभिषेक किया १२६ भरत बड़ा चक्रवर्ती राजा हुआ उसने अपने बल से सम्पूर्ण पृथ्वी के राजाओं को जीतकर अपने वश में किया और बड़ा यश पाया उसके राज्य में चारोधर्म नीति के अनुसार होते थे राजा भरतने इन्द्रके समान बड़े बड़े यज्ञ किये १२७। १२९ कण्वऋषि ने भरतको गोबितत और अश्वमेध यज्ञ कराये और भरत ने उन यज्ञों में कण्वऋषि को दश शंख धन दिया १३० यह भरत वंश और जितने पहले और पिछले राजालोग जो भारत कहलाते हैं सब इन्हीं भरत के वंशमें हैं १३१ इस भरत वंशमें बहुतसे देवता और ब्राह्मणों के तुल्य बड़े बड़े पराक्रमी राजा उत्पन्न हुये उनके नाम मैं कहांतक कहूं परन्तु उनमेंसे जो मुख्य मुख्य वंश के चलानेवाले हुये उनका वर्णन करताहूं १३२। १३३॥

इति श्रीभाषामहाभारते आदिपर्वणि चतुस्सप्ततितमोऽध्यायः ७४॥

पञ्चत्तरवां अध्याय।

दक्षप्रजापति वैवस्वतमनु भरत कुरु अजमीढ़ यादव और कौरव आदि वंशोंके उत्पन्न होनेकी कथा॥

वैशम्पायनजी बोले हे राजा जनमेजय! अब मैं तुमसे दक्षप्रजापति, वैवस्वतमनु, भरत, कुरु, अजमीढ़, यादव, कौरव और भरत आदि वंशों की कथा कहताहूं यह कथा धन यश और आयुको देनेवाली है १। २ पहले प्राचेतस के दशपुत्र बड़े तेजस्वी महर्षि संत और पुण्यात्मा उत्पन्न हुये और उनके मुखसे उत्पन्न हुई अग्निने सब वनोंको भस्म कर दिया ३। ४ उन प्राचेतसों से दक्ष

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्रजापति उत्पन्न हुये और दक्षसे संपूर्ण प्रजा उत्पन्न हुई ५ प्रथम दक्षके वीरणी स्त्री से एकहजार पुत्र दक्षके समान तेजधारी उत्पन्न हुये ६ उनको नारदजीने मोक्ष विद्या और सांख्य ज्ञान जिससे बढ़कर दूसरी वस्तु नहीं है पढ़ाया ७ इन पुत्रों के पीछे दक्षके पचास पुत्री हुई और दक्षने प्रजाको उत्पन्न करने के लिये १० पुत्री धर्मराज को १३ कश्यपजी को और २७ चन्द्रमा को विवाहदीं ८। ९ जो १३ पुत्री कश्यपजीको विवाहीथीं उनमेंसे सबसे बड़ी अदिति नामके इन्द्रादिक बारह आदित्य और विवस्वत उत्पन्न हुये और विवस्वत के यमराज पुत्रहुये १०।११ सूर्य के मनु और यम ये दोनों पुत्रभी उत्पन्न हुये १२ उनमेंसे मनुजी बड़े बुद्धिमान् और धर्मात्माथे और उन्हीं मनुके वंशमें उत्पन्न होने से सबलोग मानव कहलाते हैं १३ उन्हीं मनु से ब्राह्मण और क्षत्रिय उत्पन्न हुये हैं इसी कारण से क्षत्रियकुलका ब्राह्मणकुलके साथ मिलाप हुआ है १४ मनुके वंश में जो ब्राह्मण हुये उन्होंने वेदों को अंगोंसहित पढ़ा और वेनु, धृष्णु, नरिष्यंत, नाभाग, इक्ष्वाकु, कारूष, शर्याति, प्रषध्र और नाभाग ऋषि ये नव क्षत्रिय राजा और दशमी इलानाम पुत्री क्षत्रियकुलमें हुये इनके सिवाय मनुजी के पचास और भी पुत्र उत्पन्न हुये थे परन्तु वे आपस में वैरभाव रखने के कारण से सब नष्ट होगये और इला के पुरूरवा नाम पुत्र उत्पन्न हुआ परन्तु उसके पिताका नाम सुनने में नहीं आया १५। १८ पुरूरवा ने तेरह समुद्रों के द्वीपों का राज्य किया और अपने बलके गर्व से अंधा होकर उसने ब्राह्मणों के धनको छीन लिया ब्राह्मणों ने बहुत कुछ पुकार की परन्तु उसने कुछ नहीं सुना १९। २० इसके पीछे सनत्कुमार आदि ऋषियों ने आकर पुरूरवा को ऐसा अधर्म न करने की शिक्षा की परन्तु उसने उनकी शिक्षा को नहीं माना और उनके शापसे वह शीघ्र नष्ट होगया २१। २२ यह वही पुरूरवा है जो गन्धर्वलोक से अग्नि को लाया और तीन प्रकारके यज्ञों के लिये उसकी स्थापना की और उर्वशीअप्सरा से भी उसका समागम हुआ २३ उससे पुरूरवा के छः पुत्र उत्पन्न हुये उनके नाम ये हैं आयुधीमान् और अमावसु, दृढ़ायु, वनायु, शतायु २४ और नहुष, वृद्धशर्मा, राजिगय, अनेनस इनको स्वर्भानवी और आयुके पुत्र कहते हैं २५ राजा नहुष बड़ा पराक्रमी हुआ और उसने अपना राज्य बड़े धर्म से किया २६ यह वही राजा नहुष है जिसने पितर, देवता, ऋषि, विप्र, गन्धर्व, उरग, राक्षस,

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य सबका पालन किया चोरों को मारकर ऋषियों से कर लिया और उनको अपने यानमें पशुकी तरह जोता और अपनी देही की कांति पराक्रम तप बुद्धि और इन्द्रियों के बलसे सब देवताओं का तिरस्कार करके स्वर्गका राज्य किया २७। २९ उसके छः पुत्र हुये यति १ ययाति २ संपाति ३ आयाति ४ अयति ५ और ध्रुव ६। ३० इनमें से यति तो योगाभ्यास में स्थित होकर ब्रह्मभूत मुनि होगये और ययाति ने सम्पूर्ण पृथ्वी का राज्य किया राजा ययातिने अपनी प्रजा का पालन धर्मसे किया और बहुत से यज्ञों को करके पितर और देवताओं को बड़ी भक्तिसे पूजा ३१। ३२ उसके दो पुत्र यदु और तुर्वसु देवयानी स्त्री से और दो पुत्र द्रुह्य और अनुरूप शर्मिष्ठा से बड़े धनुर्द्धारी और गुणवान् उत्पन्न हुये ३३। ३५ राजा ययातिने बहुत दिनों तक सुखपूर्वक राज्य किया और वृद्धावस्था के आनेपर एक दिन उन्होंने अपने चारों पुत्रों को बुलाकर स्त्रीभोग करने की इच्छासे कहा हे पुत्रो! हमारी अब वृद्धावस्था है परन्तु हम अभी स्त्रियों के साथ विहार करना चाहते हैं इससे तुम लोग हमारी सहायता करो हमको अपनी जवानी देदो और हमारा बुढ़ापा और राज्य लेकर उसके बदले में भोगो यह सुनकर देवयानी का बड़ा पुत्र बोला कि हमारी युवावस्था से आपका क्या काम निकलेगा ययाति बोले कि तुममें से कोई मेरे बुढ़ापे को ग्रहण करके राज्य करो और अपनी जवानी मुझको देदो मेरे बहुत यज्ञ करने के कारण से मुझे शुक्रने यह शाप दिया है कि तू कामातुर होजा सो मुझको कामदेव पीड़ा देता है मैं नये शरीर से नई स्त्रियों से भोग करना चाहता हूं ३६। ४१ यह सुनकर ययाति के तीन बड़े लड़कों ने अपनी जवानी देने से निषेध किया और पुरु नाम सबसे छोटे ने कहा कि महाराज बहुत अच्छा आप मेरी जवानी को लेकर भोग करिये मैं आपके बुढ़ापे को लेकर राज्य करूंगा ४२। ४३ यह सुनकर राजा ययाति ने अपने तपोबल से अपने बुढ़ापे को अपने पुत्र पुरु के शरीर में प्रवेश कर दिया और उसके यौवन को आप ले लिया ४४ पुरु पिताकी वृद्धावस्था लेकर राज्य करने लगा और ययाति अपने पुत्रके यौवनसे स्त्रियोंमें विहार करने लगा ४५ एक सहस्र वर्षतक राजा स्त्रियों के साथ विहार करता रहा और चैत्ररथ नाम वनमें विश्वाची से भी भोग किया परन्तु उसका कामदेव तृप्त नहीं हुआ राजा इस बातको समझकर विचारने लगा ४६। ४८ कि कामदेव भोग करनेसे कभी तृप्त

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इस प्रकार से नहीं होता है जैसे घृत से अग्नि घटती नहीं है बढ़तीही जाती है ४९ यह कामदेव ऐसा प्रबल है कि इसको सब पृथ्वी सुवर्ण पशु और स्त्रियां भी तृप्त नहीं कर सक्ती हैं इससे मुझको भी अपना चित्त विषय की इच्छा से अलग करना चाहिये ५० और मनुष्य ब्रह्म को तभी पाता है जब मन वाणी और कर्म से कभी पाप नहीं करता है ५१ न किसी से डरता है और न कोई इससे भयभीत होता है और न किसी से कुछ इच्छा या द्वेष करता है ५२ राजा ययाति ने ऐसा विचार करके अपने मनको विषय की तरफ से खींच लिया और अपने पुत्र से अपने बुढ़ापे को लेकर पुत्र को राज्य दिया और उससे कहा ५३। ५४ कि तू मेरा पुत्र है तुझसे जो आगे वंश होगा वह पौरववंश कहलावैगा ५५ इतनी कथा सुनाकर वैशम्पायनजी बोले हे राजा जनमेजय! राजा ययाति इस प्रकार से अपने पुत्र को राज्य देकर भृगुतुंगस्थान में जाकर तपस्या करने लगे और अनशन महाव्रत को करके अपनी स्त्री सहित स्वर्ग-वासी हुये ५६। ५७॥

इति श्रीभाषामहाभारते आदिपर्वणि पञ्चसप्ततितमोऽध्यायः ७५ ॥

छिहत्तरवां अध्याय।

राजा ययाति को देवयानी शुक्रकी बेटी के मिलने की कथा ॥

जनमेजयने कहा हे वैशम्पायनजी! राजा ययाति जो प्रजापति से दशवीं पीढ़ी में है उसने दुर्लभ शुक्रकी कन्या किस प्रकार से पाई १ उसको मैं विस्तार सहित सुना चाहता हूं कृपा करके कहिये २ यह सुनकर वैशम्पायनजी बोले कि राजा ययाति देवराज के समान तेजस्वी था उसके साथ शुक्र की कन्या देवयानी का संयोग इस प्रकार से हुआ ३। ४ कि एक समय देवता और दैत्य दोनों में तीनों लोक के राज्य करने की इच्छा से परस्पर बड़ा वैर बढ़गया देवताओं ने असुरों के जीतने के लिये बृहस्पतिजी को और असुरोंने देवताओं से जय लेने के निमित्त शुक्रजी को आचार्य बनाया ५। ६ इसके पीछे उन दोनों में बड़ा युद्ध हुआ उसमें जो दैत्य मारे गये थे उनको शुक्रजी ने अपनी संजीवनी विद्या से जिला दिया और वे दैत्य फिर देवताओं से युद्ध करने लगे और जो देवता उस युद्ध में मारे गये उनको बृहस्पतिजी संजीवनी विद्या न जानने के कारण से न जिला सके इस बात को जानकर देवता बड़े खिन्नचित्त हुये ७। १० और शुक्र के भय से भयभीत हो कर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बृहस्पतिजी के बड़े पुत्र कच नाम के पास गये और उससे कहा कि हम सब सेवकों की आपसे प्रार्थना है शुक्रजी जिन दैत्यों को हम युद्ध में मार डालते हैं उनको संजीवनी विद्या से जिला देते हैं सो आप कोई ऐसा उपाय कीजिये जिसमें शुक्रसे वह विद्या हाथ आवै हमारी समझसे तुम अभी जवान हो तुम शुक्रजी के पास चले जाओ वे वृषपर्वादैत्य के पास रहते हैं और दैत्यों की रक्षा करते हैं और उनकी खूब सेवा करके उनसे संजीवनी विद्या को सीख आओ हमको निश्चय है कि तुम अपने शील स्वभाव, चतुराई, मधुर बोली और धर्म से शुक्र और उनकी पुत्री देवयानी को प्रसन्न करके संजीवनी विद्या सीख आओगे ११। १६ कच यह सुनकर देवताओं से बोला कि बहुत अच्छा मैं ऐसाही करूंगा यह कहकर वहां से वृषपर्वा के पास चल दिया १७ और उसकी पुरी में जाकर शुक्रजी के पास गया और दण्डवत् करके बोला कि महाराज मैं अंगिरस ऋषि का पौत्र और बृहस्पतिजी का पुत्र हूं आपका शिष्य होना चाहता हूं मैं एक सहस्र वर्षतक शिष्य होकर आपकी सेवा करूंगा और ब्रह्मचर्यविधान को आपके पास करूंगा १८। २० यह सुनकर शुक्रजी बोले कि तेरा आना अच्छा हुआ तू पूजन योग्यहै ठहर २१ वैशंपायन जी बोले हे जनमेजय! कच शुक्रजीकी आज्ञा पर बहुत अच्छा ऐसा कहकर ठहर गया और शुक्रजीके उपदेश किये हुये ब्रह्मचर्यव्रतको करनेलगा २२ और शुक्रजी और उनकी कन्या देवयानी दोनों की अच्छीतरह सेवा की कचने अपनी युवावस्था में नाचने गाने बजाने और फल फूल आदि लाकर देने से देवयानी को बहुत प्रसन्न किया २३। २५ और देवयानी भी उसपर बहुत लाड़ करके उसके साथ एकान्तमें क्रीड़ा करनेलगी इस अवसरमें कचको यही काम करते पांच सौ वर्ष बीत गये एक समय दैत्यों ने कच को यह जान कर २६। २७ कि यह बृहस्पतिका पुत्र है अकेला वनमें गाय चरातेमें मारडाला और उसके मांसको टुकड़े २ करके कुत्ते और गीदड़ों को खिला दिया २८ जब संध्या हुई और गायें घरको विना कचके लौट आईं तब देवयानीने संदेह करके शुक्रजी से कहा कि महाराज आप अग्निहोत्र करचुके और सूर्य अस्त होगये परन्तु कच अभीतक नहीं आया है मुझको जान पड़ता है कि उसको किसी ने मारडाला हैं मैं भी कचके विना अपने प्राणों को त्याग दूंगी २९। ३२ यह सुनकर शुक्रजी ने देवयानी से कहा यहां आ मैं मरे हुये कचको जियाता हूं

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

और ऐसा कहकर शुक्रजी ने संजीवनी विद्याका प्रयोग करके कचको बुलाया और वह शरीरोंको फाड़कर बाहर निकल आया ३३।३४ उस समय देवयानी ने कच से पूछा कि तुझको इतनी देर कहां लगी कच बोला कि मैं कुशा और समिधा लेकर गौओं सहित एक वटके पेड़के नीचे विश्राम कर रहा था उस समय कुछ दैत्योंने मुझसे आकर पूछा कि तू कौन है मैंने कहा कि मैं बृहस्पति का पुत्र हूं और मेरा नाम कच है ऐसा कहने पर दैत्योंने मुझको मार और चूर्ण कर शालावृकों को खिला दिया और आप चले गये ३५।३८ अब मैं महात्मा शुक्रजी की विद्यासे फिर जी आयाहूं ३९ कच फिर पूर्ववत् देवयानी की सेवा करने लगा थोड़े दिनों में दैवइच्छा से देवयानी ने उसको फूल लानेको भेजा दैत्योंने उसको पहिंचान लिया और फिर मारकर समुद्रमें पिष्टीसी करके डाल दिया ४०। ४१ जब देर हुई और वह नहीं आया तब देवयानीने फिर शुक्रजी से कहा और उन्होंने उसको संजीवनी विद्या से फिर बुलाया वह बुलातेही जलमें से निकलकर चला आया और सब वृत्तान्त कह सुनाया ४२ इसके पीछे दैत्यों ने तीसरी बेर कच को मारकर भस्म कर दिया और उस भस्मको वारुणी के साथ शुक्रजी को पिला दिया ४३ जब देर हुई और कच नहीं आया तब देवयानीने शुक्रजी से फिर कहा कि मैंने कचको फूल लेने भेजा था अभीतक नहीं आया है ऐसा जान पड़ता है कि उसको फिर किसीने मारडाला हे महाराज! उसके विना मेरे भी प्राण नहीं बचेंगे मैं आपसे सत्य कहती हूं ४४।४५ यह सुनकर शुक्रजी बोले कि हे देवयानी! बृहस्पति का बेटा कच मरकर प्रेत होगया है हमने उसको कई बार जिलाया परन्तु वह बेर बेर मारा जाताहै इस में मेरे करनेका कुछ काम नहीं है ४६ तू क्यों इतना रोती और शोच करती है तुझको हमारे प्रभावसे ब्राह्मण, इन्द्रसहित अष्टवसु, अश्विनीकुमार, असुर और सब जगत्के जीव नमस्कार करते हैं यह ब्राह्मण अब नहीं जीसक्ता और कदापि जीवे भी तो फिर मारा जायगा ४७। ४८ यह सुनकर देवयानी बोली कि वह अंगिरस ऋषिका पौत्र और बृहस्पतिका पुत्र है उसके मरने से ऋषिके कुलका नाश होताहै मैं उसके लिये क्योंकर शोच न करूं ४९ इसके सिवाय वह ब्रह्मचारी तपोधन का रखनेवाला सब कामों में चतुर और मेरा परम प्रिय है जो वह नहीं जीवेगा तो मैं भी उसी लोक को चली जाऊंगी जिस लोक को कच गया है ५० वैशम्पायन बोले हे जनमेजय! शुक्रजी ने देवयानी की उक्त

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बातों को सुनकर असुरों को बुलाया और क्रोधसे कहा कि तुम लोग हमसे द्वेष रखते हो जो हमारे शिष्योंको मार डालते हो ५१ हम जानते हैं कि तुम लोग हमको भी अब्राह्मण किया चाहतेहो जैसे आप नित्य खोटे और रौद्र कर्म किया करते हो ऐसा पाप अब न होवे क्योंकि ब्रह्महत्या इन्द्रको भी जला देती है ५२ इसके पीछे जब शुक्रजी ने मन्त्र से कच को बुलाया तब वह धीरे से शुक्रजी के पेट में बोला यह देखकर शुक्रजी ने पूछा कि हमारे पेट में तू किस राह से गया है ५३ यह सुनकर कच बोला कि महाराज मुझको असुरों ने भस्म करके मद्य के साथ आपको पिला दिया है आपकी कृपा से मेरी स्मृति नहीं गई है मुझको सब वृत्तान्त ज्यों का त्यों याद है परन्तु उदर से निकलने में आपके मरने और तप के क्षय होने का भय है और उदर में रहने से मुझको बड़ा कष्ट मालूम होता है इसके सिवाय आपमें दैवी ब्राह्मी और आसुरी तीनों माया स्थित हैं मैं क्योंकर उनको उल्लंघन कर सक्ता हूं ५४। ५५ यह सुनकर शुक्रजी देवयानी से बोले कि अब मैं क्या करूं कच विना मेरे मरे पेटके भीतर से नहीं निकल सक्ता है ५६ देवयानी बोली कि कचका मरना और आपका उपघात मुझको दोनों अग्निके समान जलाते हैं मेरा कल्याण दोनों में से किसी में नहीं है ५७ यह सुनकर शुक्रजी ने कच से कहा कि जो तू कच-रूपी इन्द्र नहीं है तो मैं तुझको संजीवनी विद्या देता हूं तू मेरे पेटके बाहर निकलकर मुझको जिला दीजो विश्वासघात मत करियो मैं तेरा गुरु हूं क्योंकि मैं तुझको यह विद्या देताहूं तुझको भी गुरुके साथ धर्मका बर्ताव करना चाहिये और मेरे पेट में गया हुआ ब्राह्मणके सिवाय दूसरा निकल नहीं सक्ताहै५८।६० वैशम्पायनजी बोले हे राजा जनमेजय! शुक्रजीने ऐसा कहकर कचको संजीवनी विद्या दी और वह शुक्रके पेटको फाड़कर पूर्णमासी के चन्द्रमा के समान बाहर निकलआया ६१ और अपने गुरुको उस विद्यासे जिलाकर विद्या पाने के कारण से गुरुको नमस्कार किया और विनयपूर्वक बोला ६२ कि महाराज आपने मुझको संजीवनी विद्या दी है आप मेरे माता और पिता के समान हैं मैं आपसे द्रोह कभी नहीं करूंगा ६३ जो मनुष्य विद्याके देनेवाले परम पूजनीय गुरुका आदर नहीं करते हैं वे नरकगामी होते हैं ६४ वैशंपायनजी बोले हे जनमेजय! इसके पीछे शुक्रजीने सुरापान करना स्मरण करके जिसके कारण से उनका ज्ञान नष्ट होगया था और ज्ञान नष्ट होनेसे ऐसी ठगाई में

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आगये थे बड़ा क्रोध किया और ब्राह्मणोंका हित करने के लिये यह बोले ६५। ६६ मैं सब ब्राह्मण और लोकोंको सुनाकर यह मर्यादा स्थापित करता हूं कि आजके दिनसे जो कोई ब्राह्मण मद्यपान करेगा वह धर्मरहित होकर इस लोक में निंदित किया जायगा और उसको ब्रह्महत्या का पाप लगेगा ६७। ६८ यह कहकर शुक्रजीने सब दानवोंको बुलाया और कहा कि यह कच ब्राह्मण जो हमारे पास रहता है महात्मा और ब्रह्मभूत है और मुझसे संजीवनी विद्या पाकर मेरे तुल्य प्रभाव का रखनेवाला है ६९। ७० यह कहकर शुक्रजी चुप हो रहे और सब दानव आश्चर्य करते हुये अपने अपने घरोंको चलेगये ७१ इसके पीछे कचने वहां रहकर एकसहस्र वर्ष पूर्ण किया उपरान्त अपने घर जाने को आज्ञा मांगी ७२ ॥

इति श्रीभाषामहाभारते आदिपर्वणि षट्सप्ततितमोऽध्यायः ७६ ॥

सतहत्तरवां अध्याय।

देवयानीका कचसे पाणिग्रहण करनेको कहना कचका निषेध करना और देवयानी और कचका आपस में शाप देना ॥

वैशंपायनजी बोले हे राजा जनमेजय ! जब कच अपने ब्रह्मचर्यव्रतको पूरा कर गुरुसे आज्ञा पाकर स्वर्गके जानेको हुआ तब देवयानीने उससे कहा १ कि तुम अंगिरसऋषि के पौत्रहो और तपस्वी तेजस्वी और विद्यावान्हो २ तुम्हारे दादा अंगिरस और पिता बृहस्पतिजी दोनों हमारे पिताके मान्यहैं ३ मैं तुमसे एक बात कहना चाहती हूं उसको तुम अपने व्रतके समय मेरे बर्ताव पर ध्यान करके अंगीकार करो ४ वह बात यह है कि तुमने विद्या पाई और अब अपने में मेरी प्रीतिको जानकर मेरा पाणिग्रहण करो ५ यह सुनकर कच बोला कि हे देवयानी ! तू मेरे गुरुकी पुत्री है और गुरुजीको प्राणसे अधिक प्यारी है मुझको जैसे गुरु महाराज पूज्य और मान्यहैं उसीतरह तू भी पूजनीय है तुझको मुझसे ऐसी बात कहना उचित नहींहै ६। ८ यह सुनकर देवयानी बोली कि तुम अंगिरसऋषि के पौत्रहो और अंगिरसऋषि मेरे पिता के मान्य हैं इसकारण से तुम भी मेरे मान्यहो ९ इसके सिवाय तुमको पिछली बातों को स्मरण करना चाहिये कि जब तुमको दैत्यों ने मारडाला था तब मैंने तुम्हारे जिलाने के लिये क्या क्या काम किये थे और मेरी जैसी कुछ प्रीति तुमसे रही उसपर ध्यान करके तुमको मुझ निरपराधको त्याग करना

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उचित नहीं है १०।११ यह सुनकर कच बोला कि तू मुझको वह काम करने को कहती है जो करने के योग्य नहीं है तू मुझको गुरुसे भी अधिक मान्यहै क्योंकि मैंने शुक्रजी की कोखमें वास किया है और इस कारणसे तू भी मेरी बहिन है इससे तू मुझसे ऐसी बात मत कहे मैं तेरे पास बहुत सुखसे रहा हूं तू मुझपर प्रसन्न हो और मुझे जानेकी आज्ञा देकर मार्ग में मेरे कल्याण होनेका आशीर्वाद दे और मुझको धर्ममार्ग से याद करियो १२।१५ देवयानी बोली कि तू मुझको धर्म और कामार्थ में मांगती हुई को त्याग करताहै इससे तेरी विद्या सफल न होगी १६ यह सुनकर कचने कहा देवयानी तू मेरी गुरु-पुत्री है इस कारण से उत्तर देताहूं कि तैंने मुझको कामासक्त होकर निरपराध शापदिया तुझे ऐसा करना योग्य न था क्योंकि मैंने तुझसे धर्मकी बात कहीथी और सिवाय इसके मुझको ऐसा काम करने को गुरुजीने भी आज्ञा नहीं दीथी तैंने यह शाप धर्म से नहीं दिया अपनी इच्छानुसार दिया है इससे मैंभी शाप देताहूं कि तुझको पाणिग्रहण के अर्थ ऋषिपुत्र नहीं मिलेगा १७।१९ और तुमने कहा कि तुमको विद्या नहीं फलेगी सो कुछ संदेहकी बात नहीं है मैं इस विद्या को जिसको पढ़ाऊंगा उसको फलीभूत होगी २० वैशम्पायनजी बोले हे जनमेजय! कच देवयानी से इस प्रकार वार्तालाप करके स्वर्गको चलदिया २१ और जब अपने पिताके घर पहुँचा तब उससे इन्द्रादिक देवताओं ने जो वहां पहिलेही से आगये थे कहा २२ कि तुमने हमारा बड़ा काम हमारे हित के लिये किया है इससे तुम्हारा यश संसार में सदैव बनारहेगा और तुम यज्ञों में भागभी पायाकरोगे २३ ॥

इति श्रीभाषामहाभारते आदिपर्वणि सप्तसप्ततितमोऽध्यायः ७७ ॥

अठहत्तरवां अध्याय।

देवयानी और वृषपर्वा दैत्यकी बेटी शर्मिष्ठा के विवादकी कथा ॥

वैशम्पायनजी बोले हे राजा जनमेजय! जब सब देवता कचसे संजीवनी विद्या पढ़कर कृतार्थरूप और मरने से निर्भय होगये तब सबके सब इन्द्रके पास जाकर बोले कि अब पराक्रम करनेका समयहै चलकर सब शत्रुओं को मारलो १। २ इंद्र बोले बहुत अच्छा चलो राहमें उन्होंने एक सरोवरमें कुछ स्त्रियों को स्नान करते देखा ३ उस समय इन्द्रने वायु होकर उन स्त्रियों के वस्त्रों को उड़ाकर मिला दिया ४ जबवे स्त्रियां जलसे नंगी होकर बाहर आईं तब उन्होंने जल्दीमें जिसका

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वस्त्र जिसके हाथ आया उसने उसीका पहिन लिया ५ उस समय देवयानी के वस्त्र शर्मिष्ठानाम वृषपर्वा दैत्यकी कन्याने भूलसे पहिन लिये ६ इस कारणसे उन दोनों में कलह होनेलगी ७ देवयानी बोली कि हे शर्मिष्ठा ! तूने शिष्य होकर मेरे वस्त्रोंको क्यों पहिनलिया है तेरे लिये इसमें अच्छा न होगा ८ यह सुनकर शर्मिष्ठा बोली कि तेरा बाप नीचे खड़ा होकर मेरे पिताकी बन्दीजनों के समान स्तुति किया करता है और मेरा पिता बैठा रहता और सोया करता है ९ मुझसे तुझमें बड़ा अन्तर है तू भिखारी दान लेनेवाले और स्तुति करनेवाले की बेटी है और मैं स्तूयमान दाता और कभी कुछ न लेनेवाले की पुत्री हूं १० अरी भिखारिनि ! तू चाहे रो चाहे छाती पीट चाहे क्रोध कर मैं तुझको कुछ नहीं गिनतीहूं तू विना शस्त्र और निर्धन होकर मुझ सायुधसे वैर बांधती है ११ वैशम्पायनजी बोले हे राजा जनमेजय ! शर्मिष्ठाने ऐसा कहके देवयानी को कुयें में डाल दिया और क्रोधके आवेशमें वह पापिनी यहसमझकरकि यह मरगईवहां से विना विचारे घरको चली आई १२ । १३ इसी अवसर में राजा ययाति जो उस देश में अहेर मारने आये थे पियासे होनेके कारण से उस कुयेंपर जिसमें देवयानी पड़ी थी गये और उसमें उस परमसुन्दरी कन्याको देखकर उसे धैर्य देकर बोले कि तू कौन है किसकी बेटी है और इस घासफूस से घिरे हुये कुयें में दिव्य मणिजटित कुण्डल धारण किये हुये कुछ शोचती सी ध्यानसा लगाये हुये क्यों पड़ी है १४ । १८ यह सुनकर देवयानी बोली कि मैं शुक्रजी की बेटी हूं जो देवताओं से मारे हुये दैत्यों को जिला देते हैं मेरे बाप को मेरी यह गति होने की खबर नहीं है १९ हे राजा ययाति ! तुम बड़े कुलीन पराक्रमी और यशस्वीहो इस कारण से मेरे दहिने हाथ को पकड़कर मुझको इस कुयें में से निकालो २० । २१ राजा ययाति ने यह सुनकर उस को ब्राह्मणी जान उसका दहिना हाथ पकड़ कुयेंसे बाहर निकाला और वहां से अपने घरको शीघ्र चलेगये २२ । २३ उनके चलेजाने पर शोक से दुःखी देवयानी ने अपनी पूर्णिका नाम दासी से जो वहां पहले से आगई थी कहा २४ कि तू जल्दी से जाकर मेरे पिता से यह सब वृत्तान्त कहदे मैं अब वृषपर्वा के नगर में नहीं जाऊंगी २५ वैशम्पायनजी बोले हे जनमेजय ! वह पूर्णिका दासी देवयानी की आज्ञा पाकर सम्भ्रमचित्त होकर शुक्रजी के पास आई और वन में देवयानी और शर्मिष्ठा की लड़ाई होने का सब वृत्तान्त कह

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सुनाया २६। २७ शुक्रजी पुत्रीका हाल सुनकर बड़े दुःखी हुये और वहां से वन में ढूंढ़तेहुये देवयानी के पास आकर उससे मिलकर बोले २८। २९ कि मनुष्य अपने कर्मों के अनुसार सुख और दुःख पाता है तैंने कुछ अपराध किया है जिससे तेरी यह गति हुई देवयानी बोली कि मैंने कुछ अपराध किया हो या नहीं परन्तु मैं वृषपर्वाकी बेटी शर्मिष्ठा की कहन को आपसे कहतीहूं आप उसको सावधान होकर सुनिये ३०। ३१ उसने क्रोध से लाल नेत्र करके बड़े घमण्ड से मुझसे बेर बेर यह कहा कि तू भिखारी स्तुति करनेवाले और दान लेनेवाले की बेटी है और मैं स्तूयमान दाता और दान न लेनेवालेकी पुत्री हूं ३२। ३४ सो हे पिता! जो मैं ऐसीही हूं जैसा मुझको शर्मिष्ठाने कहाहै तो मैं शर्मिष्ठा को प्रसन्न करूंगी और उसको सखीभावसे मानूंगी ३५ यह सुनकर शुक्रजी बोले कि तू स्तुति करनेवाले और दान लेनेवाले की बेटी नहीं है तेरा पिता स्तूयमान है अर्थात् तेरे पिताकी सब कोई स्तुति करता है ३६ वृषपर्वा इन्द्र और राजा ययाति इस बातको जानते हैं कि मेरा ऐश्वर्य बल निर्द्वन्द्व और अचिन्त्य ब्रह्म है ३७ हमसे ब्रह्माजीने कहा है कि तुम जो कुछ पृथ्वी और स्वर्ग में वस्तु दीखती हैं सबके ईश्वरहो ३८ हमहीं पृथ्वीपर जल वर्षाकर सब ओषधियों को पुष्ट करते हैं ३९ वैशम्पायनजी बोले हे जनमेजय! शुक्रजी ने क्रोध और विषादयुक्त अपनी पुत्री को इस तरह की बातें कहकर समझाया ४०॥

इति श्रीभाषामहाभारते आदिपर्वणि एयष्टसप्ततितमोऽध्यायः ७८॥

उन्नासीवां अध्याय।

शुक्रजीका अपनी पुत्री देवयानी के क्रोध न करने की शिक्षा करना और देवयानी का शुक्रको उत्तर देना॥

शुक्रजी बोले हे देवयानी! जो मनुष्य दूसरों के कहे हुये निन्द्य वचनों को सहलेता है और अपने क्रोधको घोड़ेकी तरह रोककर क्षमा से उस क्रोध को शांत करता है वह सब जगत्का जीतनेवालाहै १। ५ हे पुत्री! हर महीने में यज्ञ करनेवाला और कभी किसीपर क्रोध न करनेवाला दोनों को मिलाया जावे तो क्रोध न करनेवालाही उत्तम ठहरेगा ६ जब दो बालक आपस में लड़ते हैं तब उनके माता पिता उनके लड़नेपर किसी तरहका बर्ताव नहीं करते क्योंकि बालक बल अबलको कुछ नहीं जानते ७ यह सुनकर देवयानी बोली कि मैं यद्यपि अबलाहूं परन्तु सब धर्म को क्रोध और वादके करने न

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

करने के बल अबल को अच्छी तरह जानतीहूं ८ परन्तु जब शिष्य अपने धर्म के विपरीत काम करनेलगे तब शिष्य के अपराध को क्षमा करना और उन खोटे चालके मनुष्यों में रहना मुझको अच्छा नहीं मालूम होता है ९ ज्ञानी लोग अभिजनों की निंदा करनेवाले मनुष्यों में बसना अच्छा नहीं जानते हैं किन्तु इसके विपरीतही को श्रेय समझते हैं १०। ११ वृषपर्वा की पुत्री के वाक्य मेरे हृदयको अभीतक अरणी काष्ठको अग्नि के समान जलारहे हैं १२ निर्धनी को धनवान् शत्रुकी सेवा करना किसी प्रकार से अच्छा नहीं है तीनों लोक में इससे बढ़कर कोई बुराई नहीं है और मरना इससे श्रेष्ठ है १३॥

इति श्रीभाषामहाभारते आदिपर्वएयेकोनाशीतितमोऽध्यायः ७९॥

अस्सीवां अध्याय।

शर्मिष्ठा को देवयानी की दासी होनेकी कथा॥

वैशम्पायनजी बोले हे राजा जनमेजय! शुक्रजी अपनी पुत्री की बात को सुनकर और क्रोधित होकर वृषपर्वा के पास गये और उग्र स्वरूप होकर उससे बोले कि तुम नहीं जानते हो कि गौ और पृथ्वी के समान अधर्म करने का भी फल जल्दी नहीं मिलता है किन्तु वह अधर्म करनेवाले की जड़ को धीरे धीरे काटता जाता है और जो उसके करनेवाले को नहीं मिलता है तो उसके पुत्र और पौत्रों को भोगना पड़ता है निदान अधर्म का भोग अवश्यही भोगना पड़ता है १। २ तुमने प्रथम हमारे कच नाम शिष्य को जो गुरुभक्त पुण्यात्मा परम सेवक और उत्तम ब्राह्मण आङ्गिरस ऋषिका पौत्र था मारकर हमें खिला दिया और अब हमारी देवयानी कन्या का अपमान किया ३। ४ इस कारण से अब हम तुम को भाइयों सहित छोड़कर चले जावेंगे अब हम तुम्हारे देशमें नहीं रहेंगे तुम अपने किये हुये दोषको नहीं मानते हो और हम को झूठा समझते हो ५। ६ यह सुनकर वृषपर्वा बोला कि मैं आपको अधर्मी और झूठा कभी नहीं समझता हूं आप तो धर्मात्मा और सत्यवादी हैं आप मुझसे अप्रसन्न न हूजिये ७ जो आप हमको छोड़कर चले जाइयेगा तो हमारा ठिकाना कहीं नहीं लगेगा हम लोग भी समुद्र में डूब मरेंगे ८ यह सुनकर शुक्रजी ने कहा कि तुम चाहे समुद्र में डूबो चाहे कहीं को भागजावो मैं अपनी प्राणप्यारी पुत्री देवयानी का अप्रिय नहीं कर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सक्ताहूं जो तुमको मुझे रखना है तो देवयानी को जैसे बने प्रसन्न करो क्योंकि मेरा जीवन उसी में स्थित है और मैं तुम लोगों की कुशल उसी तरह चाहा करता हूं जैसे बृहस्पतिजी इन्द्रादिक देवताओं की चाहते हैं ९। १० वृषपर्वा यह सुनकर बोला कि असुरों का जो कुछ धन हाथी घोड़ा आदि पृथ्वीपर है उस सबके और सब दैत्यों के आपही ईश्वर हैं ११ शुक्रजीने कहा कि जो तुम ऐसाही समझतेहो तो देवयानी को जाकर जैसे बने प्रसन्न करो १२ वृषपर्वा ने कहा बहुत अच्छा उस समय वे दोनों देवयानी के पास गये और शुक्रजी ने सब पूर्व वृत्तान्त कहा उसको सुनकर देवयानी बोली कि आप के कहने पर मुझको तब विश्वास होगा जब दैत्योंका राजा आप मुझसे कहे १३। १४ यह सुनकर वृषपर्वा दैत्यों का राजा बोला कि मैं तुझको दुर्लभ से दुर्लभ पदार्थ जो तू मांगेगी सो दूंगा १५ देवयानी बोली कि मैं यह चाहती हूं कि तेरी शर्मिष्ठा पुत्री अपनी हजार दासियों सहित मेरी दासी होकर मेरे पास रहे और मेरा पिता जहां मुझको देदे वहां भी वह मेरे साथ जावे १६ यह सुनकर वृषपर्वा ने धात्री को आज्ञा दी कि तू जल्दी जाकर शर्मिष्ठा को लेआ और उससे कहो कि जो कुछ देवयानी कहे सो करे १७ वैशम्पायनजी बोले हे जनमेजय! धात्री उसी समय शर्मिष्ठा के पास गई और जाकर उससे कहा कि शुक्रजी देवयानी के कारण तेरे भाईबन्दों को छोड़कर जाना चाहते हैं इस कारण से तुझको चाहिये अपने कुल के हित के लिये तू देवयानी के पास जा और जो कुछ वह तुझसे कहे उसको कर १८। १९ शर्मिष्ठा बोली कि मैं जातीहूं और देवयानी मुझसे जो कुछ कहेगी मैं वही करूंगी मेरे कारण से देवयानी के कहने से शुक्रजी न जावें २० वैशम्पायनजी बोले हे जनमेजय! शर्मिष्ठा ऐसा कहके पिता की आज्ञा से अपनी हजारों दासियों सहित पालकी में सवार हो नगरके बाहर गई और देवयानी के पास जाकर बोली कि मैं हजार दासियों सहित तेरी दासी हूं तू जो कहेगी सो मैं करूंगी और तेरा पिता जहां तुझे देगा मैं वहीं तेरे साथ जाऊंगी २१। २२ यह सुनकर देवयानी ने कहा कि तू तो स्तूयमान की बेटीहै और मैं भीख मांगनेवाले दान लेनेवाले और स्तुति करनेवाले की पुत्रीहूं तू मेरी दासी क्योंकर होगी २३ शर्मिष्ठा ने कहा कि मैं जातिभाइयों के हित करने के लिये तेरी दासी होकर जहां तेरा पिता तुझे देगा वहीं तेरे साथ जाऊंगी २४ वैशम्पायनजी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बोले हे जनमेजय ! शर्मिष्ठा के दासी होनेकी प्रतिज्ञा करनेपर देवयानी अपने पिता से बोली २५ कि मैं अब प्रसन्न होकर नगर में जाती हूं आपका विद्या बल और विज्ञान निश्चय सफल है २६ वैशम्पायन बोले हे जनमेजय ! शुक्रजी भी अपनी पुत्रीकी उक्त बात को सुनकर दैत्यों से पूजित नगर में गये २७ ॥

इति श्रीभाषामहाभारते आदिपर्वण्यशीतितमोऽध्यायः ८० ॥

इक्यासीवां अध्याय।

राजा ययाति का देवयानी से विवाह होने की कथा ॥

वैशम्पायनजी बोले हे जनमेजय ! बहुत दिन बीतने पर एक दिन देवयानी क्रीड़ा करने को उसी वनको गई १ और शर्मिष्ठा आदि हजारों दासियों सहित इच्छा के अनुसार उसी वनमें क्रीड़ा करती मद्यपान करती और फलों को खातीहुई इधर उधर बिचरने लगी उसी समय राजा ययाति भी वहां अहेर खेलता हुआ जलकी प्यास के कारण से आया और उसने देवयानी और शर्मिष्ठा आदि सब स्त्रियों को देखा २। ५ उस समय देवयानी परम सुन्दर रूप धारण किये हुये मुसुकराती हुई हजारों दासियों के मध्य में बैठी थी और शर्मिष्ठा उसकी सेवा कररही थी ६। ७ उनको देखकर राजा ययाति ने पास जाकर पूछा कि जो दो अत्यन्त सुन्दरी कन्या दो सहस्र दूसरी कन्याओं के बीचमें बैठी हुई हैं मैं उन दोनों के गोत्र और नामको सुना चाहता हूं ८ यह सुनकर देवयानी बोली कि मैं दैत्योंके गुरु शुक्रजी की और यह दैत्यों के राजा वृषपर्वा की पुत्री है मेरा नाम देवयानी और इसका नाम शर्मिष्ठा है यह मेरी दासी है और मैं जहां जाऊंगी वहां यह मेरे साथ रहेगी ९। १० राजा बोला कि यह दैत्यों के राजा की कन्या तेरी अनुचरी क्योंकर हुई ११ देवयानी ने कहा कि दैव जो चाहता है सोई होता है इसकी कथा विचित्र है तुम को सुनने से क्या काम है तुम इसको दैवकी इच्छा समझो १२ और तुम्हारा रूप और वेष राजाओं कासा मालूम होता है और बोली ब्राह्मणों कीसी है कहो क्या तुम्हारा नाम है कहांसे आये हो और किसके पुत्र हो १३ राजा बोला कि हमने ब्रह्मचर्य रहकर संपूर्ण वेदको पढ़ा है और राजा नहुष के पुत्र हैं नाम हमारा ययाति है १४ देवयानी ने कहा कि इधर किस निमित्त आये हो क्या कुछ जल से उत्पन्न पदार्थ आपको चाहिये १५ राजा ने कहा कि हम अहेर खेलते हुये प्यास के मारे इधर चले आये हैं अब तुम्हारी क्या आज्ञा है १६

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

देवयानी बोली कि आप मेरे भर्ता हूजिये मैं इन दो सहस्र कन्या और शर्मिष्ठा सहित आपके आधीन हूं १७ राजा ने कहा देवयानी तू शुक्रजी की पुत्री है मैं तेरे साथ विवाह करने के योग्य नहीं हूं १८ यह सुनकर देवयानीने कहा कि ब्राह्मणों से क्षत्रिय उत्पन्न हुये हैं और ब्राह्मण क्षत्रिय दोनों मिलेहुये भी हैं फिर तुमतो आप ऋषि के समान हो और ऋषिपुत्र हो इससे तुमको मुझसे विवाह करना अनुचित नहीं है १९ राजा बोला कि यों तो चारों वर्ण एकही देही से उत्पन्न हुये हैं परन्तु धर्म सबके जुदे २ हैं और ब्राह्मण सबसे श्रेष्ठहैं २० देवयानी बोली कि पाणिग्रहण का धर्म यह है कि जो पहिले हाथ पकड़े वही पति होता है तुमने मेरे हाथ को पहिलेही पहिल पकड़ा था इससे मैं तुमसे विवाह करना चाहती हूं मैं तपस्विनीहूं मेरा हाथ अब दूसरा नहीं पकड़ सक्ता २१।२२ राजा ने कहा कि ब्राह्मण विषधर सर्प और अग्नि से भी अधिक डरने के योग्य है २३ देवयानी बोली क्योंकर २४ राजा ने कहा कि सर्प के काटने और हथियार के मारने से एकही आदमी मरता है परन्तु ब्राह्मण के कोप से देशके देश नाश होजाते हैं २५ इससे मैं ब्राह्मण से सबसे अधिक डरता हूं और जब तक तेरा पिता तुझको अपनी प्रसन्नता से मुझको न देगा तबतक मैं तेरे साथ अपना विवाह नहीं कर सक्ता २६ देवयानी बोली कि तुम विवाह तभी करना जब मेरा पिता तुमको मुझे देवे परन्तु यों भी विवाह करने में तुमको कोई भय नहीं हो सक्ता है क्योंकि तुमतो मुझसे विवाह करने की इच्छा रखतेही नहीं हो मैंही तुमको चाहती हूं २७ यह कहकर देवयानी ने धात्री को भेज कर शीघ्र अपने पिता शुक्र को बुलवा लिया राजा ने शुक्रजी को दण्डवत् की २८।२९ और देवयानी ने अपने पिता से कहा कि यही राजा ययाति है जिसने संकटमें मेरा हाथ पकड़ा था मैं अपना विवाह इसके सिवाय दूसरे से नहीं करना चाहती हूं आप मुझे राजा को दे दीजिये ३० यह सुनकर शुक्र जी ने राजा से कहा कि मैं इस अपनी प्यारी कन्या को तुमको देता हूं तुम इसको ग्रहण करो ३१ राजा ने कहा कि महाराज वर्णसंकर के उत्पन्न होने का अधर्म मुझको न लगे ऐसा कीजिये ३२ शुक्रजी बोले कि मैं तुमको अधर्मसे छुड़ाता हूं तुम हमसे जो इच्छा हो वर मांगो ३३ और देवयानी का विवाह अपने साथ धर्म विधिसे करके प्रीतिपूर्वक रहो ३४ और यह शर्मिष्ठा नाम वृषपर्वा की कन्या भी तुम्हारे साथ है इसका भरण पोषण अच्छी तरह से करना

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

परन्तु इस के साथ सोना नहीं ३५ वैशम्पायनजी बोले हे राजा जनमेजय! राजा ययाति ने शुक्रजी की बात को सुनकर उनकी प्रदक्षिणा करी और देवयानी का विवाह अपने साथ विधिपूर्वक करके देवयानी शर्मिष्ठा और दोसहस्र कन्याओं सहित दैत्य और शुक्रजी से बिदा होकर बहुतसा धन दहेज में लेकर अपने नगर को चले आये ३६। ३८॥

इति श्रीभाषामहाभारते आदिपर्वण्येकाशीतितमोऽध्यायः ८१॥

बयासीवां अध्याय।

राजा ययाति से देवयानी और शर्मिष्ठा के एक २ पुत्र उत्पन्न होने की कथा॥

वैशम्पायनजी बोले हे जनमेजय! राजा ययाति वहां से चलकर अपने नगर में आये और देवयानी को राजमंदिर में ठहराया १ इसके पीछे राजाने शर्मिष्ठा को सहस्र दासियों सहित देवयानी की सलाह से अशोकवनिका के पास एक घर बनवाकर वास दिया २ और उसके भरण पोषण के लिये अन्न और वस्त्र आदि का बन्दोबस्त करा दिया ३ राजा ययाति देवयानी के साथ विहार करने लगे और बहुत वर्षों के उपरान्त मासिकधर्म होने पर देवयानीके गर्भ रहा और उससे उसके पहला पुत्र उत्पन्न हुआ ४। ५ इसी अवसरमें हजार वर्ष बीतने पर शर्मिष्ठा भी जवान होगई और मासिकधर्म होने पर यह विचार करने लगी कि मैंने अभीतक किसी से विवाह नहीं किया है क्या करना चाहिये जिससे मेरा ऋतुमती होना व्यर्थ न होवे देवयानी के तो पुत्र भी होगया और मेरी युवावस्था योंही जाती है मैं भी देवयानी की तरह राजा को अपना पति बनाकर उनके साथ विहार करूं ऐसा करने में राजा से मेरे निश्चय पुत्र होगा परमेश्वर ऐसा करे कि राजा मेरे पास किसी दिन अकेले आवें ६। ९ दैवयोग से राजा वहां एक दिन शर्मिष्ठा को देखने चले गये शर्मिष्ठा उनको अकेले देखकर हाथ जोड़कर बोली १०। ११ कि महाराज आपके घर की स्त्रियोंको चन्द्रमा इन्द्र विष्णु यम और वरुणभी नहीं देखसक्ते हैं दूसरेकी क्या गिनती है और आप मेरे भी रूप कुल और शील स्वभाव को जानते हैं इस कारण से मैं आपकी प्रसन्नतापूर्वक आपसे रतिदान मांगतीहूं १२। १३ राजा ने यह सुनकर कहा कि मैं तेरे शील स्वभावको अच्छीतरह जानताहूं और तेरे स्वरूप में भी किसी प्रकारकी कसर नहीं है परन्तु देवयानी के विवाहके समय शुक्रजी ने मुझसे यह कहाथा कि तुम शर्मिष्ठा के साथ शयन मत करना इस

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कारण से मुझे यह काम करना योग्य नहीं है १४। १५ शर्मिष्ठाने कहा कि क्रीड़ा, स्त्रीके पास, प्राणके भयमें, विवाह और जहां सब धन जाताहो इन पांचों जगह झूंठ बोलनेसे पाप नहीं होताहै १६ जो मनुष्य साक्षीहो और उससे पूछने पर वह किसी बातको मिथ्या जानकर झूंठ बोले तो वह मिथ्या से पतित हो कर नरक में पड़ताहै १७ राजाने कहा कि राजा प्रजाको शिक्षा देनेवाला होताहै इससे जो राजा झूंठ बोलताहै वह शीघ्र नाशको प्राप्त होजाताहै इस कारण से मैं संकटमें भी पड़ने पर झूंठ नहीं बोलना चाहताहूं १८ शर्मिष्ठा बोली अपने और अपनी सखी दोनों के पति एकही से होतेहैं आप मेरी सखी के पति हैं इसकारण से मेरे भी पति हैं १९ राजाने कहा कि हमारा यह व्रत है कि हमसे जो कोई मनुष्य जो कुछ मांगताहै हम उसको वही देते हैं तू भी अपने मनकी कामनाको कह जो तू मांगेगी सो दूंगा २० यह सुनकर शर्मिष्ठा बोली कि मैं चाहतीहूं कि आप मुझे अधर्म से बचावें आपसे मेरे पुत्र होंगे तो मैं अच्छे धर्मको करूंगी २१ हे राजन्! स्त्री दास और लड़का ये तीनों अधन कहलाते हैं और इनके पास जो कुछ द्रव्यहै वह उसीका कहलाता है जिसके पास ये होवें २२ मैं देवयानीकी दासीहूं और देवयानी आपकी स्त्री है इस कारण से मैं भी आपही की हूं आपको मुझे और देवयानी दोनोंको समान प्रीतिसे रखना चाहिये २३ यह सुनकर राजाने कहा तू सत्य कहती है और ऐसा कहके उन दोनों ने एक दूसरेका आदर किया और सुखपूर्वक इच्छानुसार दोनों कामसंगम करके वहां से अपने २ घरको चले आये २४। २५ उस संगम से शर्मिष्ठाके गर्भ रहा और समयपर उसके देवताओं के कुमारों के समान पुत्र उत्पन्न हुआ २६। २७॥

इति श्रीभाषामहाभारते आदिपर्वणि द्व्यशीतितमोऽध्यायः ८२॥

तिरासीवां अध्याय।

शर्मिष्ठाके राजा ययाति से पुत्र होनेका हाल जानकर देवयानी का क्रोधकरके अपने पिता शुक्रके पास जाना और शुक्र के शाप से राजा ययातिका वृद्ध होजाना॥

वैशम्पायनजी बोले हे राजा जनमेजय! जब देवयानीने शर्मिष्ठाके पुत्र होने का हाल सुना तब उसको बड़ी चिन्ता हुई १ और शर्मिष्ठाके पास जाकर उससे पूछा कि तैंने कामके लोभसे यह क्या अधर्म किया है २ शर्मिष्ठाने कहा कि मैंने कोई अधर्म नहीं कियाहै यह पुत्र मेरे एक महात्मा वेदके जाननेवाले ऋषि

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri.

से उत्पन्न हुआहै मैंने उससे धर्मकी रीति से कामकी याचना कीथी ३। ४ देवयानी बोली जो यह बातहै तो अच्छाहै परन्तु उस ब्राह्मण और उसके गोत्रका क्या नामहै ५ शर्मिष्ठा बोली कि उस ब्राह्मण के सूर्यरूपी तेजको देखकर मेरी सामर्थ्य उससे नाम और गोत्र पूछनेकी नहीं हुई ६ देवयानी बोली हे शर्मिष्ठा! जो यह पुत्र तेरे ब्राह्मणसे उत्पन्न हुआहै तो मैं भी प्रसन्न हूं ७ वैशम्पायन जी बोले हे जनमेजय! वे दोनों आपस में इसप्रकार से बातचीत करके हँसती हुई अपने २ घरको आईं ८ राजा ययाति के फिर देवयानी से दो पुत्र यदु और तुर्वसु नामी इन्द्र और विष्णु के समान उत्पन्न हुये ९ और द्रुह्य अणु और पुरुनामी तीन पुत्र शर्मिष्ठा के हुये १० इसके पीछे एकसमय देवयानी राजाके साथ वनको गई और वहां देवताओं के लड़कोंके समान शर्मिष्ठाके पुत्रोंको खेलते हुये देखकर अचम्भे में आगई और राजासे पूछनेलगी कि ये किसके बालकहैं रूप और तेजमें तो आपके सदृश मालूम होते हैं ११। १२ देवयानी ने राजासे यह कहकर उन लड़कों से पूछा कि तुम्हारा क्या नामहै किसके वंश में तुम उत्पन्न हुयेहो और तुम्हारा बाप कौनहै १४ उन लड़कों ने राजाकी तरफ अंगुली उठाकर बताया कि ये हमारे पिताहैं और हमारी माका नाम शर्मिष्ठा है १५ वैशम्पायनजी बोले हे जनमेजय! वे लड़के देवयानी से मावापका नाम कहकर राजा के पास दौड़े परन्तु राजाने देवयानी के भयसे उनको गोदी में नहीं लिया और वे रोतेहुये अपनी माके पास चलेगये राजाको इस बातसे बड़ी लज्जा हुई १६। १७ इसके पीछे देवयानी ने उन बालकों का राजाकी तरफ प्रेम देखकर शर्मिष्ठासे कहा कि तैंने मेरे अधीन होनेपर मुझसे निडर होकर मेरी इच्छाके विपरीत काम क्यों किया है १८। १९ शर्मिष्ठा बोली कि मैंने तुम से ऋषिका नाम लिया था सो सत्यहै और तुमसे इस कारण से नहीं डरी कि मैंने कोई बात न्याय और धर्मके विपरीत नहीं की २० जबसे तुमने राजा में पति का भाव मानाथा उसीसमय से मैंने भी राजाको अपना पति मान रक्खाथा क्योंकि जो अपनी सखी का पति होताहै वही अपनाभी पति होताहै २१ क्या तुम इस बात को नहीं जानतीहो तुम ब्राह्मणी और मेरी पूज्यहो और राजा मेरा तुमसे भी अधिक पूज्यहै २२ वैशम्पायनजी बोले हे राजा जनमेजय! देवयानी शर्मिष्ठाकी बातको सुनकर राजासे बोली कि तुमने मेरा बड़ा अप्रिय किया अब मैं यहां नहीं ठहरूंगी और ऐसा कहकर वह वहां से अपने पिताके

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

घरको चलदी राजा उसके पीछे २ उसकी शुश्रूषा करता चला परन्तु उसने न कुछ जवाब दिया न लौटी २३।२५ निदान दोनों शुक्रजी के घर पहुँचे और दोनों ने शुक्रजी को यथोचित वन्दना करी और देवयानी ने शुक्रजीसे कहा २६।२७ कि महाराज धर्मको अधर्म ने जीतलियाहै और नीचे दर्जेवाला ऊँचे दर्जेपर होगयाहै देखिये यह राजा धर्मात्मा विख्यातहै परन्तु इसने मर्यादाको छोड़कर शर्मिष्ठा से संगम किया और उसके तीन पुत्र उत्पन्न हुये और मुझ अभागी के केवल दोही पुत्र अभीतक हुये हैं २८।३० यह बात सुनकर शुक्रजी बोले हे राजन्! तुमने अपने धर्म को छोड़कर अधर्म में प्रीति करी इस कारण से तुम शीघ्र बुड्ढे होजावोगे ३१ यह सुनकर राजा ने कहा कि मैंने यह कर्म कामके वशसे नहीं किन्तु धर्मरूप ऋतुदान दियाहै ३२ हे महाराज! जो मनुष्य ऋतुदान नहीं देता है और अकेले में कामवती स्त्री के कहने पर उससे भोग नहीं करता उसको ब्रह्मवादी लोग ब्रह्महत्यारा और भ्रूणहत्या का करनेवाला कहते हैं ३३।३४ इस कारणसे अधर्म के भयसे मैंने यह कार्य किया था ३५ यह सुनकर शुक्रजी बोले कि यह सब सत्य है परन्तु मेरे आधीन होनेपर तुमने मेरी आज्ञा लेकर यह कर्म नहीं किया इससे तुम मिथ्याचार करने से पापभागी हुये ३६ वैशम्पायनजी बोले हे जनमेजय! शुक्रजीके शापसे राजा उसी समय वृद्ध होगये ३७ राजाने अपना यह हाल देखकर शुक्रजी से विनय की कि महाराज! मैं देवयानी के यौवनसे सदैव अतृप्त रहूंगा कृपाकरके ऐसा कीजिये कि जिससे यह वृद्धावस्था मुझको न सतावे ३८ शुक्रजी ने कहा कि मेरी वाणी झूंठ नहीं होसक्ती परन्तु तुम इस अवस्था को चाहे जिसे देकर उसकी यौवनअवस्था को लेसक्के हो ३९ राजा बोले महाराज! जो आप आज्ञा दें तो मैं अपनी अवस्था को अपने पुत्रोंसे बदललूं ४० शुक्रजी ने कहा कि तुम हमारा ध्यान करके अपनी अवस्था को अपने पुत्रों से बदललो तुमको ऐसा करनेका पाप न होगा ४१ और जो पुत्र तुमको अपनी अवस्था देगा वह बड़ी उम्रवाला और कीर्तिमान् होगा और उसके बहुत सन्तान होंगे ४२॥

इति श्रीभाषामहाभारते आदिपर्वणि त्र्यशीतितमोऽध्यायः ८३॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

चौरासीवां अध्याय।

राजा ययातिका अपने सबसे छोटे पुत्रको अपना बुढ़ापा देकर उसके यौवनके लेनेकी कथा ॥

वैशम्पायनजी बोले हे जनमेजय! राजा ययाति शुक्रजी से बिदा होकर अपने घर आये और अपने यदुनाम बड़े पुत्रको बुलाकर बोले कि मैं शुक्रजी के शापसे वृद्ध होगयाहूं मेरे बाल श्वेत और देहीपर झुर्रियां पड़गई हैं परन्तु मेरा मन अभी विषयों के भोगसे नहीं भरा है तुम अपनी यौवन अवस्था हमें देदो और हमारा बुढ़ापा लेलो एक सहस्र वर्ष बीतने पर हम तुम्हारा यौवन तुमको देकर अपनी वृद्धावस्थाको लेलेंगे १। ४ यह सुनकर यदु ने कहा कि महाराज बुढ़ापे में भोजन पानमें बहुतसे दोष होजाते हैं डाढ़ी मूछ श्वेत सब शरीर शिथिल निर्बल और झुर्रियां पड़जाने के कारण से मनुष्य कुरूप हो-जाताहै और कुछ काम करने के योग्य नहीं रहता इससे मैं आपके बुढ़ापे को नहीं लेसक्ता आपके मुझसे अधिक प्यारे और भी पुत्र हैं आप उनसे यौवन लेकर अपना बुढ़ापा देदीजिये ५। ८ यह सुनकर ययाति ने उससे कहा कि तू मेरा पुत्र होकर मेरा कहना नहीं मानताहै इससे तेरी सन्तान राजा नहीं होगी ९ फिर राजाने अपने तुर्वसु नाम पुत्रको बुलाकर कहा कि मेरे बुढ़ापे को लेकर अपना यौवन मुझे दे मेरा चित्त अभी भोगसे नहीं भराहै मैं एकसहस्र वर्ष पीछे तुम्हारा यौवन तुमको लौटादूंगा १०। ११ तुर्वसुने कहा कि मैं भोग बल रूप बुद्धि और प्राण के नाश करनेवाले बुढ़ापे को नहीं चाहताहूं १२ यह सुनकर ययाति ने कहा कि मेरा पुत्र होकर मेरा कहना नहीं मानता है इससे जहां तू राज्य करेगा तेरी प्रजा नाश होजायगी १३ और तू ऐसे पापी जीवोंमें जाकर राजा होगा जो मांसभक्षी पशुकी तरह कर्म करनेवाले गुरुजनोंकी स्त्री से रमण करनेवाले और तिर्यग्योनि के तुल्य हैं १४। १५ वैशम्पायनजी बोले हे जनमे-जय! राजा ययाति अपने तुर्वसुनाम पुत्रको इस प्रकार शाप देकर शर्मिष्ठा से उत्पन्न हुये अपने द्रुह्यनाम पुत्रसे बोले कि हे पुत्र! तू मेरे बुढ़ापेको लेकर अपना यौवन मुझको दे मैं एकसहस्र वर्ष तेरे यौवन से भोगकर फिर तुझे लौटादूंगा और अपना बुढ़ापा लेलूंगा १६। १८ द्रुह्यने कहा कि बुढ़ापे में मनुष्य हाथी घोड़ा रथ और स्त्री आदिका भोग नहीं भोगसक्ता है मैं बुढ़ापा नहीं लेसक्ता हूं १९ यह सुनकर ययाति ने कहा कि तू मेरी आत्मा से उत्पन्न होकर मेरे कहने को नहीं मानता है इससे तेरी इच्छा कभी पूरी न होगी २०

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

और तू ऐसे देशमें विना राजा हुये रहेगा जिसमें घोड़ा हाथी गदहा गौ बैल बकरा पालकी डोली आदि किसी सवारी की गति न होगी २१। २२ फिर राजा ने अपने अणु नाम पुत्र से कहा कि तुम अपना यौवन मुझको एक सहस्र वर्ष के लिये दो मुझे अभी भोग करने की इच्छा है २३ अणुने कहा कि बूढ़ा मनुष्य अपवित्र बालकों के समान असमर्थ और दूसरे के आधीन भोजन खानेवाला होता है और समयपर अग्नि में आहुति नहीं देताहै इस से मैं आपके बुढ़ापे को नहीं लेसक्ता २४ यह सुनकर ययाति ने कहा कि तू मेरा आत्मज होकर मेरे बुढ़ापेको दोष लगाकर नहीं लेता है इस कारण से तू वृद्ध होजायगा २५ तेरे पुत्र युवा हो होकर मरजायँगे और तू अग्निहोत्र न कर सकेगा २६ इसके पीछे राजाने अपने पुरुनाम पुत्रको बुलाकर कहा कि तू मुझको सबसे प्यारा है तू मेरे इस बुढ़ापे को जो शुक्रके शापसे होगयाहै ले और अपने यौवनको मुझे देदे एकसहस्र वर्ष पीछे मैं तेरे यौवनको तुझे लौटा दूंगा २७। २९ यह सुनकर पुरुने कहा बहुत अच्छा आप मेरे यौवनको लेकर इच्छानुसार भोग कीजिये मैं आपके कहने के अनुसार आपका बुढ़ापा लेकर रहूंगा ३०। ३२ राजा यह सुनकर बोले कि मैं तुझसे बहुत प्रसन्न हूं तेरी प्रजा अपने मनोवाञ्छित फलको पावेगी ३३ यह कहकर राजाने शुक्रजीका स्मरण करके अपने बुढ़ापेको पुरुकी देही में प्रवेश कर दिया ३४॥

इति श्रीभाषामहाभारते आदिपर्वणि चतुरशीतितमोऽध्यायः ८४॥

पचासीवां अध्याय।

राजा ययातिका पुत्रसे यौवन लेकर एकसहस्र वर्ष तक भोग करना उपरांत पुत्रको राज्य देकर तपस्या करने को वन में चला जाना॥

वैशम्पायनजी बोले हे जनमेजय! राजा ययाति अपने छोटे पुत्र पुरु से यौवन लेकर इच्छानुसार भोग करने लगे १ ययाति ने कोई भोग काल और धर्म के विपरीत नहीं किया २ उनके राज्यमें देवता यज्ञों से पितर श्राद्धों से दीन पुरुष दया से ब्राह्मण इच्छापूर्वक धन देने से अतिथि भोजन से और वैश्य और शूद्र धर्म से पालन करने से प्रसन्न रहे और चोरों को दण्ड देकर चोरी बन्द करदी ३। ४ ययाति ने प्रजाका पालन इन्द्रकी तुल्य बड़े धर्म से किया और नाना प्रकार के सुन्दर पदार्थों को भोगकर सहस्र वर्षके बीतने के अन्तसमय को याद किया ५। ७ और जो कुछ वर्ष बाकी रहगये थे उनमें नन्दन वनमें

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जाकर विश्वाची अप्सरा से भोग किया और मेरु पर्वत पर अलकापुरी में जाकर अपने पूरे सहस्र वर्ष बिताकर राजा घरको आये और अपने पुरुनाम पुत्र से बोले ८। १० कि मैंने तेरे यौवन से सम्पूर्ण पदार्थों को अपनी इच्छाके अनुसार भोगा परन्तु यह कामदेव शांत नहीं होता है जैसे अग्नि में आहुति देने से अग्नि बढ़ती जाती है ठण्ढी नहीं होती इसी प्रकार से विषयकी इच्छाभी विषयके भोगोंको भोगने से नहीं जाती है ११। १२ पृथ्वीपर विषयकी तृष्णा किसीकी कभी पूरी नहीं होती है देखो मुझे विषयमें आसक्त हुये एक सहस्रवर्ष बीत गये परन्तु मेरी तृष्णा नहीं गई है यह तृष्णा प्राणों के नाश करनेवाली है इससे इसको अवश्य छोड़ना चाहिये जबतक मनुष्यों में विषयकी तृष्णा लगी हुई है तबतक मनुष्य दुःखसे नहीं छूटसक्ता है इस कारण से मैं इसको अब त्याग कर द्वन्द्व और ममताको छोड़कर ब्रह्ममें चित्त लगाकर वनवास करूंगा १३।१६ हे पुत्र पुरु! तुझसे मैं बहुत प्रसन्न हूं तू अब अपनी अवस्था को ले और इस राज्य को कर १७ ऐसा कहके राजाने पुरु को यौवन देदिया और अपने बुढ़ापे को ले लिया १८ इसके पीछे राजा ने पुरुको राजतिलक करनेके लिये ब्राह्मण आदिकों को बुलाया और वे लोग राजा की इच्छा को सुनकर बोले कि महाराज बड़े पुत्र के होतेहुये छोटे पुत्र को राजतिलक होना योग्य नहीं है पुरु से अभी चार भाई और बड़े हैं तिलक सब से बड़े पुत्र यदुको जो शुक्रजी का दौहित्र है होना चाहिये हमने जो कुछ बात थी आपको जतादी है करना न करना आपके आधीन है परन्तु आपको मर्यादा और धर्म को उल्लंघन नहीं करना चाहिये १९। २२ यह सुनकर राजा ययाति ने कहा कि बड़े पुत्र को राज्य न देने का कारण यह है कि पुरु से चारों बड़े पुत्रों ने मेरी बड़ी अवज्ञा की है और पुरु ने मेरी आज्ञा को पालन करके मेरी जराअवस्था को लेकर मेरा बड़ा हित किया जो पुत्र अपने माता पिता का हित नहीं करता है और उनकी आज्ञाको नहीं मानता है वह पुत्र पुत्रके तुल्य नहीं है इसके सिवाय शुक्रजीने भी मुझसे यह कहा था कि जो पुत्र तुम्हारी आज्ञा को माने वही राजा होवे इस कारण से मेरी सबसे यह प्रार्थना है कि आप लोग पुरुको राजतिलक दीजिये २३। २९ यह सुनकर पुरवासियों ने कहा कि महाराज जो पुत्र गुणवान् और माता पिताकी आज्ञा को पालन करनेवाला है वह छोटा भी सर्वथा योग्य है ३० आपके छोटे पुत्र पुरु ने आपका हित किया है और

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

शुक्रजी ने भी उसको राज्य देने को वरदान दिया है तो आप निस्संदेह उस को राज्य दीजिये हम लोग उसमें कुछ जवाब नहीं दे सक्ते ३१ वैशम्पायनजी बोले हे राजा जनमेजय! पुरवासियों की इस बात को सुनकर राजा ने अपने छोटे पुत्र पुरुका राज्याभिषेक कराया और उसको राज्य सौंपकर आप तपस्या करने के लिये तपस्वी ब्राह्मणों के साथ वन को चला गया ३२। ३३ इसके पीछे यदु से यादव तुर्वसु से यवन द्रुह्य से भोज और अनु से म्लेच्छ उत्पन्न हुये ३४ और पुरु से पौरव वंश चला जिस वंश में हजार वर्ष राज्य करने को तुम उत्पन्न हुये ३५॥

इति श्रीभाषामहाभारते आदिपर्वणि पंचाशीतितमोऽध्यायः ८५॥

छियासीवां अध्याय।

राजा ययाति के वन में तपस्या करके मृत्यु पाकर स्वर्ग में जाने की कथा॥

वैशम्पायनजी बोले हे राजा जनमेजय! राजा ययाति वनमें जाकर वानप्रस्थ मुनि होगये और कन्द मूल फल आदि का भोजन करके शांसितव्रत जितेन्द्रिय रहकर थोड़े काल में मृत्यु पाकर स्वर्गवासी हुये १। २ राजा ने बहुत दिनोंतक स्वर्ग में सुखपूर्वक वास किया उपरान्त वहां से इन्द्र की आज्ञा से कर्मका फल भोगने पर पृथ्वीपर गिरा दिये गये परन्तु मैंने सुना है कि राजा पृथ्वीपर नहीं गिरे आकाश में लटके रहे और राजा वसुमति अष्टक प्रतर्दन और राजा शिबि के साथ फिर स्वर्गवासी हुये ३। ५ यह सुनकर राजा जनमेजय ने कहा कि महाराजा ययाति सूर्य के समान तेजस्वी और कुरुओं के कुलके बढ़ानेवाले थे मैं उनके स्वर्ग और पृथ्वी के संपूर्ण चरित्र और स्वर्ग से गिराये जाने का कारण विस्तारपूर्वक सुना चाहता हूं ६। ९ यह सुनकर वैशम्पायनजी बोले कि बहुत अच्छा मैं आपसे राजा ययाति के स्वर्ग और पृथ्वीसम्बन्धी सब पापों के हरनेवाली कथा को कहता हूं १० राजा ययाति अपने छोटे पुत्र पुरु को राज्य देकर आप आनन्दपूर्वक तपस्या करने को वन को चलेगये ११ और वहां जाकर कन्द मूल फल खाकर तपस्या करने लगे और अनेक कर्म करके देवता और पितरों को प्रसन्न किया १२ एक सहस्र वर्षतक राजा ने शांसितात्मा और क्रोधरहित रहकर वानप्रस्थ अग्नि में होम शिलावृत्ति और अतिथिभोजन आदि आचरण किये इसके पीछे तीस वर्षतक केवल जल पीकर और एक वर्षतक केवल वायु खाकर रहे और एक वर्ष

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पंचाग्नि ताप छः महीने एक पैरसे खड़े रहकर राजा तपस्या के उपरान्त देह को छोड़कर स्वर्ग में गये १३। १७॥

इति श्रीभाषामहाभारते आदिपर्वणि षडशीतितमोऽध्यायः ८६॥

सत्तासीवां अध्याय।

राजा ययातिका स्वर्गमें इन्द्रसे मिलना और इन्द्रसे अपने पुत्र पुरुकी शिक्षा करनेका वृत्तान्त कहना॥

वैशम्पायनजी बोले हे राजा जनमेजय! हमने सुना है कि राजा ययाति स्वर्ग में जाकर देवता आदि से पूजित होकर रहने लगे और ब्रह्मलोक और देवलोक में आनन्दपूर्वक घूमने लगे १। २ बहुत दिनों पीछे एक दिन राजा से इन्द्रसे मिलाप हुआ जब दोनों आपस में बात करचुके तब इन्द्रने राजा से पूछा ३ कि जब तुमने अपने पुत्र पुरुको राज्य दिया तब तुमने उससे क्या कहा था ४ यह सुनकर राजा बोले कि हमने पुरुको राज्य देकर यह शिक्षा की थी कि तुम पृथ्वी मध्यदेश अर्थात् जो देश गङ्गा और यमुना के बीच में है उसका राज्य करो और प्रांतदेशों का राज्य अपने भाइयों को देदो ५ क्रोधी से क्रोध न करनेवाला अक्षमावान् से क्षमा करनेवाला पशुओंसे मनुष्य और मूर्खों से विद्वान् सदैव श्रेष्ठ होता है ६ इसकारण से तुमको चाहिये कि जो तुमको क्रोध में गाली भी दे तो तुम उसको क्षमा करो क्षमा करने से क्रोधी का संहार होजाता है और उसके पुण्यको क्षमावान् पाता है ७ दुखिया को कभी दुःख न देना न कभी किसी से कठोर वचन कहना हीन पुरुषकी सहायता से शत्रु के जीतने की इच्छा कभी न करना और ऐसी बात न कहना जिससे मनुष्यों को दुःख पहुँचे ८ जो मनुष्य दुःखदायी रूखी तीक्ष्ण और कांटों के समान दुःख देनेवाली बात किसीसे कहते हैं उनका कल्याण कभी नहीं होता है और वह दरिद्री रहते हैं ९ तुमको चाहिये कि आगे और पीछे हर समय सत्पुरुषों की संगति में रहो और उनकी चालपर चलो और जो उनके मुख से कोई मर्यादा-रहित बात निकल जावे तो उसको क्षमा करो १० जो आदमी साधु होता है वह खल के बाणरूपी वचनों को सहकर उससे बदला लेने का विचार नहीं करता है ११ मनुष्योंपर दया करना दान देना और मीठी बोली बोलना इनके समान तीनों लोक में ईश्वरकी भक्ति नहीं है इसकारण से तुमको चाहिये कि कभी कठोर वचन न बोलो १२ जो मनुष्य पूजन के योग्यहैं उनका

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पूजन करना चाहिये और दान देना और कभी किसीसे कुछ न मांगना यह तुम्हारा धर्म है १३ ॥

इति श्रीभाषामहाभारते आदिपर्वणि सप्ताशीतितमोऽध्यायः ८७ ॥

अट्ठासीवां अध्याय।

राजा ययातिका स्वर्ग से गिरना और अष्टक महर्षिका राजा से स्वर्ग से गिरने का कारण पूछना ॥

वैशम्पायनजी बोले हे राजा जनमेजय! इन्द्रने ययाति के पुत्रको शिक्षा करने का हाल सुनकर पूछा कि तुमने सब कामों को पूरा करके घर छोड़कर तपस्या की तुम अपनी तपस्या को किसकी तपस्या की बराबर जानते हो १ यह सुनकर ययाति ने कहा कि देवता मनुष्य गन्धर्व और महर्षि आदि में मैं किसी की तपस्या को अपनी तपस्या की बराबर नहीं जानता हूं २ यह सुनकर इन्द्र ने कहा कि तुमने विना जाने अभिमान भरे हुये वचनों से सबका अपमान किया इससे तुम्हारा पुण्य क्षीण होगया अब तुम स्वर्ग से पृथ्वी पर गिराये जावोगे ३ राजा ने कहा कि जो मेरा पुण्य क्षीण होगया है तो कृपा करके मुझको ऐसे देश में डालिये जहां सज्जन पुरुष रहते हों ४ इन्द्रने कहा कि अच्छा ऐसी ही जगह पर गिराये जावोगे परन्तु अब अभिमान न करना ५ इसके पीछे राजा ययाति स्वर्ग से पृथ्वी पर गिराय दिये गये उनको आकाश से पृथ्वी पर आते देखकर अष्टकनाम बड़े राजऋषि ने कहा ६ कि तुम कौनहो जो इन्द्र कासा स्वरूप धारण किये हुये सूर्य के समान आकाश से चले आते हो ७ तुम्हारे इन्द्र सूर्य और विष्णु के समान प्रभाव को देखकर हम सबको आश्चर्य होता है इस कारण से हम पूछना चाहते हैं कि आपके ऊपरसे गिरने का क्या कारण है ८। ९ न हम तुमसे पूछ सक्ते हैं न तुम हमसे पूछते हो अब तुम अपने भय और मोहको छोड़कर सत्सङ्ग में आकर निर्भय रहो यहां इन्द्रभी तुमको पीड़ा नहीं देसक्ते हैं १०।११ अच्छे पुरुष सन्तों की प्रतिष्ठा सदैव करते हैं वही सन्तलोग और तुम्हारे समान सत्पुरुष यहां मौजूद हैं १२ सत्पुरुषों में आया हुआ अभ्यागत उसीप्रकार से समर्थ होजाता है जैसे तपाने में अग्नि संग्रह करने में पृथ्वी और प्रकाश करने में सूर्य हैं १३ ॥

इति श्रीभाषामहाभारते आदिपर्वणि अष्टाशीतितमोऽध्यायः ८८ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नवासीवां अध्याय।

राजा ययातिका अष्टकसे अपने स्वर्ग में रहने का वृत्तान्त
और वहां से पृथ्वीपर गिरनेका कारण कहना ॥

वैशम्पायनजी बोले कि राजा ययाति अष्टक की बातको सुनकर बोले कि मैं नहुष का पुत्र और पुरुका पिता राजा ययाति हूं पुण्य के क्षय होजाने से स्वर्ग से गिराया गया हूं १ मैं आप सबलोगों से उमर में बड़ा हूं इसकारण से मैंने तुमलोगों को प्रणाम नहीं किया जो मनुष्य विद्या तप और आयु में बड़े होते हैं वे द्विजन्माओं के सदैव पूज्य हैं २ यह सुनकर अष्टक बोला कि उमर में बड़ा होने से मनुष्य बड़ा नहीं होता है हां विद्यावान् और तपस्वी मनुष्य सदैव पूज्य और बड़ा होता है ३ यह सुनकर ययाति बोले कि धर्म और कर्मका नाश करनेवाला और नरक में डालनेवाला पाप है यह जानकर सन्तलोग अपने सन्तभाव को छोड़कर असन्तों के कर्मों के अनुसार काम नहीं करते हैं ४ मेरे पास पुण्यरूपी बहुतसा धन था वह अभिमान करने से जाता रहा अब मैं उसको चेष्टा करने से नहीं पासक्ता हूं मेरी समझ में ऐसाही आता है और जिसकी ऐसी समझ होती है वही विशेष ज्ञाता कहलाता है ५ संसार में बड़ा धनाढ्य वही मनुष्य है जो यज्ञ करे वेदयुक्त विद्या पढ़े और मोह छोड़कर तपस्या करके स्वर्ग को जावे ६ मनुष्य को चाहिये कि वेदों को पढ़े धन पाने से बहुत प्रसन्न न हो अहंकार न करे और प्रारब्ध को अपनी बुद्धिसे अधिक बलवान् जाने सुख और दुःख ये दोनों दैवके आधीन हैं इससे सुखमें हर्ष और दुःखमें विषाद कभी न करे सदैव एकसा रहना चाहिये ७।६ हे अष्टक! मुझको भय में मोह कभी नहीं होता है और न मुझे किसी प्रकार का मानसी दुःख है जैसा मेरे लिये विधाता ने रचा है मैं उसीमें प्रसन्न हूं १० स्वेदज, अण्डज, उद्भिज्ज, सर्प, कृमि, जलजीव, पत्थर, तृण और काष्ठ सब प्रारब्ध के क्षय होनेपर अपने आदिकारण में जा मिलते हैं ११ इस कारण से हे अष्टक! मैं सुख और दुःख दोनों को अनित्य जानकर किसी बातका सन्ताप नहीं करता हूं १२ वैशम्पायनजी बोले हे राजा जनमेजय! अष्टक राजा ययाति अपने नानाको सब गुणों से युक्त जानकर बोले १३ कि आपने स्वर्ग में रहकर जिन जिन लोकों में जो जो पदार्थ भोगे हैं उनको कृपा करके कहिये आप धर्मकी बातें नारदजी के समान कहते हैं १४ यह सुनकर राजा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ययाति बोले कि हम सार्वभौम हैं हमने तपके बल से बड़े बड़े लोकों को जीता था और सहस्र वर्ष तपस्या करके स्वर्ग में वास पाया था १५ पहले हम इन्द्रपुरी में जो सौ योजन लम्बी है और जिसमें हजार द्वार हैं सहस्र वर्ष तक रहे १६ इसके पीछे हजार वर्षतक हमने प्रजापतिजीके लोकमें वास किया १७ और फिर ब्रह्माजी के लोक में बहुत दिनतक आनन्दपूर्वक बसकर अयुत वर्षतक नन्दन वन में रहे वहां हम इच्छापूर्वक अच्छे अच्छे पदार्थों को भोग करते थे और जैसी अप्सरा से चाहते थे विहार करते थे १८।१९ इसके पीछे मुझसे देवताओं के दूतने बड़े ऊंचे स्वर से कहा कि तुम पृथ्वी पर गिराये जाते हो २० तीन बार यह शब्द मैंने सुना और फिर नीचे को गिरा दिया गया उस समय देवता मुझपर दयाकरके कहनेलगे कि यह बड़े दुःखकी बात है देखो राजा ययाति क्षीण पुण्य होने के कारण से पृथ्वीपर गिराये जाते हैं मैंने उनकी बोली को सुनकर कहा कि मुझको ऐसी जगह बतलाइये जहां सत्पुरुष रहते हों क्योंकि मैं सत्पुरुषों के बीचमें गिरना चाहताहूं २१।२२ तब देवताओं ने मुझसे आप लोगों की यज्ञभूमि का हाल कहा मैं सुनकर आपके यज्ञकी गन्ध से प्रसन्न होता हुआ और धूम्र को देखता हुआ यहां चला आया हूं २३ ॥

इति श्रीभाषामहाभारते आदिपर्वण्येकोननवतितमोऽध्यायः ८९ ॥

नब्बेवां अध्याय।

अष्टक का राजा ययाति से पृथ्वीपर चलेआनेका कारण पूछनेकी कथा ॥

यह सुनकर अष्टक बोला कि आप नन्दनवन में दशलाख वर्ष रहकर इस पृथ्वीपर चले आये इसका क्या कारण है १ ययातिने कहा कि जिसप्रकार इस पृथ्वीपर धनवान् मनुष्यको धनके नष्ट होजाने पर भाई बन्धु लोग छोड़ देते हैं इसी प्रकार पुण्य के क्षीण होनेपर स्वर्ग में देवता भी मनुष्यको त्याग देते हैं २ यह सुनकर अष्टक बोला कि मेरे चित्तमें बड़ा सन्देह होगया आपही इस मेरे सन्देह को दूर करसक्ते हैं स्वर्ग में पुण्य क्योंकर क्षीण होजाता है और उत्तम पुरुष कौन लोग होते हैं और पुण्यवान् मनुष्य किसके धाम को जाते हैं ३ ययाति ने कहा कि मनुष्य क्षीण पुण्य होनेपर पृथ्वीरूपी नरक में पड़ता है और संसार में गृध्र और कुत्ता आदि जीवों के भोजन के निमित्त जन्म लेकर बेटा और नाती आदि से अपने परिवार को बढ़ाता है ४ इससे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मनुष्य को दोषयुक्त और निंदित कर्म कभी न करना चाहिये ५ अष्टक ने कहा कि जो उसको गृध्रपक्षी आदि जीव खाजाते हैं तो उसकी देह किस प्रकारसे होती है और जो आपने भौमनाम नरक कहा सो क्या पृथ्वीही है ६ ययाति ने कहा कि मनुष्य अपने कर्मों के अनुसार पृथ्वी पर जन्म लेता है और जन्म लेनेपर जो कोई परलोक का विचार न करके योंही अपनी उमर को गँवाता है वही इस पृथ्वीरूपी नरक में पड़ता है ७ स्वर्ग से गिराये जाने पर साठहजार अस्सीवर्ष में जीव इस पृथ्वीपर आता है और यहां आने पर उसको बड़ी बड़ी डाढ़वाले राक्षस खाजाते हैं ८ यह सुनकर अष्टक ने कहा कि जब जीवको राक्षस खाजाते हैं फिर वह सब इन्द्रियों से युक्त देहसे गर्भ में क्योंकर वास करताहै ९ ययाति बोले कि पुरुषका जलरूप वीर्य स्त्री के रजसे मिलकर कर्मके अनुसार योनि में प्राप्त होकर गर्भ होजाता है १० वनस्पति, ओषधी, पृथ्वी, वायु, आकाश, चौपाये और द्विपद आदि सब गर्भभूतहैं अर्थात् गर्भही से उत्पन्न होते हैं ११ अष्टक ने कहा कि जीव अपने जीवरूपी शरीरसेही माता के गर्भ में रहता है या दूसरी देह धरकर वास करता है १२ और नेत्र कान आदि इन्द्रियां और ज्ञान उसको कौन देता है १३ राजा ययातिने कहा कि स्त्रीके रजस्वला होनेपर पुरुषके योनिगत वीर्यको वायु कर्म फलके अनुसार गर्भस्थान में खींच लेताहै और पांचों तन्मात्राओं से अधिकार पाकर उस गर्भको क्रम से बढ़ाता है १४ जब गर्भ बढ़कर पूरा होजाताहै तब वह उत्पन्न होकर मनुष्य कहलाता है और वह कानों से सुनता आंखों से देखता नाकसे सूंघता जीभ से स्वाद जानता त्वचा से स्पर्श करता और मनसे भेदभाव जानताहै ये सब विषय इसशरीरमें उपाधिरूप हैं १५।१६ यह सुनकर अष्टक ने कहा कि जो मनुष्य मरने के पीछे जला दिया या गाड़ दिया जाताहै या जिसको दूसरे जीव खाजाते हैं वह फिर किस आत्मा से चैतन्य होजाताहै १७ ययातिने कहा कि जीवात्मा स्वप्नके समान शब्द करके अपने पाप और पुण्य को साथ लेकर स्थूल शरीर को छोड़कर सूक्ष्म शरीर धारण करलेता है १८ इसके पीछे पुण्यात्मा जीव अच्छी योनि में और पापी जीव कीड़े पतंगे चौपाये आदि अनेक बुरी योनियों में जन्म लेते हैं १९।२० अष्टक बोला कि तप सेवा विद्या आदि कौनसा ऐसा पदार्थ है जिसके करने या जानने से मनुष्य को अच्छे लोक मिलते हैं २१ ययाति ने कहा कि

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सन्त लोग स्वर्ग के जाने को ७ दरवाजे बतलाते हैं वह ये हैं तप १ दान २ शम ३ दम ४ लज्जा ५ मूधापन ६ और सब जीवों पर दया ७। २२ जो मनुष्य विद्याको पढ़कर अपने आपको बड़ा पण्डित जानता है और अपनी विद्या के बलसे दूसरे मनुष्यों के यश को नाश करता है उसकी अच्छी गति नहीं होती है और न उसकी विद्या उसको ब्रह्मफल देती है २३ संसारमें मनुष्य को अभय करनेवाले चार पदार्थ हैं अग्निहोत्र करना १ मौन होना २ वेद पढ़ना ३ और यज्ञ करना ४ और इन्हीं चारों को विपरीत अर्थात् अभिमान के साथ करने से बड़ा भय होता है २४ मनुष्य को चाहिये कि आदर पाकर हर्ष और निरादर से विषाद न करे क्योंकि जो सन्त हैं वे सन्तों का आदर करते हैं और असाधु में कभी साधुबुद्धि नहीं होती है २५ और अपने देने या करने या पढ़ने आदि पर यह अभिमान करना कि मैं ऐसा करता हूं बड़े भारी भयका देनेवाला है इससे मनुष्य को ऐसा कभी नहीं करना उचित है २६ जो मनुष्य मनके मार्गको रोकनेवाले पुराण के आश्रय को जानते हैं उनका दोनों लोकों में कल्याण होता है २७॥

इति श्रीभाषामहाभारते आदिपर्वणि नवतितमोऽध्यायः ९० ॥

इक्यानबे का अध्याय।

अष्टकने राजा ययाति से पूछा कि महाराज गृहस्थी संन्यासी आचार्य और वानप्रस्थ के कौन २ धर्म हैं कि जिनके करने से मनुष्य ब्रह्मको प्राप्त होता है तिसकी कथा ॥

इसके उपरांत राजा ययाति से अष्टक ने पूछा कि गृहस्थी, संन्यासी, आचार्य और वानप्रस्थके कौन कौन से धर्म हैं जिनके करनेसे मनुष्यको ब्रह्मकी प्राप्ति होती है १ यह सुनकर ययाति ने कहा कि आचार्य अर्थात् ब्रह्मचारी के ये धर्म हैं गुरुकी आज्ञा से पढ़ना १ विना कहे गुरुका काम करना २ सोकर गुरुसे पहले उठना ३ गुरु से पीछे सोना ४ जितेन्द्रिय रहना ५ मृदु बोलना ६ धैर्य रखना ७ सावधान रहना ८ और स्वाध्याय में प्रीति रखना ९ ब्रह्मचारी को इन कर्मों के करने से मोक्ष मिलती है २ और धर्म से लाये हुये धनसे यज्ञ करना १ दान करना २ अतिथिको भोजन देना ३ और विना दिये किसी की चीजको कभी न लेना ४ ये चारों मोक्षके देनेवाले गृहस्थी के कर्म हैं ३ और अपने आप लाई हुई चीजको भोजन करना १ कभी पापकर्म न करना २ दूसरों को देना ३ जीवमात्र को दुःख न देना ४ वनमें बसना ५ और नियत

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आहार रहना ये छः कर्म वानप्रस्थ मुनियों के हैं ४ और संन्यासी के कर्म ये हैं उद्यम करके न खाना १ गुणवान् होना २ जितेन्द्रिय रहना ३ विरक्तस्वभाव होना ४ गृहस्थ से दूर रहना ५ देवालय आदि स्थानों में सोना ६ और देशान्तरों में अकेला घूमना ७। ५ मनुष्य को उचित है कि जिस समय मन में वैराग्य उत्पन्न हो उसी समय सब सुखों को छोड़कर वनमें जा बसे ६ ऐसा करने से उस मनुष्य की दश पीढ़ी पिछली और दश अगली और एक आप अर्थात् २१ पीढ़ी मुक्ति पाती हैं ७ यह सुनकर अष्टकने कहा कि मौनी और मुनि कौन २ होते हैं आप कृपा करके कहिये ८ ययाति ने कहा कि मुनि दो प्रकार के होते हैं एक तो वह जो ग्राम को पीठ देकर वन में वास करते हैं और दूसरे वह जो वनको पीठ देकर ग्राम में रहते हैं ९ अष्टक बोला कि उन दोनों के क्या लक्षण हैं और वन में रहनेवाला ग्राम को और ग्राम का बसनेवाला वन को क्योंकर पीठ देता है १० ययाति ने कहा कि ग्राम को पीठ देनेवाला मुनि वह है जो वनमें रहता है और ग्रामकी चीजोंको नहीं खाता है ११ और वनको पीठ देकर ग्राममें बसनेवाला मुनि वह है जिसके न घर हो न आग हो न गोत्र हो और जो कोपीन और ओढ़ने को वस्त्र और प्राण जबतक रहें तबतक भोजन चाहनेकी इच्छा रक्खे और ग्राममें रहा करे १२। १३ हे अष्टक! इस लोक में सिद्धि उन्हींको मिलती है जो सब कर्म और सब कामनाओंको छोड़कर मौन होकर स्थित होजातेहैं १४ जो मुनि शुद्धचित्त शुद्धभोजन अहिंसा और शुद्धकर्म करनेवाले हैं उनका सत्कार सदैव करना चाहिये १५ और जो मुनि तपस्या करते २ ऐसा दुर्बल होगयाहो कि उसमें केवल हाड़ रहगयाहो और निर्द्वन्द्व होकर मौनमें स्थितहो वह मुनि इस संसारको जीतकर परलोकको विजय करताहै १६। १७ और जो मुनि गऊकी तरह अपने मुखमें भोजन लेकर दूसरेके देने से खाताहै उसकी निश्चय मोक्ष होती है १८॥

इति श्रीभाषामहाभारते आदिपर्वण्येकनवतितमोऽध्यायः ९१॥

बानबे का अध्याय।

राजा ययातिको अष्टक और प्रतर्दन महर्षियोंका अपने पुण्य देने और ययातिको उनके न लेनेकी कथा॥

अष्टकने फिर राजा ययाति से पूछा कि आपने दो प्रकारके मुनि कहे हैं उन दोनोंमेंसे देवताओं की सात्मता अर्थात् मुक्ति किसको पहले मिलती है १

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यह सुनकर ययातिने कहा कि वनवासी और योगी दोनों मुक्ति पाने के अधिकारीहैं परन्तु ब्रह्मज्ञानीको जल्दी मोक्ष मिलती है योगीको देरमें मिलती है और जो योगी थोड़ी उमर होने के कारण से तपस्या करते में मरजाता है उसको मोक्ष कई जन्ममें मिलती है जो लोग झूंठे कुमति और कुकर्मीहैं उनको मोक्ष विना कर्म का फल भोगे नहीं मिलतीहै २।५ अष्टकने कहा कि तुमको दूत बनाकर किसने भेजाहै तुम बड़े तेजधारीहो कहांसे तुम आये हो कहांको जाओगे और कहां तुम्हारा स्थानहै ६ ययाति बोले कि मैं क्षीणपुण्य होनेके कारणसे स्वर्गसे भौमनरक अर्थात् पृथ्वीपर गिराया गयाहूं और इन्द्रसे वर-दान पाने के कारणसे आप ऐसे सत्पुरुषों में गिरना चाहताहूं ७। ८ अष्टकने कहा कि तुम भौमनरकमें मत गिरो हमको यह बतलाओ कि स्वर्ग और आकाश में हमारे कितने लोक हैं ९ ययाति बोले इस पृथ्वीपर जितने गौ घोड़ा आदि जीवहैं स्वर्गमें तुम्हारे उतनेही लोक हैं १० अष्टक ने कहा कि तुम पृथ्वीपर मत गिरो मैं तुमको अपना पुण्य देताहूं उस पुण्यसे तुम हमारे लोकों में जाकर आनन्द करो ११ यह सुनकर ययातिने कहा कि हमने ब्राह्मणों को सदैव दान दियाहै हमारा धर्म दान लेनेका नहीं है यह केवल ब्राह्मण का धर्म है इससे हम आपके दिये हुये पुण्य को नहीं ले सक्ते हैं १२। १३ इस बात को सुनकर अष्टकके पास बैठा हुआ दूसरा सत्पुरुष बोला कि मैं प्रतर्दन हूं आपसे पूछताहूं कि स्वर्ग और आकाशमें मेरे कितने लोकहैं १४ ययातिने कहा कि हे प्रतर्दन! स्वर्गमें तुम्हारे बहुतसे लोकहैं और सब सुखदायी तेजयुक्त और शोकके दूर करनेवाले हैं मैं एक २ में सात २ दिनभी रहकर उनका पार नहीं पासक्ताहूं १५ यह सुनकर प्रतर्दनने कहा कि अच्छा हम आपको अपना पुण्य देते हैं आप पृथ्वीपर न गिरिये और हमारा पुण्य लेकर हमारे लोकों को आनन्दपूर्वक भोगिये १६ ययाति बोले कि बराबर तेजधारी राजाओंको एक दूसरेसे विपत्ति पड़नेपरभी पुण्य आदि कोई वस्तु न मांगनी चाहिये १७ जो धर्मात्मा धर्म और यश की देनेवाली राहपर चलनेवाले हैं उनको कृपणता छोड़कर धर्मही करना उचितहै १८ इसके सिवाय जो कर्म किसीने नहीं किया वह मैं क्योंकर करसक्ता हूं इस बातको सुनकर राजा ययाति से वसुमान नाम राजा ने कहा १९॥

इति श्रीभाषामहाभारते आदिपर्वणि द्विनवतितमोऽध्यायः ९२॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तिरानबे का अध्याय।

वसुमान और शिबिनाम महर्षियोंका राजा ययातिको अपना पुण्य देना और राजा ययातिका उसको न लेना और उन सबके साथ रथपर बैठकर स्वर्गको जाना ॥

वसुमानने राजा ययाति से पूछा कि कहो स्वर्ग और आकाश में हमारे कितने लोकहैं १ ययाति बोले कि पृथ्वी आकाश दिशा और विदिशा आदि जितने संसार में लोकहैं जिनमें सूर्यका प्रकाश होता है उतनेही तुम्हारे लोक स्वर्गमें हैं और तुम्हारी बाट देखरहे हैं २ वसुमान यह सुनकर बोले हे ययाति! तुम पृथ्वीपर मत गिरो जो तुम दानमें दूषण जानतेहो तो हम अपने इन सब लोकोंको तुमको एक तिनके के बदले में मोल बेचते हैं तुम उनको लेकर सुखसे उनमें बसो ३ ययातिने कहा कि मैं ऐसा झूंठा लेन देन नहीं कर सक्ताहूं जिसको आजतक किसीने नहीं किया है वसुमान बोला जो तुमको मोल लेना अच्छा नहीं जानपड़ता है तो हम तुमको उन लोकोंको योंहीं देतेहैं तुम उनको लेलो हम उन लोकोंमें नहीं जावेंगे ४। ५ इसी अवसरमें शिबिनाम राजाने भी ययाति से पूछा कि स्वर्गादि में हमारे कितने लोकहैं ६ ययातिने कहा कि तुमने किसी मांगतेहुये साधुका अपमान मन और वाणी से भी नहीं कियाहै इस कारण से तुम्हारे बहुत से बड़े २ लोकहैं ७ यह सुनकर शिबिने कहा कि आपको मोल लेना नहीं रुचता है तो आप हमारे लोकों को वैसेही ग्रहण कीजिये हम उन लोकोंमें नहीं जायँगे ८ ययातिने कहा कि हे शिबि! तुम्हारा प्रभाव इंद्रके समानहै इससे स्वर्गमें तुम्हारे लोक भी अनन्त हैं परन्तु मेरी इच्छा दूसरेके दियेहुये लोकमें रहनेकी नहींहै और न मैं दूसरेकी दी हुई वस्तुको अच्छा जानताहूं ९ यह सुनकर अष्टक बोला कि जो तुम एक का पुण्य नहीं लेतेहो तो हमसब तुमको अपना अपना पुण्य देते हैं तुम हमारे लोकों में जाकर रहो और हमसब पृथ्वीपर रहेंगे १० ययाति बोले कि आपलोग मेरेलिये वह यत्न कीजिये जो मेरे योग्यहो क्योंकि मैं ऐसे कामको कभी नहीं करसक्ता जिसको कभी किसी ने न किया हो ११ वैशम्पायनजी बोले हे राजा जनमेजय! इसी अवसर में स्वर्ग से पांच रथ सुवर्ण के बने हुये अत्यन्त चमकदार आतेहुये देख पड़े उनको देखकर अष्टक ने ययाति से पूछा कि ये किसके रथ हैं १२ ययाति ने कहा कि अग्नि के समान ये पांचों रथ आप लोगों को

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लेने के लिये स्वर्ग से आयेहैं १३ यह सुनकर अष्टकने कहा कि इनपर चढ़कर आप स्वर्ग को जाइये हम सब भी समयके आने पर आमिलेंगे १४ ययातिने कहा कि हमको देवलोक का रास्ता दिखलाई देता है इससे ऐसा जानपड़ता है कि हम सब स्वर्ग को एकही साथ चलेंगे १५ वैशम्पायनजी बोले हे राजा जनमेजय ! इसके पीछे वे पांचों उन पांचों रथों पर चढ़कर अपने तेज से पृथ्वी और आकाश में प्रकाश करते हुये स्वर्ग को चले गये १६ राह में अष्टक ने राजा ययाति से कहा कि मैं जानता था कि सब से आगे मेरा रथ चलेगा क्योंकि इन्द्र मेरे मित्र हैं परन्तु देखो उशीनर का बेटा राजा शिबि हम सबके आगे रथ पर चढ़ा हुआ जा रहा है १७ ययाति बोले कि राजा शिबि के तुम से आगे जाने का कारण यह है कि वह दानी तपस्वी सत्यवादी धर्मात्मा लज्जावान् लक्ष्मीवान् सौम्य और प्रजापालन की इच्छा रखनेवाला है और उसने जो कुछ धन पाया सब देवताओं के नामपर देदिया १८। १९ इसके उपरांत अष्टक ने फिर राजा ययाति से पूछा कि तुम सत्य २ कहो तुम कौनहो किसके पुत्र हो कहां से आये हो और आपका घर कहां है आपने जो जो काम किये हैं वह दूसरा नहीं कर सक्ता है २० यह सुनकर ययाति ने कहा कि मैं नहुष का पुत्र और पुरुका पिताहूं और दूसरी गुप्तबात यह है कि मैं तुम्हारा नाना हूं २१ हमने सब पृथ्वी को जीतकर राज्य किया ब्राह्मणों को छादन दिये १०१ अश्वमेध यज्ञ किये २२ और सुवर्ण सहित सब पृथ्वी का दान देकर सौ अर्ब गोदान किये २३ हम झूठ कभी नहीं बोलते हैं हमारा सत्य पृथ्वी और स्वर्गमें अग्नि के समान प्रकाश कर रहाहै सत्यही संतों को प्यारा है २४ हे अष्टक ! सब देव मुनि आदि सत्यसेही पूजित हैं २५ हम पांचों की कथाको जो कोई ब्राह्मणों के बीच में कहेगा वह हमारे लोक को पहुँचेगा २६ वैशंपायनजी बोले हे राजा जनमेजय ! राजा ययाति स्वर्ग से गिरकर अपने दौहित्रोंसे तारेहुये फिर स्वर्गको गये २७॥

इति श्रीभाषामहाभारते आदिपर्वणि त्रिणवतितमोऽध्यायः ९३ ॥

चौरानबे का अध्याय।

वैशम्पायनजीका राजा जनमेजयसे पुरुवंशके राजाओं की नामसहित कथा कहना ॥

जनमेजय बोले हे वैशंपायनजी ! अब कृपा करके पुरुवंशके उन राजाओं की कथाका वर्णन कीजिये जो वंश के चलानेवाले सत्यवादी धर्मात्मा और

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दुःख के हरनेवाले हुये १। ३ वैशंपायनजी बोले बहुत अच्छा सुनिये मैं कहताहूं ४ राजा पुरु के तीन पुत्र बड़े महारथी पौष्टिनाम स्त्रीसे उत्पन्न हुये एकका नाम प्रवीर दूसरे का नाम ईश्वर और तीसरे का नाम रौद्राश्व था ५ इन तीनों में वंशका चलानेवाला प्रवीर हुआ और उसके शूरसेनी नाम रानी से मनस्युनाम पुत्र हुआ जिसने चारों समुद्रतक पृथ्वी की रक्षा की ६ मनस्यु के सौवीरी स्त्री से तीन पुत्र शक्र, संहनन और वाग्मी नाम और मिश्रकेशीरानी से अन्वग्भानु आदि पुत्र बड़े शूरवीर उत्पन्न हुये ७। ८ और रौद्राश्व के अप्सराओं से दश पुत्र बड़े धनुर्धारी शूरवीर ज्ञानी और यज्ञके करने वाले उत्पन्न हुये उनके नाम ये हैं ऋचेयु, कक्षेयु, कृकणेयु ९। १० स्थंडलेयु, वनेयु, जलेयु, तेजेयु, सत्येयु ११ धर्मेयु और सन्नतेयु और इनमें सब से बड़े ऋचेयु के अनाधृष्टि नामी पुत्र बड़ा पराक्रमी पृथ्वी पर हुआ जैसे स्वर्ग में इन्द्रहैं १२ अनाधृष्टि के मतिनार नाम पुत्र बड़ा धर्मात्मा हुआ जिसने अश्वमेध और राजसूय यज्ञ किये १३ और मतिनार के चार पुत्र बड़े पराक्रमी हुये उनके नाम ये हैं तंसु १ महान २ अतिरथ ३ और द्रुह्य ४। १४ इनमें से पौरव वंशको चलानेवाला तंसु हुआ १५ और उसके ईलिननाम पुत्र सब पृथ्वीका जीतनेवाला उत्पन्न हुआ १६ ईलिनका विवाह रथंतरी नाम स्त्रीसे हुआ और उसमें पांच पुत्र दुष्यंत १ शूर २ भीम ३ प्रवसु ४ और वसु ५ नाम उत्पन्न हुये इन सबमें दुष्यंत सबसे श्रेष्ठ हुआ १७। १८ उसके शकुन्तला स्त्रीसे भरतनामी पुत्र बड़ा महात्मा और वंश चलानेवाला उत्पन्न हुआ १९ भरत ने तीन विवाह किये और तीनों से तीन २ पुत्र उत्पन्न हुये परंतु उनमें कोई पुत्र राजाके समान न था इस कारण से भरतजी ने उनको अङ्गीकार नहीं किया इसपर उनकी माताओंने उन पुत्रोंको मारडाला २०।२१ इसपीछे भरत ने पुत्र होने के निमित्त भरद्वाज से यज्ञ कराया और उस यज्ञके प्रभाव से भरत के भुमन्यु नाम पुत्र हुआ २२ उसको भरतने अपने अनुरूप समझकर पुत्र माना और सयाना होनेपर उसका राज्याभिषेक करादिया २३ भुमन्यु के दिवरथनामी पुत्र उत्पन्न हुआ और दिवरथ के पांच पुत्र पुष्करिणी स्त्रीसे उत्पन्न हुये उनके नाम येहैं सुहोत्र, सुहोता, सुहवि, सुयजु और ऋचीक २४ इनमें से सुहोत्र जो सबसे बड़ाथा राजगद्दीपर बैठा और उसने राजसूय और अश्वमेध आदि यज्ञों को करके सब पृथ्वीका राज्य हाथी घोड़ा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आदि बड़े वैभव से धर्मपूर्वक किया और उसके राज्यमें मनुष्य और खेती आदि सबकी बढ़ोतरी रही २५। २६ उसके ऐक्ष्वाकी रानीसे तीनपुत्र अजमीढ़ सुमीढ़ और पुरुमीढ़नामी उत्पन्न हुये ३० इन तीनोंमें राजा अजमीढ़ बड़ा श्रेष्ठ हुआ और उसका तीन रानियों से विवाह हुआ उनके नाम ये हैं धूमिनी, नीली और केशिनी इनमें से धूमिनी के ऋक्ष नीली के दुष्यंत और परमेष्ठी और केशिनीके जह्नु, व्रजन और रूपिण नाम पुत्र उत्पन्न हुये ३१। ३२ इनमें से दुष्यंत और परमेष्ठीके वंशसे सब पंजाबी हुये और जह्नुके कुशिक और व्रजन और रूपिणके बड़े भाई ऋक्षके संवर्ण नाम पुत्र उत्पन्न हुये ३३। ३४ संवर्ण के राज्यमें प्रजा बहुत क्षय होगई और वर्षा न होनेके कारण से भूख और अनेक व्याधियों से दुःखित होकर जहां तहां भागगई ३५। ३६ इसी अवसरमें पंजाबके राजाओं ने दश अक्षौहिणी सेना लेकर संवर्णपर चढ़ाई की और उसको युद्धमें जीतकर उसका राज्य अपने राज्यमें मिला लिया ३७।३८ राजा संवर्ण वहां से भयभीत होकर अपनी रानी मंत्रीपुत्र और दूसरे सुहृदों को लेकर भागा ३९ और सिंधुनदी के जंगल में पहाड़के पास जाकर बसने लगा ४० एक हजार वर्षतक राजा संवर्ण वहां उसी तरह रहा किया उपरांत वहां एक दिन वशिष्ठजी गये उनको देखकर संवर्ण ने बड़े आदरसे उनको बैठाया और पाद्य अर्घ्यआदिसे पूजन करके विनय की कि महाराज मैं राज्य पाने के अर्थ यत्न किया चाहताहूं आप मेरे पुरोहित हूजिये ४१।४४ वशिष्ठजी ने पुरोहित होना स्वीकार किया और राजा संवर्ण को साम्राज्य अभिषेक किया ४५ इसके पीछे राजा संवर्ण ने सब क्षत्रियों को जीतकर अपने अधीन किया और अपने राज्यको पाकर बड़े २ दक्षिणावाले यज्ञ किये ४६। ४७ संवर्ण के तपतीनाम रानी से जो सूर्यकी कन्याथी कुरुनाम बड़ा धर्मात्मा पुत्र उत्पन्न हुआ ४८ उसके नामसे कुरुजांगल देश विख्यात हुआ और उसने अपनी तपस्यासे कुरुक्षेत्रको पवित्र किया ४९ उसके वाहिनी रानी से पांच पुत्र उत्पन्नहुये अविक्षित १ अविष्यंत २ चैत्ररथ ३ मुनि ४ और जनमेजय ५।५० इनमें से अविक्षितके आठ पुत्र हुये परीक्षित १ शबलाश्व २ आदिराज ३ विराज ४ शाल्मलि ५ उच्चैश्श्रवा ६ भंगकार ७ और जितारि ८। ५१ इनके बहुतसे वंश हुये परीक्षितके सात पुत्र हुये जनमेजय १ कक्षसेन २ उग्रसेन ३ चित्रसेन ४ इन्द्रसेन ५ सुषेण ६ और भीमसेन ७ और ये सातों बड़े वीर और

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

धर्मात्माथे ५२।५३ जनमेजयके आठ पुत्र हुये धृतराष्ट्र १ पंडु २ वाह्लीक ३ निषध ४ जाम्बूनद ५ कुंडोदर ६ पदाति ७ और बसाति ८ ये आठों बड़े पराक्रमी और मनुष्योंके हित करनेवालेथे ५४।५६ इनमेंसे धृतराष्ट्र ने राजगद्दी पाई और उसके ११ पुत्र हुये कुंडिक १ हस्ती २ वितर्क ३ क्राथ ४ कुण्डिन ५ हविःश्रवा ६ इन्द्राभ ७ भुमन्यु ८ प्रतीप ९ धर्मनेत्र १० और सुनेत्र ११ इन सबों में तीनों पिछले पुत्र पृथ्वीपर विख्यात हैं और उन तीनों में भी प्रतीप बड़ा अनूप राजा हुआ ५७।५९ उसके तीन पुत्र बड़े महारथी हुये देवापि १ शांतनु २ और वाह्लीक ३। ६० इनमें से देवापिने धर्मकी इच्छासे वनवास किया और शांतनु और वाह्लीक राजा हुये ६१ इतनी कथा सुनाकर वैशंपायनजी बोले हे राजा जनमेजय! इसप्रकार भरतवंश में देवऋषियों के तुल्य बड़े २ पराक्रमी अनेक राजा उत्पन्न हुये ६२।६३॥

इति श्रीभाषामहाभारते आदिपर्वणि चतुर्णवतितमोऽध्यायः ९४॥

पंचानवे का अध्याय।

वैशंपायनजीका राजा जनमेजय से कुरुवंश की कथा दक्षसे लेकर राजा जनमेजय के पौत्र होनेतक वर्णन करना॥

राजा जनमेजय बोले हे वैशंपायनजी! मैंने संपूर्ण पहिले मनुष्योंकी संक्षेप कथा सुनी परंतु उन महात्माओंकी अमृतरूपी कथाओंको सुनने से मेरा चित्त नहीं भरता है इस कारण से मैं चाहताहूं कि कृपा करके आप उन सबोंकी कथा विस्तारपूर्वक मनुआदि प्रजापति से लेकर अबतक वर्णन कीजिये १।५ यह सुनकर वैशंपायनजी बोले कि हमने यह कथा जिस प्रकारसे व्यासजी महाराजसे सुनी है उसी प्रकारसे तुमको सुनाते हैं सुनो ६ दक्षके अदिति, अदितिके सूर्य, सूर्यके इला, इलाके पुरूरवा, पुरूरवाके आयु, आयुके नहुष और नहुषके ययाति उत्पन्न हुये और ययातिका दो स्त्रियों से विवाह हुआ ७ एकका नाम देवयानीथा जो शुक्रजीकी बेटी थी और दूसरीका नाम शर्मिष्ठा था जो वृषपर्वा दैत्यकी पुत्रीथी ८ देवयानीसे यदु और तुर्वसु नाम और शर्मिष्ठासे द्रुह्य अनु और पुरुनाम पुत्र उत्पन्नहुये ९ यदुसे यदुवंश और पुरुसे पौरववंश उत्पन्न हुआ १० पुरुकी स्त्रीका नाम कौशल्याथा उसके जनमेजयनाम पुत्र उत्पन्नहुआ और वह पुत्र तीन अश्वमेध और एक विश्वजित् यज्ञोंको करके वनको चला गया ११ उसने अपना विवाह अनन्तानाम माध्वीकन्यासे कियाथा और उससे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उसके प्राचिन्वान्नाम पुत्र उत्पन्न हुआ उसका नाम प्राचिन्वान् होनेका यह कारणहै कि उसने पूर्वकी दिशाको उस स्थानतक जयकियाथा जहां सूर्य उदय होते हैं १२ प्राचिन्वान्का विवाह अश्मकी नाम यादवकुलकी कन्या से हुआ और उससे उसके संयातिनाम पुत्र उत्पन्न हुआ १३ संयातिने अपना विवाह वारांगीनाम ६ दृषद्वैतनामकी बेटीसे किया और उससे उसके अहंयाति नाम पुत्र उत्पन्न हुआ १४ अहंयातिका विवाह कृतवीर्यकी बेटी भानुमती से हुआ और उसके सार्वभौमनाम पुत्रहुआ १५ सार्वभौमने कैकय देशमें जाकर सुनंदा नाम उस देशकी राजकन्या को स्वयंवरमें जीता और उससे उसके जयत्सेन नाम पुत्र उत्पन्न हुआ १६ जयत्सेनका विवाह राजा विदर्भकी बेटी सुश्रवा नामसे हुआ उसके अवाचीन नाम पुत्र उत्पन्न हुआ १७ अवाचीनने राजा विदर्भकी दूसरी बेटी मर्यादानामसे विवाह किया उसके अरिहः नाम पुत्र हुआ १८ अरिहःने अपना विवाह अंगीनाम रानीसे किया उसके महाभौमनाम बेटा उत्पन्न हुआ १९ महाभौम का विवाह प्रसेनजितकी बेटी सुयज्ञानामसे हुआ उसके अयुतनाम पुत्र उत्पन्न हुआ और सौ पुरुषमेध यज्ञ करने के कारण से उसका नाम संसारमें अयुतनाई विख्यात हुआ २० उसने अपना विवाह कामा-नाम पृथुश्रवाकी बेटीसे किया उसके अक्रोधन नाम पुत्र हुआ २१ इस अक्रो-धन को राजा कलिंग की बेटी करंभानाम विवाहीगई उसके देवातिथि नाम पुत्र हुआ २२ देवातिथि को राजा विदेह की बेटी मर्यादा विवाहीगई उसके अ-रिहःनाम पुत्र उत्पन्न हुआ २३ अरिहःने अपना विवाह राजा अङ्गकी सुदेवानाम कन्या से किया उसके ऋक्षनाम पुत्र हुआ २४ ऋक्षका विवाह तक्षक की ज्वालानाम बेटीसे हुआ उसके मतिनारनाम पुत्र हुआ २५ इस मतिनार ने सरस्वती नदी के किनारे बारह वर्ष में समाप्त होनेवाला सत्रयज्ञ किया और उस यज्ञके पूरे होने पर सरस्वती ने आकर उससे अपना विवाह किया उससे तंसु नाम पुत्र हुआ २६ और तंसु के कालिंगी रानी से ईलिन नाम पुत्र हुआ २७ ईलिन ने अपना विवाह रथंतरी स्त्री से किया और उसके दुष्यंत आदि पांच पुत्र उत्पन्न हुये २८ दुष्यंत का विवाह विश्वामित्र की शकुंतला नाम बेटीसे हुआ और उसके भरतनाम बेटा हुआ २९ इसका नाम भरत होने का कारण यह है कि राजा दुष्यंतको आकाशवाणी हुईथी कि माता केवल क्षेत्रहै पुत्र बापकाही होताहै शकुंतला सच कहती है उसका तू अपमान मत

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कर अपने पुत्रको पाल पुत्र तेराही है पुत्र पिताको यमलोक से छुटाता है सो पुत्रके पालन की आज्ञा आकाशवाणी से मिलने के कारण से उसका नाम भरत हुआ और काशीके राजाकी सुनंदानाम कन्यासे विवाह होकर उसके भुमन्यु नाम पुत्र उत्पन्न हुआ ३०।३२ भुमन्युका विवाह राजा दशार्हकी विजया नाम पुत्री से हुआ उसके सुहोत्र नाम पुत्र उत्पन्न हुआ ३३ सुहोत्रने अपना विवाह सुवर्णानाम राजा इक्ष्वाकुकी कन्या से किया उसके हस्तीनाम पुत्र हुआ जिसके नाम से हस्तिनापुर नगर विख्यातहै ३४ हस्तीका विवाह राजा त्रिगर्त की कन्या यशोधरा से हुआ उसके विकुंठननाम पुत्र उत्पन्न हुआ ३५ विकुंठन ने सुदेवानाम राजा दशार्ह की बेटीसे किया और उसके अजमीढ़ नाम पुत्र हुआ ३६ अजमीढ़के चार रानीथीं कैकेयि १ गांधारी २ विशाला ३ और ऋक्षा ४ उन चारों से राजा अजमीढ़ के १२४ पुत्र अपना २ अलग २ वंश चलानेवाले उत्पन्न हुये परन्तु उनमें पौरववंश का चलानेवाला संवर्ण हुआ ३७ उसका विवाह तपती नाम सूर्य की कन्या से हुआ उससे उसके कुरुनाम पुत्र उत्पन्न हुआ ३८ राजा कुरुका विवाह राजा दशार्ह की बेटी शुभांगीनाम से हुआ उसके विदूरनाम पुत्र हुआ ३९ विदूरका विवाह माधवी संप्रिया से हुआ उसके अनुश्वानाम पुत्र हुआ ४० अनुश्वा को मगधदेश के राजा की बेटी अमृता नाम विवाही गई उससे उसके परीक्षित नाम पुत्र उत्पन्न हुआ ४१ परीक्षितके बाहुदासुयशनाम रानी थी उससे भीमसेन नाम पुत्र उत्पन्न हुआ ४२ भीमसेन का विवाह कुमारीनाम कैकयदेशकी बेटीसे हुआ उसके प्रतिश्रवा नाम पुत्र हुआ ४३ प्रतिश्रवाके प्रतीपनाम पुत्र हुआ प्रतीप के शैव्या और सुनंदानाम दो रानियांथीं उन दोनों के देवापि १ शांतनु २ और वाह्लीक नाम तीन पुत्र उत्पन्न हुये ४४ इनमें से देवापि और वाह्लीक वनवासी हुये और शांतनु राजा हुआ ४५ इस तीसरे का नाम शांतनु होने का यह कारण है कि वह जिसपर अपना हाथ फेर देता था वह जवान होजाता था और सुख भोगताथा ४६ राजा शांतनुका विवाह भागीरथी गंगा से हुआ उससे उनके देवव्रत नाम पुत्र उत्पन्न हुआ जिसका नाम पीछेसे भीष्म विख्यात हुआ ४७ भीष्मने अपने पिताका प्रिय करने को अपना विवाह न करने की प्रतिज्ञा की और अपने पिताका विवाह सत्यवती से करवाया जिसको काली और योजनगंधा भी कहतेहैं ४८ यह सत्यवती वहीथी जिसके पहले

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पराशर मुनिसे व्यासजी उत्पन्न हुयेथे राजा शांतनु से विवाह होने के पीछे उसके दो पुत्र उत्पन्न हुये ४९ एकका नाम विचित्रवीर्य और दूसरे का नाम चित्रांगद था इनमें से चित्रांगद तो बालापनमेंही गंधर्वोंके हाथसे मारागया और विचित्रवीर्य राजा हुआ ५० उसका विवाह राजा काशीकी अंबिका और अंबालिका नाम बेटियों से हुआ ५१ परंतु विचित्रवीर्य विना संतान के मर गया उसके मरनेपर उसकी माता सत्यवती ने वंशनाश होनेके प्रयोजन से व्यासजी का स्मरण किया और व्यासजी स्मरण करतेही वहां आगये और सत्यवतीसे बोले कि मुझको क्यों बुलायाहै ५२। ५३ सत्यवती बोली कि तुम्हारा भाई विचित्रवीर्य अपुत्र मरगया है तुम उसके संतान उत्पन्न करो ५४ व्यास जीने तथास्तु कहकर विचित्रवीर्य की स्त्रियों के धृतराष्ट्र १ पांडु २ और विदुर ३ पुत्र उत्पन्न किये ५५ इनमेंसे धृतराष्ट्र के गांधारी रानीसे सौ पुत्र उत्पन्न हुये ५६ जिनमें ४ मुख्य दुर्योधन १ दुश्शासन २ विकर्ण ३ और चित्रसेन ४ थे ५७ और पांडुके दो रानियां थीं कुंती १ और माद्री २। ५८ एक समय राजा पाण्डु वनमें अहेर खेलनेको गया वहां उसने अज्ञान से एक मृगरूप मुनि को अपनी मृगीरूप स्त्रीसे भोग करते में बाणसे मारा और वह मुनि मरतेसमय राजासे बोला कि तुमने मुझको भोगकी इच्छासे तृप्त न होने दिया और मार डाला इस कारण से तुमभी भोग करतेही में मरजाओगे तुम्हारी भी भोगकी इच्छा पूरी न होगी राजा उस शाप को सुनकर बड़ा दुःखी हुआ और अपनी कुन्ती नाम रानीसे बोला कि मैंने अपनी चपलता से ऐसा शाप पाया है अब मुझसे तुम्हारे पुत्र नहीं होसक्ता है और विना पुत्रके मनुष्य को स्वर्गमें अच्छे लोक नहीं मिलते हैं इससे कुछ ऐसा उपाय करो जिससे मेरे पुत्र होय यह सुनकर कुंती बोली कि बहुत अच्छा और अपने मंत्रसे धर्मराज वायु और इन्द्र को बुलाकर धर्म से युधिष्ठिर वायु से भीमसेन और इन्द्र से अर्जुन नाम पुत्रों को उत्पन्न किया ५९। ६१ राजा पांडु यह देखकर बहुत प्रसन्न हुये और कुंती से कहा कि तेरी सवति माद्री विना पुत्रके रही जाती है इसके भी पुत्र होनेका उपाय करो यह सुनकर कुन्ती ने बहुत अच्छा कहकर माद्रीको भी वह मंत्र दे दिया और उसने अश्विनीकुमारों को मंत्र से बुलाकर नकुल और सहदेवनाम दो पुत्र उत्पन्न किये ६२। ६३ इसके पीछे एक दिन राजा पांडु अपनी माद्री स्त्री को शृंगार किये हुये देखकर कामदेव के वश में होगये और भोगकी इच्छा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

से उसको स्पर्श करते ही मरगये ६४ माद्री राजाके साथ सती होगई और कुंती से कहगई कि मेरे दोनों पुत्रों को भी तुम्हीं पालन करना ६५ इसके पीछे उस वन के तपस्वी लोग राजा पांडु के उन पांचों पुत्र और कुंती को लेकर हस्तिनापुर को आये और सब पुत्रों को भीष्म विदुर आदि को सौंपकर अन्तर्धान होगये ६६ उनके चलेजाने पर देवताओं ने पांडवों पर फूलोंकी वर्षा की और दुन्दुभी बजाई ६७ फिर पांडवों ने अपने पिताका मरण सबको सुनाकर उसका और्ध्वदैहिक श्राद्ध आदि किया और वहां रहने लगे परन्तु उनके रहने को दुर्योधन बालकपनही से नहीं देखसका ६८ और निकालने के अनेक उपाय किये परन्तु कोई उपाय न चलसका ६९ तब दुर्योधन ने छल करके पाण्डवों को धृतराष्ट्र से आज्ञा दिवाकर वारणावर्त नगर को भिजवाया और वे लोग विदुरजी के मंत्रसे लाखके घरको जलाकर आप बचकर वहांसे चल दिये ७०।७१ राह में एक हिडम्ब नाम दैत्य मिला पाण्डवों ने उसे मारडाला और वहां से चलकर एक चक्रापुरी नाम नगर में पहुँचे ७२ वहां कुछ काल रहकर बकनाम राक्षस को मारकर पाञ्चालनगर को गये ७३ वहां पर पाण्डवों का द्रौपदी से विवाह हुआ और विवाह होनेपर अपने देश को आये ७४ और उन पांचों पाण्डवों के द्रौपदी से एक एक पुत्र उत्पन्न हुआ नाम उनके ये हैं युधिष्ठिर से प्रतिविन्ध्य १ भीमसेन से सुतसोम २ अर्जुन से श्रुतकीर्ति ३ नकुल से शतानीक ४ और सहदेव से श्रुतकर्मा ५। ७५ इसके पीछे राजा युधिष्ठिर ने राजा शैल्य की कन्या को स्वयंवर में विवाहा उससे यौधेय नाम पुत्र उत्पन्न हुआ ७६ भीमसेन ने राजा काशी की बलन्धरा नाम कन्या से अपना विवाह किया उसके सर्वगन्धनाम पुत्र उत्पन्न हुआ ७७ और अर्जुन ने श्रीकृष्ण की बहिन सुभद्रा से अपना विवाह किया उससे उसके अभिमन्यु नाम पुत्र उत्पन्न हुआ ७८ नकुल का विवाह राजा चंदेरी की करेणुमती नाम कन्या से हुआ उससे उसके निरमित्र नाम पुत्र उत्पन्न हुआ ७९ सहदेव ने अपना विवाह मद्रदेश के मद्रराज नाम राजाकी विजया नाम पुत्री से किया उसके सुहोत्र नाम पुत्र हुआ ८० और इन सबसे पहले भीमसेन के हिडम्बा राक्षसी से घटोत्कच नाम पुत्र उत्पन्न हुआ ८१ हे राजा जनमेजय! पाण्डवों के उक्त ११ पुत्र उत्पन्न हुये परन्तु उनमें वंश का चलानेवाला अभिमन्यु ही हुआ ८२ उसका विवाह राजा विराट की कन्या उत्तरा नाम से हुआ उसके अश्वत्थामा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

के अस्त्रकी अग्नि से मरा हुआ छःमहीने का बालक उत्पन्न हुआ उस समय श्रीकृष्णजी नें कहा कि मैं इसको सजीव करदूंगा इसको उठालो उनके कहने से कुन्ती ने उस मरेहुये बालकको गोदमें उठालिया और अपने तेज से सजीव करदिया और सब कुल के क्षय होनेपर उत्पन्न होने के कारण उसका नाम परीक्षित रक्खा ८३। ८४ परीक्षित का विवाह माद्रवती तुम्हारी माता से हुआ उसके तुम जनमेजय पुत्र हुये ८५ तुम्हारा विवाह वपुष्टमारानी से हुआ उससे तुम्हारे शतानीक और शंकुकर्ण नाम दो पुत्र उत्पन्न हुये तुमने शतानीक का विवाह वैदेही से किया उससे तुम्हारे अश्वमेधदत्त नाम पौत्र उत्पन्न हुआ है ८६ इतनी कथा सुनाकर वैशम्पायनजी बोले हे राजा जनमेजय! हमने तुमको यह कुरुपाण्डवों के वंशकी पूरी पूरी कथा सुनाई यह कथा परम पवित्र और ब्राह्मण आदि चारों वर्णों के सुनने के योग्य है ८७ जो कोई मनुष्य इस पुण्य इतिहास को सुनेगा वह स्वर्ग पावेगा और सबका मान्य होगा ८८। ८९ क्योंकि यह व्यासजीका बनाया हुआ महाभारत चारों वेदोंके समान पुण्य देनेवाला है और इसके सुनने से मनुष्य को धन यश और आयु मिलती है ९०॥

इति श्रीभाषामहाभारते आदिपर्वणि पञ्चनवतितमोऽध्यायः ९५॥

छियानबे का अध्याय।

राजा महाभिष को गंगाजी को नंगी देखने के कारण ब्रह्माजी का शाप देना॥

वैशम्पायनजी बोले हे राजा जनमेजय! इक्ष्वाकुके वंशमें एक महाभिष नाम राजा बड़ा सत्यवादी और पराक्रमी हुआ था १ उसने सहस्र अश्वमेधयज्ञ करके इन्द्रको बहुत प्रसन्न किया और मरने पर स्वर्गलोक पाकर वहां सुखपूर्वक रहने लगा २ एक समय वह राजा ब्रह्माजी की उस सभा में जहां सब देवता और बड़े २ राजर्षि ब्रह्मर्षि बैठेहुये थे बैठा हुआ था ३ उस समय वहां गंगानदी आई और उसका अति उज्ज्वल वस्त्र हवासे उड़गया और वह नंगी होगई ४ उसको इसप्रकार से देखकर सब देवताओं नें अपनी गर्दन झुकाली परन्तु राजा महाभिष गंगाजी को नंगी देखता रहा ५ ब्रह्माजी ने यह देखकर उसको शाप दिया कि तू पृथ्वी पर जन्म लेकर मनुष्ययोनि पावेगा और देह छोड़नेपर फिर इसलोक में आवेगा ६ उस समय राजाने पृथ्वी के सब धर्मात्मा राजाओंको विचारकर अपना जन्म राजा प्रतीप के यहां लेना विचारकर उसके घर जन्म

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लिया७ और गङ्गा वहांसे उस राजाको ध्यान करती हुई लौटी ८ राहमें उसको अष्टवसु देवता मिले उनके विवर्ण स्वरूपको देखकर गङ्गाने उनसे पूछा कि यह क्या हाल तुमलोगोंका हुआ कहो सब देवता कुशलहैं ९।१० अष्टवसु बोले कि हम वशिष्ठजी को सन्ध्या करते में उल्लंघन करके चलेगये उस थोड़े अपराध को अपमान जानकर वशिष्ठजीने हमको यह शाप दियाहै कि तुम मनुष्ययोनिमें उत्पन्न होकर नरदेह धारण करो यह शाप अब किसी प्रकारसे नहीं लौटसक्ता है क्योंकि वशिष्ठजी ब्रह्मवादी हैं इसकारण से हम चाहते हैं कि तुम संसार में नरदेह धारण करो हम सब तुम्हारे उदरमें जन्म लेंगे हमको संसारी स्त्रियों के उदरमें वास करना अच्छा नहीं मालूम होता है यह सुनकर गङ्गाजीने कहा बहुत अच्छा परन्तु यह तो कहो कि मनुष्योंमें तुम्हारा पिता कौन होगा ११।१५ वसुओंने कहा कि राजा प्रतीप के शान्तनुनाम पुत्र होनेवाला है हमारा पिता वही होगा १६ यह सुनकर गङ्गा बोली अच्छा मैं निष्पाप हूं मैं अवश्य उस राजाका प्रिय और तुम लोगोंके मनकी इच्छा पूरी करूंगी १७ वसुओंने कहा कि जिस समय हम लोग तुम्हारे बालकरूप उत्पन्नहों उसी समय तुम हमको अपने जल में बहादेना जिसमें हम नरदेह से शीघ्र मुक्त होजावें १८ गङ्गाने कहा अच्छा परन्तु ऐसा करो जिसमें उस राजासे मेरा सङ्गम होने पर उसके मुझसे कोई पुत्र भी होवे १९ वसुओं ने कहा कि हम आठों अपना २ अष्टमांश देंगे उससे जो तेरे पुत्र होगा वह उस राजाका पुत्र कहावेगा २० वह बड़ा पराक्रमी होगा परन्तु न वह अपना विवाह करेगा और न कोई उसके पुत्र उत्पन्न होगा २१ वैशम्पायनजी बोले हे राजा जनमेजय! अष्टवसु गङ्गासे इसप्रकार से सम्मत करके चलेगये २२ ॥

इति श्रीभाषामहाभारते आदिपर्वणि षण्णवतितमोऽध्यायः ९६ ॥

सत्तानबे का अध्याय।

राजा महाभिषका राजा प्रतीपके जन्म लेकर शन्तनुनाम से प्रसिद्ध होना और उसका अहेर खेलते में एक सुन्दर स्त्रीको गङ्गातट पर देखना ॥

वैशम्पायनजी बोले हे जनमेजय! इसके पीछे एक समय राजा प्रतीप हरद्वार को गये और वहां कई वर्ष रहकर गङ्गातट पर नित्य जप किया करते थे १ एक दिन गङ्गाजी अपना अत्यन्त सुन्दर मोहिनी स्वरूप धारण करके राजा प्रतीप की दहिनी जांघपर आ बैठी २। ३ राजाने उसे देखकर कहा कि

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तू क्या चाहती है ४ गङ्गा बोली कि मैं तुमको चाहती हूं तुमभी मुझको अंगीकार करो सत्पुरुषों को कामवती स्त्रीका त्याग करना उचित नहीं है ५ राजा प्रतीप बोला कि मैं पराई स्त्रीको कभी खोटी दृष्टिसे नहीं देखताहूं और न अपने असमान स्त्री से विवाह करता हूं मेरा यही व्रत है ६ गङ्गा बोली कि मैं दिव्य कन्या हूं अश्रेय और अगम्य होना तो दूरहै कहने के योग्य भी नहीं हूं इससे तुमको चाहिये कि मुझे अङ्गीकार करो ७ यह सुनकर राजा ने कहा कि यह सब सच है परन्तु तू आकर मेरी दहिनी जांघपर बैठगई यह पुत्र पौत्र पुत्री और पुत्रकी बहू आदि के बैठने का आसन है स्त्री के बैठनेको बाईं जांघ है इसकारण से मैं धर्म के विपरीत कभी नहीं करूंगा हां मैं तुझको अपने पुत्रके साथ विवाह करसक्ताहूं ८। ११ यह सुनकर गङ्गा बोली कि बहुत अच्छा मैं तुम्हारे पुत्रके साथ अपना विवाह करके तुम्हारी भक्ति के कारण से भरतकुल में रहूंगी तुम सब राजाओं के मुकुटमणिहो और तुम्हारे गुणों को मैं सौ वर्ष में भी नहीं कहसक्ती हूं परन्तु इतना कहेलेती हूं कि समय पाकर जो कुछ काम मैं करूं तुम्हारा पुत्र मुझको उसके करने से न रोंके ऐसा करने से मैं बहुत प्रीति के साथ तुम्हारे पुत्रके साथ रहूंगी और वह पुत्रोंसहित सुन्दर स्वर्ग का सुख भोगेगा १२। १५ वैशम्पायनजी बोले हे राजा जनमेजय! यह सुनकर गंगा वहीं अन्तर्धान होगई और राजा प्रतीप अपनी स्त्री सहित पुत्रके अर्थ तप करने लगे १६। १७ कुछ दिनों में राजा महाभिष ने स्वर्ग से गिरकर राजा प्रतीप के यहां जन्म लिया और शांत अवस्था में उत्पन्न होने के कारण से राजा ने उसका नाम शंतनु रक्खा और वह अपने पिछले स्वर्ग के सुखको याद करके शुभ कर्मों को करने लगा १८। १९ थोड़े दिनों में जब शंतनु युवा हुये तब प्रतीप ने उनको एक दिन बुलाकर कहा कि हमने तेरे लिये पहिले से एक स्त्री को वर रक्खा है जो वह किसी समय अकेले में तेरे पास आवे तो तू उसका तिरस्कार मत कीजियो और उसे किसी कामके करने से न रोकियो वह तुझसे बहुत प्रीति मानकर तेरे पास रहेगी वह स्त्री बड़ी दिव्य स्वरूपवान् है पुत्रकी कामना से तेरे पास आवेगी सो तू हमारी आज्ञा का पालन करियो और उस स्त्री से प्रीतिपूर्वक बात करियो २०। २२ वैशम्पायनजी बोले हे जनमेजय! राजा प्रतीप अपने पुत्र शंतनु को इस प्रकार से शिक्षा करके रानी सहित वनको चलेगये और राजा शंतनु राज्य करने लगे २३ एक समय राजा अहेर खेलने

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

को वन में गया और वहां वन के जीवोंको मारता हुआ गंगा के किनारे पर पहुँचा २४। २५ और उसने एक परमसुन्दरी लक्ष्मी के समान, कमललोचनी, दिव्यअंग, तेजस्विनी, अदोष सुन्दर आभूषण और वस्त्र पहिरे हुये अकेली स्त्री को देखा २६। २७ वह दोनों एक दूसरे को देखने लगे न राजा उस स्त्री की शोभा को देखकर तृप्त होता था न वह स्त्री उस राजा को हृदय में उत्पन्न हुई प्रीति के कारण से अपनी दृष्टि से दूर करती थी २८। २९ अन्त में राजाने बड़ी मधुर वाणी से उस स्त्री से कहा कि तू कौन है देवी, गन्धर्वी, अप्सरा, यक्षी, पन्नगी अथवा मानुषी मैं चाहताहूं कि तू मेरी भार्या होकर रह ३०।३१॥

इति श्रीभाषामहाभारते आदिपर्वणि सप्तनवतितमोऽध्यायः ९७॥

अट्ठानबे का अध्याय।

गंगाका मनुष्यरूप धरकर राजा शंतनुकी पटरानी होकर रहना और उसके अष्टवसुओं का शापके कारण से जन्म लेना और गंगाका उनको शापसे मुक्त करना॥

वैशम्पायनजी बोले हे जनमेजय! गंगा राजा शंतनुके मृदु मुसुकानसहित उक्त मीठे वचनों को सुनकर और अष्टवसुओं से जो निबंध कियाथा उसको याद करके राजा के पास आई और कहा कि मैं तेरी पटरानी इस निबंधके साथ होसक्ती हूं कि बुरा या भला जो कुछ मैं करूं उसके करनेसे मुझे कभी न रोको और न मुझसे कभी अप्रिय वचन कहो और जो ऐसा करोगे तो मैं उसी समय तुमको त्याग करदूंगी १। ४ यह सुनकर राजाने कहा बहुत श्रेष्ठ तब गंगा राजा को इस निबंधके साथ पाकर बड़ी प्रसन्न हुई ५ राजा उसके साथ आनन्दपूर्वक कामकलोल करके उससे कभी किसी कामको नहीं पूछता था जो उसकी इच्छा में आता था वही करती थी ६ उसके शील स्वभाव औदार्य गुण एकांत की सेवा आदि गुणों को देखकर राजा उससे अत्यन्त प्रसन्न रहता था और वह दोनों आपस में हावभाव स्नेह के साथ रमण करते थे राजा की इच्छा जैसे भोगकी होती थी वैसेही गंगा उसके साथ विहार करती थी दोनों ने एक दूसरे के मनको वश में कर रक्खा था इस प्रकार से रतिरंग की तरंगों में सदैव मग्न रहने से राजाको कई वर्षोंतक गंगा के ऋतुस्नान के महीने नहीं जानपड़े ७। ११ इसके उपरांत उस मनुष्य रूप गंगा में राजा से आठ पुत्र देवताओं के सदृश उत्पन्न हुये १२ जब पुत्र उत्पन्न

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

होता था तब वह स्त्री उसको गंगाकी धारमें यह कहकर डालदेती कि मैं तुझ को प्रसन्न करती हूं १३ राजा शंतनु इस बातको जानकर बहुत अप्रसन्नमन होताथा परन्तु गंगाके त्याग करने के भयसे कुछ नहीं कहता था १४ गंगा ने सात पुत्र इसीप्रकार से अपनी धार में बहादिये जब आठवां पुत्र हुआ तब राजा ने दुःखी होकर गंगासे कहा कि अरी हत्यारी तू कौन और किसकी बेटी है जो ऐसी हत्या करती है इस पुत्रको मत मार १५। १६ यह सुनकर गंगाने कहा कि लो यह आपका पुत्र मौजूद है मैं नहीं मारती हूं परन्तु आज से मैं आप को निबन्ध के टूट जाने के कारण से त्याग करूंगी १७ मैं जह्नुकी पुत्री गंगाहूं मुझे देवताओंका कुछ काम करना था इस प्रयोजनसे तेरे साथ रहीथी १८ और ये तेरे आठों पुत्र जो मैंने होतेही गंगा में बहा दिये थे सो अष्टवसु देवता हैं वशिष्ठजी के शापसे इनको पृथ्वीपर जन्म लेनापड़ा था और इस मनुष्यलोक में आपके सिवाय वसुओं को उत्पन्न करनेवाला पिता और मेरे सिवाय उनको उदरमें रखनेवाली माता न होने के कारण से मुझको आप के यहां पटरानी होकर रहना पड़ा और उनको जन्मतेही जल में डालने का कारण यह था कि मुझसे और वसुओं से यह निबन्ध हो चुका था कि तू हम को मनुष्य देहसे जन्म लेतेही मुक्त करियो सो वह अष्टवसु अब शापसे मुक्त हुये और आपने भी उनको उत्पन्न करके स्वर्ग के अक्षय लोकों को अपने करतल में करलिया अब मैं जातीहूं १९। २३ तुम इस मेरे पुत्रको अच्छी तरह पालना यह प्रत्येक वसुके अष्टमांशोंसे उत्पन्न हुआहै और मैंने वसुओं से इस पुत्रको मांगा था २४॥

इति श्रीभाषामहाभारते आदिपर्वण्यष्टनवतितमोऽध्यायः ९८॥

निन्नानबे का अध्याय।

अष्टवसु देवताओं को वारुणि ऋषिकी गऊ हरने और वारुणि ऋषि के उनको शाप देने का वृत्तांत गंगाका राजा शंतनुसे कहना॥

यह सुनकर राजा शंतनुने गंगा से पूछा कि आपव किसका नामहै और वसुदेवता तो सब जगत के ईशहैं वे मनुष्यलोक में क्योंकर और किस पाप से उत्पन्न हुये और तेरे उस दिये हुये पुत्रने क्या ऐसा कियाहै जिसके कारण से इस को मनुष्यलोकमें वास करना पड़ेगा १। ३ यह सुनकर गंगा बोली कि आपव नाम वशिष्ठकाहै और वशिष्ठ वरुणके पुत्रहैं ४। ५ उनका आश्रम उस वनमें है

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जो मेरुपर्वतकी बगल से चलागयाहै उसमें बड़े बड़े सुन्दर मृग पक्षी रहते हैं और हरऋतु में अनेकतरह के फल पुष्प लगते हैं और वहीं वह ऋषि तप करते हैं ६।७ उनको कश्यपजी ने हवन आदि के साधनके लिये नन्दनीनाम गऊ जो दक्षकी सुरभीनाम पुत्री से उत्पन्न हुई थी दी और वह गऊ उस तापस वनमें जहां बड़े २ ऋषि रहते थे भयरहित बिचरतीहुई फिरा करती थी ८। १० एक समय उस वनमें अष्टवसु देवता अपनी स्त्रियों सहित आये और उस वन पहाड़ की शोभा देखते और स्त्रियों से रमण करते हुये इधर उधर बिचरनेलगे ११।१२ उनमें से द्युनाम वसुकी सुमध्यमानाम स्त्रीने उस सुन्दर खुर पूंछ और स्वरूप वाली नन्दनी गौको देखा और अपने पति द्यु को दिखलाया द्यु उस अत्यंत स्वरूपवान् गऊको देखकर बोला १३। १७ कि यह गऊ वारुणि ऋषि की है और उसीका यह वन है १८ इसके दूधमें यह प्रभाव है कि जो मनुष्य उसको पी ले तो दश हजार वर्षतक जीवे और कभी वृद्ध न होवे १९ यह सुनकर सुमध्यमा अपने पति से अत्यंत शुश्रूषा करतीहुई बोली कि महाराज मनुष्यलोक में उशीनर राजर्षि की बेटी जितवती नाम बड़ी स्वरूपवान् एक मेरी सखी है मैं इस गऊको उसके लिये लेना चाहतीहूं जिसमें वह इसके दूध को पीकर पृथ्वीपर दश हजार वर्षतक सुखपूर्वक रहे और वृद्ध न होवे मेरी इस प्रसन्नता को आप पूरा कीजिये इससे बढ़के मुझे प्रसन्न करनेवाली कोई चीज नहीं है २०। २५ उसकी बातको सुनकर द्युने ऋषि के परम तेज और अपने को आकाश से पृथ्वी पर गिरायेजाने का हाल न जानने के कारण से उस गऊ को बछड़ा सहित अपने पृथुआदि भाइयों की सहायता से हरा और उसको वहां से ले चले २६। २७ इसके उपरान्त वारुणि ऋषि वन से फल फूलआदि लेकर अपने आश्रम में आये और गऊको वहां न देखकर चारों ओर ढूंढ़नेलगे जब कहीं पता नहीं पाया तब अपनी दिव्यदृष्टि से जाना कि अष्टवसु देवता गऊको लेगये हैं यह जानकर ऋषिने बड़ा क्रोध किया और वसुओंको शाप दिया कि २८। ३० मेरी गौ को चुराने के कारणसे वसुओंको निस्संदेह पृथ्वीपर जन्म लेना पड़ेगा ३१ इस शापके हालको जानकर वसुदेवता उन ऋषिके आश्रम में आये और शापसे छुटने को ऋषिसे विनय की उस समय ऋषिने कहा कि हमने शाप तो तुम सबकोही दियाहै तुमलोग इस शापसे एक वर्ष में छूटजाओगे और द्यु जिसके कारण से तुम सबको शाप

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दियागया है बहुत दिनों तक पृथ्वीपर मनुष्यदेह धारण करके रहेगा ३२।३८ परन्तु बड़ा धर्मात्मा और सब शास्त्रों में विशारद होगा और यह पिताके प्रिय करने के लिये न स्त्रीसंबन्धी भोगोंको भोगेगा न इसके सन्तान होगी ३६।४० गंगा बोली हे राजा! वसु देवता यह सुनकर मेरे पास आये और मुझसे यह वर मांगा कि तू हमको उत्पन्न होतेही जलमें डालदीजियो मैंने वैसाही करके सात वसुओंको शापसे मोक्ष किया अब यह आठवां द्युनाम वसु रहगया है सो यह उस ऋषिके शापसे बहुत दिनों तक पृथ्वीपर रहेगा ४१।४४ वैशंपायनजी बोले हे जनमेजय! गंगा राजा से उक्त वृत्तान्त कहकर वहीं अन्तर्धान होगई और उस लड़के कोभी लेगई ४५ पीछे वह लड़का अपने पिता शंतनु से गुणमें अधिक और देवव्रत हुआ और नाम उसका गांगेय हुआ ४६ राजा शंतनु गंगा के अन्तर्धान होने पर खिन्नचित्त होकर अपने घरको आये इतनी कथा सुनाकर वैशम्पायनजी ने कहा कि मैं अब राजा शंतनु के गुण और माहात्म्य को कहता हूं क्योंकि यह पापों का दूर करनेवाला महाभारत इतिहास उसी राजा का है ४७।४८॥

इति श्रीभाषामहाभारते आदिपर्वण्येकोनशततमोऽध्यायः ६६॥

सौ का अध्याय।

राजा शंतनु का अपने देवव्रत पुत्रको गंगाके पास से लाना और युवराज करना और देवव्रतका अपने पिता के प्रिय करनेको मरणपर्यंत ब्रह्मचर्य रहना और राज्य न करने की प्रतिज्ञा करके सत्यवतीको अपने पिताके विवाह करने के लिये लाना और तब से उसका नाम भीष्म होना और पिताका उसको स्वच्छंद मरणका वरदान देना॥

वैशंपायनजी बोले हे राजा जनमेजय! राजा शंतनु बुद्धिमान्, धर्मात्मा, सत्यवादी, जितेन्द्रिय, दानी, क्षमावान्, तेजधारी, धैर्यवान् १।२ प्रजा का पालन करनेवाला, मतवाले हाथी के समान पराक्रमी, सब राजलक्षणों से युक्त और बड़ा यशस्वी था इसके चलन को देखकर सब प्रजा धर्म से सब काम करती थी आजतक उसकी बराबर कोई धर्म का करनेवाला राजा नहीं हुआ ३।६ इसके इन गुणों को देखकर सब राजा उसे राजाधिराज की पदवी देकर भय बाधा और शोक से रहित होकर रहनेलगे और उसकी शिक्षा के अनुसार यज्ञ और दान करने लगे ७।६ राजा शंतनु के राज्य में सब प्रजा धर्म के अनुसार चलती थी क्षत्री ब्राह्मणों की सेवा करते थे वैश्य क्षत्रियों के

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आज्ञाकारी थे और शूद्र ब्राह्मण क्षत्री और वैश्य तीनों वर्णों की सेवामें रहते थे १० इन्द्रके समान धर्मज्ञ और सत्यवादी होने के कारण से लक्ष्मी ने उसके घर में वास किया राजधानी हस्तिनापुर और राज्य उसका समुद्रपर्यन्त था ११।१२ इस राजा में रागद्वेष कुछ न था दर्शन चन्द्रमा के समान तेज सूर्य कासा शीघ्रता वायुकीसी क्रोध यमराजकासा और क्षमा पृथ्वी की समानथी १३ उसके समय में जीवहिंसा नहीं होने पाती थी वह धर्म के आचरण से नीतिके अनुसार दंड देकर राज्य करताथा १४। १५ उसने राज्यशासन ऐसा किया कि सब मनुष्यों के मन दान धर्ममेंही रहते थे न कोई किसी प्रकारका अधर्म करता औरन कोई झूंठ बोलता था और जो कोई दुःखी और अनाथ होता था उसका पालन किया जाताथा १६। १८ राजा शंतनु ३६ वर्षतक वन में भी रहे और किसी प्रकार का स्त्रीसम्बन्धी सुख नहीं भोगा १९ और उसके पुत्र जिनके नाम सुदेव और गांगेय दोनों थे अपने पिता के समान धर्मात्मा थे २० राजा शंतनु सब अस्त्र शस्त्रविद्याओं में निपुण महारथी और महापराक्रमी था २१ एक समय वह शंतनु अहेर खेलता हुआ गंगानदी के किनारे पर पहुँचा और उसमें थोड़ा जल देखकर विचार करनेलगा कि यह उत्तम नदी पहले के समान क्यों नहीं बहती है २२। २३ ऐसा विचारकर कारण को जानने के लिये आगे को बढ़ा और थोड़ी दूर जाकर देखता क्या है कि एक बड़ा तेजस्वी लड़का शस्त्रोंका प्रयोग कररहा है और उसीने अपने बाणों से गंगा के जल को रोक रक्खा है २४। २५ यह अमानुष कर्म उस लड़केका देखकर राजा शंतनु अचंभेमें रहगया और वनमें वास करने के कारणसे उसको नहीं पहिंचाना २६।२७ परंतु उस लड़केने राजाको जानलिया और वह राजाको मायासे मोहित करके उसी जगह जलमें समायगया २८ इस बातको देखकर राजाको यह शंका हुई कि यह मेरा पुत्र तो नहीं है इस बातको जानने के लिये राजाने जलके पास जाकर गंगा से कहा कि हमारे पुत्रको हमको दिखादो गंगा यह सुनकर तुरन्तही सुन्दर स्वरूप धरकर दहिने हाथसे भीष्मकी बांह पकड़े हुये जलसे निकल आई और राजा को उसे दिखलाया परन्तु राजाने गंगाजी को यद्यपि पहिले देखाथा नहीं पहिंचाना २९। ३१ उस समय गंगा ने राजा से कहा कि यह वही लड़का है जो मेरे तुमसे आठवां पुत्र उत्पन्न हुआ था अब इसको तुम घर ले जाओ ३२ इसने वेदों को अंगों सहित वशिष्ठजी से पढ़ा है यह बड़ा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

धनुर्धारी युद्ध में इन्द्रके समान और राजधर्म में बड़ा पंडित है इसने शुक्र और बृहस्पतिजी के पास जो कुछ विद्या थी वह सब पढ़ी है और परशुरामजी से सम्पूर्ण अस्त्र शस्त्र की विद्या सीखी है ३३।३८ इतनी कथा सुनाकर वैशम्पायनजी बोले हे राजा जनमेजय! राजा शंतनु गंगाजी से आज्ञा पाकर अपने पुत्रको लिये हुये हस्तिनापुर नाम बड़े रमणीक निज नगर में आये और अपने सब मनोरथों को पूरा हुआ जानकर उसको अपना युवराज किया ३६।४१ भीष्मने अपने चाल चलन से अपने पिता समेत सब कुटुम्बी और प्रजाको प्रसन्न किया और राजा शंतनु अपने उस पुत्रके साथ आनन्दपूर्वक रहने लगे चार वर्ष के पीछे राजा एक दिन यमुनानदी के किनारे को वन में चलागया और वहां बड़ी उग्र गन्धको सूंघकर यह देखने लगा कि यह सुगन्ध कहां से आती है ४२।४४ थोड़ी देर इधर उधर घूमने के उपरांत उसने यमुना के किनारे पर एक अत्यन्त सुन्दरी धीमरों की कन्या को देखा और यह जानकर कि यह सुगन्ध उस कन्या की देह में से आती है उसके पास जाकर पूछा कि तू कौन है किसकी बेटी है और क्या करना चाहती है यह सुनकर वह बोली कि मैं धीमरों की बेटी हूं अपने पिता की आज्ञासे परमार्थ के लिये नाव चलाती हूं ४५।४७ राजा ने उसके स्वरूप और उसके अंगकी सुगन्ध को देखकर उसपर मोहित हो उसके पिता के पास जाकर उसको मांगा ४८।४६ उसका पिता राजा की बात सुनकर बोला कि महाराज कन्या तो जन्म होतेही देने के लिये होती है देने में मुझको कुछ शंका नहीं है क्योंकि आपके सदृश वर कहां मिलेगा परन्तु इसके देने में मेरी एक प्रार्थना है जो आप उसको अंगीकार करें तो मैं कन्या आपको देदूं राजाने कहा कि वह क्या है वह बोला कि इस कन्या से जो पुत्र उत्पन्नहो वह आपके पीछे राजा होवे आप सत्यवादी हैं जो इस बात का निबन्ध आप सत्य सत्य करें तो मैं आपको कन्या देदूं ५०।५४ वैशम्पायनजी बोले हे राजा जनमेजय! राजा शन्तनु यद्यपि उस समय कामाग्नि से उस कन्यापर मोहित हो रहाथा परन्तु उसने उस धीमरों के राजा को वह वर नहीं दिया और उस कन्या को अपने हृदय में ध्यान करता हुआ घरको चला गया ५५।५६ और उसके शोचमें दिन दिन पीला पड़कर दुर्बल होने लगा नित्य उस कन्या के ध्यान में बैठा रहता था और घोड़े आदिपर भी कभी सवार नहीं होता था इस बातको

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

राजा के देवव्रत नाम पुत्र ने देखकर एक दिन राजा से पूछा कि इस शोचका क्या कारण है सब राजा आपकी आज्ञा का पालन करते हैं आप जो कुछ बातहो मुझसे कहिये मैं उसका यत्न करूंगा ५७। ६० यह सुनकर राजा शंतनु बोले कि मेरे एक तूही अकेला पुत्र है यद्यपि तू शूरवीर शस्त्रधारियों में श्रेष्ठ और सौ पुत्र से भी अधिक है परन्तु तोभी संसार में एक पुत्र का होना लोग अपुत्र की बराबर जानते हैं संसार के अनित्य होने के कारण मुझको यह शोच रहता है कि कदाचित् तू किसी समय युद्ध में मारा गया तो हमारा वंश लोप होजायगा अग्निहोत्र और तीनों वेद विद्या पुत्रके होने के सोलहवें अंश के समानभी नहीं होते हैं और सब मनुष्य और प्रजाओंमें यह बात विदित है कि जिस मनुष्य के संतान रहती है उसको कहीं कभी भय नहीं रहता है और उसकी मुक्ति होती है इसी बातको वेद पुराण और देवताभी कहते हैं संतान के नष्ट होने पर मनुष्यका जीवन व्यर्थ होजाता है इस कारण से यद्यपि मैं वृथाको किसी स्त्री से विवाह करना नहीं चाहताहूं परन्तु उक्त बातों को ध्यान करने से चित्त में दिनरात शोच बना रहता है ६१। ६७ वैशम्पायनजी बोले हे जनमेजय! देवव्रत अपनी बुद्धि से राजा के शोच के कारण को जानगया और एक बूढ़े मन्त्री से पूछनेपर उसने जाना कि राजा उस धीमर की कन्या से विवाह करना चाहते हैं ६८। ७० यह जानकर देवव्रत अपने साथ बूढ़े क्षत्रियों को लेकर उस धीमरों के राजा के पास गया और उस से उसकी कन्याको अपने पिता के साथ विवाह करने के लिये मांगा ७१ वह धीमरों का राजा देवव्रत की बातको सुनकर उन्हें आदर सहित लिवा लेगया और यथाविधि पूजन करके बोला कि आप राजा शंतनु के पुत्र सब शस्त्रधारियों में श्रेष्ठ हैं आपसे मैं कुछ कहना चाहताहूं इस कन्याके साथ सम्बन्धको छोड़कर ऐसा कोई नहीं है जो दुःखी न हो मनुष्यकी तो क्या गिनती है जो इन्द्रभी इसके साथ सम्बन्ध करने से उल्लंघन करे तो वहभी पछतावे यह सत्यवती कन्या जिस मनुष्यके वीर्य से उत्पन्न हुई है वह पुरुष आपकेही समान गुणवान् था ७२। ७५ इस कन्याको पहले विवाहके लिये असितनाम देवऋषि ने भी मुझसे मांगा था परन्तु मैंने उनसे इन्कार कर दिया और आपके पितासे भी मैंने कहाथा कि आप इसके साथ अपना विवाह कर लीजिये ७६। ७७ मैंने इसको कन्या की तरह पाला है इस

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कारण से मेरी आपसे यह प्रार्थना है कि इसके देने में आपके साथ सापत्न दोष प्राप्त होगा सो इसके पुत्रोंकी तो किनमें गिनती है यदि आप देवता या किसी गंधर्व के भी विरोधी होवें तो आपके क्रोध करने पर वह भी जीता नहीं रहसक्ता सो इसके देने में मुझे इस बातके सिवाय और कोई शोच नहीं है ७८। ८० वैशम्पायनजी बोले हे जनमेजय! देवव्रत उसकी बात को सुनकर सब क्षत्रियों के बीच में बोले कि मैं सच्ची प्रतिज्ञा करता हूं कि मैं राज्य नहीं करूंगा इसके जो पुत्र होगा उसीको राज्य दूंगा ऐसी प्रतिज्ञा आजतक न किसीने की और न कोई करेगा ८१। ८३ यह बात सुनकर वह धीमरों का राजा बोला कि महाराज आपने सत्य प्रतिज्ञा की और आप निस्संदेह अपनी प्रतिज्ञा के अनुसार करेंगे परन्तु मुझको एक संदेह और है कि जो आपके पुत्र होगा वह अवश्य राज्य के लिये विरोध करेगा ८४। ८८ वैशम्पायन बोले हे राजा जनमेजय! देवव्रत यह बात सुनकर उस निषादपति के अभिप्राय को जानगये और पिता का प्रिय करने के लिये सब क्षत्रियों के बीचमें कहा कि हम राज्य तो छोड़ ही चुके अब यह प्रतिज्ञा करते हैं कि आज से मरने तक हम ब्रह्मचर्य रहेंगे विवाह नहीं करेंगे और हमको विना पुत्र के भी स्वर्गवास मिलेगा ८९। ९२ इस बातको सुनकर निषादपति बहुत प्रसन्न हुआ और देवव्रत को कन्या लाकर देदी ९३ उस समय देवताओं ने देवव्रत पर आकाशसे फूलोंकी वर्षा की और कहा कि इसने भीष्मव्रत किया है इससे इसका नाम भीष्म होगा ९४ इसके पीछे भीष्मने सत्यवती से कहा कि माता रथपर सवार होकर अपने घरको चलो ९५ वैशम्पायनजी बोले यह कहकर भीष्मने उसको रथपर सवार करालिया और हस्तिनापुर में लाकर अपने पिता को निवेदन किया ९६ सब राजाओं ने भीष्मकी उस प्रतिज्ञाको जानकर प्रशंसा की और राजा शंतनु ने अत्यन्त प्रसन्न होकर यह वरदान दिया कि जब तू चाहेगा तभी तेरी मृत्यु होगी ९७। ९८॥

इति श्रीभाषामहाभारते आदिपर्वणि शततमोऽध्यायः १००॥

एकसौएक का अध्याय।

राजा शंतनुका दो पुत्र होने के पीछे देहान्त होना भीष्मका बड़े पुत्रको राज्य देना और उसके मारेजानेपर उसके छोटेभाई को राजगद्दीपर बिठाकर धर्मसे राज्य करना॥

वैशम्पायनजी बोले हे राजा जनमेजय! राजा शंतनु अपना विवाह सत्य

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वती से विधिपूर्वक कर आनन्दसे उसके साथ रहने लगे थोड़े दिनों में उसके एक पुत्र उत्पन्न हुआ राजाने उसका नाम चित्रांगद रक्खा फिर कुछ समय बीतने पर दूसरा पुत्र हुआ उसका नाम चित्रवीर्य रक्खा १। ३ यह दोनों पुत्र अच्छी तरह युवा नहीं होने पाये थे कि राजा शंतनु का देहान्त होगया उन के स्वर्गवासी होनेपर भीष्मजीने अपनी माता की अनुमति से चित्रांगद को राजतिलक दिया ४। ५ उसने अपने पराक्रम से सब राजाओं को जीतलिया और अपने को अद्वितीय जानने लगा मनुष्य तो कहां देवता और गन्धर्वों को भी वह अपने समान नहीं जानता था उसी अवसर में एक चित्रांगद नामी गन्धर्व उससे युद्ध करने को आया और उन दोनोंने कुरुक्षेत्रकी भूमि पर तीन वर्ष तक महायुद्ध किया अन्तको राजा चित्रांगद उस गन्धर्व के हाथ से तुमुल युद्ध करते में मारा गया ६। ६ वह गन्धर्व तो उसे मारकर स्वर्ग को चलागया और भीष्मजीने चित्रांगदका प्रेतआदि कर्म कराकर उसके छोटे भाई चित्रवीर्य को जो अभी छोटा ही था राजतिलक करदिया १०। १२ वैशम्पायनजी बोले हे जनमेजय! चित्रवीर्य ने धर्मशास्त्र के परिपूर्ण वेत्ता भीष्मजी के मत के अनुसार राज्य का शासन किया और भीष्म ने भी उसका पालन अच्छी तरह से किया १३। १४॥

इति श्रीभाषामहाभारते आदिपर्वण्येकाधिकशततमोऽध्यायः १०१॥

एकसौदो का अध्याय।

भीष्मजीका राजा काशीकी तीन कन्याओंको स्वयंवरमें जीतकर लाना और उनमेंसे दोका विवाह अपने छोटेभाई चित्रवीर्यसे करदेना और चित्रवीर्यका विना सन्तान राजयक्ष्मारोग में मरजाना॥

वैशम्पायनजी बोले हे राजा! जबतक चित्रवीर्य बालक रहा तबतक भीष्म जीने सत्यवती के मतके अनुसार राज्यका पालन किया और जब वह तरुण हुआ तब भीष्मजी ने उसके विवाह करने का विचार किया १। २ इसी अवसरमें यह सुनने में आया कि राजा काशीकी तीनों कन्याओं का स्वयंवर है और तीनों कन्या अप्सराओं के समान सुन्दरी हैं ३ भीष्मजी यह खबर पाकर अकेले रथपर सवार होकर काशी को चलदिये और स्वयंवर में पहुँचकर सब राजाओं और उन तीनों कन्याओं को देखा ४। ५ इसके पीछे जब सब राजाओंकी विरदावली पढ़ीगई तब भीष्मजीने उन कन्याओं को आप ग्रहण

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

करना विचारा ऐसा विचार करके उन कन्याओंको अपने रथपर बिठालिया और काशीराज आदि सब राजाओं से कहा कि संसार में आठ विवाह विख्यात हैं ब्राह्म्य १ आर्ष २ आसुर ३ राक्षस ४ गांधर्व ५ दैव ६ प्राजापत्य ७ और पैशाच ८ इन आठों में से राक्षस विवाह वह है जो कन्या को स्वयंवर से बलसे हरलेजावे और राजाओं को यही विवाह करना उचित है इस कारण से हम अब इन तीनों कन्याओं को हरकर लियेजाते हैं तुम सब लोग जो इच्छामें आवे सो यत्न करो हम युद्धके लिये खड़े हुये हैं ऐसा कहके भीष्मजी उन कन्याओं सहित रथको हँकवाकर वहांसे चलदिये ६। १४ यह बात देखकर सब राजालोग महाक्रोध से दांतों को पीस २ भुजाओं को स्पर्श करतेहुये उठ खड़े हुये और अपने २ भूषण वस्त्रोंको फेंक २ कर कवच और अस्त्र शस्त्र धारण करने लगे फिर अस्त्र शस्त्रों को धारण करके क्रोधसे टेढ़ी भौं और लाल २ आंखें कियेहुये रथोंपर सवार होकर भीष्मजी के पीछे दौड़े और उस अकेले से युद्ध करने लगे १५। २० पहले तो ऐसा तुमुल युद्ध हुआ कि जिसके देखने से मनुष्य के रोंयें खड़े होजावें उन सब राजाओंने एक साथ दश हजार बाण भीष्मजी के मारे परन्तु वह बाण भीष्मजी के पास पहुँचने नहीं पायेथे कि भीष्मजीने अपने बाणों से उनको काटकर बीचमेंही गिरादिया २१ इसपर सब राजाओं ने भीष्मजी को घेरलिया और चारों ओर से इसभकारसे बाण मारने लगे जैसे पहाड़पर मेघ बरसता है २२ भीष्मजी ने अपने बाणोंसे उस बाणों की वर्षाको रोककर प्रत्येक राजाके तीन तीन बाण मारे २३ उस समय उन राजाओं ने भी भीष्मजी के पांच २ बाण मारे और भीष्मजीने उनके बाणोंको काटकर प्रत्येक राजा के दो २ बाण और मारे २४ वैशम्पायनजी बोले हे राजा! इस प्रकारसे उन राजा और भीष्मजी से बाण और बरछी आदि आयुधों से देवता और असुरों के युद्धके समान युद्ध हुआ अन्तमें भीष्मजीने अपने बाणोंसे सहस्रों धनुष ध्वजा कवच और बाणों को काट २ कर सब राजाओं को मारकर भगा दिया और वह लोग भीष्मके बाण चलाने की लाघवता और शरीररक्षाकी निपुणता को सराहते हुये चलेगये और भीष्मजी भी उन कन्याओं सहित वहांसे अपने देश की ओर चलदिये २५। २८ थोड़ी दूर गयेथे कि राजा शाल्व स्त्री की कामनासे मत्त हाथी के तुल्य बड़े क्रोधसे दांत पीसता हुआ भीष्मजी के पीछेसे पहुँचा और दूरसे पुकारकर कहा कि खड़ा रह २९। ३१ भीष्मजी ने

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उसकी बोलीको सुनकर बड़े क्रोध से निर्भय कालाग्नि के समान धनुष बाण हाथमें लेकर अपने रथको लौटाया और दोनों सन्मुख होकर इसप्रकार से गरज २ कर युद्ध करने लगे जैसे पुष्पवती गऊको देखकर सांड़ दहाड़ते हैं और सब राजा लोग जो पहले भीष्मके सन्मुख से भागगये थे अलग खड़े होकर उन दोनोंका युद्ध देखनेलगे ३२। ३५ उस समय राजा शाल्वने बाणों से भीष्म जी को ढकदिया और इस बातको वह भागे हुये राजा लोग देखकर राजा शाल्व के लाघव हस्त की सराहना कर पुकार कर बोले बहुत अच्छा २। ३६। ३८ राजाओं के इस शब्द को सुनकर भीष्मजी को बड़ा क्रोध हुआ और अपने सारथी से बोले कि मेरे रथको उस राजाके सन्मुख लेचल मैं उसको इस प्रकार से मारूंगा जैसे सर्प को गरुड़जी मारते हैं ३९। ४० इसके पीछे भीष्मजी ने राजा शाल्व के अस्त्रों को अपने अस्त्रों से वारण करके उसके रथके घोड़े और सारथी वारुण और ऐन्द्र अस्त्रों से मारडाले ४१। ४३ इस प्रकार से भीष्मजी राजा शाल्व को जीतकर और उसको जीता छोड़कर वहांसे हस्तिनापुर की ओर चलदिये और राजा शाल्व अपने नगर को लौटगया और धर्मसे अपने राज्य को करने लगा और जो राजा लोग स्वयंवर में आये थे वहभी अपने अपने देशको लौट गये ४४। ४६ महापराक्रमी भीष्मजी वन नदी और पहाड़ोंको नांघते हुये थोड़े दिनों में उन तीनों कन्याओं को बेटी बहिन के समान अपने छोटे भाई चित्रवीर्य के साथ विवाह करने को लिये हुये उस हस्तिनाएर में पहुँचे जहां वह चित्रवीर्य अपने पिता राजा शंतनु के समान राज्य कर रहाथा ४७। ५१ और उनको विचित्रवीर्य को देदिया इसके पीछे जब भीष्मजी सत्यवती माताकी आज्ञा से उन तीनों कन्याओं का विवाह चित्रवीर्य से कराने को बैठे तब राजा काशी की अम्बानाम सबसे बड़ी कन्या भीष्मजी से हँसकर बोली कि मैंने पहले से अपने मनमें राजा शाल्व को वर रक्खाथा और राजा शाल्वने भी मेरे पिताके सम्मत से मुझे अंगीकार किया था इस कारण से मेरा स्वयंवर राजा शाल्वही के साथ होना उचित है तुम धर्मज्ञहो धर्मको समझकर जैसा उचित जानो वैसा करो ५२। ५५ यह बात सुनकर भीष्मजी ने वेदपारग ब्राह्मणों से निश्चय करके अम्बाको जाने की आज्ञा दी और उसकी दोनों छोटी बहिन अम्बिका और अंबालिका का विवाह अपने छोटे भाई चित्रवीर्य से विधिवत् करादिया ५६। ५८ विचित्रवीर्य उन

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अत्यन्त सुन्दरी स्त्रियोंको पाकर जिनके घूंघरवाले बाल लाल नख और उन्नत पीन पयोधरथे पाकर उनके साथ कामासक्त होगया और वह स्त्रियांभी अपने योग्य अश्विनीकुमारों की सदृश स्वरूपवान् देवताओं के समान पराक्रमी पतिको पाकर बड़ेहर्ष से उसके साथ विहार करने लगीं ५६। ६२ इसप्रकार से चित्रवीर्य ने बड़े आनन्दपूर्वक सात वर्षतक उन स्त्रियों के साथ रमण किया आठवें वर्षमें उसको तरुण अवस्थाही में राजयक्ष्मारोग होगया ६३ वैद्यलोग और २ सुहृज्जन उसकी ओषधी करते करते हारगये परन्तु उसको आराम नहीं हुआ और वह उसी वर्षमें वैकुण्ठवासी हुआ ६४ भीष्मजी को उसके मरनेका बड़ा शोक हुआ और उन्होंने सब ब्राह्मणों और सत्यवती माताकी आज्ञा से उसका सम्पूर्ण प्रेतकर्म अच्छे प्रकारसे किया ६५। ६६॥

इति श्रीभाषामहाभारते आदिपर्वणि द्व्यधिकशततमोऽध्यायः १०२॥

एकसौतीन का अध्याय।

सत्यवती का भीष्मजी से चित्रवीर्य की स्त्रियों के संतान उत्पन्न करने को कहना और भीष्मजी का प्रतिज्ञा के कारण ऐसा कर्म करने से निषेध करना॥

वैशंपायनजी बोले हे राजा! सत्यवती अपने पुत्र के मरने के शोक से अत्यन्त दुःखी हुई और उसकी क्रिया कर्म होने के पीछे अपनी दोनों बहुओं को धैर्य देकर पुत्र होने की इच्छासे भीष्मजी से बोली १। २ कि हे भीष्म! अब तेरे सिवाय कौरव को पिण्डदान करनेवाला कोई नहीं रहा है ३ तू धर्म और अधर्म दोनों अच्छी तरह जानता है क्योंकि तू नानाप्रकार सब वेदों को जानता है और तेरा धर्मभी इसप्रकार से अचल है जैसे सत्य में आयु और शुभ कर्म करने में स्वर्ग दृढ़ होताहै ४। ५ इसके सिवाय मैं तेरे धर्मको कुलाचार में और बुद्धिको आपत्तिकाल में देखकर यह जानती हूं कि तू बृहस्पति और शुक्र के समान बुद्धिमान् है इसकारण से मैं तुझसे कुछ कहना चाहती हूं तुझको उसके अनुसार करना उचित है ६। ७ वह यह है कि मेरा चित्रवीर्य पुत्र जो तेरा बलवान् प्यारा भाई था विना संतान के मरगया और उसकी दोनों रानियां जो अत्यन्त स्वरूपवान् और तरुण हैं पुत्र होने की इच्छा रखती हैं इस कारण से तू मेरी आज्ञा से धर्म कर और इन दोनोंको पुत्र दान दे जिसमें यह कौरवों का वंश अस्त न होजावे और पिण्डदानके लुप्त होने

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

से पितृलोग न डूबें ८। ११ माता और सुहृज्जनों की इस बात को सुनकर भीष्मजी बोले कि आपलोगों का यह कहना सत्य है परन्तु मैंने जो प्रतिज्ञा की है और जो व्रत लिया है उसको भी तुम अच्छीतरह जानते हो मैं अपनी उस प्रतिज्ञा से किसी प्रकार से नहीं डोलसक्ता हूं १२। १४ मैं एक सत्य के पीछे त्रिलोकी और देवताओं का राज्य और इससे भी जो कुछ अधिक पदहो छोड़ सक्ताहूं और इसके सिवाय चाहे पृथ्वी गंधको, जल रसको, ज्योति रूप को, वायु स्पर्श को, सूर्य अपनी प्रभाको, अग्नि तेजको, आकाश शब्द को, चन्द्रमा शीतलता को, इन्द्र पराक्रम को और धर्मराज धर्म को छोड़ देवें परन्तु मैं सत्य को किसी प्रयोजन से नहीं छोड़ सक्ताहूं १५। १८ यह सुनकर सत्यवती बोली कि हे पराक्रमी ! मैं तेरे सत्य धर्मको जानती हूं और मुझे तेरी प्रतिज्ञा की भी यादहै जो तैंने मेरेलिये की थी परन्तु तू चाहे तो अपने धर्मसे दूसरी त्रिलोकी रचदे इस कारणसे धर्माधर्मको विचारकर ऐसा कर जिसमें पितरोंका पिण्ड लुप्त न हो और सब सुहृद्लोग प्रसन्न होवें १९। २२ यह सुनकर भीष्मजी बोले कि हे माता ! तुमको धर्मकी ओर देखना चाहिये क्षत्रियोंका धर्म छोड़ना बड़ाईकी बात नहीं है परन्तु राजा शंतनु की संतानके पृथ्वीपर अक्षय होने के लिये मैं तुझसे क्षत्रियों का धर्म वर्णन करूंगा उसको सुनकर तू उसका निश्चय लोक व्यवहार और धर्मज्ञ ज्ञानी पुरोहितों से करियो २३। २६ ॥

इति श्रीभाषामहाभारते आदिपर्वणि त्र्यधिकशततमोऽध्यायः १०३ ॥

एकसौचार का अध्याय।

भीष्मजीका सत्यवती से ब्राह्मणों के वीर्य से क्षत्रियों के वंशों के उत्पन्न होने की कथा कहना ॥

भीष्मजी बोले कि पूर्वकाल में परशुरामजी ने अपने पिताके वध का वैर लेने के लिये अपने फरसे से सहस्रार्जुनकी सहस्र भुजा काटडाली थीं और फिर धनुर्बाण लेकर अस्त्र शस्त्रों से २१ बेर क्षत्रियों से युद्ध करके क्षत्रियों का लेशमात्र पृथ्वीपर नहीं रहने दिया था उस समय में क्षत्रियों की स्त्रियों ने वेदपारग ब्राह्मणों के साथ संगम करके संतान उत्पन्न की और उससे फिर क्षत्रियोंके वंश पृथ्वीपर चले वेदोंमें भी यह निश्चय करके लिखाहै कि क्षेत्रमें उत्पन्न हुआ पुत्र उसीका होताहै जिसका वह क्षेत्रहो अर्थात् जिस स्त्री का विवाह जिससे हुआहो उस स्त्री के जो पुत्र उत्पन्न होता है वह उसीका होताहै जिसके साथ उस

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

स्त्रीका विवाह हुआहो और लोकमें भी हमने ब्राह्मणों से फिर क्षत्रियोंका उत्पन्न होना और इस व्यवहार का संसार में प्रचार होना देखाहै १।७ अब हम एक पुराना इतिहास इस विषय में वर्णन करतेहैं पहले समयमें एक उतथ्यनाम ऋषिथा और ममतानाम उसकी स्त्रीथी एक समय ऐसा हुआ कि ममता गर्भवती थी उस समय उसके पास रमण करने की इच्छा से उतथ्य ऋषिका छोटा भाई बृहस्पति नामी जो बड़ा तेजस्वी और देवताओंका पुरोहितथा आया और उससे रमण करना चाहा ८।९ उससमय ममताने बृहस्पतिजीसे कहा कि मैं तुम्हारे बड़े भाई के वीर्य से गर्भवती हूं और मेरे गर्भ के बालक मे षडंग वेदको गर्भमेंही पढ़ाहै आपभी अमोघवीर्यहो अर्थात् आपकाभी वीर्य व्यर्थ नहीं जासक्ता है परन्तु गर्भ में दो बालकोंके लिये जगह नहीं है इससे आप इस अवस्था में मेरे साथ रमण न कीजिये १०।१२ बृहस्पतिजी ने कामके वश होनेके कारणसे उस बातको न माना और ममताके साथ संगम करने लगे यह देखकर गर्भ के भीतर से उस बालक ने कहा कि महाराज आप संगम न कीजिये आप अमोघवीर्य हैं और यहां मैं पहिले से आया हुआहूं दोके लिये जगह नहींहै आप मुझको दुःख न देवें बृहस्पतिजी ने उस बालक की बातको कुछ न सुना और ममता के साथ संगम किया जब वीर्य त्यागने का समय हुआ तब उस गर्भस्थ बालक ने वीर्य के भीतर जानेके मार्गको अपने पैरोंसे रोंकदिया और वह वीर्य जगह न पानेके कारण से पृथ्वीपर गिरपड़ा १३।१८ बृहस्पतिजी यह देखकर बड़े क्रोधित हुये और उस गर्भस्थ बालक को घुड़ककर बोले कि तैंने हमारे वीर्य को व्यर्थ कियाहै इस पापसे तू अंधा होगा थोड़े कालमें वह बालक बृहस्पतिजीके शापके कारण से दीर्घतमानाम अंधा उत्पन्न हुआ और विद्या के प्रभाव से उसका विवाह प्रद्वेषी नाम तरुण रूपवती ब्राह्मणीसे हुआ १९।२१ थोड़े कालमें उसके गौतमादिक बड़े २ तपस्वी पुत्र उत्पन्न हुये २२ इसके पीछे उस ने सुरभीके पुत्रोंसे गोधर्म अर्थात् प्रकाशमैथुन पढ़ा और उसको पढ़कर स्त्रियोंके साथ रमण करनेलगा २३ उसके इस आचरणको देखकर वहांके और रहनेवाले तपस्वी मुनि आपसमें कहनेलगे कि यह अंधा मर्यादा के विपरीत कर्मोंको करताहै इसका पास रहना अच्छा नहीं है इससे इसको त्यागना चाहिये वह तो यह बातें करकर चुपहोरहे कि इसी अंतर में अंधतमामुनि से उनकी प्रद्वेषी स्त्री क्लेश करने लगी उससमय मुनि ने उससे कहा कि तू

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अकारण मुझसे द्वेष क्यों करती है २४। २६ यह सुनकर प्रद्वेषी बोली कि स्त्री का पुरुष पालन करने से पति भरण करने से भर्ता कहलाता है परन्तु मैंने उसके विपरीत क्लेश सह २ कर किया कि तुम्हारा और तुम्हारे पुत्रका पालन किया तुमतो जन्मके अंधेहो अब मुझसे यह क्लेश नहीं उठाया जाता यह सुनकर अंधतमामुनि क्रोधित होकर उससे बोले कि तू मुझको क्षत्रियोंके बीच में ले चल वहां तुझको धन मिलेगा २७। २९ प्रद्वेषीने कहा कि मुझको तुम्हारा दिया हुआ दुःखका कारण धन नहीं चाहिये तुम्हारे मनमें आवे सो करो मुझसे तुम्हारा पालन अब नहीं होसक्ता ३० यह सुनकर दीर्घतमा ऋषि ने कहा कि आजसे हम इस लोक में यह मर्यादा बांधते हैं कि स्त्री एक पतिके सिवाय दूसरा पति कभी न करे और जो स्त्री अपने पतिके जीतेजी अथवा मरने पर दूसरे मनुष्य के साथ संगम करेगी वह नरकगामिनी होगी आजसे स्त्रियोंके पतिका न होना पातक गिना जायगा और पतिके न होने पर चाहे स्त्रियोंके पास सम्पूर्ण भोग करने के पदार्थ होवें परन्तु सब व्यर्थ होंगे और वह संतान को सिवाय पतिके दूसरे से उत्पन्न न कर सकेगी और जो ऐसा करेंगी तो उनकी अकीर्ति होगी और नरकगामिनी होंगी इस बात को सुनकर उस ब्राह्मणीने बड़ा क्रोध किया और अपने पुत्रोंको आज्ञा दी कि इस अंधेको लेजाकर गंगामें बहाय आवो ३१। ३४ यह सुनकर उसके गौतमादिक पुत्रों ने उसको बांधकर उड़पमें बैठाके गंगामें बहाय दिया और यह चिन्ता करते घरको लौटआये कि अब यह अंधा और बूढ़ा क्योंकर भरणयोग्य होगा ३५।३६ वह अंधा बहते २ बहुत से देशों में घूमता हुआ उस स्थान पर पहुँचा जहां धर्मात्मा राजा बलि स्नान कर रहाथा राजा उसको बाहर निकाल उससे हाल पूछ सब वृत्तान्त जानकर उसको बड़ा तपस्वी समझकर घर लेगया और कहनेलगा कि महाराज आप धर्मार्थकी रीतिसे मेरी स्त्रियोंके पुत्र उत्पन्न कीजिये ३७। ४० यह सुनकर अंधतमाने कहा कि बहुत अच्छा इसके पीछे राजा ने अपनी सुदोष्णानाम स्त्रीको ऋषिके पास भेजा उसने उस ऋषिको अंधा और बूढ़ा जानकर उसके पास अपनी दासी को भेजादिया और आप नहीं गई ४१। ४२ उस ऋषि से उस दासी के ग्यारह पुत्र उत्पन्न हुये ४३ उन पुत्रों को राजा पढ़ते हुये देखकर बोला कि यह मेरे पुत्र हैं ४४ तब ऋषि ने कहा कि ये पुत्र आपके नहीं हैं मेरे हैं क्योंकि यह दासी से उत्पन्न हुये हैं

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आपकी सुदोष्णानाम स्त्रीने मुझे अंधा और बूढ़ा जानकर मेरे पास अपनी दासी को भेजदियाथा आप नहीं आई ४५। ४६ राजा ने यह सुनकर ऋषि को वाणी से प्रसन्न किया और उसके पास अपनी सुदोष्णारानी को भेज दिया ४७ तब ऋषि उसरानीकी देहको स्पर्श करके बहुत प्रसन्न हुये और बोले कि तेरे बड़े तेजधारी पुत्र होंगे ४८ इसके पीछे उस रानी के उस ऋषिसे पांच पुत्र उत्पन्न हुये अंग १ बंग २ कलिंग ३ पुंडु ४ सुह्य ५ और यह पांचों जिस२ देशके राजा हुये वह २ देश उन्हींके नाम से विख्यात हुये ४९ जैसे अंग का देश अंगनाम से बंगका बंगनाम से कलिंगका कलिंगनाम से पुंडुका पुंडुनाम से और सुह्यका सुह्यनाम से विख्यात हुआ इस प्रकार पहले समय में राजा बलिका वंश हुआ था ५०। ५१ इसके सिवाय और २ बहुत से धनुर्धारी और धर्मात्मा क्षत्रिय ब्राह्मणों से उत्पन्न हुये हैं इस बातको समझकर जैसा उचितहो करना चाहिये ५२॥

इति श्रीभाषामहाभारते आदिपर्वणि चतुरधिकशततमोऽध्यायः १०४॥

एकसौपांच का अध्याय।

भीष्मजी की सलाहसे सत्यवती का व्यासजी को बुलाना और उनसे चित्रवीर्य की स्त्रियोंके पुत्र उत्पन्न करनेको कहना और व्यासजीका पुत्र उत्पन्न करनेको अंगीकार करना॥

भीष्मजी बोले हे माता! उक्त कथाको जानकर तुमभी किसी उत्तम ब्राह्मण को धन देकर विचित्रवीर्यकी स्त्रियों के संतान उत्पन्न करने के लिये निमंत्रण करो १। २ यह सुनकर सत्यवती हँसती हुई लज्जासहित भीष्मजी से बोली कि तेरा सब कहना सत्य है तू हमारे कुलमें धर्म और सत्यरूप है ऐसा कौनसा धर्म है जो तुझसे न कहा जावे इस कारण से मैं तुझसे एक वृत्तान्त कुल के बढ़ाने को कहतीहूं उसको सुनकर जैसा उचितहो वैसा कीजियो ३।५ मेरे पिताके एक धर्मनावथी उस नावपर मेरे पिताने मुझको इस आज्ञासे नियत किया था कि जो कोई महात्मा पार जाने को चाहे उसको तू इस नावपर बैठाकर पार उतार दिया करियो मैं बहुत दिनों तक उस कामको करती रही एक समय वहां पराशरमुनि आये मैं उनको नावमें बैठाकर पार ले चली जब यमुनाके बीच में पहुँचे तब उन्होंने मुझे युवा देखकर काम के वश से मेरे साथ संगम करनेको कहा मैंने पिताके भय और ऋषिके शाप के डरसे कुछ उत्तर नहीं दिया तब उस महात्माने अपने तेज से वहां अंधेरा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

करके मेरे साथ संगम किया ६। १० मेरी देही में पहले बुरी मछली कीसी दुर्गंध आती थी ऋषिने उस दुर्गंध को दूर कर दिया और यह सुगन्ध को दे दी ११ इसके पीछे उस ऋषिने मुझसे कहा कि तू इस हमारे गर्भको यमुना के द्वापू में छोड़दे तू फिर ज्यों की त्यों कन्या होजायगी मैंने वैसाही किया और मैं कन्या होगई वह गर्भ गिरतेही बड़ा होकर अपने पिताके साथ चलागया और मुझसे यह कहगया कि जब कभी तुझको कोई विपत्ति आकर पड़े तब तू मुझको याद करियो मैं उसी समय वहां पहुँचूंगा सो वह मेरा पुत्र परम तपस्वी सत्यवादी और महायोगी है उसने वेदों के चार भाग किये हैं इस कारण से उसका नाम व्यासजी हुआ है और ईश्वर से अनन्य होने से उसे कृष्ण भी कहते हैं सो वह मेरी तेरी आज्ञा से चित्रवीर्य की स्त्रियों के अवश्य सन्तान उत्पन्न करेगा जो तू कहे तो मैं उसको स्मरण करूं १२। १८ भीष्मजी उस महात्मा व्यास का कीर्तन सुनकर अञ्जली बांधकर बोले कि बुद्धिमान् वही है जो अर्थ धर्म और काम इन तीनों को अच्छे प्रकार से देखता है और इनके अनुकूल और विपरीत कर्मोंको अच्छी रीति से विचारकर निश्चय करता है इस कारण से जो तुमने कहाहै सो सब धर्मयुक्त और हमारे कुलका हित करनेवाला है हमारी भी रुचि यही है तुम व्यासजी का स्मरण करो १९। २१ वैशंपायन बोले हे जनमेजय! भीष्मजीकी बातको सुनकर सत्यवती ने वेद-व्यासजी का ध्यान किया और वे माताकी चिन्ता को जानकर वेद पढ़ते हुये उसी क्षण वहां आन पहुँचे २२। २३ सत्यवती उनकी विधिवत् पूजा करके बहुत दिनों के पीछे मिलने के कारण पुत्रस्नेह से आंखों में आंसू भरकर मिली तब व्यासजी ने भी आंखों में आंसू भरकर अपनी सत्यवती माता को प्रणाम किया और कहा कि हे माता! मैं तेरे मनकी इच्छा पूरी करनेको आया हूं जो कुछ तेरा प्रयोजन हो सो मुझसे कह २४। २६ इसके पीछे राजपुरोहित ने व्यासजी की मंत्रों से विधिवत् पूजा की और व्यासजीने उसको आनन्दपूर्वक ग्रहण किया उस समय सत्यवती ने व्यासजी से कुशल क्षेम पूछकर कहा कि पुत्र मा बापके साधारणमात्र उत्पन्न होता है उसकी मा और बाप दोनों एकसेही बड़े हैं इस कारण से मैं तुम्हारी माता हूं क्योंकि तुम मेरे पहिलेही पहिल उत्पन्न हुये और चित्रवीर्य मेरे तुमसे पीछे उत्पन्न हुआ सो माताकी ओरसे तुम और पिताकी ओरसे भीष्म दोनों चित्रवीर्य के भाई हो

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अब भीष्म तो सत्यब्रह्मचर्य व्रत धारण करने के कारण से राज्य के पालन और पुत्रके उत्पन्न करने की इच्छा नहीं करता है इस कारण से मेरी यह इच्छा है कि तुम अपने छोटे भाई चित्रवीर्य के स्नेहसे उसकी दोनों अत्यन्त सुन्दरी पुत्र की कामना रखनेवाली स्त्रियों के मेरी आज्ञा और भीष्मकी प्रार्थना से कुल के बढ़ाने के लिये कुलके योग्य सन्तान उत्पन्न करो २७। ३५ यह सुनकर व्यासजी ने कहा कि हे माता! तू पर अपर अर्थात् प्रवृत्ति और निवृत्ति दोनों धर्मोंको जानती है इससे तेरी बुद्धि धर्ममें रहती है अब मैं तेरे कहने के अनुसार धर्मके अर्थ अपने छोटे भाई को मित्रावरुण के समान पुत्र दूंगा परन्तु तू उन दोनों चित्रवीर्य की स्त्रियों से कहदे कि एक वर्ष तक व्रत करके अपनी देहको शुद्ध करें क्योंकि विना व्रत किये कोई स्त्री मेरे पास नहीं आसक्ती है ३६।३९ यह सुनकर सत्यवती बोली कि ऐसा उपाय करो जिसमें मेरे पुत्रकी बहुयें जल्दी गर्भवती होवें क्योंकि विना राजा के देश अनाथ और प्रजाका नाश होता है न जप यज्ञादि धर्म होते हैं न वर्षा होती है राजा विना देश शून्य क्योंकर रहसक्ता है ४०।४१ व्यासजी बोले कि जो तू अकाल में पुत्र चाहती है तो इस प्रकार से होसक्ता है कि तेरे पुत्रकी बहुयें मेरे कुरूप गंध और वेष को सहकर प्रीति से उत्तम वस्त्र पहिनकर सुन्दर शय्या बिछाकर मेरी राह देखें और जब मैं आऊं तब मुझसे प्रीतिपूर्वक रमण करें और मेरे वेष आदि को देखकर ग्लानि न करें यह कहकर व्यासजी वहीं अन्तर्धान होगये और सत्यवती अपने पुत्रकी बहुओं के पास आकर बोली कि मैं तुम दोनों से जो धर्म कहती हूं उसको सुनो ४२।४६ मेरे भाग्य से अब यह कुरुवंश अस्त होना चाहता है सो भीष्मने मेरे दुःखके दूर करने को मुझे एक सलाह दी है वह तुम दोनों के अधीन है इस कारण से तुम दोनों उस बातको स्वीकारकर पुत्र उत्पन्न करो जो इस राज्यके भार को उठावें और इस नष्ट हुये कुरुवंश को फिर से उद्धार करें ४७।४९ इस प्रकार से सत्यवती ने उन दोनों को धर्म कह कर पुत्र के उत्पन्न करने के लिये उद्यत किया और ब्राह्मणको भोजन दिये ५०॥

इति श्रीभाषामहाभारते आदिपर्वणि पञ्चाधिकशततमोऽध्यायः १०५॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

एकसौछह का अध्याय।

व्यासजीका सत्यवती के कहने से चित्रवीर्य की अम्बिका और अम्बालिकानाम स्त्रियों के धृतराष्ट्र और पाण्डुनामी पुत्र उत्पन्न करना और एक दासी के विदुरजी को उत्पन्न करना ॥

वैशंपायनजी बोले हे राजा जनमेजय! इसके पीछे जब अम्बानाम चित्रवीर्य की स्त्री ने ऋतुस्नान किया तब सत्यवती ने उससे कहा कि तू इस समय शयन करने के स्थानपर रह आधीराततक तेरे पास तेरा देवर आवेगा वह अपने अंशसे तेरे पुत्र उत्पन्न करेगा १। २ सत्यवती तो यह कहकर चलीगई और अम्बा वहां भीष्मआदि अच्छे २ कुरुवंशके आदमियों का ध्यान करती रही ३ जब दीपक जलगये तब व्यासजी वहां आये अंबा उनकी कपिलजटा अग्नि के समान जलतीहुई आंखें और भूरी मूछोंको देखकर डरगई और आंखें बन्द करलीं ४। ५ व्यासजीने अपनी माताका कहा करने को उसके साथ संगम किया परन्तु अंबा डरके मारे उनके दर्शन न करसकी ६ जब व्यासजी वहां से बाहर आये तब सत्यवती ने पूछा कि इसका पुत्र गुणवान् होगा या नहीं ७ व्यासजी बोले ८ कि इसके बड़ा पराक्रमी दशहजार हाथीके तुल्य बलवाला राजर्षियोंमें उत्तम और बड़ा बुद्धिमान् पुत्र होगा परन्तु माताके अवगुणसे अंधा होगा और उसके सौ पुत्र होंगे ९। १० यह बात सुनकर सत्यवती बोली कि अंधा राजा कुरुवंश के योग्य नहींहै इस कारणसे आप दूसरा पुत्र दीजिये जो वंशको बढ़ावे ११। १२ व्यासजी तथास्तु कहकर चलेगये और थोड़े दिनों में अंबा के अंधा पुत्र उत्पन्न हुआ १३ इसके पीछे सत्यवतीने अपनी अंबालिका नाम पुत्रवधूको समझाकर पुत्र उत्पन्न करने को तय्यार किया और पहले के समान फिर व्यासजी को बुलाया १४ व्यासजी पहले के सदृश अंबालिका के पास भी गये वह उनके स्वरूप को देखकर डरगई और भय से पांडु अर्थात् पीली पड़गई व्यासजी ने अपने कहने के अनुसार उस डरी हुई से संगम किया और जब संगम करचुके तब अंबालिका से कहा कि तेरे पांडु अर्थात् पीली पड़जाने के कारण तेरा पुत्र भी पांडु होगा और वह इस संसार में इसी नामसे बोलाजावेगा यह कहकर व्यासजी बाहर चले आये और सत्यवती के पूछने पर उससे उस पुत्रके पांडु होने का हाल कहा १५। १९ सत्यवती ने फिर तीसरा और पुत्र मांगा और व्यासजी उससे तथास्तु कहकर चलेगये २०

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

थोड़े दिनोंमें अंबालिका के बड़ा सुंदर पांडुनाम पुत्र उत्पन्न हुआ जिस के पांचों पांडव बड़े धनुर्धारी हुये इसके पीछे सत्यवती ने अपनी बड़ी बहू अंबिका को ऋतुस्नान करनेपर ऋषिके पास जानेको आज्ञा दी परन्तु वह उनके स्वरूपसे पहिलेही से डरीहुई थी आप नहीं गई और अपनी परमसुन्दर दासीको अपने गहने कपड़े पहिनाकर भेज दिया २१। २४ वह दासी ऋषि को देखतेही उठ खड़ी हुई और दण्डवत् करके बड़े आदर से उनको लाकर उनकी सेवा करनेपर ऋषिने उसके साथ आनन्दपूर्वक भोग किया और चलते समय उससे बोले कि तू अदासी होगी और तेरा पुत्र बड़ा धर्मात्मा और बुद्धिमान् होगा २५। २७ सो उस दासी के गर्भ में माण्डव्य ऋषि के शाप से धर्मराज ने आकर जन्म लिया और उनका नाम विदुर हुआ विदुरजी काम क्रोधसे रहित पांडु और धृतराष्ट्रके भाई थे २८। २९ इस प्रकारसे व्यासजी सत्यवती से पूर्वोक्त सब वृत्तान्त कहकर अन्तर्धान होगये और वह तीनों पुत्र देवताओं के लड़कों के समान बड़े हुये ३०। ३२॥

इति श्रीभाषामहाभारते आदिपर्वणि षडधिकशततमोऽध्यायः १०६॥

एकसौसात का अध्याय।

चोरी करके चोरोंका मांडव्यऋषि के आश्रममें छिप रहना और राजदूतोंका उन ऋषि और चोरों को पकड़ लेजाना और राजाका उन सबको शूली देना॥

इतनी कथा सुनाकर जनमेजय बोले कि हे वैशम्पायनजी! धर्मराज ने क्या ऐसा किया था जिससे उनको शूद्रयोनि में जन्म लेना पड़ा और वह ब्रह्मऋषि कौन थे जिन्होंने उनको शाप दिया १ वैशम्पायनजी बोले कि मांडव्यनाम एक ब्राह्मण बड़ा तपस्वी सत्यवादी और सब धर्मोंका जाननेवाला था वह अपने आश्रम में मौनव्रत को लेकर एक पेड़के सहारे से खड़ा होकर ऊपर को हाथ किये हुये तप कर रहाथा २। ३ एक समय ऐसा हुआ कि कुछ चोर वहां के राजा के यहां से चोरी करके उस ब्राह्मणके आश्रम के पास आये और राजदूतों के भयसे सब चोरी का धन उस ब्राह्मण के आश्रम में रख कर आपभी वहीं छिपरहे पीछे से राजदूतभी वहां चोरोंको ढूंढ़तेहुये पहुँचे और उस ब्राह्मण से पूछा कि चोर किधर गयेहैं उस ब्राह्मण ने मौनव्रत रखने के कारण से उनको कुछ जवाब नहीं दिया इसपर वह लोग उस ब्राह्मण के आश्रम को ढूंढ़ने लगे और वहां चोरोंको चोरीके धनसहित पकड़लिया ४। १०

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

और उनको उस ब्राह्मण सहित राजा के पास लेगये राजा ने उन सबके लिये शूली देनेकी आज्ञा दी और राजदूतों ने उस आज्ञाके अनुसार उस ब्राह्मण को भी शूलीपर बैठा दिया ११। १३ वह ब्राह्मण उस शूलीपर बहुत दिनों तक निराहार बैठा हुआ तप करा किया और वेदाध्ययन नहीं भूला उसकी इस दशाको देखकर और २ तपस्वी ऋषिलोग बड़े दुःखी हुये और रातको पक्षी का रूप धरकर उसके पास आकर पूछते थे कि तुमने ऐसा क्या पाप किया है जिससे तुमको यह दुःख मिलाहै १४। १७॥

इति श्रीभाषामहाभारते आदिपर्वणि सप्ताधिकशततमोऽध्यायः १०७॥

एकसौआठ का अध्याय।

माण्डव्यऋषि के शूली देनेपर न मरने से राजाका उनसे अपराध क्षमा कराना और ऋषिको मरकर स्वर्गमें जाने पर धर्मराज को शूद्रयोनि में जन्म लेने के शाप देने की कथा॥

वैशम्पायनजी बोले हे राजा जनमेजय! उन ऋषिलोगों के पूछने पर वह ब्राह्मण कहता था कि मैं क्या दोष बताऊं मैंने तो आजतक किसी का कुछ अपराध नहीं किया १ इसके पीछे जब उस ब्राह्मण को शूली पर बैठे २ कई दिन होगये और वह नहीं मरा तब राजदूतों ने यह सब हाल राजा से कहा वह यह सुनकर मंत्रियों सहित दौड़ा आया और हाथ जोड़कर बोला कि महाराज मुझसे यह अपराध अज्ञान और मोहसे हुआ है आप मेरे ऊपर कृपा करके मेरे अपराधको क्षमा करें २। ४ ऋषिने कहा कि अच्छा हमने तेरा अपराध क्षमा किया इसपर राजाने उसको शूलीपरसे उतारनेकी आज्ञा दी सब मनुष्य बल कर २ के हारगये न वह शूली पृथ्वीमेंसे उखड़तीथी न उस ऋषि की गुदासे निकलतीथी तब राजाने उस शूलीको उस जगहसे कटवा दिया जिस जगहसे वह ऋषि के अंगसे बाहरथी ५। ६ इसके पीछे वह ऋषि वहां से उस शूलीके भीतर घुसेहुये टुकड़े सहित वनको चलागया और बड़ी उग्र तपस्या करके स्वर्गके दुर्लभ लोकोंको अपने वशमें करलिया और इसी कारण से उसका नाम अणीमांडव्यऋषि विख्यात हुआ थोड़े दिनोंमें वह मरकर जब स्वर्गको गया तब उसने वहां धर्मराजसे पूछा कि मैंने ऐसा क्या अपराध किया था जिससे मुझे तुमने इतना कष्ट दिया जो कुछ सत्य हालहो मुझसे कहो और मेरे तपके बलको देखो ७। १० धर्मराज ने कहा कि तुमने एक पतंगिका

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

की पूंछमें सींक छेदीथी उसके कारणसे तुमको यह दुःख मिला ११ यह सुनकर अणीमांडव्यने कहा कि तुमने थोड़े से अपराध के लिये हमको महाकष्ट दिया इसकारण से तुमको शूद्रके यहां जन्म लेकर मनुष्य होना पड़ेगा १२ और मैं आजसे यह मर्यादा धर्मफल के उदय करनेवाली बांधताहूं कि चौदह वर्षकी आयुतक मनुष्य को कोई पाप न लगे १३ वैशंपायनजी बोले हे राजा जनमेजय! उस शापके कारणसे धर्मराजने शूद्रयोनिमें जन्म लिया और संसार में विदुरनामसे विख्यात हुये १४ विदुरजी अर्थ धर्ममें कुशल, लोभ और क्रोध से रहित, दीर्घदर्शी, निर्वैर और कुरुवंश का हित करनेवाले थे १५ ॥

इति श्रीभाषामहाभारते आदिपर्वण्यष्टाधिकशततमोऽध्यायः १०८ ॥

एकसौनव का अध्याय।

धृतराष्ट्र व पाण्डु और विदुरजीके उत्पन्न होनेपर सब राज्य में आनन्द होना और भीष्मजीका उन तीनों को पुत्रोंकी सदृश पालना और उन तीनोंका बड़ा होकर सब शास्त्र और युद्धों में निपुण होजाना ॥

वैशंपायनजी बोले हे राजा जनमेजय! उन तीनों चित्रवीर्य के पुत्रों के उत्पन्न होने पर कुरुजांगल देश कौरवदेश और कुरुक्षेत्र तीनों में बड़ी वृद्धि हुई १ वर्षा अच्छी तरह होनेलगी खेतियों में अन्न रसवान् और अच्छा होने लगा वृक्षों में पुष्प और फल ऋतु २ पर फलने लगे २ सवारी के वाहन पुष्ट होगये और मृग पक्षी आदि सुखपूर्वक रहनेलगे ३ नगर में व्यापारी और शिल्पी आने लगे शूरवीर विद्यावान् और सन्तलोग परम सुखी हुये ४ सब जगह सतयुग वर्तमान होगया राज्य में कोई चोर न रहा सब मनुष्य अपना अपना धर्म करने लगे ५ प्रजा के लोग धर्म और यज्ञ करने का स्वभाव रख कर परस्पर लोभ क्रोध वैर और मिथ्या छोड़कर रहने लगे ६। ७ नगर की शोभा महेन्द्रपुरके समान होगई जहां तहां सैकड़ों मन्दिर बने हुये दरवाज़ों पर तोरण बँधी हुई पुरवासी अपनी इच्छाके अनुसार नदी वन खंड बावली और कानन आदि अनेक रमणीक स्थानों में घूमने लगे ८। १० उस समय में कुरुओं के राज्य में न कोई पुरुष कृपण होता था न कोई स्त्री विधवा होती थी ११ सब राज्य में जहां तहां कुयें बाग बावली और रमणीक ब्राह्मणों के आश्रम बनगये और नित्य नये नये उत्सव होनेलगे १२ भीष्मजीके रक्षा करने से सब पृथ्वी रमणीक होगई और सब राज्य में उनका धर्मचक्र फिरनेपर उस देश

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

में बड़ी वृद्धि होगई १३।१४ जब उन तीनोंका संस्कार हुआ तब सब पुरवासियों और कुरुवंशियों ने बड़ा उत्सव किया और घर २ में यह शब्द होनेलगा भोजन करो भोजन दो १५। १६ भीष्मजीने धृतराष्ट्र पांडु और विदुर इन तीनों को पुत्रके समान पाला और वह तीनों कुछ कालमें तरुण होकर वेद शास्त्र पुराण वेदांग शिक्षा आदिको पढ़कर नीति धनुर्वेद ढाल तलवार और गज शिक्षा आदि सब युद्धों में निपुण होगये १७। २० उन तीनों में धृतराष्ट्र देहबल में पांडु धनुर्विद्या में और विदुरजी धर्म के करने में श्रेष्ठ हुये विदुरजीकी बराबर तीनों लोक में धर्ममार्ग से आत्मदर्शन का पानेवाला नहीं हुआ २१। २२ इस प्रकार से नष्ट हुये कुरुवंशके फिर प्रकट होने पर सब देशों में यह बड़ाई होने लगी कि राजा काशी की दोनों पुत्रियों की बराबर शूरवीर पुत्र उत्पन्न करने वाली कुरुजांगल देशकी बराबर देश धर्मात्माओं में भीष्म से धर्मात्मा और नगरों में हस्तिनापुरकी बराबर नगर कोई नहीं है २३। २४ इसके पीछे पाण्डु को राजातिलक दियागया धृतराष्ट्र अन्धे होनेके कारणसे और विदुर शूद्र योनि में उत्पन्न होनेसे राजा नहीं हुये २५ तदनन्तर एक समय विदुर से धर्म तत्त्व के जाननेवाले भीष्मजीने कहा २६ ॥

इति श्रीभाषामहाभारते आदिपर्वणि नवाधिकशततमोऽध्यायः १०९ ॥

एकसौदशका अध्याय।

राजा धृतराष्ट्र से गांधारी के विवाह होनेकी कथा ॥

भीष्मजीने कहा कि हमारा कुल इस संसार में बड़ा विख्यात है और सब राजाओं को जीतकर वश में करने के कारणसे अधिराज गिनाजाता है १ इस को हमने नष्ट होते देखकर सत्यवती और व्यासजीकी अनुमति से तुम तीनों को उत्पन्न करके फिर स्थापित किया है सो अब हम चाहते हैं कि कोई ऐसा उपाय किया जावे जिससे यह कुल समुद्रकी सदृश बढ़े २। ४ हमने सुना है कि एक पुत्री तो राजा सुबल के है एक राजा मद्रके है और एक यादव कुल में है और तीनों अत्यन्त सुंदरी हैं हमारी समझसे ये तीनों कुल श्रेष्ठ और हमारे कुलके साथ सम्बन्ध करने के योग्य हैं अब जो कुछ इसमें तेरी सलाहहो सो कह ५। ७ यह सुनकर विदुरजी ने कहा कि आप हमारे माता पिता और गुरु हैं जैसा कुछ आप इस कुल के लिये हित समझें सो करें ८ वैशम्पायनजी बोले इसके पीछे भीष्मजी ने ब्राह्मणों से सुना कि राजा सुबलकी बेटी गांधारी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ने शिवजी की सेवा करके सौ पुत्र होनेका वरदान लिया है यह सुनकर भीष्म जी ने एक दूतको राजा सुबल के पास उसकी कन्याको धृतराष्ट्र के साथ विवाह करने के लिये मांगने को भेजा राजा सुबल ने अपने जमाई को अन्धा सुनकर पहिले तो चिंता की फिर बुद्धिसे कुलको विचार कर देना अंगीकार किया और उस कन्याको अपने पुत्र शकुनी के साथ बहुत से दान दहेज के साथ हस्तिनापुर को भेज दिया शकुनी अपनी बहिन को लेकर वहां आया और विधिपूर्वक उसे धृतराष्ट्र को देदिया इसके उपरान्त भीष्मजी ने उसका विवाह धृतराष्ट्र के साथ वेदविधि से करादिया और गांधारी ने अपने पतिको अन्धा जानकर आंखों से पट्टी इस प्रयोजनसे बांधली कि पतिकी निंदा न होवे ६। १६ विवाह होने के पीछे शकुनी भीष्मजी से पूजित अपने देशको आया १७ और गांधारी ने अपने शील स्वभाव से सब गुरुजनोंकी सेवा की और कभी किसी को उत्तर न दिया इस प्रकार के चलन से उसपर सब छोटे बड़े सदा प्रसन्न रहने लगे १८। १६॥

इति श्रीभाषामहाभारते आदिपर्वणि दशाधिकशततमोऽध्यायः ११०॥

एकसौग्यारहका अध्याय।

दुर्वासाऋषिका कुन्तीको देववशीकरण मंत्र देना कुन्तीका उस मंत्रसे सूर्यको बुलाकर भोग करना और उसके कर्णनामी पुत्र उत्पन्न होना॥

वैशम्पायनजी बोले कि यादव कुल में शूरसेन नाम वसुदेवजीके पिताथे उनके पृथानाम एक कन्या हुई वह कन्या ऐसी स्वरूपवती थी कि उसकी समान संसार में दूसरी कन्या न थी उसके उत्पन्न होने के पहले शूरसेन के फूफीजाद भाई राजा कुंतिभोजने संतान न होने के कारण से शूरसेन से कहा था कि तुम्हारे जो संतति हो सो हमको देना शूरसेन ने उससमय राजा कुंतिभोजसे कहा कि अबकी जो कुछ हमारे संतति होगी सो हम तुमको देंगे इस कारण से जब शूरसेन के पृथा उत्पन्न हुई तब उसने उसको राजा कुंतिभोज को देदी राजा कुंतिभोजने उसको पाला और जब वह सयानी हुई तब उससे राजा ने कहा कि जो अतिथि ब्राह्मण यहां आया करें उनकी तू सेवा किया कर पृथा अपने पिता कुंतिभोजकी आज्ञाके अनुसार जो कोई अतिथि ब्राह्मण वहां आया करता उसकी सेवा किया करती थी एक समय वहां दुर्वासा ऋषि आये कुंती ने उनकी अच्छी तरह से सेवा करके उनको प्रसन्न किया चलते

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

समय उन्होंने भविष्य आपद्धर्मको जानकर उसे वशीकरण मन्त्र विधिपूर्वक बताया और उससे कहा कि इस मन्त्र से तू जिस देवता को बुलावेगी वह तेरे पास चला आवेगा और उसके प्रभावसे तेरे पुत्र होगा १।७ कुंती ने इस बातको सुनकर आश्चर्य किया और मन्त्रकी परीक्षा करने के लिये सूर्य देवता को बुलाया ८ मन्त्रके प्रभावसे सूर्यदेवता वहां चले आये और उससे बोले कि कहो मुझे किस निमित्त बुलाया है कुंती उनको देखकर भौचक रहगई और बोली कि महाराज मुझको एक ब्राह्मण ने मन्त्र दिया था उसकी परीक्षा के लिये आपको बुलाया था मैं आपको प्रणाम करती हूं मेरा अपराध क्षमा कीजिये और अपने लोक को पधारिये ९। १२ यह सुनकर सूर्य बोले कि हमको सब मालूम है तुझे दुर्वासा ऋषिने मन्त्र दिया है अब तू किसी बातका संदेह मत कर निर्भय होकर हमारे साथ संगम कर हमारा मिलना निष्फल नहीं जाता और जो तू ऐसा न करेगी तो हमको वृथा बुलाने का तुझे दोष लगेगा १३। १४ वैशंपायनजी बोले हे राजा जनमेजय! सूर्य की यह बात सुनकर जब कुंती ने अपने कन्यात्व के जानेके भयसे संगम करना अंगीकार नहीं किया तब सूर्यने फिर उससे कहा कि तेरा कन्यात्व हमारी कृपासे नहीं जायगा यह कहकर सूर्य ने कुंती के साथ संगम किया और उसके एक पुत्र बड़ा शूरवीर कुंडल और कवच धारण किये हुये उत्पन्न हुआ इसके पीछे सूर्य तो उसको फिर पूर्ववत् कन्या होजाने का वरदान देकर स्वर्गको चले गये और कुन्ती विचार करने लगी कि इस लड़के को क्या करूं अन्त में भाई बांधवों के भयसे उसने उस लड़के को नदी में बहादिया १५। २२ उसको बहा हुआ जाते देखकर राधा के पति सूतने उसे निकाललिया और लाकर अपनी स्त्रीको देदिया वह उसको पुत्र के समान पालने लगी और धन सहित उत्पन्न होने के कारण से उसका नाम वसुषेण रक्खा २३। २४ थोड़े दिनों में वह बालक बड़ा होकर महाशूर वीर और सब अस्त्र शस्त्रों का जाननेवाला होगया और सूर्यके सन्मुख बैठकर उससमय तक सूर्यका आराधन किया करता जबतक सूर्य पीठ पीछे जाते उस पूजा के समय में जो कोई ब्राह्मण उसके पास जाताथा उसको वह जो कुछ वह मांगता था सो देता था २५। २६ एक समय अर्जुन के हितके लिये इन्द्र ब्राह्मण का रूप धरकर उसके पास गया और उससे कुण्डल सहित कवचको मांगा २७ यद्यपि वह कवच कुंडल उसकी देहके साथ उत्पन्न हुये थे परन्तु उसने उन

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

के भी देने में देर न की तुरन्त देह से उखाड़कर देदिये २८ इन्द्र उसके इस कर्म को देखकर बहुत प्रसन्न हुआ और उसको एक बरछी दी और कहा कि देवता राक्षस मनुष्य गंधर्व आदि जिस किसीके तू इसबरछीको मारेगा वह उसी समय मरजायगा २९। ३० पहिले तो उसका नाम वसुषेणथा और जबसे उसने यह उक्त कर्म किया तबसे उसका नाम वैकर्त्तनकर्ण होगया ३१ ॥

इति श्रीभाषामहाभारते आदिपर्वण्येकादशाधिकशततमोऽध्यायः १११ ॥

एकसौबारहका अध्याय।

कुन्ती का स्वयंवर होना उसमें कुन्तीका राजा पांडु को जयमाल पहिराना उसका पांडुके साथ विवाह होना और पांडुका कुन्ती को लेकर अपने नगरको आना ॥

वैशम्पायनजी बोले हे राजा जनमेजय! राजा कुन्तिभोज की वह पृथा नाम कन्या अत्यन्त सुन्दरी रूपवती गुणवती और शीलवतीथी उसकी सुंदरता को देखकर कई एक राजाओं ने उसको मांगना चाहा १। २ इसी अवसर में राजा कुन्तिभोज ने उसका स्वयंवर किया और उस स्वयंवर में देश देश के राजा इकट्ठे हुये उस समय पृथा राजा पांडुके स्वरूप को जो सिंहके समान बड़ी बड़ी आंखें और चौड़ी छातीको निकाले हुये उन सब राजाओं के बीचमें इन्द्र के समान बैठा हुआथा और अपने सूर्यरूपी तेजसे सब राजाओं के तेज को अस्त कर रहाथा देखकर आसक्त होगई और कामके वशमें होकर लज्जा सहित उसके गले में जयमाल डालदी ३। ७ यह देखकर अन्य सब राजा अपने २ वाहनोंपर चढ़,२ कर जैसे आयेथे वैसेही चलेगये ८ तब राजा कुंतिभोज ने राजा पांडुसे पृथाका विवाह करादिया और उसको दहेजमें नाना प्रकारके धन दिये राजा पांडु उन सबको लेकर बड़ी सेनाके साथ जिसमें नाना प्रकार की पताका और ध्वजा मनुष्य लिये हुयेथे ब्राह्मण और महर्षियों से प्रशंसित होता हुआ अपने नगर में आया और पृथासहित अपने भवन में प्रवेश किया ९। ११ ॥

इति श्रीभाषामहाभारते आदिपर्वणि द्वादशाधिकशततमोऽध्यायः ११२ ॥

एकसौतेरहका अध्याय।

राजा पांडुका माद्री से विवाह होना और उसका बहुत से राजाओं को जीतकर अनेक प्रकार का बहुतसा धन लाना ॥

वैशम्पायनजी बोले हे राजा जनमेजय! इसके पीछे भीष्मजी राजा पांडुका

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दूसरा विवाह करना विचारकर बूढ़े मंत्री और ब्राह्मण महर्षियों को अपने साथ लेकर चतुरंगिणी सेना सहित मद्रदेश को गये १। २ राजा मद्र उनके आने का संदेशा सुनकर आगे से लिवाने को आया और बड़े आदर से नगर में लेजाकर अच्छे आसन पर बैठाकर पाद्य अर्घ्य और मधुपर्क से पूजन करके बोला कि आपका आना किस प्रयोजन से हुआ है ३। ४ यह सुनकर भीष्मजी बोले कि हमने सुनाहै कि आपकी बहिन यशास्विनी अभी कुँवारी है हम उसको राजा पांडुके साथ विवाह करने के लिये तुमसे मांगने आये हैं हम तुम दोनों परस्पर विवाह करने के योग्यहैं इससे तुम हमारे इस संबंध को ग्रहण करो ५। ७ राजा मद्र बोला कि तुमसे श्रेष्ठ वर हमको निस्संदेह नहीं मिलेगा परन्तु हमारे कुलमें पहिले राजाओं ने कुछ मर्यादा प्रवृत्त की है उसको आपभी अच्छी तरह जानते हैं मैं अपने मुँहसे उसको नहीं कह सक्ता कि उसको आप दीजिये परन्तु वह कुलका धर्म होने के कारण मैं उसको उल्लंघन नहीं कर सक्ताहूं चाहे वह बुराहो या भला ८। ११ यह सुनकर भीष्मजी बोले कि यह परम धर्म है ब्रह्माजी ने आप इस धर्मको कहा है इसमें कुछ दोष नहीं है इस धर्मको पहिले मनुष्योंने भी कियाहै हम इस तुम्हारे कुलकी मर्यादा को जानते हैं १२। १३ यह कहकर भीष्मजी ने मद्रदेशके राजा शल्य को सुवर्ण रत्न हाथी घोड़े रथ अच्छे २ वस्त्र मणि मोती और मूंगे आदि अनेक तरह के रत्न मँगवाकर दिये शल्य उनको लेकर प्रसन्न होगया और अपनी बहिन को अच्छी तरह अलंकृत करके भीष्मजी को देदी १४। १६ भीष्मजी उसे लेकर अपने नगर को आये और शुभ मुहूर्त में उसका विवाह राजा पांडु के साथ करादिया १७। १८ विवाह होने पर राजा पांडु ने माद्रीको अच्छे राजमन्दिर में रक्खा और उसके और कुन्ती के साथ सुखपूर्वक तीस रात्रि तक विहारकरके पृथ्वी जय करने की इच्छासे भीष्म धृतराष्ट्र आदि वृद्ध कुरुवंशियों की चरणवंदना करके सबसे आशीर्वाद पाकर हाथी घोड़ा आदिकी बड़ीभारी सेना लेकर मंगलाचरण सुनता हुआ नगरसे बाहर निकला १९।२३ राजा ने पहिले उस बड़ी भारी सेनाको लेजाकर दशार्ण देशोंपर चढ़ाई की और उन्हें विजय किया २४।२५ उसके पीछे मगधदेश के राजाओं को जो अपराधी और बलका बड़ा गर्व रखते थे मारा और वहां से बहुतसा खजाना और वाहन लेकर मिथिला देशमें जाकर विदेहवंशी राजाओं को जीता २६। २८ इसी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्रकार से राजा पांडु ने काशी सुह्म और पुंड्रदेशों के राजाओं को भी जीतकर अपने वशमें किया २९ बहुत से राजा लोग उस पांडुरूपी अग्नि की बाणरूपी ज्वाला में पड़कर मरगये और बहुत से बलहीन होकर राजा पांडु के वश में होकर कुरुओं की सेवामें नियुक्त हुये ३०। ३१ जिन २ राजाओं को पांडु ने जीताथा उन सबों ने राजा पाण्डु को देवताओं में इन्द्रके समान शूरवीर समझा ३२ और सब ने धन नाना प्रकार के रत्न, मणि, मोती, मूंगा, सुवर्ण, चांदी, गौ, अश्व, रथ, हाथी, खच्चर, ऊँट, भैंसा, बकरी, बकरा, कंबल, मृगचर्म आदि अनेक प्रकार की वस्तु ला लाकर हाथ जोड़ २ कर राजा को निवेदन कीं और राजा पांडु ने उन सब को ग्रहण किया ३३। ३५ इसके पीछे राजा पांडु उस सब धनको लेकर प्रसन्नचित्त अपने देश के मनुष्यों को हर्षित करता हुआ हस्तिनापुरको गया ३६ राजा शंतनु के मरने के पीछे जो कौरवकुलकी कीर्ति अस्त होगईथी उसको पांडुने फिरसे प्रकट किया और जिन राजाओं ने उस समय में कुरुओं का धन और देश लेलिये थे उनको जीतकर उनपर कर बांध लिया ३७। ३८ उसके आने का हाल सुनकर भीष्म जी सब मंत्रियों और पुरवासियों सहित आगे से लिवाने को आये और हाथी घोड़ा आदि उसके लायेहुये असंख्य धनको देखकर बहुत प्रसन्न हुये यद्यपि राजा पाण्डु किले से दूरपरथा परन्तु भीष्मादिकों को आते हुये देखकर रथसे उतर पड़ा और अपने पिता भीष्म के चरणों में वन्दना करके सब पुरवासी आदि का यथायोग्य सम्मान किया उस समय भीष्मजी ने उसे करुणासहित स्नेह के साथ छाती से लगा लिया और उसे सब देशों को जीतकर आया हुआ जानकर बहुत प्रसन्न हुये ३९। ४३ इसके पीछे भीष्मजी उसे साथ लेकर अनेक प्रकारके बाजे बजवाते हुये नगरके भीतर गये ४४॥

इति श्रीभाषामहाभारते आदिपर्वणि त्रयोदशाधिकशततमोऽध्यायः ११३॥

एकसौचौदहका अध्याय।

राजा पांडुका अपनी रानियों सहित वनमें अहेर खेलने को जाना और विदुरजीका विवाह राजा देवककी कन्यासे होना॥

वैशम्पायनजी बोले हे राजा जनमेजय! इसके पीछे राजा पाण्डुने अपनी भुजाबल से जीतेहुये धनको धृतराष्ट्र की आज्ञा से भीष्मजी सत्यवती माता विदुर और अन्य सुहृद्जनों को भेंट किया १। २ सत्यवतीने उस धनको भीष्म

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जी और कौशल्या को देकर प्रसन्न किया और कौशल्या अपने पुत्र पाण्डुसे मिलकर ऐसे प्रसन्न हुई जैसे इन्द्राणी अपने पुत्र जयन्त को मिलकर होती है ३। ४ धृतराष्ट्रने उस धनसे सैकड़ों अश्वमेधकी तुल्य पंचमहायज्ञ किये ५ इसके पीछे राजा पाण्डु अपनी कुन्ती और माद्रीनाम रानियों सहित हिमालय पहाड़के नीचे केशाल के वनमें अहेर खेलने को चलागया और मद्र के स्थानों को छोड़कर वनमें बसकर पहाड़ों और वनों में दोनों रानियों सहित इस प्रकार से घूमा करता था जैसे ऐरावत हाथी अपनी हथिनियों के साथ में क्रीड़ा करता हुआ बिचरा करता है ६।६ उस वनके रहनेवाले उसे दोनों रानियों सहित कवच और शस्त्र धारण किये हुये घूमते देखकर यह जानते थे कि यह देवता है १० धृतराष्ट्रकी आज्ञा से राजा पाण्डु को सब प्रकारकी भोगने की चीजें वनमें नित्य पहुँचती थीं ११ इसके पीछे भीष्मजी ने यह सुना कि राजा देवक के ब्राह्मण के वीर्य से शूद्रयोनिमें उत्पन्न हुई एक कन्या अत्यन्त सुन्दरी है १२ भीष्मजी ने उस कन्या को लाकर विदुरजी के साथ विवाह करदिया और उसके विदुरजी से पिताके समान गुणवान् और नम्र पुत्र उत्पन्न हुये १३। १४॥

इति श्रीभाषामहाभारते आदिपर्वणि चतुर्दशाधिकशततमोऽध्यायः ११४॥

एकसौपन्द्रहका अध्याय।

व्यासजी के वरदान से गांधारी के सौ पुत्र और एक कन्या उत्पन्न होना और एक वेश्या से धृतराष्ट्र के युयुत्सुनामी पुत्र उत्पन्न होना॥

वैशम्पायनजी बोले हे राजा जनमेजय! इसके पीछे धृतराष्ट्र के सौ पुत्र गांधारी से और एक पुत्र वेश्या से उत्पन्न हुये १ और राजा पांडुके पांच महारथी पुत्र वंश के चलानेवाले देवताओं के अंश से कुन्ती और माद्री नाम दोनों रानियों के उत्पन्न हुये २ यह सुनकर जनमेजय बोले कि महाराज गांधारी के सौ पुत्र क्योंकर और कितने दिनों में हुये और उन सबकी कितनी कितनी उमर हुई ३ और जो एक पुत्र वेश्या से हुआ वह क्योंकर हुआ और गांधारी सी धर्मचारिणी और आज्ञाकारिणी स्त्रीसे धृतराष्ट्र क्योंकर निवृत्त हुये कि जिसके कारणसे उन्होंने ऐसा कर्म किया ४ और पांडुके ऋषिका शाप होने के पीछे पांच पुत्र देवताओं से कैसे हुये इस सबको आप विस्तारपूर्वक कहिये मेरा मन इसके सुनने से नहीं भरता है ५। ६ यह सुनकर वैशम्पायनजी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बोले कि एक समय व्यासजी क्षुधा और श्रम से व्याकुल होने के कारण गांधारी के पास गये थे गांधारी ने उनकी अच्छी तरह से सेवा की उस सेवा से व्यासजी ने प्रसन्न होकर गांधारी से कहा कि हम से वर मांगो उस समय गांधारी ने कहा कि महाराज मेरे मेरे पतिके समान सौ पुत्र होवें व्यासजी उससे तथास्तु कहकर चले गये और उसको धृतराष्ट्र से गर्भ रहा ७। ८ दो वर्षतक वह गर्भको धारण किये रही उपरान्त कुन्ती के सूर्य के समान पुत्र के जन्म का होना सुनकर उसको बड़ी चिन्ता हुई और धृतराष्ट्र से छिपाकर अकेले में गर्भको पीटनेलगी ९। ११ उसकी चोट से उसके एक मांस का पिंड लोहे के समान उत्पन्न हुआ उसको देखकर गांधारी ने फेंकने का विचार किया कि इतने में इस बात को जानकर वहां व्यासजी आपहुँचे और उस मांसके पिंडको देखकर गांधारी से पूछा कि तेरा क्या विचार है गांधारी बोली कि महाराज मैंने कुंती के सूर्य के समान पुत्र उत्पन्न होनेका हाल सुनकर बड़े दुःख से अपने पेटको पीटडाला उसकी चोटसे मेरे यह मांस का पिण्ड उत्पन्न हुआ है आपने मुझे सौ पुत्र होने का वरदान दिया था परन्तु उन सौ पुत्रों के बदले में यह मांस पिंड हुआ है १२। १६ यह सुनकर व्यासजी बोले कि मेरा कहना मिथ्या कभी नहीं होसक्ता है जैसा मैंने कहा है वैसाही होगा अब सौ घड़े घृत से भरवाकर ऐसी जगह में रक्खो जहां उनको कोई छू न सके और इस मांसके पिंडको पानी से सींचो १७। १८ वैशम्पायनजी बोले कि पानी डालतेही उस मांस के पिंड के अंगूठे २ भर के सौ टुकड़े होगये व्यासजी ने उन सबको एक एक घड़े में रखवा दिया और घड़ों को बन्द करके ऐसे स्थान में रखवा दिया जहां उनको कोई न छू सके और गांधारी से यह कहकर कि प्रत्येक घड़ेको इतने २ दिनों में उघाड़ना आप हिमालय पर्वत पर तपस्या करने को चले गये १९। २३ वह गर्भ उन घड़ों में बढ़ते रहे और क्रम के अनुसार पहिले दुर्योधन उत्पन्न हुआ जन्म के प्रमाण से युधिष्ठिर दुर्योधन से बड़ा था और जिस दिन दुर्योधन उत्पन्न हुआ उसी दिन भीमसेननेभी जन्म लिया दुर्योधन उत्पन्न होतेही बड़े शब्द से रोने लगा उसके शब्द को सुनतेही गधे रेंकने लगे गीदड़ रोने लगे गृध्र अपना अपना शब्द करने लगे हवा बड़े वेगसे चलने लगी और दिन दग्ध हुआसा मालूम होने लगा २४। २७ उस समय राजा धृतराष्ट्र ने भीष्मजी विदुरजी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ब्राह्मण और सब सुहृद् कुरुवंशियों को बुलाकर डरते डरते कहा कि हमारे कुल को बढ़ानेवाला युधिष्ठिर पहिले उत्पन्न हुआ है वह राजा होगा इसमें हमारा कहना कुछ नहीं है और युधिष्ठिर के पीछे यह हमारा पुत्र भी राज्य करेगा परन्तु इस हमारे पुत्रके जन्म के समय चारों ओर से जो गीदड़ों ने भयानक शब्द किया उसका क्या कारण है २८।३१ यह सुनकर विदुरजी और सब ब्राह्मण उसको समझकर कहने लगे कि गीदड़ों का जन्म के समय बोलना अच्छा नहीं है यह बड़ा भारी अशकुन हुआ है जो इस बालक की रक्षा की जायगी तो बड़ा अकल्याण होगा और यह बालक सब कुलका नाश करेगा इसका उपाय भी सिवाय इस बालक को त्याग करने के और कुछ नहीं है इससे जो आप कुलकी शांति चाहते हैं तो इसको त्याग दीजिये आप यही जानना कि मेरे सौ पुत्र न थे एक कम सौही थे ३२।३५ आप हमारी बात को अंगीकार कीजिये और सब जगत् के कल्याण के लिये इस एक पुत्र को त्याग दीजिये क्योंकि ऐसा लिखा है कि एक के पीछे जो कुलका नाश होताहो तो उस एकको त्याग देना चाहिये और जो कुल के पीछे गांवभर मारा जाताहो तो उस कुलको निकाल देना चाहिये और जो एक ग्राम के पीछे सब देश क्षय होताहो तो उस ग्रामको छोड़कर देशको बचालेना चाहिये और जो पृथ्वी के पीछे प्राण जातेहों तो प्राण बचाने के लिये उस पृथ्वी को त्याग देना उचित है ३६ विदुरजी और ब्राह्मणों ने बहुतेरा समझाया परन्तु धृतराष्ट्रने पुत्रके स्नेहसे उसको त्याग नहीं किया ३७ इसके पीछे एक महीने के अन्तर में धृतराष्ट्र के वह सब पुत्र उत्पन्न होगये और उन सौ पुत्रों से एक कन्या अधिक उत्पन्न हुई ३८ जब गांधारी को गर्भ रहा था उस समय गर्भ के बड़े होने पर गांधारी को क्लेश हुआ था उस क्लेशके कारण से राजा धृतराष्ट्र की सेवा कुछ काल एक वेश्याने कीथी इसकारण से उस वेश्याके उसी वर्ष में धृतराष्ट्र से युयुत्सुनाम बड़ा बुद्धिमान् पुत्र उत्पन्न हुआ ३९।४० हे राजा जनमेजय! धृतराष्ट्र के इस प्रकार से सौ पुत्र और एक कन्या गान्धारी से और एक पुत्र वेश्यासे उत्पन्न हुआ ४१ ॥

इति श्रीभाषामहाभारते आदिपर्वणि पञ्चदशाधिकशततमोऽध्यायः ११५ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

एकसौसोलह का अध्याय।

वैशंपायन का जनमेजय से गांधारी के सौ पुत्रों से एक कन्या अधिक होनेका वृत्तांत कहना॥

जनमेजय बोले कि महाराज आपने कहा कि गांधारी के सौ पुत्र और एक कन्या और वेश्याके एक पुत्र उत्पन्न हुआ परन्तु व्यासजी ने तो गांधारी को सौ पुत्रही होनेका वरदान दिया था और उस मांसपिंड के होनेपर भी व्यासजी ने उसको जलसे सिंचवाकर सौही टुकड़े किये थे फिर कन्या कहांसे हुई मुझको इसमें बड़ा संदेह है आप कृपा करके कहिये कि यह कन्या उन सौ पुत्रों से अधिक क्योंकर हुई १। ५ वैशम्पायनजी बोले कि तुमने यह अच्छा प्रश्न किया है अब इसका वृत्तांत सुनो जिस समय गांधारी के वह मांसका पिंड उत्पन्न हुआ था और वहां व्यासजी आये थे उस समय व्यासजी ने आप वहां बैठकर उस मांसपिंडको जलसे सींचा और उसके टुकड़े २ होजाने पर अपने हाथ से एक २ टुकड़ा गांधारी को देकर एक २ घीसे भरेहुये घड़ों में डलवाया था उस समय गांधारी अपने मनमें विचार करने लगी कि व्यासजी ने सत्य कहा था मेरे निस्संदेह सौ पुत्र होंगे परन्तु इन सौ पुत्रों के सिवाय एक पुत्री भी होती तो क्याही अच्छा था क्योंकि पुत्रीके होने से मेरे पति को धेवते के होने से जो स्वर्ग में लोक मिलते हैं वह भी मिलजाते और मैं भी अपने को पुत्र और दौहित्र होने से संसार में कृतकृत्य मानती अब जो कुछ मैंने आजतक तप होम और गुरुकी भक्ति की है वह सत्य हो तो मेरे इन सौ पुत्रों से छोटी एक पुत्री भी होवे गांधारी यही विचार कर रही थी कि इसमें व्यासजी ने उससे कहा कि ले ये सौ पुत्र तेरे होंगे मेरा कहा कभी झूंठा नहीं होता है और इन सौ पुत्रों से यह एक टुकड़ा और बचाहै इसको भी घी भरे पात्र में धरदे इससे एक कन्या होगी इससे तेरे धेवता होगा इतनी कथा सुना कर वैशम्पायनजी बोले हे राजा जनमेजय! वह कन्या सौ पुत्रों से अधिक इस प्रकार से हुई थी अब और जो कुछ तुम कहो सो वर्णन करें ६। १८॥

इति श्रीभाषामहाभारते आदिपर्वणि षोडशाधिकशततमोऽध्यायः ११६॥

एकसौसत्रह का अध्याय।

धृतराष्ट्रके सौ पुत्रों के नाम॥

जनमेजय बोले कि महाराज मैं धृतराष्ट्र के पुत्रों के नाम बड़े से लेकर सबसे छोटेतक सुना चाहता हूं १ वैशम्पायनजी बोले कि नाम उनके क्रम

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पूर्वक ये हैं, दुर्योधन, युयुत्सु, दुःशासन, दुःसह, दुःशल, जलसन्ध, समसह, विंद, अनुविंद, दुर्द्धर्ष, सुबाहु, दुःप्रधर्षण, दुर्मर्ष, दुर्मुख, दुःकर्ण, कर्ण, विविंशति, विकर्ण, शल, सत्त्व, सुलोचन, चित्र, उपचित्र, चारुचित्र, शरासन, दुर्मद, दुर्विगाह, विवित्सु, विकटानन, ऊर्णनाभ, सुनाभ, नन्द, उपनन्द २।५ चित्रबाण, चित्रवर्मा, सुवर्मा, दुर्विमोचन, अयोबाहु, महाबाहु, चित्रांग, चित्रकुण्डल ६ भीमवेग, भीमबल, बलाकी, बलवर्द्धन, उग्रायुध, सुषेण, कुण्डधार, महोदर ७ चित्रायुध, निषंगी, पाशी, वृन्दारक, दृढ़वर्मा, दृढ़क्षत्र, सोमकीर्ति, अनूदर ८ दृढ़सन्ध, जरासन्ध, सत्यसन्ध, सदःश्रवाक, उग्रश्रवा, उग्रसेन, सेनानी, दुष्पराजय ९ अपराजित, कुण्डशायी, विशालाक्ष, दुराधर, दृढ़हस्त, सुहस्त, वातवेग, सुवर्चस १० आदित्यकेतु, बह्वाशी, नागदत्त, अग्रयायि, कवची, क्रथन, कुण्ड, कुण्डधार, धनुर्द्धर ११ वीर, उग्र, भीमरथ, वीरबाहु, अलोलुप, अभय, रौद्रकर्मा, दृढ़रथाश्रय १२ अनाधृष्य, कुण्डभेदी, विरावी, चित्रकुण्डल, प्रथम, प्रमाथी, दीर्घरोम, पराक्रमी, दीर्घबाहु, महाबाहु, व्यूढोरु, कनकध्वज, कुण्डाशी और वीरजा और इन सौ पुत्रोंसे छोटी दुःशलानाम कन्या १३।१४ धृतराष्ट्र के ये सब पुत्र बड़े शूरवीर युद्ध वेद और सब शस्त्रों के चलाने में पण्डित थे १५। १६ समय के आने पर धृतराष्ट्रने परीक्षा कर करके सबका विवाह सबके अनुरूप स्त्रियोंके साथ करदिया और उस दुःशलानाम कन्याका विवाह राजा जयद्रथ से करदिया १७। १८॥

इति श्रीभाषामहाभारते आदिपर्वणि सप्तदशाधिकशततमोऽध्यायः ११७॥

एकसौअठारह का अध्याय।

राजा पाण्डुका अहेर खेलतेमें मृगरूप मुनिको विषय करतेमें मारना और उस मुनिका राजाको शाप देना॥

राजा जनमेजय बोले कि हे वैशम्पायनजी! आपने राजा धृतराष्ट्र के पुत्रों का अपूर्व जन्म जैसा कि मनुष्यों में कभी नहीं हुआ और उन सब के भिन्न भिन्न नाम वर्णन किये अब मैं पाण्डवों के जन्मकी भी कथा विस्तार सहित सुना चाहताहूं जिनकी उत्पत्ति आपने देवताओं के अंशसे अंशावतारण पर्व में कही थी १। ४ वैशम्पायनजी बोले कि राजा पांडु उस वन में नित्य अहेर खेला करताथा एक दिन उसने एक हिरनको हिरनी से मैथुन करते हुये देखा और उसी समय उन दोनोंको सुनहरीपर लगेहुये पांच बाणोंसे छेदडाला ५।६

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वह हिरन बड़ा तेजस्वी तपोधन और पराक्रमी ऋषि था अपनी स्त्री से मृग-रूप धरकर भोग कररहा था बाणोंके लगतेही वे दोनों चिपटे हुये गिरपड़े और राजा को देखकर वह हिरन व्याकुल होकर मनुष्यभाषा में बोला ७।८ कि हे राजा! जो मनुष्य कामी क्रोधी निर्बुद्धि और पापी हैं वे भी ऐसा कुकर्म नहीं करते हैं जैसा तुमने किया है हां भावी तो बलवान् होती है और मनुष्य की बुद्धि भी भावी के अनुसार होजाती है परन्तु जैसा तुम्हारा कुल धर्मात्माओं में मुख्य गिनाजाता है वैसा काम तुमने नहीं किया ९।११ यह सुनकर पांडु बोले कि अरे मृग! तू हमारी निंदा क्यों करता है राजाओं को अहेर खेलना उसी प्रकार से लिखा है जैसे शत्रु को मारना लिखाहै क्षत्रियों को जल करके ही मृगों का मारना लिखा है इससे हमने केवल क्षत्रियधर्म कियाहै तू हमारी निन्दा वृथा करताहै देखो अगस्त्यजीने भी सत्रयज्ञ में मृगों को अहेर में मार-कर देवताओं को उनके मांसकी आहुति दीथी १२।१५ मृग बोला कि शूरवीर लोग सुप्त कामासक्त और प्रमत्त वैरी को भी नहीं मारते हैं १६ पांडु बोले कि राजालोग वैरी मृगोंको जैसे पातेहैं वैसेही मार डालते हैं यह क्षत्रियों का धर्म है तू क्यों निन्दा करता है १७ मृग बोला कि मैं अपने मारे जाने के कारण से मृगों के मारनेवालों की निन्दा नहीं करता हूं परन्तु यह कहता हूं कि तुमने मेरे मैथुनको देखा नहीं विनाही देखे मार दिया ऐसा कौन बुद्धि-मान् होगा जो सब प्राणियों के आनन्दकारी मैथुन करते हुये मृग को वन में मारेगा १८।१९ मैंने इस मृगी के सन्तान उत्पन्न करने के लिये इसके साथ भोग कियाथा परन्तु तुमने उसको निष्फल करदिया २० कौरववंशी राजा बड़े विवेकी होते हुये चले आये हैं और तुम भी उसी वंश में उत्पन्न हुये हो और सम्पूर्ण शास्त्र धर्म और स्त्रियोंके भोगोंको देवताओं के समान जानते हो परन्तु तुमको ऐसा हिंसात्मक निंदित धर्मविरुद्ध और स्वर्गके यश को दूर करनेवाला कर्म करना योग्य न था २१।२३ तुमको तो हिंसा पाप और अधर्म करनेवाले मनुष्यों को दण्ड देना चाहिये न कि आपही ऐसा काम करना २४ कि मुझ अनपराधी मूल फल के खानेवाले और वन में शान्त स्वरूप होकर रहनेवाले मृगवेषधारी मुनि को भोग करते में वृथा मारडाला मैं किंदमनाम मुनि हूं मृग के स्वरूप को धरकर इस वन में फिरा करता हूं आज मैंने मनुष्यों की लज्जा से मृगस्वरूप से मृगी के साथ भोग किया था परन्तु

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तुमने हमारे परमानन्दको नाश करके यह दुःख दिया इस कारणसे मैंभी तुमको शाप देताहूं कि जिस तरह हम दोनों को तुमने विषय के आनन्द में मारकर दुःख दिया है उसी तरह तुमभी अपनी स्त्री से विषय के सुख में लिप्त होने पर मरणरूपी दुःखको पावोगे और वह स्त्री भी तुम्हारी प्रीति से तुम्हारे साथ मरकर प्रेतलोक को जायगी परन्तु विना जाने मारने के कारण से तुमको ब्रह्महत्या नहीं लगेगी २५। ३२ वैशंपायनजी बोले हे जनमेजय! यह कहकर उस मृगरूप मुनिने अपने प्राण छोड़दिये और राजा पांडु महादुःखी होकर वहां क्षणभर ठहरकर अपने स्थानको आया ३३॥

इति श्रीभाषामहाभारते आदिपर्वण्यष्टादशाधिकशततमोऽध्यायः ११८॥

एकसौउन्नीस का अध्याय।

राजा पांडुका शापके दुःखसे सब संसारी भोग छोड़कर अपनी रानियोंसहित शतशृंगपर्वत पर जाकर तप करना और धृतराष्ट्रको भाईका बड़ा शोक करना॥

वैशंपायनजी बोले हे राजा जनमेजय! राजा पांडु उस मुनिको छोड़कर अपने स्थानपर आया और अपनी स्त्रियों सहित विलाप करके बोला कि देखो सत्पुरुषोंके कुलमें उत्पन्न हुये मनुष्य भी अंतःकरणको अशुद्ध करनेवाले कामादिक खोटे कर्मोंको करके दुर्गति पाते हैं मैंने सुनाहै कि मेरा पिता बड़े धर्मात्मा के वीर्यसे उत्पन्न हुआ था और कामात्मा होने के कारण से बालअवस्था में ही मरगया और व्यासजी महाराजने मुझको उसकी स्त्रीसे उत्पन्न किया १। ४ अब मेरी बुद्धि अनीति और हिंसा कर्म करनेवाली होगई है इस कारण से सब बंधनों को छोड़कर अपने पिता व्यासजी की तरह मोक्षका साधन करने में चित्त लगाऊंगा और ब्रह्मचर्य होकर रहूंगा ५। ६ और तप करूंगा ऐसा करने से मुंडित मुनि होकर वनस्पति आदि को खाकर जिस आश्रम में चाहूंगा घूमा करूंगा ७ और पृथ्वीपर सोना शून्यस्थान अथवा पेड़ोंकी जड़ में रहना न किसी को बुरा कहना न भला कहना न किसी बातका हर्ष शोक मानना अपनी बुराई भलाई को एकसा समझना नमस्कार और आशीर्वाद से कुछ प्रयोजन न रखना द्वन्द्व और परिग्रह को दूर करना ८। ९ न किसीको हँसना न किसीपर क्रोध करना नित्य आनन्द में रहना सब जीवधारियों का हित करना १० किसी प्राणीको न मारना सबको अपनी समान देखना ११ कभी दश पांच घरोंसे भीख मांगलाना जो भीख न मिले तो उपवास करलेना थोड़ा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भोजन करना १२ लोभसे दश घरों से भीख मांगलाना और जो दश घरों में न मिले तो सातही घरकी भीखसे तृप्त होजाना तप करना भीख मिलने न मिलने को एकसा जानना १३ जो एक बांहमें चंदन लगाहो और दूसरी में काठ घिसकर लगा दिया हो तो दोनों में से किसीको बुरा भला न मानना १४ मरना और जीना दोनों मेंसे किसी को प्रिय या अप्रिय न जानना जीना मरना चाहनेवालों की तरह कोई कर्म न करना १५ यज्ञ इन्द्रियां धर्म और अर्थ की सब क्रियाओं के फलको अनित्य जानकर सबको त्याग करना चित्तकी मलिनता को शुद्ध करना १६। १७ सब पापोंसे दूर रहना किसी बंधन के पास न जाना वायुकी तरह सबसे मिलना परन्तु किसी के वश में न रहना १८ इन कर्मों को करके देहांत तक निर्भय मार्गका आश्रय लेकर रहूंगा १९ शापसे संतान उत्पन्न करने में असमर्थ होनेके कारण से मैं अब गृहधर्म के करने के योग्य नहीं रहा अब तो मेरा परमधर्म वानप्रस्थ है वैशंपायनजी बोले कि राजा पांडु यह कहकर दुःख से श्वासभर कुंती और माद्री नाम अपनी दोनों रानियों की ओर देखकर बोले २०। २२ कि तुम दोनों हस्तिनापुर जाकर विदुरजी भीष्मजी धृतराष्ट्र सत्यवती राजपुरोहित शंसितव्रत ब्राह्मण और जो और हमारे नगर में वृद्धजन हों सबसे कहदो कि राजा पांडु तो सब त्याग करके वनको चलागया २३। २४ राजाकी यह बात सुनकर और उसके चित्तको वनवासमें देखकर वे दोनों रानियां बोलीं कि महाराज यहां और भी ऐसे आश्रम हैं जहां पर आप हम दोनों के साथ तपस्या कर सक्ते हैं हम दोनों भी इन्द्रियों को वशमें कर कामके सुखको छोड़कर स्वर्गमें भी आपको अपना पति पाने के लिये तपस्या करेंगी २५। २८ और जो आप हमको छोड़ दीजियेगा तो हम दोनों आजही अपने प्राणोंको छोड़देंगी २९ यह सुनकर राजा पांडु बोले कि जो तुम्हारा भी चित्त तप करने में है तो बहुत अच्छा है अब मैं अपने पिता की चालपर चलूंगा ३० अर्थात् गांव के सुखों को छोड़कर तप करना वन में रहना पेड़ों की छालके वस्त्र पहरना कन्द मूल फल खाना दोनों समय अग्निहोत्र करना आचमन करना दुर्बल होना थोड़ा खाना जटा रखना फटे पुराने और चमड़े के कपड़े पहरना ३१। ३२ जाड़ा गरमी और हवाको सहना भूख प्यास को न देखना कठिन तप करके देहको सुखा देना ३३ एकान्त में रहना हिंसा न करना कच्चे पक्के जैसे वनके फल मिलजायँ वैसेही खालेना वाणी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

और जलसे देवता और पितरों को तृप्त करना ३४ गांवके मनुष्य तो कौन गिनती में हैं कुलके भाई बांधवों को भी न देखना ३५ वानप्रस्थ के इन सब धर्मों को मैं देहान्त होने तक करूंगा ३६ वैशंपायनजी बोले हे राजा जनमेजय! राजा पांडुने यह कहकर शिरपेच बाजू कुंडल कंठी बड़े मोलके कपड़े और स्त्रियोंके गहने उतारकर ब्राह्मणों को देदिये और उनसे कहा कि तुम सब लोग हस्तिनापुर जाकर कहदो कि राजा पांडु सब संसारसंबंधी सुखों को छोड़कर दोनों स्त्रियों सहित वनको चला गया ३७। ३९ यह सुनकर वह सब नौकर लोग हाय २ कर रोने लगे और बड़े दुःख से विलाप करते हुये सब धन लिये हुये हस्तिनापुर पहुँचे ४०। ४१ और राजा धृतराष्ट्र को सब धन देकर राजा पांडु के वनको चले जाने का सब हाल कह सुनाया ४२ उस हालको सुनकर राजा धृतराष्ट्र भाई का बड़ा शोच करने लगे और उस शोच में खाट पर सोना और आसन पर बैठना आदि भोगों को छोड़ दिया ४३। ४४ और राजा पांडु उस वनसे अपनी दोनों स्त्रियोंसहित नागशतनाम पहाड़ को चलागया ४५ वहां से चैत्ररथ वन कालकूट और हिमाचल पर्वतों पर सोता हुआ गन्धमादननाम पहाड़ पर पहुँचा ४६ और वहां से सिद्धपुरुष और बड़े २ ऋषियों से रक्षा पाता हुआ इन्द्रद्युम्न तालाब और हंसकूट नाम पर्वतपर होता हुआ शतशृङ्ग नाम पर्वत पर पहुँचा और वहां तप करने लगा ४७। ४८॥

इति श्रीभाषामहाभारते आदिपर्वण्येकोनविंशत्यधिकशततमोऽध्यायः ११९॥

एकसौबीस का अध्याय।

राजा पाण्डुका ऋषियों से सन्तान होनेका उपाय पूछना और ऋषियों के उत्तर देनेपर राजा का कुंती से किसी अच्छे ब्राह्मण से सन्तान उत्पन्न करने को कहना॥

वैशंपायनजी बोले हे राजा जनमेजय! राजा पाण्डु वहां तप करते २ सब ऋषियों का प्रियदर्शन होगया और हरएक ऋषि की सेवा में चित्त लगाकर जितेन्द्रिय अहंकाररहित और स्वर्ग जानेकी इच्छासे तप करनेवाला होकर रहने लगा कोई ऋषि उसको भाईके समान कोई मित्रके समान और कोई पुत्रके समान समझता था १। ३ और वह तप करते २ किल्बिषरहित होकर ब्रह्मऋषि के समान होगया ४ एक समय वहां के सब तेजस्वी ऋषि अमावास्या के दिन ब्रह्माजी के दर्शनों को चलने लगे उनको जाते हुये देखकर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

राजा ने पूछा कि आज आप लोग सब मिलकर कहांको जाते हैं ५। ६ ऋषि लोग बोले कि आज स्वर्गलोक में देवऋषि और पितरों का मेला है सो हम लोग उस मेले में ब्रह्माजी के दर्शनों को जाते हैं ७ यह सुनकर राजा पाण्डु उन मुनियों के साथ अपारस्वर्ग को जानेकी इच्छासे ऊपर को मुँह करके दोनों स्त्रियोंसहित उठ बैठा उसको वहां जाने को उद्यत देखकर ऋषियों ने कहा कि ८ हे पांडु! स्वर्ग की राह तेरे जाने के योग्य नहीं है इन स्त्रियोंको बड़ा कष्ट होगा क्योंकि हमने उत्तर की ओर हिमालय पर्वत पर जाने के समय बहुत से कठिन २ देश देखे थे और राह में देवता गन्धर्व और अप्सराओं के रहने की भूमि पड़ती है जहां सैकड़ों विमान फिरा करते हैं और अनेक २ प्रकारके स्वरों से गाना हुआ करता है इनके सिवाय कुबेरके बगीचे बड़ी २ नदियों के किनारे और पहाड़ों की बड़ी २ कन्दरा जिनमें बरफके कारण से वृक्ष मृग और पक्षी आदि कुछ नहीं हैं वे राहमें पड़तेहैं उनमें पक्षी तो जाही नहीं सक्ते मृग और पशुओं की गति क्योंकर होसक्ती है वहां तो केवल वायु सिद्ध पुरुष और महर्षिलोग जासक्ते हैं दूसरे की सामर्थ्य नहीं है ९। १४ यह सुनकर पांडु बोले कि जिन मनुष्यों के सन्तान नहीं होती है उनको स्वर्ग नहीं मिलता है इस कारण से हम अपने को सन्तानहीन देखकर नित्य दुःखी रहते हैं और पितृऋण से मुक्त न होने के कारण यह सन्देह बना रहता है कि इस देहनाश होनेपर पितरोंका भी नाश होजायगा १५। १६ संसारमें मनुष्य पर चार ऋण रहते हैं देवऋण १ पितृऋण २ ऋषिऋण ३ और मनुष्य-ऋण ४ इन चारों ऋणों को मनुष्यको देना उचित है विना इन चारों ऋणों के दिये मनुष्य को स्वर्ग नहीं मिलता है १७। १८ यज्ञ करने से देवऋण वेद पढ़ने से ऋषिऋण पुत्रश्राद्ध से पितृऋण और अहिंसा से मनुष्यऋण इस प्रकार चारों ऋणों से मनुष्य मुक्त होते हैं सो मैं देवऋण ऋषिऋण और मनुष्य-ऋण से तो मुक्त होचुका हूं परन्तु पितृऋण अभी रहगया है इस ऋणसे भी मुक्त होने का कोई उपाय आप ऐसा बतावें जैसे मैं अपने पिताकी स्त्री के व्यासजी से उत्पन्न हुआ हूं १९। २२ यह सुनकर ऋषिलोग बोले कि हम अपनी दिव्य दृष्टि से जानते हैं कि तुम्हारे देवताओं के समान पुत्र उत्पन्न होंगे हमने यह दैवनिर्मित कर्म का फल कहा है इस फलके मिलने के लिये तुम यत्न करो २३। २५ वैशंपायनजी बोले हे राजा जनमेजय! राजा पाण्डु उन

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ऋषियों की बात को सुनकर अपने को शापके कारण से सन्तान उत्पन्न करने में असमर्थ देखकर चिन्ता करने लगा और कुन्ती को एकान्त में बुलाकर बोला कि तू सन्तान उत्पन्न करने का यत्न कर २६। २७ क्योंकि संसार में सन्तानही धर्ममयी कही गई है यज्ञ जप तप और ज्ञान विना सन्तान के पवित्र नहीं होते हैं इस बात को समझकर मैं जानता हूं कि मुझे मरने पर अच्छे लोक नहीं मिलेंगे मुझको तू नष्टही हुआ समझ क्योंकि मुनि के शाप से मैं आप सन्तान उत्पन्न करने के योग्य नहीं रहाहूं २८। ३१ धर्मशास्त्रमें ६ पुत्र बंधुदायाद और ६ अबन्धुदायाद लिखे हैं उनको सुनो ३२ बन्धुदायाद पुत्र ये हैं स्वयंजात १ जो ब्याहता स्त्री के पति से उत्पन्नहो प्रणीत २ जो ब्याहता स्त्रीके किसी महात्मा की कृपा से उत्पन्नहो परिक्रीत ३ जो ब्याहता स्त्री के वीर्य मोल लेकर उत्पन्नहो पौनर्भव ४ जो ऐसी ब्याहता स्त्रीके जिसका ब्याह पहले किसी और से हुआहो पहले पतिसे उत्पन्न हुआहो कानीन ५ जो ब्याह होने के पहले कन्यापन में हुआहो कुण्ड ६ जो ब्याहता स्त्री के व्यभिचार से उत्पन्न हुआहो ३३ और अबन्धुदायाद पुत्र ये हैं दत्त १ जो मा बापने देदियाहो क्रीत २ जो धन देकर मोल लियाहो कृत्रिम ३ जो आप आजाय और यह कहे कि मैं तुम्हारा पुत्रहूं सहोढ़ ४ जो उस स्त्री से उत्पन्नहो जो ब्याहने के समय गर्भवती हो ज्ञातिरेता ५ जो उत्तम भाई बांधवों से अपनी स्त्रीके उत्पन्न कराया जाय हीनयोनिधृत ६ जो हीन जाति की स्त्री से उत्पन्न हो ३४ आपत्तिकालमें मनुष्य देवर से भी पुत्र चाहा करते हैं देखो स्वायम्भुव मनु ने आप यह कहा है कि श्रेष्ठ मनुष्यों से उत्पन्न हुआ जो पुत्र है वह अपने वीर्य से उत्पन्न हुये पुत्रसे अधिक धर्म फलका देनेवाला है ३५। ३६ सो हे कुन्ती! मैं पुत्रके उत्पन्न करने में अपने को असमर्थ देखकर तुझको आज्ञा देताहूं कि तू किसी सदृश अथवा श्रेष्ठ मनुष्य से संतान उत्पन्न कर देखो तुमने शारदं-डायनी की कथा सुनी होगी कि वह अपने पतिकी आज्ञा से रजस्वला धर्म से निवृत्त होने पर चौराहे पर स्नान और अग्निहोत्र करके एक ब्राह्मण को वरकर उसके पास रही और उससे उसके दुर्जयआदि तीन महारथी पुत्र उत्पन्न हुये इसलिये तू भी मेरी आज्ञा को मान और किसी तपस्वी ब्राह्मणके पास रहकर सन्तान उत्पन्न कर ३७। ४०॥

इति श्रीभाषामहाभारते आदिपर्वणि विंशत्यधिकशततमोऽध्यायः १२०॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

एकसौइक्कीसका अध्याय।

कुन्तीका अपने पतिव्रतधर्म को छोड़नेसे निषेध करना और राजा व्युषिताश्वके पुत्र होनेकी कथाका कहना कि आप अपने योगबलसे मेरे मानसिक पुत्र उत्पन्न कीजिये ॥

वैशंपायनजी बोले हे राजा जनमेजय! कुंती राजा पांडुकी उक्त बातें सुनकर बोली कि महाराज आपको मुझ पतिव्रता से ऐसी बात कहना उचित नहीं है मेरे तो आपके सिवाय दूसरा मनुष्य नहीं है मैं दूसरे मनुष्यके पास मनसे भी न जाऊंगी मैं तो आपके साथही स्वर्गको भी जाऊंगी आपही मेरे साथ धर्मरूपी संतान उत्पन्न करनेके लिये संगम करें १। ५ देखो मुझे इस विषयमें एक कथा पुराणों की यादहै आप उसको सुनिये ६ पहिले समयों में पुरुके वंशमें व्युषिताश्व नाम एक राजाथा उसने सोमयज्ञ और अग्निष्टोम आदि अनेक यज्ञों को करके सब देवता और ऋषियों को प्रसन्न किया और ब्राह्मणों को बड़ी २ दक्षिणा दी कि उसकी कीर्त्ति पौराणिक लोग अबतक गातेहैं उस राजाको अश्वमेध यज्ञ करने पर दश हाथियों का बल मिला और परम तेजस्वी होगया उसने अपने बलसे समुद्र तक पृथ्वी को जीतकर चारों दिशाओं के राजाओंको बांधकर अपने वश में करलिया ७। १५ उसका विवाह राजा काक्षीवान् की परमसुन्दरी भद्रानाम कन्या से हुआ और वह उसके साथ कामकलोल करने लगा कुछ दिनों में अत्यंत कामासक्त होने से उस राजा के राजयक्ष्मा का रोग होगया और वह उसी रोगमें मरगया उसके मरने से उसकी स्त्री को महा दुःख होगया १६।१८ और वह उस राजाके शिरको गोदमें रखकर विलाप कर २ के कहनेलगी कि हे पति! इस संसारमें विना पतिके स्त्रीका जीना व्यर्थहै पतिरहित स्त्रीका मरना ही अच्छा है इससे आप मुझको अपने साथ लेचलो मैं आपके विना क्षण भरभी जीना नहीं चाहती मुझपर प्रसन्नहो और अपने साथ लेचलो मैं आपके पीछे २ छायाकी तरह जहां २ आप जायँगे चली चलूंगी और आपके हितमें रत रहूंगी मैंने चकवा चकवी का वियोग कियाथा निस्संदेह उसी पाप से मेरा आपका वियोग हुआ है जो स्त्री विना पतिके क्षणभर भी जीती है उसका जीना नरकमें गिरने के समानहै मैंने पूर्व जन्ममें जो पाप कियेहैं वही आज मेरे सामने आयेहैं आज से मैं आपके वियोग में सब सुखों को छोड़कर कुशके बिछौना पर सोकर आपके दर्शनों की बाट देखा करूंगी हे महाराज मुझ दुःखी और विलाप करती पर कृपा करो और मुझे शिक्षा दो १९। ३०

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इस प्रकार से विलाप करने पर गुप्त वाणी हुई कि तू उठ मैं तेरे इस संसार में पुत्र उत्पन्न करूंगा और जब तू ऋतुस्नान करचुकेगी तब मैं तेरी सेजपर अष्टमी और चौदस को आऊंगा ३१। ३२ यह सुनकर वह पतिव्रता भद्रा उठ बैठी और उसने वैसाही किया कि उसके उस मुर्दे से शाल्वनाम तीन और भद्रनाम चार पुत्र उत्पन्न हुये हे राजन्! इसी प्रकार से आपभी अपने योगबल से मेरे मानसिक पुत्र उत्पन्न कीजिये ३४। ३६॥

इति श्रीभाषामहाभारते आदिपर्वण्येकविंशत्यधिकशततमोऽध्यायः १२१॥

एकसौबाईसका अध्याय।

राजा पांडुका कुन्तीको प्राचीन धर्म कहकर किसी अच्छे ब्राह्मण से पुत्र उत्पन्न करने के लिये तैयार करना और कुन्तीका राजासे देवआकर्षण मन्त्र मिलने का हाल कहकर पूछना कि किस देवताको बुलाकर सन्तान उत्पन्न करूं॥

वैशम्पायनजी बोले हे राजा जनमेजय! राजा पांडु कुन्तीका कहाहुआ धर्म-युक्त इतिहास सुनकर यह बोला कि तैंने कहा सो सब सच है पहिले समय में व्युषिताश्व ने ऐसाही किया था परन्तु वह राजा देवताओं के तुल्य था १। २ अब मैं तुझसे महात्मा ऋषियों का कहाहुआ धर्मतत्त्व कहता हूं तू उसको सुन पहिले स्त्रियोंके लिये कोई मर्यादा न थी स्वेच्छाचारिणी रहतीथीं जहां चाहें तहां व्यभिचार करतीथीं उनको उस व्यभिचारका दोष नहीं लगताथा पुराना धर्म ऐसाहीथा अब वह धर्म नहीं रहाहै हां पशु पक्षियोंमें तो वही धर्म चला जाता है और उत्तर कुरुखण्डमें भी अबतक बना है वहांके महर्षिलोग अद्यापि उसी धर्मको करतेहैं परन्तु थोड़े काल से वह मर्यादा इस देश से उठगई है कारण उसका यहहै कि उद्दालक नाम एक महर्षि था और उसके श्वेतकेतु नाम एक बेटाथा ३। ९ एक दिन ऐसा हुआ कि उस श्वेतकेतुकी माताको एक ब्राह्मण हाथ पकड़कर विषय करनेको बलसे लेचला यह देखकर श्वेतकेतु को बड़ा क्रोध हुआ उसको क्रोधित देखकर उसके पिताने कहा कि हे पुत्र! तू क्रोध मत करे यह सनातन धर्म है पृथ्वीपर चारों वर्णों की स्त्रियां स्वेच्छाचारिणी हैं और गौओं की तरह अपने २ वर्ण में रमती हैं १०। १४ श्वेतकेतु ने इस पुराने धर्म को अच्छा नहीं जाना और यह मर्यादा बांध दी कि आजसे जो स्त्री व्यभिचार करेगी उसको गर्भहत्या के समान पाप होगा और जो पुरुष पति-व्रता स्त्री के साथ भोग करेगा और जो स्त्री पति से आज्ञा दीहुई सन्तान

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उत्पन्न करने के लिये और पुरुष के पास न जायगी उन दोनों को भी यही पाप होगा तब से मनुष्यों में यह मर्यादा होगई है परन्तु और जीवों में अभी वही धर्म चलाजाता है १५। २० इसके सिवाय हमने यह भी सुना है कि राजा सौदास की स्त्रीने अपने पतिकी आज्ञासे पुत्र उत्पन्न होने के निमित्त वशिष्ठजी के साथ संगम किया और उसके ऋषिके संयोग से अश्मनाम पुत्र उत्पन्न हुआ २१। २२ और तुझको यह भी मालूम है कि कुरुवंश की वृद्धि करने के लिये हमारा भी जन्म व्यासजी से हुआ है इससे हे प्रिये! तुझे भी मेरी धर्मयुक्त बात मानना उचित है २३। २४ ऋतुकाल आनेपर पतिको स्त्री के साथ संगम करना अवश्य उचित है और अन्य समय में स्त्रीकी इच्छा है संगम करे अथवा न करे यह पंडितों का कहाहुआ पुराना धर्म है २५। २६ और पतिव्रता स्त्री को चाहिये कि जो कुछ पति कहे उसको अवश्य करे उचित और अनुचित का उसमें विचार न करे २७ मैं आप पुत्र उत्पन्न करने की सामर्थ्य से हीन पुत्र के होने और देखने की इच्छा रखने के कारण से अपनी लाल अंगुलियों से कमल के समान अञ्जली बनाकर हाथ जोड़कर तुझसे विनय करताहूं कि तू मेरी आज्ञा से किसी तपस्वी ब्राह्मण के द्वारा सन्तान उत्पन्न कर तेरे कारण से मुझको पुत्र रखनेवालों कीसी गति मिलेगी २८। ३० वैशम्पायनजी बोले हे जनमेजय! कुन्ती राजा पांडुकी उक्त विनययुक्त वाणी को सुनकर बोली कि महाराज जब मैं बापके घर में कन्या थी उस समय मैं अपने बापकी आज्ञा से अतिथियों की सेवा किया करती थी एक समय वहां बड़े भयानक और प्रशंसा के योग्य व्रत के करनेवाले दुर्वासाऋषि आये मैंने उनको अच्छीतरह से टहल करके प्रसन्न किया उन्होंने मुझे प्रसन्न होकर देवताओं को बुलाने की आकर्षणशक्ति देनेका वरदान दिया और मुझको एक मन्त्र बताया और कहा कि इस मन्त्रसे तू जिस देवता को बुलावेगी वह आकर तेरे वशमें होजायगा चाहे उससे तेरा कुछ काम हो या न हो और उस देवता से तेरे पुत्र भी उत्पन्न होगा ३१। ३५ सो अब वह समय आया है ब्राह्मण का वचन किसी प्रकार से मिथ्या नहीं होसक्ता है अब आप पुत्र के उत्पन्न करने के निमित्त जिस देवता के बुलाने की मुझे आज्ञा देवें उसको मैं बुलालूं मुझे केवल आपकी आज्ञा चाहिये ३६। ३८ यह सुनकर राजा पांडु बोले कि तू आजही जैसे बने देवता को बुलाने का यत्न कर हमारी समझ में

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तो तू धर्मराज को बुला उससे उत्पन्न हुआ पुत्र भी धर्मात्मा होगा क्योंकि धर्मराज सब लोकों में पुण्यवान् हैं और उनके अंश से उत्पन्न पुत्र भी कभी अधर्म नहीं करेगा ३९। ४२ वैशम्पायनजी बोले हे राजा जनमेजय! कुन्ती ने राजा से तथास्तु कहकर नमस्कार की और अपने पतिकी आज्ञा का पालन किया ४३॥

इति श्रीभाषामहाभारते आदिपर्वणि द्वाविंशत्यधिकशततमोऽध्यायः १२२॥

एकसौतेईसका अध्याय।

युधिष्ठिर भीमसेन और अर्जुन का कुन्ती के देवताओं से उत्पन्न होना और उनके जन्मोत्सव देखने को सब देवता आदिकों का आना॥

वैशम्पायनजी बोले हे राजा जनमेजय! कुन्तीने पतिकी आज्ञा पाकर धर्मराज के लिये भेंट और पूजा की सामग्री तय्यार करके दुर्वासा के दिये हुये मन्त्र को विधिपूर्वक जपा और धर्मराज का आवाहन किया उस मन्त्र के प्रभाव से धर्मराज विमानपर बैठे हुये वहां तुरन्त आन पहुँचे उनके आने के समय तक गांधारी को गर्भ धारण किये हुये एक वर्ष होचुका था १। ३ धर्मराज ने कुंती के पास आकर हँसके कहा कि तू क्या चाहती है कुंतीने हँसकर उत्तर दिया कि पुत्र ४ तब धर्मराज ने कुंती के साथ संगम किया और उसके प्रभाव से उसके शुक्लपक्ष पञ्चमीतिथि ज्येष्ठा नक्षत्र तुला लग्न अभिजित् मुहूर्त्त मध्याह्न के समय में पुत्र उत्पन्न हुआ ५। ६ उसके उत्पन्न होते ही यह आकाशवाणी हुई कि यह पुत्र धर्मात्माओं में श्रेष्ठ मनुष्यों में उत्तम बड़ा पराक्रमी और सत्यवादी राजा होगा पांडु का यह ज्येष्ठ पुत्र है यह तीनों लोक में युधिष्ठिर नाम से विख्यात होगा ७। ९ राजा पांडु उस तेजस्वी और धर्मात्मा पुत्रको पाकर कुंती से बोला कि क्षत्रियबल से बड़ा होने से कहा जाता है इससे दूसरे बलवान् पुत्रको उत्पन्न कर यह सुनकर कुंतीने उसी मन्त्रसे वायुको बुलाया १०।११ मंत्र के प्रभावसे वायु देवता मृगपर चढ़ेहुये आये और हँसकर कुन्तीसे बोले कि तू क्या चाहती है कुंतीने लज्जासहित कहा आप कृपाकरके मुझे एक पुत्र ऐसा दीजिये जो बड़ा बलवान् बड़े शरीरवाला और सबके घमंडको तोड़नेवालाहो १२। १३ यह सुनकर वायु ने कुंती के साथ भोग किया और उसके प्रभाव से उसके अत्यन्त पराक्रमी भीमसेन उत्पन्न हुआ १४ उसके उत्पन्न होतेही यह आकाशवाणी हुई कि यह सब बलवानों में श्रेष्ठ है और एक और आश्चर्य हुआ कि कुंती

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अपनी गोदमें भीमसेन को लिये हुये बैठी हुई थी बैठे २ भीमसेन सोगया उस समय कुंती व्याघ्रके डरसे अकस्मात् उठकर भागी और भीमसेन उसकी गोदी से गिरपड़ा उसके गिरतेही उस पहाड़ के पत्थर जहांपर वह गिरा था टुकड़े २ होगये इस बात को देखकर राजा पांडुने बड़ा आश्चर्य किया १५। १८ जिस दिन भीमसेन राजा पांडु के उत्पन्न हुआ था उसी दिन राजा धृतराष्ट्र के दुर्योधन उत्पन्न हुआ भीमसेन के उत्पन्न होने पर राजा पांडु यह विचार करने लगा कि मेरे एक पुत्र देवताओं के समान पराक्रमी और होवे तो अच्छा है मैंने सुना है कि इन्द्र सब देवताओं का राजा है और अतुल पराक्रमी है जो मैं उसका आराधन करूं तो निस्सन्देह उसकी कृपासे मेरे बड़ा शूरवीर और युद्ध में अमानुष कर्म करनेवाला पुत्र होगा ऐसा विचारकर राजाने ऋषियों के सम्मत से कुन्ती को एकवर्ष तक व्रत करने को आज्ञा दी और आप एक पाँव से सूर्य के उदय से सूर्य के अस्त होनेतक खड़ा रहकर इन्द्रकी तपस्या करनेलगा बहुत दिनों में इन्द्र प्रसन्न हुआ और राजासे आकर बोला १९। २६ कि हे राजन्! मैं तुझको ऐसा पुत्र दूंगा जो तीनों लोक में प्रसिद्ध होगा गऊ और ब्राह्मणों की रक्षापूर्वक शत्रुओं को नाश करके सब भाइयों को प्रसन्न करेगा २७। २८ यह सुनकर राजा पांडु ने कुन्तीसे कहा कि ले अब इन्द्र तुझपर प्रसन्न है और तुझको तेरे मनका सा पुत्र देने कहता है उसने कहा है कि तेरे महापराक्रमी सूर्यके समान तेजस्वी शत्रुओं का जीतने वाला यशस्वी सब गुणोंसे पूर्ण पुत्र उत्पन्न होगा सो तू अब इन्द्रको बुला और उससे पुत्र उत्पन्नकर २९। ३२ वैशम्पायनजी बोले हे राजा जनमेजय! कुन्ती ने राजा की बातको सुनकर इन्द्रका मन्त्र से आवाहन किया इन्द्र उस मन्त्रके प्रभाव से तुरन्त वहां चलेआये और कुन्तीके साथ संगम किया उससे कुन्तीके अर्जुन उत्पन्न हुआ उसके होतेही आकाशवाणी हुई ३३। ३४ कि हे कुन्ती! तेरा यह पुत्र कार्तवीर्य के समान अजेय शिवके तुल्य पराक्रमी और बड़ा यशस्वी होगा ३५। ३६ तुझसे इसकी प्रीति ऐसी होगी जैसे विष्णु और अदिति की हुई थी ३७ और यह मद्र, कुरु, सोम, चन्देरी और काशी आदि देशों के राजाओं को जीतकर अपने वशमें करेगा और इसकी बाहुबल से अग्निदेवता खाण्डववन को जलाकर प्रसन्न होंगे यह भाइयों सहित सब राजाओं को जीतकर तीन अश्वमेध यज्ञ करेगा ३८। ४० इसके सिवाय यह

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लड़का परशुराम और विष्णुके समान पराक्रमी होकर महादेवजी को युद्ध में प्रसन्न करेगा और उनसे पाशुपत अस्त्र लेगा ४१। ४२ और इन्द्रकी आज्ञासे निवातकवच नाम दैत्योंको मारकर स्वर्गसे सब अस्त्रविद्या लावेगा और ब्राह्मण की नष्ट हुई लक्ष्मीको फिर देगा ४३। ४४ यह आकाशवाणी सुनकर कुन्ती और उस पर्वत के सब तपस्वी ऋषियों को बड़ा हर्ष हुआ और इन्द्रादिक देवताओं ने आकाश से फूलोंकी वर्षा की और आकाश में नगारों का शब्द होने लगा ४५। ४७ उस समय वहां सब देवता, नाग, गरुड़, गन्धर्व, अप्सरा, प्रजापति और सप्तऋषि आये और सबों ने अर्जुन की पूजा की ४८ और भरद्वाज, कश्यप, गौतम, विश्वामित्र, जमदग्नि, वशिष्ठ, अत्रि, मरीचि, अंगिरा, पुलस्त्य, पुलह, क्रतु, दक्ष, प्रजापति आदि ऋषिलोग अर्जुन का जन्मोत्सव देखने को आये अप्सरा अच्छे अच्छे वस्त्र और भूषण पहिन २ कर अर्जुनके गुणोंको गाने लगीं और महर्षि लोग जय बोलने लगे ४९। ५२ हे राजा जनमेजय! अर्जुनके जन्मोत्सव में जो २ गंधर्व और अप्सरा नाचने और गाने आयेथे उनकेनाम ये हैं। गंधर्वोंकेनाम॥ भीमसेन, उग्रसेन, ऊर्णायु, अनघ, गोपति, धृतराष्ट्र, सूर्यवर्चा, युगप, तृणयकार्ष्णि, नन्दि, चित्ररथ, शालिशिरा, पर्जन्य ५३। ५४ कलि, नारद, बृहक, कराल, महामन ५५ सुवर्ण, विश्वावसु, सुमन्यु, सुचन्द्र, शर, हाहा, हूहू॥ अप्सराओं के नाम॥ अनूचान, अनवद्या, गुणमुख्या, गुणावरा, अद्रिका, सोमा, मिश्रकेशी, अलंबुषा, मरीचि, शुचिका, विद्युत्पर्णा, तिलोत्तमा, अम्बिका, लक्षणा, क्षेमा देवी, रम्भा, मनोरमा, असिता, सुबाहु, सुप्रिया, वपु, पुण्डरीका, सुगन्धा, सुरसा, प्रमाथिनी, काम्या, शारद्वती, नेनका, सहजन्या, कणिका, पुञ्जकस्थला, ऋतुस्थला, घृताची, विश्वाची, पूर्वचित्ती, अम्लोचा, उर्वशी और धाता, अर्यमा, मित्र, वरुण, अंशभग, इन्द्र, विवस्वान, पूषा, त्वष्टा, सविता, पर्जन्य और विष्णु आदि बारहों सूर्यों ने आकाश में ठहरकर पांडवों के यशको बढ़ाया ५६। ६५ उस आनन्द के समय में मृग, व्याध, सर्प, निर्ऋति, अजैकपात, अहिर्बुध्न्य, पिनाकी, दहन, ईश्वर, कथली, स्थाणु और भग आदि एकादश रुद्र दोनों अश्विनीकुमार, अष्टवसु, वायु, विश्वेदेवा और साध्यभी आकर स्थित होगये ६६। ६८ और कर्कोटक, वासुकि, भुजङ्गम, कच्छप, कुण्ड, तक्षक आदि बड़े बड़े तपस्वी और विषधर सर्प और तार्क्ष्य,

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अरिष्टनेमि, गरुड़, असितध्वज, अरुणि और आरुणि आदि विनता के पुत्र भी वहां आकर बैठगये ६९। ७१ हे राजा जनमेजय! यह सब देवता आदि महर्षि और सिद्धलोगों को दिखाई दिये मनुष्यों में से उनको किसीने नहीं देखा ऋषि लोग यह देखकर बड़ा आश्चर्य करके पांडवोंपर विशेष प्रीति करने लगे ७२। ७३ इसके पीछे राजा पांडु और पुत्रकी चाहना करके कुन्ती से बोला कि एक पुत्र और उत्पन्न कर कुन्ती ने कहा कि आप तो सब धर्मों को अच्छी तरह जानते हैं संसार में तीन पुत्र होना तो आपद्धर्म में गिना जाता है चौथे पुत्र के होने से स्वैरिणी और पांचवें से व्यभिचारिणी स्त्री गिनी जाती है आप मुझसे और पुत्र उत्पन्न करने के लिये क्योंकर कहते हैं ७४। ७६॥

इति श्रीभाषामहाभारते आदिपर्वणि त्रयोविंशत्यधिकशततमोऽध्यायः १२३॥

एकसौचौबीस का अध्याय।

माद्रीनाम पाण्डुकी स्त्री के अश्विनीकुमारों से दो पुत्र उत्पन्न होना और पांचों पाण्डवों के नामकरण होनेका वृत्तान्त॥

वैशम्पायनजी बोले हे राजा जनमेजय! कुन्तीके पुत्र और धृतराष्ट्र के लड़कों के उत्पन्न होने के उपरान्त राजा पांडुकी माद्रीनाम स्त्रीने राजा पांडुसे एकदिन एकांत में कहा कि आपको मेरे दुःखकी कुछ भी खबर नहीं है मुझको छोटी होने के कारण से कुंती के आधीन रहने और धृतराष्ट्र के सौपुत्र होने का कुछ दुःख नहीं है परन्तु यह दुःख मारेडालता है कि मेरे कोई पुत्र नहीं है यद्यपि मेरे भाग्यसे अब आपके तो संतान कुन्ती के पुत्र होने से होगई परन्तु तो भी मैं यह चाहती हूं कि कुन्ती मेरे भी मंत्र द्वारा पुत्र उत्पन्न करदे तो कुन्ती का मेरे ऊपर बड़ा अनुग्रह होगा मैं उससे सवतिपने के अभिमान से नहीं कहसक्ती हूं जो आप कृपाकरके उसे प्रेरणा करें तो मेरा बड़ा प्रिय होगा १।६ यह सुनकर पांडुने कहा कि हमारे हृदय में दिन रात यही विचार रहता था परन्तु तुझसे इस कारण से नहीं कहा था कि तू माने या न माने अब हमको तेरे हृदय की बात मालूम होगई हम यत्न करते हैं कुंती हमारी बात को अवश्य मानलेगी ७।८ वैशम्पायनजी बोले हे राजा जनमेजय! इसके पीछे एक दिन राजा पांडु ने कुन्ती से अकेले में बुलाकर कहा कि मैं कुलकी वृद्धिके लिये एक बात कहता हूं उसके करने से मेरा बड़ा प्रिय और तेरी संसार में बड़ी कीर्त्ति होगी देखो कीर्त्तिके लिये इन्द्रने अधिपति होने पर भी बड़े २ यज्ञ किये और कीर्त्तिही

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

के लिये ब्राह्मण लोग तप और महर्षिलोग ऊंचे नीचे काम करते हैं इस कारण से तू दुःखरूपी समुद्र में डूबीहुई माद्रीको संतानरूपी नाव में चढ़ाकर पार उतारदे और इस संसार में बड़ा यश लेले ९। ११ यह सुनकर कुन्ती प्रसन्न हुई और माद्री को निकट बुलाकर मंत्र बताकर बोली कि इस मंत्र से जिस देवता को ध्यान करके बुलावेगी वही आकर तेरे पुत्र उत्पन्न करेगा माद्रीने यह सुनकर दो पुत्र होने की इच्छा से मंत्र द्वारा दोनों अश्विनीकुमारों को बुलाया वे दोनों मंत्र के प्रभाव से चले आये और माद्री से संगम करके चले गये उसके प्रभाव से माद्री के दो पुत्र बड़ा नकुल और छोटा सहदेव उत्पन्न हुये उनके उत्पन्न होने पर आकाश-वाणी हुई कि ये दोनों पुत्र बड़े स्वरूपवान् भाग्यशाली तेजस्वी और गुणसम्पन्न होंगे १२। १८ इसके पीछे उस पर्वतपर रहनेवाले ऋषियों ने उन पांचों लड़कों को आशीर्वाद देकर बड़े का नाम युधिष्ठिर उससे छोटे का नाम भीमसेन तीसरे का नाम अर्जुन चौथे का नाम नकुल और पांचवें का नाम सहदेव रक्खा १९। २१ वे पांचों लड़के जब एक २ वर्ष के हुये तब पांच २ वर्ष के से मालूम होनेलगे २२ पांडु उन पराक्रमी धीर बड़े वीर और देवमूर्ति पुत्रों को देख २ कर अत्यन्त आनन्द में रहने लगा और उस जगह के रहनेवाले ऋषि और ऋषियों की स्त्रियां उनपर बड़ा प्यार करने लगीं २३। २५ इसके पीछे राजा पांडुने कुन्ती से एकान्त में माद्री के और पुत्र उत्पन्न करने के लिये कहा कुन्ती ने उत्तर दिया कि मैंने एक पुत्र होने के लिये मंत्र दिया था सो उसने अपनी ठगई से युग्म देवों को बुलाकर दो पुत्र उत्पन्न किये मैं ऐसा नहीं समझी थी कि इनका नाम द्विवचन होने से पुत्र भी दोही होंगे इससे अब आप मुझसे उसके लिये कुछ न कहिये २६। २७ पांडु यह सुन कर चुप होरहा और वह सिंहदर्प, सिंहग्रीव, सिंहगामी और महापराक्रमी पांचों पांडुके पुत्र देवताओं के समान थोड़े काल में उसी पर्वत पर बड़े हुये और बड़े वीर धनुर्द्धर और महारथी हुये २८। ३० उनको देख २ कर सब ऋषिलोग आश्चर्य करते थे और वे पांचों और धृतराष्ट्र के सौ पुत्र कुरुवंश के बढ़ानेवाले थोड़ेही दिनों में ऐसे बड़े होगये जैसे जल में कमल जल्दी से बढ़जाता है ३१॥

इति श्रीभाषामहाभारते आदिपर्वणि चतुर्विंशत्यधिकशततमोऽध्यायः १२४॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

एकसौपच्चीस का अध्याय।

राजा पांडुका काम के वश में होकर माद्री के साथ विषय करके मरजाना और माद्रीका राजा के साथ सती होने की कथा ॥

वैशंपायनजी बोले हे राजा जनमेजय! राजा पांडु अपने दर्शनीय पुत्रों को देख २ कर प्रसन्नतापूर्वक उस पहाड़ के वनमें रहनेलगा एक समय चैत्र वैशाख के दिनों में वसंतऋतु के आने पर जब वह वन ढाक तिलक आंव चम्पा आदि अनेक वनके वृक्षों के फूलने और जहां तहां कमलयुक्त जल के तालाब आदि अनेक स्थानों के होने के कारण से अत्यन्त शोभायमान हो रहा था तब वह राजा अपनी माद्रीनाम रानी सहित इधर उधर घूमने लगा वसंतऋतुकी हवा लगते ही राजा को कामदेव ने आ सताया और उसकी देह में अग्नि के समान ऐसा प्रवृत्त होगया कि राजा उसके वेगको न रोक सका राजा की बुद्धि उस समय नष्ट होगई और कालकी प्रेरणा से ज्ञान भी जाता रहा और कामाग्नि में अंधा होकर शापको भूलगया और माद्री को जो उसके साथ में थी एकान्त स्थान पर विषय की इच्छा से पकड़ लिया रानी ने उसे अपनी शक्ति भर रोका परन्तु उसने बलसे उसके साथ मैथुन किया और पंचत्व को प्राप्त होगया १।१२ माद्री ने यह देखकर राजा को हृदय से लगा लिया और बड़े उच्चस्वर से रोदन किया १३ उसके रोने के शब्द को सुनकर कुन्ती पांचों पुत्रों सहित दौड़ी जब पास आई तब माद्री ने उससे बड़े दुःख से कहा कि तूही अकेली आ लड़कों को वहीं छोड़ आ यह सुनकर कुन्ती लड़कों को कुछ दूर पर छोड़कर अकेली वहां रोती हुई गई और राजा और माद्री को पृथ्वी पर सोते हुये देखकर महाविलाप करके कहने लगी कि हे माद्री! मैं राजा से सदैव बची रहती थी आज तू अकेले में इसके पास कैसे आगई जो राजा शापको भूलकर कामके वश में होगया तुझे राजाकी रक्षा करनी उचित थी परन्तु तू मुझसे धन्य है जो तैंने मरते समय राजा का प्रसन्नमुख तो देख लिया १४।२१ यह सुनकर माद्री ने कहा कि मैंने बहुत २ रोंका परन्तु होनहार के वश होकर राजा से अपना चित्त नहीं रोंका गया २२ यह सुनकर कुन्ती बोली कि मैं राजा की बड़ी धर्मपत्नीहूं मुझेही धर्मफल का बड़ा अधिकार है इससे तू उठ बैठ और लड़कों को पाल मैं राजाके साथ प्रेतलोक को जाऊंगी २३।२४ माद्री बोली तुम लड़कों का पालन करो

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

राजा के साथ प्रेतलोक में मैं जाऊंगी क्योंकि राजा मुझसे विषय करके अतृप्त विषय भयाहै इससे मुझको यमलोक में जाकर राजा को तृप्त करना उचित है और इसके सिवाय तेरे लड़कों में मेरा भाव अपने लड़कों के समान न होगा और असमान भाव रखने से पाप लगेगा इससे तुम मुझही को पति के साथ जाने दो २५। २७ मुझको ही अपना शरीर राजाके साथ जलाना उचित है तुम मेरे लड़कों को भी अपनों के समान पालन करना अब जाओ और लड़कों की रक्षा करो मुझे तुमसे और कुछ नहीं कहना है यह कहकर माद्री चिता में आग लगाकर पतिके साथ भस्म होगई २८। ३१ ॥

इति श्रीभाषामहाभारते आदिपर्वणि पंचविंशत्यधिकशततमोऽध्यायः १२५ ॥

एकसौछब्बीस का अध्याय।

ऋषियोंका पांडुके पांचो पुत्र और कुन्तीको लेकर हस्तिनापुर आना और उनको धृतराष्ट्र को निवेदन करके पांडुके मरने और माद्री के सती होनेका वृत्तांत कहकर वहीं अन्तर्द्धान होजाने की कथा ॥

वैशम्पायनजी बोले हे राजा जनमेजय! उस पर्वत के रहनेवाले ऋषि जो मन्त्रशास्त्री और देवताओं के तुल्य थे राजा का मरना देखकर आपस में विचार करने लगे कि इस राजा ने अपना राज्य छोड़कर तपस्या करने के लिये हमलोगों की शरण ली थी अब वह अपने छोटे छोटे पुत्र और स्त्री को छोड़कर मरगया इससे अब हमारा यह धर्म है कि इन लड़कों को माता और राजा की अस्थि सहित इनके देश को पहुँचादें १। ४ वैशम्पायनजी बोले हे राजा! तपस्वी लोग ऐसा विचार करके उन सबको भीष्म और धृतराष्ट्र के पास पहुँचाने के निमित्त कुन्ती को आगे करके राजा पांडु और माद्री के अस्थि लेकर पांचों पांडवों सहित वहांसे चल दिये और थोड़े दिनों में कुरुजांगल देशके पार होकर हस्तिनापुर में पहुँचे यद्यपि वह मार्ग बहुत दूरथा परन्तु कुन्तीने उस बड़े मार्ग को थोड़ा समझा और लड़कों को लाड़से लियेहुये उन तपस्वियों के साथ चली आई ५। ९ वहां पहुँचकर ऋषियों ने द्वारपालकों से कहा कि राजा धृतराष्ट्र से हमलोगों के आनेका हाल कह सुनाओ उन्होंने वैसाही किया और राजा धृतराष्ट्रने उनको सभामें बुलालिया उन सहस्रों मुनियों का आना सुनकर सबलोगों को बड़ा आश्चर्य हुआ और ब्राह्मण क्षत्रिय शूद्र और वैश्यआदि सब पुरवासी अपनी २ स्त्रियों और

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लड़कों सहित भीष्म विदुर सत्यवती कौशल्या गांधारी सोमदत्त बाह्लीक धृतराष्ट्र के सब पुत्र और राजपुरोहित उन ऋषियों को देखने आये और उनको प्रणाम कर २ के सभामें बैठ गये जब उन सबके आने और बैठने का शब्द बन्द होगया तब भीष्मजी ने उन ऋषियों का विधि के अनुसार पाद्य अर्घ्य आदिसे पूजन किया और उनके सन्मुख अंजली जोड़कर बोले कि महाराज यह राज्य और देश आपका ही है आप इनको ग्रहण कीजिये यह सुनकर उन ऋषियों में से एक वृद्ध ऋषिने सब ऋषियों का मत पाकर कहा १०। २१ कि राजा पांडु जो संसार के भोगों को छोड़कर शतशृंग पर्वत पर तपस्या करने को चला गयाथा आज १७ दिन हुये कि मरकर स्वर्गलोक को चला गया और उसकी माद्रीनाम स्त्री पातिव्रत धर्मसे उसके साथ सती होगई उन दोनों के अस्थि मौजूद हैं और यह कुन्ती राजा की दूसरी रानी है और यह पांचों लड़के राजा पांडुके पुत्र हैं इनमें सबसे बड़ा युधिष्ठिर धर्मराजसे उससे छोटा भीमसेन वायुसे और उससे छोटा बड़ा धनुर्द्धारी अर्जुन इन्द्र से कुन्ती के उत्पन्न हुये हैं और इन तीनों से छोटे यह दोनों स्वरूपवान् लड़के नकुल और सहदेव नामी अश्विनीकुमार से माद्री के उत्पन्न हुये हैं इनके उत्पन्न होने से कुरुकुल की वृद्धि हुई और इनका वेदाभ्यास आदि देखकर तुम प्रसन्न होओगे जो कुछ कर्म राजा पांडु और माद्रीका आप करना उचित समझें सो करें प्रेतकर्म के निवृत्त होनेपर राजा को धर्मगति प्राप्त होने के लिये पितृमेध विधान अर्थात् वृषोत्सर्ग करना उचित है २२। ३३ वैशम्पायनजी बोले हे राजा जनमेजय! वह ऋषिलोग यह कहकर गुह्यकों सहित वहीं अन्तर्द्धान होगये और गंधर्वनगर की तरह उनको अदृश्य होते हुये देखकर सबको बड़ा आश्चर्य हुआ ३४। ३५ गंधर्वनगर आकाश में एक उत्पातसूचक चिह्न है॥

इति श्रीभाषामहाभारते आदिपर्वणि षड्विंशत्यधिकशततमोऽध्यायः १२६॥

एकसौसत्ताईस का अध्याय।

धृतराष्ट्रका विदुरजी से राजा पांडु और माद्रीके प्रेतकर्म कराने की कथा॥

उन तपस्वियों के अंतर्द्धान होनेपर राजा धृतराष्ट्र ने विदुरजी से कहा कि आप राजा पांडु और माद्रीका प्रेतकर्म राजाओं की तरह करवाइये और रत्न पशु धन वस्त्र आदि जो जिसको चाहिये दीजिये राजा पांडु शोचने के योग्य

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नहीं है क्योंकि उसके पांच पुत्र देवपुत्रोंके समान पराक्रमी मौजूद हैं १। ४ यह सुनकर विदुरजी राजा धृतराष्ट्र से बहुत अच्छा कहकर उठ खड़े हुये और भीष्मजी के साथ अच्छी जगह पर जाकर राजा पांडु और माद्री के अस्थि का संस्कार किया और ऋतुके सुगंधित पुष्प चन्दन और जलती हुई अग्नि पुरोहितों से मँगवाकर उन अस्थियों को सुन्दर अरथी में अच्छे अच्छे वस्त्र बिछाकर रक्खा और उसको अनेक द्रव्य और माला आदि से भूषित करके राजमंत्री जाति के भाई बन्धु सज्जन पुरवासी और कुटुम्बके मनुष्यों सहित छत्र और चमर डुलाते हुये बड़े बाजेगाजे से गंगाजी को लेचले अरथी के आगे २ ब्राह्मण लोग जलती हुई यज्ञकी अग्निको लिये हुये चले और पीछे २ सब पुरवासी चारों वर्णके मनुष्य भीष्म विदुर और सब पाण्डव रोते हुये यह कहते कि यह राजा हमको अनाथ कर चला हाय राजा तू कहां जाता है जब गंगाजी पर पहुँचे तब उस अरथी को एक सुन्दर स्थानपर उतारा ५। १७ और राजा और रानी की अस्थियों को सोने के घड़े में भरे हुये जलसे सींचकर चन्दन अगर आदि अनेक २ सुगन्धित द्रव्यों से लेप किया और अच्छे अच्छे वस्त्र मँगाकर ढक दिया उस समय राजा पांडु मरा हुआ भी जीतासा दीखने लगा इसके पीछे वेदके जाननेवाले ब्राह्मणों की आज्ञानुसार उन घृतावसिक्त अस्थियों का अच्छे अच्छे सुगन्धवाले काष्ठों की चिता में रखकर दाह कर्म किया १८। २३ उस समय पुत्रके मोहसे कौशल्या हायपुत्र २ ऐसा कहकर पृथ्वीपर गिरपड़ी उसकी यह दशा और कुन्ती के परम करुणा और दुःखयुक्त रोने को देखकर भीष्म विदुर आदि सब मनुष्य और पशु पक्षी आदि जीव रोने लगे इसके पीछे भीष्म विदुर सब पांडव और कौरवों ने जलांजली दी और महादुःखी होने लगे उस समय मंत्रियों ने उनको समझा कर रोने से निवृत्त किया २४। ३० बारह दिन तक सब पुरवासियों ने लड़कों सहित पांडवों के तरह राजा के मरने का शोक किया और सबके सब पांडवों के साथ पृथ्वीपर सोते थे ३१। ३२ ॥

इति श्रीभाषामहाभारते आदिपर्वणि सप्तविंशत्यधिकशततमोऽध्यायः १२७ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

एकसौअट्ठाईस का अध्याय।

राजा पांडु और धृतराष्ट्र की माताओं का सत्यवती के साथ जाकर वनमें तपस्या करके स्वर्गलोक को जाना धृतराष्ट्र और पांडुके पुत्रोंको बालचरित्र करना दुर्योधनका भीमसेन को अन्नविष खिलाकर गंगाजी में डालदेना भीमसेनका नागलोक में पहुँचकर चैतन्य होना और वहां कुण्डों के रस पीनेकी कथा॥

वैशम्पायनजी बोले हे राजा जनमेजय! इसके पीछे कुन्ती भीष्म आदि ने भाइयों सहित राजा पाण्डुका स्वधामृतमय श्राद्ध किया और कुरुवंशी और सहस्रों ब्राह्मणों को भोजन कराके मुख्य मुख्य ब्राह्मणों को अनेक रत्न और गांव दिये उपरान्त वहां से पाण्डवोंको लेकर सब मनुष्य हस्तिनापुर को आये १।३ और सबों ने राजा का इस प्रकार से शोक किया जैसे कोई अपने भाई बन्धुके मरने का करता है ४ इसके पीछे व्यासजी सत्यवती माता को दुःखित देखकर वहां आये और सत्यवती से कहा कि अब आगे बहुत बुरा समय आता है बड़े बड़े छल और प्रपंच इस पृथ्वी पर होंगे और पृथ्वी यौवन-हीन होजायगी और कुरुओं की अनीति से सब देश और कुटुम्बका नाश होगा इससे अब तू वन में जाकर तपस्या और वनवास कर कुटुम्ब का नाश देखने से तुझको बड़ा दुःख होगा यह सुनकर सत्यवती ने व्यासजी को बहुत अच्छा कहकर बिदा किया और आप अम्बिका के पास जाकर बोली कि तेरे पुत्र पौत्रों के अन्याय से अब आगे सब कुटुम्ब और देशका नाश होगा इससे जो तेरी इच्छा हो तो मैं कौशल्या को जो पुत्रके शोक से अत्यन्त दुःखी है लेकर वनको जाऊं अम्बिकाने तथास्तु कहकर आपभी वनको चलना स्वीकार किया और सत्यवती उन दोनों पुत्रवधुओं को लेकर वनको चली गई और वे तीनों कठिन तप कर २ के स्वर्ग को चली गईं ५।१३ वैशम्पायनजी बोले इसके पीछे पाण्डव वहां भोग भोगने लगे और थोड़े काल में बड़े होगये १४ जब वे सब पाण्डव और धृतराष्ट्रके पुत्र बालक्रीड़ा करते थे तब पाण्डव सदैव उन सबसे अधिक रहतेथे १५ एक भीमसेन उन सब धृतराष्ट्र के पुत्रों को दौड़ने में लक्ष्यभेदन अर्थात् निशाना लगाने में भोजन में और सब लड़कों के खेलों में हरा देता था १६ कभी उनको पकड़कर छिपजाता था और कभी उनको पकड़ २ कर पाण्डवों के साथ लड़ता था १७ और अकेलाही उन सबके सबों को थोड़े ही कष्टसे पकड़ रखता या दण्ड देकर छोड़ देता था १८ कभी उनके

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बालों को पकड़कर मारता और धरती में घसीटे २ फिरता और वह रोते और घसीटने से उनके कन्धे और जांघें छिल जाती थीं १९ जब जलक्रीड़ा करने को वे जाते तब भीमसेन दश दश धृतराष्ट्र के पुत्रोंको गहरे जल में पकड़ लेजाता और गोता देकर मुरदासा करके छोड़ता था २० और जब कभी वह बालक किसी वृक्ष पर फल तोड़ने को चढ़जाते तब भीमसेन उस वृक्षको पकड़ कर हिला डालता और वह सब लड़के और वृक्षके फल नीचे गिरपड़ते २१।२२ इस प्रकार से धृतराष्ट्र के पुत्र शिक्षा और अभ्यास आदि किसी बात में भीमसेन से कभी न जीतसके सदैव ईर्षा करते रहते थे और भीमसेन भी उनसे लड़कपन से ईर्षा रखता था परन्तु किसी के चित्त में द्रोह न था २३। २४ दुर्योधन भीमसेन के उस प्रसिद्ध बलको समझ कर दुष्टता और पापबुद्धिसे यह विचारने लगा कि यह भीमसेन बड़ा बलवान् है और हम सब से ईर्षा रखता है इससे इसको छल से दण्ड देना योग्य है जो इसको सोते हुये को गंगाजी में डाल दिया जावे तो इसके मरजाने पर युधिष्ठिर और अर्जुन को बलसे बांधकर कारागृह में डाल दिया जायगा और मैं अकंटक होकर राज्य करूंगा यह विचार कर दुर्योधन भीमसेन के मारने का नित्य दांव देखने लगा २५। ३० एक समय दुर्योधन ने प्रमाणकोटिनाम गंगा के एक स्थान में जलक्रीड़ा करना विचार कर बड़े २ डेरे और तम्बू ऊंची ऊंची ध्वजा लगवाकर बनवाये और वहां गड़वा दिये और चतुर मनुष्यों से भक्ष्य भोज्य पेय चोष्य और लेह्य आदि अनेक प्रकार के भोजन के पदार्थ बनवाये इसके पीछे दुर्योधन ने युधिष्ठिर से कहा कि चलो आज गंगा किनारे चलकर सब भाई जलक्रीड़ा करें युधिष्ठिर बोले अच्छा चलो फिर सबजने हाथी घोड़ा और रथ आदि अनेक सवारियों पर बैठकर वहां से चलदिये और वनके समीप पहुँचकर महाजनों को बिदा कर दिया और आप सब उस वन में इस प्रकार से घुसगये जैसे सिंह पर्वत की कन्दरा में प्रवेश करता है उपरान्त उन उत्तम २ डेरों में जो बड़े उजले अनेक २ प्रकार के चित्र और जाली झरोखे और खम्भ छज्जे आदि से बड़े शोभायमान लगते थे जाकर बैठगये और वहां की शोभा देखने लगे जहां तहां कूप और बावली बनी हुई थीं ताल और तलैयों में कमल फूल रहे थे और उस सब स्थान में सुन्दर २ ऋतुके फूल फूले हुये थे ३१। ४३ थोड़ी देर बैठने पर सबोंने मिलकर वहां भोजन किया ४४

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दुर्योधन पापी ने भीमसेनको मारने की इच्छा से उसके भोजनमें कालकूट नाम विष मिलवा दिया और पेटमें कटारी रखकर ऊपरे मनसे हँस हँसकर भीमसेनको वह विष मिले हुये पदार्थ खिलाये भीमसेन उस मर्म को न जानकर स्वादुपूर्वक बहुतसा भोजन करगया और दुर्योधनने अपना कार्य सिद्ध हुआ समझा ४५।४८ भोजन करने के पीछे सब भाइयों ने जलक्रीड़ा की और सन्ध्या होने पर सबों ने उस रात्रिको वहीं बसना विचारकर सूखे वस्त्र पहर लिये भीमसेन वहांपर लेटगया और जलक्रीड़ा में अत्यन्त व्यवसायसे थक जाने और विषके आवेश में मोहित होने के कारण से वहां की ठण्ढी ठण्ढी हवा में अचेत होकर सो गया ४९। ५३ उस समय दुर्योधन ने भीमसेन के सब अङ्गको वनकी बेलि आदि से बांधकर उसको अथाह जल में गिरवा दिया और वह गिरकर नीचे को चलागया और अचेतही नागलोकमें पहुँचा वहां उसको बड़े विषधर सर्पोंके कुमार काटने लगे उनके जङ्गमविष से भीमसेन का स्थावर कालकूट विष दूर होगया और उसने चैतन्य होकर सब बन्धनों को तोड़डाला और सर्पों को मारने लगा बहुतसे सर्प मारडाले और जो जीते बचे वह भागकर वासुकि नाम अपने राजाके पास गये और उससे कहा कि महाराज एक मनुष्य बड़ा पराक्रमी बँधा हुआ मृतकप्राय जल में डुबाया हुआ हमारे लोक में पहुँचा था हम उसको काटनेलगे काटनेसे वह जीउठा और बन्धनोंको तोड़कर हमको मारने लगा हम जानते हैं कि वह विष पिये हुये होगा जो हमारे काटनेसे जी उठा आप उसको चलकर देखिये ५४। ६३ यह सुनकर वासुकि नागोंसहित भीमसेनके देखनेको आया जब निकट पहुँचा तब आर्यकनाम नाग कुन्तीके नानाने उसे पहिचान लिया और उससे लिपटकर मेरा धेवता मेरा धेवता कहकर खूब मिला यह देखकर वासुकि प्रसन्न हुआ और आर्यकसे बोला कि इसकी क्या सेवा करनी चाहिये हमारी समझमें इसको बहुतसा धन और रत्न देकर बिदा करो यह सुनकर आर्यक बोला कि महाराज जो आप प्रसन्नहैं तो इसको वह रस पीनेको दीजिये जिसके पीने से दशसहस्र हाथीका बल होजाताहै धन और रत्नों से क्या होगा वासुकि बोला बहुत श्रेष्ठ है वासुकि के यह कहने पर भीमसेन पवित्र होकर पूर्वाभिमुख बैठ गया और कुण्डों में भरेहुये रस को पीने लगा जब आठ कुण्डों का रस पी चुका तब नागराज की बताई हुई उत्तम सेजपर सुखपूर्वक सोगया ६४। ७१॥

इति श्रीभाषामहाभारते आदिपर्वणि अष्टविंशत्यधिकशततमोऽध्यायः १२८॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

एकसौउन्तीस का अध्याय।

भीमसेनके न मिलनेपर कुन्ती और युधिष्ठिर का शोच करना विदुरजीका उनको धैर्य देना और भीमसेनका आठवें दिन नागलोक से आकर सब वृत्तान्त कहना और विदुरजी का पाण्डवोंका वाणविद्या सीखने को कृपाचार्य से निवेदन करना॥

वैशम्पायनजी बोले हे राजा जनमेजय! भीमसेन की तो यहां यह गति हुई और वहां जलक्रीड़ा समाप्त होनेपर दुर्योधन आदिक सब भाई वहां से अपनी २ सवारियों पर चढ़कर यह कहते हुये चले कि भीमसेन आगे गया है युधिष्ठिर भी उनके साथ साथ उनके पाप और अन्तःकरण की मलीनता और वैरभाव को न जानकर विश्वासपूर्वक चला आया जब सब हस्तिनापुर में पहुँचे तब युधिष्ठिर ने कुन्तीको नमस्कार करके पूंछा कि यहां भीमसेन तो नहीं आया है हमने वहां उद्यान में उसको सब जगह ढूंढ़ा परन्तु जब नहीं पाया तब यह समझा गया कि आगे गया है अब यहां भी मैं उसको नहीं देखता हूं तैंने तो उसे कहीं नहीं भेजा है जो भेजा हो तो मुझे बता दे विना भीमसेन के मेरा चित्त स्वस्थ नहीं होता है बड़ी विलम्ब हुई अभीतक आया नहीं है कहीं वहीं तो मारा नहीं गया जहां वह सोरहा था यह सुनकर कुन्ती हाय २ कर रोने लगी और बोली कि मैंने भीमसेन को नहीं देखा है तू छोटे भाइयों को लेजाकर ढूंढ़॥११ यह कहकर कुन्तीने विदुरजीको बुलाकर कहा कि कल उद्यानमें सब भाई गये थे वहां से आज और तो सब लौट आये हैं परन्तु भीमसेन अभी नहीं आया है वह दुर्योधन की आंखों में सदैव खटका करता था क्योंकि वह दुर्मति क्षुद्रराज्य का लोभी और निर्लज्ज है इससे मुझको यह बड़ा सन्देह होरहा है कि कहीं उसको मार तो नहीं डाला १२। १५ यह सुनकर विदुरजी ने कहा कि तू चिन्ता मत करे और ऐसा मत कहै जो वह यह सुन पावैगा तो तेरे इन लड़कोंको भी मारडालेगा तेरे सब लड़कों की बड़ी आयु है जैसा मुनीश्वरों ने कहा था भीमसेन आवैगा और तुझे आनन्द देगा १६। १७ वैशम्पायनजी बोले हे राजा जनमेजय! विदुरजी यह कहकर अपने घरको चले गये और कुंती अपने पुत्रोंको लेकर घरमें बैठी चिन्ता करती रही १८ आठवें दिन भीमसेन उस रसके पचजाने पर जगा और अतुलबल उसके शरीर में होगया उसको जगा हुआ देखकर सर्पोंने कहा कि इस रस के प्रभावसे तुम्हारे युद्ध में दश सहस्र हाथीका बल होगा अब तुम यहां के दिव्य जलसे स्नान करके अपने घर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

को जाओ तुम्हारे भाई तुम्हारी चिंता करते होंगे १९। २२ यह सुनकर भीमसेन ने स्नान किया और उत्तम वस्त्र और माला पहिनकर नागों के दिये हुये भोजन और विषके दूर करनेवाली औषधी खाई उपरान्त नाग उसको गहना आदि देकर जलके बाहर उसी स्थान पर पहुँचा गये जहां वह सब जलक्रीड़ा करने को आये थे और वहीं अन्तर्धान होगये भीमसेन वहां से उठकर घरको आया और बड़े भाई और माता को नमस्कार करके छोटे भाइयों पर प्यार किया माता और सब भाई उससे बड़े हर्षके साथ मिले और परमानन्द के साथ बैठ गये उस समय भीमसेन ने दुर्योधन के विष देने और नागलोक में पहुँचने का सब हाल कह सुनाया उस को सुनकर युधिष्ठिर ने कहा कि अब इस हाल को किसी से न कहना और पाण्डव तबसे सावधान होकर रहने लगे २३। ३४ दुर्योधन कर्ण और शकुनि तीनों पाण्डवों के मारने का उपाय किया करते थे पाण्डव उनके मन्त्रको जानकर विदुरजी के कहने के अनुसार किया करते थे और विदुरजी ने उनको धनुर्वेद की शिक्षाके लिये शरस्तम्ब पर उत्पन्न हुये वेदशास्त्र के परमवेत्ता कृपाचार्य को निवेदन कर दिया ३५। ३८ ॥

इति श्रीभाषामहाभारते आदिपर्वण्येकोनत्रिंशत्यधिकशततमोऽध्यायः १२९ ॥

एकसौतीस का अध्याय।

कृपाचार्य द्रोणाचार्य और अश्वत्थामा की उत्पत्ति और कृपाचार्यका शरद्वान् ऋषि और द्रोणाचार्य का परशुरामजी से अस्त्रविद्या पाने और आचार्यपदवीको पहुँचने की कथा ॥

राजा जनमेजय बोले हे वैशम्पायनजी ! आप कृपा करके कृपके शरस्तम्ब पर उत्पन्न होने और अस्त्रविद्या पानेकी कथा वर्णन कीजिये १ वैशम्पायनजी बोले गौतम नाम एक महर्षि थे उनके शरद्वान् नाम एक पुत्र था उसने बड़ी तपस्या करके वेद और अस्त्रविद्या सीखी और उसकी बुद्धि जैसी धनुर्विद्या में रहती थी वैसी वेदों के पढ़ने में नहीं रहती थी इन्द्र उसकी तपस्या और अस्त्रविद्या की निपुणता को देखकर शङ्कित हुआ और विघ्न करने के लिये उसने उसके पास जानपदी नाम देवकन्या को भेजा २। ६ वह एक वस्त्र पहिने हुये शरद्वान् के आश्रम में आई शरद्वान् उसके सुन्दर स्वरूपको देखकर कामासक्त होगये धनुष्बाण हाथ से गिरपड़ा और स्थान छोड़कर भागे भागने में उनका शरीर कांपने लगा और उनका वीर्य दो टुकड़े होकर अचेतता से शरमें

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

गिरपड़ा उस शरमें उस वीर्यसे एक पुत्र और एक कन्या उत्पन्न होगई ७।१३ इसके पीछे एक समय वहां राजा शन्तनु अहेर खेलने को गया उसकी सेना के किसी मनुष्य ने उस लड़के और लड़की को धनुष् और बाण सहित देखा और यह जानकर कि यह किसी ऐसे ब्राह्मणके पुत्र और पुत्री हैं जो धनुर्विद्या में अत्यन्त निपुण था राजा से जाकर सब हाल कह सुनाया राजा उसकी बात सुनकर वहां चला गया और उन दोनों को देखकर घर ले आया और उनको पुत्र और पुत्रीके समान पाला और संस्कार किया थोड़े दिनों में जब वे कुछ सयाने हुये तब राजा ने उस पुत्रका नाम कृपायुक्त घर लाने के कारण से कृप रक्खा इसके पीछे शरद्वान् को तपके प्रभाव से यह ज्ञान हुआ कि मेरे पुत्र और पुत्री दोनों राजाकी रक्षामें हैं यह जानकर शरद्वान् राजाके पास आये और कृपको अपना गोत्र आदि सब बताकर चारों प्रकार की धनुर्विद्या अस्त्रविद्या और अन्य बहुतसी गुप्तविद्या पढ़ाई उन विद्याओं को पढ़कर कृप थोड़ेही दिनों में आचार्यपदवी को पहुँचगया और उससे सब पाण्डव धृतराष्ट्र के पुत्र और यादव आदि राजाओं ने आकर धनुर्विद्या सीखी १४। २३ वैशम्पायनजी बोले हे राजा जनमेजय! इसके पीछे भीष्मजी उन सब अपने पौत्रोंको विशेष बाणविद्या सिखाने की इच्छासे किसी ऐसे आचार्य को ढूँढ़ने लगे जो बड़ा बलवान् बुद्धिमान् और सम्पूर्ण अस्त्रशस्त्रों की विद्या में अत्यन्त निपुण हो भरद्वाज के पुत्र द्रोणाचार्य को जो सम्पूर्ण वेदशास्त्र बाणविद्या और अस्त्रविद्या में परम प्रवीण और पण्डित थे बुलाकर यथावत् पूजन किया और उक्त विद्याओं के सीखने के लिये सब लड़कों को उनका शिष्य करा दिया द्रोणाचार्य ने उन सब पाण्डव और धृतराष्ट्र के पुत्रों को धनुर्वेद बहुत अच्छी तरह से पढ़ाया और वे सब थोड़ेही दिनो में द्रोणाचार्य की कृपासे सब शास्त्रों में निपुण होगये २४। २९ यह सुनकर राजा जनमेजय बोला कि महाराज मैं द्रोणाचार्य और उनके पुत्र अश्वत्थामा की उत्पत्ति उनके हस्तिनापुर आने का हेतु और अस्त्रविद्या पानेका वृत्तान्त विस्तारपूर्वक सुना चाहता हूं आप कृपा करके कहिये ३०। ३१ वैशम्पायनजी बोले भरद्वाज नाम एक बड़े व्रतके करनेवाले ऋषि थे वह हरद्वार में गंगातट पर रहा करते थे उन्होंने एक दिन गंगास्नान करते में घृताची अप्सरा को नग्न देखा और उसके अत्यन्त सुन्दर यौवनस्वरूप को देखकर कामासक्त होगये उस

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

समय भरद्वाजजी का चित्त काम से प्रेरित होने से उस अप्सराकी ओर ऐसा लग गया कि उनका वीर्य गिरने लगा भरद्वाजजी ने उस वीर्यको द्रोणनाम यज्ञपात्र में रखदिया उस वीर्यसे उस द्रोणमें द्रोणाचार्य उत्पन्न हुये सयाने होने पर द्रोणाचार्य सम्पूर्ण वेद और वेदके अंगों को पढ़कर पंडित होगये फिर भरद्वाजजीने द्रोणाचार्यको अग्निवेश मुनिको सौंप दिया और उनसे द्रोणाचार्य ने आग्नेय अस्त्र सीखा ३२।३८ भरद्वाजजीका पृषतनाम पांचालदेश का राजा बड़ा मित्र था उसके द्रुपदनाम एक पुत्र था वह पुत्र और द्रोणाचार्य दोनों साथ पढ़ा और खेला करते थे कुछ दिनों में पृषत तो मरगया और द्रुपद पांचाल देशका राजा हुआ ३९।४१ और भरद्वाजजी भी स्वर्गवासी हुये उनके पीछे द्रोणाचार्य ने अपने पिताके आश्रम में रहकर बड़ा तप किया और पिताकी आज्ञाको पूरा करने के लिये पुत्रके लोभ से अपना विवाह शारद्वती कृपी नाम कृपाचार्य की बहिन से जो बड़ी धर्मात्मा थी किया उससे उनके एक पुत्र उत्पन्न हुआ उसने होतेही घोड़ेके हींसने कासा शब्द किया उस समय आकाशवाणी हुई कि इस लड़केने होतेही अश्वकासा शब्द कियाहै इससे इस का नाम अश्वत्थामा होगा ४२।४६ द्रोणाचार्य उस पुत्रको देखकर प्रसन्न हुये और अपने आश्रम में रहा किये थोड़े दिनों में उन्होंने यह सुना कि परशुराम जी जो सब अस्त्र शस्त्रविद्या में परम निपुण थे ब्राह्मणों को अपना सब धन दिया चाहते हैं यह सुनकर द्रोणाचार्य अपने सब शिष्यों सहित महेन्द्रनाम पर्वत पर परशुरामजी के पास गये परशुरामजी उस समय सब छोड़कर वनको जाने वाले थे द्रोणाचार्य ने उस समय उनसे अपना उत्पन्न होना अंगिरस के कुलमें कहकर परशुरामजी के चरणों की वंदना की और कहा कि महाराज मैं द्रोण नाम भरद्वाजजी का अयोनि से उत्पन्न पुत्रहूं आपके पास कुछ मांगने आया हूं ४७।५४ परशुरामजी बोले कि तेरा आना शुभ हो तू ब्राह्मणों में श्रेष्ठ है मुझसे क्या चाहता है द्रोणाचार्य बोले कि महाराज मैं अनंत धन चाहता हूं ५५।५६ परशुरामजी ने कहा कि मेरे पास जो कुछ सोना चांदी था आज सब ब्राह्मणों को देचुका और समुद्र पर्यंत पृथ्वी कश्यपजी को देदी अब केवल मेरे पास मेरा शरीर और अनेक अस्त्र रहगये हैं इनमें जो तुम मांगो सो हम तुमको देदें ५७।६० द्रोणाचार्य बोले कि अच्छा महाराज मुझको संहार प्रयोग और रहस्यसहित संपूर्ण अस्त्र दीजिये ६१ यह सुनकर परशुरामजी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ने द्रोणाचार्य को अशेष अस्त्र और बाणविद्या संहारप्रयोग और रहस्य सहित सिखा दी और वह वहां से बिदा होकर अति प्रसन्न चित्त अपने परम प्यारे मित्र द्रुपदके पास आये ६२। ६३॥

इति श्रीभाषामहाभारते आदिपर्वणि त्रिंशत्यधिकशततमोऽध्यायः १३०॥

एकसौइकतीस का अध्याय।

द्रोणाचार्यका पांचालदेशके राजाके पास जाकर उससे अपनी मित्रताका हाल सुनाना राजा का तिरस्कार करना द्रोणाचार्यका क्रोधित होकर हस्तिनापुरमें आना और भीष्मजीका उनकी बाणविद्याकी निपुणताका हाल सुनकर उनको टिकाना और द्रोणाचार्यका भीष्मजीसे अपने वहां आनेका वृत्तान्त कहना॥

वैशम्पायनजी बोले हे राजा जनमेजय! जब द्रोणाचार्यने द्रुपद के पास जाकर बड़ी प्रीति से कहा कि हे राजन्! मैं तेरा मित्रहूं द्रुपद यह सुनकर प्रभुता के मदसे क्रोधित होकर टेढ़ी भौंह और लाल नेत्र किये हुये बोला कि अरे ब्राह्मण तेरी बुद्धि संस्काररहित है तू यह नहीं जानता है कि शोभाहीन और दरिद्री मनुष्यों से बड़े राजाओं की मित्रता क्योंकर होसक्ती है १। ५ समय के बीतनेपर पुरानी मित्रताभी जीर्ण होजाती है हमारी तेरे साथ लड़कपनकी मित्रता थी सो मित्रता कोई ऐसा पदार्थ नहीं है जो अमर होकर रहै कालके व्यतीत होने और क्रोधसे मित्रता जाती रहती है हमारी तेरी मित्रता उस समय में अर्थ सम्बन्धी थी अब उसको बहुत दिन होगये उस मित्रता को अब मत मानो क्योंकि धनाढ्य दरिद्री पंडित मूर्ख शूरवीर नपुंसक पुष्ट और निर्बल इनकी मित्रता विवाह और वैर शोभा नहीं देतेहैं इनकी शोभातो बराबरही में है शास्त्री और मूर्ख रथी और अरथी राजा और राजाधिराज की आपस में क्या मित्रता है ६। ११ यह निठुर वचन सुनकर द्रोणाचार्य को बड़ा क्रोध हुआ और दो घड़ीतक मौन रहकर मनको प्रबोध कर कुरुवंशियों के देशको चले आये और वहां से हस्तिनापुर में पहुँचे वहां जाकर कृपाचार्य के घर में गुप्तवास करने लगे द्रोणाचार्यका पुत्र कृपाचार्य के पीछे पांडवों को अस्त्रविद्या सिखाता था परन्तु इस बातको किसीने नहीं जाना १२। १५ द्रोणाचार्य कुछ दिनों तक वहां गुप्त बसे रहे एक समय ऐसा हुआ कि कुरुवंश के सब लड़के गुल्ली दंडा खेलने को नगरके बाहर गये वहां खेलते खेलते अकस्मात् उनकी गुल्ली कुयें में जा पड़ी उसके निकालने के लिये उन बालकों ने अनेक यत्न किये

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

परन्तु वह गुल्ली कुयेंसे न निकली हारकर बेर बेर उस कुयें में शिर झुका झुका कर गुल्ली को देखने लगे उस समय उन बालकों ने उस निर्जल कुयें के पास एक काले वृद्ध ब्राह्मण को कुछ सत्कर्म करते हुये देखा वह बालक उसको देख कर उसके पास चलेगये और उसको चारोंओर से घेरलिया उनको देखकर द्रोणाचार्यने मुसकरा कर कहा कि बड़े आश्चर्य की बातहै कि क्षत्रिय होकर तुम से यह गुल्ली नहीं निकलती तुम्हारे बल और अस्त्रशिक्षा को धिक्कार है हमसे कहो तो गुल्ली अँगूठी दोनों को कुयेंमें डालकर बाणों या सींकों से निकाल दें तुमको हमें भोजन देना चाहिये १६। २४ यह कहकर द्रोणाचार्यने अपने हाथसे अँगूठी उतारकर उस अंधे कुयें में डाल दी यह देखकर युधिष्ठिर ने कहा कि जो तुम इसको निकाल दोगे तो कृपाचार्य के मत से तुमको भिक्षा शीघ्र मिल जाया करेगी यह सुनकर द्रोणाचार्य हँसकर बोले कि देखो यह मुट्ठी की बराबर सींकें हैं हम मंत्र से गुल्ली को एक सींक से छेदते हैं और उस सींक को दूसरी से और दूसरी को तीसरी से छेदकर तुम्हारी गुल्ली को निकाले देते हैं तुम मंत्र का पराक्रम देखो यह बात दूसरा मनुष्य नहीं करसक्ता है २५। २८ वैशम्पायन जी बोले हे राजा जनमेजय! यह कह कर द्रोणाचार्य ने उक्तरीति से गुल्ली को निकाल दिया लड़के उसको देखकर बहुत प्रसन्न हुये और बोले कि महाराज अँगूठी को भी निकाल दीजिये तब द्रोणाचार्य ने धनुष बाण लेकर बाण से अँगूठी को छेदकर निकाल दिया लड़के यह बात देखकर बड़े आश्चर्य में होगये और द्रोणाचार्य को नमस्कार करके बोले कि महाराज आप सत्य कहते हैं आपकी समान कोई नहीं है आप कौन हैं और आपका क्या काम है जो कुछ आप हमसे कहैं सो हम आपका काम करैं २९। ३३ वैशम्पायनजी बोले कि द्रोणाचार्य उन बालकों की बात सुनकर बोले कि तुमलोग जाकर हमारा यह सब हाल भीष्मजी से कहो वह हमको जान जायँगे ३४। ३५ लड़के यह सुनकर अच्छा कहकर भीष्म जी के पास गये और उनसे द्रोणाचार्य का सब वृत्तान्त कहा ३६ भीष्मजी वह सब वृत्तान्त सुनतेही जानगये कि द्रोणाचार्य हैं और यह समझकर कि वह इन लड़कों को अस्त्रविद्या सिखाने के लिये बहुत श्रेष्ठ हैं आप वहां चले गये और उनको आदरपूर्वक लाकर पूंछा कि आपका आना क्योंकर हुआ है द्रोणाचार्य बोले कि बहुत दिन हुये मैं अग्निवेश महर्षि के पास बाण

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

विद्या सीखने को गया था वहां से ब्रह्मचारी होकर मैंने बहुत दिनोंतक गुरु की सेवा की और बाणविद्या सीखी उन्हीं दिनों में वहां पांचालदेश के राजा का यज्ञसेन नाम पुत्र भी बाणविद्या सीखने को आया करता था ३७। ४२ साथ पढ़ने और अस्त्रविद्या सीखने के कारण से मेरी उसकी परम मित्रता होगई और हम दोनों प्रीतिपूर्वक वहां रहते रहे उस समय उसने मुझसे यह कहा कि हे द्रोण ! मैं अपने पिताका प्यारा पुत्रहूं जिस समय मेरा राज्याभिषेक होगा मैं सौगंद खाकर कहता हूं कि मैं तेरे निमित्त सब भोग करदूंगा मेरा राज्य तेरे ही आधीन रहैगा यह कहकर वह अस्त्राभ्यास समाप्त होनेपर अपने घरको चलागया और मैं उसकी बातको मनमें धरे रहा इसके पीछे मैंने पिताकी आज्ञा से पुत्रके लिये बड़ी बुद्धिमान् व्रत करनेवाली धर्मात्मा स्त्री से अपना विवाह किया और उससे मेरे अश्वत्थामा नामी बड़ा पराक्रमी और सूर्य के समान तेजस्वी पुत्र उत्पन्न हुआ ४३।५० लड़कपन में वह धनी मनुष्यों के लड़कों को दूध पीते देखकर घरमें आकर दूध मांगता और दूध न मिलने के कारण से रोता मैं यह बात देखकर बड़ा दुःखी हुआ और शुद्धप्रतिग्रह लेने की इच्छा से गाय के निमित्त सब देशों में फिरा परन्तु किसीने मुझको गाय न दी तब मैं अश्वत्थामा को जलमें चूर्ण घोलकर सफ़ेद २ जल पिलाकर उसे बहला देता और वह उसीको दूध समझकर बड़े आनन्द से पी लेता और उन धनी मनुष्यों के बालकों में जाकर यह जानकर कि मैंने भी दूध पिया है नाचता वे बालक उसका यह हाल देखकर उसकी हँसी करते और यह निन्दा करते कि द्रोणको धिक्कार है जो कहीं धन नहीं पाता है और उसका लड़का आटा घुला हुआ जल पीकर अपने को दूधपीनेवालों में गणना करके नाचता है उनकी यह निन्दा सुनकर मैंने अपने को बहुत निन्दित समझा और धनके लोभसे धनी मनुष्यों की सेवा करना न अङ्गीकार करके वहां से अपने प्यारे पुत्र और स्त्री सहित पहिली मित्रता को समझकर राजा द्रुपद के पास चलागया ५१। ६० वहां पहुँचने पर मैंने सुना कि आजकल पांचाल देशकी गद्दीपर द्रुपदही है यह सुनकर मैंने द्रुपद की पहिली बात याद करके अपने को बड़े हर्ष से कृतार्थ माना और राजा से मिलने पर मैंने कहा कि हे द्रुपद ! मैं द्रोणनाम तुम्हारा मित्र हूं ६१।६२ द्रुपद मेरी बातको सुनकर इसप्रकार से मुझसे हँस करके कहने लगा जैसे कोई तुच्छ आदमी से कहता है ६३ कि तेरी बुद्धि संस्काररहित मालूम

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

होती है जो तू मुझको अपना मित्र बतलाता है पुरानी जान पहिंचान समय बहुत होजाने पर जाती रहती है मेरी तेरी केवल लड़कपन में मित्रता थी परंतु तू यह नहीं जानता है कि वेदपाठी की वेदरहित से रथपर सवारकी बेरथवाले से धनी की दरिद्रीसे पण्डित की मूर्ख से शूरवीरकी नपुंसक से राजाओंकी ऐसे मनुष्योंसे जो राजा नहीं हैं मित्रता कभी नहीं होती है मित्रता की शोभा तो बराबरवालोंही में है इसके सिवाय मित्रता समय पाकर नाश भी होजाती है वह कोई ऐसा पदार्थ नहीं है जो अमर हो इससे तू पुरानी मित्रताको छोड़दे मुझे स्मरण नहीं आता है कि मैंने तुझसे राज्य के विषय में कुछ कहा हो हां एक रात्रि का भोजन तुझको देसक्ता हूं ६४। ७२ यह सुनकर मुझको बड़ा क्रोध हुआ और वहां से स्त्रीसहित चलदिया और अपने मनोरथ को पूरा करने के लिये शिष्यों को ढूंढ़ता हुआ यहां हस्तिनापुर को आया हूं मैं आपके मनोरथ को बढ़ाऊंगा अब जो कुछ आप आज्ञा दें सो मैं करूं ७३। ७५ यह सुनकर भीष्मजी बोले कि आप धनुष् को उतारकर बैठिये और इस कुरुकुल में सबसे पूजित रहकर सब लड़कों को अस्त्रविद्या सिखाइये कुरुओंके पास जो कुछ राज्य और धनहै उस सबको और कुरुओं को आप अपनाही समझिये आप हमको भाग्य से मिले हैं आपने बड़ी कृपा की जो यहां आये अब जो कुछ आपकी इच्छा हो सो हमसे कहिये आपका मनोरथ तत्काल पूरा किया जायगा ७६।७६॥

इति श्रीभाषामहाभारते आदिपर्वण्येकत्रिंशत्यधिकशततमोऽध्यायः १३१ ॥

एकसौबत्तीस का अध्याय।

द्रोणाचार्य का सब धृतराष्ट्र के पुत्र और पाण्डवों को अस्त्रविद्या सिखाने और अस्त्राभ्यास में परीक्षा करने की कथा॥

वैशम्पायनजी बोले हे राजा जनमेजय! भीष्मजी के पूजा करने पर द्रोणाचार्य ने कुरुओं के वंश में स्वस्थतापूर्वक वास किया और भीष्मजीने अपने सब पौत्रों को अस्त्रविद्या सीखनेके लिये उनका शिष्य करादिया और उनको रहने को सुन्दर घर धन धान्य आदि अनेक प्रकार के द्रव्य दिये १।३ द्रोणाचार्य बड़े प्रेम से उन सब कुरु पाण्डवों को शिष्यभाव से ग्रहण करके अस्त्र शिक्षा करने लगे एक दिन एकान्त में शिष्योंको प्रणाम करते देखकर द्रोणाचार्य ने उनसे कहा कि मेरे मनमें एक काम है सो जब तुम अब अस्त्र हमसे सीख चुकोगे तब हम उसके करनेको तुमसे कहेंगे कहो तुमलोग हमारे उस काम

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

को करदोगे या नहीं ४।६ वैशंपायनजी बोले कि द्रोणाचार्य की बातको सुनकर सब कुरुवंशी चुप हो रहे थोड़ी देर में अर्जुन ने कहा कि महाराज मैं आपके उस काम को पूरा करूंगा यह सुनकर द्रोणाचार्य ने अर्जुन को बड़ी करुणासे प्रेमपूर्वक छाती से लगा लिया और उसके मस्तक को बार २ सूंघ २ कर प्रसन्न हुये ७।८ इसके पीछे द्रोणाचार्य ने पाण्डवों को संपूर्ण अस्त्र सिखाये और अन्धक वृष्णि आदि अनेक वंशों के राजा लोग अस्त्रविद्या सीखने को वहां आकर द्रोणाचार्य के शिष्य हुये और सूतका बेटा कर्ण भी वहां अस्त्रविद्या सीखने को आता था वह अर्जुन से ईर्षा रखता था और दुर्योधन का आश्रय पाकर कुटिलता करता था ९।१२ अस्त्राभ्यास में अर्जुन सबसे अधिक हुआ और द्रोणाचार्य उसको सब शिष्यों में असमान मानने लगे १३।१५ द्रोणाचार्य सब शिष्यों को अस्त्रविद्या अच्छी तरह सिखाते थे और जब उनको कोई रहस्यकी बात अपने पुत्रको बतानी होती तब वह अपने पुत्रको बड़े मुखका घड़ा पानी भरलाने को देते और अन्य सब शिष्यों को बहुत छोटे मुखका घड़ा देते जिसमें पुत्र पानी लेकर शीघ्र आजावै और उस समय अकेले में उसको वह रहस्य की बात बता देते अर्जुन तब वारुणास्त्र से घड़े को भरकर गुरुपुत्र के साथही आजाता इसकारण से अर्जुन सब गुणों में गुरुपुत्रके बराबर ही रहता था किसी बात में उससे कम नहीं था १६।१९ और द्रोणाचार्य भी उसकी सेवा और अस्त्राभ्यास से उससे बड़े प्रसन्न थे २० एक दिन उसके अस्त्राभ्यास को देखकर द्रोणाचार्य ने रसोइये को बुलाकर कहा कि तू अर्जुन को अँधेरे में भोजन करने को कभी मत दीजो वह ऐसाही करता था एक दिन अर्जुन रसोई खाता था हवा से दीपक बुझगया तब अर्जुन का हाथ रसोई खाते में और जगह चलागया अर्जुन इस बातको समझकर विचारने लगा कि रात्रिको भी शस्त्रका अभ्यास करना चाहिये यह समझकर उसने रात्रि में भी अभ्यास करना प्रारम्भ किया उसके धनुष्का शब्द सुनकर द्रोणाचार्य उसके पास चले आये और प्रेमसे उसे छातीसे लगाकर कहा कि मैं ऐसा यत्न करूंगा जिस में धनुर्धारियों में तेरे समान कोई न होगा तुझसे सच कहता हूं २१।२७ वैशम्पायनजी बोले हे राजन्! इसके पीछे द्रोणाचार्य ने अर्जुन और कौरवों को घोड़े हाथी रथ धरती गदा तलवार बाण बरछी और अनेक हथियारों की लड़ाई सिखाई २८।२९ द्रोणाचार्य की अस्त्रविद्या में ऐसी कुशलता सुन

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कर सहस्रों राजा और राजाओं के लड़के उनसे अस्त्राभ्यास सीखने को आये ३० इसके पीछे हिरण्यधनुष्नाम धीमरों के राजाका एकलव्य नाम बेटाभी द्रोणाचार्य से बाणविद्या सीखने को आया द्रोणाचार्य ने उसे धीमर समझ कर अपना शिष्य नहीं किया और वह उनको मन से गुरु मानकर नमस्कार करके वन को चलागया और द्रोणाचार्य की मट्टी की मूर्ति बनाकर बड़ी गुरुभक्ति संयुक्त बाणका अभ्यास वन में करने लगा और थोड़े दिनों में बाणको लेने लगाने और छोड़ने की हस्तलाघवता को प्राप्त किया ३१।३५ एक समय ऐसा हुआ कि सब कौरव और पाण्डव द्रोणाचार्य की आज्ञा से अहेर खेलने को उसी वन में गये और उनके पीछे एक मनुष्य अहेर की सामग्री और एक कुत्ता भी लेकर गया वह कुत्ता वनमें घूमने लगा और घूमते २ एक स्थानपर एकलव्यको शस्त्राभ्यास करते हुये देखकर भूंकने लगा एकलव्यने उस कुत्ते के मुख में एकसाथ सात बाण मारे तब वह कुत्ता वहां से भागकर पांडवों के पास आया पांडव उसे देखकर आश्चर्य करने लगे और उसकी हस्तलाघवता और शस्त्रभेदनके अभ्यास को जानकर बड़े दुःखी हुये और वन में उसे ढूंढ़ने लगे जब उसके पास पहुँचे तब उसको न पहिंचानने के कारण से पूंछा कि तू कौन है और किसका शिष्य है ३६। ४४ वह बोला कि मैं हिरण्यधनुष् धीमर का बेटा और द्रोणाचार्यका शिष्यहूं और यहां बाण-विद्यामें अभ्यास किया करताहूं ४५ वैशंपायनजी बोले कि उसकी बात को सच समझकर सब पांडव वहां से चले आये और द्रोणाचार्य से सब वृत्तांत कहा और अर्जुनने अकेले में यह कहा कि महाराज मुझको आपने बड़ी प्रीतिसे छाती से लगाकर यह कहा था कि मेरा कोई शिष्य तुझसे अधिक न होगा फिर निषादपतिका एकलव्यनामी बेटा मुझसे अधिक और सब संसार से विशेष पराक्रमी क्यों है ४६।४९ वैशंपायनजी बोले कि अर्जुन की बातको सुनकर द्रोणाचार्यने कुछ देरतक तो विचार किया उपरांत उसे साथ लेकर वनमें गये और उस जटाधारी मैले और फटे कपड़े पहिने हुये एकलव्य को देखकर ठहर गये एकलव्य द्रोणाचार्यको पहिचानकर हाथ जोड़कर सन्मुख खड़ा होगया और अपने को उनका शिष्य बताकर उनकी अच्छीतरह पूजा की ५०। ५३ द्रोणाचार्य उससे बोले कि जो तू मेरा शिष्यहै तो मुझे गुरुदक्षिणा दे वह प्रसन्न होकर बोला कि महाराज जो कुछ कहिये सो करूं आपके निमित्त मेरे आधीन ऐसा कौन

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पदार्थ नहीं है जो न देसकूं ५४।५५ यह सुनकर द्रोणाचार्य बोले कि तू अपने दहिने हाथका अँगूठा हमको देदे अपनी प्रतिज्ञा सत्य कर सत्यमें सदैव भलाई है वैशम्पायनजी बोले कि एकलव्यने द्रोणाचार्य की बातको सुनकर विना विचारे अपना अँगूठा काटकर देदिया तबसे वह बाण अपनी अँगुलियों से खींचकर चलाने लगा परंतु अँगूठा न रहने के कारण वह हाथकी लाघवता जाती रही अर्जुन यह बात देखकर प्रसन्न हुआ और द्रोणाचार्य ने अपना वह वचन सत्य किया कि अर्जुन की समान कोई मेरा शिष्य न होगा ५६।५९ दुर्योधन और भीमसेन ने द्रोणाचार्य से गदायुद्ध सीखकर बड़ा अभ्यास किया अश्वत्थामा सब रहस्यों में सबसे अधिक हुआ नकुल और सहदेव के समान तलवार के चलाने में कोई न हुआ युधिष्ठिर रथ हांकने में सब से चतुर हुये अर्जुन सब बातों में पृथ्वीपर श्रेष्ठ विख्यात हुआ ६०।६२ द्रोणाचार्यने सबको शस्त्राभ्यास एकसाही सिखाया था परंतु बुद्धिबल और अस्त्राभ्यासके उत्साह से एक अर्जुन उन सबों में महारथी होगया ६३।६४ धृतराष्ट्र के सब पुत्रलोग भीमसेन के बल और अर्जुन के शस्त्राभ्यास को देखकर पांडवों से द्वेष करने लगे ६५ इसके पीछे द्रोणाचार्य ने शस्त्राभ्यास में परीक्षा करनेके लिये एकदिन एक काठकी बतक बनाकर एक वृक्षपर लगवा दी और सब शिष्योंको उसे दिखा कर बोले कि तुम सब अपने २ धनुषोंमें बाण लगाकर इस बतककी ओर लक्ष्य-भेदन करने को खड़े रहो जब हम कहैं तभी बाण मारकर इसका शिर काट डालना ६६।६९ यह कहकर पहले द्रोणाचार्यने युधिष्ठिरसे कहा कि बाणको वृक्ष पर बैठी हुई बतककी ओर संधानकर जब मैं कहूं तब बाण छोड़ियो यह सुन कर युधिष्ठिरने वैसाही किया और दो घड़ीतक उसकी ओर धनुष तानेहुये खड़ा रहा फिर द्रोणाचार्य ने पूंछा कि तुझे बतक दिखाई देती है या नहीं युधिष्ठिर बोला हां महाराज दिखाई देती है दो घड़ी पीछे फिर पूंछा कि अब कहो तुझे मुझसमेत तेरे सब भाई और वृक्ष भी दिखाई देते हैं या नहीं युधिष्ठिर बोला हां महाराज सब दिखाई देतेहैं यह सुनकर द्रोणाचार्य बहुत अप्रसन्न हुये और बोले कि हट यह लक्ष्य तुझसे नहीं भिदेगा ७०।७५ इसके पीछे दुर्योधनादिक धृतराष्ट्रके पुत्र और भीमादिक पांडव और अन्य देशोंके राजाओंको क्रम २ से बुला कर उक्त रीतिसे पूंछा और सबसे अप्रसन्न हो २ कर सबको हटादिया ७६।७७॥

इति श्रीभाषामहाभारते आदिपर्वणि द्वात्रिंशत्यधिकशततमोऽध्यायः १३२॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

एकसौतेंतीस का अध्याय।

शस्त्राभ्यास की परीक्षामें अर्जुन का लक्ष्य भेदना अर्थात् निशाना मारना और द्रोणाचार्य का उसको प्रसन्न होकर ब्रह्मशर नाम अस्त्र देना॥

वैशम्पायनजी बोले हे राजा जनमेजय! इसके पीछे द्रोणाचार्य ने अर्जुन को बुलाकर हँसकर कहा कि यह लक्ष्यभेदन (निशाना मारना) तुमको करना चाहिये धनुर्बाण लगाकर पक्षीकी ओर धनुष तानकर दो घड़ीतक खड़ा रह जब मैं कहूं तब बाण छोड़ियो यह सुनकर अर्जुनने धनुष में बाण लगा लिया और दो घड़ीतक धनुषको पक्षीकी ओर ताने हुये खड़ा रहा उस समय द्रोणाचार्यने अर्जुनसे पूंछा कि तुझे वृक्ष और मैं और वृक्षका पक्षी दिखाई देता है या नहीं अर्जुन बोला कि महाराज केवल पक्षी दिखाई देता है आप और वृक्ष नहीं दीखते १।५ दोघड़ी के पीछे द्रोणाचार्य ने फिर प्रसन्न होकर पूंछा कि अब पक्षी दिखाई देता है या नहीं अर्जुन बोला कि महाराज अब तो सिवाय पक्षी की ग्रीवाके और कुछ दिखाई नहीं देता है ६।७ यह सुनकर द्रोणाचार्य ने कहा कि अब शीघ्र बाण छोड़दे विलम्ब मतकर अर्जुन ने यह सुनतेही बेधड़क होकर बाण छोड़ दिया और उससे उस बतक की ग्रीवा कटकर गिर पड़ी ८। ९ यह देखकर द्रोणाचार्य बहुत प्रसन्न हुये और उसी समय से जान लिया कि अब राजा द्रुपद को हमने जीत लिया १० इसके पीछे एक दिन द्रोणाचार्य सब शिष्यों सहित गंगास्नान करने को गये उस समय द्रोणाचार्य की जांघको पानी के भीतर एक मगरने पकड़ली उसको देखकर द्रोणाचार्य ने सब शिष्यों से कहा कि इस मगरको मारकर मुझको छुटाओ ११। १३ यद्यपि उनको आप भी छूटने की सामर्थ्य थी उनकी बार्त को सुनतेही अर्जुनने पांच बाण मारकर उस ग्राहके पांच टूक करदिये और उसने मरकर उनकी जांघको छोड़दिया और दूसरे जितने शिष्य थे सब मारे डरके जहां तहां भाग गये अर्जुन का यह कर्म देखकर द्रोणाचार्य बहुत प्रसन्न हुये और उसको सब शिष्योंसे अधिक मानने लगे १४। १७ इसके पीछे द्रोणाचार्य ने अर्जुन को महाबलवान् और पात्र जानकर कहा कि हे अर्जुन अब हम तुझको ब्रह्मशरनाम अस्त्र प्रयोग संहारसहित देते हैं इस अस्त्र को तू मनुष्योंपर मत चलाइयो क्योंकि यह थोड़ा आधार पाने से जगत् को भस्म करदेगा हां जब कभी लड़ाईमें कोई बलवान् शत्रु आजावै तब इसको चलाइयो १८। २१ यह

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सुनकर अर्जुन हाथ जोड़कर गुरु के सन्मुख खड़ा होगया और तथास्तु कहकर उस अस्त्र को गुरुसे लेलिया उसके लेने के पीछे गुरुने कहा कि हे अर्जुन ! पृथ्वीपर तेरे समान धनुर्धारी कोई न होगा २२॥

इति श्रीभाषामहाभारते आदिपर्वणित्रयस्त्रिंशत्यधिकशततमोऽध्यायः १३३॥

एकसौचौंतीस का अध्याय।

द्रोणाचार्यका धृतराष्ट्र से कहकर राजपुत्रों के शस्त्राभ्यास की परीक्षा के लिये रंगभूमि बनावना और नियत दिनमें वहां जाकर सब राजपुत्रों का अपना २ शस्त्राभ्यास दिखाना॥

वैशम्पायनजी बोले हे राजा जनमेजय ! जब द्रोणाचार्य ने देखा कि धृतराष्ट्र के सब पुत्र और पांडव सब अस्त्र विद्या सीख चुके तब एक दिन राजा धृतराष्ट्र की सभा में जहां वाह्लीक, कृपाचार्य, सोमदत्त, भीष्म, विदुर और व्यासजी बैठे थे जाकर धृतराष्ट्र से बोले कि आपके सब पुत्र अब अस्त्रविद्या सीख चुके हैं और आपको अपना अभ्यास जो हमसे पाया है दिखाया चाहते हैं आप उनकी शस्त्रशिक्षा को देखिये १। ३ यह सुनकर धृतराष्ट्र बहुत प्रसन्न हुये और बोले कि आपने यह बड़ा अद्भुत कर्म किया है अब जिस दिन जिस घड़ी जिस स्थान पर जो जो विधान आपको चाहिये सो मुझसे कहिये हम भी नेत्रवाले मनुष्यों को आपके शिक्षा किये हुये अस्त्राभ्यास को दिखाया चाहते हैं ४। ६ धृतराष्ट्रने द्रोणाचार्य से यह कहकर विदुरजीको आज्ञादी कि तुम द्रोणाचार्यजी के साथ जाकर जो जो वह बतावें सो सो करो हमको यह बात बहुत प्रिय जान पड़ती है विदुरजी यह सुनकर तुरंत वहां से द्रोणाचार्य जी के साथ बाहर आये और पृथ्वी को देखने लगे उपरांत एक ऐसे स्थान पर जहां पृथ्वी सब बराबर थी नदी का किनारा था और वृक्ष घास अथवा झाड़ी झंकार कुछ न था वहां अच्छी तिथि और नक्षत्र में बलिकर्म कराया और समाज का डिण्डिमराव (डोंड़ी) फिरवाकर उस स्थान पर शास्त्रकी रीति से सुन्दर रंगभूमि बनवाई स्त्री और राजा और धनाढ्य और अन्य प्रजालोगोंके लिये विदुरजी ने यथायोग्य स्थान और ऊंचे नीचे मंच बनवाये और वहां अनेक २ प्रकार के अस्त्र शस्त्र रखवा दिये जब वह रंगभूमि बनचुकी तब उस दिनके आने पर जिस दिनके निमित्त डिण्डिमराव अर्थात् डोंड़ी पिटवाई थी राजा सुन्दर मोतियों की माला सुवर्ण के आभूषण और हरी मणियों को

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पहिने हुये भीष्मजी कृपाचार्य और मंत्रियोंको आगे करके उस रंगभूमिमें आये और गांधारी कुंती और राजा के कुल की स्त्रियां भी अपनी २ दासियों सहित वहां आकर ऊंचे २ मंचों पर इस प्रकार से चढ़कर बैठगईं जैसे देवताओं की स्त्रियां सुमेरु पर्वत पर चढ़ती हैं और सम्पूर्ण पुरवासी और ब्राह्मण लोग राजपुत्रों के अस्त्राभ्यास को देखने के लिये वहां पर झुंड के झुंड आकर रंगभूमि में बैठगये उस समय वहां अनेक प्रकार के बाजे बजने लगे और सभा कौतुकी मनुष्यों के कारण से समुद्रकी तरह चलायमान होने लगी ७। १८ इसके पीछे द्रोणाचार्यजी श्वेत माला जनेऊ और वस्त्र पहिने हुये श्वेत चन्दन लगाये उस सभा में अपने पुत्र के साथ आये और इस प्रकार से बैठ गये जैसे निर्मल आकाश में मंगल सहित चन्द्रमा दिखाई देता है उन्होंने आकर समय के आने पर क्षेत्रपूजा की और ब्राह्मणों ने मंगलरूपी मंत्र पढ़े इस कर्म के समाप्त होने पर द्रोणाचार्य की आज्ञा से युधिष्ठिरादिक सब शिष्य अपने अपने शस्त्र अस्त्रों को धारण करके रंगभूमि में गये और अपना अपना अस्त्राभ्यास दिखाने लगे १९। २४ बाणों के चलने पर बहुत मनुष्यों ने भय से अपने शिर नीचे को झुका लिये और बहुत से उनके कर्मों को आश्चर्य कर करके निर्भय देखते रहे पहिले उन सबों ने घोड़ों पर चढ़कर अनेक प्रकार से बाण लगाने की हस्तक्रिया दिखाई और अपने २ नामांकित बाणों से अनेक लक्ष्य अर्थात् निशानों को उड़ादिया उपरांत हाथी और रथ आदिपै बैठ बैठकर तिरछे ऊंचे और घूमते हुये निशानों के उड़ाने में बाण मारने की अदक्षण, मंडल, जाना, आना आदि अनेक चालें दिखलाईं २५। २९ इस के पीछे तलवार और ढाल ले लेकर अनेक चालोंके प्रयोग करने लगे और अपनी अपनी चतुरता शोभा निडरता और शीघ्रता दिखाने लगे ३०। ३१ इसी अवसरमें भीमसेन और दुर्योधन अपनी अपनी गदा ले लेकर मत्तहाथियों के समान गर्जते हुये रंगभूमि पर गये और दहिने बायें मंडलों सहित गदायुद्ध की चालें दिखलाने लगे उन सबों के कर्मों को कुंती गांधारी से और विदुरजी धृतराष्ट्र से कहते जाते थे ३२। ३३॥

इति श्रीभाषामहाभारते आदिपर्वणि चतुस्त्रिंशत्यधिकशततमोऽध्यायः १३४॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

एकसौपैंतीस का अध्याय।

भीमसेन और दुर्योधनका गदायुद्ध की परीक्षा देना और अर्जुनके सब अस्त्रों में परीक्षा देकर अनेक लक्ष्य भेदनेकी कथा॥

वैशम्पायनजी बोले हे राजा जनमेजय! दुर्योधन और भीमसेनके भयानक गदायुद्ध होनेपर वहां के मनुष्य पक्षपात के स्नेह से दोप्रकार के होगये भीमसेनकी ओरवाले भीमसेनका और दुर्योधनके संगी दुर्योधनका नाम ले लेकर एक दूसरेसे प्रबल निर्बल देखकर यों पुकारने लगे हाय भीमसेन हाय दुर्योधन १। २ द्रोणाचार्य उनका यह हाल देखकर अपने पुत्रसे बोले कि तू जाकर इन दोनों का युद्ध बन्द करादे यह सुनकर अश्वत्थामा रंगभूमि में चलागया और क्रोधसे गदा उठाये हुये उन दोनों के बीचमें खड़ा होकर दोनोंका युद्ध बंद करादिया इसके पीछे द्रोणाचार्यने मेघके समान बजते हुये बाजोंको बंद करादिया और रंगभूमि में जाकर सबसे पुकारकर कहा कि तुम लोग अब अर्जुनका अस्त्राभ्यास देखो जो मुझको पुत्रसे भी अधिक प्यारा और विष्णुके समान पराक्रमी और शस्त्रवेत्ताहै ३। ७ यह सुनकर सब मनुष्य अर्जुन को देखने लगे जो सोनेका कवच और बाणोंसे भरा हुआ तर्कस हाथोंकी अंगुलियों में चमड़े के मोजे पहिने हुये रंगभूमिमें सूर्य इन्द्रधनुष् बिजुली और संध्या रहित मेघकी समान खड़ा हुआ था उसको देखकर सब मनुष्य कहने लगे कि यह तो युधिष्ठिर है वह भीमसेनहै और इन दोनोंसे छोटा यह अर्जुन है यह सब शास्त्री धर्मात्मा शीलवान् और ज्ञानियों में सबसे श्रेष्ठ है कुन्ती यह सुनकर बहुत प्रसन्न हुई और उसके पयोधरोंसे दूधकी धार बहने लगी ८। १३ उससमय उस मनुष्यों के बड़े कोलाहलको सुनकर धृतराष्ट्रने विदुरजीसे पूछा कि रंगभूमि में यह आकाशको फाड़नेवाले बड़े शब्द के होने का क्या कारण है विदुरजी बोले कि राजा पांडुका अर्जुन नामी पुत्र अब परीक्षा देने को रंगभूमिमें गयाहै उसका यह शब्द है १४। १६ यह सुनकर धृतराष्ट्र बोले कि आज मैं धन्यहूं कुन्ती के ये तीनों पुत्र अग्निके समान उत्पन्न हुये हैं १७ वैशंपायनजी बोले हे राजा जनमेजय! उस सभाके कोलाहलके शांत होने पर अर्जुन द्रोणाचार्य अपने गुरुको अस्त्रों की लाघवता दिखाने लगा पहले अग्निअस्त्र छोड़कर अग्नि उत्पन्न की फिर वारुणास्त्र छोड़कर पानी उत्पन्न करके उस अग्निको शांत किया फिर वायव्यास्त्रसे वायु और पर्जन्य अस्त्रसे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

चारों ओर मेघ प्रकट करदिये फिर भौमास्त्र छोड़कर पृथ्वी में घुसगया और पर्वतास्त्र से अपना शरीर पर्वतके समान कर दिखाया इसके पीछे अन्तर्धान अस्त्रसे अन्तर्धान होगया १८। २० इस प्रकारसे उसने क्षणमें छोटा क्षण में बड़ा क्षणमें रथकी धुरीपर क्षणमें रथके भीतर और क्षणमें पृथ्वीके ऊपर खड़ा हो २ कर अनेक अस्त्रों की परीक्षा दी उपरांत बड़े सूक्ष्म और भारी लक्ष्य अर्थात् निशानों को बाणोंसे भेदा २१। २२ एक लोहेका शूकर बनवा-कर भ्रामकयंत्र पर रखदिया गया अर्जुनने उस यंत्रपर घूमते हुये उस शूकर के मुखमें पांच बाण एकसे मारकर उसका घूमना बन्द करदिया और रस्सी के समान लम्बे और ऐंठे हुये गोविषाण अर्थात् गोसम्बन्धी सींगोंके छिद्रमें होकर अर्जुन ने २१ बाण निकाले इसप्रकार से अर्जुनने बहुतसे लक्ष्य भेदे और मण्डल बांध २ कर तलवार और गदायुद्धकी शिक्षा दिखाई २३। २५ जब अर्जुन परीक्षा देचुका और बाजे बजना और मनुष्योंके बोलनेका कोलाहल बन्द होगया तब रंगभूमि के मुखपर अपना बल दिखलानेके लिये भुजाओं पर ताल मारने का वज्रके समान शब्द सुनाई पड़ा उसको सुनते ही सब मनुष्य आश्चर्य से रंगभूमिके दरवाजेकी ओर देखने लगे और कहने लगे यह क्या हुआ पहाड़ फटताहै या पृथ्वी फटती है अथवा मेघ गर्जता है २६। २९ उससमय द्रोणाचार्य पांचों पांडवों सहित ऐसे शोभायमान देख पड़ते थे जैसे हस्तनक्षत्र के पांचों तारों सहित चन्द्रमा आकाश में दिखाई देता है और अश्वत्थामा और दुर्योधनके सब छोटे भाई दुर्योधन को घेरकर बैठगये और वह उनमें ऐसा दीखने लगा जैसे देवताओं में बैठा हुआ इन्द्र दीखताहै ३०। ३२॥

इति श्रीभाषामहाभारते आदिपर्वणि पंचत्रिंशत्यधिकशततमोऽध्यायः १३५॥

एकसौछत्तीस का अध्याय।

कर्णका रंगभूमि में जाकर अपना अस्त्राभ्यास दिखाना और अर्जुन से द्वन्द्वयुद्ध मांगना और दुर्योधनको कर्णका अंग राज्याभिषेक करना॥

वैशंपायनजी बोले कि जब रंगभूमिमें से मनुष्य चलने लगे और कुछ अवकाश हुआ तब कुन्ती के कन्यापने में सूर्य के अंशसे उत्पन्न हुआ कर्ण नामी पुत्र आश्चर्य से आंखोंको प्रफुल्लित किये हुये उस सभामें आया उस समय वह स्वाभाविक कवच धारण किये हुये था शरीर पर्वत के समान

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

और मुख कुंडलों से प्रकाशमान होरहा था तलवार और धनुष लिये हुये वह सिंह और बड़े हाथियों की समान पराक्रमी सूर्य चन्द्रमा और अग्निके समान मालूम होता था उससे उसकी आभा उस समय ऊंचे सुवर्ण के तालके वृक्षके समान थी १।५ उसने रंगभूमिमें आतेही चारों ओर देख कृपाचार्य और द्रोणाचार्य को बड़े आदर से नमस्कार किया उसको देखकर सब मनुष्य चकित होगये और कहने लगे कि यह कौन वीर कहां से आया है उस समय कर्ण मेघके समान गर्जता हुआ बोला कि हे अर्जुन! जो काम तैंने इस समय किया है उससे अधिक करके हम मनुष्यों को दिखाते हैं यह सुन कर सब मनुष्य जहां के तहां खड़े रहगये और अर्जुन को लज्जा और क्रोध हुआ ६।१० इसके पीछे द्रोणाचार्य की आज्ञासे कर्णने वह सब कर्म जो अर्जुनने किया था करके सब मनुष्योंको दिखाया यह देखकर दुर्योधन ने भाइयों सहित प्रसन्न होकर कर्ण को छातीसे लगालिया और बोला कि तेरा आना अच्छा हुआ तू मान खण्डन करनेवाला है मेरे पास जो कुछ राज्य और संपत्ति है उसको जैसे चाहो वैसे भोग यह सुनकर कर्ण ने कहा कि तुम्हारी जो मित्रता हमारे साथ है वही सब कुछ है हम अब अर्जुन से द्वन्द्वयुद्ध करना चाहते हैं ११।१४ दुर्योधन बोला कि मेरे साथ रहकर जो इच्छा में आवै सो भोग भोगो और शत्रुओं के शिरपर पैर रक्खो १५ वैशंपायनजी बोले हे राजा जनमेजय! कर्ण की उक्त बातों को सुनकर अर्जुन अपना अपमान समझकर बोला कि जो मनुष्य विना बुलाये आता है और विना पूंछे कुछ कहता है उसके जाने का जो लोक है उसी लोक को मैं तुझे अभी मारकर भेजता हूं १६।१७ यह सुनकर कर्ण बोला कि यह रंगभूमि सबको एकसी है इसमें तेरा क्या विशेष है जो बल में अधिक होता है वही राजा है और क्षत्री का धर्म भी बलही है इससे वृथाकी बातों के कहने से क्या होता है जो कुछ बल रखता है तो बाणों से बातकर अभी गुरु के सामने तेरा शिर काटे डालता हूं १८।१९ वैशंपायनजी बोले इसके पीछे गुरु से आज्ञा और भाइयों से प्यार किये जाने पर अर्जुन कर्ण से युद्ध करने को उठकर चला और कर्ण भी दुर्योधन से प्यार किये जाने पर धनुषबाण लिये हुये युद्ध के लिये खड़ा होगया उस समय आकाश में बादल छागये और बिजली चमकने लगी और अर्जुन की प्रीति से इन्द्र उन दोनों का युद्ध वहां देखने को

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आये इन्द्र को देखकर सूर्य भी वहां चले आये और बादलों के अंधेरे को दूर कर दिया उस समय यह सबने देखा कि जहां २ अर्जुन जाता था तहां २ उसपर बादल की छाया रहती थी और जहां २ कर्ण जाता था तहां २ उसपर सूर्य का प्रकाश रहता था जिधर अर्जुन खड़ा हुआ था उधर द्रोणाचार्य कृपाचार्य और भीष्मजी जाकर खड़े होगये और जिधर कर्ण खड़ा था उधर धृतराष्ट्र के सब पुत्र जा खड़े हुये उस समय सब रंगभूमि दो प्रकार की होगई और स्त्रियों में भी दो भाग होगये कुंती अपनेही उन दोनों पुत्रों को युद्ध करने को खड़े हुये देखकर मोहित होगई विदुरजी ने उसपर चन्दन का जल डालकर स्वस्थ किया और वह मन मारकर रहगई कुछ न करसकी २०। २७ उन दोनों को धनुष चढ़ाये हुये युद्ध के लिये उद्यत देखकर कृपाचार्य बोले कि हे कर्ण! अर्जुन कुंती का छोटा पुत्र और पांडु का बेटा है तू भी अपने माता पिता और कुल का नाम बतला उसको जानकर अर्जुन तेरे साथ युद्ध करैगा या न करैगा क्योंकि राजाओं के लड़के वृथाकुल समाचारवालों से द्वंद्वयुद्ध नहीं करते हैं २८। ३१ यह सुनके कर्ण लज्जामान होकर नीचे को शिर झुका के चुप होरहा उस समय दुर्योधन बोला कि हे कृपाचार्यजी! संसार में राजा तीन प्रकार के होते हैं एक कुलीन दूसरा शूरवीर और तीसरे सेनाधीश सो जो अर्जुन इसको अपनी समान न समझकर इससे युद्ध करना नहीं चाहता तो मैं अभी इसका राज्याभिषेक करता हूं ३२। ३४ वैशंपायनजी बोले कि दुर्योधन ने यह कहकर उसी क्षण सोने के कलश और फूल और खील आदि राज्याभिषेक की सामग्री मँगाकर कर्ण को सिंहासन पर बैठाया और मंत्र जाननेवाले ब्राह्मणों से उसका अंग राज्याभिषेक कराया और सबों ने जय शब्द उच्चारण किया ३५। ३६ यह देखकर कर्ण दुर्योधन से बोला कि इस राज्याभिषेक के कराने के बदले में मैं तुमको क्या दूं दुर्योधन बोला कि मैं तुमसे अत्यन्त मित्रता चाहता हूं ३७। ३८ कर्ण बोला कि ऐसाही होगा यह कहकर दोनों बड़े आनन्द से मिले ३९॥

इति श्रीभाषामहाभारते आदिपर्वणि षट्त्रिंशत्यधिकशततमोऽध्यायः १३६॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

एकसौसैंतीस का अध्याय।

कर्णको सूतपुत्र जानकर भीमसेन का हँसना और सूर्य अस्त होनेपर सब मनुष्यों का अपने २ घर चला जाना ॥

वैशंपायनजी बोले हे राजा जनमेजय! कर्णका अभिषेक होने के पीछे वहां अधिरथनाम कर्ण का पिता सब अंग शिथिल कँपता हुआ और पसीने में डूबा हुआ पहुँचा कर्ण ने उसे देखकर उसके पैरों पर अपना शिर रखदिया और उसने पुत्र ऐसा कहकर शिरको उठाकर छाती से लगा लिया और अपने प्रेम के आंसुओं से उसके अभिषेकित शिरको सींचा १। ४ यह देखकर भीमसेन उसको सूतका बेटा जानकर हँसकर बोला कि तू अर्जुन से युद्ध में मारेजाने के योग्य नहीं है तू मनुष्यों में नीचहै तुझको अपने कुलके अनुसार दण्ड ग्रहण करना चाहिये तू अंगराज्य के भोगने के भी योग्य नहीं है क्योंकि कुत्ता कभी भी यज्ञमें भाग पाने के योग्य नहीं होसक्ता ५। ७ यह सुनकर क्रोधके मारे कर्ण के ओठ फड़कने लगे और वह श्वास भरकर आकाश में सूर्यकी ओर देखने लगा८ उस समय दुर्योधनने बड़े क्रोध से भाइयों के बीच में से उठकर कहा कि भीमसेन तुमको यह बात कहनी उचित नहीं है ९। १० क्षत्री वही है जो बलमें अधिक है क्षत्री और नदियों की उत्पत्ति कठिनता से जानी जाती है देखो अग्नि पानी से उत्पन्न हुआ है और सब जगत् में व्यापक है और वज्र दधीचि ऋषिकी हड्डियों से बना है और उससे बड़े २ बलवान् दैत्य मारे गये और कौशिकादिक बहुतसे मनुष्य क्षत्रियों से उत्पन्न हुये और फिर ब्राह्मण होगये और द्रोणाचार्य महाराज का जन्म द्रोणनाम यज्ञपात्र से और कृपाचार्य का शरसे हुआ है परंतु देखो कैसे अस्त्रशस्त्र आदिक सब विद्याओं के ज्ञाता हैं इनके सिवाय तुम्हारे जन्म का भी हाल हम जानते हैं तुम यह नहीं देखसकते कि कुंडल कवच पहिरे हुये सूर्य के समान तेजस्वी व्याघ्ररूप कर्णको हिरणीरूप माता भी कहीं जनसकती है अंगराज्य तो कहां रहा कर्ण पृथ्वी का राज्य करने के योग्य है ११। १७ और जो कोई मेरी इस बातको न सह सके वह रथपै चढ़कर हाथमें धनुष् बाण लेकर खड़ा होजावे यह सुनकर सब रंगभूमि में हाहाकार मचगया और साधुवाद की धुनिके साथ सूर्य अस्त होगये १८। १९ उस समय उस रंगभूमि से दुर्योधन कर्ण के हाथ में हाथ डाले हुये मसाल जलवा कर चलागया और भीष्मजी द्रोणाचार्य कृपाचार्य और पांडवोंसहित अपने २ डेरोंको गये २०। २१

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

और जो प्रजालोग वहां आये थे वे सबभी कोई अर्जुनकी कोई कर्ण की और कोई २ दुर्योधन की प्रशंसा करते हुये अपने २ घरोंको गये २२ कुंती कर्णको दिव्यलक्षणोंसे युक्त देखकर और पुत्र जानकर गुप्तप्रीति करने लगी २३ कर्णसे मित्रता होनेपर अर्जुनसे जो दुर्योधन को डर था वह जाता रहा और युधिष्ठिरने यह अनुमान किया कि कर्णकी बराबर दूसरा धनुषधारी संसारमें नहीं है उससमय कर्णने दुर्योधनको अनेक २ बातें कहकर प्रसन्न किया २४। २५॥

इति श्रीभाषामहाभारते आदिपर्वणि सप्तत्रिंशत्यधिकशततमोऽध्यायः १३७॥

एकसौअड़तीस का अध्याय।

द्रोणाचार्य का सब कौरव और पांडवों से यह गुरुदक्षिणा मांगना कि हमको राजा द्रुपदको पकड़कर देदो इसपर सब कौरव और पांडवों को द्रुपद से युद्ध करने जाना और अर्जुन का द्रुपद को पकड़कर द्रोणाचार्य को देना॥

वैशम्पायनजी बोले हे राजा जनमेजय! कुरु और पांडव दोनोंको अस्त्रविद्यामें अच्छीतरह निपुण देखकर द्रोणाचार्य ने एक दिन सबको बुलाया और कहा कि अब तुम सब मिलके हमको यह गुरुदक्षिणा दो कि राजा द्रुपदको पकड़ लाकर हमको देदो यह सुनकर सब कुरु और पांडव अपने २ रथों में सवार होकर द्रोणाचार्यके साथ होलिये और राजमार्गसे सेनाको लियेहुये पांचाल देशको मर्दतेहुये राजा द्रुपदके नगरमें पहुँचे और दुर्योधन, कर्ण, युयुत्सु, दुःशासन, विकर्ण, जलसंध, सुलोचन और अन्य २ कुमार यह कहने लगे कि पहिले हम युद्ध करेंगे १। ८ उनके आनेका हाल सुनकर राजा द्रुपद रथ पर चढ़कर भाइयों सहित बाणोंकी वर्षा करता हुआ नगरके बाहर निकल आया और कौरवभी उसे देखकर अपने रथोंपरसे उसपर बाण चलाने लगे ९। ११ वैशम्पायनजी बोले कि युद्ध प्रारम्भ होने के पहिले अर्जुन द्रोणाचार्य से यह कहकर कि द्रुपदको कौरव नहीं पकड़सक्ते हैं इनका अभिमान दूर होनेपर हम जाकर युद्ध करके पकड़कर लावेंगे नगरसे आधकोस उत्तीतरफ भाइयों सहित ठहर गया १२। १४ इसकेपीछे राजा द्रुपद कौरवोंकी सेनामें घुसकर युद्ध करने लगा और अपने तीक्ष्ण बाणों से दुर्योधन कर्ण विकर्ण और २ राजपुत्रों को व्याकुल करदिया और सब सेनामें बनेठी की तरह घूम २ सबके छक्के छुटादिये दुर्योधन, विकर्ण, सुबाहु, दीर्घलोचन और दुःशासन आदि ने भी क्रोध करके राजा द्रुपदको बाणों से छायादिया परन्तु राजा द्रुपद ने ऐसे तीक्ष्ण बाण मारे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कि सब कौरवलोग सेनासहित हृदय में हार मानगये उसी समय सब नगरवासी लट्ठ और मूशल आदि अनेक २ हथियार लेकर कौरवोंकी फौजसे सिंहनाद कर २ के लड़ने लगे उनके शब्द और धनुष की टंकारसे आकाश शब्दित होनेलगा थोड़ी देरतक उन दोनोंमें बड़ा युद्ध हुआ उपरान्त सब कौरव और कौरवोंकी सेनाके मनुष्य द्रुपदके बाण और नगरवासियोंके प्रहारोंसे व्याकुल होकर हाहाकार करतेहुये पाण्डवोंकी ओर भागे १५। २२ उनकी आर्तवाणी सुनकर अर्जुन प्रसन्न होगया और गुरुजी के चरणोंको छूकर रथपर बैठकर दिशाओंको शब्दित करता हुआ युद्ध करनेको वहांसे चलदिया चलते समय अर्जुनने युधिष्ठिरसे कहा कि आप युद्ध करने को मत चलिये भीमसेन सेनाके आगे रहैंगे और नकुल और सहदेव सेना की रक्षा करैंगे यह सुनकर भीमसेन सेनाके आगे होकर गदा हाथमें लिये हुये पांचाली सेनामें समुद्रमें मगरके समान घुसगया और हाथियों की सेनाके सम्मुख जाकर वज्ररूपी गदासे हाथियोंको मारने लगा वह हाथी भीमसेनकी गदाके प्रहारसे मर मरकर गिरनेलगे बहुतों के अंगसे लोहू चूने लगा बहुतों के माथे फटगये और बहुतों की टांगें टूटगईं इसके पीछे भीमसेन घोड़े रथ और प्यादे सबको मार २ कर गिराने लगा और वह सब उसकी गदाके प्रहारके भयसे इस प्रकार से फिरने लगे जैसे ग्वालोंकी लाठीके भयसे वनमें पशु फिरा करते हैं २३। ३० वैशम्पायनजी बोले हे राजा जनमेजय! भीमसेन तो इस प्रकारसे राजा द्रुपदकी सेनाको मारता रहा और अर्जुन द्रोणाचार्यका प्रिय करनेके लिये रथको बढ़ाकर राजा द्रुपदके सम्मुख गया और बाणोंकी वर्षा करके रथ हाथी प्यादे और सवारोंको मार २ कर गिराने लगा यह देख पांचाली सृंजयलोगोंने बड़े क्रोधसे बाण मार २ सिंहनाद कर करके अर्जुनका रथ चारों ओर से बाणोंसे छायदिया अर्जुन उनके सिंहनादको न सहसका और अपने तीक्ष्णबाणों की वर्षासे सबको मोहित करके भगादिया उस समय अर्जुन ने हाथको ऐसा लाघव किया कि बाण लेने और छोड़ने में अन्तर नहीं जाना जाता था ३१। ३६ यह देखकर सत्यजित राजा द्रुपदको साथ लेकर अर्जुनपर दौड़ा अर्जुनने उससमय बाणोंसे राजा द्रुपदको ढकदिया और उसकी सेनामें यह शब्द मचगया कि अर्जुन द्रुपदको इसप्रकारसे पकड़ा चाहताहै जैसे सिंह हाथियोंके बीचमें गजनाथको पकड़े ३७। ३६ यह देखकर सत्यजित द्रुपदकी रक्षाके लिये अर्जुनकी ओर दौड़ा और अर्जुन और

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

द्रुपद एक दूसरे की सेनाको मार मारकर भगाने लगे सत्यजितके पास आने पर अर्जुनने दश बाण मारकर उसके मर्मस्थानोंको छेदडाला उसने यह देख कर आश्चर्य किया और सौबाण मारकर अर्जुनको ढकदिया अर्जुनने अपने धनुषकी प्रत्यञ्चाको और चढ़ालिया और तीक्ष्ण बाण मारकर सत्यजितका धनुष काट डाला सत्यजितने दूसरा धनुष लेकर अर्जुनको घोड़े रथ और सारथी सहित बाण मारकर व्याकुल किया अर्जुन इस बातको न सहसका और जल्दीसे अपने बाणोंसे सत्यजितका धनुष काटकर उसके रथके सारथी और घोड़े मारडाले इसके पीछे घोड़ोंके बारम्बार मारेजाने और धनुषके कटनेके कारण से सत्यजित अर्जुन के सम्मुख से लड़ना छोड़कर भागगया ४०।४७ यह देखकर राजा द्रुपद अर्जुनपर बाणों की वर्षा करता हुआ दौड़ा और अर्जुन ने उससे बड़ा युद्ध करके उसका धनुष और ध्वजा काट डाली और पांचबाणों से उसके रथके घोड़े और सारथी को मारकर धनुषबाण हाथसे छोड़ हाथमें तलवार लेकर राजा द्रुपद के पकड़नेके लिये उसके रथपर चढ़ गया और बड़ा सिंहनाद करके द्रुपदको पकड़लिया यह देखकर राजा द्रुपद की सब सेना भागगई और अर्जुन द्रुपदको पकड़हुये सेनाको अपना बल दिखलाने को सिंहनाद करता हुआ सेनाके बाहर आया ४८।५४ अर्जुन को देखकर सब कुमार राजा द्रुपदकी सेनाको मारनेलगे उस समय अर्जुन ने भीमसेन से कहा कि राजा द्रुपद राजाओं में श्रेष्ठ और हमारे कुलका सम्बन्धी है उसकी सेनाको अब मारने से क्या है चलो गुरु महाराज को गुरुदक्षिणा देवें यह सुनकर भीमसेनने युद्ध करना बन्द करदिया और दोनों ने द्रुपद को मन्त्रियों सहित लेजाकर गुरुजी के सम्मुख खड़ा करदिया ५५।५८ द्रोणाचार्य उसको उस प्रकार से अपने सम्मुख खड़ा देखकर बोले कि मैंने तेरे देशको आज मीड़कर जीतलिया है और तू जीता जी पकड़ा गया है अब कह कुछ पुरानी मित्रता का फल चाहता है या नहीं यह कहकर द्रोणाचार्य बहुत हँसे और फिर कहा कि हम ब्राह्मण क्षमावान् हैं तू अपने प्राणों का भय मत करै और बालक अवस्था की मित्रता के कारण से फिर तुझ से मित्रता करना इस प्रबंध के साथ चाहताहूं कि गंगाके दक्षिण ओर के देशों में तू राज्य कर और उत्तर ओर के देशों में मैं राज्य करूंगा मैंने राज्यका यह प्रयत्न इस कारणसे किया है कि विना राज्यवाला राजाका मित्र नहीं हो

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सक्ता जैसा कि तैंने मुझसे कहा था ५६। ६५ यह सुनकर राजा द्रुपद बोला कि पराक्रमी और महात्माओं के लिये यह कुछ आश्चर्यकी बात नहीं है मैं भी प्रसन्नहूं और आपसे सदैव प्रीति चाहताहूं ६६ वैशम्पायनजी बोले कि राजा द्रुपदके ऐसे कहनेपर द्रोणाचार्य ने उसको छुड़ादिया और उसने भी आदरपूर्वक द्रोणाचार्य को आधा राज्य बांटदिया और उस दिनसे माकंदी और कांपिल्यनगरोंका राज्य जो गंगाके उत्तरतटपै है द्रोणाचार्यने किया और दक्षिणओर के सब देशोंका राज्य चर्मण्वती नदी तक द्रुपदके पास रहा ६७। ६८ इसके पीछे द्रोणाचार्य अहिछत्रनाम नगरमें बसकर राज्य-शासन करने लगे और राजा द्रुपद अपनी हार ब्रह्मबलसे मानकर एकपुत्र होने के लिये फिरने लगा ७०। ७२॥

इति श्रीभाषामहाभारते आदिपर्वण्येकषष्ट्यधिकशततमोऽध्यायः १३८॥

एकसौउन्तालीस का अध्याय।

द्रोणाचार्य का अर्जुन को ब्रह्मास्त्र देना और अर्जुनका बड़े बड़े राजाओं को युद्धमें जीतकर धन लाना और पांडवोंकी शूरता देखकर धृतराष्ट्र का चित्त उदास होना॥

वैशंपायनजी बोले हे राजा जनमेजय! एकसाल बीतनेपर राजा धृतराष्ट्र ने युधिष्ठिर को सूधा क्षमावान् दयावान् प्रजापालक और सुकर्मी देखकर युवराज करदिया और उसने अपने विनयादि गुण और प्रजाके समाधान से थोड़ेही दिनोंमें अपने पिताकी कीर्ति को छिपादिया और पिता से अधिक यशस्वी होगया १। ३ और भीमसेन तलवार और गदायुद्ध बलराम जी से सीखकर बड़ा प्रबल होगया ४। ५ और अर्जुन के समान क्षुर, नाराच, भल्लविपाठ और अनेकप्रकार के टेढ़े और सीधे बड़े और छोटे बाण आदिको जल्दी लेने और छोड़ने में और मुट्ठीमें दृढ़तासे पकड़ने में दूसरा मनुष्य न था इस बातको द्रोणाचार्य ने देखकर एकदिन कौरवोंकी सभामें अर्जुन को बुलाकर कहा कि अगस्त्यजी के शिष्य अग्निवेशनाम ऋषि हमारे गुरु थे उन्होंने हमको पात्र जानकर वज्रके समान ब्रह्मशरनाम अस्त्र यह कहकर दिया था कि यह अस्त्र पृथ्वी को भस्म करसक्ता है इसको तुम थोड़े और अल्प पराक्रमी मनुष्यों पर मत छोड़ना वही ब्रह्मास्त्र हम तुमको पात्र और तेरे समान दूसरेको न देखकर देते हैं तूभी मुनीश्वरकी आज्ञाके अन्यथा मत

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

करियो अब तू हमको सब कौरवों के सम्मुख गुरुदक्षिणा दे अर्जुन बोला बहुत श्रेष्ठ जो आज्ञा हो द्रोणाचार्यने कहा कि युद्धके प्राप्त होनेपर तू हमारे साथ युद्ध करियो यह सुनकर अर्जुनने युद्धकी प्रतिज्ञा की और गुरुजी के चरणों को छूकर उत्तर दिशाको चलागया ६। १३ और उसकी यह प्रशंसा समुद्र पर्यंत पृथ्वीपर फैलगई कि अर्जुनके समान धनुषयुद्ध गदायुद्ध खड्ग-युद्ध और रथयुद्धमें दूसरा मनुष्य नहीं है १४। १५ और सहदेव द्रोणाचार्य से नीति अच्छीतरह से पढ़कर भाइयोंके पास भाइयोंकी आज्ञामें रहने लगा और नकुल भी द्रोणाचार्य से सब विद्या सीखकर चित्रयोधीरथी विख्यात होगया १६। १७ अर्जुन ने उत्तरदिशा में जाकर सौवीरनाम राजाको जिस ने गन्धर्वों के उपद्रव में तीन वर्षतक यज्ञ किया था और जिसे राजा पांडु भी न जीत सका था युद्धमें जीतकर मारडाला १८। २० और दत्तामित्र, सुमित्र और सौवीरनाम राजाओंकोभी बाणयुद्धसे जीत करके यमपुर भेजदिया २१ इसके पीछे अर्जुन भीमसेन को अपनी सहायता के लिये लेजाकर पूर्व और दक्षिण दिशाओं को गया और वहां के सब राजाओं को जीतकर बहुतसा धन लाया पहिले इसी प्रकार राजा पांडु भी दूसरे राजाओं को जीतकर धन लाया था २२। २४ पाण्डवों की शूरता और धनुर्विद्या की निपुणता को देखकर धृतराष्ट्र का चित्त अकस्मात् पाण्डवों की ओर से बिगड़गया और उस चिन्ता में उसको रात्रिको नींद आना बन्द होगया २५॥

इति श्रीभाषामहाभारते आदिपर्वण्येकोनचत्वारिंशत्यधिकशततमोऽध्यायः १३९॥

एकसौचालीस का अध्याय।

राजा धृतराष्ट्र का अपने कणिक मंत्री से पांडवों के साथ विग्रह अथवा संधि करने का मंत्र पूछना और कणिकका धृतराष्ट्र से राजनीति धर्म कहना॥

वैशम्पायनजी बोले हे राजा जनमेजय! राजा धृतराष्ट्र को पाण्डवों की ओर से चिन्ता होनेके पीछे एकदिन उसने अपने कणिकनाम मंत्रीको बुलाकर कहा कि पाण्डव दिनप्रति बढ़ते चलेजाते हैं मुझे उनको देख देखकर ईर्षा होती है इससे संधि और विग्रह का कारण निश्चय करने के लिये तुमको बुलाया है कहो तुम्हारी समझ में क्या आता है १। ३ वैशम्पायनजी बोले कि कणिक राजा धृतराष्ट्र की बात सुनकर प्रसन्न होकर बोला कि मैं राजनीति के अनुसार आपसे कहता हूं आपको उसके अनुसार करना उचित है ४। ५

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

राजा को चाहिये कि हर समय दंड देने को उद्यत रहै अपने पराक्रम को प्रकट करके दिखाता रहै अपना भेद किसीको न दे दूसरेका भेद आप लेले सदैव ऐसी रीति से रहै कि उससे सब डरते रहैं अपने छिद्रको शत्रु न देखने पावै शत्रुके छिद्र को आप देखले जिस दण्डके करने से सब काम सधते हों उसे कभी न भूले और अपने भेदको इस प्रकारसे छिपावै जैसे कछुआ अपने शरीर को छिपा लेता है ६। ८ कभी कोई काम अधूरा न छोड़े जो काम करै सो पूराही करके छोड़ै और शत्रुको कभी शेष न छोड़े क्योंकि पैरका लगा हुआ कांटा समय पर दुःख अवश्य देताहै जो शत्रु अपकारक हो उसको अवश्य मार डाले और जो शत्रु बलवान् होय और विपत्ति पड़ने से भाग गया हो तो मिलने पर उसकोभी अवश्य मारडाले किसी कारण से न छोड़े और जो शत्रु निर्बल भी होय तो उसकोभी न छोड़े क्योंकि अग्निकी छोटीसी भी चिनगारी तृणका संयोग पाने से सब वनके वनको भस्म करदेती है ९। ११ और जो शत्रु अपने से बलवान् विशेष होवे तो अंधा और बहिरा बनकर समय देखा करै और अवसर पानेपर मारने से कभी न चूके जैसे बहेलिया हिरन के मारने को मृतकके समान होकर सोजाता है और समयपर मृगको मारडालता है १२ शत्रुको हर उपाय से मारना चाहिये और साम दाम दंड भेद आदि उपायों से अपने वशमें रखना चाहिये और जो शत्रु दीन होकरके भी शरण आया हो तो भी उसे न छोड़े क्योंकि शत्रुके मारने पर सब भय दूर होजाते हैं और शत्रुके रहने से किसी न किसी समय दुःख अवश्य होता है इससे शत्रु की जड़को सदैव काटा करै और समय मिलनेपर तीन पांच सात जितने शत्रुके पक्षके हों सबको नाशकरै क्योंकि जब वृक्षही जड़से कटगया फिर उसकी शाखा आदि जो उसके आश्रय हैं क्योंकर रह सकती हैं १३। १६ जिस राजाके छिद्रको देखनेवाला शत्रु होता है उसे रक्षित कभी न जानना चाहिये शत्रुसे सदैव डरना उचित है १७ अग्निहोत्र करके अथवा साधुओं का वेष बनाकर जिस प्रकार से हो शत्रुको अपना विश्वास कराकर मारडाले और अपनी फलसिद्धि करै १८। १९ जैसे वृक्ष की डालको झुकाकर फल तोड़ लेते हैं ऐसे ही आप शत्रु से नम्र होकर उसके वधरूपी फलको तोड़ने में चित्त लगाये रहै शत्रुकी सराहना करके शिर पर चढ़ाय ले और समय आनेपर ऐसे मारडाले जैसे पत्थर पर पटक देने से शिरका घड़ा फूट जाता है २० शत्रु चाहे दीन वचन भी बोले परन्तु उसपर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दया कभी करना उचित नहीं है अपकारी को मारना ही श्रेष्ठ है २१ साम दाम दण्ड भेद इन चारों उपायों में से किसी न किसी से शत्रु को अवश्य मारै २२ यह सुनकर धृतराष्ट्र बोले कि शत्रु को इन चारों उपायों से क्योंकर मारना चाहिये २३ यह सुनकर कणिक बोला कि हम आपको वनके रहनेवाले एक शृगालका वृत्तांत सुनाते हैं किसी समय एक स्वार्थपंडित शृगालने एक व्याघ्र एक चूहा एक भेड़िया और एक न्योलेके साथ मित्रता की और वह उन चारों के साथ वनमें रहने लगा एक दिन उनके स्थान के निकट एक हिरन चरता हुआ चला आया उसको देखकर शृगाल उसको पकड़नेकी अपनी सामर्थ्य न देखकर व्याघ्र से बोला कि आपने इस हिरन के मारने को कईबार उपाय किया परन्तु आप इसे कभी न मार सके जो यह हमारा मित्र चूहा जाकर हिरन के पैरों को काटकर उसे लँगड़ा करदे तो आप अवश्य इसे पकड़लें और फिर हम सब आनन्द से बैठकर भोजन करें यह सुनकर चूहे ने हिरन के पैरों को सोते में कुछ एक काटडाला और उसके लंग करने के कारण से व्याघ्रने उसे तुरन्त पकड़ लिया और मारडाला २४। २९ यह देखकर शृगाल उस हिरन के पास जाबैठा और सबसे बोला कि मैं इसको रखा रहाहूं तुम सब जाकर स्नान करआवो तब भोजन करना यह सुनकर वह सब नदी को चले गये और शृगाल अपनी सूरत को चिन्तायुक्त बनाकर वहीं बैठा रहा ३०। ३१ इसके पीछे पहले व्याघ्र स्नान करके आया और शृगाल को उस अवस्था में देखकर बोला कि तू तो बुद्धिमानों में श्रेष्ठ और पंडित है शोच किस बात का कर रहा है आज हम सब मांस खाकर वनमें आनन्दपूर्वक विहार करेंगे ३२। ३३ यह सुनकर शृगाल बोला कि इस समय मुझसे चूहे ने ऐसी बात कही है कि उसे सुनकर मुझे बड़ी ग्लानि होगई है और मेरा चित्त इस मृगके खानेको नहीं करताहै वह कहताहै कि सिंहके बलको धिक्कार है जो आज मेरी भुजाओं के बलसे मारे हुये हिरन को खाकर अपना पेट भरैगा यह सुनकर व्याघ्र बोला कि जो उसने यह कहा है तो मैं अपनेही पराक्रम से मारे हुये जीवों को खाऊंगा यह कहकर व्याघ्र जीवों के मारने को वनमें चला गया ३४। ३७ इसी अवसर में चूहा आया उसको देखकर शृगाल बोला कि भाई इस समय न्योला मुझ से यह कहता था कि मुझ को विषकासा मिला हुआ मृगका मांस अच्छा नहीं लगता है मैं तो चूहे को मारकर खाऊंगा यह

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सुनकर चूहा भयभीत होकर बिल में घुसगया ३८। ४० उसके पीछे भेड़िया स्नान करके वहां आया उसको देखकर शृगाल बोला कि मित्र आज व्याघ्र न जाने किस बात से तुम पर बड़ा क्रोध कररहा है मुझको तुम्हारा कल्याण नहीं दीखता वह अब अपनी स्त्री सहित आयाही चाहता है जो कुछ तुम्हारे विचार में आवे सो करो यह सुनकर भेड़िया अपने शरीर को सिकोड़कर सिंह के डरसे वहांसे चल दिया ४१। ४३ उसके चलेजाने पर न्योला आया उसको देखकर शृगाल बोला कि हमसे आकर पहले युद्ध करो जब हमको तू लड़ाई में जीतले तब पेटभर के मांस खाइयो विना जीते तुझको मांस खाने को नहीं मिलेगा यह सुनकर वह बोला कि तुम बड़े वीर हो तुमने सिंह चूहा और भेड़िये को लड़ाई में जीतकर भगा दिया है मेरी सामर्थ्य तुमसे लड़ने की नहीं है यह कहकर वहभी चला गया ४४। ४६ इतनी कथा सुनाकर कणिक बोला कि महाराज उन सबोंको इस प्रकारसे उस शृगाल ने ठगकर स्वतन्त्रता से बैठकर उस हिरन के मांस को भक्षण किया जो राजा इस प्रकार से आचरण करता है वहभी शृगाल की तरह स्वतन्त्रता से सुख भोगता है ४७। ४८ राजा को सदैव उचित है कि डरपोकने को डर दिखाकर शूरवीर को नम्रता से लोभी को द्रव्यसे और समान वा न्यून को पराक्रम से अपने वश में करै ४९ इसके सिवाय राजा को उचित है कि पुत्र मित्र भाई बाप अथवा गुरु जो कोई अपने शत्रु से जा मिले उसको मारडाले और शत्रुको सौगन्द अथवा द्रव्य या विष देकर जैसे बनै मारडालै और जो गुरु अभिमानी हो और कार्य अकार्य का विचार न करता हो उसेभी कभी न छोड़े ५०। ५३ और शत्रुओं के बीचमें जो आप किसी बातपर क्रोधभी करै तो अक्रोधीसा बनकर हँसकर उत्तर दे शत्रुकी निन्दा तबतक कभी न करै जबतक उसको मार न डाले कभी उससे अप्रिय वचन न कहै और मारने पर कृपा करै शोच करै और रोवै शत्रु को शान्त वचनों से अपना विश्वास दिवावे और जब उसे मार्ग से विमुख देखे उसी समय में अपना प्रहार करै ५४। ५६ बड़ा अपराध करनेपर धर्ममार्ग पर चलनेवाले राजाका वह दोष इस प्रकार से छिपजाता है जैसे काली घटाओं से पहाड़ नहीं दीखता है ५७ राजा को उचित है कि शत्रुको मारकर उसके घरको जला दे और अधम नास्तिक और चोरोंको अपने राज्य में न बसने दे और जब शत्रु आवे तब उसको लेनेजाय और आसन देकर बैठावे और जो

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

धन देने की आवश्यकता हो तो धनभी दे दे और जब पूरा २ विश्वास होजावे तब समय पाकर मारडाले ५८। ५९ राजा को विश्वासी और विश्वासघाती किसीकाभी विश्वास नहीं करना चाहिये क्योंकि विश्वासी की काटीहुई जड़ हरी नहीं होती है ६०। ६१ और दूत चाहे अपना हो चाहे पराया विना परीक्षा लिये न रखना चाहिये उनमें से जो पाखण्डी तपस्वी हों उनको शत्रुओं के देशों में वनों में क्रीड़ाके स्थानों में मन्दिरों में मद्य पीनेके स्थानों में बाजारों में बड़ी २ गलियोंमें सब तीर्थों में चबूतरों पर कुओंपर और जहां २ मनुष्य इकट्ठे होते हों उन सब स्थानों में विचारकर नियत करना चाहिये ६२। ६४ राजाको सबसे नम्रताके साथ और हँसकर बोलना उचित है परन्तु हृदय में कठोरता रक्खे और समयपर भयङ्कर कामभी करडाले ६५ जो राजा अपना वैभव चाहै उसे यह चार बातें करनी अवश्य हैं हाथ जोड़ना १ सौगन्दका खाना २ शान्त रहना ३ और चरण छूना ४। ६६ अर्थ धर्म और काम इन तीनोंमें तीन प्रकारकी पीड़ा होती हैं और तीनों के फलों में भी वही बात है परन्तु राजाको उचित है कि फलको तो शुभ जाने और पीड़ाको छोड़ दे धर्मात्मा अर्थी और कामी इन्हीं तीनों को पीड़ा होती है ६७। ६९ राजाको उचित है कि मन्त्र ऐसे ब्राह्मणों के साथ करै जो घमण्डी न हों शान्त स्वभाव और शुद्धात्मा होवें ७० और दीन आत्माका उद्धार कठिन अथवा सुलभ उपायों से जैसे होसके करै और समर्थ होने पर धर्मका आचरण करै ७१ मनुष्य को अपना कल्याणकारी मार्ग उस समय तक नहीं दीखता है जबतक उसपर कोई संकट नहीं पड़ता और संकट पड़ने पर जो उससे बचता है तो उसको उसका यथावत् ज्ञान होजाता है ७२ जो शत्रु तिरस्कृत बुद्धि होय तो उसको पहली कथा सुना २ कर शान्त करै और जो निर्बुद्धि होय तो उसको झूंठा आदर करके शमन करै और जो पण्डित हो तो धन देकर प्रसन्न करै ७३ जो मनुष्य शत्रुसे मिलाप करके निश्शंक रहताहै उसकी गति ऐसी है जैसे वृक्षपर सोनेवाला मनुष्य नीचे गिरने पर जगता है ७४ अपने मन्त्रको कभी किसीसे कहना योग्य नहीं है शत्रुके मर्मोंको विना काटे और विना दारुण कर्म किये मनुष्य को मत्स्यघाती के सदृश लक्ष्मी नहीं मिलती है ७५। ७६ शत्रुकी सेना थकी मांदी भूंखी प्यासी कैसीही हो विना मारे न छोड़े और कोई किसीके कामको पूरा २ कभी न करै अपने हाथमें भी कुछ अवश्य रहने दे क्योंकि दीन दीनके पास कभी नहीं जाता है और जिसका

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

काम निकल जाताहै वह फिर साथ कभी नहीं देताहै ७७।७८ वैभव चाहनेवालों को संग्रह और विग्रह दोनोंका यत्न ऐसे मनुष्योंसे कराना चाहिये जो उसको प्रकाश न करैं और जो काम करै सो उत्साह और यत्नके साथ करै ७९ और जबतक उस कामका प्रारंभ न हो तबतक उसको कोई न जानने पावे ८० और जो किसी प्रकारका भय आनेवाला हो तो उसके दूर करनेका पहले से यत्न करै और भयके आपहुँचनेपर निडर होकर लड़ै ८१ जो मनुष्य दंडसे वश किये हुये शत्रुपर अनुग्रह करता है वह उसी प्रकारसे पंचत्वको प्राप्त हो जाताहै जैसे खच्चरी गर्भ धारण करके मरजाती है ८२ जो काम आगे करना हो उसको पहिले से विचारले और बुद्धिसे विना विचारे कोई काम न करै ८३ ऐश्वर्य चाहनेवाले को हर कामका उत्साह देश काल और भाग्यको विचार कर यत्न-पूर्वक करना उचित है ८४। ८५ जो मनुष्य शत्रुको छोटा जानकर छोड़ देता है उसके दुःखकी जड़ें तालवृक्ष के समान बड़ी २ होजाती हैं और वह इसप्रकार से नाश होजाता है जैसे छोटीसी अग्निकी चिनगारीसे सब जंगलका जंगल भस्म होजाताहै ८६ शत्रु को देना कभी न चाहिये केवल आशाही पर रक्खे बहुत दिनोंका वायदा करदे और वायदे का समय आने पर बहाना करदे और अपना समय देखता रहै समय के आने पर कभी न चूके शत्रुको अवश्य मारडाले ८७। ८८ इससे हे राजा धृतराष्ट्र! पाण्डवादिक जिनको आप अपना शत्रु जानते हैं उनको नीति से अपने वशमें कीजिये वे बड़े शूरवीर हैं ऐसा काम करना चाहिये जिससे आप अपने को बचाये रहैं और पीछे किसी बातका पछतावा न होवे ८९। ९२ वैशम्पायनजी बोले हे राजा जनमेजय! कणिक धृतराष्ट्र से उक्त नीति कहकर अपने घरको चलागया और धृतराष्ट्र शोकमें मग्न होगये ९३॥

इति श्रीभाषामहाभारते आदिपर्वणि चत्वारिंशदधिकशततमोऽध्यायः १४०॥

एकसौइकतालीस का अध्याय।

पुरवासियों से युधिष्ठिर के राज्याभिषेक करानेकी सलाहको सुनकर दुर्योधन का खिन्नचित्त होकर धृतराष्ट्र से पांडवों को राज्य न मिलने का उपाय पूछना॥

वैशम्पायनजी बोले हे राजा जनमेजय! इसके पीछे राजा धृतराष्ट्रकी आज्ञा से दुर्योधन कर्ण दुश्शासन और शकुनि इन चारों ने मिलकर पाण्डवों को

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कुन्ती सहित जलानेकी सलाह की उस सलाह को विदुरजीने अपनी बुद्धि-बलसे जान लिया १। ३ और उनको उस बड़े भारी भय से भगाकर बचाना विचारकर एक बड़ी दृढ़ नाव जो वायुके वेग और पानीकी लहरों को सहसके लङ्गर सहित बनवाई और कुन्तीको बुलाकर कहा कि यह दुर्योधन कुरुवंश में बड़ा पापी और कुलघाती उत्पन्न हुआ है हमने उसकी रचीहुई मृत्यु की फांसी से बचनेके लिये तुम सबके वास्ते यह नाव बनवाई है इसपर चढ़कर तुम सब चलेजाना ४।७ कुन्ती यह सुनकर पुत्रोंसहित दुःखीहुई और उसी नावपर चढ़कर लाख के घरसे जलने से बचकर गंगाजी के पार होकर पुत्रों सहित चलीगई और लाखके घरमें एक निषादिनी अपने पांचों पुत्रोंसहित जो वहां आकर बसी थी वह और नीच महाम्लेच्छ पुरोचन जलकर मरगये ८।११ वारणावत नगरके रहनेवाले यह देखकर बड़े दुःखी हुये और एक दूत भेजकर धृतराष्ट्र से यह कहला भेजा कि आपका मनोरथ अब पूरा हुआ जो आपने पाण्डवोंको जलवादिया यह सुनकर धृतराष्ट्र ने पुत्रों सहित पाण्डवों का बड़ा शोच किया और भीष्मजी सहित विदुरजीने उनकी प्रेतक्रिया कराई १२।१६ यह सुनकर राजा जनमेजय बोला कि महाराज मैं लाखके घरके जलने और पाण्डवों के बचने की कथा विस्तारपूर्वक सुना चाहता हूं धृतराष्ट्र आदि ने यह क्रूर मारणकर्म क्योंकर किया मुझको इसमें बड़ा आश्चर्य होता है १७।१८ यह सुनकर वैशम्पायनजी बोले कि दुर्योधन भीमसेन का बल और अर्जुन की सिद्ध धनुर्विद्या को देखकर बड़ा म्लानचित्त रहनेलगा और कर्ण शकुनि की सलाह से पाण्डवों के मरने के अनेक उपाय करता रहा परन्तु पांडव विदुर जी के मतके अनुसार सब बातों को बराते चलेगये १९।२२ उसी समयमें सब पुरवासी पाण्डवों को गुणवान् देखकर सभा में जा जाकर उनकी प्रशंसा करनेलगे और जहां तहां चबूतरे आदि पर बैठ २ कर यह वार्तालाप करने लगे कि धृतराष्ट्र को अन्धे होने के कारण से पहलेही राज्य नहीं मिला था अब उसको राज्य क्योंकर मिल सक्ता है और भीष्मजी सत्यप्रतिज्ञ हैं वे राज्यको अब कभी ग्रहण न करेंगे इससे हम सब मिलकर आज चलकर पाण्डु के बड़े लड़के को जो धर्मात्मा कारुणिक और वृद्धोंकासा स्वभाव रखनेवाला है राज्य मिलने के लिये राज्याभिषेक करावें हमको निश्चय है कि वह भीष्मजी और पुत्रों सहित धृतराष्ट्र को बड़े मानसे रक्खेगा और उनके निमित्त

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सब भोग नियत करदेगा २३। २८ उन युधिष्ठिर के हितमें अनुरक्त पुरवासियों की बातोंको सुन २ कर दुर्योधन को बड़ा क्रोध और दुःख हुआ और ईर्षासे उन की बातोंको न सहकर धृतराष्ट्र के पास आया २९। ३० और उनके चरणोंको छूकर बोला कि महाराज मैं पुरवासियों की महाअशुभ बात सुनें आयाहूं वह लोग भीष्मजी और आपका निरादर करके पाण्डवों को अपना राजा करना चाहते हैं और भीष्मजी का भी यही मतहै क्योंकि उन्होंने तो राज्य छोड़ही दिया है पुरवासी कहते हैं कि अपने गुणोंकी अधिकता से राजा पाण्डु को पहले राज्य मिला था अन्धे होनेके कारण से आपको नहीं मिला इस कारणसे अब पाण्डु के पुत्रों को क्रमसे राज्य मिलना चाहिये सो हे महाराज! ऐसा होनेसे हम सब राजवंश से हीन होने के कारण पुत्रों सहित बड़े दीन होजायँगे राजा न होने से हमारा कोई आदर न करैगा और पराये आधीन जीविका होजाने से बड़ा कष्ट पावेंगे इससे हे महाराज! ऐसा उपाय कीजिये जिससे पांडव राजा न होने पावें जो आपको पहले राज्य मिला होता तो हम मनुष्यों के विपरीत होनेपर भी राज्य ले लेते ३१। ३८॥

इति श्रीभाषामहाभारते आदिपर्वण्येकचत्वारिंशदधिकशततमोऽध्यायः १४१॥

एकसौबयालीस का अध्याय।

दुर्योधन का कर्ण आदिसे सलाह करके पांडवों को वारणावत नगर में भेजने को धृतराष्ट्र से कहना॥

वैशम्पायनजी बोले हे राजा जनमेजय! पुत्रकी उक्त बातों को सुनकर और कणिक की कही हुई राजनीति को स्मरण करके धर्माधर्म के विचार में द्विधा-चित्त होकर राजा धृतराष्ट्र चुप होरहा और दुर्योधन एक ओर बैठकर कर्ण दुःशासन और शकुनि से सलाह करने लगा कुछ विलम्ब में फिर धृतराष्ट्र से कहा कि महाराज हमको पांडवों से बड़ा भय है इससे आपसे प्रार्थना है कि उनको अच्छे उपायों से यहां से निकालकर वारणावत नगर को भेज दीजिये यह सुनकर धृतराष्ट्र ने एक मुहूर्तमात्र विचार करके दुर्योधन से कहा १। ४ कि राजा पांडु धर्मात्मा होने के कारण से सब जातिके मनुष्यों का प्यारा था और मुझे भी उससे अत्यन्त प्रेम था भोजनमात्र के सिवाय वह कुछ नहीं जानता था और राज्य को नित्य मेरे निवेदन करता था और जैसा वह था वैसेही गुणवान् धर्मात्मा और पुरवासियों के प्यारे उसके पुत्र हैं उनको हम

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बलसे क्योंकर निकाल सक्ते हैं क्योंकि राज्य उनके बाप और दादेका है और सब मनुष्य उनकी सहाय पर हैं ५। ८ राजा पांडुने सब मंत्री सेना के मनुष्य और सब पुरवासियों का पालन पोषण और सत्कार भलीप्रकार से किया था ऐसा न हो कि जो हम उनको यहांसे निकालें तो यह सबलोग मिलकर हम लोगों को मारें ९। १० यह सुनकर दुर्योधन बोला कि सब खजाना मेरेही पास है मैं धन आदि के द्वारा सब मंत्री और पुरवासियों को अपने वशमें करलूंगा वह लोग फिर उत्पात नहीं करेंगे और आपकी सहायता करेंगे आप पांडवों को वारणावत नगरके भेजने का शीघ्र उपाय कीजिये जब सब राज्य मेरे वश में होजायगा तब हम उनको कुन्ती सहित फिर बुलालेंगे ११। १४ यह सुनकर धृतराष्ट्र बोला कि मेरे भी हृदय में यही अभिप्राय बना रहता है परन्तु पाप जानके मैंने इसको आजतक प्रकट नहीं किया था भीष्मजी विदुर द्रोणाचार्य कृपाचार्य और कुरुवंशीलोग जो हमारे बड़े अथवा बराबरके हैं वह पांडवों का वहां जाना स्वीकार नहीं करेंगे और बड़े शूरवीर होनेके कारण से हम उनको मारभी न सकेंगे और उनके साथ सब पुरवासी मरजायँगे १५।१८ दुर्योधन बोला कि भीष्मजी तो मध्यस्थ हैं अर्थात् दोनों को एकसा जानते हैं और द्रोणाचार्य का पुत्र मेरी ओर है इससे द्रोणाचार्य भी हमारी ही ओर रहेंगे और जिधर द्रोणाचार्य और उनके पुत्र होंगे उधरही कृपाचार्य भी रहेंगे क्योंकि कृपाचार्य अपने भानजे को कभी न छोड़ेंगे १९। २० और विदुरजी प्रकटमें तो हमसे मिले हुये हैं परन्तु अन्तःकरण से पांडवों काही हित चाहते हैं सो एक मनुष्य हमारा कुछ नहीं करसक्ता है २१ इससे आप आजही उपाय करके पांडवों को यहांसे निकाल दीजिये और हमारे इस महान् शोक को जिसके कारण से रात्रिको निद्रा तक नहीं आती है दूर कीजिये २२। २३॥

इति श्रीभाषामहाभारते आदिपर्वणि द्विचत्वारिंशदधिकशततमोऽध्यायः १४२॥

एकसौतेंतालीस का अध्याय।

धृतराष्ट्र का पांडवों को वारणावत नगरके जाने की आज्ञा देना और पांडवों का सबसे मिलकर यात्रा करना॥

वैशम्पायनजी बोले हे राजा जनमेजय! इसके पीछे दुर्योधनने मंत्री आदि सब राजसम्बन्धी मनुष्यों को धन आदि दे देकर अपने वशमें करलिया एक दिन उन चतुर मंत्रियों ने धृतराष्ट्र की प्रेरणासे सभामें बैठकर वारणावत नगर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

की बहुतसी शोभा वर्णन की और कहा कि उस नगर के पास एक शिवजी का रत्नजटित स्थान है वहां का मेला भी निकट आन पहुँचा है उसको सुन कर पांडवों का भी चित्त वहां जानेको हुआ उसी समय में धृतराष्ट्र ने युधिष्ठिर को बुलाकर कहा कि वारणावत नगर की नित्य २ मनुष्य आ २ कर शोभा वर्णन करते हैं जो तुम्हारा वहां जानेको चित्त है तो अच्छा है अपने भाई और माता सहित वहां चले जाओ थोड़े दिनों में फिर हस्तिनापुर को चले आना वहां पहुँचकर मनमानता धन और गऊ ब्राह्मणों को दान देना १।१० यह सुन कर युधिष्ठिर धृतराष्ट्र के अंतःकरण की बातको जानकर और अपने को असहाय देखकर बोला कि बहुत अच्छा और भीष्मजी विदुरजी द्रोणाचार्य कृपाचार्य सोमदत्त भूरिश्रवा वाह्लीक पुराने मंत्री तपस्वी ब्राह्मण गांधारी पुरोहित पुरवासी और कुरुकुलके सब वृद्ध मनुष्यों के पास क्रमसे जा २ कर सबसे बिदा मांगी और सबसे कहा कि मैं धृतराष्ट्र की आज्ञा से सकुटुम्ब वारणावत नगर को जाताहूं आपलोग मुझको कल्याण होने के लिये आशीर्वाद दीजिये यह सुनकर सभोंने बड़ी प्रसन्नता से पांडवों को आशीर्वाद दिया कि तुम्हारा कल्याण होवे और पांडव वहां से मंगलाचार करके वारणावत नगर को चल दिये ११।१६ ॥

इति श्रीभाषामहाभारते आदिपर्वणि त्रिचत्वारिंशदधिकशततमोऽध्यायः १४३ ॥

एकसौचवालीस का अध्याय।

दुर्योधन का अपने पुरोचन मंत्री को वारणावत में लाख का घर बनाने और उसमें पांडवोंको टिकाकर आग लगादेने की आज्ञा देकर भेजना और उसका वहां जाकर लाखका घर बनवाना ॥

वैशम्पायनजी बोले हे राजा जनमेजय! पांडवों के जानेपर दुर्योधन बहुत प्रसन्न हुआ और अपने पुरोचन नाम मंत्री को एकान्त में लेजाकर बोला कि यह संपूर्ण पृथ्वी जो मेरे अधीन है उसको तू सब अपनी जान तेरे सिवाय मेरा और कोई विश्वासी मनुष्य नहीं है और न कोई हितका करनेवाला है इससे तुमसे हम एक गुप्त मन्त्रको कहते हैं तुमको उस मंत्रका प्रकाश किसी से न करना चाहिये हम अपने शत्रु को निर्मूल किया चाहते हैं इससे जो हम कहैं उसे तुमको करना उचित है पांडवों को धृतराष्ट्र हमारे पिताने वारणावत नगर को जानेकी आज्ञा दी है सो वे वहां विहार करने को गये हैं तुम भी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अभी बड़े शीघ्रगामी खच्चरों को रथमें जोतकर ऐसे सारथी को लेकर जाओ जो आजही तुमको वहां पहुँचा दे वहां जाकर जितना द्रव्य लगे लगाकर एक मकान उस नगर के निकट चौखना बनवाकर तैयार करो उस मकान की दीवारें घृत सन तेल राल और लाखको मट्टी में मिला २ कर बनवाना और ऊपर उसके खूब गहरी मट्टी पुतवा देना जिससे पांडव आदि कोई उस भेद को न जानसकें और अग्नि को प्रज्वलित करनेवाली चीजें उस मकान के चारों ओर रखवा देना और उस लाखके गृहको चारों ओरसे ऐसा चित्र विचित्र करदेना कि मनुष्य का चित्त उसमें ठहरने को किया करै जब उस स्थानपर पांडव पहुँचें तब उनको बड़े आदर से लेजाकर उनका विधिपूर्वक पूजन करना और सवारी और सेज आदि सब सुखके सामान वहां पांडवों के लिये कर देना उस मकान की रचना इस प्रकार से करना जिसमें कुन्ती के पुत्र उसके भेदको न जानने पावें जब पांडव कुन्ती सहित उस घर में वास करके कुछ कालतक विश्वासपूर्वक रहने लगें तब वायु को देखकर दरवाजे की ओर से अग्नि लगादीजो ऐसा करने से पांडव उस घरके साथ जलकर भस्म हो जायँगे और हमको कोई दोष न देगा १।१७ यह सुनकर पुरोचन ने दुर्योधन से गृह बनवाने की प्रतिज्ञा की और वहांसे बड़े शीघ्र चलनेवाले खच्चरों को रथमें जोतकर उसपर बैठकर वारणावत नगर में पहुँचा और लाखके गृहके बनाने की रचना प्रारंभ करके उक्त रीतिसे दुर्योधन के कहने के अनुसार गृह बनवाकर तैयार करादिया १८।१९॥

इति श्रीभाषामहाभारते आदिपर्वणि चतुश्चत्वारिंशदधिकशततमोऽध्यायः १४४॥

एकसौपैंतालीस का अध्याय।

पांडवों का वारणावत नगर को चलना उनके साथ पुरवासियों का जाना युधिष्ठिर का उनको लौटाना और विदुरजी का म्लेच्छभाषा में अग्निसे बचनेका उपाय बताना॥

वैशम्पायनजी बोले हे राजा जनमेजय! पांडव अपने रथों में शीघ्रगामी घोड़ोंको जोतकर भीष्मजी द्रोणाचार्य कृपाचार्य धृतराष्ट्र आदि सब बड़े छोटे से यथायोग्य मिलकर रथों पर चढ़कर वारणावत नगर चलने लगे उनको जाते हुये देखकर सब मंत्री विदुरजी और पुरवासी शोक करतेहुये उनके पीछे २ होलिये १।५ उस समय कोई २ निर्भय ब्राह्मण उन पांडवों की उस दशाको देखकर कहने लगे कि धृतराष्ट्र की बुद्धि मंद होगई है और वह धर्म को नहीं

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

देखता है ये बिचारे पापरहित पांडव पापकर्म करना नहीं विचारते हैं पिताका राज्य पानेके अधिकारी होने से धृतराष्ट्र इनको नहीं देख सक्ता है ६। ९ हम को बड़ा आश्चर्य यह है कि भीष्मजी इस अधर्म को कैसे देखते हैं यह बड़ी अनीति की बात है जो इनको नगरसे निकाल दिया है पहिले राजा शंतनु था उसके पीछे विचित्रवीर्यने राज्य किया उसके उपरांत राजा पांडु हमारा राजा हुआ वह पांडु मरगया है इससे धृतराष्ट्र इन बालकों को नहीं देख सक्ता है १०। १२ हम इस अनीति को नहीं चाहते हैं इससे हम सबभी युधिष्ठिर के साथ चलेंगे उनकी यह वार्तालाप सुनकर युधिष्ठिरने ध्यान करके कहा कि राजा धृतराष्ट्र हमारे पिता के समान हैं उनका कहना करना हमारा परमधर्म है तुम सब लोग हमारे मित्र हो अब हमको सबजने आशीर्वाद दे देकर घरको लौट जाओ जब हमारा कुछ काम आकर पड़े तब हमारा उपकार करना १३। १७ यह सुनकर सब पुरवासी राजा युधिष्ठिर को आशीर्वाद दे देकर अपने घरको लौटगये और उनके चले जानेपर विदुरजी ने जो सब भाषाओं को अच्छी तरहसे समझतेथे म्लेच्छभाषा में युधिष्ठिरसे कहा (युधिष्ठिरभी म्लेच्छ आदि सब भाषाओं को जानते थे) कि जो मनुष्य नीतिशास्त्र के अनुसार शत्रुके कपट को जानता है उसको आई हुई आपत्ति से बचने का उपाय करना उचित है और जो मनुष्य रात्रिमें छिपे हुये अग्निसम्बंधी पदार्थों के बनाये हुये गृहको पहिचान जाता है उसको शत्रु नहीं मारसक्ता और जो शत्रु अपने साथ रहे और अग्निसे मारना चाहै उससे बचने के लिये सुरंग की राहसे निकलजावै और वह अपने को सोते में न जलाने पावै जो कोई अपनी रक्षा इसप्रकार से करता है वह जी सक्ता है यह बातभी तुम्हारे समझने के योग्य है कि जिसका विवेक जाता रहता है उसको राह नहीं सूझती और जो शास्त्र नहीं जानता है उसको दिशा नहीं जानपड़ती है और जिसका धैर्य जाता रहता है उसकी बुद्धि जाती रहती है और जो शत्रु अपने को अग्निसम्बन्धी पदार्थों से बनेहुये गृहमें ठहरावे तो उससे बचने के निमित्त दूसरी राह ढूंढ़ले १८। २५ मनुष्य को चाहिये कि फिरकर पहिले से राह देख रक्खे और रात्रिके समय में दिशाओं को नक्षत्रोंसे जानले एक समय पीड़ा सहनेपर फिर पीड़ा वैसी नहीं जानपड़ती है २६ युधिष्ठिर इन उक्त गूढ़ अर्थवाले वचनों को सुनकर विदुरजी से बोले कि मैं आपके अभिप्राय को

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अच्छीतरह समझगया इसके पीछे विदुरजी पाण्डवों से मिलकर और प्रदक्षिणा करके लौट आये २७।२८ उनके चले जानेपर कुन्तीने युधिष्ठिरके पास आकर पूंछा कि तुझसे और विदुरजी से क्या बातें हुई थीं जिसके उत्तर में तैंने कहा था कि अच्छा मेरी समझ में कोई बात नहीं आई जो कुछ दोष न हो तो मुझसे भी कहदे मैं भी उस बातको सुना चाहतीहूं २९।३१ यह सुनकर युधिष्ठिर बोले कि हमसे विदुरजीने गूढ़ बोली में यह समझाया था कि जगते रहना और मकान में अग्नि उठने पर राहको ढूंढ़कर निकल जाना सो मैंने उनको यह उत्तर दिया था कि आपकी गूढ़ बोलीके अभिप्रायको मैं जान गया ३२। ३३ वैशम्पायनजी बोले हे राजा जनमेजय! इसके पीछे पाण्डव वहां से फाल्गुन कृष्णअष्टमी रोहिणी नक्षत्र में चलकर वारणावत नगर के समीप पहुँचे और वहांके मनुष्यों को देखा ३४॥

इति श्रीभाषामहाभारते आदिपर्वणि पञ्चचत्वारिंशदधिकशततमोऽध्यायः १४५॥

एकसौछियालीस का अध्याय।

पाण्डवोंका वारणावत नगरमें पहुँचना पुरवासियों का उनका आदर सत्कार करना और पुरोचनका पाण्डवों को लाक्षागृह में टिकाना॥

वैशम्पायनजी बोले हे राजा जनमेजय! वारणावत नगरके वासी पाण्डवों का आना सुनकर वहांके प्रधान २ मनुष्य सहस्रों आदमियों की भीड़ लेकर अनेक सवारियों में बैठ बैठकर मंगलयुक्त नगर के बाहर शास्त्र की रीति से पाण्डवों को लेने के लिये आये और उनको घेर कर जयकार बोलकर और आशीर्वाद देकर बैठगये उस समय पाण्डव उन वारणावतवासियों में बैठेहुये ऐसे शोभायमान मालूम होते थे जैसे देवताओं में इन्द्र मालूम होता है १।४ पाण्डवों ने सब पुरवासियोंका बड़ा सत्कार किया और उन सबको साथ लिये हुये बड़ी धूमधाम से नगरके भीतर गये और वहांके सब तपस्वी ब्राह्मण नगर के अधिकारी शूरवीर और प्रधान प्रधान वैश्य और शूद्रोंके घर जा जाकर सब से मिले और सबसे पूजित होने के पीछे पुरोचनके साथ २ अपने वासस्थान को लौट आये पुरोचनने उनके लिये बड़े सत्कार से सम्पूर्ण भोजन और पीने की सामग्री और सवारी शय्या और आसन आदि आराम की चीजें इकट्ठी करदीं और पाण्डव वहां पुरवासी और पुरोचनसे सत्कृत रहनेलगे ५।१० दश दिनके पीछे पुरोचन उस अकल्याणी लाख के बनाये हुये घरके आरामों को

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कह २ कर पाण्डवों से बोला कि उसी स्थानमें आप चलकर वास कीजिये यह सुनकर पाण्डव सब सामग्री सहित वहां से उठकर उस लाखके बनायेहुये गृहमें उठ गये ११। १२ उस घरको देखकर युधिष्ठिर भीमसेन से बोले कि देखो यह सब गृह अग्निसम्बन्धी पदार्थों से बना है इसमें घी और लाख से मिली हुई चर्बीकी सुगन्ध प्रकट आरही है इसको बड़े विश्वासी मनुष्यों ने सन राल मूंज छिलके और बांस आदि को घी में बोर बोर कर मिट्टी में मिलाकर बनवाया है १३। १५ यह पापी पुरोचन दुर्योधन की सलाहसे हमको जलाना चाहता है हमारे चचा विदुरजी हमसे बड़ा स्नेह करते हैं और बड़े बुद्धिमान् हैं उन्हों ने इन सब बातों को अपनी बुद्धिबल से जानकर इस गृहके सम्पूर्ण वृत्तान्त से मुझे चलते समय बोधित कर दिया था १६।१८ यह सुनकर भीमसेन बोले कि जो यह गृह अग्निसम्बन्धी पदार्थों का बना हुआ है तो चलकर वहीं रहिये जहां पहिले टिके थे १९ यह सुनकर युधिष्ठिर बोले कि हमको इस गृहके सब हालको छिपाकर यत्नपूर्वक सावधानीसे यहीं रहना उचित है क्योंकि पुरोचन दुर्योधन के मत में स्थित होकर निन्दा और अधर्म से नहीं डरता है जो उस को यह बात मालूम होगई कि हमलोग इस मकान के हाल को जानगये तो वह दुष्ट हम सबको हठ करके जला देगा २०।२२ और हमारे जलनेपर भीष्म जी कोप करें तो वह हमारे किस कामका है और जो भीष्मजी यह कहें कि यह राजाओं का धर्म है और कौरव कुलके मनुष्य क्रोध करें तो भी हमको क्या है २३। २४ और जो हम लोग यहांसे कहीं को भागकर चले चलें तो दुर्योधन हमलोगों को दूतों से मरवा डालेगा २५ क्योंकि दुर्योधन के पास खजाना है और उसके पक्षपर बहुतसे मनुष्य हैं और हमलोग धनहीन और विना पक्षके हैं २६ इससे हम लोगों को सब को धोखा देकर गुप्त बसना उचित है २७ अहेर खेलने के बहानेसे भागने की सूधी राह पहिलेसे देख रक्खो और आज ही से आलस्य छोड़कर इसके भीतर कोई गुप्त राह ऐसी बनानी चाहिये जहां से हमलोग निकलकर चले जावें और हमारे भेद को पुरोचन या पुरवासी कोई न जान सकें २८। ३० ॥

इति श्रीभाषामहाभारते आदिपर्वणि शताधिकषट्चत्वारिंशोऽध्यायः १४६ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

एकसौसैंतालीस का अध्याय।

विदुरजीका पांडवों के पास एक खनिकका भेजना और उस खनिक का लाक्षागृहसे बाहर निकलने को सुरंग खोदना ॥

वैशम्पायनजी बोले हे राजा जनमेजय! इसके पीछे विदुरजीका भेजा हुआ एक मनुष्य पांडवों के पास वारणावत नगर में आया और उनसे गुप्त मिलकर बोला कि मैं खनिक हूं पृथ्वी खोदने के काम में बहुत निपुण हूं मुझको विदुरजी ने यह कहकर आपके पास भेजाहै कि तू जाकर ऐसा कामकर जिससे पांडवों का कल्याण होवे और विश्वास के लिये यह कहला भेजाहै कि हमने पांडवों से चलते समय कुछ गूढ़अर्थ की बातें कहीथीं सो पुरोचन कृष्णपक्षकी द्वादशीको दुर्योधन के कहनेके अनुसार गृहके द्वार परसे तुम सबको जलाने के लिये आग लगावेगा सो अब आप जो कुछ मुझको आज्ञा करें सो मैं आपके कल्याण के लिये करूं १।६ यह सुनकर युधिष्ठिर बोले कि मैं तुमको अच्छी तरह जानताहूं तुम विदुरजी के परम मित्र हो और तुमसे विदुरजीका कोई हाल छिपा नहीं है तुम जैसे विदुरजी के हितू हो इसीप्रकार से हमारे भी हितकारी हो और हम भी जैसे विदुरजी के हैं वैसेही तुम्हारे हैं सो तुम हमको इस अग्नि के घरसे बचाने का कोई उपाय करो यह गृह दुर्योधन ने हमारे जलानेको पुरोचनसे बनवायाहै हम उसका इस समय में कुछ नहीं करसक्तेहैं क्योंकि वह धनवान् और पक्षसहित है इस गृहसें बाहर जानेको कोई और राह नहीं है विदुरजी ने इसको पहिले हीसे अपनी बुद्धिबलसे जानलिया था और हमको भी जतादिया था इससे जैसें विदुरजी ने हमारी रक्षा की है उसीप्रकार से तुमभी हमको इस अग्नि से ऐसा उपाय करके बचाओ जिससे पुरोचन को कुछ हाल मालूम न होवै ७।१५ यहसुनकेवह खनिक युधिष्ठिरसे तथास्तु कहकर खाईको झाड़ने के बहानेसे मिट्टी फेंक २ कर उस गृहके बाहरसे एक सुरंग खोदकर उसका छोटासा मुख गृहके भीतर निकालदिया और उस सुरंग के मुखोंपर पृथ्वी की बराबर पर किवाड़ लगादिये जिसमें पुरोचन कदापि भीतर गृहके आवै अथवा बाहर उस ओर को जाय तो उसको कुछ बात न जानपड़े पुरोचन उस गृहके द्वारपर सब शस्त्र लिये हुये रहा करता था १६।१८ पांडवों को यद्यपि लेशमात्र भी विश्वास न था और न उनका मन प्रसन्न था परन्तु वे दिनमें अहेर के बहाने से अपने भागने की राह ढूंढ़ते हुये इसप्रकार से रहते थे कि पुरोचन यह जानता था कि

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पांडवों को मेरा बड़ा विश्वास है और सुखपूर्वक रहते हैं उनको किसी बातका किसीकी ओर से संदेह नहीं है और उस खनिकने भी ऐसी युक्ति से काम किया कि उसको सिवाय खनिकके किसीने और कुछ अनुभव नहीं किया १६।२१ ॥

इति श्रीभाषामहाभारते आदिपर्वणि शताधिकसप्तचत्वारिंशोऽध्यायः १४७ ॥

एकसौअरतालीस का अध्याय।

पांडवों का लाक्षागृह में आग लगाकर और पुरोचन को जलाकर सुरंग की राहसे निकल माता सहित वहां से चलदेना ॥

वैशम्पायनजी बोले हे राजा जनमेजय! जब पांडवोंको वहां बसते हुये एक वर्ष होगया तब पुरोचन यह जानकर कि पांडव प्रसन्न हैं और मेरे विश्वास परहैं बहुत हर्षित हुआ उसको प्रसन्न देखकर युधिष्ठिरने भीमसेन अर्जुन नकुल और सहदेव को बुलाकर कहा कि पुरोचन हमको धोखे से विश्वस्त जानकर प्रसन्नचित्तहै अब मेरा यह विचार है कि रात्रि को इस गृहमें आग लगाकर पुरोचन को जलाकर और छःजीवों को इस गृहमें डालकर सुरंगकी राह निकल चलो १।४ उसी दिन रात्रिको कुंतीने भोजन दान देनेके बहाने से ब्राह्मणों को वहां रात्रि में बुलाया ब्राह्मणों की स्त्रियां भी वहां आईं और भोजन पान कर २ के अपने २ घरको चलीगईं ५।६ उसी समय दैवकी इच्छा और कालकी प्रेरणा से वहांपर एक निषादिनि अपने पांचों पुत्रोंसहित भोजन की इच्छा से चली आई और यथेच्छभोजन और मद्यपान करके मुरदे के समान वहीं पड़रही इसके पीछे जब रात्रि बहुत गई और सब मनुष्य सोगये तब वायु के चलनेपर भीमसेनने उस लाखके गृहमें उस स्थानसे अग्नि लगा दी जिस स्थान में पुरोचन सोता था और फिर उस स्थान के चारों ओर अग्नि लगाकर माता सहित सब पांडव सुरंग की राह से बाहर निकलकर चलदिये जब उस स्थान में बड़ी २ लपटें उठने लगीं और शब्द होने लगा तब सब पुरवासी जागउठे और उस गृह के चारों ओर खड़े होकर यह कह २ कर विलाप करने लगे कि इस दुष्ट पापी पुरोचन ने दुर्योधन की सलाह से पांडवों के साथ विश्वासघात करके उनको जलाया है और आपभी भाग्यवश से जलगया इस दुष्टने यह गृह अपने नाशके हेतुसेही बनवायाथा ७।१७ वैशम्पायनजी बोले हे राजा जनमेजय! पांडव सुरंग से निकलकर अत्यंत दुःखी होकर चलदिये परन्तु नींद और भयके कारण से शीघ्र न चल सके उस समय भीमसेनने

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

माताको कंधेपर बिठालिया नकुल और सहदेवको गोदीमें लेलिया और युधिष्ठिर और अर्जुन को दोनों हाथों से उठाकर वहांसे पृथ्वी को रूंदता और अपने वक्षस्थल से वृक्षों को तोड़ता हुआ वायुके समान जल्दी चला १८। २२॥

इति श्रीभाषामहाभारते आदिपर्वणि शताधिकअष्टचत्वारिंशोऽध्यायः १४८॥

एकसौउनचास का अध्याय।

पाण्डवोंके पास विदुरजी के दूत का राह में आना और पाण्डवों को नावपर चढ़ाकर गंगाजी के पार उतार देना॥

वैशम्पायनजी बोले कि हे राजा जनमेजय! पाण्डव वहांसे गङ्गाके किनारे२ चलकर जब कुछ दूरपर पहुँचे तब उनको वह मनुष्य मिला जिसको विदुरजी ने वनका सङ्केत पाण्डवों से कहकर भेजा था उसने पाण्डवों को देखतेही वह नाव जो उसने विश्वस्त मनुष्यों से गंगाजी के किनारे पर बनवाई थी वह बड़ी दृढ़ वायु और जलकी लहरों को सहसक्ती थी दिखलाई और कहा कि मुझको विदुरजी ने आपके पास यह विश्वास के वचन कहकर भेजा है कि मनुष्य अग्नि से मारनेवाले शत्रुसे सुरंग की राह से निकलकर बचसक्ता है इस संकेतसे आप मुझको विदुरजी का भेजा हुआ जानिये और विदुरजी ने यह भी कहा है कि तुम युद्ध में कर्ण शकुनि और भाइयों सहित दुर्योधन को जीतोगे इसमें सन्देह नहीं है विदुरजी को दूतोंसे दुर्योधनका सब विचार मालूम होगया था इस कारण से उन्होंने मुझको यहां भेजा है अब आप इस नावमें बैठिये और निर्विघ्नता से गंगाजी के पार होकर चले जाइये ऐसा कहकर उस मनुष्य ने पाण्डवों को माता सहित नाव में बैठा लिया और उनसे कहा कि विदुरजी ने आपको बहुतसा प्यार कहकर यह भी कहला भेजा है कि गंगाजी को उतरकर बहुत सावधानी से जाना यह कहकर उसने पाण्डवों को गंगाजी के पार उतार दिया और उनको जयका आशीर्वाद देकर जैसे गया था फिर लौटआया और पाण्डव भी पार उतरकर विदुरजी को अपना सन्देशा भेजकर वहां से अलक्षित और गुप्तवेष धारण करके शीघ्र चलदिये १। १४॥

इति श्रीभाषामहाभारते आदिपर्वणि शताधिकैकोनपञ्चाशत्तमोऽध्यायः १४९॥

एकसौपचास का अध्याय।

राजा धृतराष्ट्र को पाण्डवों के जल जाने का हाल सुनकर उनका कर्म करना और पाण्डवों को एक बड़े सघन वनमें पहुँचकर बड़ी चिन्ता करना॥

वैशम्पायनजी बोले हे राजा जनमेजय! उस रात्रिके बीतने पर पुरवासियों

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ने उस लाख के घरके पास आकर अग्नि को बुझाया और पहिले पुरोचन के जलेहुये शरीर को देखकर बोले कि निस्सन्देह दुर्योधन पापी ने यह घर धृतराष्ट्रकी आज्ञासे पाण्डवों के जलाने को बनवाया था धृतराष्ट्र ने अपने पुत्रको इस अधर्मके करने से नहीं रोंका हमलोगों को निश्चय है कि अब भीष्म द्रोणाचार्य कृपाचार्य और सब कुरुवंशियों ने अपने धर्मको छोड़दिया है अब हमको उचित है कि धृतराष्ट्र को यह पत्र लिखकर भेज देवें कि तुमने पाण्डवों को जलादिया तुम्हारा बड़ा मनोरथ पूरा हुआ ऐसा कह २ कर वह पुरवासी पाण्डवों को ढूंढ़ने लगे और उस निषादिनी को पांचों पुत्रों सहित मराहुआ देखकर उनको पांडव जानकर बड़ा शोक करने लगे इसी अवसर में उस खनिकने विना जाने उस सुरंग को बंदकर दिया और पुरवासियों ने धृतराष्ट्र के पास जाकर पुरोचन मंत्री और कुंती सहित पांडवों के जल मरने का हाल कह सुनाया धृतराष्ट्र उस हाल को सुनकर विलाप करने लगा और बोला कि मेरा पांडु भाई आज मरा है अब जल्दी से सब मनुष्य वारणावत जाओ और धन लगाकर उनके नाम के बड़े बड़े स्थान बनवाओ और जो जो कुछ वस्तु कुंती सहित पांडवों के निमित्त करना चाहो सो सब करो यह कहकर धृतराष्ट्रने जाति के भाई बांधवों को बुलाकर पांडवों की जलक्रिया की उस समय सब मनुष्य अत्यन्त दुःखी होकर कोई युधिष्ठिर कोई भीम कोई अर्जुन कोई नकुल कोई सहदेव और कोई २ कुंती का नाम ले लेकर रोने लगे उनके मरनेका सब पुरवासियों ने बड़ा शोक किया और विदुरजी ने समय के अनुसार सब बातों को जानने के कारण से थोड़ा शोक किया १।१८ यहां तो यह सब क्रिया होती रही और वहां पांडव नावसे उतर कर नक्षत्रों से दिशा जानकर दक्षिण की ओर चलदिये और बड़े गहन वनमें पहुँचे उस समय नींद भूंख और प्यास से अत्यन्त दुःखी होकर युधिष्ठिरने भीमसेन से कहा कि इससे विशेष और क्या कष्ट होगा कि हम इस गहन वनमें दिशा तक नहीं जानते हैं और न चल सकते हैं हमको नहीं मालूम कि दुष्ट पुरोचन जलगया या मरगया इस बात को सुनकर विना जाने हमारा भय दूर नहीं होसक्ता हे भीमसेन! तूही एक हम सबमें बलवान् है भाई! हम सबको पहिले की तरह ले चल यह सुनकर भीमसेनने माता और चारों भाइयों को पहिले की तरह उठालिया और वहांसे चलदिया १९। २६॥

इति श्रीभाषामहाभारते आदिपर्वणि शताधिकपंचाशत्तमोऽध्यायः १५०॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

एकसौइक्यावन का अध्याय।

पांडवों का एक वनमें पहुँचकर भूख प्यास के मारे पृथ्वी पर पड़ रहना भीमसेन का पानी लेने जाना और उन सबको पृथ्वी पर पड़ा हुआ देखकर विलाप करना ॥

वैशम्पायनजी बोले हे राजा जनमेजय! भीमसेन वहांसे भाइयों को लिये हुये राहके फल फूल सहित बड़े २ वृक्षोंको तोड़ता और ऊंची पृथ्वी को ठोकरों से बराबर करता हुआ मतवाले हाथी की तरह बड़ी शीघ्रतापूर्वक चला उसके चलने के वेगसे वृक्ष घूमते से दीखने लगे और ऐसी वायु चलने लगी जैसी ज्येष्ठ और आषाढ़ के महीनों में चलती है और जिस राहसे वह गया था उस राह में लता या वृक्ष कुछ न रहा १।४ उसके गरुड़ और वायुके समान चलने के वेगसे पांडव मूर्च्छित होगये और दुर्योधन के भयसे अनेक नदी और नालों को अपनी भुजाओं के जोरसे पार होते और कूट कँगूरों को नांघते हुये संध्याके समय ऐसे वनमें पहुँचे जहां न फल थे न जल था और बड़े २ घोर जीव जन्तु रहते थे वहां पहुँचने पर छोटे बड़े वृक्षों की सघनता से महा-अंधकार होगया और वायु बड़े वेग से चलने लगी उस समय पांडव प्यास निद्रा और थकावटके कारण से आगे न चलसके वहीं विना अन्न जल के पड़रहे कुन्ती प्याससे महाव्याकुल होगई और पुत्रोंसे पानी मांगा उसकी बातको सुनकर माताके स्नेहके कारणसे भीमसेनको बड़ा दुःख हुआ और उस वनमें एक बड़े रमणीक वड़के पेड़के नीचे उन सबको बैठाकर बोला कि इस ओर से सारसों के बोलनेका शब्द सुनाई देरहा है मेरी समझमें वहां पानी अवश्य होगा तुम सब यहीं बैठो मैं उस ओर पानी ढूंढ़ने जाता हूं ५।१७ इस के पीछे भीमसेन बड़े भाईकी आज्ञा पाकर उस ओरको गया और वहां एक सुंदर तालाब देखकर हर्षित हुआ भीमसेनने उस तालाबमें स्नान किये और जल पीकर वस्त्र को पानीसे भिगोकर वहांसे शीघ्र चला आया वह स्थान दो कोश पर था परंतु भीमसेन वायुके समान चलकर बहुत शीघ्र आन पहुँचा वहां आकर अपनी माता और भाइयों को पृथ्वीपर विना शय्या दुःख और शोकसे पड़े हुए और सर्प के समान श्वास लेतेहुये देखकर भीमसेन को बड़ा खेद हुआ और विलाप कर २ के कहने लगा १८।२१ कि अब इससे बढ़ कर और क्या दुःख होगा कि मैं अपने भाई और माताको जो बड़ी उत्तम सेजोंपर महलों में सोते थे पृथ्वीपर पड़ेहुये इसप्रकार से सोते हुये देखता हूं

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

देखो यह हमारी माता विचित्रवीर्य की पुत्रवधू और राजा पांडु की भार्या जो वसुदेवजीकी बहिन और राजा कुन्तिभोजकी पुत्री है और सब लक्षणों से युक्त है जिसने धर्मराज इन्द्र और वायुसे हम सबको उत्पन्न किया है और उत्तम से उत्तम स्थानों में शय्यापर सोने के योग्य है अब इस विपत्ति में यहां पृथ्वी पर पड़ी हुई है ये युधिष्ठिर जो सब राजाओं के मुकुटमणि होने के योग्य हैं यह अर्जुन जिसकी समान संसार में और मनुष्य नहीं है और ये दोनों नकुल और सहदेव जो मनुष्यों में ऐसे सुन्दर और गुणवान् हैं जैसे देवताओं में अश्विनीकुमार हैं आज इस आपत्तिकाल में प्राकृत मनुष्यों की तरह पृथ्वी पर पड़े हुये हैं २२। ३१ जिस मनुष्यके स्वजाती कुलनाशक नहीं होते हैं वह मनुष्य ग्राम में अकेले वृक्षके समान सुखपूर्वक जीता है जिस ग्राम में एकही वृक्ष होता है और फलता फूलता है उस ग्राम में वह वृक्ष जातिवालों के न होने के कारण से पूजित बना रहता है और जिस मनुष्य के स्वजाती सब शूरवीर और धर्मात्मा होतेहैं तो वह मनुष्य भी सुखपूर्वक रहता है ३२।३४ और जो मनुष्य बलवान् और मित्र और भाई बांधवों की प्रसन्नता करनेवाले होते हैं वे परस्पर एक दूसरेके आश्रय रहकर वनमें एक साथ उत्पन्न हुये वृक्षोंकी तरह आनन्द से रहते हैं ३५ दुष्ट धृतराष्ट्र और उसके दुरात्मा पुत्रोंने हमको देश से निकालकर जलाना चाहा था दैवाधीन बचकर अब यहां इस वृक्ष के नीचे आये हैं न जाने अब इस वनके क्लेशों को भोगते हुये कहां जायँगे ३६। ३७ हे दुष्ट, दुर्योधन! अब तू अपने अर्थ को पुष्ट करले तुझ पर देवता प्रसन्नहैं क्या करूं युधिष्ठिर मुझको तेरे वध करने की आज्ञा नहीं देते हैं नहीं तो तुझे मंत्री भाई और शकुनि सहित मारकर यमपुरी भेज देता युधिष्ठिरने अभी तेरे ऊपर क्रोध नहीं किया है नहीं तो तू क्या करसक्ता था ३८।४० इस प्रकारसे भीमसेन क्रोधित हो होकर हाथसे हाथ मलने लगा और क्रोधके शांत होने पर उन अपने दीनमन भाइयोंको पृथ्वीपर उसी प्रकार पड़े हुये देखकर विचार करनेलगा कि यहां से नगर थोड़ीही दूरपर जान पड़ता है और ये भाई सोरहे हैं जब इनकी थकावट उतर जायगी तब ये उठकर जल पीवेंगे ऐसा विचार करके भीमसेन आप जागता रहा और भाइयों को नहीं उठाया ४१। ४४॥

इति श्रीभाषामहाभारते आदिपर्वणि शताधिकैकपंचाशत्तमोऽध्यायः १५१॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

एकसौबावन का अध्याय।

पांडवोंको वनमें सोतेहुये हिडम्ब राक्षसका देखना उसका अपनी बहिनको उन्हें मारकर लानेके लिये भेजना और उसका भीमसेनपर कामासक्त होजाना ॥

वैशंपायनजी बोले हे राजा जनमेजय ! उस वनमें जहांपर पांडव ठहरे थे वहांसे थोड़ी दूरपर शालके पेड़के ऊपर एक हिडम्ब नाम राक्षस रहता था वह राक्षस बड़ा क्रूर मनुष्योंके मांसका खानेवाला बड़ा पराक्रमी भयानक सूरत लम्बी २ जांघें लम्बा पेट मूछें और शिरके बाल लाल नेत्र डरावने और काले काले बड़े पेड़की बराबर गला कंधा और उस समय भूंखसे दुःखी था उसने दैव-इच्छा से उन पांडवों को देखा और मानुष गंधको सूंघकर अपने हाथों की उँगलियों से शिरके रूखे बालों को खुजाता जँभाई लेता और कुछ कांपता हुआ अपनी बहिन से बोला कि इस समय मुझको इस वनमें बड़ी मानुषगंध आरही है देखतो ये कौन मनुष्य यहां सोरहे हैं इनको देख २ कर मेरी जीभ लफलफाती है यह मनुष्यमांस मुझको आज बहुत दिनों में मिला है आज मैं अपनी तीक्ष्ण डाढ़ और दांतों से बड़े स्वादवाले इस मांस को खाऊंगा और अच्छा २ नवीन रुधिर पीऊंगा तू जा और इनको मारकर ले आ यहां तुझ को किसी प्रकार का डर नहीं है आज हम तुम दोनों इनके मांसको खाकर प्रसन्न होंगे और ताल दे देकर नाचेंगे १। १३ उस राक्षस की हिडंबा नाम बहिन उसकी बातको सुनकर उस स्थान पर गई जहां पांडव सोरहे थे और कुंती सहित चारों भाइयों को सोते हुये और भीमसेन को जागते हुये देखकर भीमसेन के दिव्यस्वरूप पर कामासक्त होकर विचार करने लगी कि यह पुरुषसिंह तेजस्वी महाबाहु कमलाक्ष और युवान मेरे साथ विवाह करने के योग्य है मैं अपने भाई का बताया हुआ क्रूरकर्म न करूंगी मेरा तो यह पति होचुका भाई का स्नेह पतिके स्नेह से विशेष नहीं होताहै और इसके मारनेसे मेरे भाई की तृप्ति एक क्षणभर के लिये होजायगी और न मारने से मैं इसके साथ आनन्दपूर्वक सदैव रमण करूंगी १४। १६ यह विचार कर उस राक्षसी ने अपना स्वरूप मनुष्यों कासा परमसुन्दर उत्तम २ वस्त्र और गहने पहिरे हुये बना लिया और मन्द २ मुसक्याती हुई भीमसेनके पास जाकर बोली कि तू कौन है कहां से आया है और ये देवताओं के समान पुरुष कौन सो रहे हैं और यह सुन्दर स्त्री जो इसप्रकार से विश्वस्त होकर सो रही है जैसे कोई घर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

में सोताहै तेरी कौनहै यह इस बातको नहीं जानती है कि यह गहन वन हिडंब नाम राक्षस का है मैं उसकी बहिन हूं उसने मुझे तुम्हारा मांस भक्षण करने के लिये तुम सबको मारनेके लिये भेजा है परन्तु अब मैं तेरे सुन्दर स्वरूपको देखकर सिवाय तेरे दूसरे से अपना विवाह करना नहीं चाहती हूं इससे अब तुझको जो कुछ उचित जानपड़े सो कर मैं कामार्त होकर तुझको मनसे चाहती हूं तुझे भी मुझसे प्रीति करना उचित है मैं तुम्हारी सबकी इस मनुष्यभक्षी राक्षस से रक्षा करूंगी और हम तुम दोनों पहाड़ों की कन्दराओं में रहेंगे मैं आकाश में जहां चाहूं तहां जासक्ती हूं तुझको रमणीक २ स्थानों में लेजाकर तेरे साथ विहार करूंगी २०। २९ यह सुनकर भीमसेन बोले कि ऐसा कौन अधर्मी होगा जो सुखसे सोती हुई माता और बड़े भाई को राक्षस के खाने के लिये छोड़कर कामासक्त होकर तेरे साथ जायगा ३०। ३१ यह सुन कर वह राक्षसी बोली कि अच्छा तू इन सबको जगादे मैं तेरी इच्छा के अनुसार इनको राक्षस से बचाऊंगी ३२ भीमसेन बोला कि मैं तेरे भाई के भय से सुखनींद से सोतेहुये भाई और माताको नहीं जगा सक्ताहूं राक्षस गंधर्व मनुष्य और यक्ष आदि कोई मेरे पराक्रम को नहीं सहसक्ता है तेरे मनमें आवे सो कर चाहे जा चाहे रह चाहे अपने भाई को भेजदे ३३। ३५॥

इति श्रीभाषामहाभारते आदिपर्वणि शताधिकद्विपंचाशत्तमोऽध्यायः १५२॥

एकसौतिरपन का अध्याय।

हिडम्ब दैत्य का अपनी बहिन को देरका गया हुआ जानकर पांडवों के मारने को आप आना और भीमसेन से उसका युद्ध होना॥

वैशम्पायनजी बोले हे राजा जनमेजय! वह हिडम्ब नाम राक्षस अपनी बहिन को देर की गई हुई जानकर उस शालवृक्षसे उतरकर बड़ा भयानक वेष बनाये लाल लाल नेत्र किये हुये पांडवों के पास जाने को चला उसको आते हुये देखकर हिडम्बा ने डरकर भीमसेन से कहा कि देखो मेरा भाई क्रोध भरा हुआ बड़ी भयानक सूरत बनायेहुये आरहा है मैं खेचरी हूं और राक्षसों कासा बल रखती हूं इससे तू शीघ्र अपने भाइयों और माताको जगादे मैं उन सबको और तुझको अपनी पीठपर चढ़ाकर आकाश मार्ग से भगा ले चलूंगी १।६ यह सुनकर भीमसेन बोला कि तू डरे मत यह एक अकेला राक्षस क्या है जो बहुतसे भी राक्षस होवैं तो भी मेरा कुछ नहीं करसक्ते हैं तेरे देखते देखते

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मैं इसको मारडालूंगा यह मेरा प्रहार नहीं सह सकैगा मेरी दोनों भुजा हाथी की सूंड़ और परिघ के समान दोनों जांघें और बड़ी दृढ़ छाती को देख मुझे मनुष्य जानकर यह मत समझ कि यह कुछ न करसकेगा मेरा इन्द्र के तुल्य पराक्रम तुझको अभी मालूम होजायगा ७। १० यह सुनकर हिडम्बा बोली कि तुझ देवस्वरूप को मैं ऐसा नहीं समझती हूं परन्तु मैंने इसलिये तुझसे यह बात कही थी कि मनुष्य राक्षसों के पराक्रम से सदैव डरा करते हैं ११ वैशंपायनजी बोले हे राजा जनमेजय! इसी अवसर में वह राक्षस भी निकट आगया था भीमसेन की बातों को सुनकर और अपनी बहिन को अत्यन्त सुन्दर स्त्री रूप धारण किये हुये उत्तम २ वस्त्र आभूषण पहिरे हुये परममनोहर छवि बनाये कामासक्त होकर भीमसेन के सन्मुख खड़े हुये देखकर बहिन की ओर से शंका करके बड़े क्रोध से लाल २ आंखें करके बोला कि ऐसा कौन है जो मेरे भोजन में विघ्न कर सके अरी हिडम्बा! तू मेरे क्रोध को भूलकर निडर होगई और मेरा अप्रिय करके मनुष्य को चाहने लगी तुझको धिक्कार है तैंने राक्षसोंके कुलको कलंक लगाया अब तैंने जिनके बलके भरोसे पर ऐसा किया है उन सबको और तुझको विना मारे नहीं छोड़ूंगा यह कहकर वह राक्षस दांत पीसता हुआ हिडम्बा की ओर मारने को दौड़ा १२। २० यह देखकर भीमसेन ने उस राक्षस को डपटा और हँसकर कहा कि खड़ा रह सोतेहुये मनुष्यों को बहुतसा चिल्लाकर जगाने से क्या प्रयोजन है तू मेरे सन्मुख आकर अपना बल प्रकट कर स्त्री पर कोई अपकार करने पर भी हाथ नहीं उठाता है इसको तैंने हमलोगों के मारने के लिये भेजा था और यह यहां आकर मुझे चाहने लगी इसमें इसका कुछ दोष नहीं है और न ऐसा करने से इसने कुछ तेरा अपराध कियाहै क्योंकि इसने यह कर्म कामदेव के वश में होने से किया है कुछ अपनी इच्छा से नहीं कियाहै इससे तुझको इसकी निंदा करना उचित नहीं है मेरे होतेहुये तुझे स्त्रीपर हाथ उठाना उचित नहीं है तू भी अकेला है और मैं भी अकेला हूं मुझसे आकर युद्ध कर अभी तेरे शिर को इसप्रकार से पीसे डालता हूं जैसे हाथी के पैर के नीचे दबने से चूरा होजाताहै तेरे मारे जानेपर तेरे शरीरको वनके जीव घसीटे घसीटे फिरेंगे आज तुझे मारकर इस वनको मैं राक्षस रहित करदूंगा और ऐसा होनेपर मनुष्य यहां निर्भय होकर फिरेंगे किसी को तेरा डर नहीं रहैगा और तेरी बहिनके देखते हुये मैं आज

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यहां तुझको ऐसे खींचूंगा जैसे बड़े हाथीको सिंह खींचता है २१। ३३ यह सुनकर वह राक्षस बोला कि वृथा गर्जनेसे क्या होता है जो तू अपनेको बली समझताहै तो आकर मुझसे लड़ और अपने बलको प्रकटकर अभी तुझको मालूम होजायगा कि अधिक बली कौन है तू अप्रिय वचन बोलता है इससे पहिले तुझीको मारूंगा इनको सोनेदे तुझे मारकर इनको भी मारूंगा और तरा रुधिर पीकर इस अपनी बहिनको जिसने मेरा बड़ा अप्रिय कियाहै न छोड़ूंगा ३४।३७ वैशम्पायनजी बोले हे राजा जनमेजय! वह राक्षस इस प्रकारसे कहकर क्रोधित होकर भीमसेन की ओर भुजा उठाकर दौड़ा भीमसेन ने उसकी भुजा पकड़ली और उसे उस जगहसे आठ धनुष की दूरीपर इस प्रकार से खींच लेगया जैसे सिंह नीच मृगको खींच लेजाय ३८। ४० उस समय वह राक्षस क्रोधित होकर भीमसेनसे चिपटगया और बड़ा घोर शब्द करनेलगा भीमसेन उसको पकड़कर और दूरपर इस प्रयोजनसे खींच लेगया कि उसकी चिल्लाहटसे भाई और माता न जागपड़ें ४१। ४२ और उन दोनोंने बड़े २ वृक्षोंको तोड़लिया और आपसमें बड़े पराक्रम से एक दूसरेसे लड़नेलगे उन के लड़नेके शब्दसे भीमसेनके भाई और माता जागउठे और अपने सामने हिडंबा को खड़ी हुई देखा ४३। ४५॥

इति श्रीभाषामहाभारते आदिपर्वणि शताधिकत्रिपंचाशत्तमोऽध्यायः १५३॥

एकसौचौवन का अध्याय।

भीमसेनका युद्ध करके हिडम्ब राक्षसको मारना और सब पांडवोंके वहांसे चलनेपर हिडम्बा का उनके साथ चलना॥

वैशम्पायनजी बोले हे राजा जनमेजय! हिडम्बाके सुन्दर स्वरूपको देखकर माता सहित चारोंभाई चकित होगये और कुंतीने उस समय उससे पूंछा कि तू देवताओं की कन्याके समान कौनहै कहांसे आई है और क्या तेरा काम है तू इस वनकी देवताहै या अप्सरा जो कुछ तेरा काम हो सो मुझसे कह १।४ यह सुनकर हिडम्बा बोली कि यह वन हिडम्ब राक्षसका है और मैं उसकी बहिन हूं हिडम्बने मुझे तुम सबको मारकर लानेके लिये भेजा था जब मैं यहां आई तब मैं तुम्हारेपुत्रके सुन्दर स्वरूपको देखकर कामासक्त होगई और उसको मैंने अपना पति मनसे संकल्प करके उसके लेजानेका बहुत सा उपाय किया परंतु लेजा न सकी इतनेमें मुझे देरसे आईहुई जानकर मेरा भाई जो मनुष्योंको खाताहै आप

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ही यहां चलाआया तुम्हारा पुत्र और मेरा पति उसको यहांसे खैंचकर दूर लेगया है वहां वे दोनों आपस में बड़ा पराक्रम कर २ के युद्ध कररहे हैं उन दोनों नर राक्षसों के युद्धको देखो ५। १२ यह सुनकर युधिष्ठिर अर्जुन नकुल और सहदेव उठकर दौड़े और वहां पहुँचे जहां वे दोनों सिंहके समान बलवान् दो पहाड़ोंकी तरह एक दूसरेको खैंच२कर बड़े पराक्रम से युद्ध कररहे थे उन दोनों के परस्पर खैंचाखैंची से धूलके बादल छायगये थे और दोनों का अंग धूलसे भरा हुआ था १३। १६ उस समय अर्जुन भीमसेनको उस राक्षससे क्लिश्यमान देखकर हँसता हुआ बोला कि हे भीमसेन! तुम डरो मत इस राक्षससे निर्भय होकर युद्ध करो हम तुम्हारी सहायता के लिये आनपहुँचे हैं अभी इसे मारे डालतेहैं हम सब यह नहीं जानते थे कि तुम राक्षससे युद्ध कररहे हो १७।१९ यह सुनकर भीमसेन बोला कि तू खड़ाहुआ देखाकर अपने चित्तको मत भ्रमावे मेरी भुजाओं के बीचमें आकर यह किसी प्रकार नहीं बचसक्ता है तब अर्जुन ने कहा कि इस राक्षस के जीता रखने से कुछ प्रयोजन नहीं है हमको तो यहां रहनाही नहीं है देखो अब अरुणोदय का समय आगया है प्रातःकाल और सायंकाल के रौद्र मुहूर्त में राक्षस प्रबल हुआ करते हैं और अनेक प्रकार से माया करते हैं इससे हे भीमसेन! अब इसके साथ बहुत क्रीड़ा मत करो अपनी भुजाके बल से इसे शीघ्र मारडालो २०। २३ वैशम्पायनजी बोले भीमसेन अर्जुन की बातको सुनकर क्रोधसे जाज्वल्यमान होगया और वह रौद्रस्वरूप अपना धारण करके जो वायु संसार के क्षय होने के समय धारण करती है उस राक्षस को उठाकर घुमानेलगा और बोला कि अरे अधम! तू वृथा मांस खा खाकर लम्बा और पुष्ट हुआ है क्या अब तू नहीं मरेगा मैं अब ऐसाही करूंगा जिसमें यह वन अकंटक होजावे और फिर कोई मनुष्यों को न खाय २४। २७ उस समय अर्जुन ने फिर भीमसेन से कहा कि जो तुमको इसका मारना भार दीखताहै तो तुम इसको छोड़कर सँहतावो मैं अभी मारे डालता हूं यह सुनकर भीमसेन अत्यन्त क्रोधसे उस राक्षसको पृथ्वीपर डालकर पशु कीसी मार मारने लगा और वह राक्षस भयंकर शब्द से चिल्लाने लगा उस समय भीमसेन ने बलसे उस राक्षस के हाथों को पैरसे दबाकर बीचमें से दो करडाले और वह राक्षस मरगया उसको मराहुआ देखकर सब पांडव प्रसन्न हुये और सब भाइयों ने भीमसेन का सत्कार किया उपरान्त अर्जुन ने

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भीमसेनसे कहा कि यहां कोई नगर निकट जानपड़ता है वहां सबजने चलो इस वनमें रहना अच्छा नहीं है यह सुनकर सब भाइयों ने वहांसे नगरको चलनेका सम्मत दिया और माता सहित वहां से चल दिये उनके साथ २ हिडम्बा राक्षसी भी चलने लगी २८। ३६ ॥

इति श्रीभाषामहाभारते आदिपर्वणि शताधिकचतुःपंचाशत्तमोऽध्यायः १५४ ॥

एकसौपचपन का अध्याय।

भीमसेन का हिडम्बा राक्षसी के साथ अनेक स्थानों में जाकर विहार करना और उसके घटोत्कच नामी पुत्र उत्पन्न होना ॥

भीमसेन हिडम्बाको अपने साथ आते हुये देखकर बोला कि अरे राक्षसी! तू अनेक २ प्रकारकी मोहनी डाल २ कर अपने भाई का बदला लेना चाहती है इससे तू भी वहीं जा जहां तेरा भाई गया है यह देखकर युधिष्ठिर बोले कि तुझे धर्म न छोड़ना चाहिये जो क्रोध भी होवे तो भी स्त्री को मारना उचित नहीं है इसका भाई हम सबको मारने की इच्छा से आया था उसको तैंने मारडाला अब यह राक्षसी क्रोध भी करै तो हमारा क्या करसक्ती है १।३ वैशम्पायनजी बोले हे राजा जनमेजय! इसके पीछे हिडम्बा कुंती और युधिष्ठिर को प्रणाम करके आंखों में आंसू भरकर हाथ जोड़कर बोली कि हे माता! तुम जानती हो कि कामदेवसे स्त्रियों को कितना दुःख होता है यह दुःख मुझको भीमसेन के कारण से हुआ है और समय न होने के कारण से उस दुःखको मैं अबतक सहती रही अब वह समय निवृत्त हुआ और सुखका समय आया है देखो मैंने अपने भाई बन्धु और जातिवालों को छोड़कर अनुराग से तुम्हारे पुत्रको अपना पति संकल्प करलिया जो तुम या तुम्हारा पुत्र मुझको अंगीकार न करोगे तो मैं तुरन्त प्राण छोड़दूंगी इससे मेरे ऊपर कृपा करके मुझे अपनी आज्ञाकारी अथवा मूढ़भक्त पुत्रवधू जानकर इस अपने पुत्रको मेरे साथ करदो मैं इसे लेजाकर इच्छा के अनुसार भोग करके फिर इसे लेआऊँगी मेरे ऊपर विश्वास रक्खो और जिस समय तुमको कोई विषम और दुर्गम स्थान मिलै उस समय मुझको तुम याद करना मैं तुरन्त वहां पहुँचकर अपनी पीठपर तुम सबको चढ़ाकर ले चलूंगी परन्तु तुम ऐसा करो कि भीमसेन मेरे साथ प्रीतिपूर्वक चला चले ४।१२ आपत्तिकाल में जिस प्रकार से प्राण रहै उसी प्रकार से रखना उचित है और धर्मपर चलनेवाले मनुष्यको सब दुःख सह कर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

धर्म रखना चाहिये जो कोई अपने धर्मको आपत्तिकाल में रखता है वह धर्मात्माओंमें श्रेष्ठ कहलाता है आपत्तिही धर्मात्माओं के धर्म का बाधक है प्राण को धारण करनेवाला और देनेवाला पुण्यही है इससे मनुष्य धर्म के आचरण के निमित्त जो जो कर्म करता है उसके उस कर्म की कोई निन्दा नहीं करता है १३। १५ यह सुनकर युधिष्ठिर बोले कि हिडम्बा! तू सच कहती है परन्तु तुझको भी अपनी बात पर सत्य से रहना उचित है भीमसेन को तू प्रातःकाल ले जायाकर और सन्ध्या होने के पहिले हमारे पास पहुँचा दिया कर रात्रि में यह तेरे पास नहीं रहेगा दिनभर मनमानता विहार इसके साथ करियो १६। १८ वैशंपायनजी बोले भीमसेन ने उस बात को अंगीकार करके कहा कि मैं तेरे साथ उस समय तक जाया करूंगा जिस समय तक तेरे पुत्र उत्पन्न होगा उपरान्त नहीं जाऊंगा यह सुनकर हिडम्बा सम्पूर्ण उक्त बातों को अंगीकार करके भीमसेन को लेकर वहां से आकाश मार्ग पहाड़ों के द्वारा रमणीक २ शिखरों और रमणीक २ स्थानों में जहां मृग और सुंदर सुंदर पक्षी रहते थे पहुँची और अपना स्वरूप बड़ा सुंदर धारण करके भीमसेन के साथ रमण करने लगी वह राक्षसी नित्य नवीन स्थानों में नवीन २ सुन्दर स्वरूप धारण कर करके भीमसेन को आनन्द देती थी कभी फूले हुये सुन्दर वनों में ले जाती कभी पहाड़ों के ऊपर जहां पृथ्वी बराबर होती तहां जाती कभी कमल फूले हुये तालाबों के किनारोंपर ले पहुँचती कभी उन नदियों के द्वीपों में जाती जिनकी बालू वैडूर्यमणि के समान और जल बड़े सुन्दर और पवित्र हैं कभी पहाड़ी नदियों पर जा पहुँचती कभी हिमालयकी कुंजों और गुफाओं में जाती कभी शाल और पल्लव वृक्षोंके वनों में विहार करती कभी देवताओं के वनों को जाती कभी तापस और गुह्यकों के स्थान पर पहुँचती और कभी २ रमणीक मानसरोवर पर जाकर विहार करती थी १६। २६ थोड़े काल में उस राक्षसी के भीमसेन से एक पुत्र उत्पन्न हुआ वह पुत्र बड़ा पराक्रमी बड़ा बानेत बुद्धिमान् महामायावी शत्रुओं को दमन करने वाला भयानक वेषधारी था उसकी आंखें डरावनी मुख बड़ा कान खड़े हुये बोली भयंकर ओठ लाल लाल डाढ़ैं पैनी बाहैं लम्बी लम्बी शरीर बड़ा भारी नाक लम्बी छाती चौड़ी और घोंटू टेढ़े व ऊंचे थे वह मनुष्य से उत्पन्न हुआ था परन्तु उसका सब शरीर अमानुषी था और ऐसा प्रतापी था कि पिशाच राक्षसों से

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भी बढ़गया ३०। ३४ राक्षसी जिस समय गर्भ धारण करती हैं उसी समय उनके बालक उत्पन्न होजाता है और उनका बालक भी रूपवान् और इच्छानुसार रूप धारण करसक्ता है सो उस राक्षसीका वह बालक युवा स्वरूप धारण करके आया और पिता माताके चरणोंमें नमस्कार करनेलगा वह उसको देखकर प्रसन्न हुये और उन्होंने शिर घटके समान होने और शिरपर बाल न होने के कारण से उसका नाम घटोत्कच रक्खा ३५। ३८ घटोत्कच ने पाण्डवों से बड़ी प्रीति करी यह कहकर उत्तर दिशा को चलागया कि जब तुम मुझको याद करोगे तभी मैं आकर तुम्हारा जो काम होगा सो करूंगा और हिडम्बा भी यह कहकर अपने स्थान को चलीगई कि आपने मेरे साथ रहने का निबन्ध पुत्रके उत्पन्न होने ही तक किया था सो पूरा हुआ ३९। ४१ इस घटोत्कच को इन्द्रने कर्णको शक्ति देनेके कारण से कर्ण का प्रतियोद्धा उत्पन्न किया था ४२॥

इति श्रीभाषामहाभारते आदिपर्वणि शताधिकपंचपंचाशत्तमोऽध्यायः १५५ ॥

एकसौछप्पन का अध्याय।

पांडवों के चलने पर व्यासजी का राहमें मिलना और पांडवों को एकचक्रापुरी नाम नगर में बसाकर आप चलेजाना ॥

वैशम्पायनजी बोले हे राजा जनमेजय! पांडव उस वनसे अहेर खेलते हुये मत्स्य, त्रिगर्त, पांचाल और कीचक आदि देशों के रमणीक स्थान वन और नदियों को देखते हुये तपस्वियोंकासा स्वरूप बनाकर जटा रखाये हुये मृगचर्म और वृक्षोंकी छालके वस्त्र धारण किये हुये माता सहित आगे चले कभी माताको गोद चढ़ालेते थे और कभी जैसे इच्छा होती थी वैसे चलतेथे १।४ कुछ दूर आगे जाकर उन वेद और शास्त्र जाननेवाले पांडवोंने अपने पितामह व्यास जी को देखा उनको देखकर सब पांडव माता सहित दण्डवत् करके हाथ जोड़े हुये उनके सन्मुख खड़े होगये ५। ६ व्यासजी उनको देखकर बोले कि हमको तुम्हारा यह दुःख पहिलेहीसे मालूम था धृतराष्ट्रके पुत्रोंने अधर्म से तुम सबको देशसे निकाला है परन्तु तुम विषाद मत करो इस सब दुःखका परिणाम सुख होगा ७।८ यद्यपि तुम और धृतराष्ट्रके पुत्र मेरे समान हो परंतु मनुष्य दीन बालकोंपर स्नेह करते हैं इसकारणसे अब मुझको तुमसे अधिक स्नेहहै ९ और उस स्नेहही के कारणसे मैं तुम्हारे लिये कुछ हित करना चाहता हूं इससे तुम अब इस रमणीक एकचक्रापुरी नाम नगरमें गुप्त होकर रहो और जबतक हम

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

न आवें तबतक यहांसे और कहीं को न जाना इस प्रकारसे व्यासजी पांडवों को धीरज देकर कुन्तीसे बोले कि हे पुत्री ! यह तेरा युधिष्ठिर नामी पुत्र बड़ा धर्मात्मा और प्रतापी है थोड़े कालमें यह अर्जुन और भीमसेन की सहायता से सागरान्त संपूर्ण पृथ्वी जीतकर राज्य करैगा और सब राजा इसके आधीन रहैंगे और ये बड़े २ राजसूय आदि यज्ञोंको करके सुखपूर्वक अपने बाप दादे के राज्य को भोगेगा और सब मनुष्यों पर कृपा करके सबका पालन करैगा और माद्रीके पुत्र तेरी और युधिष्ठिरकी आज्ञामें रहकर सुखपूर्वक रहैंगे १०।१६ वैशम्पायनजी बोले व्यासजी ने पांडवों को उस नगर में एक ब्राह्मण के घरमें बसाकर युधिष्ठिरसे कहा कि एक महीने तक तुम यहां मेरी बाट देखना मैं देशकालको समझकर फिर आऊंगा यह सुनकर सब पांडवों ने हाथ जोड़कर कहा कि महाराज बहुत अच्छा इसके पीछे व्यासजी वहांसे चलेगये १७।१६॥

इति श्रीभाषामहाभारते आदिपर्वणि शताधिकषट्पंचाशत्तमोऽध्यायः १५६ ॥

एकसौसत्तावन का अध्याय।

ब्राह्मणके दुःखको देखकर कुन्तीका दया करके भीमसेनसे उसका दुःख दूर करनेको कहना और भीमसेनका उसको अंगीकार करना ॥

इतनी कथा सुनकर राजा जनमेजय बोले कि पांडवोंने एकचक्रापुरी नाम नगर में बसकर क्या किया वैशम्पायनजी बोले पांडव उस ब्राह्मण के घर में रहनेलगे और नित्य वहांके वन तालाब और रमणीक स्थानोंमें जाकर विहार करनेलगे दिन में सब भाई जाकर भिक्षा मांग लाते और सब भीख कुन्ती को लाकर दे देते कुन्ती उस सब भीख के दो भाग करती एक भागमें कुन्ती और युधिष्ठिर आदि चारों भाई खाते और एकभाग भीमसेन खाता था उनके गुणोंको देख २ कर वहांके पुरवासी उनसे बहुत प्रीति करनेलगे और उन्होंने इसीप्रकार से वहांपर बहुत दिनोंतक वास किया एक दिन ऐसा हुआ कि चारों भाई तो भीख मांगने चले गये और भीमसेन माता के पास रहगया उस दिन कुन्तीने उस ब्राह्मणके घरके मनुष्योंको जिसके घरमें पांडव रहते थे बड़े दुःखसे विलाप करते हुये देखा और अपने दया और साधु स्वभावके कारण से उनके विलाप को सुनकर बड़े दुःखसे भीमसेन से बोली १।११ कि हमने इस ब्राह्मणके घर में रहकर बड़ा सुख पायाहै मुझको यह चिंता नित्य रहती है कि इस ब्राह्मणसे क्या उपकार करैं क्योंकि पुरुष उनहीं को कहते हैं जो जिससे सुख पावैं उसके

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

साथ भी उसके उपकार से बढ़कर उपकार करैं अब इस ब्राह्मणको कोई दुःख प्राप्त हुआहै सो मैं चाहतीहूं कि इस दुःखमें इसका कुछ उपकार किया जावै यह सुनकर भीमसेन बोला कि तू बता इसको क्या दुःख है जो मेरे करने के योग्य कष्टसे भी होगा वह अवश्य मैं दूर करूंगा १२। १६ वैशम्पायनजी बोले कि भीमसेनके उक्त प्रकार से कहनेपर उस ब्राह्मण के घरमें फिर रोनेका बड़ा भारी शब्द उठा उसको सुनकर कुन्ती उस ब्राह्मणके घरमें चलीगई और देखती क्या है कि वह ब्राह्मण उसकी स्त्री पुत्र और पुत्री चारों नीचेको मुख कियेहुये रोरहे हैं १७। १६ उस समय ब्राह्मण बोला कि इस संसार में असार अनर्थक दुःख मूल पराधीन और अप्रिय भोगनेवाले मनुष्यके जीनेको धिक्कारहै जीना परम दुःख और परम ज्वररूपहै और जीने में दुःख निश्चय भोगना पड़ता है इसमें आत्माही अर्थ धर्म और कामका भोग करताहै और इनके न होनेपर आत्माही को दुःख होताहै कोई मोक्षको बड़ा कहते हैं सो वह मोक्ष कहांहै अर्थ प्राप्त करने में मनुष्यको नरकही प्राप्त होताहै २०। २३ जो मनुष्य अर्थ चाहता है उसको बड़ा दुःख होताहै और जब वह अर्थ मिलजाता है तब उससे भी अधिक दुःख होता है और जो कोई अर्थमें अनुराग रखता है उसको अर्थके वियोग में बड़ा दुःख होता है मुझको ऐसा कोई उपाय नहीं दीखता जिससे इस दुःख से बचूं और न कोई स्थान ऐसा मालूम होताहै जहां कुटुम्ब सहित भागजाऊं मैंने तो पहिलेही कहा था कि यहां से कहीं को भाग चलो परन्तु हे ब्राह्मणी! तूने मेरी बातको नहीं माना यही कहती रही कि मैं यहां उत्पन्न हुई हूं और इतनी बड़ी हुई हूं मेरा पिता भी यहां कभी २ चला आता है यहांसे कहां चलोगे सो तेरी मा और बाप दोनों मरगये थे और भाई बन्धु भी कोई नहीं रहा था न जाने तूने क्या समझकर मेरी बात नहीं मानी जो अब यहां रहने से बन्धुके नाश होनेका समय आगया और मेरे लिये परमदुःख होगया २४। २६ इससे हम हीं अब जाकर मरैंगे क्योंकि बन्धुको छोड़कर जीना व्यर्थ है तेरे साथ मेरा विवाह माता पिताने वेदके मंत्रों से किया है और तू कुलीन, शीलवान्, पुत्र उत्पन्न करनेवाली, पतिव्रता, प्रिय बोलनेवाली, आज्ञाकारी, धर्मचारिणी, जितेन्द्रिय, परमगतिके देनेवाली और गृहस्थाश्रम के सुखकी मूल है तुझको तो मैं छोड़ही नहीं सक्ता हूं फिर अपने पुत्रको जो अभी बालकही है क्योंकर त्याग करसक्ता हूं ३०। ३४ और पुत्रीके होने से पित्रोंको दौहित्र सम्बन्धी लोक

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्राप्त होते हैं उसको भी मैं क्योंकर छोड़ सक्ता बहुत से मनुष्य पुत्र को अधिक चाहते हैं परन्तु मैं दोनों को बराबर जानता हूं भला ऐसी पुत्रीको जिसके संतान होनेसे दौहित्र सम्बन्धी लोक मिलें मैं क्योंकर छोड़सक्ता हूं ३५।३७ जो मैं अपने शरीरको छोड़दूं तो भी मुझे परलोक में दुःख होगा क्योंकि मेरे न होने से ये बच्चे न जीवेंगे ३८ अब मैं इस दुःखरूपी सागर में पड़ा हुआ हूं कि इनमें से किसीको छोड़ नहीं सक्ता और आप मरता हूं तो ये सब नहीं जी सक्के इस दुःख से पार होना कठिनहै अहो धिक्कार है न जाने आज हम सबकी क्या गति होगी मेरा मरनाही सबके साथमें श्रेष्ठ है ३९।४०॥

इति श्रीभाषामहाभारते आदिपर्वणि शताधिकसप्तपंचाशत्तमोऽध्यायः १५७॥

एकसौअट्ठावनका अध्याय।

ब्राह्मणकी स्त्रीका ब्राह्मणको समझाकर दैत्यके पास जानेको आज्ञामांगना और ब्राह्मण का स्त्रीको हृदयसे लगाकर रोना॥

जब ब्राह्मणने उक्त रीतिसे कह २ कर विलाप किया तब उसकी स्त्री उससे बोली कि आप विद्यावान् होकर प्राकृत मनुष्यों के तुल्य इतना संताप करते हैं इस संसार में जो कोई उत्पन्न हुआ है एक दिन अवश्य मरेगा अवश्य होनेवाले पदार्थके लिये शोच करना पण्डितों का काम नहीं है १।२ मनुष्य स्त्री पुत्र और पुत्री को अपनी देहही के सुख के लिये चाहता है इससे अब आप अपने मनके दुःखको छोड़ दीजिये मैंही वहां जाऊंगी ३ पतिके अर्थ प्राण देना स्त्रीका परमधर्म है और इस कर्म के करने से आपको इसलोक में यश और परलोक में अक्षय पुण्य होगा ४।५ इसके सिवाय जिसलिये मनुष्य स्त्री को चाहते हैं वह भी धर्म मैं करचुकी हूं अर्थात् एक पुत्र और पुत्री आपके विद्यमान हैं इनको आप अच्छी तरह पालसकेंगे और मैं आपके विना पालन नहीं करसकूंगी और न ये बालक आपके विना रहसक्के हैं विधवा और अनाथ होनेपर मैं इन लड़कोंका पालन सुमार्गके साथ न कर सकूंगी क्योंकि जो मनुष्य कलंकी और अपने सम्बन्धके योग्य नहीं हैं वे जो इस कन्या को मांगेंगे तो मैं आपके विना ऐसे मनुष्यों से अपनेको क्योंकर रक्षा करूंगी और जैसे पृथ्वी पर गिरे हुये मांसको सब पक्षी खाने की इच्छा किया करते हैं इसीप्रकार से पतिहीन स्त्री को भी सब मनुष्य चाहा करते हैं उनके बहकाने और प्रार्थना करनेपर मैं सज्जनों के चलाये हुये मार्ग में न रह

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सकूंगी ६।१३ और जब मेरी यह गति होगी तो मैं इस पुत्री को बाप दादे की मर्यादापर क्योंकर चलाऊंगी १४ और अनाथ होने से इस लड़के को आप के सदृश विद्या न पढ़ासकूंगी दुष्टलोग मेरा निरादर करेंगे और आप की इस पुत्री को मांगेंगे और जो मैं उनको इस पुत्रीको देने में निषेध करूंगी तो वे बरजोरी करके लेलेंगे ऐसे समय में आपके पुत्रको कुलके विपरीत चलते और पुत्री को दुष्टों के वशमें देखकर निस्संदेह मैं मरजाऊंगी १५। १६ और मेरे आपके दोनोंके न होनेपर ये बालक भी विना जलके मछली के समान मरजायेंगे इसप्रकार से हे महाराज! आपके विना हम तीनों में से कोई भी न बचेंगे इससे आप मुझे त्यागदें इसके सिवाय धर्म जाननेवाले मनुष्य कहते हैं कि पुत्रवती स्त्रीका पतिसे पहले मरना बड़े भाग्यकी बात है मैं आपके अर्थ अपने प्राण पुत्र पुत्री और भाई बन्धु सब छोड़ती हूं स्त्रीका दान यज्ञ और व्रत यही है कि अपने पतिका हित करै मेरा यह कर्म आपके हित और कुलकी रक्षाके लिये है इसको सब श्रेष्ठ मनुष्य मानते हैं मित्र पुत्र धन और दारा इनको विपत्ति के दूर करने का हित करना उचित है आपत्ति में धनकी रक्षा करना और धनसे स्त्री की रक्षा और स्त्री और धनसे अपनी रक्षा करना मनुष्य को उचित है २०। २७ और दृष्ट और अदृष्ट फल मिलनेके लिये स्त्री पुत्र धन और गृहका विधान करना सर्वथा योग्य है और एक ओर सब कुल और दूसरी ओर अपनी आत्माको रखकर मनुष्य तोले तो सब कुल अपनी आत्मा के समान कभी न होगा इससे इस कामको आप मेरे द्वारा होने दीजिये आप मुझको आज्ञा दीजिये और आप इन लड़कों को पालिये २८।३० धर्मज्ञों ने स्त्री को अवध्य और राक्षसों को धर्म जानने वाला कहा है इस से मैं जानती हूं कि वह राक्षस भी मुझको नहीं मारेगा पुरुषका वध वहां जानेपर निश्चय होता है परन्तु स्त्री के वध में संशय है इससे आप मुझको वहां जानेकी आज्ञा दीजिये और मैंने सुन्दर २ भोग भोग लिये हैं और धर्म भी अच्छीतरह करचुकी हूं और मेरे संतान भी है इस कारण से मुझको मरना दुःख नहीं देगा ३१। ३३ मैं अब वृद्ध हुई और संतानवाली हूं इससे आप के इस हितको करना मैंने विचारा है आप जो मेरे पीछे दूसरी स्त्री से भी विवाह करलेंगे तौ भी आपका धर्म रहैगा पुरुष को बहुतसी स्त्रियों के साथ भी विवाह करने से कोई अधर्म नहीं होता है और स्त्री जो एक पति से

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दूसराभी करै तौ वह पतित होजाती है ३४। ३६ इससे आप वहां न जाइये यहां रहकर अपने कुल और लड़कों की रक्षा कीजिये वैशम्पायनजी बोले हे राजा जनमेजय! वह ब्राह्मण अपनी स्त्रीकी उक्त बातों को सुनकर स्त्री को हृदय से लगाकर रोने लगा ३७। ३८॥

इति श्रीभाषामहाभारते आदिपर्वणि शताधिकाष्टपञ्चाशत्तमोऽध्यायः १५८॥

एकसौउनसठ का अध्याय।

ब्राह्मण की कन्याका मा बापको समझाकर यह कहना कि राक्षस के पास मुझे भेजदो॥

वैशम्पायनजी बोले हे राजा जनमेजय! उन दोनों स्त्री पतिको अत्यन्त दुःखी देखकर उनकी कन्या बोली कि तुम दोनों अनाथकी तरह क्यों रोते हो मैं कहूं सो करो मैं धर्म के अनुसार तुम दोनों से त्याज्य हूं इससे आप मुझको त्याग करके सबकी रक्षा कीजिये संतान इसी निमित्त होती है कि मा बाप को तारे सो इस दुःखरूपी समुद्र से आप मुझको वहां भेजकर तर जाइये १।४ पुत्र पितरोंको नरक से तारता है और इसी निमित्त कन्या के दौहित्र का भी होना चाहते हैं सो मैं आपही आपका जीवन रखकर आपको तारूंगी यह मेरा छोटा भाई अभी बालक है आपके मरनेपर यह भी मर जायगा और तुम्हारे दोनों के मरनेपर पितरोंका पिण्डदान लुप्त होजायगा और पिता माता और भाई के न होनेपर मैं भी दीन होकर दुर्गति से मर जाऊंगी इससे जो आप बने रहेंगे तो मेरी मा और भाई और पितरों का पिण्डदान बना रहैगा ५। १० पुरुष की स्त्री सखा और पुत्र आत्मा और पुत्री दुःखरूप होती है इससे मुझे त्याग करके अपनी रक्षा कीजिये ११ आपके विना मैं अनाथ होकर दुःखसे जहां तहां फिरा करूंगी और तुमको तारने से मुझे बड़ा पद और सुख मिलैगा तुम्हारे त्यागने पर मुझको बड़ा दुःख होगा इससे धर्म और संतान के निमित्त आप मुझको त्याग दीजिये और आप रहकर सबकी रक्षा कीजिये इस समय में आपको मेरा कहना करना अवश्य है क्योंकि आपके मरने पर मैं इधर उधर कुत्तेकी तरह अन्न मांगती फिरूंगी यद्यपि यह बात है कि इस प्रकार से कन्या दान करने में अर्थात् राक्षस को खाने के लिये देने में देवता और पितरों का हित न होगा परन्तु देवता और पितृलोग आपके दिये हुये जलदानसे प्रसन्न होंगे १२। १६ वैशम्पायनजी बोले हे राजा जनमेजय! उस कन्याकी इस प्रकार से बहुत सी बातें सुनकर मा और बाप दोनों कन्या सहित विलाप

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

करने लगे उस समय उस ब्राह्मणका छोटा लड़का हँसता हुआ वहां गया और मा बाप और बहिन के पास जाकर एक२ से मधुर बालअवस्था की बोली में बोला कि अरी अम्मा ! अरी भैना ! रोवे मत मेरे हाथमें यह तिनका है मैं इस तिनके से उस मनुष्यभक्षी राक्षस को मारडालूंगा उसकी बातको सुनकर सब हँसपड़े और कुन्तीभी प्रसन्न होकर सहायता करनेका समय जानकर उनके पास चलीगई और मृतक में जीवदान देनेके समान बोली १७। २४॥

इति श्रीभाषामहाभारते आदिपर्वणि शताधिकैकोनषष्टितमोऽध्यायः १५६॥

एकसौसाठ का अध्याय।

कुंतीका ब्राह्मण से दुःखका कारण पूछना और ब्राह्मणका बक नाम दैत्यको खानेको भोजन और एक मनुष्य बारी बारी से दिये जानेका हाल कहना॥

कुन्ती बोली हे ब्राह्मण! इस तुम्हारे दुःखकी जड़ क्या है मुझसे कहो मैं उसके उखाड़ने का उपाय करूं यह सुनकर वह ब्राह्मण बोला कि अच्छे मनुष्यों की यही बात है कि दूसरे के दुःखमें सहायता करें परन्तु मेरा दुःख मनुष्य के दूर करने के योग्य नहीं है इस नगरके पास एक बक नाम राक्षस बड़ा पराक्रमी और इस देशका स्वामी रहता है वह इस देशकी शत्रुओं से रक्षा करता है और मनुष्यों का मांस खाता है उसके कारण से हमको किसी प्राणीमात्र का यहां भय नहीं है उसको १२ मन चावल २ भैंसे भोजन के लिये देने पड़ते हैं और एक मनुष्य जो उसके भोजन को लेकर जाताहै उसको भी वह मारकर खाजाता है नगर से हरएक मनुष्य के घरसे एक २ मनुष्य बारी २ से जाता है और वह बारी कई वर्षोंमें आकर पड़ती है और जो कोई मनुष्य इस बात से बचनेका उपाय करता है उसको वह राक्षस परिवार सहित मारकर खाजाताहै १। ८ यहां का राजा वेत्रकीय नाम स्थान में रहता है वह मन्दबुद्धि इससे अपने मनुष्यों को बचानेका कुछ उपाय नहीं करता है इस दुर्बल और नीच राजा के राज्य में बसने का यह फल है ब्राह्मण सदैव पक्षियों की तरह स्वच्छन्दचारी होते हैं और अच्छा राजा स्त्री और धन जो सुखका मूलहै देखकर बसते हैं सो हमने इसके विपरीत किया है इससे हमपरभी यह दुःख आनकर पड़ा है अब हमारी बारी है और हमें उस राक्षस को भोजन और एक मनुष्य देना उचितहै ९। १४ इतना धन नहीं है जो किसी मनुष्य को मोल लेकर भेजदें और घरके आदमियों मेंसे किसीको दिया नहीं जाता है इससे अब उस राक्षस से बचनेका कोई

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उपाय न देखकर मैं महादुःखरूपी समुद्र में पड़ा हुआ हूं मैंने यह विचारलिया है कि मैं सकुटुंब उस राक्षस के पास जाऊंगा और वह राक्षस हम सबको मारकर खाजायगा १५। १७॥

इति श्रीभाषामहाभारते आदिपर्वणि शताधिकषष्टितमोऽध्यायः १६०॥

एकसौइकसठ का अध्याय।

ब्राह्मणका दुःख सुनकर कुन्तीका राक्षस को भोजन लेजाने के लिये भीमसेन को भेजने का वादा करना॥

यह सुनकर कुन्ती बोली तुम इस विषाद को छोड़दो मैंने इसका उपाय सोच लियाहै तेरे एक पुत्र और एक पुत्री है तू वहां मत जाय और न अपनी स्त्री आदि किसी को भेज मेरे पांच पुत्र हैं उनमें से मैं एकको उस राक्षसका भोजन लेकर भेजदूंगी यह सुनकर वह ब्राह्मण बोला कि मैं अपने जीने के लिये अपने यहां आये हुये अतिथि ब्राह्मण को कभी नहीं भेजूंगा यह बात अधर्मी और अकुलीन मनुष्यों में भी नहीं होती है १। ४ ब्राह्मण के लिये मुझे अपने प्राण और पुत्र आदिको भी देने में निषेध नहीं है ब्राह्मण और अपने संबंधियों से अपना मरना अच्छा है ब्राह्मण के मरने का बड़ा पाप है उसके दूर करने का कोई उपाय नहीं है ५। ६ ब्राह्मण के वधसे तो अपना वध होना अच्छा है क्योंकि मैं अपना वध अपने आप नहीं चाहता हूं मुझे तो दूसरा मारेगा उसमें मुझको कुछ पाप नहीं है ७। ८ घर में आये हुये ब्राह्मण को जान बूझकर वध करवाना बड़ा नीच और निंदित कर्म है उस पाप के दूर करनेका कोई उपाय नहीं है ९। १० और महात्माओं का यह मत है कि नीच और निंदित कर्म कभी नहीं करना चाहिये ११ इससे मैं ब्राह्मण के मरवाने को कभी नहीं कहूंगा और आपही स्त्री सहित मरजाऊंगा १२ यह सुनकर कुन्ती बोली कि मेरी समझ में भी ब्राह्मणकी सदैव रक्षाही करना चाहिये और पुत्र जो सौ भी होयँ तो भी उनमें से कोई कुप्यारा नहीं होसक्ता परन्तु मैंने जो अपने पुत्रके भेजने को कहा है उसका कारण यह है कि मेरे पुत्रको वह राक्षस नहीं मारसक्ता है क्योंकि वह पराक्रमी तेजस्वी और मंत्रवेत्ता है मेरी समझसे मेरा पुत्र उस राक्षसके भोजनको पहुँचा देगा और इस विपत्ति से तुम सबको छुड़ावेगा १३। १५ मेरे इस पुत्रने पहिले बहुत से राक्षसों को मारकर यमलोक में पहुँचाया है इससे तुम किसी बातका भय मत करो और

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इस बातको भी किसी के सन्मुख मत कहना नहीं तो विद्यार्थी लोग आश्चर्य से मेरे पुत्रोंको दुःख देंगे १६। १७ क्योंकि विना गुरुकी आज्ञाके जो कोई मनुष्य विद्या दूसरे को दे देता है वह विद्या पानेवाला उस विद्यासे यथावत् काम नहीं करसक्ता १८ यह सुनकर उस ब्राह्मण ने स्त्री सहित प्रसन्न होकर कुन्तीका बड़े आदर से पूजन किया और उसके साथ भीमसेन के पास जाकर कहा कि हमारे इस कार्य में आप हमारी सहायता कीजिये यह सुनकर भीमसेन बोला कि तथास्तु अर्थात् हम ऐसाही करेंगे १६। २० ॥

इति श्रीभाषामहाभारते आदिपर्वणि शताधिकैकषष्टितमोऽध्यायः १६१ ॥

एकसौबासठ का अध्याय।

युधिष्ठिरका यह सुनकर कि भीमसेन राक्षस के लिये भोजन लेजायगा कुंती से दुःखी होकर कहना और कुंती को उसे धर्म समझाना ॥

वैशम्पायनजी बोले हे राजा जनमेजय! भीमसेन के उस काम को करने की प्रतिज्ञा करने पर चारों पांडव बाहर से भिक्षा मांगकर आनपहुँचे और भीमसेन के आकार को देखकर उनमें से युधिष्ठिरने कुंतीको एकांत में लेजाकर पूछा कि आज भीमसेन तेरी सलाह से क्या करना चाहता है १। २ यह सुन कर कुंती बोली आज यह मेरी आज्ञा से इस नगरकी मोक्ष और इस ब्राह्मणकी प्राणरक्षा के निमित्त एक बड़ा काम करैगा ४ युधिष्ठिर बोले कि तूने यह दुष्कर साहस किया है पुत्रका त्याग करना कोई भी अच्छा कहता है तुमने दूसरेके पुत्रके लिये अपने पुत्रका त्याग करदिया तेरा यह काम लोक और वेद विरुद्ध है ५। ६ जिसकी भुजाके बलके आश्रय होकर हम रात्रिको सुखसे सोते हैं और गये हुये राज्य को फिर लिया चाहते हैं और जिसके पराक्रम को देखकर दुर्योधन को रात्रि में नींद नहीं पड़ती है और जिसकी शूरता से पुरोचन मारागया और हम सब लाखके घर और दुष्ट राक्षसों से बचकर आये और जिसके वीर्य से हम सब धृतराष्ट्रके पुत्रों को मारकर सब धन और राज्य लिया चाहते हैं उसको तू ऐसे २ कामोंके लिये भेजना चाहती है दुःखके कारण से तेरी बुद्धि जाती रही है ७। ११ यह सुनकर कुन्ती बोली कि तुझको भीमसेन में पूर्ण विश्वास करना चाहिये मैंने यह काम बुद्धिकी मन्दताके कारण से नहीं किया किन्तु केवल ब्राह्मण का उपकार जानकर किया है क्योंकि हम सब धृतराष्ट्रके पुत्रों से छिपकर उसके घरमें सुखपूर्वक बसे हैं हमे भी उस ब्राह्मणके साथ उसके

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उपकारसे बड़ा उपकार करना उचित है वारणावतसे तुम सबको लाने के समय और हिडम्ब राक्षसको मारने के समय से मुझे भीमसेन का पूर्ण विश्वासहै भीमसेन की भुजाका बल दशसहस्र हाथियों की बराबरहै और उसकी बराबर दूसरा पराक्रमी नहीं है वह अकेला चक्रवर्ती राजाको जीतसक्ताहै जब यह बालकही था तब पहाड़पर एकदिन मेरीगोदमें से एक पत्थरपर गिरपड़ा था सो उसके गिरने से वह पत्थर टुकड़े २ होगया था मुझको भीमसेनके बलका तभी से निश्चय है और इसी कारण से मैंने ब्राह्मणके उपकार करने को और अपना धर्म जान कर उसे ऐसा काम करने की आज्ञा दी है कुछ लोभ मोह और अज्ञान से ऐसा नहीं किया है क्षत्रियको ब्राह्मणकी सहायता करना बड़ा धर्म है ऐसा करने से क्षत्रियको सद्गति प्राप्त होती है क्षत्रियकी मोक्ष क्षत्रियही उसको रण में मार कर करता है और क्षत्रिय वैश्यकी रक्षा करने से शुभ लोक और संसार में यश पाता है और जो क्षत्रिय राजा शरण आये हुये शूद्रकी रक्षा करता है उसका जन्म अच्छे कुलमें होता है और संसार में सबका मान्य रहता है मैंने यह धर्म पहिले व्यासजी से सुना था इस कारणसे इस धर्मको करनाही उचितहै १२।२६॥

इति श्रीभाषामहाभारते आदिपर्वणि शताधिकद्विषष्टितमोऽध्यायः १६२ ॥

एकसौतिरसठ का अध्याय।

भीमसेन का वक राक्षसके लिये भोजन लेकर वनमें जाना और उससे युद्ध करके उसे मारडालना ॥

यह सुनकर युधिष्ठिर बोला कि हे माता! जो तूने ब्राह्मण पर दया करके धर्मके अनुसार भीमसेन को राक्षसके मारने को आज्ञा दी है सो बहुत योग्य काम किया है निश्चय भीमसेन उस राक्षसको मारकर आवेगा परंतु उस ब्राह्मणसे कहकर ऐसा यत्न करना चाहिये जिससे इस बातको कोई न जाने १।३ वैशम्पायनजी बोले इसके पीछे भीमसेन उस राक्षस के भोजन को लेकर वहां से रात्रि व्यतीत होनेपर उस वनमें गया जहां वह राक्षस रहता था और वहां बैठकर अन्न भोजन करने लगा और उस राक्षसका नाम ले लेकर पुकारने लगा ४।५ भीमसेनकी बोलीको सुनकर वह राक्षस जिसका शरीर बड़ा लम्बा चौड़ा आंखें लाल लाल भयंकर सूरत मूछें और शिरके बाल रूक्ष मुख कानों तक फटा हुआ कान खड़े हुये भौं के ऊपर तीन रेखा और अत्यन्त भीम था क्रोधसे दांतोंको पीसता और पृथ्वीको कांड़ता सा वहां आपहुँचा और भीमसेन

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

को खाते हुये देखकर बड़े क्रोध से बोला कि यह कौन मनुष्य यहां मरने को आया है जो मेरे देखते हुये मेरे लिये आये हुये अन्नको खारहा है यह सुन कर भीमसेन ने हँसकर मुँह फेर लिया और उस राक्षस का अनादर करके भोजन करता रहा तब वह राक्षस भयानक बोली बोलकर दोनों हाथों को उठा कर भीमसेन को मारने दौड़ा ६। १२ इसपर भी भीमसेन ने उस राक्षसको कुछ न समझा और भोजन करता रहा १३ उस समय राक्षसने पीछेसे आकर भीमसेन की पीठ में अपने दोनों हाथ मारे भीमसेन ने उसे कुछभी नहीं गिना और भोजन करता रहा इसपर वह राक्षस एक वृक्षको तोड़कर भीमसेन को मारने दौड़ा तब तो भीमसेन ने उस बचे हुये अन्नको खाकर जल्दी से आचमन कर लिया और उस राक्षस से लड़ने को खड़ा होगया और उस राक्षस के फेंके हुये वृक्षको हँसकर अपने बायें हाथ से पकड़ लिया १४। १८ इसके पीछे वह दोनों वृक्ष उखाड़ २ कर एक दूसरे से लड़ने लगे उनके युद्ध से वहां कोई वृक्ष बाकी नहीं रहा तब राक्षस ने भीमसेनको अपना नाम सुनाया और उसके पास जाकर उसे पकड़ लिया १९।२१ भीमसेन उसे पकड़ कर खींच लेगया और वह राक्षस भी बलसे खींचते २ श्रमित होगया उनकी खैंचा खैंचीसे सब वृक्ष चूर्ण होगये और पृथ्वी कांपनेसी लगी २२। २४ जब भीमसेनने देखा कि राक्षस थकगया है तब उसे उठाकर देमारा और उसकी पीठ पर अपना घोंटू रख २ दहिने हाथ से उसके कंधे और भुजा पकड़कर बायां हाथ उसकी कमरपर लगाकर बीचमें से दो करडाला तब उस राक्षस के मुख से लोहू बहनेलगा २५। २८॥

इति श्रीभाषामहाभारते आदिपर्वणि शताधिकत्रिषष्टितमोऽध्यायः १६३॥

एकसौचौंसठ का अध्याय।

बकदैत्यके मारनेका वृत्तान्त सुनकर सब नगरवासियों का आनन्द करना और ब्राह्मणों की पूजा करना॥

वैशम्पायनजी बोले हे राजा जनमेजय! वह राक्षस फिर बड़ा रौरव शब्द करके मरगया उसके शब्दको सुनकर उस राक्षसके कुटुम्बी और नौकरलोग वहां दौड़े हुये आये और भीमसेन के हाथसे बकराक्षस को मरा हुआ देखकर भीमसेन के डरके मारे कांपनेलगे उनको कांपते हुये देखकर भीमसेन ने कहा कि तुम अपने प्राणों का भय मत करो मेरे सामने सौगन्द खाओ कि आज

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पीछे हम कभी मनुष्यों को नहीं मारेंगे यह सुनकर राक्षसोंने सौगन्द खाई और वहांसे डरके मारे जहां तहांको भाग गये और उस नगरके रहनेवालों का सब भय दूर होगया इसके पीछे भीमसेन उस मरे हुये राक्षस को उठाकर नगर के द्वारपर रखकर अनजानता हुआ उसी ब्राह्मणके घर चलागया और युधिष्ठिर से सब वृत्तान्त कह सुनाया जब प्रातःकाल होगया तब नगरके लोग बाहर निकले और उस राक्षसको मरा हुआ देखकर बहुत प्रसन्न हुये और नगर में जाकर सब वृत्तांत कहा उसके मरने के हालको सुनकर सब छोटे बड़े वृद्ध बालक और स्त्री आदि सहस्रों नगरवासी उस मरे हुये राक्षसके देखने को गये और उस अमानुष कर्म को देखकर आश्चर्य कर २ के सबके सब अपने देवी देवताओं को मनाने लगे फिर उस ब्राह्मण की बारी को जानकर सब लोग उसके पास आये और पूछने लगे कि कहो तो बक कैसे मारा गया वह ब्राह्मण पांडवों को छिपाकर बोला कि राज्यसे भोजन पहुँचाने की आज्ञा मिलने पर मैं कुटुम्ब सहित रोरहा था इसमें एक मंत्रसिद्ध ब्राह्मणने मुझपर दया करके मेरा हाल पूछा और मेरे और सब नगरके कष्टको मुझसे सुनकर कहने लगा कि तुम रोवो मत उस राक्षसको हम भोजन पहुँचादेंगे वह हमारा कुछ नहीं करसक्ता है इसके पीछे वह ब्राह्मण समय आनेपर उसके भोजन को लेकर वहां चला गया हम जानते हैं कि यह हम सबका हित उसीने किया है यह सुनके उस नगरके रहनेवाले चारों वर्णों ने बड़ा आश्चर्य और आनन्द किया और ब्राह्मणों की पूजा की १।२० उस राक्षस के देखने को वहां सब देश के मनुष्य आये और पाण्डव उसी ब्राह्मणके घरमें रहा किये २१॥

इति श्रीभाषामहाभारते आदिपर्वणि शताधिकचतुष्षष्टितमोऽध्यायः १६४॥

एकसौपैंसठ का अध्याय।

उस ब्राह्मण के घर पर एक अतिथि ब्राह्मणका आना और उससे अनेक इतिहास सुनकर पांडवोंका उससे द्रौपदी आदि की उत्पत्तिका हाल पूछना॥

इतनी कथा सुनकर जनमेजय ने पूछा कि महाराज पांडवों ने बक राक्षस को मारकर फिर क्या किया यह सुनकर वैशम्पायनजी बोले पांडव उस राक्षस को मारकर वेद और उपनिषदों को पढ़ते हुये उस ब्राह्मण के घर में रहते रहे कुछदिनों में उस ब्राह्मणके घर एक बड़ा व्रत करनेवाला तपस्वी ब्राह्मण आया उस ब्राह्मणने अतिथि जानकर बड़े आदर से उसे अपने घर में टिकाया १।४

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उसने वहां अनेक देश तीर्थ और नदियों की कथा वर्णन की उस कथा को पांडव भी कुन्ती सहित सुना किये कथा के अन्त में उसने राजा द्रुपद के शिखण्डी और धृष्टद्युम्न के उत्पन्न होने और द्रौपदी नाम कन्या के यज्ञ की अग्नि से प्रकट होनेकी कथा भी सुनाई और यह भी कहा कि अब द्रौपदी का स्वयम्बर है यह सुनकर पांडवों ने आश्चर्य किया और उस ब्राह्मणसे पूछा कि महाराज इन सबके यज्ञसे उत्पन्न होनेकी कथा विस्तारपूर्वक सुनाइये और यह भी कहिये कि धृष्टद्युम्न ने द्रोणाचार्य से बाणविद्या कैसे सीखी और द्रुपद और द्रोणाचार्य की मित्रता क्योंकर टूटी यह सुनकर वह ब्राह्मण कहने लगा ५। १२ ॥

इति श्रीभाषामहाभारते आदिपर्वणि शताधिकपंचषष्टितमोऽध्यायः १६५ ॥

एकसौछांछठ का अध्याय।

ब्राह्मणका पांडवों से द्रोणकी उत्पत्ति अस्त्रविद्या सीखने द्रुपद से विरोध होने और द्रुपद को जीतकर आधा राज्य ले लेनेकी कथा कहना ॥

हरद्वार में एक भरद्वाज नाम बड़ा तपस्वी और ज्ञानी ऋषि रहता था एक दिन वह गंगाजी में स्नान करने को गया वहां उससे पहिले से आई हुई घृताची नाम अप्सरा गंगाजी में स्नानकर रही थी दैवयोगसे उस अप्सरा के वस्त्र हवासे उड़गये और वह नंगी होगई उसको देखकर भरद्वाज ऋषि उस पर कामासक्त होगये और उनका अमोघ वीर्य जो बहुत कालसे रुका हुआ था गिरपड़ा ऋषिने उस वीर्यको द्रोणनाम यज्ञपात्र में रखलिया और उससे द्रोण नामी पुत्र उत्पन्न हुआ पांचाल देश का पृषत नाम राजा भरद्वाज का मित्रथा और उसके भी द्रुपद नाम एक पुत्र था १।६ वह द्रुपद भरद्वाजजी के आश्रम में नित्य जाकर द्रोणके साथ खेला करता था और विद्या पढ़ा करता था इसके पीछे राजा पृषत के मरने पर द्रुपद पांचाल देश का राजा होगया और द्रोण यह सुनकर कि परशुरामजी ब्राह्मणों को धन बांटते हैं परशुरामजी के पास चलागया और उनसे धन मांगा उसको देखकर परशुरामजी बोले कि मेरे पास अब कुछ नहीं रहा है सब धन ब्राह्मणों को दे चुका हूं केवल शरीर और अस्त्र रह गये हैं इनमें से जिसको तू चाहे दे दूं द्रोण बोला कि अच्छा महाराज आप मुझको प्रयोग संहार और रहस्यसहित सब अस्त्र दे दीजिये यह सुनकर परशुरामजी ने सम्पूर्ण अस्त्र द्रोणको सिखा दिये और द्रोण उनको और बड़े मान्य

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अस्त्र ब्रह्मास्त्र को पाकर सब मनुष्यों में उत्तम होगया ७। १३ द्रोण फिर वहांसे अस्त्र सीखकर द्रुपद के पास गया और उससे मिलकर कहा कि हे राजन्! मैं तेरा मित्र हूं मुझको पहिंचान यह सुनकर द्रुपद बोला कि कुपढ़ व वेदपारग रथी अरथी राजा और जो राजा नहीं आपस में कभी मित्र नहीं होते हैं तू पुरानी मित्रता की क्या बात कहता है यह सुनकर द्रोण उसके लिये मनमें कुछ विचार करके कुरुओंके हस्तिनापुर नाम नगरमें चलागया वहां भीष्मने उसका बड़ा आदर सत्कार करके और बहुतसा धन देकर टिकाया और अपने पौत्रों को अस्त्र आदि विद्या सिखाने के लिये सौंप दिया जब वह अर्जुन आदि सब भीष्म के पौत्र अस्त्रविद्या सीख चुके तब द्रोणने उन सबको बुलाकर कहा कि तुम सब मिलकर हमको गुरुदक्षिणा दो यह सुनकर अर्जुन आदि शिष्य बोले कि महाराज जो गुरुदक्षिणा आप मांगें सो हम आपको दें यह सुनकर द्रोण बोला कि हमको द्रुपदका राज्य छीनकर दे दो यह सुनकर सब शिष्य द्रोण के साथ होलिये और लड़ाई में पांडवों ने द्रुपद को मंत्रियों सहित जीत कर पकड़ लिया और द्रोण के सन्मुख ले आये उसको देखकर द्रोण बोला कि यद्यपि तू मित्रता के योग्य नहीं है परन्तु मैं अब भी तुझसे मित्रता चाहता हूं गंगाजीके दक्षिण ओर के देशमें तू राज्यकर और उत्तर ओर के देशोंका राज्य मुझे देदे यह सुनकर द्रुपदने मित्रता अंगीकार की और आधा राज्य द्रोणको देकर वहांसे घरको चला आया और द्रोणभी अपने स्थानको गया १४। २७ राजा द्रुपदके हृदय से वह असत्कार दूर नहीं हुआ और वह उसके शोच में दिन २ दुर्बल होनेलगा २८॥

इति श्रीभाषामहाभारते आदिपर्वणि शताधिकषट्षष्टितमोऽध्यायः १६६॥

एकसौसरसठ का अध्याय।

राजा द्रुपदका याज और उपयाजनाम ऋषियों से पुत्र होने के निमित्त यज्ञ करना और उस यज्ञकी अग्निसे धृष्टद्युम्न और द्रौपदीका प्रकट होना॥

ब्राह्मण बोला कि इसके पीछे राजा द्रुपद अपने अपमान से चित्तमें बड़ा क्रोधित हुआ और द्रोणाचार्य के प्रभाव को जानकर क्षत्रिय होनेपर भी अपनी सामर्थ्य बदला लेने को न देखकर श्रेष्ठ संतान उत्पन्न होने के निमित्त शोक और चिन्तामें मग्न होकर उत्तम तपस्वी ब्राह्मणको ढूंढ़ने के लिये ब्राह्मणों के आश्रम में घूमनेलगा १। ४ कुछ दिनों में वह यमुना और गंगातटवासी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ऋषियोंके आश्रम में घूमता हुआ याज और उपयाज नाम दो ऋषियों के आश्रममें पहुँचा वे दोनों ब्राह्मण संशितव्रत, शाम्यन्त, संहितापाठी, ब्रह्मज्ञानी, सूर्यभक्त, सब ऋषियों में उत्तम और काश्यपगोत्री थे ५। ८ द्रुपदने उनके ब्रह्मबलको जानकर अपनी मनोकामना के पाने के लिये उनका निमंत्रण किया और बड़ी शुश्रूषा के साथ उनकी विधिपूर्वक पूजा कर चरणों में अपना शिर रखके उपयाज को एकान्त में लेजाकर हाथ जोड़कर कहा कि महाराज! कोई ऐसा उपाय कीजिये जिससे मेरे द्रोणको मारनेवाला पुत्र होवे मैं आपको अर्बुद गाय दूंगा अथवा और जो कुछ आपके मनकी अभिलाषा होगी सो पूरी करूंगा इसमें कुछ संदेह नहीं है ९। १२ यह सुनकर उपयाज बोला कि हमसे यह काम नहीं होसक्ता इसपर द्रुपद उसकी सेवा करतारहा और जब एकवर्ष बीतगया तब उपयाज ने एक दिन उससे कहा कि मेरा बड़ा भाई याज नामी है तुम उसके पास जाओ वह लोभी है लोभके कारण से तुमको यज्ञ कराकर तुम्हारे मनकी इच्छाको पूरी करैगा मैं उसको लोभी तबसे जानताहूं जबसे उसने वनमें फिरते हुये पृथ्वीपर पड़े हुये फलको शुद्धाशुद्ध विना विचारे उठालिया और गुरुके यहां संहिता पढ़ने के समय जूंठी भीखको अन्नके गुण वर्णन कर २ के खालिया यह सुनकर राजा द्रुपद अपने कामको जानकर उपयाज के आश्रम से याज के आश्रम को गया और उनकी पूजा करके बोला १३। २१ कि महाराज! मैं द्रोणाचार्य से अपना वैर लेना चाहता हूं वह कुरुओं का आचार्य बड़ा ब्रह्मज्ञानी ब्रह्मबलका रखनेवाला ब्रह्मास्त्रका ज्ञाता बड़ा बाणैत और परशुरामजी के समान शूरवीर है उसके समान कोई क्षत्रिय पृथ्वीपर नहीं है उसके बाणों के जालसे कोई जीता नहीं बचसक्ता है उसका धनुष छः हाथकासा दीखता है और क्षत्रिय ब्राह्मण दोनोंके तेजको रखनेके कारणसे युद्धमें जलती हुई अग्निके समान दीखताहै इससे मैं आपके ब्रह्मतेज को द्रोणाचार्य के क्षत्रिय और ब्रह्मतेजसे अधिक समझकर आपकी शरण आया हूं सो महाराज! आप कृपा करके ऐसा कर्म कराइये जिस से मेरे युद्ध में दुर्जय और द्रोणका मारनेवाला पुत्र उत्पन्न हो मैं आपको अर्बुद गाय दक्षिणामें दूंगा २२। ३० यह सुनकर याज ने यज्ञ कराकर द्रोणाचार्य के नाश करने के लिये पुत्र उत्पन्न करने की प्रतिज्ञा की और उपयाजको भी बुलाकर यज्ञ कराने के लिये उपस्थित किया इसके पीछे उपयाजने राजा से

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पुत्र उत्पन्न होने के लिये श्रौताग्नि साध्याकर्म का वर्णन किया और कहा कि इस कर्मके करने से तुम्हारे जैसा पुत्र चाहते हो वैसाही होगा यह सुनकर राजा द्रुपदने द्रोणको मारनेवाले पुत्रका संकल्प मनमें करके यज्ञकी सब सामग्री मँगाकर यज्ञ किया जब होम होचुका तब याजने रानीको बुलाकर कहा कि यहां आ तेरे एक पुत्र और एक पुत्री होगी यह सुनकर रानी बोली कि महाराज! मैं रजस्वला होने से दूषित हूं पुत्र के निमित्त किसी वस्तुको स्पर्श नहीं करसक्ती हूं आप मेरे हित की बात करिये यह सुनकर याज बोला कि यह हव्य जो पुत्रकी उत्पत्ति के लिये मैंने कल्पित किया है और उपयाजने मंत्रित कियाहै व्यर्थ नहीं होसक्ता इससे अवश्य एक पुत्र और एक पुत्री उत्पन्न होंगे तू जा चाहै ठहर यह कहकर याजने उस हव्यको यज्ञकुंडकी अग्निमें डालदिया डालतेही उस कुंडमें से एक कुमार देव भयानक स्वरूप किरीट मुकुट पहिने हाथ में धनुष और तलवार लिये हुये प्रकट हुआ और निकलकर रथ में बैठगया उसको देखकर सब पांचालदेशके मनुष्य प्रसन्न होकर जय २ करनेलगे और यह आकाशवाणी हुई कि यह पुत्र द्रुपदके शोकको दूर करनेवाला और द्रोणाचार्यका नाश करनेवाला हुआ है ३१। ४३ इसके पीछे उसी यज्ञ-कुंड से एक कन्या प्रकट हुई वह कन्या सुभगा, दर्शनीय, विशालनेत्रा, घूंघर-वाले बाल, नख उठेहुये और लाल लाल भौंहैं बड़ी सुंदर, पयोधर कठिन और उठेहुये देवकन्याओं की सी छवि रखनेवाली थी उसके शरीरमें नीले कमलों के समान एककोश से गंध आती थी स्वरूपमें उसके समान दूसरी स्त्री पृथ्वी पर न थी उसके प्रकट होतेही आकाशवाणी हुई कि यह संसार में सब स्त्रियों से श्रेष्ठ होगी इससे देवताओं के काम निकलेंगे और इसके कारणसे कुरुओं को बड़ा भय और क्षत्रियोंका नाश होगा यह आकाशवाणी सुनकर सब पांचालदेश के मनुष्य बहुत प्रसन्न हुये उस समय रानी ने याजकी शरण जाकर कहा कि ये दोनों मेरे सिवाय दूसरी स्त्री को अपनी माता न जाने यह सुनकर याज बोले कि ऐसाही होगा इसके उपरांत याजआदि ब्राह्मणों ने उन दोनोंके नाम रक्खे धृष्ट और कुण्डल कवच रूपधनके साथ उत्पन्न होने के कारणसे उस लड़के का नाम धृष्टद्युम्न रक्खा और कृष्णवर्ण होने के कारण से कन्याका नाम कृष्णा रक्खा ४४। ५४ इस प्रकार से राजा द्रुपद के एक कन्या और एक पुत्र यज्ञसे उत्पन्न हुये राजा द्रुपद उनको घर लेगया और द्रोणाचार्य ने भावी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

को अमिट जानकर अपने यश के लिये धृष्टद्युम्नको बाणविद्या सिखाई॥

इति श्रीभाषामहाभारते आदिपर्वणि शताधिकसप्तषष्टितमोऽध्यायः १६७॥

एकसौअरसठ का अध्याय।

उक्त कथाको सुनकर पांडवों का पांचालदेश को चलने की सलाह करना॥

वैशंपायनजी बोले हे राजा जनमेजय! कुन्ती के पुत्र पूर्व वृत्तांत सुनकर शल्यविद्ध के समान होकर द्रौपदी के स्वयंवरमें जानेको उपस्थित होगये उनके मनको द्रौपदी में लगाहुआ देखकर कुन्ती ने युधिष्ठिर से कहा कि इस ब्राह्मण के घरमें सुखपूर्वक बसतेहुये अब बहुत दिन होगये और यहां के वन बाग आदि सब रमणीक स्थान कई २ बार देखचुके अब यहां मन नहीं लगता है और भिक्षा भी यहां अच्छी तरह नहीं मिलती है और एक स्थानपर बहुत दिनोंतक रहना भी अच्छा नहीं है इससे जो तेरी इच्छाहो तो हम सब यहांसे पांचाल-देशको चलें वह देश भी बड़ा रमणीक सुनाजाता है और वहां भिक्षा भी अच्छी मिलती है और वहांका यज्ञसेन नाम राजा भी ब्रह्मण्य है १।८ यह सुन-कर युधिष्ठिर बोले कि मेरी भी यही इच्छा है परन्तु भाइयों के मनका हाल नहीं जानता हूं ९ वैशंपायनजी बोले हे राजा जनमेजय! कुन्ती ने इसके पीछे भीम-सेन अर्जुन नकुल और सहदेव से भी उक्तरीति से पूछा उन्होंने भी युधिष्ठिरकी तरह उत्तर दिया तबतो कुन्ती उस ब्राह्मणसे पूछकर पुत्रों सहित राजा द्रुपद के नगर को चलदी १०।११॥

इति श्रीभाषामहाभारते आदिपर्वणि शताधिकाष्टषष्टितमोऽध्यायः १६८॥

एकसौउनहत्तर का अध्याय।

व्यासजी का पांडवों के पास आना और द्रौपदी के पूर्वजन्म का हाल कहकर यह उपदेश करके चले जाना कि तुम पांचो का विवाह द्रौपदी से होगा सो तुम पांचालदेश को चले जाओ॥

वैशंपायनजी बोले हे राजा जनमेजय! जब पांडव वहां से चलनेको हुये थे उसी समय वहां व्यासजी अपने कहने के अनुसार आये उनको देखकर सब पांडव हाथ जोड़कर खड़े होगये और उनको आदरपूर्वक बैठाया और आप भी उनकी आज्ञा से उनके समीप बैठगये उस समय व्यासजी बोले कि तुम धर्म पर चलते हो धर्म जाननेवाले ब्राह्मण अभी तुम्हारा पूजन करते हैं यह कहकर व्यासजी ने बहुतसी सुन्दर कथायें पांडवोंको सुनाईं उपरान्त यह बोले

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कि तपोवन में एक ऋषिकी परमसुंदरी कन्या थी उसका विवाह तो होगया था परंतु कर्मानुसार राँड़ होने के कारण से पतिके सुखको नहीं देखा था इस कारण से उसने बड़ा उग्र तप करके महादेवजी को प्रसन्न किया जब महादेवजी ने उसके पास आकर वर मांगने को कहा तब वह बोली कि मैं सुंदर गुणवान् पति चाहती हूं महादेवजी बोले कि अच्छा तेरे पांचपति बड़े पराक्रमी गुणवान् और प्रतापी होंगे यह सुनकर वह बोली महाराज! मैं तो एकही पति चाहती हूं तब महादेवजी ने कहा कि तैंने मुझसे पांचबार यह कहा कि पति दीजिये इस से हमने तुझको पांच पति मिलने का वरदान दिया अब यह अन्यथा नहीं होसक्ता इस शरीर को छोड़कर दूसरे जन्म में तुझको पांच पति मिलेंगे सो वह कन्या अब राजा द्रुपद के यहां यज्ञअग्निसे प्रकट हुई है और उसका विवाह तुम पांचो से होनेवालाहै इससे तुम पांचो भाई पांचालदेश को चले जाओ उसके साथ विवाह होनेपर तुमको बड़ा सुख होगा यह कहकर व्यासजी सबसे पूछकर वहां से चलेगये १।१६॥

इति श्रीभाषामहाभारते आदिपर्वणि शताधिकैकोनसप्ततितमोऽध्यायः १६९॥

एकसौसत्तर का अध्याय।

पांडवों का पांचालदेश को चलना और राह में अर्जुन से अंगारपर्णनाम गंधर्व से युद्धहोना और अर्जुन का उसको मारना और उसकी स्त्री के कहने से उसे जीता छोड़ देना और उसका अर्जुन से मित्रता करना॥

वैशंपायनजी बोले हे राजा जनमेजय! व्यासजी के चलेजाने पर पाण्डव प्रसन्न मन होकर माता को आगे करके वहां से उत्तर की ओर चल दिये और सोमाश्रयायण नाम तीर्थ में पहुँचे और वहां से गंगा के किनारे २ रात्रिके अंधकार में आगे चले अर्जुन राह दिखलाने को जलती हुई लकड़ी हाथ में लेकर आगे २ हो लिया उसी समय वहां गंगाजी में कोई गंधर्व स्त्रियों सहित एकांत में जलक्रीड़ा कररहा था अर्जुन आदि के आनेका शब्द सुनकर क्रोधमें भरगया और धनुषको टंकारकर बोला कि ८० लव रात्रि बीतनेपर यक्ष गन्धर्व और राक्षसों के घूमने का समय आजाता है यह समय मनुष्यों के घूमनेका नहीं है और जो अज्ञानी मनुष्य उससमय घूमने निकलते हैं उनको हम और राक्षस पकड़लेते हैं इसीकारण से रात्रि में नदीपर जाना निषेध है और मनुष्य की तो किनमें गिनती है बलवान् राजा भी नहीं जासक्ता

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

है दूर ठहरे रहो इधर मत आवो क्या तुम मुझको नहीं जानते हो मैं अंगारपर्ण नाम गंधर्व हूं मैं बड़ा पराक्रमी मानी ईर्षी और कुबेरका मित्र हूं यह वन मेरा अंगारपर्ण नाम से विख्यात है यहीं गंगातट पर मेरे रहने का विचित्र स्थान बनाहुआ है यहां देवता राक्षस आदि किसीकी सामर्थ्य नहीं है तुम यहां कैसे चले आते हो १।१४ यह सुनकर अर्जुन बोला कि समुद्र हिमालय और गंगाजी पर जाने के लिये रात्रि दिन सन्ध्या सबेरे किसी समय जाने न जानेका बंधन नहीं है और न कोई मुक्त अमुक्त काल इसके वास्ते नियत है हम भी सामर्थ्यहीन नहीं हैं तुझको इस कुसमय पर भी धर्षण करसक्ते हैं वह मनुष्य दुर्बल होंगे जो तुझसे डरकर चलेगये होंगे गंगा, यमुना, सरस्वती, वितस्था, सरयू, गोमती और गंडकी ये सातों नदियां पवित्र हैं इनके जलके स्पर्शसे पाप दूर होजाते हैं इनमें गंगाजी तो अलकनंदा नामसे स्वर्ग में वैतरणी नामसे पितृलोकमें और गंगा नामसे मृत्युलोकमें विख्यात हैं और तीनों लोकों को पवित्र करती हैं हमने यह व्यासजी से सुना है सो तू स्वर्गदाता गंगाके किनारेपर आने से हमको क्यों नाहीं करताहै यह सनातनका धर्म है हम तेरे कहने से गंगापर आनेको रुक नहीं सक्ते १५।२३ वैशंपायनजी बोले अंगारपर्ण ने यह सुनकर क्रोध से विषधर सर्पों के समान अर्जुन पर बाण फेंके अर्जुन ने उन सबको उल्मुक अर्थात् मशाल को घुमा घुमाकर व्यर्थ कर दिया और अंगारपर्ण से कहा कि मैं अस्त्र जाननेवाला क्षत्री हूं मुझको तुझ से किसी प्रकार का भय नहीं लगता है परंतु गंधर्व मनुष्यों से अधिक होते हैं इससे मैं तुझ से अस्त्रों से युद्ध करूंगा तू छल से युद्ध करना छोड़ दे मैं तेरे ऊपर आग्नेयअस्त्र छोड़ता हूं यह अस्त्र बृहस्पतिजी ने अग्निवेश ऋषि को दिया था उन्होंने मेरे गुरु को दिया और मैंने गुरु महाराजसे पाया है वैशंपायनजी बोले अर्जुन ने यह कहकर वह दीप्त आग्नेय अस्त्र क्रोधित होकर उस गंधर्व के ऊपर छोड़ दिया उस अस्त्र से उस गंधर्व का रथ जल गया और वह गंधर्व झुलसकर अचेत होकर नीचे को मुँह किये हुये गिर पड़ा अर्जुन उसके बाल पकड़कर उसको उसी अवस्थामें भाइयोंके पास खींचलाया २४।३२ यह देखकर उस गंधर्वकी कुंभीनसी नाम स्त्री युधिष्ठिरके शरण गई और विनयपूर्वक बोली कि महाराज! यह मेरा पतिहै मेरी रक्षा करो मेरे पतिको कृपा करके छोड़ दो मैं तुम्हारे शरण आई हूं यह सुनकर युधिष्ठिर बोला कि हे अर्जुन!

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यह गंधर्व रण में हारा हुआ यशहीन है और इसकी स्त्री दीन होकर इसका जीवदान मांगती है इससे इसके मारने में अब कुछ सुयश नहीं है अब इसे छोड़ दो यह सुनकर अर्जुन ने उसको छोड़ दिया और कहा कि जाओ अब हमने तुझे युधिष्ठिर के कहने से जीता छोड़ा और अभय किया ३३। ३६ यह सुनकर गंधर्व बोला कि मैं आज से अपना नाम अंगारपर्ण न बताऊंगा और न अपने बल और नाम की सभा में बड़ाई करूंगा यह अच्छा हुआ जो तुम ऐसे मित्र मुझको मिले मैं अब अर्जुन को गंधर्वीमाया सिखाना चाहता हूं अर्जुन ने मेरे चित्ररथ को दग्ध कर दिया इससे आज से अपने को चित्ररथी न कहूंगा दग्धरथी कहा करूंगा मैंने गंधर्वीमाया तपस्या करके पाई है वह माया आज मैं अपने प्राणदाता अर्जुन को बताऊंगा क्योंकि जो मनुष्य शत्रु को रण में जीत कर जीता छोड़ देता है वह सब कल्याणोंके योग्य होता है ३७। ४१ यह विद्या मनुजीने चन्द्रमाको दी थी चन्द्रमाने विश्वावसुको दी और विश्वावसु से मैंने पाई है अल्पपराक्रमी मनुष्यों को देने से यह नष्ट होजाती है इस विद्यामें यह पराक्रमहै कि जो कुछ कोई देखना चाहै उसे आंख से देख सक्ता है और एक पांव से खड़े होकर छःमहीने तपस्या करने के विना यह विद्या सफल नहीं होती है परन्तु मैं तुमको सब प्रकार से योग्य देखकर विना इस व्रतके कियेभी इस विद्याको दूंगा इसी विद्या के कारणसे हम अदृश्य को देख व आकाश में चलसक्के हैं और मनुष्यों से अधिक होकर देवताओं के तुल्य हैं सो हे अर्जुन! मैं तुझको और तेरे भाइयों को पृथक् २ गन्धर्वोंके देश में उत्पन्न हुये सौ सौ घोड़े दूंगा ये घोड़े मनके वेग की समान चलने वाले और देवता और गंधर्वों की सवारीके हैं न वे कभी वृद्ध होते न चलनेमें थकते और अस्त्रों से मरनेपर फिर जी उठते हैं ४२। ४८ पहिले समयमें इन्द्र का वज्र वृत्रासुर के शिरपर मारने से टुकड़े २ होगया था देवताओं ने उन टुकड़ों को इकट्ठा करके उनमें सब जगत्के भाग लगा दिये इसीसे ब्राह्मण के हाथ में क्षत्री के रथमें वैश्यके दान में और शूद्रके कर्मों में वज्रका अंश रहता है सो क्षत्री के रथ में घोड़ा मुख्य गिना जाता है उसीमें वज्रका अंश होता है इससे हे अर्जुन! ये गंधर्वदेश के घोड़े जो इच्छा के अनुसार चलते और ठहर जाते हैं तुम्हारी सब कामनाओं को पूरा करेंगे ४९। ५३ यह सुनकर अर्जुन बोला कि तू हमको प्रीति अथवा भयके कारणसे जो धन या विद्या या शास्त्र

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

देना चाहता है उसे लेना हम अच्छा नहीं जानते यह सुनकर गंधर्व बोला कि बड़े मनुष्यों का संग मिलने से प्रीति अवश्य होजाती है और मैं तो अपने प्राणदान की प्रीति से तुमको यह विद्या देता हूं और तुमसे भी आग्नेय अस्त्र लेना चाहता हूं तुमको प्रतिदान देना अवश्य उचित है ५४।५६ यह सुनकर अर्जुन बोला कि हम तुमको अस्त्र देकर घोड़े लेंगे और तुमसे मित्रता करेंगे परन्तु यह तो कहो कि तुमने हम वेद जाननेवालों को रात्रि में आते हुये देखकर क्यों रोका ५७। ५८ गन्धर्व बोला कि तुम अग्नि रहित थे और होम भी तुमने नहीं किया था और न तुम्हारे आगे कोई ब्राह्मण था इससे हम ने तुमको रोका था हमने तुम्हारे कुरुकुल के पूर्व पुरुषाओं का यश यक्ष राक्षस गन्धर्व उरग दानव और नारदादि ऋषियों से सुना है और आप भी पृथ्वीपर घूमकर उनके प्रभाव को देखा है हम तुम्हारे द्रोणाचार्य गुरु को भी जानते हैं वह वेद और धनुर्वेदमें सब प्राणियोंसे श्रेष्ठ है और मैं यह भी जानता हूं कि तुम सब पांडव हो और धर्म वायु इन्द्र और अश्विनीकुमार देवताओं के अंशसे उत्पन्न हुये हो और सबभाई महात्मा शूरवीर और सुव्रती हो इन सब बातों को हम जानते थे परन्तु जब बलवान् पुरुष स्त्री के साथ होता है और उस समय कोई और मनुष्य आजाता है तब वह क्षमा नहीं कर सक्ता इसके सिवाय रात्रि में हमारा बल अधिक भी होजाता है इससे हमने स्त्री के साथ होने से तुमपर क्रोध किया था और तुमको रोका था ५९। ६८ हे तापत्य! तुमने जो हमको युद्धमें जीता है उसका कारण यह है कि तुम ब्रह्मचारी हो ब्रह्मचर्य रहना बड़ा धर्म है जो कोई और क्षत्रिय स्त्रीवाला अथवा कामासक्त रात्रिमें हमसे युद्ध करता तो जीता कभी न बचता हां कामासक्त और स्त्रीवाला क्षत्री एक प्रकारसे निशाचरों को जीत सक्ता है कि अपने आगे २ पुरोहित को करले इसीकारण से राजाओं को पुरोहित का करना अवश्य है और पुरोहित ऐसा ब्राह्मण किया जावे जो जितेन्द्रिय वेदपाठी वेदके सब अंगों का जाननेवाला पवित्र सत्यवादी धर्मात्मा और शुद्ध अंतःकरण हो जिस राजा का पुरोहित धर्म जाननेवाला शीलवान् पवित्र और श्रेष्ठ होता है उसको युद्ध में जय और मरनेपर स्वर्गवास अवश्य मिलता है ६९।७५ राजाको अलब्ध वस्तुके पाने और लब्ध वस्तु की रक्षाके लिये पुरोहित करना अवश्य चाहिये और ऐश्वर्य की रक्षा और पृथ्वी के जीतने के लिये पुरोहित का मत लेना

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

श्रेष्ठ होता है कोई राजा अपनी शूरता और कुलके कारण से ब्राह्मण रहित होनेपर जय नहीं पासक्ता है और ब्राह्मणके होने से राज्य बहुत दिनों तक बना रहता है ७६। ७९॥

इति श्रीभाषामहाभारते आदिपर्वणि शताधिकसप्ततितमोऽध्यायः १७०॥

एकसौइकहत्तर का अध्याय।

अर्जुनका गंधर्व से अपने तापत्य होनेका कारण पूछना और गंधर्वका राजा संवरण और सूर्यकी पुत्री तपतीकी उत्पत्ति और तपतीपर संवरण के आसक्त होनेकी कथा कहना॥

अर्जुन बोले कि हे गन्धर्व! तुमने हमसे तापत्य २ कहा इसका क्या कारण है हम तो कौन्तेय हैं तुम हमको तापत्य कैसे कहते हो हम इस बातको जानना चाहते हैं वैशम्पायनजी बोले हे राजा जनमेजय! गंधर्व अर्जुनकी बातको सुनकर पूर्व वृत्तान्त सुनानेलगा कि हे अर्जुन! तुम मेरे गुरु हो मैं तुम्हारे तापत्य होनेकी कथा यथावत् सुनाता हूं १। ५ उन सूर्य देवताकी जिनके प्रकाश से तीनों लोकमें उजेला होता है एक तपती नाम पुत्री थी वह सावित्री से छोटी और तपस्विनी थी और स्वरूप उसका ऐसा सुन्दर था कि ऐसा स्वरूप किसी देवी आसुरी यक्षी राक्षसी अप्सरा और गंधर्वीका न था सब अंग उसका सुडौल और निर्दोष था नेत्र काले और बड़े २ थे और वह सुन्दर साध्वी और प्रकाशमान थी ६। ९ सूर्य ने उसका विवाह करनेको तीनोंलोकमें वर ढूंढ़ा परन्तु उसके सदृश किसीको न पाकर बड़ा उद्विग्न चित्त हुआ इसी अवसरमें कुरुवंश के राजा ऋक्षके बलवान् संवरण नाम पुत्रने सूर्य का आराधन किया और सूर्य उसकी भक्ति उपवास पवित्रता सावधानता निरहंकारता नियम विधिपूर्वक पूजा कृतज्ञता और धर्म से प्रसन्न हुये और उसके अत्यन्त सुन्दर स्वरूपवान् होने से उसको तपतीके योग्य वर जाना और उसका विवाह तपती से करना चाहा १०। १७ वह संवरण राजा पृथ्वीपर ऐसाही तेजधारी था जैसे सूर्य आकाशमें है ब्राह्मणके सिवाय सब प्रजा उसका पूजन उसी प्रकारसे करती थी जैसे ब्रह्मवादी सूर्यका आराधन करते हैं वह राजा कांतिमें चन्द्रमा और तेज में सूर्य से भी अधिक था सूर्यने उसके गुणोंको देखकर तपती का विवाह उसके साथ करनेको निश्चय विचार कर लिया एक समय वह राजा उपवन और पर्वतों में अहेर खेलने को गया १८। २१ उसका घोड़ा पहाड़ों

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

में थकगया और भूखा प्यासा होनेके कारणसे मरगया तब राजा वहांसे पैदल चला थोड़ी दूर चलकर उसने उस पहाड़पर अकेली एक कन्याको देखा उस कन्याके नेत्र बड़े २ थे राजा उसे देखकर खड़ा होरहा और विचार करने लगा कि यह यातो लक्ष्मी है या सूर्य से गिरा हुआ तेज है उस कन्या का तेज अग्निके समान और शरीर चन्द्रमा के समान निर्मल था और उसके सुवर्ण की सी प्रभावाले शरीर से वह पहाड़ वृक्ष और अनेक प्रकार की लताओं सहित सुनहरी सा दीखनेलगा उसकी सुन्दरता की फांसी ने राजा के नेत्र और मनको ऐसा बांधलिया कि राजा वहां से हिल न सका और उसको देख २ कर अपने नेत्रोंको सफल जानकर कहने लगा कि तीनोंलोकमें इस स्त्रीकी बराबर सुन्दर स्त्री कोई नहीं है विधाताने देवता और मनुष्य आदि सब जीवोंकी सुन्दरता को मथकर इस परमसुन्दरी स्त्री को बनाया है २२। ३२ इस प्रकारसे राजा उस कन्याको असदृशी जानकर कामाग्निसे पीड़ित होकर आसक्त होगया और कुछ देर चिन्ता करके बोला कि हे सुन्दरि! तू कौन है किसकी बेटी है और इस निर्जनवनमें क्यों अकेली फिरती है तेरा अंग निर्दोष है और जो गहने तू पहर रही है उन गहनों की भी तू गहनाहै मैं तेरे सदृश देवी आसुरी यक्षी राक्षसी नागकन्या गंधर्वी और मानुषी किसी को नहीं समझता हूं मेरी जान में आजतक जितनी स्त्रियां मैंने देखी और सुनी हैं उनमें तेरे सदृश कोई नहीं है हे प्यारी! तेरे चन्द्रमुखको देखकर मुझको कामदेवने बहुत सताया है यह सुन कर वह कन्या कुछ न बोली और बादलों में बिजलीके समान वहीं अंतर्धान होगई और राजाको रोताहुआ छोड़गई ३३।४२ राजा उसके अंतर्धान होनेपर मोहित होगया और विलाप करता हुआ चारों ओर उस वनमें उसको ढूंढ़ने लगा और उसको वहां कहीं न पाकर बड़ा दुःखी हुआ ४३। ४४॥

इति श्रीभाषामहाभारते आदिपर्वणि शताधिकैकसप्ततितमोऽध्यायः १७१॥

एकसौबहत्तर का अध्याय।

तपतीके वियोग में राजा संवरणका मूर्च्छित होजाना उसकी यह दशा देखकर तपतीका राजाको आकर दर्शन देना और उससे कहना जो तू मुझे चाहता है तो सूर्य का आराधन कर॥

गंधर्व बोला हे अर्जुन! राजा संवरण इसके पीछे उसके वियोग में मोहित

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

होकर पृथ्वीपर गिरपड़ा उसकी यह दशा देखकर उस सुन्दरी कन्या ने फिर राजाको अपना दर्शन दिया और अत्यंत मधुरवाणी से हँसती हुई बोली कि हे राजा ! तुम पृथ्वीपर विख्यात हो तुम को ऐसा मोह करना उचित नहीं है अब तुम उठखड़े हो राजा उसकी मधुरवाणी सुनकर और उसको अपने सन्मुख खड़ीहुई देखकर उसके सुन्दर स्वरूप को देखनेलगा और कामाग्नि से हतचेत होकर बोला कि हे सुन्दरि ! तुझको मुझसे प्रीति करना उचित है जो तू ऐसा न करैगी तो कामदेव के तीक्ष्णबाणों से मेरे प्राण नहीं बचेंगे मुझको कामदेवरूपी महासर्पने डस रक्खा है इससे ये प्राण अब तेरेही आधीन हैं विना तेरी कृपा मैं किसी प्रकार नहीं जीसक्ता हूं इससे हे सुन्दरि ! मुझे अपना भक्त जानकर मेरे ऊपर कृपाकर मेरा चित्त तेरी सुन्दरता को देखकर अत्यन्त चलायमान होरहा है तुझको मुझे छोड़ना उचित नहीं है तुझे देखकर अब मेरा मन दूसरी स्त्रीको किंचित्मात्र भी नहीं चाहता है मेरा प्रेम तुझसे अत्यंत होगयाहै तूभी मुझसे प्रेम कर मैं कामाग्निसे बड़ा दुःखी होरहा हूं कामाग्निसे जलतेहुये मेरे शरीरको अपने प्रेमरूपी जलसे ठंढाकर सब विवाहों में गंधर्व विवाह सब से श्रेष्ठ है इससे हे सुन्दरि ! गंधर्व विवाह द्वारा अपना आत्मदान देकर कामदेवके प्रचंड बाणों से मुझे बचा ले १।१८ यह सुनकर वह कन्या बोली कि हे राजा ! मैं कन्याहूं और स्वाधीन नहीं हूं जो तू ऐसी ही मेरी प्रीति करताहै तो मेरे पितासे मुझको मांगले हम दोनों परस्पर विकल हैं जैसे मुझे देखकर तुम्हारा मन मोहित होगया है इसी प्रकारसे मेराभी मन तुझको देखकर मोहित है परन्तु क्या करूं पिताके भयसे तेरे पास नहीं आसक्ती हूं भला ऐसी कौन कन्या होगी जो पति नहीं चाहती होगी इससे तू नियम व्रत और नमस्कार करके मेरे पिता सूर्यसे जाकर मुझे मांगले जो मेरा पिता मुझे तुझको देदेगा तो मैं निरंतर तेरी पत्नी होकर रहूंगी मैं सावित्री से छोटी तपती नाम सूर्यकी पुत्री हूं १९।२५ ॥

इति श्रीभाषामहाभारते आदिपर्वणि शताधिकद्विसप्ततितमोऽध्यायः १७२ ॥

एकसौतिहत्तर का अध्याय।

राजा संवरणका वशिष्ठजी को याद करना और वशिष्ठजी का आना और सूर्य के पास जाकर तपतीको लाकर उसका विवाह राजा संवरणसे होना और राजाका तपती से वनमें विहार करना ॥

गन्धर्व बोला कि हे अर्जुन ! वह कन्या राजा से उक्त रीतिसे कहकर फिर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आकाशमें चलीगई और राजा फिर मोहित होकर पृथ्वीपर गिरपड़ा उसी अवसरमें वहां उस राजाका मंत्री सेनासहित राजाको ढूँढ़ता हुआ आन पहुँचा और उस महापराक्रमी राजा को संज्ञारहित पृथ्वी पर पड़ा हुआ देखकर तुरन्त उसके पास चलाआया और स्नेह से पिता पुत्रके समान उसको पृथ्वी से उठालिया १।५ और शोचको छोड़ उससे बोला कि हे राजा! अब किसी बातका भय मत करो तुम्हारा कल्याण हो ६।७ यह कहकर वह बुद्धिमान् वृद्ध मंत्री यह समझा कि राजा भूख और प्यासके मारे थकगया है ऐसा जानकर वह ठंढे पानी से उसके मुख और शिरको सींचनेलगा और कमलों का मुकुट बनाकर राजाके शिर पर धरा वह मुकुट धरतेही सूखगया इसके पीछे जब वह सचेत हुआ तब उसने उस मंत्रीको वहां रहनेदिया और सब सेनाको बिदा करदिया वह सेना राजाकी आज्ञा पाकर वहां से चलीगई और राजा वहां खड़ा होकर पवित्रतासे ऊँचेको मुख करके सूर्य की आराधना करनेलगा उससमय राजाने अपने पुरोहित वशिष्ठ ऋषिको अपने मन में ध्यान किया वशिष्ठजी अपने दिव्यचक्षु से राजाका मन तपती के स्वरूपपर हराहुआ जानकर बारहवें दिन वहां आन पहुँचे और आकर राजाका ८।१६ कार्य करनेको उसके देखते २ आकाशमार्गसे सूर्य के पास गये और हाथजोड़कर खड़े होकर सूर्यदेवता से बोले कि मैं वशिष्ठ हूं सूर्य उनको देखकर बोले कि बहुत अच्छा आपका आना शुभ हो कहो क्या चाहते हो मैं तुम्हारी दुष्कर भी जो मनोकामना होगी उसेभी पूरी करूंगा यह सुनकर वशिष्ठजी उनको नमस्कार करके बोले कि महाराज! मैं आपकी तपती कन्याको जो सावित्री से छोटी है राजा संवरण के लिये मांगने आया हूं यह राजा बड़ा बुद्धिमान् धर्मात्मा और कीर्तिमान् है और आपकी पुत्रीसे विवाह के योग्यहै १७।२३ यह सुनकर सूर्य उस कन्याको देना विचारकर बोले कि राजा संवरण राजाओं में श्रेष्ठ है और आप ऋषियों में उत्तम हैं और तपती स्त्रियों में असदृशी है इससे मुझको दान करने में कोई शंका नहीं है २४।२५ यह कहकर सूर्य ने तप्तीको संवरण को देनेके लिये वशिष्ठजी के साथ करदिया और वशिष्ठ जी उसे लेकर राजाके पास आये राजा उस कन्या को वशिष्ठजी के साथ आतीहुई देखकर बड़ा प्रसन्न हुआ वह कन्या बिजुली के समान प्रकाश करती हुई आकाशमार्ग में बड़ी शोभायमान देखपड़ती थी वशिष्ठजी आकाश से

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बारहवें दिन उस कन्या को लिये हुये वहां आनपहुँचे २६।३१ इस प्रकार से राजा संवरण ने वशिष्ठजी के तेज और सूर्य के आराधन से तपती को पाकर उसका पाणिग्रहण विधि के अनुसार उसी वनमें किया और वशिष्ठजी से आज्ञा लेकर उसी वन में रहना अंगीकार करके तपती के साथ बड़े आनन्द से विहार किया और उस मंत्री को आज्ञा दी कि तू इस वन में उपवन सहित नगर का प्रबंध कर राजा तपती के साथ वहां रहने लगा और उसको बारहवर्ष वहीं बीत गये इन्द्र ने उसके राज्य में बारहवर्ष तक वर्षा नहीं की और अकाल के कारण से उसकी सब प्रजा नाश होगई बहुत से मनुष्य पृथ्वी में कोई वस्तु उत्पन्न न होने से भूखके मारे इधर उधर भाग गये सब प्रकार की मर्यादाओं को छोड़कर उदरपोषण करनेलगे और बहुतसे मरकर यमपुरी को चलेगये इस बात को देखकर वशिष्ठजी महाराज ने अपने तपोबलसे उसके संपूर्ण राज्य में वर्षा कराई और वनमें जाकर उस राजा को तपती सहित नगर में लेआये ३२।४५ उस राजा के नगर में आतेही इन्द्र फिर पूर्ववत् वर्षा करनेलगा और संपूर्ण पदार्थों के उत्पन्न होने के कारण से सब प्रजा फिर ज्यों की त्यों होगई और आनन्दपूर्वक वास करने लगी इसके पीछे राजा ने तपती को साथ लेकर बारह वर्षतक यज्ञ इस प्रकार से किया जैसे इन्द्र शची को साथ लेकर करै ४६।४८ इतनी कथा सुनाकर गंधर्व बोला हे अर्जुन! वह तपती तुम्हारी पहली पुरखा थी इसकारण से मैंने तुम्हें तापत्य कहा ४६।५०॥

इति श्रीभाषामहाभारते आदिपर्वणि शताधिकत्रिसप्ततितमोऽध्यायः १७३॥

एकसौचौहत्तर का अध्याय।

गंधर्व का अर्जुन से वशिष्ठ जी का संक्षेप वृत्तान्त कहना और किसी अच्छे ब्राह्मण को अपना पुरोहित बनाने का उपदेश करना॥

वैशंपायनजी बोले हे राजा जनमेजय! अर्जुन उस गंधर्व से पूर्वोक्त वृत्तांत सुनकर बहुत प्रसन्न हुआ और उसका मुख चन्द्रमा के समान चमकने लगा और वशिष्ठजी के तपोबल के वृत्तान्त को सुनकर आश्चर्य में आकर बोला कि हमारे पुरखाओं के पुरोहित श्रीवशिष्ठजी महाराज कौन थे यह सुनकर गन्धर्व बोला कि वशिष्ठजी ब्रह्माजी के मानसिक पुत्र और अरुन्धती के पति थे उन्होंने अपने तपके प्रभाव से काम और क्रोध को ऐसा जीता था कि वह उनके पैर दाबा करते थे विश्वामित्र ने बड़ा भारी उनका अपराध किया

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

था परन्तु उन्हों ने सब प्रकार से समर्थ होने पर भी विश्वामित्र के वंश का नाश नहीं किया यद्यपि पुत्रों के शोकसे दुःखी हुये परन्तु विश्वामित्र का नाश करने को कोई कर्म नहीं किया और अपने मरे हुये पुत्रों को यमपुरी से लाने को भी समर्थ थे परन्तु उन्होंने समुद्र के समान कालकी मर्यादा को उल्लंघन नहीं किया इक्ष्वाकुवंशी राजाओं ने वशिष्ठजी को अपना पुरोहित बनाकर बड़े यज्ञ किये और सम्पूर्ण पृथ्वी विजय की और वशिष्ठ जी ने भी उन राजाओं को इसप्रकार से यज्ञ कराये जैसे बृहस्पति इन्द्र को कराते हैं १।११ हे अर्जुन! इस कारण से तुमको भी कोई धर्मात्मा वेद जाननेवाला और गुणवान् ब्राह्मण पुरोहित करने के लिये ढूंढ़ना चाहिये राज्यको जीतनेकी इच्छा करनेवाले क्षत्री को पुरोहित करना अवश्य है और जब पृथ्वी जीतने को चले तब पुरोहित को आगे करले ऐसा करने से राजा की जय होती है १२।१४॥

इति श्रीभाषामहाभारते आदिपर्वणि शताधिकचतुःसप्ततितमोऽध्यायः १७४॥

एकसौपचहत्तर का अध्याय।

वशिष्ठजी का विश्वामित्र को मंत्री और सेना सहित निमंत्रण करके नन्दिनी गायके प्रभाव से अलभ्य पदार्थ भोजन कराना विश्वामित्र का उस गाय को बलसे ले जाना और गायके न जाने और म्लेच्छों को उत्पन्न करके विश्वामित्र की सेना को मारने और विश्वामित्र का राज्य छोड़कर तपस्या करने और ब्राह्मण भाव पाने की कथा॥

अर्जुन बोला कि हे गन्धर्व! विश्वामित्र और वशिष्ठजी के वैर करने का वृत्तान्त हमको विस्तारपूर्वक सुनाओ यह सुनकर गंधर्व बोला कि यह पुराना वृत्तान्त है मैं उसको तुम्हें ठीक २ सुनाता हूं कान्यकुब्ज देश में एक राजा गाधिनामी कुशिका पुत्र था उसके विश्वामित्र नामी बड़ा पराक्रमी और बड़ी सेना रखनेवाला पुत्र हुआ एक समय वह राजा अहेर खेलनेको ऐसे वनमें गया जहां बहुत थोड़ा जल था बहुत से मृग और वाराहों को मारनेपर श्रम और प्यास से दुःखी होकर वह वशिष्ठजी के आश्रम में पहुँचा वशिष्ठ जी ने उसे देखकर उसका बड़ा आदर किया और पाद्य अर्घ्य आचमन आदिसे उसकी पूजा करके कन्द मूल फल आदि भोजन के लिये और सेनासहित उसका निमन्त्रण करके अपनी कामधेनु नाम गऊ के द्वारा जो सब कामनाओं की देनेवाली थी उन सबको ग्राम और वन के सम्पूर्ण पदार्थ औषधी, दुग्ध, अमृतके तुल्य षड्रस, अच्छे २ भोजन, पीने की सुन्दर २ चीजें, अनेक प्रकार के भक्ष्य,

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अमृतके समान चाटने के पदार्थ, चूसनेवाली वस्तु, बड़े मोलके रत्न और अनेक२ प्रकारके वस्त्र देकर सबका आदर किया राजा अपने मन्त्री और सेनासहित उन पदार्थों को खाकर और रत्न वस्त्र आदिकों को लेकर तृप्त होगया और उस गऊको जिसके शिर ग्रीवा आदि छै अंग ऊंचे, ललाट कान और नेत्र मोटे, पार्श्व और घोंटू सुन्दर, स्तन बड़े २ सब शरीर बहुत सुडौल बना हुआ, नोकीले कान, शोभायमान पूंछ, सुन्दर सींग, मोटा लम्बा शिर ग्रीवा और सब अंग मनोहरथे देखकर विस्मित हुआ और उस गऊकी बहुत प्रशंसा करके वशिष्ठजी से बोला कि महाराज इस गाय को आप मुझे दे दीजिये और इसके बदले में मुझसे अर्बुद गाय अथवा मेरा सम्पूर्ण राज्य लेकर भोगिये यह सुनकर वशिष्ठ जी बोले कि यह गाय नन्दिनी है और देवता पितर अतिथि और यज्ञके काम की है इसको हम तेरे सम्पूर्ण राज्य के बदले में भी नहीं देसक्ते १।१७ यह सुनकर विश्वामित्र बोला कि तुम वेदपाठी और तपस्वी बलहीन ब्राह्मण हो और मैं बलवान् क्षत्री हूं जो तुम अर्बुद गायके बदलेमें मुझे इस गायको नहीं दोगे तो मैं बलसे गाय को छीनकर लेजाऊंगा यह सुनकर वशिष्ठजी बोले कि अच्छा जो तू बलवान् क्षत्री है तो विचार मत करे जैसे तुझसे बने गायको ले जा यह सुनकर विश्वामित्रने उस गायको खुलवा लिया और कोड़ा मार मार कर ले जानेलगा परन्तु वह गाय ताड़ना पर भी वहांसे नहीं गई और ऊंचेको मुँह उठाये हुये रम्भाती हुई वशिष्ठजीके सन्मुख जा खड़ी हुई यह देखकर वशिष्ठजी बोले कि मैं तेरे रम्भानेके शब्दको सुनताहूं परंतु मैं क्या करूं विश्वामित्र तुझको बलसे लिये जाताहै इसमें मेरा कुछ वश नहीं है मैं तो क्षमा-वान् ब्राह्मण हूं १८।२४ यह सुनकर वह गाय वशिष्ठजी से विश्वामित्र और उसकी सेनासे अत्यंत भयभीत होकर बोली कि महाराज मुझ रंभाती हुई और कोड़ोंसे पिटती हुई को आप अनाथकी तरह क्यों त्यागते हैं गंधर्व बोला हे अर्जुन! वशिष्ठजी उस गायके पीटे जाने और पुकारने पर भी चलायमान नहीं हुये और बोले कि क्षत्रियोंका बल बलही है और ब्राह्मणोंका बल केवल क्षमा है इससे मैं क्षमा नहीं छोड़ सक्ता हूं तुझे दीखे सो कर यह सुनकर वह गाय बोली कि महाराज क्या आपने मुझे त्याग दिया है जो ऐसा कहते हो जो आपने मुझे त्यागा नहीं है तो बलसे मुझे कोई नहीं लेजासक्ता है वशिष्ठजी बोले कि मैं तुझको त्यागता नहीं हूं जो तू रहनेकी सामर्थ्य रखती है तो रह

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

देख ये मनुष्य तेरे इस बछड़े को मोटी रस्सी से बांधकर लिये जाते हैं गन्धर्व बोला हे अर्जुन! उस गौने वशिष्ठजीकी यह बात सुनकर शिर और कान ऊंचे को करके रौद्रस्वरूपहो लाल २ नेत्र करके बादलकी गरजके समान रंभाकर विश्वामित्रकी सब सेना को डरा दिया और चारोंओर दौड़ २ कर सींगों से मार २ कर दूर भगा दिया और क्रोध कर २ के अपनी पूंछसे अंगारे वर्षाये जिसके कारण से विश्वामित्रकी सेना जलने लगी उस समय उस गाय ने अपनी पूंछ से पल्हव, ऐनसे द्राविड़ और शक, योनिसे यवन, गोबर से शवर, पार्श्वसे पौण्ड्र, किरात, यवन, सिंहल, बर्बर और खस और फेनसे चिबुक, पुलिंग, चीनी, हूंणके रत्न और बहुत प्रकार के म्लेच्छ उत्पन्न किये वे म्लेच्छ नानाप्रकारके आयुध ले लेकर क्रोध कर २ के विश्वामित्र की सेना से युद्ध करनेलगे एक २ योधा पांच २ सात २ से लड़ने लगा और विश्वामित्रके देखते २ वह सब सेना म्लेच्छों से ताड़ित और भयभीत होकर भागने लगी म्लेच्छोंने बाणों से उस सेना को अधमरी करडाला और वह चिल्लाती पुकारती हुई विना किसी रक्षक के तीन योजन तक भागती चली गई विश्वामित्र कुछ न कर सका दीन होकर देखता रहा और उस ब्रह्मतेज से प्रकट आश्चर्य को देखकर अपने क्षत्रीबल से विरक्त होकर कहने लगा कि क्षत्री के बलको धिक्कार है ब्रह्मतेज का बलही केवल बल है और अबलको निश्चय तपकाही बड़ा बल है २५। ४४ यह कहकर विश्वामित्र ने सब राज्य लक्ष्मी और भोगों को छोड़दिया और तप करने लगा उसके कठिन तप से सब लोक तृप्त होगये और उसने ब्राह्मणभाव पाकर इन्द्रके साथ सोम पान किया ४५।४७॥

इति श्रीभाषामहाभारते आदिपर्वणि शताधिकपञ्चसप्ततितमोऽध्यायः १७५ ॥

एकसौछिहत्तर का अध्याय।

विश्वामित्र का कल्माषपाद नाम राजा से जो शापसे राक्षस होगया था
वशिष्ठजीके सौ पुत्रों को मरवाने और वशिष्ठजी का क्रोधकरके
अपने मरने का उपाय करने की कथा ॥

गंधर्व बोला हे अर्जुन! इक्ष्वाकुवंश में एक कल्माषपाद नाम बड़ा तेजस्वी राजा था वह राजा एक दिन वनमें अहेर मारने को गया और मृग वाराह आदि बहुत से वनके जीवों को मारकर थकजाने के कारण से घरको लौटा राहमें एक ऐसा मार्ग मिला कि वहां केवल एक आदमी के निकलने की राह थी राजा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उसी राह पर चलाजाता था थोड़ी दूर पर उसको दूसरी ओर से आता हुआ शक्ति नाम वशिष्ठजी का सौ पुत्रों में सब से बड़ा पुत्र मिला वह बड़ा महात्मा और तपस्वी था राजा भूख प्यास और थकावट से दुःखी होकर उस राह पर चला गया जब वशिष्ठजीके पुत्रके समीप पहुँचा तब वह बोला कि राह छोड़दो हमको जाने दो यह सुनकर वशिष्ठजी का पुत्र बोला कि तुम भी राह में से हटजाओ हमको जाने दो यह सनातन धर्म है राजाओं को ब्राह्मणों का मार्ग देना अवश्य उचित है वे दोनों इस प्रकार से एक दूसरे को हटाते रहे परन्तु न वशिष्ठजी का पुत्र हटा न राजा ने राह दी इसके पीछे राजा ने क्रोध करके वशिष्ठजी के पुत्र के राक्षस की तरह कोड़ा मारा वशिष्ठजी के पुत्रने उस कोड़े के लगने से मूर्च्छित और क्रोधित होकर यह शाप दिया कि तू नीच राजा है तैंने राक्षस के समान होकर मुझ तपस्वी को मारा है इससे तू मनुष्य-भक्षी राक्षस आज से होजा और पृथ्वी पर फिराकर उसी अवसर में वहां विश्वामित्र ऋषि जो उस राजा को अपना यजमान किया चाहते थे पिछले वैर भाव से गुप्त स्वरूप धारण करके आये और उन दोनों के विवाद को देखकर और उसको वशिष्ठजी का पुत्र बड़ा तेजस्वी और तपस्वी जानकर वहां से अन्तर्धान हो गये राजा फिर वशिष्ठजी के पुत्र को प्रसन्न करनें की इच्छासे उसकी शरणागत जाकर स्तुति करने लगा उस समय विश्वामित्र ने अपना प्रिय काम करनेकी इच्छासे किंकरनाम राक्षसको मन्त्रबलसे आज्ञा दी कि तू राजाके शरीरमें प्रवेश कर उस राक्षसने विश्वामित्रके मंत्रबल और उस ब्रह्मऋषिके शापसे वैसाही किया विश्वामित्र यह काम करके कहीं अंतको चलेगये और वह राजा राक्षसके शरीर में प्रवेश करनेपर अचेतसा होगया और वहांसे घरको चला राहमें किसी भूंखे ब्राह्मणने उससे मांससहित भोजन मांगा राजाने उससे कहा कि तुम यहीं ठहरो मैं अभी लौटकर आताहूं तुमको इच्छानुसार भोजन कराऊंगा यह सुनकर वह ब्राह्मण वहीं बैठारहा १।२६ और राजा सुखपूर्वक अपने महलमें पहुँचा जब आधीरात हुई तब राजाको उस ब्राह्मण से प्रतिज्ञा करनेकी याद आई उसने उसी समय रसोइयेको बुलाकर कहा कि फलानी जगहपर ब्राह्मण बैठाहुआ मेरी राह देख रहा होगा तू मांस और अन्न लेजाकर उसको भोजनके लिये देआ रसोइया यह सुनकर मांस ढूंढ़नेलगा परन्तु उसको मांस कहीं नहीं मिला तब वह राजाके पास जाकर बोला कि

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

महाराज मांस तो नहीं मिलताहै यह सुनकर राजाने राक्षस से आविष्ट होने के कारण से कहा कि आदमीका मांस बनाकर लेजा यह सुनकर रसोइया जीव बधिक अर्थात् कसाइयोंके स्थानपर गया और वहां से नरमांस लाकर और उसे अच्छे प्रकारसे बनाकर अन्नसहित उस तपस्वी ब्राह्मण को देनेके लिये लेगया वह तपस्वी ब्राह्मण अपनी दिव्यदृष्टिसे इस बातको जानगया और बोला कि उस नीच राजाने मुझे अभोज्य अन्नदान किया है इससे ऐसे पदार्थ के खाने की उसीकी बुद्धि होगी और जैसा शक्तिने कहा है वैसाही यह नरमांसभक्षी भयंकर राक्षस होकर पृथ्वीपर फिरेगा २७। ३६ इसके पीछे वह राजा दो ऋषियों से शाप दियेजानेपर बुद्धिरहित होगया और थोड़ेही कालमें हृदय में प्रवेश कियेहुये राक्षससे हारकर राक्षसी स्वभाव धारण कर लिया एक दिन राजा शक्ति-ऋषिको पाकर बोला कि तुमने मुझे शाप देकर राक्षस बनाया है इससे मैं पहिले तुमहीको खाताहूं यह कहकर उसने शक्तिऋषिको मार डाला और जैसे सिंह पशुओंको मारकर खाजाताहै उसी प्रकार से उसको खागया इसके पीछे विश्वामित्र ने यह देखकर उस राक्षस राजाको बारम्बार आज्ञा दी कि वशिष्ठजी के सब पुत्रोंको मारकर खाजा और उस नीचने वैसाही किया और सिंहकी तरह वशिष्ठजी के सौ पुत्रोंको मारकर खागया वशिष्ठजी उस हालको सुनकर अत्यंत शोक में मग्न होगये और विश्वामित्र का नाश करना न विचारकर अपना मरना अंगीकार किया और मेरुपर्वतके बड़े ऊंचे शिखरपर जाकर वहांसे अपनेको नीचे गिरादिया परंतु वह पहाड़की शिला उनके लिये रुई होगई और वह नहीं मरे इसके पीछे वह अग्नि में जलजाना विचारकर वनमें एक स्थानपर लगीहुई अग्नि में घुसगये परंतु उनके जातेही वह अग्नि शान्त होगई यह देखकर वशिष्ठजी बहुत खिन्नचित्त हुये और अपनी ग्रीवामें भारी शिला बांधकर समुद्र में गिरपड़े समुद्रने उनको लहरों से किनारे पर डालदिया यह देखकर वशिष्ठजी बहुत दुःखी होकर अपने आश्रम को चलेआये ३७। ४६ ॥

इति श्रीभाषामहाभारते आदिपर्वणि शताधिकषट्सप्ततितमोऽध्यायः १७६ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

एकसौसतत्तर का अध्याय।

वशिष्ठजीका अपने मरनेके लिये अनेक उपाय करना परन्तु किसी उपाय से न मरनेके कारणसे अपने आश्रम को आना मार्ग में अपनी पुत्रवधूको गर्भ होनेका हाल जानकर मरनेसे निवृत्त होना राजा कल्माषपादको शापसे छुटाना और उसको एक पुत्र देना ॥

गन्धर्व बोला कि हे अर्जुन! वशिष्ठजी अपने आश्रममें पहुँचकर वहां अपने पुत्रोंको न देखकर बहुत दुःखी हुये और फिर अपना मरना विचारकर वहां से चलकर एक नदी के किनारे पहुँचे वह नदी उस समय बहुत चढ़ीहुई थी और अपनी लहरों से अपने तटस्थ वृक्षों को उखाड़ उखाड़ कर बहाये लिये जातीथी वशिष्ठजी उसके प्रवाहको देखकर अपने सब अंगोंको रस्सियों से कसकर डूबनेको उसमें गिरपड़े परन्तु उस नदीने मुनीश्वरके सब बन्धन खोलडाले और उनको सूखे स्थान में बहाकर फेंक दिया वशिष्ठजी वहां से उतरआये और पाशों को खोलने के कारण से उस नदीका नाम विपाशा रक्खा वहां से वशिष्ठजी अनेक पहाड़ नदी और तालाबोंपर घूमतेहुये हैमवती नदी के किनारे पहुँचे जहां बड़े २ ग्राह रहते थे वशिष्ठजी उसमें मरनेको गिरपड़े परन्तु वह नदी उनको अग्नितुल्य ब्राह्मण विचारकर शतधा होकर बहने लगी इसी कारण से उस नदी का नाम शतद्रू विख्यात हुआ वशिष्ठजी अपने को उस नदी में भी स्थल में खड़ा हुआ देखकर दुःखी हुये और यह कहकर कि मैं मरनेको भी समर्थ नहीं हूं अपने आश्रम को लौट आये १।१० राहमें जिस समय वशिष्ठजी अनेक देश और पहाड़ोंपर घूमतेहुये अपने आश्रम के निकट पहुँचे उनके बड़े पुत्र शक्तिकी अदृश्यन्ती नाम स्त्री मिली वह उनके पीछे २ होली वशिष्ठजी ने पूछा कि मेरे पीछे कौन आता है वह बोली कि महाराज मैं अदृश्यन्ती नाम आपके शक्तिनाम बड़े पुत्रकी वधूहूं यह सुनकर वशिष्ठजी बोले कि हे पुत्री! यह वेदका अंगोंसहित पाठ कौन करता है ऐसा पाठ तो हमारा शक्तिनामी पुत्रही करता था अदृश्यन्ती बोली कि महाराज यह शक्ति का गर्भ है उसको पाठ करते हुये मेरी कोख में बारह वर्ष होचुके हैं वशिष्ठजी यह सुनकर प्रसन्न हुये और यह जानकर कि हमारे अभी संतान है अपने मरने से चित्त से निवृत्त हुये वहां से आगे चले थोड़ी दूर पर उनको विजन वनमें कल्माषपाद नाम राक्षस बैठाहुआ मिला वह वशिष्ठजी को पुत्रवधू के साथ आतेहुये देखकर क्रोधकरके उनको खाने को दौड़ा उसको देखकर अदृश्यन्ती

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अत्यन्त भयभीत होगई और वशिष्ठजी से बोली कि महाराज देखिये यह मृत्यु के समान भयानक राक्षस दंडा उठाये हुये हम दोनों को भक्षण करने की इच्छा से चला आता है इससे मेरी रक्षा कीजिये आपके सिवाय इससे और कौन मुझे बचा सक्ता है आप सब वेद जाननेवालों में श्रेष्ठ हैं ११।२१ यह सुनकर वशिष्ठजी बोले कि हे पुत्री! तू डरे मत यह राक्षस नहीं है यह राजा कल्माषपाद है शापके कारण से भयंकर स्वरूप किये हुये इस वनमें रहता है इसके पीछे जब वह राक्षस वशिष्ठजीके निकट पहुँचा तब वशिष्ठजी ने हुंकार से उस राक्षस को रोक दिया और उसपर मंत्रयुक्त जल छिड़ककर उसको शाप से छुटा दिया वह राजा इस प्रकार से वशिष्ठजी की कृपा से बारह वर्ष पीछे उस शाप से छूटकर शरीर में से राक्षस के चलेजाने के कारण ज्ञानयुक्त होगया और वशिष्ठजी के सन्मुख अपने दोनों हाथों को जोड़कर खड़ा होकर बोला कि महाराज मैं आपका यजमान और सुदास का पुत्र हूं जो कुछ मेरे लिये आज्ञा हो सो मैं करूं वशिष्ठजी बोले कि जो इस समय ऐसा ही होनहार था अपने राज्यका प्रबन्ध कर और ब्राह्मण का अपमान कभी मत करियो यह सुनकर वह राजा बोला कि बहुत अच्छा महाराज जैसा आप कहते हैं वैसाही करूंगा अब से ब्राह्मणों का अपमान तो क्या नित्य ब्राह्मणों की पूजा किया करूंगा परन्तु महाराज मैं इक्ष्वाकुवंश से आपके द्वारा अऋणी होना चाहता हूं इससे आप मुझको मेरे वंशका बढ़ानेवाला एक पुत्र दीजिये गंधर्व बोला हे अर्जुन! वशिष्ठजी यह सुनकर बोले कि अच्छा मैं तुझे पुत्र दूंगा और समय के आने पर उसके साथ २ अयोध्यापुरी को चले गये २२।३५ अयोध्यावासी लोग उस राजा का आना बहुत दिनों पीछे जानकर उसकी आगौनी को आये और उसे वशिष्ठ पुरोहित सहित आया हुआ जानकर बहुत प्रसन्न हुये उस राजा के अयोध्यापुरी जानेपर वह पुरी ऐसी शोभायमान होगई जैसे शरदृतु में चन्द्रमा के उदय होने से आकाश सुशोभित होजाता है और उसमें तुष्ट पुष्ट मनुष्य बसने लगे और नगर में सब मार्गोंपर जल छिड़क जानेके कारण से और पताका ध्वजाओं के लगाने से अत्यन्त शोभा होगई राजा प्रसन्न हुआ इसके पीछे राजा की रानी राजाकी आज्ञा से वशिष्ठजी के पास गई वशिष्ठजी ने उसके साथ विधि के अनुसार संग किया और जब उसके गर्भ रहगया तब वहां से वशिष्ठजी राजा से आदरपूर्वक बिदा होकर अपने घरको आये जब

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रानी को गर्भधारण किये हुये बारह वर्ष होगये और उसके पुत्र उत्पन्न नहीं हुआ तब रानी ने अपनी कोख पत्थर से लेकर कूटी और कूटने से उसके पुत्र उत्पन्न हुआ राजाने उसका नाम अश्मक रक्खा और उसने पौदन्य नाम पुर बसाया ३६। ४६॥

इति श्रीभाषामहाभारते आदिपर्वणि शताधिकसप्तसप्ततितमोऽध्यायः १७७॥

एकसौअठत्तर का अध्याय।

वशिष्ठजी के पौत्र उत्पन्न होना और बड़ा होनेपर अपने पिताका मरण राक्षस से सुनकर क्रोधसे सम्पूर्ण लोकों के नाश करनेकी इच्छा करना और वशिष्ठजी का उससे भार्गवों के नाश होनेका एक इतिहास कहना॥

गन्धर्व बोला हे अर्जुन! वशिष्ठजी के आश्रम आने पर उनकी पुत्रवधू अदृश्यन्ती के अपने बाप के समान पुत्र हुआ वशिष्ठजी ने उस अपने पौत्र के जातकर्म आदि संस्कार किये और उसका नाम पराशर इस कारण से रक्खा कि उसके गर्भ में होनेका हाल सुनकर वशिष्ठजी अपने प्राण त्याग करने की इच्छा से निवृत्त हुये थे वह बालक वशिष्ठजी ही को अपना पिता समझता था और सब बर्ताव पिता के समान करता था एक समय उसने अपनी अदृश्यन्ती माता के सामने वशिष्ठजी को पिता कहकर पुकारा उसकी मीठी बोली को सुनकर अदृश्यन्ती आखों में आंसू भरलाई और उससे बोली कि बेटा तेरे पिता को तो राक्षसने वनमें खालिया वशिष्ठजी तो तेरे पितामह अर्थात् बाबा हैं तू इनको तात कहके मत पुकाराकर यह सुनकर पराशर को बड़ा क्रोध हुआ और उसने सम्पूर्ण लोकको नाश करना विचारा वशिष्ठजी जो ब्रह्मज्ञानियों में श्रेष्ठ थे उसके अभिप्राय को जान गये और उसे उस उक्त उपद्रव करने से निवृत्त करने के लिये बोले कि सुन कृतवीर्य नाम एक बड़ा श्रेष्ठ राजाथा उसके पुरोहित भार्गव लोग थे उस राजा ने उस भार्गवों से सोमयज्ञ कराये और उन को बहुत धन देकर तृप्त किया फिर वह राजा मरकर स्वर्गवासी हुआ और उस की गद्दीवाले पिछले राजाओं को किसी समय धनकी आवश्यकता हुई उस समय वह राजालोग यह जानकर कि भार्गवों के पास बड़ी द्रव्य है उनके पास धन मांगने को गये बहुत से भार्गवों ने तो उन राजाओं को धन दे दिया और बहुतों ने उनके भयसे पृथ्वी में गाड़ दिया और किसीने ब्राह्मणों को दान करदिया इसके पीछे किसी राजाने पृथ्वी खुदवाई और एक भार्गवके घर में

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पृथ्वी खुदवानेपर बहुतसा धन मिला उसको देखकर सब राजाओंने भार्गवोंपर बड़ा क्रोध किया और शरणागत होनेपर भी उन सबको बाणों से मारडाला और पृथ्वीपर घूम २ कर यहां तक किया कि भार्गव का गर्भतक न रहने दिया १। १६ ऐसा होनेपर भार्गवकुलकी स्त्रियां हिमाचल पर्वत पर चली गईं उनमें एक स्त्री वामोरु नाम थी उसने अपने पतिके कुलकी रक्षा करने के लिये क्षत्रियों के भयसे अपने गर्भ को बाईं जांघ में रक्खा था वह गर्भ बड़ा तेजस्वी था इसके पीछे किसी ब्राह्मणी ने भय से क्षत्रियों के पास जाकर कहदिया कि अमुक ब्राह्मणी को गर्भ है क्षत्री यह सुनकर उस गर्भ को भी नाश करने को वहां गये और उस ब्राह्मणी के तेज को देखा उस समय वह तेजस्वी गर्भ जांघको फाड़कर दोपहर के सूर्य के समान चमकता हुआ बाहर निकल आया उसके तेज के चकाचोंध से उन सब क्षत्रियों की दृष्टि जाती रही और वे अन्धे होजाने के कारण से पहाड़ों में इधर उधर टकराते हुये फिर दृष्टि मिलने के लिये उस ब्राह्मणी की शरण गये और उससे दुःखी और विनीत होकर बोले कि हे माता! जो तू कृपा करे तो हम सब अधर्मी घरको चले जावें हम सब अपराधी अब तेरी शरणागत हैं तू पुत्रसहित हम सब पर कृपा कर और हमको दृष्टि देकर हमारी रक्षा कर २०। २८॥

इति श्रीभाषामहाभारते आदिपर्वणि शताधिकअष्टसप्ततितमोऽध्यायः १७८॥

एकसौउन्नासी का अध्याय।

भार्गवों के वंश में एक बड़े तेजस्वी पुत्रका उत्पन्न होना उसका तपस्या करके सब लोकों को नाश करने की इच्छा करना और पितृलोक से उसके पितरों का आकर उसको समझाना॥

उन राजाओं की बिनती को सुनकर वह ब्राह्मणी बोली कि मैं तुम लोगों से प्रसन्न हूं परन्तु यह घोंटू से उत्पन्न हुआ मेरा पुत्र तुमसे अप्रसन्न है इसने ही अपने बांधवों को तुम्हारे हाथों से मारेगये जानकर तुमको क्रोधसे अन्धा कर दिया है जब तुम लोग सब भार्गवों को मारकर गर्भ का भी नाश करने लगे तब मैंने इसको अपने ऊरुमें रखकर सौ वर्ष तक इसकी रक्षा की गर्भ में ही इसको संपूर्ण वेद प्राप्त होगये अब यह प्रकट दीखता है यह बालक तुम सबको अपने पुरखों का बदला लेने के लिये अवश्य मारेगा और इसी से इसने तुम सबको अन्धा करदिया है इससे जो तुम अपना कल्याण चाहो तो इसकी स्तुति करो

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यही तुम्हारी दृष्टि देसक्ता है १। ६ यह सुनकर वह सब राजा लोग हाथ जोड़ २ कर उसके सन्मुख खड़े होगये और बोले कि महाराज हम दीनों पर कृपा कीजिये यह सुनकर उसने उनपर कृपा की और वह सब फिर नेत्र पाकर अपने २ घरों को चले गये उस बालक का नाम इस संसार में ऊरुसे उत्पन्न होने के कारण से और्व विख्यात हुआ उसने अपने कुटुम्बियों के नाश होने का वृत्तान्त जानकर बदला लेने को बड़ी उग्र तपस्या की और संपूर्ण लोकों को नाश करना चाहा उसकी तपस्या से देवता असुर और मनुष्यों सहित संपूर्ण लोक तृप्त होगये तब उसके मनकी वृत्तिको जानकर उसके पितर पितृलोक से आये और उससे कहने लगे कि हे पुत्र! तेरे तपके प्रभाव को सब जानते हैं अब तू अपने क्रोधको शान्त कर और लोकों पर कृपा कर हम सब बड़ी आयु होने के कारण संसार में रहतेरहते दुःखी होगये थे और अपने आप अपना नाश क्षत्रियों के हाथ से चाहते थे और जो धन हमारे मकानों में खोदने से निकलाथा वह हमने आपही क्षत्रियों से वैर करने के लिये गाड़ दिया था हमको धनकी कुछ इच्छा न थी हमारे धनाध्यक्षोंनेही वह धन लेलिया हमको तो स्वर्ग की चाहना थी हमने यह उपाय इसलिये किया था कि हमको अपने आप मरने का कोई उपाय नहीं दीखता था जो मनुष्य आत्महत्या करता है उसकी सद्गति नहीं होती इससे हमने आपको अपने हाथ से नहीं मारा हे पुत्र! तैंने जो विचार किया है वह हमारा प्रिय नहीं है इससे तू उस पाप के करने से अपने मन को रोक और लोक और क्षत्रियों को न मारकर तप और तेज में दोष लगानेवाले क्रोध को छोड़दे ७। २२॥

इति श्रीभाषामहाभारते आदिपर्वणि शताधिकनवसप्ततितमोऽध्यायः १७९॥

एकसौअस्सी का अध्याय।

और्वका पितरों के समझाने पर लोकों को नाश करने की इच्छा से निवृत्त होना और अधर्म समझकर प्रतिज्ञा रहने का उपाय पूछना पितरों का उसको उपाय बताकर उसके क्रोध को शान्त करना और वशिष्ठजी का पराशर को इसी दृष्टांतपर लोकों को न नाश करने का उपदेश करना॥

पितरों के पूर्वोक्त उपदेश को सुनकर और्व बोला कि मैंने क्रोध करके जो प्रतिज्ञा लोकों के नाश करने की की थी वह कैसे पूरी होगी मैं अपनी प्रतिज्ञा झूंठ नहीं करसक्ताहूं ऐसा करने से क्रोध मेरे अंगको इस प्रकार से भस्म करदेगा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जैसे अग्नि काष्ठको करदेती है जो मनुष्य कारण सहित क्रोधको क्षमा करता है वह अर्थ धर्म और कामकी रक्षा नहीं करसक्ता है राजाओं का धर्म तो नीचों को दण्ड देना और श्रेष्ठों की रक्षा करना है इन नीच क्षत्रियों ने भार्गवों का यहां तक नाश किया कि गर्भतक न छोड़ा मैं भी जब माता की जंघा में गर्भ में वास कर रहा था उस समय वह नीच क्षत्री मेरे मारने को भी आये और मैंने उस समय माताओं के रोने और पुकारने का शब्द सुनकर क्रोध करके यह प्रतिज्ञा की थी कि क्षत्रियों ने सम्पूर्ण भार्गवों के गर्भ गिरा २ दिये और उस भयसे संसार में उनको किसी ने नहीं बचाया तब मेरी माताने मुझको जांघमें रखलिया जब तक कोई संसार में पापका निषेध करनेवाला नहीं होता है तब तक संसारमें सब मनुष्य पापकर्म करते हैं और जब पापकर्म का निषेध करनेवाला होता है तब कोई पाप नहीं करताहै जो मनुष्य समर्थ होने पर पापी को दण्ड नहीं देता है वह भी पापका भागी होता है मेरे कुटुम्बियों की समर्थ राजा और ईश्वरोंने भी रक्षा नहीं की इससे मैं सब लोकों पर क्रुद्धहूं और आपलोगों के वचनका यथावत् पालन नहीं करसक्ताहूं १।१३ क्योंकि मैं इन सबको दंड देनेकी सामर्थ्य रखताहूं जो मैं इनको दण्ड न दूं तो मैंभी पापका भागी हूंगा और मेरे क्रोध की अग्नि जो सब लोकों को जलाने के लिये प्रज्वलित होरही है रोकने पर मुझकोही जला देगी मैं जानताहूं कि आप सब लोग इन लोकों का हित चाहते हैं परंतु अब ऐसा विधान कहिये जिससे मेरा और लोकों का दोनों का कल्याण होवे यह सुनकर पितृ बोले कि तेरा कल्याण होगा तू अपने क्रोधकी अग्नि को जो सब लोकोंको जलाना चाहती है जलमें छोड़दे क्योंकि सब लोक जलमय कहे हैं ऐसा करनेसे तेरी प्रतिज्ञा भी रहजायगी और संसार का नाश न होगा १४।२० यह सुनकर और्वने अपने क्रोधकी अग्निको समुद्रमें छोड़दिया वह अग्नि वड़वामुख होकर समुद्रके जल को सोखने लगी इस बात को वेदके जाननेवाले जानते हैं इससे हे पराशर! तू भी लोकोंके नाश करनेकी इच्छा मत करे परलोकसंबंधी काम कर २१। २३॥

इति श्रीभाषामहाभारते आदिपर्वणि शताधिकअशीतितमोऽध्यायः १८०॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

एकसौइक्यासीका अध्याय।

पराशर ऋषिका सब राक्षसों को भस्म करने के लिये यज्ञ करना और पुलस्त्य आदि ऋषियों का वहां आकर उस यज्ञको बंद कराना ॥

गंधर्व बोला हे अर्जुन! वशिष्ठजी के उक्त रीति से समझाने पर पराशर ऋषिने अपने मनको लोकों के नाश करने की इच्छा से रोकलिया और अपने पिता शक्तिका मरण याद करके राक्षसोंका मारने वाला यज्ञ करना प्रारंभ किया और बालक बूढ़े सब राक्षसोंको जलाने लगा वशिष्ठजी ने उसको उस यज्ञके करने से इस कारण से निषेध नहीं किया कि न जाने वह माने कि न माने उस यज्ञकी तीन अग्नियोंके बीच में पराशर ऋषि बैठे हुये ऐसे मालूम होते थे जैसे चौथी अग्नि भी मानो वहां जलरही है उस यज्ञसे आकाश ऐसा प्रकाशमान होगया जैसे बादलों के हटजाने से सूर्य प्रकाशित होजाताहै १।६ उस समय वशिष्ठ आदि ऋषियों ने पराशरके तेजको देखकर उसको दूसरे सूर्यके समान समझा इसके अनन्तर राक्षसों के वंशकी रक्षा और उस यज्ञको समाप्त करने की इच्छा से पराशरके पास अत्रि, पुलस्त्य, क्रतु और महाक्रतु आदि ऋषि आये और पराशरसे बोले कि हे पुत्र! क्या तेरा यह यज्ञ निर्विघ्न है तू नहीं जानता है कि मैं अदोष राक्षसों को मार रहाहूं इसका पाप कौन भोगेगा तुझे हमारी प्रजाका नाश करना उचित नहीं है तपस्वी ब्राह्मणों का अंतःकरण को वशमें करनाही बड़ा धर्म है इससे तुझको ऐसा न करना चाहिये तू श्रेष्ठ ऋषि होकर अधर्म करता है क्या तू अपने धर्मज्ञ पिता को उल्लंघन किया चाहताहै तुझे हमारी प्रजाका नाश करना उचित नहीं है शक्तिको किसी और राक्षसने नहीं मारा वह राजा शक्तिकेही शापसे राक्षस हुआ था इससे शक्ति अपनेही दोष से स्वर्ग को गयाहै ७।१५ और शक्ति बड़ा महात्मा था उसे किसी राक्षसकी क्या सामर्थ्य थी जो खाजाता उसने तो अपनी मृत्यु अपनेही से देखकर ऐसा किया था विश्वामित्र भी उसमें केवल निमित्तमात्र हैं और राजा कल्माषपाद तो मरकर स्वर्गही को चलागया और शक्तिके सब छोटेभाई भी स्वर्ग में देवताओं के साथ आनन्द कररहे हैं इससे अब तू अपने इस यज्ञ को बंद करदे वशिष्ठजी इस सब पूर्वोक्त वृत्तांतको जानतेहैं १६।२० गंधर्व बोला हे अर्जुन! पुलस्त्यजी और वशिष्ठजी के उक्तप्रकार से कहने पर पराशर ने अपना यज्ञ बंद करदिया और जो अग्नि सब राक्षसों को भस्म करने के निमि

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

स्थापन कीगई थी उसको हिमालय के पार्श्वके वनोंमें फिकवा दी वह अग्नि अबतक उस वनमें पत्थर वृक्ष और राक्षसोंको भक्षण करती हुई पर्व पर्व पर दिखाई दिया करती है २१।२३॥

इति श्रीभाषामहाभारते आदिपर्वणि शताधिकैकाशीतितमोऽध्यायः १८१॥

एकसौबयासी का अध्याय।

गंधर्वका अर्जुन से राजा कल्माषपाद का अपनी स्त्रीको संतान के लिये वशिष्ठजी के पास भेजने का कारण कहना॥

उक्त कथाको सुनकर अर्जुन ने गंधर्व से पूछा कि हे मित्र! राजा कल्माषपादने अपनी स्त्रीको ब्रह्मज्ञानी मुनि वशिष्ठजी के साथ क्यों युक्त किया और वशिष्ठजीभी उस अगम्या स्त्री के पास क्योंकर गये वशिष्ठजी ने अधर्मी और अनउपकारियों के भी साथमें उपकार किया यह सुनकर गंधर्व बोला कि हम राजाको शक्तिके शाप देनेकी कथा तो कहही चुके हैं शाप होने पर राजा कल्माषपाद व्याकुल होकर अपनी रानी सहित नगर से निकल गया और एक निर्जन वन में जहां नाना प्रकार के वृक्ष लता और पुष्प लगे हुये थे और अनेक २ प्रकार के मृग और जीव विहार किया करतेथे पहुँचा एक दिन भूँख और प्यासके कारण से वह अपने भोजन को कुछ ढूंढ़ रहाथा कि उसी अवसरमें उसने एक ब्राह्मण और ब्राह्मणी को विषय करते हुये उस वनमें देखा वे दोनों उसको देखकर भागे परन्तु राजाने दौड़कर ब्राह्मण को बलसे पकड़ लिया उसको पकड़ा हुआ देखकर उस ब्राह्मणी ने कहा कि हे राजन्! यद्यपि तू शापके वश होरहा है तो भी तू सूर्यवंशी धर्मात्मा सावधान और गुरुओं की सेवा करनेवाला है तुझसे राजा को अधर्म करना उचित नहीं है यह मेरा पति है और मैं ऋतुस्नान से निवृत्त होकर इसके पास संतान की इच्छा से आईहूं तू इसे छोड़दे राजाने कुछ न सुना और उस ब्राह्मण को मारकर भक्षण करगया यह देखकर उस ब्राह्मणी की आंखोंसे आंसू गिरे और वह गिरतेही जलती हुई अग्नि होगये और उस ब्राह्मणीने क्रोध करके राजाको शाप दिया कि तूने मेरे प्यारे पति को मेरी विना कामना सिद्ध हुये मारकर खालिया है इस से तूभी जब अपनी स्त्री के पास जायगा तब मरजायगा और जिस वशिष्ठ ऋषिके तैंने पुत्र मारकर खाये हैं उसीसे जब तेरी स्त्री मैथुन करावेगी तब तेरे पुत्र होंगे और हे नीच राजा! उसीसे तेरा वंश चलेगा अन्यथा न होगा यह

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कह वह ब्राह्मणी उस जलती हुई अग्निमें बैठकर भस्म होगई १।२२ वशिष्ठ जीने इस सब हालको अपनी दिव्यदृष्टि से जान लियाथा और राजाने अपनी स्त्री के पास ऋतुस्नानके पीछे जानेपर स्त्रीके स्मरण दिवानेपर उस शापको याद करके और दुःखी होकर अपनी स्त्रीको वशिष्ठजीके पास संतान उत्पन्न होनेके निमित्त भेजाथा २३।२६॥

इति श्रीभाषामहाभारते आदिपर्वणि शताधिकद्व्यशीतितमोऽध्यायः १८२॥

एकसौतिरासी का अध्याय।

पांडवों का गंधर्व से विदा होकर द्रौपदीके स्वयंवर को जाना और गंधर्वके उपदेशसे राहमें धौम्य ऋषिको अपना पुरोहित करना॥

उक्त कथा को सुनकर अर्जुनने गंधर्वसे कहा कि तुम सर्वज्ञहो कोई योग्य ब्राह्मण हमको बतावो जिसे हम अपना पुरोहित करें यह सुनकर गंधर्व बोला कि उत्कोचक तीर्थपर धौम्यनाम देवलका छोटा भाई तप कररहाहै जो तुम अपना पुरोहित किया चाहतेहो तो उसीको अपना पुरोहित करो वैशंपायनजी बोले हे राजा जनमेजय! इसके पीछे अर्जुनने उस गंधर्व को विधिपूर्वक आग्नेय अस्त्र देदिया और उससे कहा कि उन घोड़ोंको अभी तुम अपने पासही रहनेदो जब हमें काम पड़ेगा तब लेलेंगे इस प्रकारसे वे दोनों एक दूसरे से आदरपूर्वक बिदा होकर वहांसे अपनी राहपर चलदिये पांडवों ने उत्कोचक तीर्थपर पहुँचकर धौम्यसे अपना पुरोहित होने के निमित्त कहा धौम्यऋषि उन का फल फूलादि देकर आदर सत्कार कर उनकी पुरोहिताई अंगीकार करके उनके साथ आगे आगे हो लिये उनको आगे चलते देखकर पांडवों को स्वयंवर में द्रौपदी मिलनेका विश्वास होगया और अपने को सनाथ समझा और धौम्यऋषिने भी उनको अपना यजमान करके समझा कि पाण्डवों को राज्य प्राप्तही हुआ वहां से सबों ने एकही साथ द्रौपदीके स्वयंवरमें जानेका विचार किया १।१२॥

इति श्रीभाषामहाभारते आदिपर्वणि शताधिकत्र्यशीतितमोऽध्यायः १८३॥

एकसौचौरासी का अध्याय।

पांडवोंको राहमें बहुतसे ब्राह्मण मिलना और उनका पांडवोंसे द्रौपदीका स्वयंवर देखनेको साथ चलनेको कहना और पांडवोंका साथ चलना अंगीकार करना॥

वैशम्पायनजी बोले हे राजा जनमेजय! पांडव मातासहित वहांसे थोड़ी ही दूरपर पहुँचे थे कि उनको बहुतसे ब्राह्मण राहमें इकट्ठे मिले उन ब्राह्मणों

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ने पूछा कि आपका आना कहां से हुआहै और अब आप कहांको जायँगे युधिष्ठिरने उत्तर दिया कि हम पांचो सगे भाई हैं माता सहित एकचक्रापुरी नगरसे आरहेहैं यह सुनकर वे ब्राह्मण बोले कि अब तुम सब राजा द्रुपद की राजधानीको चलो हमसबभी वहींको जातेहैं वहां बड़ा स्वयंवरका उत्सव होने वालाहै यह स्वयंवर उस द्रौपदीकाहै जो द्रोणाचार्य के शत्रु धृष्टद्युम्न जो अग्नि से खड्ग कवच धनुष और बाण लिये हुये उत्पन्न हुआथा और अग्निके समान तेजस्वी है उसकी बहिनहै उसकी सुन्दरता हम कहांतक कहैं वह दर्शनयोग्य अदोष अंग और सुकुमारी है और उसके अंगमें एक कोससे नीले कमलोंकी सी गन्ध आती है उस स्वयंवरमें अनेक २ देशोंके यज्ञ करनेवाले बड़ी दक्षिणा बांटनेवाले वेदपाठी महात्मा पवित्रव्रती तरुण दर्शनीय महारथी और अस्त्र-वेत्ता राजपुत्र आवेंगे और ब्राह्मणोंको नानाप्रकारके धन, गौ और भक्ष्य, भोज्य देंगे हम सब उन सब पदार्थों को लेकर और स्वयंवर के आनन्दको देखकर फिर जहांकी इच्छा होगी तहांको जायँगे १। १५ इन सबके सिवाय उस स्वयं-वरमें नट वैतालिक अर्थात् मंगलपाठ करनेवाले नर्तक सूत मागध अर्थात् वंशावली कहनेवाले और बड़े २ मल्ल जुड़ेंगे इससे तुम सब भी हमारे साथ चलो उस आनन्दको देखकर और दान लेकर फिर हमारेही साथ लौटआना और तुम सबके देवताओंकेसे स्वरूपहैं कदाचित् द्रौपदी दैवयोगसे तुम हीं को वरे यह तुम्हारा छोटा भाई सबसे श्रीमान्है कदाचित् तुम्हारी आज्ञासे उस बड़ी लक्ष्मी को यही जीते तो कुछ आश्चर्य नहीं है यह सुनकर युधिष्ठिर बोला कि बहुत श्रेष्ठ महाराज हम सब आपलोगों के साथ उस कन्या का स्वयंवर देखने को चलतेहैं १६। २० ॥

इति श्रीभाषामहाभारते आदिपर्वणि शताधिकचतुरशीतितमोऽध्यायः १८४ ॥

एकसौपचासी का अध्याय।

पांडवोंका द्रुपदके नगरमें पहुँचकर स्वयंवरमें जाना और ब्राह्मणोंके बीचमें बैठजाना और वहां देश २ के राजाओंका आना और धृष्टद्युम्नका सब राजाओंको प्रणाम करना ॥

वैशम्पायनजी बोले हे राजा जनमेजय! वे पांडव वहां से ब्राह्मणके साथ हो लिये और दक्षिण पांचालदेशकी ओर जो द्रुपदसे रक्षित था चले थोड़ी दूर चलने पर उन्होंने व्यासजी महाराज को उन ब्राह्मणों के बीचमें देखा उनको देखकर सब पांडवों ने उनकी विधिवत् पूजा की और उनसे सत्कार

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पाकर उनकी आज्ञा के अनुसार वहां से धीरे २ वन उपवन और तालाब आदि की शोभा देखते हुये द्रुपदके नगरमें पहुँचे और वहां सेनाके रहने के स्थानोंको देखतेहुये नगरके भीतर जाकर एक कुम्हारके घरमें डेरा किया १।६ वहां पर पांडव ब्राह्मणवृत्तिसे भिक्षा मांगकर रहनेलगे और उनके आनेका हाल किसी ने नहीं जाना ७ राजा द्रुपदकी यह इच्छाथी कि मैं द्रौपदीको अर्जुन को दूं परन्तु उसको न जानने के कारणसे उसे ढूंढ़नेको यह यत्न किया कि एक धनुष ऐसा कठोर बनवाया कि वह कदापि न बनही सक्ता था और अन्तरिक्ष में एक भ्रामक यंत्र रखवाकर उसमें एक छिद्र करादिया और लक्ष्य अर्थात् निशाना उस छिद्रमें होकर रक्खा और यह विचार किया कि सिवाय अर्जुन के दूसरा मनुष्य इस काम को न करसकेगा इसके पीछे राजा द्रुपदने सबसे कह सुनाया कि इस धनुषको चढ़ाकर जो कोई इस यन्त्र के छिद्रमें होकर लक्ष्यभेदन करेगा उसको यह द्रौपदी वरेगी इस बातको सुनकर बड़े २ महात्मा देश देश के राजा ब्राह्मण और कर्ण और दुर्योधन सहित कौरव वहां स्वयंवर में आये और द्रुपदसे सब पूजित होकर ऊंचे २ मंचोंपर बैठ गये ८।१५ सब पुरवासी भी वहां उमंगके साथ चले आये वह स्वयंवर का स्थान नगर के ईशानकोण में बनाया गया था उसके चारों ओर परकोटा और खाई बनवा दीगई थी द्वारपर सुंदर बन्दनवार बँधीहुई थी और चित्र विचित्र चंदोये तनवा दिये थे अनेक प्रकारके वहां बाजे बजरहे थे चारोंओर चन्दनके जल से छिड़काव होरहा था और अगरु की सुगन्ध महकरही थी सब जगह फूलोंकी माला बँधरही थीं और चारों ओर बड़े २ कैलासपहाड़के शिखरकी तुल्य ऊंचे २ महल बन रहे थे उन महलों में मणि जड़ रही थीं और सुनहले जाल कढ़ रहे थे उनपर चढ़नेको सुन्दर २ सीढ़ियां बनीहुई थीं और आसन आदि अनेक प्रकार के बैठने की चीजें रखवादी थीं और सुंदर उजले २ वस्त्र वहांपर रक्खे हुये थे और अगरु आदि की सुगंध से सब स्थान ऐसे महक रहे थे कि उनकी सुगंधि एक योजनतक जाती थी और उन महलों में हिमालय पहाड़ की तुल्य ऊंचे २ स्थानों में बहुत से दरवाजे बनरहे थे और उनमें सोने बैठने के सब सामान अनेक २ धातुओं से जटित रखवा दिये थे वहां सब राजा लोग आकर एक दूसरे से ईर्षा करतेहुये अनेक प्रकार के मंचोंपर बैठगये और पुरवासी भी द्रौपदी के दर्शनों की कांक्षा करते हुये उस स्वयंवर में यथायोग्य

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

स्थानोंपर बैठगये और पांडव भी वहां की उस सब शोभाको देखतेहुये ब्राह्मणों में आकर बैठगये उस सभामें १६ दिनतक नटआदि के अनेक प्रकार के तमाशे होतेरहे उपरान्त सब राजाओं के जुड़नेपर द्रौपदी को स्नान कराकर सुन्दर आभूषण और वस्त्रों से शृंगार करके उसके हाथों में सुवर्ण की माला देकर उस स्वयंवर में लाये और विधिपूर्वक कुशकंडिका सहित होम करके और ब्राह्मणों से स्वस्त्ययन सुनकर धृष्टद्युम्न ने द्रौपदी को विधिपूर्वक साथमें लेलिया और सब बाजों को बन्द कराकर बादल की गरज के समान चिल्लाकर कहा कि तुम सब राजालोगों ने यहां कृपा की है देखो यह धनुष और बाण रक्खे हुये हैं और यह अंतरिक्ष में यंत्र है जो कोई इस यंत्र के छिद्रमें होकर इस धनुष को चढ़ाकर इन बाणों से लक्ष्य भेदन करेगा उसको निस्संदेह यह द्रौपदी विवाहेगी यह कहकर धृष्टद्युम्न ने द्रौपदी को सब राजाओं के गोत्र और नाम बताकर उससे कहा १६। ३७॥

इति श्रीभाषासहाभारते आदिपर्वणि शताधिकपञ्चाशीतितमोऽध्यायः १८५ ॥

एकसौछियासी का अध्याय।

धृष्टद्युम्नका द्रौपदी से सब राजाओं के नाम कहकर यह कहना कि जो इस लक्ष्य अर्थात् निशाने को मारे उसीको तू वरियो॥

धृष्टद्युम्न बोले हे द्रौपदी! देख दुर्योधन, दुर्विषह, दुर्मुख, दुःप्रधर्षण, विविंशति, विकर्ण, सह, दुश्शासन, युयुत्सु, वायुवेग, भीमवेग, उग्रायुध, बलाकी, करकाय, विरोचन, कुंडक, चित्रसेन, सुवर्चा, कनकध्वज, नंदक, बाहुशाली, तुहुण्ड, विकट और २ धृतराष्ट्रके पुत्र और कर्ण, राजा कंधारके पुत्र शकुनी, वृषक और बृहद्बल, अश्वत्थामा और भोज जो शस्त्रधारियों में श्रेष्ठहै, राजा बृहंत, मणिमान, दंडधार, सहदेव, जयत्सेन, मेघसंधि, शंख, राजा विराट् अपने उत्तर आदि पुत्रों सहित, वार्द्धक्षेम, सुशर्मा, सेनाबिंदु, सुनाम, सुवर्चस, सुकेतु, सुचित्र, सुकुमार, वृक, सत्यधृति, सूर्यध्वज, रोचमान, नील, चित्रायुध, अंशुमान, चेकितान, श्रेणिमान, समुद्रसेनका पुत्र चंद्रसेन, दोनों पुत्रों सहित राजा जलसंध, विदंड, दंड, पौण्ड्रक, वासुदेव, भगदत्त, कलिंग, ताम्रलिप्त, पत्तन, शल्य, रुक्मांगद, रुक्मरथ, सोमदत्त और उसका महारथीपुत्र, भूरि, भूरिश्रवा, शल, राजा कांबोज, दृढ़धन्वा, पौरव, बृहद्बल, सुषेण, राजा शिवि, कारूष का राजा पटच्चरनिहंता और बलदेव, वासुदेव, प्रद्युम्न, सांब, चारुदेष्ण,

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

गद, अक्रूर, सात्यकि, उद्धव, कृतवर्मा, पृथु, विपृथु, विदूरथ, कंकशंकु, गवेषण, आशावह, अनिरुद्ध, समीक, सारिमेजय, वीरवातपति, झिल्ली, पिंडारक, उशीनर, विक्रांत, ये सब वृष्णिवंशी राजा, भगीरथ, बृहत्क्षत्र, जयद्रथ, बृहद्रथ, वाह्लिक, श्रुतायु, उलूक, कैतव, चित्रांगद, शुभांगद, वत्सराज कोशला का राजा, शिशुपाल, जरासंध और २ बहुत से पराक्रमी राजालोग तुझे वरने के लिये आये हैं इनमें से जो इस लक्ष्यको भेदे अर्थात् इस निशाने को मारदे उसीको तू वरियो १। २५ ॥

इति श्रीभाषामहाभारते आदिपर्वणि शताधिकषडशीतितमोऽध्यायः १८६ ॥

एकसौसत्तासीका अध्याय।

सब राजाओंका क्रमपूर्वक उठकर लक्ष्यभेदनेको जाना और किसीसे धनुष न चढ़नेपर अर्जुनका लक्ष्य भेदने को उठना ॥

वैशम्पायनजी बोले हे राजा जनमेजय! धृष्टद्युम्न के उक्त प्रण को सुनकर संपूर्ण राजपुत्र जो जवान और अस्त्रविद्या में निपुण थे और अपने बल रूप कुल धन और यौवनपर इस प्रकार से मतवाले होरहे थे जैसे वन में हाथी होता है एक दूसरे से ईर्षा करते हुये और द्रौपदी के स्वरूप को देखकर कामासक्त होने के कारण से उसको जीतना चाहते हुये उठ खड़े हुये उस समय जो राजा आपस में मित्र थे वे भी द्रौपदी के कारण से आपस में द्रोह करनेलगे राजाओंके उठने पर आकाश में ग्यारह रुद्र, बारहों सूर्य, आठ वसु, दोनों अश्विनीकुमार, सब साध्य ४९ मरुत, सब यम, कुबेर, दैत्यसुपर्ण, महाउरग, देवऋषि, गुह्यक, चारण, विश्वावसु, गंधर्व, नारद, पर्वत आदि सब देवताओं के गण विमानों में बैठ २ कर अकस्मात् आगये और स्वयंवर देखने लगे उस समय बलदेवजी और श्रीकृष्ण आदि वृष्णि और अंधकवंश के मुख्य २ लोग श्रीकृष्णजी के मतके अनुसार बैठे २ देखा किये उठे नहीं श्रीकृष्णजी ने पाण्डवों को पहिंचानकर धीरे से बलदेवजी को दिखा दिया परन्तु और किसी राजा ने उनको नहीं पहिंचाना १। ११ द्रौपदी के स्वरूप को देखकर सब पांडवभी कामदेवके बाणों से अभिहत होगये और सब राजा कामासक्त होकर सबके हृदयमें एक द्रौपदी बसगई उस समय चारों ओर आनन्द फैलगया दुन्दुभी बजनेलगी देवता प्रसन्न हो होकर आकाशसे फूलोंकी वर्षा करने लगे और अपने विमानों को एक स्थानसे दूसरे स्थानपर लेजानेलगे और वेणु

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वीणा और ढोल बजानेलगे उस समय दुर्योधन, शल्य, द्रोणाचार्य, निक्राथ, सुनीथ, वक्र, राजा कलिंग, राजा वंग, पांड्य, पौण्ड्र, विदेह, यमनोंका राजा आदि सब राजा क्रम २ से एक २ धनुषके पास जाकर चढ़ानेलगे परंतु किसीसे वह धनुष नहीं चढ़ा सबके सब मनसे हार २ कर लौटआये श्रम के कारण से किसी का हार टूटकर गिरपड़ा किसी की पगड़ी गिरगई और किसी का बाजूबंद खुलगया परंतु लक्ष्य भेदना तो दूर था किसीसे धनुषभी नहीं चढ़ा यह देखकर वे सब राजा हाहाकार करनेलगे और द्रौपदी पाने की सबकी आशा टूटगई उन सबको निवृत्त हुआ देखकर कर्ण धनुषके पास गया और धनुषको शीघ्र चढ़ालिया यह देखकर पांडव कहने लगे कि यह अवश्य लक्ष्य भेदेगा उस समय द्रौपदी ने चिल्लाकर कहा कि मैं सूतके साथ अपना विवाह नहीं करूंगी यह सुनकर कर्णने धनुष रखदिया और क्रोधसे हँसता हुआ सूर्यको देखकर चलाआया १२। २३ इसके पीछे राजा शिशुपाल जो बड़ा पराक्रमी और धीर वीर था धनुष के पास गया परंतु उसे उठाते में ही पृथ्वीपर गिरपड़ा उसके पीछे राजा जरासंध और शल्य क्रमसे लक्ष्य भेदने को उठे परंतु धनुष चढ़ाते में दोनों घोंटुओं के बलसे गिरपड़े इस प्रकार से जब सब राजा हारगये तब अर्जुन लक्ष्य भेदने को उस धनुषके पास उठकर आया २४। २६ ॥

इति श्रीभाषामहाभारते आदिपर्वणि शताधिकसप्ताशीतितमोऽध्यायः १८७ ॥

एकसौअट्ठासीका अध्याय।

अर्जुनका लक्ष्य भेदनेको उठना देखकर सब ब्राह्मणोंका संकल्प विकल्प करना अर्जुनका लक्ष्य भेदना और द्रौपदी सहित स्वयंवर से निकलकर डेरे को चलना ॥

वैशंपायनजी बोले हे राजा जनमेजय! जिस समय अर्जुन ब्राह्मणों की मंडली में से उठकर लक्ष्य भेदने को चला उस समय उसको वे सब ब्राह्मण देखकर कोई मलिनचित्त कोई प्रसन्न और कोई २ प्रवीणतासे आपस में कहने लगे कि जो काम शल्य और कर्ण आदि धनुर्वेद के परमवेत्ता क्षत्रियों से नहीं होसका वह अस्त्र न जाननेवाले दुर्बल और बालकमात्र ब्राह्मण से होना क्योंकर संभव है हमको ऐसा दीखता है कि यह अपनी चपलता से धनुष चढ़ाने जाता है यह काम इससे न होगा और ब्राह्मणों की हँसी होगी इससे इसको रोकना उचित है इसका जाना अच्छा नहीं है कोई ब्राह्मण उस समय बोला कि न हमारा हास्य होगा न क्षत्रियों से वैर न जाने यह ब्राह्मण-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वेष धरे हुये कौन है दूसरे ने कहा कि यह ब्राह्मण जवान और श्रीमान् है देखो इसकी बाहें हाथी की सूँड़के सदृशहैं जांघ कंधा और भुजा बड़ी पुष्ट हैं और धैर्य हिमाचल पहाड़कासा मालूम होताहै चाल इसकी सिंहके समान और पराक्रम मतवाले हाथीकासा है इससे यह काम होना असंभव नहीं है यह अपने उत्साह से लक्ष्य भेदने को जाताहै निश्चय यह लक्ष्य भेदेगा मनुष्य देवता और असुर आदिमें कोई ऐसा काम नहीं है जो ब्राह्मणों से साध्य न हो यद्यपि ब्राह्मण जल, वायु, फल खाने और दृढ़ व्रतों के करने से निर्बल होते हैं परंतु उनका तेज बड़ा बलवान् होता है देखो परशुरामजी ने क्षत्रियों का २१ बेर नाश किया और अगस्त्यजी संपूर्ण समुद्रको पीगये इससे निस्संदेह यह ब्राह्मण धनुषको चढ़ाकर लक्ष्य भेदन करेगा यह सुनकर और सब ब्राह्मण बोले कि ऐसाहीहो १।१५ वे ब्राह्मण तो यह बातें करही रहे थे कि अर्जुन उस धनुषके पास पहुँचा और उसे देखकर शिवजी और श्रीकृष्णको मनमें प्रणाम करके उस धनुष की प्रदक्षिणा करके उठालिया और उस इन्द्रकासा प्रभाव रखने वाले ने उसे एक पलमात्र में चढ़ाकर पांच बाणों से लक्ष्य भेदन करके लक्ष्यको यंत्रसे नीचे गिरा दिया अर्जुनने इस काम को जो रुक्म, सुनीथ, वक्र, कर्ण, दुर्योधन, शल्य और शाल्व आदि राजाओंसे बड़े यत्नसे भी नहीं हुआथा बड़ी सुगमतासे करडाला लक्ष्यके पृथ्वीपर गिरतेही आकाशमें बड़ा शब्द हुआ और उस सभाके राजा लोगोंने भी बड़ा रौरा मचाया अर्जुनपर आकाशसे फूलोंकी वर्षा हुई और सब ब्राह्मणों ने प्रसन्न होकर अपने अपने मृगचर्मों को विजय ध्वजा के तुल्य उठा लिया बहुत से मनुष्य प्रसन्न हो होकर अपने अंग बजाने लगे सूत और मागध लोग बड़े ऊंचे स्वरसे स्तुति पढ़नेलगे सब हारे हुये राजा लोग हाहाकार करनेलगे और द्रुपद बहुत प्रसन्न होकर अर्जुनकी सहायताके लिये सेनासहित उपस्थित होगया उस गुलगपाड़ेको सुनकर युधिष्ठिर नकुल और सहदेवको साथ लेकर डेरेकी ओर चल दिये उस समय द्रौपदीने अर्जुन को सुपेद फूलोंकी सुंदर जयमाल पहिना दी और अर्जुन द्रौपदी को लेकर ब्राह्मणों सहित वहांसे बाहर निकलकर डेरेकी ओर चला १६। २८॥

इति श्रीभाषामहाभारते आदिपर्वणि शताधिकअष्टाशीतितमोऽध्यायः १८८॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

एकसौनवासी का अध्याय।

सब राजाओंका द्रुपद के मारनेकी सलाह करना द्रुपदका ब्राह्मणों की शरण में जाना और अर्जुन और भीमका उन राजाओं से युद्ध करने को उपस्थित होना॥

वैशंपायनजी बोले हे राजा जनमेजय! वे सब राजालोग ब्राह्मणको कन्या दी हुई जानकर द्रुपदपर महा क्रोधित हुये और आपस में कहनेलगे देखो कि इस द्रुपदने हममेंसे किसीको अपने समान नहीं समझा जो हम सबको तृण-वत् समझकर कन्या ब्राह्मणको ऐसे देदी जैसे कोई वृक्षको लगाकर फल लगने के समय उसको काटडाले उसी प्रकारसे इस द्रुपदने हम सबको बुलाकर हमारा अपमान कियाहै इससे यह राजा सम्मान करनेके योग्य नहींहै हम सब मिल कर इसको पुत्रसहित मारडालें इसने हम सबको बुलाकर हमारी कुछ भी कान न की क्या हममें से कोई द्रौपदीके योग्य नहीं है क्षत्रियोंके स्वयंवरमें ब्राह्मणों को कन्या वरनेका अधिकार नहीं है और जो यह कन्या हममेंसे किसीको वरना न चाहै तो इस को भी मारकर अग्नि में डाल चलो १। ८ यद्यपि इस ब्राह्मण ने हमारा बड़ा भारी अपराध और अपमान किया है परन्तु यह तौ मारने के योग्य नहीं है क्योंकि हम सबके पास राज्य देह धन पुत्र पौत्र जो कुछ है सब ब्राह्मणोंही के लिये है परन्तु इस द्रुपदको अवश्य मारना उचितहै जिसमें फिर कोई राजा स्वयंवर करके ऐसा अपमान न करै ९। ११ यह कहकर सब राजा लोग अपने २ हथियार ले लेकर द्रुपदके मारनेको दौड़े द्रुपद उस समय भय-भीत होकर भागकर ब्राह्मणों की शरण में पहुँचा उसको देखकर अर्जुन और भीमसेन उन सब राजाओं से युद्ध करनेको खड़े होगये और वे राजाभी उन दोनों के मारने को उनके सम्मुख आये १२। १५ उस समय महाबली और भयानक कर्म करनेवाले भीमसेन अपने दोनों हाथोंसे एक बड़े वृक्षको उखाड़ हाथी के सदृश उसके पत्ते नोचकर यमराज के दण्डकी समान हाथ में लेकर अर्जुन के पास खड़ा होगया अर्जुन भाई के उस काम को देखकर विस्मित हुआ और निर्भय होकर धनुष हाथमें लिये हुये खड़ा रहा १६। १८ उस समय श्रीकृष्णजी अर्जुन और भीमसेनको इस प्रकारसे देखकर बलदेवजी से कहने लगे कि देखो यह जो ताड़के वृक्ष की बराबर बड़े धनुष को हाथ में लिये हुये खींच रहा है निस्संदेह अर्जुन है और जिसने यह वृक्ष राजाओंके मारनेको उखाड़ लिया है वह भीमसेन है सिवाय उसके और की सामर्थ्य ऐसी नहीं है

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

और जो यह उजली लंबी नाकवाला जिसकी आंखें बड़ी २ शरीर लम्बा और सिंह कीसी चाल है वह युधिष्ठिर है और वह दोनों कुमार जिनकी सूरत एकसी और कार्त्तिकेयके समान सुन्दर हैं नकुल और सहदेव हैं मेरा यह अनुमान ठीक है मैंने कुंतीको पांचों पुत्रों सहित जलनेसे बचने का हाल सुना था यह सुनकर बलदेवजी बोले कि आज हमारा यह दुःख दूर हुआ हमारी फूफी पांचों पुत्रों सहित बचगई १९। २४॥

इति श्रीभाषामहाभारते आदिपर्वणि शताधिकनवाऽशीतितमोऽध्यायः १८९॥

एकसौनब्बे का अध्याय।

पाण्डवोंका सब राजाओंको युद्धमें हराकर द्रौपदी सहित अपने स्थानपर आना॥

वैशंपायनजी बोले हे राजा जनमेजय! अर्जुन के युद्ध करनेको खड़े होने पर सब ब्राह्मण अपने कमण्डलु और मृगचर्मों को हिलाते हुये बोले कि डरो मत हम इनसे युद्ध करेंगे यह सुनकर अर्जुन हँसकर बोला कि आप सब दूर खड़े होकर देखा कीजिये मैं इन सब क्रोध भरे राजाओंको अपने बाणोंसे मार कर इसप्रकार से अभी रोके देताहूं जैसे मंत्रके बलसे सर्प रुक जाते हैं यह कह कर अर्जुन पहाड़की तुल्य भीमसेनके साथ अचल खड़ा रहा इसके पीछे वह सब राजा क्रोध करके सहसा उन दोनों के ऊपर शस्त्र लिये हुये दौड़े और यह कहकर कि ये ब्राह्मण वध करने के योग्य हैं उनके पास आकर कर्ण अर्जुन से और शल्य भीमसेन से युद्ध करने लगे और और सब राजा मृदुताको लिये हुये उन ब्राह्मणों के सम्मुख जाकर लड़ने लगे १। ९ अर्जुनने कर्णको सम्मुख आते देखकर बड़े तीक्ष्ण बाणों से उसे भेद डाला यह देखकर कर्ण मोहितसा होकर यत्न के साथ अर्जुन के सम्मुख गया और वे दोनों परस्पर क्रोध कर २ के बड़ी लाघवताके साथ लड़ने लगे और एक दूसरे को पुकार पुकारकर कहने लगे कि देख मेरी भुजा का बल देख अर्जुन के युद्धको देखकर कर्णने उस को जाना कि इसकी बराबर योद्धा नहीं है और ऐसा समझकर वह भी अच्छे प्रकार से युद्ध करने लगा अर्जुन उसकी प्रयोग सहित बाणवृष्टिको अपने बाणों से वारण करके गर्जने लगा उसकी गर्जनाको देखकर सब मनुष्य सेनावाले उसकी बड़ाई करने लगे और कर्ण भी उसको बड़ा भट जानकर बोला कि हे विप्र! मैं तुम्हारे इस युद्ध से बहुत प्रसन्न हुआ आप साक्षात् धनुर्वेद अथवा परशुराम या इन्द्र या विष्णु कौन हैं जो इस ब्राह्मण वेषमें अपने आपको

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

छिपायेहुये हैं मेरे क्रोध करनेपर युद्धमें मेरे सम्मुख सिवाय इन्द्र और अर्जुनके और कोई नहीं ठहरसक्ता है यह सुनकर अर्जुन बोला कि हम इनमें से कोई नहीं हैं हम तो ब्राह्मणहैं गुरु से हमने ब्रह्म और पौरन्दर आदि अस्त्र पाये हैं इससे हम योद्धाओं में श्रेष्ठ और शस्त्रधारियों में उत्तम हैं तुमको जीतने के लिये युद्ध करना चाहते हैं तुम ठहरकर युद्ध करो वैशम्पायनजी बोले कि कर्ण यह सुनकर ब्राह्मण के तेज को अजेय जानकर हटगया और फिर युद्ध नहीं किया १०।२२ और उधर शल्य और भीमसेन का मल्लयुद्ध दो मत्त हाथियों की तरह होने लगा वे दोनों एक दूसरे को मारते पुकारते और अनेक प्रकारके दाँव पेच करते हुये लड़ने लगे कभी वह खैंच लेजाता कभी वह हटा देता कभी वह मुष्टिक मारता कभी वह लात मारता इस प्रकार से थोड़ी देर उन दोनों में युद्ध होता रहा उपरान्त भीमसेन ने शल्यको उठाकर देमारा और वह लज्जित होकर चला गया ब्राह्मण यह देखकर हँसने लगे इसके पीछे शल्य को भीमसेन से गिरा हुआ और कर्ण को अर्जुन से शङ्कित देखकर सब राजा भयभीत होगये और कहने लगे कि ये ब्राह्मण बहुत श्रेष्ठ हैं इनकी जन्मभूमि और रहने का स्थान पूछना चाहिये क्योंकि कर्ण से सिवाय परशुराम द्रोणाचार्य और अर्जुन के और कौन लड़सक्ता हैं २३।३२ और बलवान् राजा शल्य से भी सिवाय बलदेवजी और भीमसेन और दुर्योधन के दूसरे की सामर्थ्य लड़ने की नहीं है इससे अब इन ब्राह्मणों से युद्ध मत करो ब्राह्मण की रक्षा करना अपराध करने परभी उचित है और जो लड़नाही होगा तो फिर किसी समय लड़ैंगे पाण्डव उन सब राजाओं की बातोंको सुनकर चुपके खड़े रहे और श्रीकृष्णजी ने उन के युद्धकर्म को देखकर उनको निश्चय पाण्डव अनुमानकर सब राजाओं को यह कहकर युद्धसे निवृत्त कराया कि उन्हों ने द्रौपदी धर्म से जीती है राजा लोग कृष्णचन्द्र की इस बातको सुनकर युद्ध छोड़कर अपने अपने डेरों को चले गये और वहां जितने मनुष्य आये थे वहभी यह कहते हुये घरों को लौटगये कि द्रौपदी आज स्वयंवर में ब्राह्मणोंने बरी है और वे दोनों वीर पाण्डव अर्थात् अर्जुन और भीमसेन ब्राह्मणों से घिरे हुये द्रौपदी को साथ लिये हुये मनुष्यों की बाधा से निर्भय होकर इस प्रकार से चले जैसे पूनों के दिन बादलों के हट जाने पर सूर्य और चन्द्रमा चलते हुये दीख पड़ते हैं और वहां कुन्ती पाण्डवों को देरके गये हुये समझकर और भिक्षा का समय

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भी व्यतीत होना जानकर पुत्रस्नेह से नाना प्रकार की चिन्ता करने लगी कभी कहती थी कहीं दुर्योधन तो उनको नहीं जानगया उसने उनको मरवा डाला हो और कभी २ यह कह कहकर शोच करती थी कि कहीं राक्षसों ने तो वैरके कारण से नहीं घेर लिया आज व्यासजीकी भी बात झूंठी हुई कुन्ती इस प्रकारसे चिन्ता करही रहीथी कि इतने में भीम और अर्जुन द्रौपदीको लिये हुये ब्राह्मणों सहित सायंकाल के समय जब कि आकाश बादलों से ढका हुआ था अपने डेरों पर पहुँचे ३३।४६॥

इति श्रीभाषामहाभारते आदिपर्वणि शताधिकनवतितमोऽध्यायः १९०॥

एकसौइक्यानबे का अध्याय।

कुन्तीका पाण्डवों के कहने से भिक्षा जानकर पांचों भाइयों को मिलकर भोजन करने की आज्ञा देना और श्रीकृष्ण और बलदेवजी का उस भार्गवशाला में आकर पाण्डवों से मिलना॥

वैशंपायनजी बोले हे राजा जनमेजय! भीमसेन और अर्जुन उस भार्गवशालामें जहां कुन्ती बैठीहुई शोच कररही थी गये और बाहर से मातासे कहा कि आज हम यह परम भिक्षा लाये हैं कुन्ती उनकी बातको सुनकर उनको विना देखे भीतर से बोली कि तुम सब भाई मिलकर खावो परन्तु जब बाहर निकली और भीमसेन और अर्जुनको द्रौपदी सहित खड़ेहुये देखा तब तो बड़ा शोच करने लगी और यह शोचा कि मैंने विना विचारे कह दिया कि तुम सब भाई मिलकर खाओ द्रौपदी का हाथ पकड़कर युधिष्ठिर के पास गई और कहने लगी कि हे पुत्र! तू सब धर्म अच्छी प्रकारसे जानता है तेरे भाइयों ने मुझसे यह आनकर कहा कि हम भिक्षा लाये हैं सो मैंने भी विना देखे उन को यह आज्ञा देदी कि सब भाई मिलकर खाओ अब ऐसी बात बताओ जिसमें मेरा वचन झूंठा न होवे और इस पांचाल राजाकी कन्या को अधर्म न हो यह सुनकर युधिष्ठिर कुछ देर विचारकर कुन्ती को धैर्य देकर अर्जुन से कहने लगा कि तैंने द्रौपदी को स्वयंवर में जीता है इससे इसका विवाह तेरे ही साथ शोभा देताहै अब अग्नि प्रज्वलित करके विधिपूर्वक इसका पाणिग्रहण करो १।७ यह सुनकर अर्जुन बोला कि आप मुझको अधर्मका भागी न कीजिये आपका यह कहना धर्म के अनुसार नहीं है पहले आपका विवाह होना चाहिये और उसके पीछे हम सबका क्रमपूर्वक होना उचित है हम चारों भाई

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

और यह द्रौपदी आपकेही आधीन हैं आप जैसा उचित समझें वैसा कीजिये राजा पांचाल का जिसमें हित होवे और अयश वा अधर्म न होवे वही करना उचित है वैशंपायनजी बोले हे राजा जनमेजय ! युधिष्ठिर आदि सब भाई अर्जुन के भक्ति और स्नेहयुक्त वचनों को सुनकर द्रौपदी की ओर देखने लगे उसके असदृश उत्तम स्वरूपको देखकर सबके चित्त मन्मथसे मथित होगये और उन सबके चित्तमें द्रौपदी की मूर्ति बस गई इसके पीछे युधिष्ठिर सब भाइयों का अभिप्राय जानकर और व्यासजी के वचनों को स्मरण करके आपसके विरुद्ध के भयसे बोला कि यह द्रौपदी हम सबकी स्त्री होगी यह बात सुनकर सब भाइयों ने प्रसन्न होकर अपने मन में उस बात को धर लिया उसी समय कृष्ण और बलदेव दोनों उस भार्गवशाला में गये और युधिष्ठिर को अपने सब छोटे तेजस्वी भाइयों सहित बैठे हुये देखकर उनके समीप चले गये और उन्होंने युधिष्ठिर और अपनी फूफी कुन्ती के पैर छूकर कहा कि मैं कृष्णहूं उसके पीछे बलदेवजी ने भी युधिष्ठिर को प्रणाम करके कुन्ती के चरण छुये युधिष्ठिर और कुन्ती ने उन दोनोंकी क्षेम कुशल पूछकर पूछा कि हम गुप्तवास करनेवालों को तुमने क्योंकर जाना यह सुनकर श्रीकृष्णजी ने हँसकर कहा कि अग्नि भी कहीं छिपाये से छिपती है सिवाय पाण्डवों के दूसरे मनुष्य का यह काम न था जो तुमने कियाहै तुम सब अपने भाग्यसे उस अग्निसे बच गये और दुर्योधन ने जो पापकर्म विचारा था सो नहीं हुआ अब हम यहांसे जाते हैं क्योंकि हमारे यहां बैठने से तुमको सब राजा जान जायँगे तुम्हारा कल्याण होवे यह कहकर वे दोनों श्रीकृष्ण और बलदेवजी पाण्डवों से बिदा होकर अपने डेरों को चले आये ८। २५ ॥

इति श्रीभाषामहाभारते आदिपर्वणि शताधिकैकनवतितमोध्यायः १९१ ॥

एकसौबानबे का अध्याय।

धृष्टद्युम्न का छिपकर भार्गवशाला में आना और पाण्डवों की शूरताकी बातें सुनकर प्रसन्न होकर राजा द्रुपद के पास जाना ॥

वैशंपायनजी बोले हे राजा जनमेजय ! पांडवों के चले आनेपर धृष्टद्युम्न उनके पीछे २ चला गया और अपने मनुष्यों को चारों ओर ठहराकर आप उस भार्गवशाला के निकट छिप रहा जब सायंकाल हुआ तब भीमसेन आदि चारों छोटे भाई भिक्षा मांगकर लाये और युधिष्ठिर के आगे रखदी कुन्ती उस

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

को लेकर द्रौपदी से बोली कि तू इसमें से जो कुछ बलिकर्म करके भिक्षा देना चाहै सो किसी ब्राह्मण अथवा भूंखे को देदे जो शेष अन्न बचे उसके दो भाग करले एक भाग इस गोरे पुष्ट बलवान् भीमसेन को जो सदैव से बहुत खाताहै देदे और एकभाग में से ६ भाग करके एक एक सबको बांटदे और एक आप लेले यह सुनकर द्रौपदीने बड़ी प्रसन्नता से वैसाही किया और वहां सब परिवारने बैठकर आनन्दपूर्वक भोजन किये इसके पीछे सहदेव कुशा लेआया और उनको बिछाकर सोने के लिये स्थान बनाया और कुशाओंपर मृगचर्म बिछाकर युधिष्ठिर को बीच में करके सब पाण्डव लेट गये उनके शिरहाने की ओर कुन्ती और पैरोंकी ओर द्रौपदी भी सोगई यद्यपि द्रौपदी कुशपर सोई और सब पाण्डवों के पैर उसके लगते रहे परन्तु उसने मनसे भी दुःख न माना और न उन वीर पाण्डवों का अपमान किया १।१० पाण्डव लेटजाने के पीछे युद्ध में व्यूह रचना रथोंका हांकना अस्त्र शस्त्रों के चलाने और गदा तलवार और परश्वधों से युद्ध करनेकी चित्र विचित्र कथायें आपस में कहने लगे धृष्टद्युम्न और उसके सब मनुष्य उन कथाओं को सुनते रहे जब वे पाण्डव कथा कहते २ सोगये तब वह वहांसे रात्रि में राजा द्रुपदके पास उनकी सब बातों को कहने के लिये आया उसको देखकर राजा द्रुपद जो पाण्डवों का कुछ हाल नहीं जानता था बोला कि यह कौन मनुष्यहै जिसने द्रौपदीको जीताहै कहीं कोई शूद्र अथवा वैश्यके पाले तो द्रौपदी नहीं पड़ी कोई श्रेष्ठ ब्राह्मण या क्षत्री होतो अच्छाहै और जो कोई अन्य जाति है तो मेरा अपमान इस प्रकार से होगा जैसे कोई कीचकी भरी हुई लात शिरपर रखदे तू सच बता प्रसन्न क्यों है कहीं अर्जुन से मिलकर तो नहीं आया है क्या राजा पाण्डुके पुत्र अभी जीतेहैं और यह लक्ष्य भेदनेवाला उन्हीं मेंसे तो कोई नहीं है ११।१८॥

इति श्रीभाषामहाभारते आदिपर्वणि शताधिकद्विनवतितमोऽध्यायः १९२॥

एकसौतिरानबे का अध्याय।

धृष्टद्युम्नका राजा द्रुपदसे पाण्डवोंका हाल कहना और राजा द्रुपदका पाण्डवों के पास जाति और कुल पूछनेको अपने पुरोहित को भेजना॥

वैशम्पायनजी बोले हे राजा जनमेजय! धृष्टद्युम्न राजा द्रुपदकी बात को सुनकर बोला कि वह बलवान् पुरुष जिसका स्वरूप देवताओं कासा आंखें बड़ी २ और लाल लालथीं और काला मृगचर्म लिये हुयेथा जिसने लक्ष्य भेद

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कर पृथ्वीपर गिरा दिया था स्वयंवर से द्रौपदी को लेकर ब्राह्मणों सहित इस प्रकारसे चला जाताथा जैसे इन्द्र सब देवता और ऋषियों के साथ जाताहै जब सब राजा क्रोध करके उसके मारने को गये तब उसके पास एक और मनुष्य बड़ा तेजस्वी एक बड़े वृक्षको उखाड़कर उसको अपने हाथमें इस प्रकार से लेकर जैसे यमराज कालदण्ड को लेवें उसके पास खड़ा होगया उन दोनोंने सब राजाओं को शंकित कर दिया और सबके देखते कृष्णा अर्थात् द्रौपदीको लेकर दोनों सूर्य और चन्द्रमाके समान भार्गवशाला में पहुँचे वहां उन दोनों की मा और तीन पुरुष अग्नि के समान तेजस्वी बैठे थे उन्होंने उनको दण्डवत् की और द्रौपदी से भी दण्डवत् करने को आज्ञा दी फिर वहां बैठकर द्रौपदी को अपनी माताको निवेदन करके चार जने भिक्षा को चले गये जब वे भिक्षा लेकर आये तब कृष्णा ने उस भिक्षा में से बलिकर्म करके कुछ ब्राह्मण को दी और शेषको उन सब शूरवीर और उनकी माको परोसकर आप भी खाया भोजन करने के पीछे उन्होंने कुश और मृगचर्म पृथ्वीपर बिछाये और उसपर सबके सब लेट गये कृष्णा उनके पैरोंकी ओर सो रही लेटनेपर वे आपस में अनेक प्रकार की युद्ध और अस्त्र शस्त्र चलाने की बातें कहते रहे मैं उन सब बातों को सुनता रहा उन बातोंसे तो निश्चयही प्रतीत होताहै कि वे क्षत्री हैं शूद्र और ब्राह्मण वैश्य ऐसी बातें कभी नहीं कहते हैं आर धनुष चढ़ाने और लक्ष्य भेदने से भी यही प्रतीत होताहै कि वे क्षत्री हैं मेरी समझ में तो वे निश्चय गुप्त स्वरूप धारण किये हुये पाण्डवही हैं क्योंकि हमने यह भी सुनाथा कि पाण्डव अग्नि से बचकर निकल गये १। १३ यह सुनकर राजा द्रुपद प्रसन्न होगया और पुरोहित को बुलाकर बोला कि तुम भार्गवशाला में जाकर युक्ति से यह बात पूछकर आवो कि द्रौपदीका जीतने वाला पाण्डव है या और कोई मनुष्य है यह सुनकर पुरोहित वहां गया और पाण्डवों की प्रशंसा करके बोला कि राजा द्रुपद इस लक्ष्य भेदनेवाले वीरको देखकर ऐसा प्रसन्न हुआ है कि फूला नहीं समाता है यह द्रौपदी के योग्य वर है और राजा द्रुपद वरदाता है सो वह राजा आपकी जात और कुलको जानना चाहता है आप कृपा करके उसको बताइये और हम सब समेत राजा द्रुपद को प्रसन्न कीजिये राजा पाण्डु राजा द्रुपद का आत्मा के समान प्यारा मित्र था और तभी से राजा द्रुपद की यह इच्छाथी कि मैं इस अपनी कन्या का अपने परम

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मित्र राजा पाण्डु के अर्जुननामी पुत्रके साथ विधिपूर्वक विवाह करदूं सो जो यह काम अब मेरी इच्छाही के अनुकूल हुआ हो तो यह मेरे सुकृतका फल और कुरुवंशके पुण्यका प्रभाव समझना चाहिये पुरोहित को यह कहते हुये सुनकर युधिष्ठिर ने भीमसेन से कहा कि ये राजा द्रुपद के पुरोहित हैं इससे हमारे मान्य हैं इनकी हमको विशेष पूजा करनी उचितहै यह सुनकर भीमसेन ने उस पुरोहितको आदरपूर्वक बैठाया और अर्घ पाद्य आदि देकर उसकी पूजा की उपरान्त युधिष्ठिर ने कहा १४। २२ कि राजा द्रुपद ने अपने धर्मसे द्रौपदी को देना उस मनुष्य को स्वयंवर में कहा था जो धनुष चढ़ाकर लक्ष्य भेदे उसमें कुछ जाति कुल और वंशका विचार नहीं किया था यह वीर राजा की उस प्रतिज्ञा को पूरा करके द्रौपदी को जीत लाया और उसके पीछे सब राजाओं से भी युद्ध करके उसने इसे जीत लिया ऐसी अवस्था में राजा को यह संताप करना किसी प्रकार से उचित नहीं है २३। २५ और द्रुपद की जो कामना है वहभी सिद्ध होगी हम यह कहे देते हैं कि यह कन्या हमारे योग्यहै सिवाय इसके यहभी विचार करो कि मंदबल और हीनजाति और विना अस्त्र जाननेवाले से वह लक्ष्य काहे को भेदा जाता उससे तो धनुष का चढ़ाना भी कठिन था इस बात को समझकर राजा द्रुपद को संताप करना उचित नहीं है युधिष्ठिर यह बात कहही चुकाथा कि इतने में राजा द्रुपद के पास से दूसरा आदमी पाण्डवों को भोजन करने के लिये बुलानेको वहां आया २६। २६॥

इति श्रीभाषामहाभारते आदिपर्वणि शताधिकत्रिनवतितमोऽध्यायः १९३ ॥

एकसौचौरानबे का अध्याय।

राजा द्रुपद का पाण्डवों को रसोई के लिये बुलाना और परीक्षा के लिये सब प्रकार की वस्तु वहां रखवाना पाण्डवोंका वहां जाकर भोजन करना और राजा द्रुपदके शस्त्रोंको देखना॥

वैशम्पायनजी बोले हे राजा जनमेजय! उस दूत ने आकर पांडवों से कहा कि महाराज राजा द्रुपद ने आपके लिये ये सुन्दर रथ भेजे हैं और यह कहला भेजाहै कि बरातियों के लिये रसोई तैयार है हमारे स्थान पर शीघ्र आकर रसोई पावें और विधिके अनुसार कृष्णा का पाणिग्रहण करें यह सुनकर युधिष्ठिर ने पुरोहित को वहां से बिदा कर दिया और एक रथ में आप पांचों भाई और दूसरे में कुन्ती और द्रौपदी बैठकर राजा द्रुपद के स्थान को चल दिये

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पुरोहित के पहुँचनेपर राजा द्रुपद ने उसकी बातको सुनकर पांडवों की परीक्षा के लिये अपने स्थान में अनेक २ प्रकार के फूल बनाई हुई माला, कवच, ढाल, आसन, रस्सी, बीज, गाय, खेती करने की सम्पूर्ण चीजें, पत्थर फोड़ने के सम्पूर्ण शस्त्र और क्रीड़ा की चीजें, सुन्दर २ कवच, बड़े २ खड्ग, सुन्दर २ घोड़ों सहित युद्ध करने के रथ, उत्तम २ धनुष, चित्र, बाण, बरछी, लाठी, तोमर, भुशुण्डी, फरसा, शय्या, आसन, अनेक प्रकार के वस्त्र और लड़ाई की सब सामग्री रखवादीं जब पाण्डव वहां पहुँचे तब कुन्ती को स्त्रियां रनिवास में बड़े आदरपूर्वक लिवा लेगईं और पांडवों को राजा द्रुपद और सब मन्त्री लिवा लाये उनकी सिंहकीसी गति, सर्पराज के फनकी तुल्य लम्बी २ भुजा और मृगचर्म के वस्त्रों को देख २ कर सब प्रसन्न हुये पांडव भीतर जाकर शंकारहित बड़े उत्तम २ आसनों पर बैठ गये और उन आसनों को यह जानकर कि यह बड़े आदमियों के योग्यहैं यत्किंचित् भी विस्मय नहीं किया १। १२ इसके पीछे वहां के दास दासियों ने अनेक २ प्रकार के राजाओं के योग्य व्यञ्जन बनाकर चांदी और सोने के बर्तनों में परोस २ कर उनके सामने लगादिये पांडवोंने स्वादपूर्वक अच्छे प्रकार से भोजन किये और भोजन करके सब चीजों को उल्लंघन करके उस स्थान में घुस गये जहां राजा द्रुपदने शस्त्र रखवादिये थे यह देखकर राजा द्रुपद अपने पुत्र और मन्त्रियों सहित बहुत प्रसन्न हुआ और कुन्ती और युधिष्ठिर के पास जाकर पूंछनेलगा १३। १५॥

इति श्रीभाषामहाभारते आदिपर्वणि शताधिकचतुर्नवतितमोऽध्यायः १९४॥

एकसौपंचानबे का अध्याय।

पांडवोंका राजा द्रुपदसे यह कहना कि हम पांडव हैं राजा द्रुपदका प्रसन्न होकर उनको राज्य मिलने के लिये यत्न करनेकी प्रतिज्ञा करना और युधिष्ठिर का राजा द्रुपदसे द्रौपदीका विवाह पांचों पांडवों के साथ करने को कहना॥

वैशम्पायनजी बोले हे राजा जनमेजय! राजा द्रुपद युधिष्ठिर को निकट बुलाकर ब्राह्मणसम्बन्धी व्यवहार से उसके साथ बर्ताव करके पूछने लगा कि मैं यह बात किसप्रकार से जानूं कि आप ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य या शूद्र कौन हैं या आप कोई देवताहैं जो ब्राह्मण का वेष बनाकर द्रौपदी के लिये यहां आये हैं मुझको बड़ा संदेह होरहा है सिवाय आपके और कोई मेरे इस सन्देह को दूर नहीं करसक्ता है इससे आप सौगन्दपूर्वक सत्य २ कहिये राजाओंके निकट

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सत्यही शोभा देताहै आपके सत्य कहनेपर मैं प्रसन्न हूंगा और आपको जान कर यथोचित विधि से कृष्णा का विवाह कर दूंगा १।७ यह सुनकर युधिष्ठिर बोले कि हे राजा द्रुपद! तुम व्यग्रचित्त मत हो तुम्हारा मनोरथ सिद्ध हो गया हम क्षत्री हैं और राजा पांडुके पुत्र हैं कुन्ती हमारी माताहै मैं सबसे बड़ा हूं और मेरा नाम युधिष्ठिरहै और ये दोनों जिन्होंने द्रौपदीको जीताहै भीमसेन और अर्जुन नाम मेरे छोटे भाई हैं और द्रौपदी के पास जहां कुन्ती बैठी है वहां इन दोनों से छोटे भाई नकुल और सहदेव बैठे हैं आपसे मैंने यह सच २ कहा है आप अपने चित्तके दुःख को अब दूर कीजिये आप हमारे बड़े और रक्षक हैं और आपकी बेटी अच्छे कुल में प्राप्त हुई है ८।१२ वैशम्पायनजी बोले हे जनमेजय! राजा द्रुपद युधिष्ठिर की बात को सुन प्रेम में आगये और गद्गदवाणी होने के कारण से कुछ उत्तर न देसके थोड़ी देर में जब प्रेमका प्रवाह कुछ रुका तब पूछने लगे कि तुम नगर से क्यों निकल गये थे यह सुन कर युधिष्ठिर ने सब पूर्व वृत्तान्त कह सुनाया इसपर राजा द्रुपदने धृतराष्ट्र की बहुत निन्दा की और युधिष्ठिर को धैर्य देकर बोले कि हम तुम्हारा राज्य मिलने का यत्न करेंगे १३।१७ इसके पीछे युधिष्ठिर आदि सब भाई अपनी माता और द्रौपदी सहित राजा द्रुपद के बताये हुये घरमें चले गये और वहां सुखपूर्वक रहने लगे राजाने उनके खाने पीने आदि का सब प्रबन्ध कर दिया इसके पीछे राजा द्रुपदने एक दिन युधिष्ठिरसे कहा कि अब कोई अच्छा दिन देखकर अर्जुन का विवाह द्रौपदी के साथ होजाना चाहिये यह सुनकर युधिष्ठिर बोले कि मेरा भी विवाह नहीं हुआ है पहले मेरे साथ विवाह होना चाहिये यह सुनकर राजा द्रुपद बोला कि तुमहीं अपने साथ विवाह करलो या और जिस किसी के साथ उचित जानो विवाह कर दो युधिष्ठिर बोले कि मैं और भीमसेन दोनों कारे हैं यद्यपि द्रौपदीको अर्जुन ने जीता है परन्तु हमारा सबका नियम यह है कि जो कोई रत्न वस्तु लाते हैं उसको हम सब भाई मिलकर भोगते हैं उस नियम के विपरीत हम नहीं कर सक्ते इससे यह द्रौपदी हम सब की पटरानी होनी चाहिये इसका पाणिग्रहण हम सब क्रमपूर्वक विधि के अनुसार अग्नि साक्षी करके करेंगे १८।२६ यह सुनकर द्रुपद बोला कि हमने एक राजा की बहुतसी पटरानी होना तो देखा है परन्तु एक स्त्री के बहुत से पति होना कहीं नहीं सुनाहै यह लोक और धर्मविरुद्ध बात है तुम तो ज्ञानी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

और बड़े धर्मात्मा हो तुम ऐसी बात क्योंकर कहते हो इस समय तुम्हारी बुद्धि कहां है युधिष्ठिर बोले कि धर्मकी गति बड़ी सूक्ष्म है हम उसको नहीं जानते हैं हम तो पहले पुरखाओंके मार्गपर चलते हैं हम कभी झूंठ नहीं बोलते और न हमारी बुद्धि अधर्म में है हमारी माताकी आज्ञा इसीप्रकार से है हमने यह बात धर्मही के अनुसार कही है आप इसमें शंका और विचार न कीजिये यह सुन कर द्रुपद बोला कि अच्छा आज तुम और कुन्ती और मेरा पुत्र धृष्टद्युम्न तीनों इस बात का निश्चय करो कि यह काम करने योग्य है या नहीं प्रातःकाल फिर जैसी सलाह होगी वैसा करेंगे वैशम्पायनजी बोले हे राजा जनमेजय ! जिस समय वे तीनों विचार करने बैठे उसी समय दैवइच्छासे वहां व्यासजी महाराज आन पहुँचे २७। ३३ ॥

इति श्रीभाषामहाभारते आदिपर्वणि शताधिकपंचनवतितमोऽध्यायः १९५ ॥

एकसौछानबे का अध्याय।

व्यासजीका पांडवों के पास आना राजा द्रुपदका व्यासजीसे यह पूंछना कि द्रौपदीका विवाह पांडवोंसे होना धर्म है या अधर्म व्यासजीका उन सबसे पूंछना कि तुम लोगों की समझ में क्या आताहै ॥

वैशम्पायनजी बोले हे राजा जनमेजय ! व्यासजी को देखकर सब पांडव और राजा द्रुपद आदिने खड़े होकर दंडवत् कर सुंदर आसनपर बड़े आदरपूर्वक बैठाला और व्यासजी की आज्ञा पाकर आप सब भी बड़े मोलवाले आसनों पर बैठ गये इसके पीछे राजा द्रुपद एक क्षण तो और २ बातें करता रहा उपरान्त उसने व्यासजीसे पूंछा कि महाराज द्रौपदी बहुत मनुष्यों की स्त्री क्योंकर हो सक्ती है आप ठीक २ ऐसी बात कहिये जिसमें अधर्म न होवे यह सुनकर व्यास जी बोले कि हे राजा ! यह धर्म बड़ा गूढ़ लोक और वेद के विरुद्ध है पहले तुम सब अपना २ मत कहो यह सुनकर पहले द्रुपदने कहा कि मैं तो इस कर्म को लोक और धर्मके विपरीत जानता हूं कहीं ऐसा नहीं हुआ है कि एक स्त्री बहुतसे मनुष्यों की पत्नी हुई हो और न किसी महात्माने ऐसा पहले किया है यह सर्वथा अधर्म है और विद्वानों को अधर्म कभी न करना चाहिये १। ८ इससे मेरी इच्छा इस कर्मके करने की यत्किंचित् भी नहीं है उसके पीछे धृष्टद्युम्न ने कहा कि महाराज जो बड़ा भाई अच्छे चलनका होता है वह छोटे भाई की स्त्री को कभी कुदृष्टि से नहीं देखताहै और धर्मकी गति तो बड़ी सूक्ष्म है हम

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उसको नहीं जानते हैं और न धर्मके अनुसार कोई बात निश्चय कहसक्ते हैं यह बात किसी प्रकार से मेरे मन में नहीं आतीहै कि द्रौपदी का विवाह पांचों पांडवों से होवै ६। १२ यहसुनकर युधिष्ठिर बोले कि मैंने झूंठ नहीं कहा है और न मेरी बुद्धि किसी प्रकारसे अधर्ममें है मेरी समझमें तो हम पांचोंके साथ विवाह होना धर्मके विपरीत नहीं है हमने पुराणों मेंभी सुनाहै जटिला नाम गौतम कुल की ऐसी धर्मात्मा स्त्रीके साथ सात ऋषियोंका विवाह हुआ था और वार्क्षी नाम एक ऋषिकी पुत्रीसे प्रचेता नाम दश भाइयों से विवाह हुआ था इसके सिवाय शास्त्रकी रीतिसे सब गुरुओंके वचन धर्मरूपहैं और गुरुओं में माता परमगुरु होतीहै सो हमसे हमारी माताने आज्ञा दी कि भिक्षा की तरह सब भाई इसको भोगो इस कारण से मैं पांचोंके साथ विवाह होनेका परमधर्म समझताहूं १३। १७ यह सुनकर कुंती बोली कि निस्संदेह मैंने आज्ञा दीथी युधिष्ठिर ने सच कहा है मैं अधर्म और मिथ्या बोलने से बहुत डरतीहूं यह सुन कर व्यासजी बोले कि हे कुंती! तू धर्मसे मुक्त होगी यह धर्म सनातनहै मैं इस धर्मको सब के सम्मुख नहीं कहूंगा राजा द्रुपदसे एकान्तमें बताऊंगा युधिष्ठिर सच कहताहै मैं इस धर्मके रचेजाने का कारण और सनातन होने का हाल एकान्त में कहूंगा वैशम्पायनजी बोले हे राजा जनमेजय! व्यासजी यह कह कर राजा द्रुपद का हाथ पकड़कर महल के भीतर लेगये पांचों पांडव कुन्ती और धृष्टद्युम्न भी वहां चलेगये और व्यासजी उन सबको एक स्त्री का बहुत पुरुषों के साथ विवाह होने का धर्म सुनाने लगे १८। २३॥

इति श्रीभाषामहाभारते आदिपर्वणि शताधिकषट्नवतितमोऽध्यायः १९६॥

एकसौसत्तानबे का अध्याय।

व्यासजीका राजा द्रुपद से पांडवोंके पूर्वजन्म की कथा कहकर राजा द्रुपदको दिव्यदृष्टि देकर पांडवों के पूर्वरूपको दिखाना और उसे द्रौपदीका विवाह पांचों पांडवों के साथ करने का उपदेश करना॥

व्यासजी बोले हे राजा द्रुपद! एक समय देवताओं ने नैमिषारण्य में सत्र यज्ञ कियाथा उस यज्ञ में यमराज को यज्ञके पशुओं के मारने के कामपर नियत किया था सो यमराज के बहुत दिनों तक दीक्षित रहने के कारण से किसी संसारी जीवकी मृत्यु नहीं हुई और इस कारण से सब संसारके मनुष्य आदि बहुत बढ़ गये उनकी बढ़ोतरीसे चन्द्रमा इन्द्र वरुण कुबेर साध्य रुद्र वसु

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अश्विनीकुमार आदि सब देवता भयभीत होकर ब्रह्माजी के पास गये और कहने लगे कि महाराज हमको मनुष्यों की वढ़ोतरी से बड़ा भय होता है ब्रह्माजी बोले कि तुम क्यों भय करतेहो तुमतो अमरहो तुम्हें मनुष्यों का क्या भय है यह सुनकर देवता बोले कि महाराज अब मनुष्यभी न मरने से अमर होनेकी तुल्य होगये हैं इससे देवता और मनुष्यों में कुछ भेद नहीं रहा यह सुनकर ब्रह्माजी बोले कि आज कल यमराज देवताओंके यज्ञमें दीक्षित होने के कारण से मनुष्यों को नहीं मारताहै सत्रयज्ञ के समाप्त होने पर वह मनुष्यों का नाश करैगा और तुम्हारे पराक्रम से युक्त होने पर मनुष्यों का पराक्रम कुछ न रहैगा यह सुनकर सब देवता प्रसन्न होकर वहां गये जहां और देवता यज्ञ कर रहे थे और वहां जाकर बैठ गये उस समय वे देवता गंगाजी में कमल बहते हुये आते देखकर बड़े विस्मित हुये और कारण जानने के लिये इन्द्र उस जगह गया जहांपर से गंगाजी निकली हैं वहां इन्द्र क्या देखताहै कि एक स्त्री गंगाजी में स्नान कररही है और रोती है जो आंसू उसका गंगाके जल में गिरता है वही सुनहरा कमल होजाता है यह देखकर इन्द्रको बड़ा आश्चर्य हुआ और उसने उस स्त्री से पूछा कि तू कौन है और किस कारण से रोती है सच कह यह सुनकर वह स्त्री बोली कि मैं आगे २ चलती हूं तू मेरे पीछे २ चला आ आगे चलके तुझे मेरे रोनेका कारण मालूम होजायगा यह सुनकर इन्द्र उस स्त्री के पीछे २ चलागया और थोड़ी दूर जाकर देखता क्या है कि उस पहाड़पर एक दर्शनीय पुरुष सिद्धासन पर बैठा हुआ एक स्त्रीके साथ पांसों से क्रीड़ा कररहा है उसको देखकर इन्द्र बोला कि मैं देवताओं का राजाहूं और तीनोंलोक मेरे वश में हैं इन्द्रकी इस अभिमानयुक्त बातको सुनकर उस देवता ने मुसकराकर इन्द्रकी ओर देखा इन्द्र उसके देखतेही जड़की तुल्य खड़ा का खड़ा रहगया इसके पीछे जब वह क्रीड़ा करचुका तब उस रोती हुई स्त्रीसे बोला कि इसको हमारे पास ला जिससे इसमें फिर कुछ अहंकार न रहै उस स्त्री ने वैसाही किया और इन्द्र उस देवता के छूतेही पृथ्वीपर गिरपड़ा यह देखकर वह देवता इन्द्रसे बोला कि फिर ऐसा मत करियो तू बड़ा बलवान् है इससे इस पहाड़ को हटाकर अब इसके विवर में होकर भीतर चलाजा यहां चार और पुरुष तेरी समान हैं यह सुनकर इन्द्र पहाड़को हटाकर भीतर चला गया और वहां चार अपने तुल्य तेजस्वी पुरुषोंको देखकर यह विचारकर डरने लगा कि

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कहीं मेरी भी यही गति न हो १।२० इसके पीछे उस गिरीश देवताने इन्द्रसे क्रोध करके कहा कि तुम भी इसी गुफा में रहो तुमने मेरा अपमान किया है यह सुनकर इन्द्र डरके मारे इस प्रकार से कांपने लगा जैसे हवासे पीपल का पत्ता हिलता है और दोनों हाथ जोड़कर बोला कि महाराज आप संपूर्ण भुवन के द्रष्टाहैं यह सुनकर वह देव हँसकर बोला कि तेरासा स्वभाव रखने वाले प्रसाद पाने के योग्य नहीं हैं इन चारों ने भी पहले ऐसाही किया था इस से तू भी इस गुफा में रह २१।२४ और तुम सब पृथ्वी पर जन्म लेकर बहुत से मनुष्यों का नाश करके फिर कर्मानुसार इन्द्रलोकमें आवोगे यह सुनकर पहला इन्द्र बोला कि महाराज हम पृथ्वीपर जाकर जन्म लेंगे और दिव्य अस्त्रों से मनुष्योंका नाश करके फिर इन्द्रलोकको चले आवेंगे परन्तु धर्म वायु इन्द्र और अश्विनीकुमार देवता हमारे जनक होवें यह सुनकर पांचवां इन्द्र बोला कि मुझको स्वर्गमें कुछ कामहै इससे मेरा वीर्य पृथ्वी पर उत्पन्न होगा इसके पीछे उस देवने विश्वभुक् १ भूतधाम २ शिव ३ शांति ४ और तेजस्वी ५ इन पांचों इन्द्रों को जिनमें से पहले चारों बहुत दिनों से उस गुफामें बन्दथे यथेष्ट वरदान दिया और उस रोती हुई स्त्रीसे कहा कि तू भी पृथ्वीपर जन्म लेकर इन पांचोंकी स्त्री होगी इसके उपरांत वह देव श्रीनारायण के पास जो अज अनन्त अप्रमेय अव्यक्त और विश्वरूप हैं गये और उनसे सब हाल कहा नारायण ने भी उसको अंगीकार किया और अपने शरीर से दो रोम एक काला और दूसरा श्वेत उखाड़कर देदिये वह दोनों रोम यदुकुल में रोहिणी और देवकीनाम दोनों वसुदेवजीकी स्त्रियोंके गर्भ में आकर बसे और पृथ्वीपर जन्म लिया श्वेत रोमसे बलदेवजी और कालेसे कृष्णचन्द्र उत्पन्न हुये और उन पांचों इन्द्रों ने कुन्तीके जन्म लिया और ये पांचों पांडव कहलाये उनमें से पांचवें इन्द्रके वीर्य से अर्जुन उत्पन्न हुआ है और वह स्त्री द्रौपदी हुई है नहीं तो स्त्री का अग्निकुण्ड से उत्पन्न होना क्या आवश्यक था देखो उसकी गंध चार कोसतक जाती है इस कारण से यह द्रौपदी इन पांचों पांडवों की पहिले से स्त्री है मैं तुमको दिव्यदृष्टि देताहूं उससे तुम इन पांचों पांडवोंके पहिले रूप को देखलो वैशम्पायनजी बोले हे राजा जनमेजय! व्यासजीने उक्त कथा कहकर राजा द्रुपद को अपने तपके बलसे दिव्यदृष्टि दी और उसके प्रभाव से वह पांडवों के पूर्वरूपको देखनेलगा कि वे पांचों इन्द्र उस देवके सहित

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

विराजमान हैं स्वरूप जिनके दिव्य वर्ण अग्नि और सूर्य के समान सुनहरा मुकुट और माला धारण किये हुये हैं और तेज उनका सूर्य वसु और रुद्र के तुल्य है और उनके समीप वह अत्यन्त सुन्दरी स्त्री जिसका प्रकाश चन्द्रमा और सूर्य के समान है बैठी हुई है राजा यह देखकर विस्मित हुआ और व्यास जी के चरणों को छूकर अति प्रसन्न होकर बोला कि महाराज यह बात आप की कुछ आश्चर्य की नहीं है आप ऐसेही हैं यह सुनकर व्यासजी बोले कि उस स्त्रीका हाल इस प्रकारसे है कि एक ऋषिके एक कन्या थी उसका विवाह तो होगया था परन्तु पतिका उसने कुछ सुख नहीं देखा था थोड़ीही उमरमें विधवा होगई थी उसने महादेवजीका तप किया महादेवजीने उससे प्रसन्न होकर कहा कि वरदान मांग तब उसने कहा कि महाराज मैं सब गुणोंके युक्त पति चाहतीहूं महादेवजी बोले कि अच्छा तेरे पांच पति होंगे यह सुनकर वह बोली कि महाराज मैं तो एकही पति चाहती हूं तब महादेवजीने कहा कि तैंने मुझ से पांच बार कहा कि पति दो २ इससे मैंने तुझको पांच पति होनेका वरदान दिया है अब मेरा वाक्य अन्यथा नहीं हो सकता दूसरे जन्म में तुझे सब गुणयुक्त पांच पति मिलेंगे इससे हे द्रुपद! यह कन्या तुम्हारे बड़ा तप करके देवस्वरूपिणी उत्पन्न हुई है इसके पांच पतिका होना पहले से ब्रह्माजी ने निर्मित किया है इस बातको समझकर तुम अपने मनके संदेहको छोड़कर इसका विवाह पांचों पांडवों से करदो २५। ५३॥

इति श्रीभाषामहाभारते आदिपर्वणि शताधिकसप्तनवतितमोऽध्यायः १९७॥

एकसौअट्ठानबे का अध्याय।

राजा द्रुपदका पांचों पांडवों से द्रौपदीका विवाह करना और बहुतसा दान दहेज देना॥

वैशम्पायनजी बोले हे राजा जनमेजय! राजा द्रुपद व्यासजी के उक्त वचनों को सुनकर बोला कि महाराज आपके वचनों को सुनने के पहलेही हमने विचार तो पांचों के साथ विवाह करने का कर ही लिया था अब सब संशय दूर होगया दैवका रचा हुआ अमिट है कृष्णा ने तो एकही पति के लिये तप किया था परन्तु भावी के अनुसार उसके मुंह से पांच बार महादेवजी के सामने यह निकला कि मुझको पति मिले सो महादेवजी का निर्मित वाक्य कौन मेट सकता है यह कन्या इन पांचों की पहिलेही से स्त्री है इसमें

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मेरा क्या दोष है अब इसका विवाह इन पांचों के साथ होजाना चाहिये यह सुनकर व्यासजी बोले कि आज का दिन बहुत श्रेष्ठ है चन्द्रमा आज बली है आजही विवाह होजाना अच्छा है यह सुनकर द्रुपद ने सम्पूर्ण सामग्री मँगवाकर द्रौपदी को सुन्दर २ वस्त्र और आभूषण पहराये और पांडवों को सुन्दर वस्त्र कुंडल और अन्य आभूषण पहराकर द्रौपदी का पाणिग्रहण करने के लिये अभिषेक किया उस समय उस विवाहके आनन्दको देखने के लिये सब मन्त्री और मुख्य २ पुरवासी वहां इकट्ठे होगये और राजा का स्थान उस समय उन मनुष्यों और बहुत से रत्न और मणियों के रक्खे जाने के कारण से ऐसा प्रकाशित दीखने लगा जैसा आकाश तारागणों के उदय होने से मालूम होता है १। ६ इसके पीछे धौम्य ऋषिने वेदी बनाकर उस पर विधि के अनुसार अग्नि प्रज्वलित करके वेद के मंत्रों से हवन किया और युधिष्ठिर को द्रौपदी का पाणिग्रहण कराके उन दोनों से अग्नि की प्रदक्षिणा कराई इसीप्रकारसे क्रमके अनुसार एक २ दिनमें एक २ पांडवका विवाह द्रौपदी से किया गया विवाह होजाने पर नारदजी ने वहां आनकर कहा कि द्रौपदी पांच दिन तक कन्याही रही इसके पीछे राजा द्रुपद ने प्रत्येक पांडव को सौ सौ रथ जिनमें चार २ घोड़े और सुनहरी लगामें लगी थीं सौ सौ बड़े २ हाथी जिनपर अम्बारी रक्खी हुईथीं सौ सौ दासी जो सब गहने और वस्त्र पहिने हुईथीं और बड़े मोलके सुन्दर वस्त्र और बहुत प्रकारके द्रव्य दहेज में दिये पांडव उस लक्ष्मी की तुल्य स्त्री और बहुतसे धनको पाकर आनन्दपूर्वक उस द्रुपदके नगर में विहार करने लगे १०। १७॥

इति श्रीभाषामहाभारते आदिपर्वणि शताधिकअष्टनवतितमोऽध्यायः १९८॥

एकसौनिन्नानबे का अध्याय।

कुन्तीका द्रौपदीको आशीर्वाद देना और श्रीकृष्णजीका पांडवोंके पास बहुतसे हाथी घोड़े और धन आदि भेजना॥

वैशम्पायनजी बोले कि हे राजा जनमेजय! पांडवोंसे संबंध होनेपर राजा द्रुपद देवताओंसे भी निर्भय होकर रहने लगा और द्रुपदकी दीहुई दासियां कुन्ती के पास गईं और अपना २ नाम बता २ कर उसके पैरों पड़ने लगीं इस के पीछे द्रौपदीने जाकर कुन्तीको दण्डवत् की और चरण छूकर हाथ जोड़कर उसके सन्मुख खड़ी होगई कुन्ती उस पुत्रवधूको देखकर आशीर्वाद देने लगी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कि जैसे इन्द्राणीकी इन्द्रसे स्वाहाकी अग्निसे रोहिणीकी चन्द्रमा से दमयंती की नलसे भद्राकी कुबेर से अरुन्धती की वशिष्ठसे और लक्ष्मी की नारायण से प्रीति है उसी प्रकारसे तेरी प्रीति अपने पतियों से होवे तेरे संतानहो परमेश्वर तेरी आयु बड़ी करै तू अच्छे २ सुख पावै और पतिव्रता धर्मसे रहै तेरी उमर वृद्ध बालक गुरु और अतिथि का पूजन करते व्यतीत होवे इस कुरुजांगल देशमें तेरा अभिषेक राजाके साथ होवै और अपने पतियों से जीती हुई पृथ्वी के संपूर्ण रत्नोंसे युक्त होकर सब सुखोंको भोगे और पतियों के साथ अश्वमेधादि यज्ञ करके सौ वर्ष तक सुख पावै वैशम्पायनजी बोले हे राजा जनमेजय! जब पांडवोंका विवाह उक्त प्रकारसे होचुका तब श्रीकृष्णजीने उनके पास वैडूर्यमणि से जटित सोने के आभरण, नाना प्रकारके बहुमूल्य वस्त्र, कम्बल, मृगचर्म, शयनासन, सवारियां, वैडूर्यजटित सैकड़ों बर्तन, स्वरूपवान् और चतुर २ दासियां, शिक्षित बहुतसे हाथी, उत्तम २ घोड़े जो रेशमी वस्त्रोंसे अलंकृतथे और बहुतसे सुवर्णपात्र भेज दिये और युधिष्ठिर ने उन सबको बड़ी प्रीतिपूर्वक ग्रहण किया १। १९॥

इति श्रीभाषामहाभारते आदिपर्वणि शताधिकनवनवतितमोऽध्यायः १९९॥

दोसौ का अध्याय।

दुर्योधन आदि सब राजाओंको यह मालूम होना कि द्रौपदी का विवाह पांडवोंसे हुआहै यह जानकर सब राजाओंका लौट जाना और दुर्योधनको बड़ी चिंता होनी॥

वैशम्पायनजी बोले हे राजा जनमेजय! पांडवों के विवाह होने पर सब राजाओं को जो उस स्वयंवर में आयेथे विश्वासी दूतों से मालूम हुआ कि द्रौपदीका विवाह पांडवोंसे हुआहै जिस मनुष्यने धनुष चढ़ाकर लक्ष्य भेदाथा वह अर्जुन था और जिसने शल्यको उठाकर देमारा और एक बड़ा वृक्ष उखाड़कर सब मनुष्योंको भयभीत कर दियाथा वह भीमसेन था राजा लोग इस बातको सुनकर और यह जानकर कि पांडव स्वयंवर में ब्राह्मणोंका वेष धरके आयेथे यह कह कहकर आश्चर्य करने लगे कि हमने तो सुनाथा कि पांडव कुंती सहित अग्निमें जल गये और पांडवोंका दूसरा जन्म होना मानकर पुरोचनकी कीहुई कृत्यको निष्फल समझकर धृतराष्ट्र और भीष्मजीकी निंदा करने लगे और वहांसे अपने २ घरको चले गये १।७ राजा दुर्योधन अर्जुनका विवाह द्रौपदीके साथ होना देखकर बड़ा दुःखी हुआ और लज्जासहित अपने

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भाइयों और कर्ण दुश्शासन कृपाचार्य अश्वत्थामा और शकुनी सहित घरको लौट चला राहमें दुश्शासन ने कहा कि किसीने यह जाना नहीं कि वह अर्जुन है सबोंको यही ज्ञात हुआ कि कोई ब्राह्मणहै नहीं तो वह द्रौपदीको कभी नहीं पासक्ताथा पुरुषका यत्न निरर्थकहै प्रारब्धही मुख्यहै इसप्रकार से सब कौरव म्लानचित्त पुरोचनकी निन्दा करते और पुरुषके पौरुषको पांडवोंके बचजाने के कारण से धिक्कार देते हुये अपने नगर में पहुँचे और पांडवों को जीता हुआ राजा द्रुपद और उसके धृष्टद्युम्नादिक शूरवीर पुत्रोंकी सहायता युक्त जानकर अपने मनोरथको असिद्ध समझकर बड़े दुःखी और भयभीत हुये ८।१४ विदुर जी उस पांडवोंके विवाहका हाल सुनकर बहुत प्रसन्न हुये और राजा धृतराष्ट्र के पास जाकर कहने लगे कि प्रारब्धसे कौरवकुलकी वृद्धि हुई यह सुनकर धृतराष्ट्र यह समझे कि दुर्योधनने द्रौपदीको जीताहै यह समझकर वह कहने लगा कि यह भाग्यसे ऐसा हुआहै अब तुम द्रौपदी सहित दुर्योधन को हमारे पास लाओ और बड़े मोल के वस्त्र मँगवाओ हम द्रौपदी को देंगे १५।१६ यह सुनकर विदुरजी बोले कि द्रौपदीका विवाह पांडवोंसे हुआहै और पांडव द्रुपदके यहां द्रुपद आदिसे पूजित रहतेहैं और उनका मेल और राजाओं से जो द्रुपदके सम्बन्धी हैं होगया है २०।२१ यह सुनकर धृतराष्ट्र बोले कि पांडव जैसे पांडुके पुत्रहैं वैसेही मेरे भीहैं मैं उनको दूसरा नहीं जानताहूं पांडवों के कुशली और मित्रवत् होनेका यह कारणहै कि उनके संबंधी भी शूरवीर और बहुतसेहैं ऐसा कौनसा राजा होगा जो द्रुपद ऐसे राजासे संबन्ध करके अपने ऐश्वर्य को न चाहै यह सुनकर विदुरजी बोले कि तुम्हारी ऐसीही बुद्धि सौवर्ष तक रहै उसी समय विदुरजीके चलेजाने पर दुर्योधन और कर्ण धृतराष्ट्र के पास आये और कहने लगे कि हम आपके दोषको विदुरजीके सामने नहीं कहसकेथे आपकी क्या इच्छा है जो आप शत्रुकी वृद्धिको अपनी वृद्धि मानते हैं और उनकी स्तुति करते हैं जो काम करनेका है उसको तो आप करते नहींहैं यह समय शत्रुके बलके नाश करनेका है और ऐसा यत्न करना चाहिये जिससे शत्रु हमको भाई सेना और पुत्रों सहित आकर न मारने पावें २२।३०॥

इति श्रीभाषामहाभारते आदिपर्वणि द्विशततमोऽध्यायः २००॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दोसौएक का अध्याय।

राजा धृतराष्ट्रका दुर्योधन और कर्णसे पांडवोंके निग्रहका मंत्र पूंछना और दुर्योधनका अपनी मति के अनुसार उपाय बताना ॥

दुर्योधन और कर्ण की बात को सुनकर धृतराष्ट्र बोले कि मेरी भी यही इच्छा है जो तुम कहते हो परन्तु मैं इस कारण से पांडवोंकी बड़ाई कर देता हूं कि विदुर मेरे अंतःकरण के अभिप्रायको किसी प्रकारसे न जानने पावें अब तुम दोनों अपनी सलाह बताओ कि क्या करना उचित है यह सुनकर दुर्योधन बोला कि या तो कोई उपाय ब्राह्मणोंसे ऐसा कराया जावे जिससे पांडवों में आपस में फूट होजावे या राजा द्रुपद को पुत्र और मंत्रियों सहित धनका लोभ देकर ऐसी बात रची जावे जिससे राजा द्रुपद पांडवों को त्याग करदे अथवा यह नहीं तो उनसे यहां आने और रहने में बहुत से अवगुण कह २ कर उनके चित्त को ऐसा यहां से उचटा दे कि वे वहीं रहें यहां आने को कभी मन न करें और जो इन बातों में से कोई न हो सके तो ऐसा उपाय रचा जावे जिससे पांडव द्रौपदी को त्याग दें या द्रौपदी पांडवों से आपस में भेद करादे और जो यह भी न हो तो किसी उपायसे भीमसेन मरवा डाला जावे वही उन सबों में बड़ा बलवान् है युधिष्ठिरादिक उसी के आश्रय रहते हैं और उसी के बल भरोसे पर हमको कुछ नहीं समझते हैं उसके मरने पर उनमें से फिर कोई राज्य पाने का यत्न नहीं करैगा यद्यपि अर्जुन बड़ा शूरवीर है परन्तु भीमसेन के पृष्ठरक्षक रहनेपर ही वह अजेय है विना भीमसेन के वह कर्ण का चतुर्थांशभी नहीं है इससे भीमसेनके मरनेपर पांडव बहुत दुर्बल होजायँगे और हमको सबल जानकर फिर राज्य पाने का यत्न नहीं करेंगे अथवा यह कीजिये कि कर्ण को भेजकर उनको यहां बुला लीजिये और उनके आने और आज्ञा में रहनेपर कोई यत्न उनके निग्रहका किया जावे और जो यह भी समझमें नहीं आवे तो बहुत स्वरूपवती स्त्रियां पांडवों के पास भेजकर उनके चित्तोंको चलायमान करके ऐसा कीजिये जिससे द्रौपदी उनमें प्रीति न करै इन सब बातोंमें से जौनसी आपको हितकारी समझ पड़े उसका यत्न शीघ्र करना चाहिये क्योंकि जबतक उनकी प्रीति राजा द्रुपद से गाढ़ी नहीं होगी तभी तक हम उनको मार सकेंगे विशेष प्रीति होजाने पर कोई उपाय नहीं चलेगा बुरी या भली जैसी कुछ मेरी समझ थी उसके अनुसार मैंने कहा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अब आगे कर्ण से पूंछना चाहिये कि तेरी क्या सलाह है १।२०॥

इति श्रीभाषामहाभारते आदिपर्वणि द्विशताधिकप्रथमोऽध्यायः २०१॥

दोसौदो का अध्याय।

कर्ण का पांडवों के निग्रह के लिये युद्धकी सलाह देना॥

कर्ण बोला हे दुर्योधन! तेरी सलाह हमारी मतिसे ठीक नहीं है पांडव अब उपाय से नहीं मारे जासक्ते तू तो उनके मारनेका उपाय कर चुका है परन्तु तेरा कोई उपाय नहीं चला जब वे पांडव बालक और सहायरहित थे और तेरे पास रहतेथे तब तो तू उनका कुछ करही न सका अब वे परदेशमें रहते हैं और उनके पक्षपर भी बहुतसे राजा हैं उनका तू उपायसे कुछ नहीं कर सक्ताहै उनका प्रारब्ध ऐसा है कि उनको तू दुःख नहीं पहुँचा सक्ता और उनमें परस्पर फूट होना भी असंभव है क्योंकि उन पाँचोंकी एकही स्त्री है और द्रौपदी भी उनसे कभी विपरीत नहीं होगी क्योंकि बहुत पति होना स्त्रियों की परम इच्छा रहती है सो उसको बहुत पति मिले हैं और पति भी सब स्वरूपवान् गुणवान् और शूरवीर हैं वह उनको काहे को छोड़ेगी और राजा द्रुपद आर्यव्रत है धनका लोभी नहीं है वह पांडवों को कभी नहीं छोड़ैगा और द्रुपद के पुत्रभी उसी प्रकारके हैं और पांडवों से बड़ी प्रीति रखते हैं इससे इन उपायोंमें से कोई उपाय चलना संभव नहीं है १।१० इससे जो मैं कहता हूं सो करो अभी तक हमारा पक्ष सब प्रकारसे बड़ा है हम उनको जीत सक्ते हैं और वे हमसे सब तरहसे न्यून हैं इससे जब तक पांडव अपनी जड़ न जमाने पावें और उनकी सहायताके लिये द्रुपद अपनी सेना वाहन इष्टमित्र और कुटुम्बियोंको न जोड़ने पावे और कृष्णजी बड़ी भारी यादवों की सेना लेकर उनकी सहायताको न आने पावें तबतक हम यहां से चढ़कर चल दें और हाथों हाथ द्रुपद को जीतकर पांडवों को मार लें श्रीकृष्णजी पाण्डवों के लिये राज्य धन और नाना प्रकार के भोग भी त्याग सक्ते हैं अर्थात् पाण्डवों के लिये कोई ऐसा पदार्थ नहीं है जिसको वह अदेय जानते हों ११।१६ देखो भरतजी ने पराक्रम से पृथ्वी को जीता और इन्द्रने पराक्रमही से तीनों लोक पाये हैं पराक्रमही शूरवीरोंका धर्म है और क्षत्रियों के लिये श्रेष्ठ पदार्थ है इससे यहां से चलकर द्रुपद को जीतकर पराक्रमही से पाण्डवों को पकड़कर यहां लेआवें साम दाम और भेद से उन का निग्रह होना किसी प्रकारसे सम्भव नहीं है पाण्डवोंको पराक्रम से पकड़ने

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पर तुम अकंटक होकर राज्य करना इसके सिवाय मेरी समझमें दूसरा उपाय नहीं देख पड़ताहै वैशंपायनजी बोले हे राजा जनमेजय! यह सुनकर धृतराष्ट्रने कर्णकी बड़ाई की और कहा कि तू बड़ा शूरवीर और अस्त्रवेत्ता है क्यों न ऐसे कहै अच्छा अब तुम दोनों भीष्मजी विदुरजी और द्रोणाचार्यसे मन्त्रकरके ऐसी बात विचारो जिससे हमारे सुखका उदय हो यह कहकर धृतराष्ट्रने उन तीनोंको बुलवाया और सब वृत्तान्त कहकर अपनी २ सलाह देनेको आज्ञादी १७।२५॥

इति श्रीभाषामहाभारते आदिपर्वणि द्विशताधिकद्वितीयोऽध्यायः २०२॥

दोसौतीनका अध्याय।

धृतराष्ट्र का भीष्मजी से मन्त्र पूंछना और भीष्मजीका आधा राज्य पांडवों को बांटदेने का उपदेश करना॥

भीष्मजी बोले कि हमको पांडवोंके साथ विग्रह करना अच्छा नहीं जान पड़ताहै हमारे लिये तो धृतराष्ट्र और पांडु दोनों एकहीसे हैं हमको गांधारी और कुन्ती दोनों के पुत्रोंकी रक्षा करना बराबर उचित है और पांडव भी धृतराष्ट्र दुर्योधन और २ कौरव कुल के मनुष्यों के एकसेही हैं इससे मेरी समझ में तो उनसे मिलाप करके उनको आधा राज्य बांट देना उचित है क्योंकि यह राज्य उनके भी बाप दादोंका है जैसे तुम राज्यको अपना करके देखते हो इसी प्रकार से पांडव भी अपनाही मानते हैं और जो यह राज्य उनके बाप दादों का नहीं है तो तुम्हारा कहां से आया तुमने तो अधर्म से राज्य लिया है और उनके तो बापको राज्य मिलाथा इससे उनको आधा राज्य बांटदो इसीमें सब का हितहै और जो ऐसा न करोगे तो हम सबोंका कल्याण न होगा और तुम्हारी बड़ी अपकीर्ति होगी कीर्ति बड़ा पदार्थ है अपकीर्ति के साथ जीना निष्फल है इससे वह बात करो जिसमें कीर्ति रहै कीर्तिवान् मनुष्य का नाम संसारमें सदैव बना रहता है अपने कुलको और बाप दादे को देखकर अपने योग्य काम करना चाहिये यह प्रारब्धकी बात है कि पांडव कुन्ती सहित जीते हैं और पापी पुरोचन मारागया जबसे पांडवोंका लाक्षागृहमें जलना मैंने सुनाहै तबसे मेरी दृष्टि किसी के सन्मुख नहीं होतीहै पुरोचनको कोई इतना दोष नहीं देताहै जितना सब संसारी मनुष्य तुमको बुरा कहतेहैं इससे उनका जीता हुआ होना तुम्हारी अपकीर्ति का नाश करनेवाला है तुमको उनके दर्शन करना उचित है उनके जीतेजी उनके बाप दादेके अंशको इन्द्रभी नहीं लेसक्ता है

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

क्योंकि वे सब धर्मात्माहैं और एकचित्त हैं और मरने से बचने पर राज्य पाने के योग्य हैं इससे जो तुमको धर्मसे मेरा प्रिय और सबका हित करना है तो उनको आधा राज्य बांटदो १। १६॥

इति श्रीभाषामहाभारते आदिपर्वणि द्विशताधिकतृतीयोऽध्यायः २०३॥

दोसौचारका अध्याय।

द्रोणाचार्य का राजा धृतराष्ट्रको भीष्मजीके कहने के अनुसार पांडवोंको आधा राज्य देने और उनको बुलाने का मंत्र देना॥

भीष्मजीके उक्त मन्त्र कहने पर द्रोणाचार्य बोले हमको भी आपने मन्त्र देनेके लिये बुलायाहै मन्त्री को सदैव ऐसी सलाह देना चाहिये जिससे धर्म अर्थ और यश तीनों बने रहैं इससे हमारी भी यही सलाहहै जैसी कि भीष्म जीने कही है पांडवोंको आधा राज्य बांटदो यही सनातन धर्म है अब जल्दी से किसी मधुर बोलनेवाले मनुष्यको राजा द्रुपदके पास भेजिये और वह यहां से बहुत से रत्न और दूल्हा दुलहिन कुन्ती और राजा द्रुपद के पुत्रों के लिये सुनहरी काम के सुन्दर २ वस्त्र लेजाकर सबको यथायोग्य तुम्हारी ओरसे देवै और द्रुपद के साथ सम्बन्ध होने की योग्यता को जताकर यह कहै कि धृतराष्ट्र ने बड़ी प्रसन्नता से यह कहा है कि हमारे कुलकी वृद्धि हुई और फिर राजा द्रुपद से पांडवों को बुलाने का हाल कहैं ऐसा करने से पांडव द्रुपद और धृष्टद्युम्न से तुम्हारी और दुर्योधन दोनोंकी प्रीति को कहैंगे और द्रुपद भी उनको यहां आनेकी आज्ञा देदेंगे और जब वे यहां आवें तब उनके लेनेके लिये दुश्शासन और विकर्ण सेनासहित जावें यहां आने पर पांडव तुमसे पूजित होने पर मन्त्रियों की सलाह मान कर अपने पिताकी राह पर चलेंगे हम और भीष्मजी दोनों इस बातके करने की सलाह तुमको और तुम्हारे पुत्रोंको देतेहैं १। १२ यह सुनकर कर्ण बोला कि ये दोनों निरन्तर तुमसे अर्थमान रहकर तुम्हारे अहितका मन्त्र देते हैं जो मनुष्य मन में दुष्टता रखके ऊपरसे सुहृदके समान बोले उसका वचन कल्याणकारक क्यों कर होसक्ताहै संकटमें मित्र कुछ किसीका कल्याण या नाश नहीं करसक्ता है दुःख और सुख तो सब प्रारब्धके अनुसार होते हैं मनुष्य चाहै वृद्ध बालक ज्ञानी अथवा अज्ञानी सहायता सहित अथवा रहित कैसाही हो जहां रहताहै अपने कर्म के अनुसार भोग भोगता है हमने सुना है कि अम्बुबीच

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नाम एक गृह नगरमें मगधदेशका राजाथा वह राजा नेत्र आदि सब इन्द्रियों से रहित होनेके कारणसे सब कामों में मन्त्रियों के आधीन रहताथा उसका एक मंत्री कर्णिनाम उसके राज्यका मालिक बनके रहताथा और अपने को बलवान् मान कर राजा का निरादर किया करताथा कुछ कालमें उस मन्त्रीने उस राजाके स्त्री धन रत्न और ऐश्वर्य आदि सब भोगों को आप लेलिया और उसके राज्यको भी छीनना चाहा परन्तु वह मन्त्री यत्न कर २ के हार गया और विना प्रारब्धके दीन और अंधे होनेपर भी उसके राज्यको न लेसका क्योंकि उस राजाका राज्य दैवके बलसे था वह उपाय से क्योंकर जासक्ता था इसी प्रकार से आपका भी यह राज्य जो दैवइच्छासे आपको मिलाहै तो आपही के पास रहैगा और जो दैवने इसके विपरीत रचाहै तो यत्न करने से भी न रहैगा परन्तु इस बातके कहने से आपको अपने मन्त्रियों की साधुता असाधुता दुष्टता और अदुष्टता जान लेनी चाहिये १३। २५ यह सुनकर द्रोणाचार्य बोले कि अरे दुष्ट! मैं तेरे दोषयुक्त भावको पहिचानताहूं तू पांडवोंसे वैरभाव रखने के कारणसे ऐसे दोषयुक्त वचन कहताहै मैंने तो कुलका बढ़ाने वाला परम हितकारी मन्त्र कहाहै तू उसको दोषयुक्त मानता है तो तू ही बता कि हितकारी मंत्र क्याहै जो मेरे कहनेके विपरीत किया जायगा तो थोड़े ही दिनोंमें सब कौरवों का नाश होजायगा २६। २८॥

इति श्रीभाषामहाभारते आदिपर्वणि द्विशताधिकचतुर्थोऽध्यायः २०४॥

दोसौपांच का अध्याय।

विदुरजी का अनेक कारण दिखाकर धृतराष्ट्रको पांडवों से समता करने और भीष्मजी का वचन मानने का उपदेश करना॥

इसके पीछे विदुरजी बोले कि हे राजा! तुमको वह बात करनी चाहिये जिसमें बांधवोंका हित होवे तुम अब और किसीकी कुछ बात न सुनो जो भीष्म जी और द्रोणाचार्य ने कहा है वही आपके लिये परमहित है उससे अन्यथा आपको करना उचित नहीं है कर्ण उनके हितकारी मंत्र को श्रेष्ठ नहीं समझताहै मेरी समझमें तो इन दोनों पुरुषोत्तमों से बढ़कर इस संसार में बुद्धिमान् और आपका हितकारी कोई नहीं है ये दोनों अवस्था बुद्धि और शास्त्र में बड़ेहैं और तुमको और पांडवों को एकसा समझतेहैं और इस में भी सन्देह नहीं है कि ये दोनों बड़े धर्मात्मा राजा रामचंद्र और राजा गय की समान

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सत्यवादी हैं तुमने इनका कोई अपकार नहीं किया है जो ये तुमको खोटी सलाह देंगे और न आजतक इन्होंने कोई बात ऐसी कही है जिससे तुम्हारा कल्याण न हुआहो इससे वे दोनों सत्यवादी और पराक्रमी होनेपर क्योंकर तेरे कल्याण की बात न कहैं दोनों धर्मज्ञ और इस लोक में श्रेष्ठ हैं और दोनों पक्षपात रहित तेरे हितका करनेवाला मंत्र देते हैं मेरी समझ में तो आपका यही कल्याण है कि आप सब पांडवों को अपने दुर्योधनादिक पुत्रोंके समान समझैं ये दोनों मंत्री पांडवों का अहित विचारने में आप का कल्याण नहीं देखते हैं और जो तुम्हारे हृदय में अपने पुत्रों की ओर से विशेष प्रीतिहै उस को जानकर उसके प्रकट करने में तुम्हारा भला न देख कर प्रकट करके नहीं कहते हैं इससे जो इन दोनों पुरुषोत्तमों ने जो मंत्र आपको दिया है और जो जो भाव जताये हैं उसके अन्यथा होने में कल्याण नहीं है १।१५ पांडव श्रीमान् और सव्यसाची हैं अर्जुनको इन्द्रभी संग्राम में नहीं जीतसक्ता है और दश सहस्र हाथी का बल रखनेवाले भीमसेन को देवता भी नहीं जीत सक्ते हैं और ऐसा कौन है जो उस धर्मात्मा क्षमावान् सत्यवादी और पराक्रमी युधिष्ठिर को और बड़े शूरवीर नकुल और सहदेव को रणमें जीत सके भला जिनके मन्त्री श्रीकृष्णचन्द्र हैं और पक्षपर बलदेवजी सात्यकी और उनका श्वशुर राजा द्रुपद और धृष्टद्युम्नादिक साले हैं उनको किसी का जीत लेना क्या बड़ी बात है इससे आप उनको जीतना असम्भव और उनके राज्य मिलनेकी योग्यताको विचारकर जैसा उचित समझिये वैसा कीजिये पुरोचनकी कृत्यसे आपका बड़ा अयश होरहा है अब आप पाण्डवों को जीता हुआ जान कर उस अयशको मिटा दीजिये उनका जीता हुआ होना हमपर बड़ा अनुग्रह और हमारे कुलकी वृद्धिका कारण है इसके सिवाय द्रुपद भी बड़ा राजा है और हम से उससे पहले से वैर चला आता है अब उसके साथ सम्बन्ध होने से हमारा पक्ष बड़ा होजायगा इसके सिवाय दशार्ह देशके क्षत्री बड़े बलवान्हैं वह सब उसी ओर रहैंगे जिधर कृष्ण होंगे और जहां कृष्ण होंगे वहां जयभी अवश्य होगी १६।२६ ऐसा कौनसा दैवसुप्त मनुष्य होगा जो मिलाप से सधते हुये कामको विग्रह करके करना चाहैगा तुम्हारे देश और पुरवासी सब मनुष्य पाण्डवोंको जीताहुआ सुनकर उनके दर्शनोंके अभिलाषी हैं आपको उनका प्रिय करना उचित है और दुर्योधन कर्ण और शकुनी तीनों अधर्मी हैं उनकी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बातको मानना आपको योग्य नहीं है हमने तो आपसे पहलेभी कहा था कि दुर्योधनके कारण से सब प्रजाका नाश होगा २७। ३० ॥

इति श्रीभाषामहाभारते आदिपर्वणि द्विशताधिकपञ्चमोऽध्यायः २०५ ॥

दोसौछः का अध्याय।

धृतराष्ट्रकी आज्ञा से विदुरजीका पाण्डवोंको लेनेके लिये राजा द्रुपदके पास जाना ॥

विदुरजी की उक्त बातों को सुनकर राजा धृतराष्ट्र बोले कि भीष्मजी और द्रोणाचार्यजीने मेरे परमकल्याणी वचन कहे हैं और हे विदुर ! तूभी सत्य कहताहै धर्म के अनुसार जैसे मेरे पुत्र ये हैं वैसेही पाण्डवभी हैं इसमें कुछ संदेह नहीं है और यह राज्यभी जैसा मेरे पुत्रोंकाहै वैसाही पाण्डवोंका है इससे हे विदुर ! अब तुम जाकर आदरपूर्वक पाण्डवों को माता और द्रौपदी सहित यहां लिवालाओ पाण्डव और कुन्ती प्रारब्ध से जीते हैं और प्रारब्धही से उन शूरवीरोंने द्रुपदकी कन्याको पाया है यहभी प्रारब्धसेही है कि पुरोचन मारा गया और हमारे कुलकी वृद्धि हुई और मेरा परम दुःख दूर हुआ १। ६ वैशम्पायन जी बोले हे राजा जनमेजय ! इसके पीछे विदुरजी धृतराष्ट्र की आज्ञासे पांडव द्रौपदी और राजा द्रुपदके लिये अनेक प्रकारके धन और रत्न लेकर पांडवों के पास गये और राजा द्रुपद और विदुरजी दोनों न्यायके अनुसार मिलकर आपसमें कुशल क्षेम पूछकर बैठ गये ७। १० और पांडवों और श्रीकृष्णजीसे जो उस समय पाण्डवोंके पास आयेथे बड़ी प्रीतिपूर्वक मिलकर उनसे आदर किये जानेपर वह सब रत्न और धन जो पाण्डवोंके लिये लायेथे देदिये और द्रौपदी कुंती और द्रुपदके पुत्रोंको भी कौरवोंकी ओरसे लाये हुये वस्त्रादिक देकर पाण्डव और कृष्णचन्द्रके सामने द्रुपदसे विनीत होकर बोले कि राजा धृतराष्ट्रने तुम्हारी पुत्रों और मंत्रियों सहित कुशल पूछी है और तुमसे सम्बन्ध होने के कारणसे उनको बड़ा हर्ष हुआ है और भीष्मजी तथा आपके परम मित्र द्रोणाचार्य और २ कौरवोंने भी आपकी कुशल पूछी है और आपके साथ सम्बन्ध होने से सबको बड़ी प्रसन्नता हुईहै ११। २० उन सबोंको संपूर्ण राज्य मिलने का ऐसा हर्ष नहीं है जैसा आपके साथ सम्बन्ध होने से हुआ है अब आप पाण्डवोंको मेरे साथ भेज दीजिये वह सब उनके दर्शनों की बाट देख रहे हैं पाण्डवभी बहुत दिनोंसे प्रदेशमें रहनेके कारणसे अपने नगरको देखना चाहते होंगे और सब कौरवकुल के मनुष्य और स्त्रियां द्रौपदीको देखने की

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अभिलाषायुक्तहैं इस से अब आप पांडवों को स्त्रीसहित बिदा करदीजिये आप की आज्ञा होने पर मैं बहुत जल्दी चलनेवाले दूतोंको पांडवों के कुन्ती सहित आनेका सँदेशा लेकर हस्तिनापुरको भेजूंगा २१। २६॥

इति श्रीभाषामहाभारते आदिपर्वणि षडधिकद्विशततमोऽध्यायः २०६॥

दोसौसात का अध्याय।

पांडवों का हस्तिनापुर में आना धृतराष्ट्रका उनको आधा राज्य बांट देना और पांडवों का धृतराष्ट्रकी आज्ञासे खांडवप्रस्थमें इन्द्रप्रस्थ नाम नगर बसाकर रहना॥

यह सुनकर राजा द्रुपद बोले कि हे विदुरजी! तुम बड़े ज्ञानीहो तुमने सब बातें यथार्थ कहीहैं मुझको भी इस संबन्धके होने से बड़ा हर्ष हुआहै परन्तु मैं इनके जानेके लिये अपने मुखसे कुछ नहीं कह सक्ताहूं जो पांडव कृष्ण और पांडवोंके परमहितैषी बलदेवजी इन सबकी इच्छा होवे तो मुझे उनके जानेमें किसी प्रकार की शंका नहीं है यह सुनकर युधिष्ठिर बोले कि हम सब आपके ही आधीनहैं आप जैसी आज्ञा दीजियेगा वैसाही हम करेंगे १। ५ यह सुन कर कृष्णचन्द्र बोले कि हमको इनके जाने में कुछ बुराई नहीं जान पड़ती है आगे राजा द्रुपद की जैसी इच्छाहो यह सुनकर राजा द्रुपद बोले कि हमारी भी इच्छा कृष्णचन्द्र के अनुसारहै पांडव जैसे हमारे संबन्धी हैं उसी प्रकार से कृष्णचन्द्रके हैं और कृष्णचन्द्र जितना पांडवोंका हित चाहतेहैं उतना पांडव उनको नहीं चाहतेहैं वैशम्पायनजी बोले हे राजा जनमेजय! इसके पीछे राजा द्रुपद से आज्ञा पाकर पांडव श्रीकृष्ण और कुन्ती सहित विदुरजी के साथ हस्तिनापुरको वहांसे चल दिये राजा धृतराष्ट्रने उनके आनेका संदेशा पाकर विकर्ण चित्रसेन द्रोणाचार्य कृपाचार्य और अन्य २ कौरवों को पांडवोंके लाने के लिये भेजा और पांडवों ने उन सबके साथ २ धीरे २ नगर में प्रवेश किया सब नगरवासी उनके दर्शनोंकी इच्छासे जुड़ आये और उनके प्रसन्न करने को नाना प्रकारके श्रेष्ठ वचन सुनाने लगे कोई कहने लगा देखो अब वही पुरुषोत्तम फिर आताहै जो हमारा धर्मके अनुसार पुत्रों के तुल्य पालन करता था दूसरा बोला हमारे लिये तो इनका आना ऐसाहै मानों राजा पांडु वनसे लौट आया तीसरा कहने लगा कि इससे अधिक और हमारा क्या प्रिय होगा कि पांडव फिर लौटकर हमारे नगरमें आये चौथा बोला भाई! जो कुछ हमने दान तप और होम कियाहै उसके फलसे पांडव सौ वर्षतक हमारे नगरमें रहैं ६। २०

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इसके पीछे पांडवोंने महलोंके समीप पहुँचकर धृतराष्ट्र भीष्मजी और अन्य २ कुरुकुल के वृद्ध मनुष्यों को दण्डवत् की और धृतराष्ट्रकी आज्ञा से घर के भीतर गये थोड़े दिन विश्राम करनेपर राजा धृतराष्ट्र और भीष्मजी ने उनको बुलाया और धृतराष्ट्रने उनसे कहा कि अब तुम खांडवप्रस्थ में जाकर अर्जुन से रक्षित होकर इस प्रकार से दुःखरहित होकर वास करो जैसे इन्द्रसे रक्षित होने से देवता निर्द्वन्द्व होकर रहतेहैं हम चाहतेहैं कि फिर आपस में विग्रह न होवे वैशम्पायनजी बोले हे राजा जनमेजय! पांडव यह सुनकर राजाको प्रणाम करके श्रीकृष्णजी सहित आधा राज्य पाकर खांडवप्रस्थको चलदिये और वहां पहुँचकर नगर बसानेकी इच्छासे उस पृथ्वीकी शांति व्यासजीसे कराई उपरांत पृथ्वीको नापकर नगर बसाया उस नगरके चारों ओर समुद्रके समान गहरी खाई खुदवादी और प्राकार अर्थात् कोट बड़ा ऊंचा और शोभायमान बनवा दिया और उसके बीचमें राजभवन ऐसे सुन्दर बनवाये कि वह नगर नागों की भोगवतीपुरी के समान दीखनेलगा नगरके द्वार मंदराचल पहाड़के तुल्य ऊंचे और छिद्ररहित बनवाये और उन द्वारोंपर संपूर्ण शस्त्र अस्त्र रखवाकर उनकी रक्षाके लिये द्वारपालक बैठा दिये और बड़ी ऊँची २ अटारियां बनवाकर बड़ी तीक्ष्ण बरछियाँ रखवादीं और तीक्ष्ण अंकुश शतघ्नी यंत्रजाल और लोहेके बड़े २ चक्रों से शोभित कर दिया कोटके भीतर बड़े सुन्दर २ रहनेके लिये श्वेत २ घर बनवादिये और बड़ी २ सड़कें निकलवाकर नगरका विभाग अच्छे प्रकारसे कर दिया उस नगरका नाम इन्द्रप्रस्थ रक्खा और पाण्डवोंके बसनेपर वह स्वर्गकी समान शोभायमान होगया रत्नोंसे जटित होनेके कारणसे वह नगर ऐसा दीखता था जैसे आकाश में बादलोंका समूह बिजली सहित मालूम होताहै उस नगर में युधिष्ठिर के रहनेका गृह कुबेर के घरकी समान बनाथा और उसीमें बड़े २ वेदपाठी ब्राह्मण और सब भाषाओंके जाननेवाले मनुष्य जा बसे और व्यापारी लोग देश देशसे आकर वहां बसनेलगे शिल्पविद्याके जाननेवाले मनुष्यों नेभी वहां आकर वास किया नगरके बाहर सुन्दर२ बाग लगवा दिये उन बागों में आम, नींब, अशोक, चंपक, पुन्नाग, नागपुष्प, लकुच, पनश, शाल, ताड़, तमाल, बकुल, केतक आदि नाना प्रकारके सुन्दर पुष्प और फलवाले वृक्ष लगवा दिये उन वृक्षों पर मोर कोकिला आदि अनेक २ मीठी बोली बोलने वाले पक्षी वास करने लगे उन बागोंमें सुन्दर लताओंके गृह बनवा दिये और

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ठहरने के लिये ऐसे २ घर बनवाये कि उनकी दीवारों में मनुष्य का मुख दर्पण की तरह से दिखाई देता था इनके सिवाय चित्रगृह और नृपलीला यात्राके लिये पर्वत भी जहां तहां बनवा दिये सुन्दर २ बावड़ी और सरोवर जिनमें कमल फूलेहुयेथे और उनके किनारे पर हंस और चकवा चकवी वास करते थे नगर के चारों ओर बनवा दिये इन सबके सिवाय वह नगर अनेक क्रीड़ाओं के स्थानोंसे युक्त करदिया पांडव वहां धृतराष्ट्र और भीष्मजी की आज्ञासे बसने लगे वह नगर पांडवोंसे बड़ा सुशोभित होगया और बलदेवजी और कृष्णचन्द्र उनको उस नगर में बसाकर वहां से पाण्डवोंकी अनुमतिसे द्वारका को चले गये २१।५१॥

इति श्रीभाषामहाभारते आदिपर्वणि द्विशताधिकसप्तमोऽध्यायः २०७॥

दोसौआठ का अध्याय।

पांडवों के पास नारदजीका आना और उनसे एक स्त्री होनेके कारण से आपस में विरुद्ध न होने के लिये उपाय करने को कहना॥

इतनी कथा सुनकर राजा जनमेजय बोले कि महाराज हमारे अगले पुरखे बड़े प्रतापीथे अब आप यह कहिये कि पांडवोंने आधा राज्य मिलने पर क्या किया और द्रौपदीने उनके साथ कैसा बर्ताव किया और पांचों के वही अकेली स्त्री होने पर उनमें आपसमें विरुद्ध क्यों नहीं हुआ मैं इस सब कथाको विस्तार सहित सुना चाहताहूं यह सुनकर वैशम्पायनजी बोले कि राज्य मिलने पर राजा युधिष्ठिर धर्म से पृथ्वी का पालन करने लगे और सब पांडव शत्रुओं को जीतकर सत्यवादी और धर्मपरायण होकर परस्पर प्रीति के साथ बड़े आनन्द-पूर्वक रहने लगे एक दिन वह सब आनन्दपूर्वक बड़े मोलके राजसम्बन्धी आसनोंपर बैठे हुये थे कि उस समय वहां दैवइच्छा से नारदजी आये उनको देखकर युधिष्ठिर उठ खड़ा हुआ और अपने आसन पर बैठाकर बड़ी भक्ति से उनकी पूजा की और अपना राज्य उनको निवेदन किया तब नारदजीने प्रसन्न होकर युधिष्ठिरको आशीर्वाद दिया और सब भाइयों को बैठने की आज्ञा दी उनकी आज्ञा पाकर सब भाई बैठ गये और द्रौपदी से नारदजी के आनेका हाल कहला भेजा द्रौपदी उनके आनेका हाल सुनकर पवित्रतासे वहां गई और नारदजीके चरणोंको अपने दोनों हाथों से छूकर उनके सम्मुख खड़ी होगई नारदजी ने उसे अनेक आशीर्वाद दिये और कहा कि जाओ

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उसके चलेजाने पर नारदजी ने उन पांडवों से अकेले में कहा कि देखो यह द्रौपदी तुम पांचों भाइयों की स्त्री है इससे तुमको ऐसा यत्न करना चाहिये जिससे तुममें आपस में विरुद्ध न होवे पूर्वकाल में सुंद और उपसुंद नाम दो राक्षस भाई थे और ऐसे बलवान् थे कि कोई उनको नहीं मार सक्ता था और उन दोनों में ऐसी प्रीति थी कि एकही घर में दोनों रहते एक साथ खाते एक शय्या पर सोते और एकही आसन पर बैठते थे परन्तु तिलोत्तमा अप्सरा के कारण से आपस में कटकर मरगये इससे तुम भी ऐसा यत्न करो कि तुममें आपसमें भेद न होवे और नित्य बढ़ती हुई प्रीतिमें विक्षेप न पड़ै १।२० यह सुनकर युधिष्ठिर बोले कि महाराज सुंद उपसुंद किसके पुत्रथे उनमें आपस में भेद क्योंकर हुआ और एकने दूसरे को क्योंकर मारा और वह तिलोत्तमा नाम अप्सरा किसकी थी जिसके कारण से उन दोनोंने आपस में लड़कर एक दूसरे को मार डाला मैं इस वृत्तान्त को पूरा २ सुना चाहताहूं २१।२३॥

इति श्रीभाषामहाभारते आदिपर्वणि द्विशताधिकाष्टमोऽध्यायः २०८॥

दोसौनौ का अध्याय।

सुन्द और उपसुन्द दोनों दैत्यों के तपस्या करने और ब्रह्माजी से वरदान पानेकी कथा॥

नारदजी बोले हे युधिष्ठिर! मैं इस पुराने इतिहासको विस्तारपूर्वक कहताहूं तू भाइयों सहित सुन पहिले समय में हिरण्यकश्यप दैत्य के वंश में निकुंभ नाम एक दैत्य बड़ा बली और तेजस्वी था उसके सुंद और उपसुंद नाम दो बड़े पराक्रमी क्रूर और दारुण पुत्र उत्पन्न हुये वे दोनों भाई परस्पर बड़ी प्रीति से एक सलाह एक सम्मत और सुख दुःखको एकसा भोग करके रहते थे दोनों में से कोई विना दूसरे के न भोजन करता था न कुछ कहता था और एक दूसरे के प्रियको करता था वे दोनों जो कुछ काम करते थे एकही साथ करते थे और उन दोनों की सलाह भी एकही थी जिसको एक नाहीं करता उस बातको दूसरा कभी नहीं करता था उन दोनों ने तीनों लोकों को विजय करना विचारकर दीक्षा ली और दोनों विन्ध्याचल पहाड़ पर जाकर बड़ा तप करने लगे दोनोंने भूंखे प्यासे रहकर जटा रखाये और वल्कल वस्त्र पहिरे हुये केवल वायुके आधार पर एक पांव और अंगूठों के बल खड़े होकर ऊर्ध्वबाहु करके विना निद्रा के बहुत दिनों तक तप किया उनके तप से वह पहाड़ ऐसा तप्त होगया कि उसमें से धुआं निकलने लगा उसको देखकर बड़ा आश्चर्य

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हुआ देवता उनके तपको देखकर बड़े भयभीत हुये और तप भंग करने की इच्छासे उन्होंने अनेक रत्नों सहित स्त्रियां उनके लुभाने को उनके पास भेजीं परन्तु उन दोनोंने अपना व्रत भंग नहीं किया इसके पीछे देवताओं ने यह माया की कि उन दोनोंके सम्मुख उनकी बहिन माता और स्त्रियोंको बड़े २ राक्षसोंने शूल हाथमें लेकर उनके सामने मारकर गिरा दिया और वे स्त्रियां आर्त बोली से पुकारीं कि हमारी रक्षा करो परन्तु उन दोनों ने इसपर भी अपने व्रतको न छोड़ा और न किसी प्रकार का क्षोभ किया यह देखकर वे मायारूपी स्त्रियां और राक्षस अन्तर्धान होगये इसके पीछे ब्रह्माजीने आकर उन दोनों से कहा कि वर मांगो ब्रह्माजी को देखकर वे दोनों अपने हाथ जोड़कर उन के सम्मुख खड़े होगये और बोले कि महाराज जो आप हमपर प्रसन्न हैं तो हम को यह वरदान दीजिये कि हम मायावेत्ता, अस्त्रवेत्ता, बली और कामरूप जो इच्छा में आवै सो स्वरूप धारण करलें और हम दोनों अमर होजायँ यह सुनकर ब्रह्माजी बोले कि सिवाय अमर होने के तुम्हारी और सब कामना पूरी होगी तुमने जब तपस्या कीथी तब अमर होनेका संकल्प नहीं कियाथा यह वर तुमने विपरीत मांगाहै हां तुमने तीनों लोकोंकी विजय और प्रभुता होनेके निमित्त तप कियाहै सो ये सब तुमको मिलेगी परन्तु अमर नहीं होसक्ते हो और जो चाहो तो अमर होने के समान अपनी मृत्युका कोई विधान मांगलो यह सुनकर वह दोनों बोले हमको तीनों लोकमें सिवाय हमारे एक दूसरेके और कोई न मारसके यह सुनकर ब्रह्माजी बोले अच्छा हमने तुमको यह वरदान दिया जब तुम दोनों एक दूसरेको मारोगे तभी मरोगे और कोई तुम दोनोंको तीनोंलोकमें न मार सकेगा १।२५ यह कहकर ब्रह्माजी तो उन दोनोंको तपसे निवृत्त करके अपने लोकको चले गये और वे दोनों वर पाकर तीनों लोक से अभय होकर अपने घर को आये उनको देखकर उनके सब सुहृद् बहुत प्रसन्न हुये और उन दोनों ने अपनी जटा कटाकर सुन्दर २ मुकुट और अच्छे २ वस्त्र पहिर लिये इसके पीछे सब दैत्योंने उनके वर पानेकी प्रसन्नतासे बड़ा उत्सव किया घर २ में यही शब्द सुनने में आता था भक्षण भोजन दान और विहार करो, गावो और पीवो और सब नगर में अनेक २ प्रकार के बाजे बजे इस प्रकार से क्रीड़ा करते हुये उन दैत्योंका एक वर्ष एक दिनके समान बीतने लगा २६।३३॥

इति श्रीभाषामहाभारते आदिपर्वणि द्विशताधिकनवमोऽध्यायः २०९॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दोसौदश का अध्याय।

सुन्द उपसुन्द दोनों दैत्यों के तीनों लोक विजय करने की कथा॥

नारदजी बोले हे पांडवो! उस उत्सव के बीतने पर दोनों दैत्यों ने तीनों लोकों के विजय करने की सलाह की और अपने मंत्री सुहृद् और वृद्ध दैत्यों से अनुज्ञात होकर प्रास्थानिक कर्म करके मघा नक्षत्रमें रात्रिके समय युद्धके लिये यात्रा की उनके साथ बहुतसी सेना गदा, पट्टिश, शूल, मुद्गर आदि अनेक शस्त्र लिये और कवच पहिने हुये हो ली और दोनों मंगलरूप स्तुतियों को सुनते हुये सेना सहित बड़े आनंदके साथ वहांसे चलदिये उसके पीछे वे दोनों बलवान् आकाश में उछलकर देवताओं के लोकमें पहुँचे उनके आने और वरदान पानेका हाल सुनकर सब देवता स्वर्ग छोड़कर ब्रह्मलोकको चले गये इस प्रकारसे पहिले उन दोनों ने इंद्रलोकको जीता और उपरांत यक्ष, राक्षस और आकाशमें चलनेवाले देवयोनियों समेत पातालवासी नागों को और समुद्रमें बसनेवाली सब म्लेच्छ जातियों को विजय किया इसके पीछे उन दोनों ने संपूर्ण पृथ्वी को विजय किया और अपनी सेनाके दैत्यों को बुलाकर बोले कि पृथ्वी में राजऋषि और ब्रह्मऋषि लोग यज्ञ और हव्य कव्य आदि कर्म कर २ के देवताओं के तेज बल और लक्ष्मी को बढ़ाते हैं तुम सब उनके यज्ञोंको विध्वंस कर करके सबको मारडालो यह आज्ञा देकर वे दोनों क्रूर दैत्य पूर्व दिशामें समुद्रके किनारे पर चले गये और जो कोई ब्राह्मण उनको यज्ञ करते या कराते मिला उसको उन्होंने मार डाला और उनके दैत्यों ने ऋषियों की अग्निहोत्र को उठा २ कर जल में डाल दिया तब ऋषियों समेत महात्मा ब्राह्मणों ने उनको शाप दिये परंतु वरदानके कारणसे उनके शाप निष्फल होगये जब उन तपसिद्ध शमपरायण और महात्मा ब्राह्मणों ने देखा कि हमारे शापसे कुछ असर नहीं होताहै तब वे भयभीत होकर अपने २ नियमों को छोड़ २ कर इस प्रकारसे भागने लगे जैसे गरुड़ को देखकर सर्प भागते हैं उस समय दैत्योंकी उपाधिसे मुनियोंके सब आश्रम स्रुवे और कलश आदि टूट गये और संपूर्ण जगत् कालहतके समान होगया जब ऋषिलोग उन दोनों दैत्योंके भयसे अंतर्धान होगये तब उन राक्षसों ने वन और पहाड़ों में मतवाले हाथी और सिंह व्याघ्र आदि अनेक प्रकारके रूप धर २ के ऋषियों को मार मारकर यमलोकमें पहुँचा दिया १।२१ उस समय पृथ्वीपर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

संपूर्ण यज्ञ, वेदपाठ, व्यापार, हाटोंका लगना, देवकार्य, विवाह, खेती, गोरक्षा, पितृकार्य और वषट्कार बंद होगये और पृथ्वी उग्र दर्शन होगई उन दोनों दैत्योंके ऐसे कर्मोंको देखकर सूर्य चंद्रमा ग्रह नक्षत्र और ताराओं को बड़ा दुःख हुआ इस प्रकारसे वे दोनों दैत्य सब दिशाओं को जीतकर शत्रुरहित होकर कुरुक्षेत्र में रहने लगे २२। २६॥

इति श्रीभाषामहाभारते आदिपर्वणि द्विशताधिकदशमोऽध्यायः २१०॥

दोसौग्यारह का अध्याय।

सब देवता और महर्षियों का ब्रह्माजी के पास जाकर सुन्द और उपसुन्द का वृत्तान्त कहना और ब्रह्माजी की आज्ञा से विश्वकर्मा का विश्व को मथकर तिलोत्तमा को उत्पन्न करना॥

नारदजी बोले हे पाण्डवो! उन दोनों दैत्यों के कारण से सब महर्षि सिद्ध और देव ऋषियों को बड़ा दुःख हुआ और वे सब जितेन्द्रिय जितात्मा और जितक्रोध ऋषि लोग सब जगत् पर कृपा करके ब्रह्माजी के पास गये और उन ब्रह्माजी को ब्रह्मऋषियों से वन्दित देखकर वे सब वैखानस बालखिल्य मरीचि आदि अयोनिज, ज्ञानी, तेजस्वी और तपस्वी ऋषि लोग उन के सन्मुख चले गये और प्रणाम करके उन्हों ने सुन्द उपसुन्द का सब वृत्तान्त कह सुनाया और रक्षा के लिये प्रार्थना की ब्रह्माजी ने उस वृत्तान्त को सुनकर एक मुहूर्त भर विचार किया उपरान्त विश्वकर्मा को बुलाकर आज्ञा दी कि तुम एक अत्यन्त स्वरूपवान् स्त्री उत्पन्न करो यह सुनकर विश्वकर्मा ने सब शोभायमान रत्न पदार्थों को मथकर ब्रह्माजी को नमस्कार करके एक स्त्री उत्पन्न की वह स्त्री ऐसी दर्शनीय और स्वरूपवान् थी कि विश्व में उसके स्वरूप के समान कोई स्त्री न थी और नखसे लेकर चोटी तक सब अंग ऐसे शोभायमान और प्रभायुक्त थे कि दृष्टि उन अङ्गों में घुस कर फिर निकलने को असमर्थ होजाती थी उस स्त्री को देखकर सब के चित्त चलायमान होगये ब्रह्माजी ने उसका नाम तिलोत्तमा रक्खा क्योंकि उस के सब अङ्ग अति शोभायमान विश्व के पदार्थों के शोभित २ अङ्गों में से तिलतिल के अनुमान से शोभा ले लेकर बनाये गये थे वह स्त्री उत्पन्न होने पर हाथ जोड़ कर ब्रह्माजी के सन्मुख खड़ी होगई और बोली कि महाराज मुझको क्या आज्ञा है १। १६ यह सुनकर ब्रह्माजी बोले कि तू जाकर अपने रूप से सुन्द उपसुन्द

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दैत्यों के मनको मोह और ऐसा यत्नकर जिससे उन दोनों में आपस में विरोध उत्पन्न हो यह सुनकर उस स्त्री ने ब्रह्माजी को नमस्कार किया और सब देवताओं की प्रदक्षिणा करने लगी उस समय विष्णु भगवान् पूर्वाभिमुख महादेवजी दक्षिणाभिमुख और संपूर्ण देवता उत्तराभिमुख बैठे हुये थे जब तिलोत्तमा उन सबकी प्रदक्षिणा करने लगी तब सब देवता और महर्षि तो अपना २ मुख मोड़ कर जिधर २ तिलोत्तमा जाती थी देखने लगे परन्तु शिवजी विष्णु भगवान् और इन्द्र ने धीरज करके अपने मुखों को उसकी ओर नहीं मोड़ा परन्तु उसके दर्शनों के लिये शिवजी के जिस २ दिशा में तिलोत्तमा जाती थी उसी उसी दिशा में एक एक मुख होता जाता था और इन्द्रके सब अंग में सहस्र आंखें होगईं तब से इन्द्र सहस्राक्ष और शिवजी चतुर्मुख होगये सिवाय ब्रह्माजी के और ऐसा वहां कोई न था जिसकी दृष्टि उस स्त्री पर न पड़ी हो सब देवताओं ने यह देखकर निश्चय किया कि हमारा काम इस स्त्री के द्वारा अवश्य होजायगा प्रदक्षिणा करके तिलोत्तमा चली गई और ब्रह्माजी ने सब देवता और महर्षियों को उसके चलेजाने पर वहां से बिदा कर दिया २०।३२॥

इति श्रीभाषामहाभारते आदिपर्वणि द्विशताधिकैकादशोऽध्यायः २११॥

दोसौबारह का अध्याय।

ब्रह्माजी की आज्ञा पाकर तिलोत्तमा स्त्री का जाना और उसको देखकर सुन्द उपसुन्द का कामासक्त होकर आपस में कटकर मरजाना और पाण्डवों का द्रौपदी के पास रहने का नियम करना॥

नारदजी बोले हे पाण्डवो! वे दोनों सुन्द और उपसुन्द दैत्य पृथ्वी आकाश और पाताल तीनों लोकों को जीतकर देव गन्धर्व यक्ष नाग और मनुष्यों के सब रत्नों को लेकर निर्भय और विना शत्रुके होकर बड़े आनन्द से देवताओं के तुल्य विहार करने लगे और सुन्दर स्त्री भोजन और आनन्ददायक पान आदि अनेक भोगों को नित्यप्रति भोगकर बड़ी प्रसन्नता से रहने लगे और अपनी इच्छाके अनुसार वन, महल, पर्वत, उद्यान आदि में जहां चाहते विहार करने लगे एक समय वे दोनों भाई मद्यपान करके स्त्रियों सहित विन्ध्याचल पहाड़ के ऊपर गये और एक अत्यन्त रमणीक स्थान पर सघन वृक्षों की लताओं में जहां नाना प्रकार के फूल फूल रहे थे सुन्दर आसन बिछा बिछाकर स्त्रियों सहित बैठ गये वे स्त्रियां उनके सन्मुख खड़ी होकर उनकी स्तुति के गीत गाने लगीं उस

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

समय तिलोत्तमा ने लाल वस्त्र ओढ़कर त्रिलोकी के मोहनेवाला शृङ्गार किया और समय पाकर नदी के किनारे से धीरे धीरे फूल बीनती हुई उस ओर को चली जिस ओर वह दोनों भाई मद्यसे मतवाले होकर उन स्त्रियों का गाना और नाचना देखरहे थे उसको देखकर वे दोनों दैत्य काम से व्याकुल होगये और अपने २ आसन छोड़ २ कर उस तिलोत्तमा के पास भागकर गये सुन्द ने उसको अपने दाहिने और उपसुन्द ने बायें हाथसे पकड़ लिया और दोनों मद्यपान धन ऐश्वर्य और कामदेवके मदसे मत्त होने के कारण कहनेलगे कि यह मेरी स्त्री है उस समय सुंदने कहा कि तेरी यह बड़ी है और मेरी भार्या है यह सुनकर उपसुंद ने कहा कि नहीं तेरी यह बहू है और भार्या मेरी है इस प्रकार से आपस में झगड़ा करते २ वह दोनों क्रोध के आवेश में आगये और परस्पर प्रीति को छोड़कर अपने २ हाथों में गदा लेकर युद्ध करने लगे और एक दूसरे के प्रहार से मरकर रुधिर भरे हुये सूर्य की समान चिलकते हुये पृथ्वी पर गिरपड़े वे स्त्रियां यह देखकर भागगईं और सब दैत्य भयभीत और दुःखित होकर पाताल लोक चले गये १।२० यह देखकर ब्रह्माजी प्रसन्न हुये और सब देवता और महर्षियों के साथ वहां आकर तिलोत्तमा की बड़ाई की और उसको वरदान दिया कि जिन जिन लोकोंतक सूर्यका प्रकाश जाता है उन उन सब लोकों में जहां तेरी इच्छा होगी तू जा सकेगी और तेरे शरीर में ऐसा तेज रहैगा कि तुझको कोई अच्छी प्रकार से न देख सकैगा ब्रह्माजी इस प्रकार से तिलोत्तमा को वरदान दे इन्द्रको तीनों लोक के राज्यपर स्थापित करके अपने लोकको चले गये २१।२४ हे पांडवो! देखो वे दोनों भाई आपस में परम प्रीति होने परभी स्त्री के कारण से आपस में कटकर मरगये इसी कारण से मैं तुमको भी कहताहूं कि तुम भी आपस में परम स्नेह रखतेहो कहीं एक स्त्री होने के कारण से तुममें आपस में विरुद्ध न होवै इससे जो तुम मेरा प्रिय किया चाहतेहो तो ऐसा उपाय करो जिसमें तुम्हारा स्नेह ज्यों का त्यों बना रहै वैशम्पायनजी बोले हे राजा जनमेजय! यह सुनकर पांडवोंने नारदजीके सन्मुख एक २ वर्ष द्रौपदी के पास बारी बारी से रहनेका नियम किया और यह प्रतिज्ञा की कि हममें से जो कोई एक दूसरे को द्रौपदी के पास बैठा हुआ देखे वह ब्रह्मचारी रहकर बारह वर्षतक वनवास करै इस नियम को सुनकर नारदजी प्रसन्न होकर अपनी इच्छा के अनुसार चलेगये और पांडव उसी नियम से रहने लगे इस कारण से हे राजा जन-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मेजय ! पांडवों में एक स्त्री होनेपर भी कभी विरुद्ध नहीं हुआ २५। ३१॥

इति श्रीभाषामहाभारते आदिपर्वणि द्विशताधिकद्वादशोऽध्यायः २१२॥

दोसौतेरहका अध्याय।

एक ब्राह्मण के काम करने को अर्जुन का अस्त्र लेनेको महल के भीतर चला जाना और ब्राह्मणका काम करके अपनी प्रतिज्ञा के अनुसार वनवास को चला जाना॥

वैशम्पायनजी बोले हे राजा जनमेजय ! पांडव अपने अस्त्रों के प्रताप से सब राजाओं को जीतकर वहां नियमपूर्वक बसने लगे और वह द्रौपदी उन पांचोंके वशमें रहती आई पांडव द्रौपदी से और द्रौपदी अपने पांचों पतियों से बड़ा स्नेह रखतीथी और पांडवों के धर्मसे राज्य करनेपर कौरव लोग निर्दोष होगये और उनकी बड़ी वृद्धि हुई एक समय ऐसा हुआ कि एक ब्राह्मण की कुछ गाय चोर चुराकर ले चले वह ब्राह्मण क्रोधमें भरा हुआ खाण्डवप्रस्थ में दौड़ा हुआ आया और बड़े ऊंचे स्वर से पांडवों से पुकार २ कर कहने लगा कि दौड़ो महाराज मेरी गौवें नीच मनुष्य चुराकर लिये जाते हैं आपके राज्य में ऐसा क्योंकर होवे कि कौवे शांत स्वभाव ब्राह्मणों की हविको बिगाड़ें और सिंहके चलेजाने पर उसके शून्यस्थान में शृगाल राज्य करें जो राजा षष्ठांश भागका लेनेवाला प्रजाकी रक्षा नहीं करता है वह सब लोक के पापका भागी होता है इससे इस मेरे रोने पुकारने और अपने धर्मको समझकर मेरी रक्षा कीजिये १। १० वैशम्पायनजी बोले हे राजा जनमेजय ! अर्जुन उस ब्राह्मण के रोने पुकारने को सुनकर बोला कि तुम किसी प्रकारका भय मत करो और वहांसे अपने शस्त्र लेने को गया परन्तु जहां उसके शस्त्र रक्खे हुये थे उस स्थान पर युधिष्ठिर को द्रौपदी सहित बैठा हुआ जानकर वहां न जासका और उस ब्राह्मणके रोने पुकारने को समझकर विचार करनेलगा कि जो अपने द्वारपर रोते हुये आये हुये ब्राह्मणकी रक्षा नहीं करताहूं तो बड़ी नास्तिकता होगी और जो भीतर शस्त्र लेने जाताहूं तो प्रतिज्ञा भंग होने से बड़ा अधर्म होगा और राजा युधिष्ठिरका अपमान होगा अब क्या करना चाहिये महल में भीतर चले जाने पर मुझको बारह वर्षतक वनवास करना पड़ेगा और ब्राह्मण की रक्षा न करने से क्षात्रधर्म को कलंक लगेगा और अधर्म होगा सो धर्म सदैव करना चाहिये वनवास धर्म के आगे तुच्छ है इससे जो धर्मके करने से वनमें मेरे प्राण भी जाते रहें तो कुछ संदेह नहीं है यह विचारकर अर्जुन महल

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

के भीतर चला गया और युधिष्ठिर से संदेशा कहलाकर अपने अस्त्र लेआया और उस ब्राह्मण से बोला कि अब शीघ्रता करो जिसमें चोर दूर न निकल जावें मैं तुम्हारा धन दिवाकर लौटूंगा यह कहकर अर्जुन कवच और अस्त्र धारण करके रथमें बैठकर उन चोरों के पीछे २ चलागया और उनको मारकर उस ब्राह्मण को उसकी गाय दिलाकर उसे प्रसन्न करके अपने घरको लौट आया ११। २४ घरमें आनेपर अर्जुन सब कुलके वृद्ध मनुष्यों को प्रणामकर राजा युधिष्ठिर के चरण छूकर बोला कि महाराज मुझको वनवास करने की आज्ञा दीजिये मैंने अपनी प्रतिज्ञा के प्रतिकूल आपके द्रौपदी के साथ बैठे हुये दर्शन किये और नियम को उल्लंघन करके मन्दिर के भीतर चलागया युधिष्ठिर यह अप्रिय बात सहसा सुनकर बड़ादुःखी हुआ और अर्जुन से कहने लगा कि भाई तुमने जो ब्राह्मण का काम करने को हमारे द्रौपदी के पास होने के समय मन्दिर में प्रवेश किया है मैं उस बात से अप्रसन्न नहींहूं जो बड़े के पास छोटा ऐसे समय में चलाजाय तो कुछ दोष नहीं है हां जो बड़ा छोटे के पास चला जावै तौ अलबत्ता अधर्म है इससे हे अर्जुन! मेरा कहना मान और वनको मत जा तैंने अधर्म नहीं किया है यह सुनकर अर्जुन बोला कि महाराज मैंने आपही से सुना है कि धर्मको बहाना करके कभी नहीं छोड़ना चाहिये इससे सत्य धर्मको नहीं छोड़ूंगा वैशम्पायनजी बोले हे राजा जनमेजय! अर्जुन राजा युधिष्ठिर से इस प्रकार से कहकर और उससे वनमें बारह वर्षतक वास करने की आज्ञा लेकर वनको चल दिया २५। ३३॥

इति श्रीभाषामहाभारते आदिपर्वणि द्विशताधिकत्रयोदशोऽध्यायः २१३॥

दोसौचौदह का अध्याय।

अर्जुन का ब्राह्मणों सहित हरद्वार में वास करना और वहां उलूपी नाम नाग कन्या से संगम होना॥

वैशम्पायनजी बोले हे राजा जनमेजय! अर्जुन के वनवास को चलनेपर उसके साथ बहुत से वेदपाठी ब्रह्मज्ञानी यती ब्रह्मचारी भगवद्भक्त सूत पौराणिक कथक ऊर्ध्वरेता और सुन्दर आख्यानों के कहनेवाले ब्राह्मण भी हो लिये और अर्जुन उन सबके साथ रमणीक वन, सरोवर, नदियां, देश और तीर्थों को देखता हुआ हरद्वार में गंगातट पर पहुँचा और वहां अपना आश्रम किया और एक बड़ा भारी कौतुक किया उसको हे जनमेजय! हम तुमसे कहते हैं वे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ब्राह्मण लोग वहां गंगातट पर अग्निहोत्र करने लगे और वह उन ब्राह्मणों में रहने लगा उन ब्राह्मणों के उन अग्निहोत्र आदि क्रियाओं के करने से वह स्थान अत्यन्त सुशोभित होगया एक दिन यह कौतुक हुआ कि अर्जुन गंगाजी में स्नान करने को गया और स्नान तर्पण करके अग्निहोत्र करने को बाहर निकलने को था कि नागराज की उलूपीनाम कन्या उसके सुन्दर स्वरूप पर कामासक्तहो उसको हरकर अपने घरमें लेगई अर्जुन उस घर में बलती हुई अग्नि देखकर अग्निहोत्र करके अग्नि देवता को प्रसन्न कर उस कर्मके पूरा होने पर हँसकर उस नागराज की कन्या से पूंछने लगा कि यह कौन देश है और तू किसकी पुत्री है और यह सहसा काम तैंने क्यों किया है यह सुनकर उलूपी बोली कि मैं ऐरावत नागके कुलमें कौरव्यनाम नागराजकी पुत्रीहूं तुझे गंगा स्नान करते देखकर तेरे स्वरूप पर कामदेव से पीड़ित होकर तुझे यहां ले आईहूं अब मेरा मन सिवाय तेरे दूसरे को नहीं चाहता है तूभी मुझे अंगीकार करके प्रसन्नकर १।१९ यह सुनकर अर्जुन बोला कि मैंने धर्मराज की आज्ञा से बारह वर्ष तक ब्रह्मचर्य व्रत लिया है इससे मैं अपने वशमें नहीं हूं और इधर तेरा भी अभीष्ट किया चाहताहूं आजतक मैंने कभी न झूंठ कहा है न अपनी प्रतिज्ञाको मिथ्या कियाहै इससे ऐसी बात विचार जिसमें तेरी भी कामना पूरीहो और मेरा धर्म न जाय यह सुनकर उलूपी बोली कि हां मैं जानतीहूं कि तुम सब भाइयों ने द्रौपदी के पास रहने का नियम और प्रतिज्ञा की थी और उसके भंग होने के कारण से तुमने बड़े भाई की आज्ञा से बारह वर्ष तक वनवास करने और ब्रह्मचर्य रहनेका व्रत लियाहै परन्तु मेरी कामना को पूरा करने में तुम्हारा धर्म नहीं जायगा क्योंकि दुःखीकी भी रक्षा करना तुमको उचितहै और जो मेरे अभीष्ट के करने में तुम्हारा यत्किंचित् धर्म का लोपभी होवे तो मेरी प्राणरक्षा के फलसे वह धर्म ज्योंका त्यों बना रहैगा मैंने तुम्हारी भक्ति की है तुमको भी मुझे चाहना उचित है और जो तुम मेरी मनोकामना को पूरी न करोगे तो मुझे जीती हुई न देखोगे इससे इस प्राणदान करने के उत्तम धर्मको करो मैं तुम्हारी शरण में आई हूं तुम दुःखी और अनाथोंकी सदैव से रक्षा करते चले आये हो इससे मुझ दीन दुःखी रोती हुई और अपने से प्रीति करनेवाली पर कृपा करो और मेरी इच्छाको पूरा करो २०।३१ वैशम्पायनजी बोले हे राजा जनमेजय! अर्जुन उलूपी की उक्त बात को सुन

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कर उसीके अभीष्ट को पूरा करना अपना धर्म समझकर रात्रिभर उस नाग-राज के घरमें उलूपी के पास रहा और प्रातःकाल होने पर वहीं हरद्वारमें अपने स्थान को चला आया और वह कन्या उसको पहुँचाकर अपने घर को चली गई और यह वरदान दे गई कि सब जलचर जीव आजसे तेरे वश में होकर रहेंगे ३२। ३५॥

इति श्रीभाषामहाभारते आदिपर्वणि द्विशताधिकचतुर्दशोऽध्यायः २१४॥

दोसौपन्द्रह का अध्याय।

अर्जुनका अनेक तीर्थ और देशोंकी यात्रा करना और मणिपूर नगर में पहुँचकर वहांके राजाकी कन्या से विवाह करना और उसके पुत्र होने पर वहां से चला आना॥

वैशम्पायनजी बोले हे राजा जनमेजय! अर्जुनने वहां आकर सब वृत्तांत ब्राह्मणों को सुनाकर उन सबके साथ वहां से हिमालय पर्वत के पार्श्वको चल दिया और अगस्त्यवट और वशिष्ठगिरिपर होता हुआ भृगुतुंग तीर्थ में पहुँचा और वहां स्नान करके ब्राह्मणों को सहस्रों गऊ और स्थान पुण्य करके हिरण्य-बिंदुनाम तीर्थ में पहुँचा और वहां स्नान करके सब ब्राह्मणों सहित पुण्य स्थानों को देखता हुआ पूर्व दिशा को देखने की इच्छा से पहाड़ परसे उतर कर यात्रा की और नैमिषारण्य में उत्पलिनी नाम नदी को देखता हुआ नंदा, अपरनन्दा, कौशिकी, महानदी, गया और गंगा आदि अनेक पुण्य नदी तीर्थ और आश्रमोंमें होता और सब जगह दान पुण्य करता हुआ अंग बंग और कलिंग नाम देशोंके तीर्थों में पहुँचा और बहुत कुछ वहां भी दान पुण्य किया इसके पीछे कलिंग देशकी सीवां पर पहुँचने पर सब ब्राह्मण लोग अर्जुन से बिदा होकर लौट आये और अर्जुन थोड़े आदमियों को अपने साथ लेकर समुद्रके किनारे पहुँचा और वहां से रमणीक स्थानों और घरों को देखता महेंद्र पर्वत पर तपस्वियों के दर्शन करता हुआ मणिपूर नगर में पहुँचा वहां के सब तीर्थ और पुण्य स्थानों को देखकर वहां के चित्रवाहन नाम राजा के पास गया उस राजा के चित्रांगदा नाम एक बड़ी स्वरूपवान् कन्या थी दैवयोग से अर्जुन उस कन्या को नगर में विचरते हुये देखकर उसके स्वरूपको निहार कर उस पर कामासक्त होगया और राजा के पास जाकर बोला कि मैं क्षत्री हूं अपनी कन्या को मुझे दीजिये यह सुनकर राजा पूंछने लगा कि तू किस का पुत्रहै और तेरा नाम क्या है अर्जुन बोला कि मैं पांडव हूं और कुंतीका पुत्रहूं यह

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सुनकर वह राजा बोला कि हमारे कुलमें प्रभंजननाम एक राजा था उसने संतान न होने के कारणसे महादेवजी की तपस्या की महादेवजी ने प्रसन्न होकर उसे वरदान दिया कि तेरे एक संतान होगी तबसे हमारे कुल में जो राजा होता है उसके एकही संतान होती है सो हमारे पुरुखाओं के तो सबके पुत्र हुये और मेरे अकेली यह कन्या हुई है परन्तु मैं इस कन्याही को पुत्रके समान मानताहूं और इस कन्याको अपने वंश के चलाने की इच्छा से इस प्रतिज्ञापूर्वक तुम्हें देसक्ताहूं कि इसके जो पुत्र होवे वह हमारे कुलका बढ़ाने वाला होवे यह सुनकर अर्जुन लड़के को देना अंगीकारकर वहां तीन वर्ष बसकर उस कन्या के पुत्र उत्पन्न होने पर वहां से राजाकी आज्ञा लेकर और अपनी स्त्री को छाती से लगाकर अन्य देशोंमें घूमने को चल दिया १।२७॥

इति श्रीभाषामहाभारते आदिपर्वणि द्विशताधिकपंचदशोऽध्यायः २१५ ॥

दोसौसोलह का अध्याय।

अर्जुनका दक्षिण दिशा के तीर्थों को देखने जाना और सौभद्रनाम तीर्थ पर स्नान करते में एक ग्राह करके अर्जुन का पैर पकड़ना और उस ग्राहका अर्जुन के छूने पर स्त्री होजाना ॥

वैशम्पायनजी बोले हे राजा जनमेजय! अर्जुन मणिपूरसे चलकर दक्षिण दिशा में समुद्रके तटपर गया और वहांके पुण्यतीर्थ जहां बड़े २ तपस्वी रहते थे देखने लगा वहांके तपस्वियों ने उससे कहा कि यहां पांच तीर्थों पर जाना निषेध हैं वहां तुम मत जाना वह तीर्थ यह हैं अगन्त्य १ सौभद्र २ पौलोम ३ कारंधम ४ और भरद्वाज तीर्थ ५ अर्जुन यह सुनकर और उन तीर्थों को शून्य देखकर उन तपस्वियों से हाथ जोड़कर पूंछने लगा कि महाराज! इन तीर्थों पर जाना क्यों निषेध है यह सुनकर तपस्वी बोले कि इन पांचों तीर्थों में पांच बड़े २ मगर रहते हैं जो कोई मनुष्य उनमें स्नान करने जाता है वह उसको खींचकर लेजाते हैं इससे उन तीर्थों पर जाना वर्जितहै यह सुनकर अर्जुन मना किये जाने पर भी उन तीर्थों के देखने को चलागया और सौभद्रनाम तीर्थपर पहुँचा सहसा उसमें स्नान करने लगा उस समय उस तीर्थ में रहने वाले ग्राहने आकर अर्जुनका पैर पकड़ लिया अर्जुन उसे कुछ न समझ बल से जलके बाहर खींचलाया वह ग्राह जलके बाहर आकर अर्जुनके छूतेही दिव्य स्त्री होगया अर्जुन उसको देखकर अचरज में आगया और प्रसन्न हो

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कर उससे पूंछने लगा कि तू कौन है कहां से आई है और यह पाप कर्म क्यों करती है १। १५ यह सुनकर वह स्त्री बोली कि मैं देवारण्य में विहार करने वाली बर्गानाम अप्सराहूं और कुबेरकी अत्यन्त प्यारीहूं मेरी चार सखी इच्छानुसार चलने वाली और हैं उनमें से एकका नाम सौरभेयी है दूसरी समीची नाम तीसरीका नाम बुद्बुदा है और चौथीको लता कहते हैं एक समय हम पांचों कुबेरके घरको जातीथीं राहमें हम सबने एक वन में एक शंसितव्रत वेदपाठी को तपस्या करते देखा उस ब्राह्मण के तेजसे वह वन सूर्यकी समान प्रकाशित होरहा था हम पांचों उसकी तपरूप उत्तमता को देखकर उसकी तपस्या भंग करने को आकाशसे पृथ्वीपर उतर आईं और गाती नाचती और अनेक भाव दिखाती उस ब्राह्मण के सन्मुख गईं परन्तु उसका चित्त चलायमान नहीं हुआ और वह अपनी तपस्या करता रहा उपरांत उसने हम पांचों के आचरण को देखकर क्रोध करके शाप दिया कि तुम पांचों ग्राह होकर सौ वर्ष तक जलमें वास करो १६। २३॥

इति श्रीभाषामहाभारते आदिपर्वणि द्विशताधिकषोडशोऽध्यायः २१६॥

दोसौसत्रहका अध्याय।

अर्जुनका पांच अप्सराओं को शापसे छुटाना और मणिपूर होकर गोकर्ण की यात्रा करना॥

वह स्त्री बोली कि उस ब्राह्मण से शाप दिये जाने पर हम पांचों महादुःखी हुईं और उस ब्राह्मण की शरणागत जाकर कहने लगीं कि महाराज! हम पांचों ने यह अयोग्य बात अपनी अवस्था और कामसे दर्पित होने के कारण से की थी आप उसको क्षमा कीजिये स्त्रियों को धर्मात्मालोग अवध्य कहते हैं इससे आपको हमें मारना उचित नहीं है ब्राह्मण को बुद्धिमान् मनुष्य सब प्राणियों का मित्र कहते हैं और अच्छे लोग शरण आयेकी रक्षा करते हैं इससे आप कृपा करके हमारे अपराध को क्षमा कीजिये यह सुनकर वह सूर्य के समान तेजस्वी ब्राह्मण प्रसन्न हुआ और कहने लगा कि शत और शतसहस्र दोनों अनन्त संख्यावाची हैं परन्तु तुम्हारे लिये वह शतवर्ष सौही वर्ष होंगे मैंने कभी आजतक हँसी में भी झूठ नहीं कहा है इससे तुम पांचों को सौ वर्षतक ग्राहरूप धरकर जल में वास करना पड़ैगा उपरान्त जब कोई पुरुषोत्तम जिसके पैरको तुम पकड़ोगी तुमको पानी से खींचकर बाहरले आवैगा तब तुम अपने स्वरूप को फिर पाओगी और वे तीर्थ तुम्हारे मोक्ष होने

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पर नारीतीर्थ नामों से विख्यात होंगे और जो कोई उनमें स्नान करैगा वह पवित्र हो जायगा यह सुनकर हम पांचों उस ब्राह्मण को दण्डवत् और परिक्रमा करके बड़ी दुःखी होकर वहांसे चलदीं और चिन्ता करने लगीं कि हम उस मनुष्यको थोड़े काल में कहां पावें जो हमको इस शापसे छुटावे १।१३ इसी अवसर में हमने नारद मुनिको देखा उनको हमने दण्डवत् की और लज्जित होकर उनके समीप खड़ी होगईं नारदजी हमको देखकर पूछने लगे कि तुमको क्या दुःख है हमने सब वृत्तांत कह सुनाया उसको सुनकर उन्होंने कहा कि दक्षिण के अनूपदेश में पाँच तीर्थ बड़े सुन्दर और रमणीक हैं तुम पाँचों जाकर उनमें ग्राहरूप धरकर बसो थोड़े दिनों में राजा पाण्डुका अर्जुन नामी पुत्र तुमको इस शापसे छुटावैगा यह सुनकर हम पाँचों यहां चली आईं और ग्राहरूप धरकर पाँचों तीर्थों में वास करने लगीं सो नारदजी के कहने के अनुसार मैं तो तुम्हारी कृपासे शापसे मुक्त होगई परन्तु मेरी चारों सखियां रह गई हैं उनपर भी कृपाकरके उनको शापसे छुटादो वैशम्पायनजी बोले हे राजा जनमेजय! अर्जुन उस अप्सरा की बातको सुनकर उन चारों तीर्थों में क्रमसे गया और उन चारोंको भी शापसे मुक्त कर दिया तब वे पाँचों अपना २ दिव्य स्वरूप धारण करके अर्जुन से आज्ञा पाकर चलीगईं और अर्जुन उन पाँचों तीर्थों को निर्विघ्न करके चित्राङ्गदा के देखने को फिर मणिपूर नाम नगर को लौट आया और अपने बभ्रुवाहन नामी पुत्रको जो चित्राङ्गदा के उत्पन्न हुआ था देखकर वहां से गोकर्ण की ओर यात्रा करगया १४।२४॥

इति श्रीभाषामहाभारते आदिपर्वणि द्विशताधिकसप्तदशोऽध्यायः २१७॥

दोसौअठारह का अध्याय।

अर्जुन का गोकर्ण होकर पश्चिम समुद्र पर जाना वहां श्रीकृष्णजी से मिलाप होना और रात्रिको वहां बसकर श्रीकृष्णजी सहित द्वारकापुरीको जाना॥

वैशम्पायनजी बोले हे राजा जनमेजय! अर्जुन गोकर्ण पहुँचकर वहां से पश्चिम समुद्र के तटपर गया और वहां के पुण्य तीर्थों और स्थानों की यात्रा करता हुआ प्रभास नाम तीर्थों में पहुँचा उसके वहां आनेका हाल सुनकर श्रीकृष्णजी वहां गये और दोनों नर नारायण बड़ी प्रीति से परस्पर मिलकर आपस में कुशलक्षेम पूंछकर उस वनमें एक स्थान पर बैठगये उस समय श्रीकृष्णचन्द्र ने अर्जुनसे तीर्थ यात्रा करने का कारण पूंछा अर्जुन ने सब

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वृत्तान्त कह सुनाया और वे दोनों वहांसे ठहरनेके लिये रैवत पहाड़ पर चले गये वहां नौकरोंने श्रीकृष्णजीकी आज्ञासे पहिले से वास करनेको स्थान बना रक्खा था श्रीकृष्णजी अर्जुन सहित उस स्थान पर ठहरे और अर्जुन श्रीकृष्ण जी के साथ भोजन करके वहां पर बैठकर नाच और नटोंकी कृत्य देखने लगा इसके पीछे अर्जुन उन सब नाचनेवालों को प्रसन्न करके और उनको जाने की आज्ञा देकर सुन्दर शय्या पर लेटगया और श्रीकृष्णजीसे वन नदी और पर्वतों की कथा कहता हुआ सोगया और जागने पर आवश्यक कृत्यसे निवट कर सुनहरी रथपर चढ़कर द्वारकाको चला उसके आनेका हाल जानकर सब द्वारकावासी उसे देखनेको मार्ग में आकर ठहरगये और उसकी पूजाके लिये द्वारकापुरी को बहुत अच्छी तरहसे सजाया और भोजअन्धक और वृष्णिवंश की सहस्रों स्त्रियां झरोखों पर खड़ी हो होकर अर्जुन को देखने लगीं इसके पीछे अर्जुन द्वारका में पहुँचकर सब वृष्णि अन्धक और भोजवंशी वृद्ध तरुण और बालकोंसे यथायोग्य मिलकर श्रीकृष्णजी के भवनमें गया जो बड़ा रम्य और सब प्रकार के रत्न और भोजन के पदार्थों से सजा हुआ था और वहां श्रीकृष्ण जी के साथ रहने लगा १।२१॥

इति श्रीभाषामहाभारते आदिपर्वणि द्विशताधिकाष्टदशोऽध्यायः २१८॥

दोसौउन्नीस का अध्याय।

द्वारकापुरीवासी क्षत्रियोंका रैवत पहाड़ पर बड़ा उत्सव करना और वहां कृष्णकी बहिन सुभद्राको देखकर अर्जुन का कामासक्त होना और श्रीकृष्णजीका अर्जुनको सुभद्रा के हर लेजाने की सलाह देना॥

वैशम्पायनजी बोले हे राजा जनमेजय! अर्जुन के वहां बहुत दिन बसने पर वहां के सब वृष्णि और अन्धकवंशी क्षत्रियों ने रैवत पहाड़ पर बड़ा उत्सव किया उस उत्सव में उन क्षत्रियों ने ब्राह्मणों को अनेक प्रकार के दान दिये उस पहाड़ के चारों ओरका देश उन क्षत्रियों के डेरों से अत्यन्त सुशोभित हो गया बजन्त्री वहां बजाने गन्धर्व गाने और नाचनेवाले नाच करने लगे और सब वृष्णिवंशी कुमार स्वर्णजटित रथों में चढ़ २ कर उस उत्सवको देखने गये पुरवासी अपनी स्त्रियों सहित झुण्ड के झुण्ड मिलकर कोई पैदल और कोई सवार हो होकर वहां जानेलगे इसके पीछे बलदेवजी रेवती के साथ उस स्थानको गये और बड़ा प्रतापी राजा उग्रसेन भी सहस्र स्त्रियों को साथ लिये

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हुये पहुँचा उसके पीछे पीछे गन्धर्व लोग भी गाते बजाते गये और शाम्ब और प्रद्युम्न जो युद्ध में बड़े दुर्मद थे वहां पहुँचकर देवताओं के सदृश विहार करने लगे और अक्रूर, सारण, गद, बभ्रु, विदूरथ, निशठ, चारुदेष्ण, पृथु, विपृथु, सत्यकि, सात्यकी, भङ्गकार, महारव, हार्दिक, उद्धव और अन्य अन्य लोग अपनी अपनी स्त्रियों को साथ लिये हुये और गानेवालों का गाना सुनते हुये उस उत्सव में पहुँचे इन सबके वहां जुड़ने पर वह स्थान अत्यन्त शोभायमान होगया इन सबके जाने के पीछे अर्जुन और श्रीकृष्णजी भी साथ वहां गये और इधर उधर बिचर कर वहांकी शोभा देखने लगे उस समय उन दोनों ने वसुदेवजी की सुभद्रानाम पुत्री को सखियों के बीचमें बिचरते हुये देखा उसके अत्यन्त सुन्दर स्वरूप की छवि को देखकर अर्जुन कामासक्त होगया यह देखकर श्रीकृष्णजी बोले कि तूतो वनवासी है तेरा मन कामदेव से ऐसा मथित क्यों होता है यह सुभद्रा नाम मेरी बहिन और सारण की सहोदरी और वसुदेवजी मेरे पिता की प्यारी पुत्री है जो तू इसे चाहता है तो मैं पिता से तुझे देने के लिये कहूं यह सुनकर अर्जुन बोला कि हे वासुदेवजी! यह आप की बहिन और वसुदेवजी की पुत्री होकर ऐसा कौन मनुष्य है जिसके मन को न मोहे जो इसका विवाह मेरे साथ होवे तो मेरा बड़ा कल्याणहो हे महाराज अब आप इसके मिलनेका उपाय बताइये जो वह उपाय मनुष्य के करनेका होगा तो अवश्य करूंगा यह सुनकर श्रीकृष्णजी बोले कि क्षत्रियों का स्वयंवर परम विवाह है परन्तु उसमें यह शंका रहती है बिन जाने कन्या किसको प्रिय मानै और जो बलवान् क्षत्रिय होते हैं वे बलसे कन्याको हरकर भी लेजाते हैं वह भी क्षत्रियों के लिये श्रेष्ठ धर्म है इससे हमारी समझ में तो यह आता है कि स्वयंवर करने में न जाने यह मेरी बहिन किसको वरै तुम इसको बलसे हरकर लेजावो यह सुनकर अर्जुन ने श्रीकृष्णजी से सुभद्राको हरकर लेजानेका निश्चय पूरा पूरा करके दूतोंको इन्द्रप्रस्थ में राजा युधिष्ठिर से आज्ञा लेने के लिये भेजा युधिष्ठिर ने सुनकर उसी समय सुभद्रा को हरने की आज्ञा देदी १। २५॥

इति श्रीभाषागहाभारते आदिपर्वणि द्विशताधिकैकोनविंशोऽध्यायः २१९॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दोसौबीस का अध्याय।

अर्जुन के सुभद्राको हरने और बलदेवजी और वृष्णिवंशी क्षत्रियों के क्रोध करनेकी कथा॥

वैशंपायनजी बोले हे राजा जनमेजय! युधिष्ठिर से आज्ञा पाने और श्रीकृष्णजी के दृढ़ सम्मत देने पर अर्जुन सुभद्राको रैवत पहाड़ पर गई हुई जान कर सुनहरे रथमें जिसमें शैव्य और सुग्रीवनाम के घोड़े जुत रहे थे और घटों और जालों से सुशोभित होरहा था कवच धारण करके और खड्ग आदि सम्पूर्ण अस्त्र शस्त्र उस रथ में रखकर उस अग्निकी तुल्य प्रकाशमान और मेघ की समान शब्द करनेवाले रथमें सवार हुआ और अहेर खेलने के बहाने से चलदिया उस समय सुभद्रा रैवत पहाड़ की परिक्रमा और देवताओंका पूजन कर ब्राह्मणों से स्वस्तिवाचन सुनके द्वारकाको आरहीथी अर्जुन उसे देखतेही कामदेवके बाणों से पीड़ित होगया और अपने रथको उसके पास ले जाकर बलसे उसे उठाकर अपने रथ में बैठालिया और रथ हांककर इन्द्रप्रस्थकी ओर चलादिया यह देखकर सुभद्राके साथके मनुष्य दौड़ते और पुकारते हुये द्वारकापुरीको आये और धर्मसभामें आकर सभापालकसे सब हाल कह सुनाया १।१०

यह सुनकर सभापालकने बड़े शब्द करनेवाली सन्नाह की अर्थात् जिसके सुनने से सब सेना युद्ध को तैयार होजावे बजवाई उस शब्दके सुनतेही सब वृष्णि अंधक और भोजवंशी क्षत्रियलोग जो महारथी और सुवर्ण की सी प्रभा रखनेवाले थे और मणि मूंगा आदि पहिने हुये अग्निके समान तेजस्वी देख पड़तेथे अपना २ खाना पीना छोड़कर उस सभामें चले आये और सैकड़ों सिंहासनों पर आकर बैठगये उस समय सभापालक ने उन देवताओं के समान बैठेहुये क्षत्रियों से अर्जुनका सब चरित्र कहा उसको सुनकर वे वीर अहंकारसे उस बातको न सहसके और क्रोधसे लाल २ नेत्र करके पुकार पुकारकर परस्पर कहने लगे कि कवच धनुष और तोमर आदि सब अस्त्र शस्त्र लेआवो और रथोंको जोतो उनके रथोंमें घोड़े जोतने ध्वजा लगाने और अस्त्र शस्त्र लानेकी खड़बड़ाहट से बड़ा शब्द हुआ. उसको सुनकर बलदेवजी नीलाम्बर पहिरे हुये वहां चले आये और उन सब से कहने लगे कि कृष्ण तो चुपका बैठा है इसके मनकी वृत्तिको जाने विना तुम्हारा क्रोध करना और गर्जना निरर्थक है इससे पहिले इससे तो पूंछो कि इसकी क्या इच्छाहै पीछे जो चाहो सो करना यह सुनकर वे सब अच्छा कहकर चुपके होरहे और बलदेवजीके कहने

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

के अनुसार फिर सभा में चलेगये उस समय बलदेवजी ने श्रीकृष्णचन्द्रसे कहा कि यह सब देखकर तुम चुपके क्यों बैठे हो हम सबने तुम्हारे कारणसे अर्जुन का बड़ा आदर सत्कार किया था परन्तु वह कुलकलंकी इस योग्य नहीं था भला ऐसा कौन होगा जो जिस बर्तनमें खाय उसी में छेद करै और दूसरे के उपकारको भूलकर ऐश्वर्यकी इच्छासे विना विचारे ऐसा काम कर बैठे इस अर्जुनने मेरा और तुम्हारा दोनोंका अनादर करके अपनी मृत्युरूप सुभद्राको हराहै उसने मेरे शिरपर पैर रक्खा है सो मैं भी उसके पैरको इस प्रकार से सहूंगा जैसे सर्प के शिरपर पैर रखनेवाले मनुष्यके साथ सर्प बर्ताव करता है मैं इस अर्जुनका अनउपकार नहीं सहसक्ता हूं इससे मैं अकेलाही इस पृथ्वी को कौरवों से रहित करूंगा यह सुनकर सब वृष्णि और अन्धकवंशके क्षत्रिय लोग गरजने लगे और बलदेवजी के साथ हो लिये ११।३२॥

इति श्रीभाषामहाभारते आदिपर्वणि द्विशताधिकविंशोऽध्यायः २२०॥

दोसौइक्कीस का अध्याय।

श्रीकृष्णजी का धर्मयुक्त बातें कहकर यदुवंशियोंका क्रोध निवृत्त करना और अर्जुनका विवाह सुभद्रा से होना व श्रीकृष्णजी का दायज लेकर इन्द्रप्रस्थको आना और सुभद्राके अभिमन्यु पुत्र और द्रौपदीके पांचपुत्रों का उत्पन्न होना॥

वैशंपायनजी बोले हे राजा जनमेजय! जब बलदेवजी और सब वृष्णिवंशी अपने २ पराक्रमके अनुसार अपनी २ बात कहचुके तब श्रीकृष्णजी बोले कि अर्जुन ने हमारे कुलका कुछ अपमान नहीं कियाहै उसने यह कर्म हमारे कुलका सन्मान करके कियाहै क्योंकि वह न यादवोंको धनका लोभी जानताहै जो धन देकर सम्बन्ध करता और न स्वयंवरमें जीतना अच्छा समझताहै और गायकी तरह कन्यादान मांगना भी वीर क्षत्रियों को शोभा नहीं देताहै और न कन्याको मोल लेना अच्छा है इससे उसने इन सब बातों में दोष समझकर धर्मपूर्वक सुभद्राको हरा है अर्जुन सुभद्राके योग्य वर है क्योंकि वह भरतजी और शांतनुके वंशमें उत्पन्न हुआहै भला ऐसा कौन होगा जो अर्जुनके साथ अपना सम्बन्ध न करना चाहे और हमारी समझमें सिवाय महादेवजी के और कोई ऐसा नहींहै जो अर्जुनको युद्धमें जीत सकै क्योंकि वैसेही तो हमारे घोड़े शीघ्र चलनेवाले हैं और वैसाही वह शीघ्र अस्त्र चलानेवाला योधा है इससे तुम सब शीघ्र जाकर मधुर वचन कहकर उसको लौटलाओ और जो वह तुम

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सबको जीतकर सुभद्राको लेकर अपने नगर को चलागया तो तुम्हारी सम्पूर्ण कीर्ति थोड़ेही दिनोंमें नष्ट होजायगी यह सुनकर उन सबों ने वैसाही किया और अर्जुन के लौटआनेपर उसका विवाह सुभद्रा के साथ कर दिया गया इसके पीछे अर्जुन वहां वृष्णिवंशियों से पूजित होकर एक वर्षतक रहा उपरान्त इच्छाके अनुसार विहार करके पुष्करको चलागया वहां रहकर बारह वर्ष में जो शेषकाल रह गयाथा व्यतीत किया उपरान्त वहांसे सुभद्रासहित इन्द्रप्रस्थको आया और राजा युधिष्ठिर से यथायोग्य मिलकर ब्राह्मणों का पूजन करके द्रौपदी के पास गया उसको देखकर द्रौपदी नम्रता से बोली कि वहीं जावो जहां वह यादवकी पुत्री है संसारकी यही रीति है कि पहिला बँधा हुआ बंधन नये बंधनके बांधनेपर ढीला होजाता है यह कहकर वह विलाप करने लगी यह देखकर अर्जुन ने मधुरवाणी कह २ कर द्रौपदी के क्रोध को शांत किया और जल्दी से बाहर आकर सुभद्राका स्वरूप जो लाल रंग के रेशमी वस्त्र पहिरे हुईथी गोपियोंका सा बनाकर उसे घर के भीतर भेजदिया उसने भीतर जाकर कुन्तीको दण्डवत् की कुन्ती ने बड़े प्यारसे उसके मस्तकको चूमा और उसे आशीर्वाद दिया इसके पीछे वह चन्द्रमुखी सुभद्रा द्रौपदी के पास गई और उसको वंदना करके बोली कि मैं तेरी दासी हूं यह सुनकर द्रौपदी प्रसन्न होकर उससे मिली और बोली कि तेरा पति निःसपत्न होवे यह सुनकर सुभद्रा भी प्रसन्न होकर बोली कि ऐसाही होय उन दोनों की बातोंको सुनकर सब पांडव और कुन्ती बहुत प्रसन्न हुये १। २४ इसके पीछे श्रीकृष्णजी अर्जुन को इन्द्रप्रस्थमें पहुँचा हुआ जानकर बलदेवजी और वृष्णि अन्धकवंशी महारथी योधा और भाई पुत्र पौत्रों सहित बड़ी सेना लेकर इन्द्रप्रस्थ को आये उनके साथ वृष्णिवंशियोंका सेनापति अक्रूर,तेजस्वी उद्धव,सात्यकी, कृतवर्मा, प्रद्युम्न, शाम्ब, निशठ, शंकु, चारुदेष्ण, झिल्ली, विपृथु, सारण, गद और २ वृष्णि और अन्धकवंशी क्षत्रीलोग दायज ले लेकर आये उनका आना सुन कर युधिष्ठिरने नकुल और सहदेवको उनको आदर सहित लिवालानेके लिये भेजा वे दोनों आगे चलेगये और सम्पूर्ण वृष्णिवंशियों को सेना सहित आदरपूर्वक खांडवप्रस्थ में लिवालाये और वे सब लोग कृष्णचन्द्र और बलदेव जीके साथ उस नगर में जहां सब मार्ग जलसे छिड़केहुये और पुष्प चन्दन और अगर आदि अनेक चीजों से सुगन्धित और व्यापारियों से शोभायमान

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

होरहेथे पहुँचकर बहुत प्रसन्न हुये और सहस्रों ब्राह्मणों औरपुरवासियों से पूजित होकर बड़े सुन्दर बनेहुये राजभवनों में गये युधिष्ठिर उनके वहां आने पर बलदेवजीसे यथायोग्य मिले और श्रीकृष्णजी के मस्तक को चूमकर हाथ पसारकर मिले इसके पीछे श्रीकृष्णजी भीमसेन से यथायोग्य मिले और युधिष्ठिर सब वृष्णि और अंधकवंशी यादवों से सत्कारपूर्वक वृद्ध बालक और बराबरवालों से यथायोग्य दण्डवत् नमस्कार और आशीर्वाद कह कहकर मिले २५। ४१ इसके पीछे श्रीकृष्णजी ने राजा युधिष्ठिर को अर्जुनके विवाह में कन्यापक्ष के जातिवालों के दियेहुये धनको दिया उसमें एकसहस्र सुनहरी रथ जिनमें चार चार घोड़े थे और एक २ हांकने को सारथी था दशसहस्र मथुरादेशकी गाय एक सहस्र सुवर्ण से भूषित घोड़े, एकसहस्र खच्चर जिसमें पांचसौ सुपेद और पांचसौ काले थे, एकसहस्र स्त्रियां जो स्नान पान और उत्सवआदि सब सेवाके कर्मोंमें बड़ी चतुर बालरहित सुवर्ण के गहने पहिनेहुये और बड़ी सुन्दरथीं एकलाख बाह्लिकदेशमें उत्पन्न हुये घोड़े दश मनुष्योंका बोझभर कृत और अकृत दोनों प्रकारका सुवर्ण और तीन ओरसे मद चूतेहुये हाथी जो युद्ध में कभी न भागें घंटा सुनहरी माला और हाथीवान सहित दिये थे युधिष्ठिरने बलदेवजी और श्रीकृष्णजीके लाये हुये उस धनरूपी समुद्र को जिसमें कम्बल और वस्त्र समुद्रके फेन थे और बड़े २ हाथी मानों उस समुद्रके बड़े २ ग्राहथे लेकर अपने सागररूपी कोशमें रखवादिया और उन सबका बहुत आदर सत्कार किया वे लोग कौरवों के साथ मिलकर गाने बजाने और नाना प्रकारके इच्छानुसार विहार करने लगे और थोड़े दिनोंतक वहां इसीप्रकार से रहकर कुरुओं से पूजित होकर युधिष्ठिर के दियेहुये रत्नों को लेकर बलदेवजी सहित द्वारकाको चलेगये और श्रीकृष्णजी वहीं अर्जुन के साथ रहगये और अर्जुन के साथ यमुनाआदिपर घूम घूमकर अहेर खेलनेलगे थोड़े दिनों में सुभद्राके एक पुत्र उत्पन्न हुआ वह उत्पन्न होने के समय अर्थात् चारों ओर से मन्यु अर्थात् क्रुद्धथा इस कारण से अर्जुन ने उसका नाम अभिमन्यु रक्खा उसकी बाहें बड़ी २ छाती चौड़ी और नेत्र बड़े सुन्दरथे और वह सुभद्रा के इसप्रकारसे उत्पन्न हुआ जैसे यज्ञमें मथनेपर शमीगर्भ से अग्नि उत्पन्न होता है युधिष्ठिर ने उसके उत्पन्न होनेपर दशसहस्र गोदान किये बालकपनही से श्रीकृष्ण और सब चाचा ताऊ आदि उसपर इसप्रकार से प्यार करते थे जैसे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सम्पूर्ण प्रजा चन्द्रमा को चाहती है ४२। ६८ श्रीकृष्णजीने उसके चूड़ा आदि शुभ कर्म आप अपने हाथ से किये और वह थोड़ेही दिनोंमें इसप्रकार से बढ़ गया जैसे शुक्लपक्षकी द्वितीयासे चन्द्रमा दिन २ बढ़ता है इसके पीछे उसने चारप्रकारकी धनुर्विद्या अर्थात् मन्त्रमुक्त जिसका प्रयोग किये जानेपर संहार न हो १ पाणिमुक्त अर्थात् बाण आदि से युद्ध करना २ मुक्तामुक्त अर्थात् प्रयोग और संहार जिसमें दोनों हों ३ और अमुक्त अर्थात् मन्त्रकी साधना से ४ और दशविधि अर्थात् आदान बाणको लेना १ संधना बाण चढ़ाना २ मोक्ष बाण चलाना ३ विनिवर्त्तन चलाये हुये बाणको लौटा लेना ४ स्थान संधानके समय त्रिज्याके बीचको जानना ५ मुष्टि तीन या चार अँगुलियों से पकड़ना ६ प्रयोग अँगुलियों के बीचमें बाण लगाना ७ प्रायश्चित्त हथेली आदिको शत्रुके मारे हुये अथवा अपने बाणसे बचाना ८ मंडल घूम २ कर रथ पर से बाण मारना ९ और रहस्य एकही बार में अनेक लक्ष्यों को भेदना १० और ब्रह्मास्त्र आदि दिव्य अस्त्र और खड्ग आदि मानुष अस्त्र अर्जुन से सीखे और युद्धकी सब क्रिया और रहस्यों को सीखकर सर्वज्ञता में अर्जुन के समान होगया अर्जुन उसको देखकर तृप्त होगया और उसको इसप्रकार से देखनेलगा जैसे इन्द्र उसको देखता था अभिमन्यु थोड़ेही काल में सब गुणयुक्त दुर्दर्श सिंहदर्पी मतवाले हाथी के समान पराक्रमी मेघके समान गर्जने वाला चन्द्रमाकासा मुख और पराक्रम रूप आकृति में श्रीकृष्णजी के समान होगया इसके पीछे द्रौपदी के भी पांचों पतियों से पांच पुत्र उत्पन्न हुये उनमें से युधिष्ठिर के पुत्रका नाम प्रतिविन्ध्य भीमसेन का सुतसोम अर्जुन का श्रुतकर्मा नकुलका शतानीक और सहदेवका श्रुतसेन था ब्राह्मणों ने युधिष्ठिर से कहा तुम्हारा यह पुत्र शत्रुओं के मारने में विन्ध्याचल के समान है इससे इसका नाम प्रतिविन्ध्य रक्खो और भीमसेनके पुत्रका नाम सुतसोम इसकारण से हुआ कि वह बड़ा धनुर्धारी और सहस्र सूर्य और चन्द्रके तेजके समान तेजस्वीथा और अर्जुन ने बहुत दिनों पीछे लौटकर सुना कि पुत्र हुआ है इससे उसके पुत्रका नाम श्रुतकर्मा रक्खागया और शतानीक राजऋषिके समान होने के कारण से नकुल के पुत्रका नाम शतानीक हुआ और कृत्तिकानक्षत्रमें जन्म होनेसे सहदेवके पुत्रका नाम श्रुतसेन किया गया द्रौपदी के ये पांचों पुत्र एक २ वर्ष के अंतर से हुये और धौम्यऋषि ने उनके चूड़ाकर्म आदि सब

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

संस्कार कराये और जब वे बड़े होगये तब अर्जुन ने उन सबको वेद पढ़ाकर संपूर्ण बाणविद्या और दिव्य तथा मानुष अस्त्र सिखाये उन देवकुमारोंकी सी प्रभावाले पुत्रों को देखकर पांडव अत्यन्त प्रसन्न हुये ६६। ८७॥

इति श्रीभाषामहाभारते आदिपर्वणि द्विशताधिकैकविंशोऽध्यायः २२१ ॥

दोसौबाईसका अध्याय।

पांडवों का सब राजाओं को जीतकर धर्म से राज्य करना अर्जुन और श्रीकृष्णजीका जलक्रीड़ा करने को जाना और उनके पास एक तेजस्वी ब्राह्मण का आना ॥

वैशम्पायनजी बोले हे राजा जनमेजय! इसके पीछे पांडवों ने धृतराष्ट्र और भीष्मजीकी आज्ञा से और २ राजाओं को युद्धमें जीता और उस पुण्य-लक्षण पुण्यकर्मयुक्त युधिष्ठिरके आश्रय रहकर सब लोग बहुत प्रसन्न हुये युधिष्ठिरने धर्म अर्थ और काम तीनों को इसप्रकारसे सेवन किया जैसे कोई अपने भाई बन्धुकी सेवा करता है वे तीनों देहधारियों के तुल्य युधिष्ठिर को ब्रह्मका प्राप्त करनेवाला यज्ञों में वेदका प्रयोग करनेवाला और शुभ लोकोंका रक्षक समझकर और उसे मोक्षरूप जानकर उसकी सेवा करने लगे युधिष्ठिर की लक्ष्मी अचल और बुद्धि ब्रह्मपरायण होगई और उसके कारण से सब राजा धर्म करने लगे और इसप्रकारसे सुशोभित होगये जैसे वेदों से बड़ा यज्ञ बढ़जाता है और राजा युधिष्ठिरके पास धौम्य आदि ब्राह्मण इस प्रकार से रहनेलगे जैसे प्रजापतिके समीप देवता रहते हैं और प्रजा लोगों के नेत्र और चित्त इस प्रकार से राजा में लग गये जैसे पूर्ण चन्द्रमा को बड़ी प्रीति से हरकोई देखता है प्रजा की युधिष्ठिरसे यह प्रीति केवल पालन होने के कारण से न थी किंतु उसकी प्रीतिका यह कारण था कि युधिष्ठिरने उनकी सब मनोकामनाओं को पूरा कियाथा १।१० उसने कभी अपने मुख से अयोग्य असत्य असह्य और अप्रिय वचन नहीं कहे और सम्पूर्ण लोकका हितकारी होकर सुखपूर्वक विहार करनेलगा और सब पांडव अपने तेजसे सब राजाओं को तपाते हुये रहने लगे इसी प्रकारसे जब बहुत दिन व्यतीत होगये तब एक दिन अर्जुन ने श्रीकृष्णचन्द्र से कहा कि आजकल गर्मी की ऋतु है मेरी इच्छा यह है कि हम और आप दोनों सुहृज्जनों को साथ लेकर यमुनातट पर चलकर विहार करें यह सुनकर श्रीकृष्णजी बोले कि मेरी भी यही इच्छा है वैशम्पायनजी बोले हे राजा जनमेजय! वे दोनों इस प्रकार से एक दूसरे से कहकर युधिष्ठिर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

की आज्ञापूर्वक सुहृज्जनों को साथ लेकर यमुनातट को चले गये और वहां नानाप्रकार के डेरों में जो वृक्षों के बीच में इन्द्रपुरी की शोभा के समान सुशोभित लगे हुये थे जा उतरे और उनके भोजन के लिये बहुत सुन्दर २ भक्ष्य भोज्य और पेय पदार्थ बनाकर पहुँचा दिये गये इसके पीछे सब मनुष्य यथायोग्य जलक्रीड़ा करनेलगे और उनके साथ सुन्दर नेत्र और पयोधरवाली स्त्रियां भी क्रीड़ा करनेलगीं कोई स्त्री जलमें कोई वनमें कोई भवनों में और कोई श्रीकृष्ण और अर्जुनके साथ खड़ी होकर विहार करनेलगीं ११।२२ उस समय द्रौपदी और सुभद्रा ने उन सब स्त्रियों को वस्त्र दिये और वे स्त्रियां लेकर प्रसन्नतासे कोई नाचने कोई किलकार मारने कोई हँसने और कोई २ मद्य पीने लगीं बहुत सी स्त्रियां एक दूसरी का मार्ग बन्द करके आपस में मारने पीटने लगीं और बहुत सी एकांत में बैठकर गुप्त मन्त्र विचारने लगीं और वह वन वेणु वीणा और मृदंगों के बजने से बड़ा रमणीक होगया इसके पीछे अर्जुन और श्रीकृष्णजी एक रमणीक स्थानपर जाकर बड़े मनुष्यों के बैठने के आसनों पर जा बैठे आपस में भूतकालकी अनेक कथा कहने लगे उस समय उन दोनों अश्विनीकुमारों की तरह बैठे हुये कृष्ण और अर्जुनके पास एक ब्राह्मण आया वह लम्बाई चौड़ाई में एकसा तरुण सूर्यके समान तेजस्वी चीर वस्त्र और जटाधारी था अंग उसका तपाये हुये सुवर्णके समान और ज्वालाके तुल्य नीली पीली प्रभायुक्तथा उसको देखकर अर्जुन और श्रीकृष्ण जी खड़े होगये २३।३३॥

इति श्रीभाषामहाभारते आदिपर्वणि द्विशताधिकद्वाविंशतमोऽध्यायः २२२॥

दोसौतेईस का अध्याय।

अग्निदेवका ब्राह्मण स्वरूप धरकर अर्जुन और श्रीकृष्णसे खांडववन भस्म करनेमें अपनी रक्षा चाहनी और राजा श्वेतक के यज्ञसे अग्नि के अजीर्ण होने की कथा॥

वैशम्पायनजी बोले हे राजा जनमेजय! वह ब्राह्मण अर्जुन और श्रीकृष्ण जीके पास आकर कहनेलगा कि मैं बहुत भोजन करनेवाला ब्राह्मण हूं सदा अप्रमाण भोजन करता हूं तुम दोनों से एक बार की तृप्ति होनेके प्रमाणवाली भोजनकी भिक्षा मांगताहूं यह सुनकर अर्जुन और श्रीकृष्णचन्द्र बोले कि आप के लिये कौन अन्न बनवाया जावै जिससे आप तृप्तहों यह सुनकर वह ब्राह्मण बोला कि मैं अग्नि हूं अन्न भोजन नहीं करताहूं आपको मेरे योग्य भोजन

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

देना उचितहै मेरा भोजन यहहै कि मैं इस खांडववन को जीवजन्तुसहित भस्म करना चाहताहूं इसमें तक्षकनाग अपने परिवारसहित रहता है वह इन्द्रका मित्र है इस कारण से जब कभी मैं इसको जलाने आताहूं तभी इन्द्र मेघ वर्षाकर अग्नि ठण्ढी करदेते हैं इसकारण से मैं आजतक इसको भस्म नहीं कर सका हूं तुम दोनों बड़े वीर और सम्पूर्ण अस्त्रवेत्ता हो इससे मैं तुमसे यह चाहता हूं कि तुम दोनों मेघसे मेरी रक्षा करो और जीव जन्तुओं को वन के बाहर न भागने दो १। ११ इतनी कथा सुनकर राजा जनमेजय ने वैशम्पायनजी से पूछा कि महाराज अग्निदेव उस खाण्डव वन को जिसमें अनेक जीवजन्तु रहते थे क्यों जलाना चाहते थे मुझे इसमें कुछ बड़ा कारण जान पड़ता है आप उस सब कारण को विस्तारपूर्वक कहिये यह सुनकर वैशम्पायनजी बोले कि कारण इसका यह सुनने में आया है कि पहले समय में श्वेतक नाम एक बड़ा बलवान् और इन्द्र की उपमा रखनेवाला राजाथा यज्ञ करने और दान देने में उस राजाकी बराबर आजतक कोई राजा नहीं हुआ उसकी बुद्धि नित्यप्रति यज्ञ करने और दान देने में ही रही एक समय उसने ज्योतिष्टोमादि सोमयज्ञोंको करना प्रारम्भ किया जब यज्ञ करते २ बहुत दिन होगये तब यज्ञ के धूमसे ऋत्विजलोग व्याकुल होगये और राजा को यज्ञ कराना बन्द करके चले गये राजा ने उनसे बहुत प्रार्थना की परन्तु वह धूमसे ऐसे व्याकुल होगये थे कि किसी प्रकार से नहीं लौटे इसपर उस राजा ने उन्हीं ऋत्विजों के द्वारा और ऋत्विजों को बुलाकर वह यज्ञ समाप्त किया १२। २१ इसके पीछे उस राजा ने फिर सौ वर्षतक यज्ञ करने की इच्छा की परन्तु उसको यज्ञ कराने के लिये कोई ब्राह्मण नहीं मिला राजाने अपने सुहृदों सहित ब्राह्मणों को यज्ञ कराने के निमित्त बड़े २ यत्नों से बुलाया और नम्रता से विनयपूर्वक बहुत कुछ दान देने को कहा परन्तु किसी ब्राह्मण ने उसको यज्ञ कराने की हांमी नहीं भरी तब उस राजाने क्रोध करके सब आश्रमवासी ब्राह्मणों से कहा कि जो मैं पतित और ब्राह्मणों की सेवा न करता होउँ तो आप सबको मुझे त्याग करना उचित है आपको मेरे यज्ञ करने की श्रद्धाको नष्ट करना और मेरा त्याग करना उचित नहीं है इससे आप सबों की प्रार्थना करताहूं कि आप सब मेरे ऊपर कृपा कीजिये आपकी कृपा से मैं अपना काम किया चाहता हूं और जो आप मुझसे पाप मानकर मेरा त्याग कीजियेगा तो मैं और ऋत्विजों को बुलाकर अपना

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यज्ञ करूंगा यह कहकर राजा चुप होरहा और वे ब्राह्मण लोग यज्ञ कराने की अपनी सामर्थ्य न देखकर क्रोधित होकर राजा से बोले कि तेरे काम तो नित्यही लगे रहते हैं हम तुझे काम कराते २ थक गये हैं तू हमारे श्रम को न जानकर शीघ्रता कररहा है इससे तू हमको त्याग दे और शिवजीके पास जा वे तुझको यज्ञ करावेंगे यह सुनकर वह राजा क्रोधित होकर वहां से कैलास पर्वत पर चलागया और महादेवजी की तपस्या करने लगा बहुत दिनों तक तो व्रतसे रहा किया कभी बारहवें अथवा सोलहवें दिन मूल फल का आहार कर लेताथा उपरान्त छःमहीने तक ऊंचे को बांह करके आंखें खोले हुये जड़वृक्ष के तुल्य अचल खड़ारहा उसके उग्र तप को देखकर महादेवजी ने प्रसन्न होकर उसको अपने दर्शन दिये और बोले कि राजा मैं तेरी तपस्या से प्रसन्नहूं अब जो तेरी इच्छाहो सो वर मुझसे मांगले यह सुनकर राजा ने महादेवजी को दण्डवत् की और बोला कि २२। ४० महाराज जो आप मुझसे प्रसन्न हैं तो मुझको यज्ञ कराइये यह सुनकर महादेवजी मुसकराकर बोले कि यज्ञ कराना हमारा काम नहीं है परन्तु तैंने हमारी बड़ी तपस्या की है इससे हम तुझको समयपर यज्ञ करावेंगे तू पहले बारह वर्षतक ब्रह्मचर्य रहकर घीकी अखण्डधारा से अग्नि में होम कर इसके पीछे तेरी मनोकामना पूरी होगी यह सुनकर राजा ने वैसाही किया और बारह वर्ष बीतनेपर फिर महादेवजीके पास गया महादेव जी उसे देखतेही बोले कि वेदविधिसे यज्ञ कराना ब्राह्मणोंहीका काम है हमारा काम नहीं है इससे हम यज्ञ नहीं करासक्ते परन्तु हमारे अंश से दुर्वासा नाम ऋषि पृथ्वीपर उत्पन्न हुयेहैं वे हमारी आज्ञा से तुझको यज्ञ करावेंगे अब तू जाकर सामग्री इकट्ठी कर यह सुनकर राजा अपने नगर को आया और सामग्री इकट्ठी करके फिर शिवजीके पास जाकर बोला कि महाराज मेरी सब सामग्री इकट्ठी है अब मैं चाहताहूं कि कलके दिन मैं यज्ञ करने को दीक्षित किया जाऊं ४१। ५२ यह सुनकर महादेवजीने दुर्वासा को बुलाया और कहा कि मेरी आज्ञा से तुम इस राजाको यज्ञ करावो दुर्वासाने यह सुनकर बहुत अच्छा कहकर राजा के साथ जाकर वेदविधि से उस यज्ञ को कराया राजा ने उस यज्ञमें बड़ी दक्षिणा बांटी और यज्ञ पूरा होने पर दुर्वासाजी और सदस्य लोग अपने २ घरको चलेगये और राजा भी अपने नगर को आया उस समय अग्निदेवको अजीर्ण होगया और वह अपने तईं तेजहीन देखकर बड़ी ग्लानि

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

से ब्रह्माजीके पास गये और उनसे कहा कि महाराज मैं निर्बल और तेजहीन हो गयाहूं ऐसी कृपा कीजिये जिसमें मेरा तेज फिर ज्योंका त्यों होजावे यह सुन कर ब्रह्माजी हँसकर बोले कि तुमने बसोर्द्धारा पात्र से अखण्ड धार घृत को बारह वर्षतक पिया है इससे तुमको यह अजीर्ण होगया है तुम म्लानचित्त न हो तुम्हारा तेज फिर ज्योंका त्यों होजायगा अब तुम जाकर खांडववन को भस्म करो जिसमें सब प्रकार के जीवजन्तु रहते हैं उन जीवों की मेदा से तृप्त होने पर तुम्हारी ग्लानि जाती रहेगी इस वनको तुमने पहिले भी देवताओं की आज्ञा से देवताओंके शत्रुओंके रहनेके कारण भस्म कियाथा यह सुनकर अग्निदेव बड़ी शीघ्रतासे दौड़कर खांडववन में चलेगये और क्रोधित हो वायु से प्रेरित कर अकस्मात् उस वनको प्रज्वलित करदिया यह देखकर वनवासी जीव अग्नि बुझाने का यत्न करने लगे सैकड़ों हाथियों ने अपनी सूंड़ों में पानी भर २ के अग्नि पर डाला और २ जीवोंने किसी ने धूल डालकर किसी ने पानी छिड़ककर और किसी २ ने और २ यत्न करके उस अग्निको शीघ्र बुझा दिया इस प्रकार से अग्निदेव ने सात बार क्रोध करके उस वन को प्रज्वलित किया परन्तु हर बार उसकी ज्वाला वनचारी जीवों ने उक्त रीति से बुझा बुझादी ५३ ॥

इति श्रीभाषामहाभारते आदिपर्वणि द्विशताधिकत्रयोविंशोऽध्यायः २२३ ॥

दोसौचौबीसका अध्याय।

अग्निदेवका ग्लानि मानकर ब्रह्माजीके पास जाना और ब्रह्माजीका अर्जुन और श्रीकृष्णके पास जाने को कहना अग्निदेवका उनके पास जाना और उन दोनोंका अग्निकी रक्षा करनी अंगीकार करना ॥

वैशम्पायनजी बोले हे राजा जनमेजय! अग्निदेव यह देखकर निराश होगये और ग्लानि मानकर ब्रह्माजीके पास गये और उनसे सब वृत्तांत कह सुनाया ब्रह्माजी उनकी बातको सुनकर एक मुहूर्तभर विचार करके बोले कि हमने तुम्हारे लिये एक बात विचारीहै उसके करने से तुम अभी इन्द्रके देखते २ खांडववन को भस्म करसक्के हो आजकल नर नारायण देवताओंने देवताओंका कार्य करनेको पृथ्वीपर जन्म लिया है और वे दोनों संसार में अर्जुन और कृष्ण नामसे प्रसिद्ध हैं तुम उन दोनों से खांडववनके समीप जाकर मिलो और उनसे रक्षाके लिये कहो उनकी सहायता से तुम खांडववन को

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भस्म कर सकोगे और वे सब जीव और देवताओं से तुम्हारी रक्षा करेंगे यह सुनकर अग्नि शीघ्रतासे अर्जुन और श्रीकृष्णजी के पास आये और उनसे जो कुछ वार्तालाप हुआ सो हम पहले वर्णन करचुके हैं अर्जुन अग्निदेव की बातको सुनकर बोला कि हमारे पास बहुत से उत्तम और दिव्य अस्त्र हैं उनसे मैं एक इन्द्र क्या बहुतसे इन्द्रोंसे युद्ध करसक्ताहूं परंतु मेरे पास मेरे बल के सदृश धनुष नहीं है जो मेरे वेगको युद्ध में रोकसके और न कोई ऐसा रथ है जिसपर मैं इतने बाण रखलूं कि सन्धान करते २ चुक न जावें इससे सूर्य के तुल्य तेजस्वी रथ और श्वेत दिव्य घोड़े चाहताहूं और श्रीकृष्णजीके पास भी कोई ऐसा हथियार नहीं है जिससे वे नाग और पिशाचों को मारें इससे आप कोई उपाय बताइये जिससे मैं इन्द्रको वर्षा करने से रोकसकूं हम यथाशक्ति अपना पौरुष करेंगे परंतु आप अपने कार्यकी सिद्धिके लिये जो कुछ दे सकें सो दीजिये १।१७॥

इति श्रीभाषामहाभारते आदिपर्वणि द्विशताधिकचतुर्विंशोऽध्यायः २२४॥

दोसौपच्चीस का अध्याय।

अग्निदेवका अर्जुनको अपनी रक्षाके लिये गांडीवधनुष दो अक्षय तरकस और एक दिव्य रथ देना और श्रीकृष्णजी को एक चक्र देना और उन दोनों से रक्षित होकर खांडववनको भस्म करना॥

वैशम्पायनजी बोले हे राजा जनमेजय! अग्निदेव ने उन दोनों की बात को सुनकर अदिति के पुत्र जल के ईश्वर वरुण देवताका स्मरण किया स्मरण करतेही वे वहां आन पहुँचे अग्निदेवने उनको बड़े आदर से लिया और उनसे कहा कि राजा सोमका दिया हुआ जो धनुष और दो तरकस आप के पास हैं उनको हमें दीजिये और उस रथको भी दीजिये जिसकी ध्वजा में वानर का चिह्न है उस गाण्डीवधनुष से अर्जुन और चक्र से श्रीकृष्णजी बड़े भारी कार्य को करेंगे इससे आप इन सब को शीघ्र ले जाइये यह सुनकर वरुण देवता ने तथास्तु कहकर गाण्डीवनाम धनुष जो बड़ा अद्भुत यश बढ़ाने वाला, सब शस्त्रोंसे अभेद्य, सब शस्त्रों को काटनेवाला, शत्रुकी बड़ी भारी सेनाका मारनेवाला, सौ शस्त्रों के समान चिकना अव्रण और देवता गन्धर्वों से पूजित था और दोनों तरकस जिनके बाण कभी कमती नहीं होते थे और एक रथ जिसमें गंधर्वदेशके उत्पन्न हुये श्वेत मन वायुके समान जल्दी चलने

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वाले घोड़े जुते हुये और कपिके चिह्नकी ध्वजा लगी हुई थी और सब अंग रत्न-जटित और शोभायमान थे लाकर अर्जुन को देदिया यह रथ विश्वकर्माजी ने अपने तपके प्रभाव से उत्पन्न किया था और इसी रथ पर बैठकर चन्द्रमाने दैत्यों को युद्धमें पराजय किया था प्रभा इस रथकी सूर्यके समान थी और इसमें जो वानर के चिह्न की ध्वजा लगीहुई थी उसकी लाठी सुनहरी और शोभायमान थी और उस पर नाना प्रकार के जीव रहते थे कि जिस समय वे बोलते थे शत्रुकी सेना के मनुष्यों का उनकी बोली को सुनतेही ज्ञान नष्ट होजाता था अर्जुन कवच और खड्ग आदि अस्त्रों को धारण करके हाथ में गोधांगुलिक अर्थात् चर्मके दस्ताने पहिनकर उस सुशोभित रथ पर प्रदक्षिणा करके और देवताओं को नमस्कार करके श्रीकृष्णजी सहित बैठगया अर्जुन उस धनुष और अक्षय तरकसों को पाकर बहुत प्रसन्न हुआ और अग्निदेव की रक्षा करने को समर्थ होकर बलसे उस धनुष की ज्या को टंकारने लगा उसके शब्द को जिस किसी ने उस समय सुना वह भयभीत होगया इसके पीछे अग्निदेव ने श्रीकृष्णजी को वज्रनाभ नाम चक्र दिया और कहा कि इस चक्र से तुम युद्ध में देवता गन्धर्व राक्षस नाग और दैत्य जो कोई तुमसे युद्ध करैगा उसको जीत लोगे और शत्रु पर बारम्बार छोड़ने पर यह चक्र शत्रुओं को मारकर फिर तुम्हारे हाथ में आ जायगा श्रीकृष्णजी उस चक्र को पाकर समर्थ होगये और वरुणने कौमोदकी नाम दैत्यों के नाश करनेवाली गदा दी इसके पीछे उन दिव्य अस्त्रों को पाकर श्रीकृष्ण और अर्जुन अग्निदेव से बोले कि अब हम सब देवता और असुरों के साथ भी लड़सक्ते हैं १। २९ अर्जुनने कहा तीनों लोक में ऐसा कोई नहीं है जो चक्रपाणि श्रीकृष्ण के सन्मुख युद्ध में आकर जीता बचे और मैं भी इस गांडीवधनुष और अक्षय तरकसों को पाकर सब लोकों को विजय कर सक्ता हूं अब आप इस वनको चारों ओर से घेरकर भस्म कीजिये हम आपकी रक्षा करने को समर्थ हैं यह सुनकर अग्निदेवने अपना प्रज्वलित स्वरूप बनाकर उस वनको जलाना प्रारंभ किया और चारों ओर से ज्वालाओं के उठने से उस वनके सब जीव भयभीत होगये और उस वनकी ऐसी शोभा होगई जैसे सुमेरु पर्वत पर सूर्य की आभा पड़ने से दमदमाने लगता है ३०। ३६॥

इति श्रीभाषामहाभारते आदिपर्वणि द्विशताधिकपंचविंशोऽध्यायः २२५॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दोसौछब्बीस का अध्याय।

अग्नि का अर्जुन और श्रीकृष्ण से रक्षित होकर खांडव वन को जलाना और इन्द्र का उस पर जल वर्षाना ॥

वैशंपायनजी बोले हे राजा जनमेजय! श्रीकृष्ण और अर्जुन दोनों उस वन के एक एक ओर खड़े होकर अग्निकी रक्षा करने लगे जो कोई जीव जंतु उस वन में से निकल के बाहर जाता था वे दोनों बड़ी शीघ्रता से उसे मारकर उसी में डाल देते थे उन दोनों के रथका जल्दी हांकने में बीच नहीं जान पड़ता था जहां किसी जीव को निकलता देखते वहीं क्षणमात्र में पहुँचजाते और चक्र की समान शीघ्र घूमकर जीवों को मार २ कर वनके भीतर से बाहर नहीं जाने देते यह देखकर उस वनके रहनेवाले प्राणी दुःखी हो होकर ऊपर को उछलते और वहीं गिरकर मरजाते बहुत से जीव अधजले और बहुत से ऐसे जिनके कोई कोई अंग जल गये हैं भय से भागने को मन करते और फिर पुत्र पिता माता के स्नेह से बाहर न जासक्के और भस्म होजाते बहुत से अपने दांतों को चबा २ कर ऊपर को उछलते और इधर उधर दौड़ते और फिर वहीं अग्नि में जलजाते बहुत से वाराह और मत्स्य आदि जीव जलके स्थानों पर आश्रय लेते और वहां भी अग्नि की ज्वाला से न बचते बहुत से जीव अग्नि में जलते हुये अग्निस्वरूपही दीखते और बहुत से वनमें से उछल २ कर आकाशमार्ग से भागना चाहते परंतु अर्जुन उनको मारकर गिरादेता और वह भस्म हो जाते उन जीवों ने ऐसा रोरा मचाया जैसे पहिले समुद्र के मथने में हुआ था उस वनकी ज्वाला से सब देवता तप्त होगये और वे सब ऋषियों को साथ लेकर इन्द्रके पास जाकर कहने लगे कि क्या प्रलयकाल आन पहुँचा है जो अग्नि सब मनुष्यों को भस्म किये डालती है इन्द्र यह सुनकर और खांडव वनको आप भी जलता हुआ देखकर सब देवताओं को साथ लेकर अग्नि बुझाने को चले और खांडव वनके ऊपर आकर मेघों को आज्ञा दी कि मूशलाधार जल वर्षकर इस अग्नि को बुझा दो यह सुनकर मेघ उसी प्रकार से वर्षने लगे परंतु अग्निके तेजसे वह धारा वन में न पहुँचसकी ऊपरही ऊपर शुष्क होगई यह देखकर इन्द्रने क्रोध करके और मोटी धारा छोड़ने की मेघों को आज्ञा दी और वह वन मेघ धुआं और अग्निकी ज्वालाओं से समाकुल होगया १।२२॥

इति श्रीभाषामहाभारते आदिपर्वणि द्विशताधिकषड्विंशोऽध्यायः २२६ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दोसौसत्ताईस का अध्याय।

अर्जुनका बाणों से इन्द्रकी वर्षाको रोंकना और असुर किन्नर राक्षस और इन्द्रादिक देवताओं से युद्ध करना ॥

वैशंपायनजी बोले हे राजा जनमेजय! उस समय अर्जुनने चारों ओर से बाण मारकर उस वनको ऐसा ढक दिया कि न उसमें इन्द्रका वर्षाया हुआ जल जासका न कोई जीवजन्तु आकाश मार्ग के बंद होजाने से बाहर निकल सका उस समय उस वनमें तक्षक न था वह कुरुक्षेत्र को गया हुआ था परन्तु उसका पुत्र अश्वसेन नामी वहीं था उसने निकलने के लिये अनेक यत्न किये परन्तु अर्जुन के बाणों से आकाश मार्ग रुका हुआ होने से वह निकल न सका तब उसकी माताने उसको आधा लील लिया और उसके प्राण बचाने के लिये उस वनमें से बड़े वेग के साथ आकाश मार्गको चली अर्जुन ने उसे देखकर बाण मार उसके शिरको काट डाला और उसके मुख में से अश्वसेन निकल कर भागने लगा इन्द्र नें उसे देखलिया और उसे बचाने की इच्छा से ज्योंही अर्जुन उसे मारने को बाण छोड़ने को हुआ त्योंही इन्द्र ने वात की वर्षा करके अर्जुन को मोहित कर दिया और वह तक्षक का बेटा निकल कर चला गया अर्जुन उस माया और सर्प के छल को देखकर क्रोधित हुआ और जो जो जीव आकाश में उस समय उड़ गये थे सबको मारकर दो दो तीन तीन टुकड़े करके गेर देता भया १।१० और अग्निदेव अर्जुन और श्रीकृष्ण ने उस सर्प को शाप दिया कि तू निराश्रय और असंतान होगा इसके पीछे उस छलको याद करके अर्जुन अत्यन्त क्रोधयुक्त होगया और बड़े तीक्ष्ण बाणों से आकाश को छाकर इन्द्रसे युद्ध करनेलगा उस समय इन्द्रने अर्जुन को क्रोधित देखकर अपने तीव्र अस्त्र उसपर चलाये और बिजली सहित बड़े २ मेघों को उत्पन्न करके आकाश को ढककर अन्धकार कर दिया और जल मूशलाधार वर्षने लगा तब अर्जुन ने वायव्य अस्त्रको मंत्रित करके छोड़ दिया उस से सब बादल तितिर बितिर होकर उड़गये बिजलीकी चमक नष्ट होगई और एक क्षण भर में आकाश निर्मल होगया यह देखकर अग्निदेव निर्भय होगये और प्रसन्न होकर सब जीवोंके अंगसे निकली हुई वसाको पीकर बड़े तेजसे वनको प्रज्वलित करने लगे इसके पीछे गरुड़ नाम पक्षी जो बड़ा अहंकार रखते थे उस वनको कृष्ण और अर्जुनसे रक्षित देखकर अपने वज्र सदृश नख चोंच और पंखों

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

से उन दोनों के मारने को वन से आकाशको उछलकर एक साथ उन दोनों के ऊपर आकाश से टूटे और बड़े बड़े विषधर सर्पभी इसीप्रकार से उन दोनों को मारने और काटने के लिये झुण्ड के झुण्ड वहां आन पहुँचे परन्तु अर्जुन ने क्रोध करके उन सब को काटडाला इसके पीछे असुर किन्नर और राक्षस बड़े क्रोधसे गर्जते और हाथों में अयःकरण अर्थात् गोलियों से भराहुआ गोला और चक्राश्म अर्थात् एक यन्त्र जिसको घुमाने से पत्थर दूर तक फेंकसकते हैं और भुशुण्डी अर्थात् चमड़ेकी डोरियों सहित एक पत्थर आदि फेंकने का यन्त्र और २ अनेक प्रकारके अस्त्र शस्त्र लिये हुये अर्जुन और श्रीकृष्ण के मारने को वहां आये और अस्त्र शस्त्रोंकी वर्षा करने लगे उस समय अर्जुनने बड़े तीक्ष्ण बाणों से उनके शिर काट डाले और श्रीकृष्णजी ने चक्र से दैत्यों का नाश किया यह देखकर और दैत्य उनके सम्मुख नहीं गये इसके उपरान्त इन्द्र क्रोध करके श्वेत हाथी ऐरावतपर चढ़कर वज्र हाथमें लियेहुये अर्जुन से युद्ध करने को आया और देवताओं को आज्ञा दी कि इन दोनोंको मारो यह सुनकर यमराजने कालदण्ड कुबेरने गदा वरुणने पाश स्वामिकार्त्तिक ने शक्ति अश्विनीकुमारोंने दिव्य औषधी धाताने धनुष जयने मुशल त्वष्टाने पर्वत अंशुने शक्ति मृत्युने परश्वध अर्यमाने परिघ मित्रदेवता ने चक्र पूषा ने धनुष सविताने खड्ग और एकादश रुद्र अष्ट वसु ४९ मरुत विश्वेदेवा साध्यगण और २ सब देवता अपने २ आयुधों को लेकर अर्जुन और श्रीकृष्णचन्द्र से युद्ध करने को आये वे दोनों वीर उन सबको इन्द्र सहित क्रोधित और युद्धके लिये सन्नद्ध खड़ेहुये देखकर भयभीत नहीं हुये और उन सब देवताओं को वज्र सदृश बाणों से मारने लगे ११।४१ और उनको युद्ध से विमुख कर दिया तब देवता भाग कर भयके मारे इन्द्र के पास भागगये इस बातको आकाशसे मुनिलोग देख कर बड़ा आश्चर्य करनेलगे और इन्द्र उन दोनों के पराक्रमको देखकर प्रसन्न हुआ और उन दोनों से युद्ध करनेलगा और अर्जुन के बलकी परीक्षा करने को उसने पत्थर वर्षाये अर्जुनने अपने तीक्ष्ण बाणों से उन पत्थरों को टुकड़े टुकड़े कर दिया इसपर इन्द्रने और विशेष पत्थर वर्षाये और अर्जुन ने उनको भी टुकड़े २ करके इन्द्रको प्रसन्न किया इसके पीछे इन्द्रने अर्जुन को मारने की इच्छासे मन्दराचल के एक बड़े शिखरको वृक्षों सहित उखाड़ कर फेंका अर्जुन ने उस शिखरको तीव्रबाणों से काटकर टुकड़े २ करडाला उस शिखर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

की इस प्रकारसे पृथ्वीपर गिरने से ऐसी शोभा हुई जैसे सूर्य चन्द्रमा आदि ग्रहों के चारों ओरसे आकाश फटजावे उस समय उस शिखरके पत्थरों के जहां तहां गिरने से उस खांडववनवासी सहस्रों जीव मरगये ४२। ५१॥

इति श्रीभाषामहाभारते आदिपर्वणि द्विशताधिकसप्तविंशोऽध्यायः २२७॥

दोसौअट्ठाईस का अध्याय।

अर्जुनका इन्द्रादिक देवता दैत्य राक्षस किन्नर गन्धर्व और सब वनवासी जीवों को युद्धमें जीतकर अग्निकी रक्षा करना और अग्निका उस वनको १५ दिन तक भस्म करना और उसमें ६ जीवों का जीता बचना॥

वैशम्पायनजी बोले हे राजा जनमेजय! उस पहाड़ के शिखरके टुकड़े २ होकर गिरने से उस वनके रहनेवाले दानव, राक्षस, नाग, व्याघ्र, रीछ, पक्षी, शार्दूल, सिंह, केसरी आदि जीवजन्तु भयभीत होकर भागनेलगे और बाहर निकलनेपर उन दोनों श्रीकृष्णचन्द्र और अर्जुन को आयुध लिये मारनेको खड़ेहुये देखकर बड़ी उद्विग्नता और भयसे चिल्लानेलगे और अग्नि के जलानेके शब्द और इन सब जीवोंके भैरवनाद से उस समय आकाश इसप्रकार से शब्दित होने लगा जैसे प्रलयकाल के मेघ गर्जते हैं उस समय केशवजी ने उन दैत्य आदिके नाश करने को अपना चक्र फेंका उससे वे सब जीव जो बाहर को भागचले थे क्षणभर में कट कट कर अग्नि में गिरपड़े और दैत्यलोग उस चक्र से विदीर्ण होकर ऐसे दीखनेलगे जैसे सन्ध्या समय में बादल दीखने लगते हैं श्रीकृष्ण जी अपना उग्रस्वरूप करके काल के समान पिशाच राक्षस और पशुओं को मारतेहुये विचरने लगे उन दानवों में से कोई भी कृष्ण और अर्जुन का सामना न करसका और देवता भी उन दोनों से हार मानकर विमुख होगये इन्द्र उन सबको विमुख देखकर कृष्ण और अर्जुन की प्रशंसा करने लगे और देवता दैत्य आदि सबके युद्ध से निवृत्त होने पर इन्द्र को सम्बोधन करती हुई आकाशवाणी हुई कि हे इन्द्र! तेरा मित्र तक्षक इस वन में नहीं है वह कुरुक्षेत्र गया हुआ है तुम उसकी ओर से चिन्ता मत करो ये दोनों पुरुष कृष्ण और अर्जुन नामसे विख्यात नर नारायण स्वर्गवासी हैं उनके बलको तुमभी जानतेहो उनको युद्धमें कोई नहीं जीतसक्ता है ये दोनों दुरार्ष और ऋषियों में परमउत्तम हैं इनको युद्धमें जीतनेवाला त्रिलोकी में कोई नहीं है और ये देवता असुर यक्ष राक्षस गन्धर्व नर किन्नर और पन्नग आदि सबके पूज-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नीयहैं इससे हे इन्द्र! अबतुम यहांसे देवताओं सहित चलेजावो और इस खांडव वनका जलना दैव इच्छासे समझो १।२१ यह आकाशवाणी सुनकर इन्द्र क्रोध छोड़कर स्वर्गको चलदिया उसको जातेहुये देखकर सब देवता भी उसके पीछे२हो लिये उनको जातेहुये देखकर अर्जुन और श्रीकृष्णचन्द्रसिंहनादकरने लगे और शंकारहित होकर उस वनको अच्छे प्रकारसे भस्म करनेलगे अर्जुन के बाणों के मारे कोई जीव उस वनके बाहर न जासका सबको इसप्रकार से वनमें मार मारकर डालदिया जैसे वायु बादलों को उड़ाकर नाश करदेतीहै और उस वनके बड़े बड़े पराक्रमी जीवभी अर्जुन से लड़ना तो कहां उसकी ओर देख भी न सके अर्जुन सौ सौ पक्षियों को एक २ बाण से निर्जीव कर करके गिरा देता था जब उस वनवासी हाथी व्याघ्र और पक्षी आदि ने रुकावट के स्थानों में भी अपना कल्याण न देखा तब वे बड़ी करुणा और आर्त वाणी से रोने और पुकारनेलगे विद्याधरों के गणों में से भी कोई अर्जुन का सामना न करसका और जो कोई दैत्य आदि आयाभी तो श्रीकृष्णजी ने तुरन्त उसे मारकर गिरा दिया और वह अग्निमें पड़कर भस्म होगया २२।३५ उस समय अग्निदेव ने मांस लोहू और वसा पी पीकर अपनी ज्वाला को आकाशतक पहुँचादिया और अपने जाज्वल्य नेत्र जीभ मुख और केशवाले स्वरूपको प्रत्यक्ष करके आनन्दपूर्वक उस कृष्ण और अर्जुन के दिये हुये स्वधा भोजन को खाकर तृप्तता प्राप्त की इसके पीछे श्रीकृष्णजी ने तक्षक के घरसे निकलते और मेघ के समान गर्जते हुये भागते मय नाम दानव को देखा अग्निदेव उस दैत्यको जलाने की इच्छासे वायुरूपी रथपर बैठकर उसके पीछे दौड़े और श्रीकृष्णजी ने अपना चक्र उसे मारने को उठाया यह देखकर वह दानव उन दोनों की ओर से फिरकर अर्जुनकी ओर दौड़ा और कहनेलगा हे भरतवंशी! मेरी रक्षा कर अर्जुन उसकी आर्तवाणी सुनकर बोला चला आ डरै मत अब तुझको किसी का भय नहीं है इस प्रकार से अर्जुन के अभय करनेपर उस दैत्यको न कृष्णने मारा और न अग्निने जलाया और वह दैत्य बचगया इतनी कथा सुनाकर वैशम्पायनजी बोले हे राजा जनमेजय! इस प्रकारसे कृष्ण और अर्जुनसे रक्षित होनेपर अग्निदेव ने उस वनको १५ दिनतक भस्म किया और अश्वसेन, मय और ४ शार्ङ्गिक नाम पक्षी इन छःके सिवाय और कोई नहीं बचा ३६।४६॥

इति श्रीभाषामहाभारते आदिपर्वणि द्विशताधिकाष्टविंशोऽध्यायः २२८॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दोसौउन्तीस का अध्याय।

वैशम्पायनका राजा जनमेजय से चारों शार्ङ्गिक पक्षियों के जलने से बचनेका कारण कहना॥

उक्त कथाको श्रवणकर राजा जनमेजय ने वैशम्पायनजी से पूछा कि महाराज! आपने अश्वसेन और मय दानव के बचनेका कारण तो कथाके प्रसंग में वर्णन किया है परन्तु यह नहीं कहा कि वे चारों शार्ङ्गिक पक्षी इस प्रकार से वनके जलनेपर क्योंकर न जले इनके भस्म न होनेका कारण भी सुनाइये यह सुनकर वैशम्पायनजी बोले कि उन चारों शार्ङ्गिक पक्षियों के बचने का कारण यह है कि मंदपाल नाम एक बड़ा तपस्वी और वेदशास्त्र का जाननेवाला महर्षि था उस जितेन्द्रियने ऊर्ध्वरेता ऋषियों के मार्ग पर चलकर बड़ी तपस्या की और कालके आनेपर देह छोड़कर पितृलोकमें पहुँचा परन्तु पितृलोकका फल नहीं मिला यह देखकर उस ऋषिने धर्मराज के पास बैठेहुये देवताओंसे पूछा कि मैंने क्या ऐसा किया है जिससे मेरे लोक नष्ट होगये हैं आपलोग उस बातको बताइये मैं फिर पृथ्वी पर जाकर वही कर्म करूंगा जिसके करने से मुझको अच्छे लोक मिलें १।१० यह सुनकर देवता बोले कि संसार में मनुष्य पर कई ऋण रहते हैं उन ऋणों से मनुष्य ब्रह्मचर्य संतान यज्ञ तप और शास्त्रावलोकनके द्वारा निवृत्त होता है सो निस्संदेह तुम तपस्वी हो और तुमने यज्ञ भी बड़े २ किये हैं परंतु तुम्हारे संतान नहीं है इससे तुमको पितृलोकों का भोग नहीं मिला है संतान उत्पन्न करो संतानके उत्पन्न होने पर तुमको सब तपस्या का फल पूरा २ मिलेगा क्योंकि वेद में कहा है कि पुत्र पिता को पुन्नाम नरक से तारता है इससे तुम ऐसा यत्न करो जिससे तुम्हारे संतान उत्पन्न हो यह सुनकर मन्दपाल चिंता करने लगा कि बहुतसी संतान क्योंकर उत्पन्न होवें और बहुत संतान वाले पक्षियों के पास जाकर जरितानाम शार्ङ्गिक से अपना विवाह किया उससे उस ऋषिके चार पुत्र ब्रह्मवादी उत्पन्न हुये वह ऋषि उन पुत्रों के उत्पन्न होने पर जरिताको छोड़कर दूसरी लपितानाम स्त्री के पास चला गया जरिता उसके चले जाने पर बड़ी चिंतित हुई परंतु उसने उन अंडज ऋषि पुत्रों को खांडव वन से नहीं छोड़ा और उनका पालन करती रही इसके पीछे लपिता के साथ घूमते हुये मन्दपालने अग्निको खांडव वन जलाने को आते हुये देखा वह उसके संकल्प को जानकर अपने छोटे २ बच्चों पर दयाभाव करके अग्निके पास गया और उसकी स्तुति करने लगा हे अग्निदेव! तुम सबके

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मुख और हव्यवाहहो और सब प्राणियों के भीतर गुप्त वास करतेहो पंडितलोग तुमको ब्रह्म दिव्य भौम औदर्य पंचभूतात्मक चंद्र सूर्य और यजमानरूप कहते हैं और तुमहीं यज्ञनिर्वाहक हो तुमनेही इस संपूर्ण विश्व को उत्पन्न किया है विना तुम्हारे यह जगत् जल्दी नाश होजाय तुमको नमस्कार करनेवाले वेदपाठी अपनी स्त्री और पुत्रों सहित सनातन गति को पाते हैं तुम्हीं पालनकर्ता और तुम्हीं संहार करनेवाले हो बिजली सहित आकाश के बादल तुम्हींहो और जो ज्वाला बादलों से निकलकर संसारी प्राणियों को जलाती है वह भी तुम्हीं हो तुम जगत् के सब चर और अचर प्राणियों के उत्पन्न करने वालेहो और वेद भी तुम्हाराही वाक्य है तुमने ही इस संसार में जल उत्पन्न किया है तुम सब जगत् में व्यापक हो और हव्य कव्य अर्थात् देवता और पितरों का भोजन तुम्हीं पहुँचाते हो सूर्य, धाता, बृहस्पति, अश्विनीकुमार, चन्द्रमा और वायु तुम्हीं हो वैशंपायनजी बोले हे राजा जनमेजय! अग्निदेव मन्दपालकी उक्त स्तुति सुनकर प्रसन्न हुये और उससे बोले कि जो तुमको इच्छाहो सो वर मांगो यह सुनकर मन्दपाल हाथ जोड़कर अग्निदेव के सम्मुख खड़ा होगया और बोला कि महाराज! खांडव वनको जलाने में मेरे पुत्रों को छोड़ दीजियेगा यह सुनकर अग्निदेव उससे अच्छा कहकर खांडव वन में चलेगये और चारों ओर से उसे भस्म करनेलगे ११।३३॥

इति श्रीभाषामहाभारते आदिपर्वणि द्विशताधिकोनत्रिंशतितमोऽध्यायः २२९॥

दोसौतीसका अध्याय।

जरिता का अपने पुत्रों को अग्नि से बचाने का उपाय न देखकर विलाप करना और पुत्रों का उसको समझाना॥

वैशम्पायनजी बोले कि हे राजा जनमेजय! उस वन में आग लगने के पीछे उन शार्ङ्गिकों की रक्षा के लिये कोई उपाय न होने के कारण से उनकी जरिता नाम माता बड़े दुःख से विलाप करने लगी और कहने लगी कि यह अग्नि सब वनको भस्म करती हुई इधर को आरही है मुझे इन पक्षहीन बालकों को देख २ कर बड़ा दुःख होरहा है न ये चलही सकते हैं न उड़ सकते हैं और अग्नि आही पहुँची है मुझे यह सामर्थ्य नहीं है कि मैं इनको लेकर आप उड़जाऊं और इनको छोड़कर जाने में मेरा हृदय कांपता है हाय मैं क्या करूं यह भी तो मुझसे नहीं होसकता कि एकको लेजाऊं और एकको न लेजाऊं हे पुत्रो!

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तुम्हारी क्या सलाह है तुम भी तो कहो मुझे तो कोई उपाय तुम्हारे बचाने का नहीं सूझता है इससे मैं तुम सबको अपने पंखों से ढककर यहीं बैठजाऊंगी और तुम्हारे साथ जलकर मरजाऊंगी तुम्हारा निर्दयी पिता यह कहकर तुमको त्यागकर चला गया था कि मेरा बड़ा पुत्र जरितारि कुलका पालन करनेवाला और उससे छोटा सारिसृक्क सन्तान उत्पन्न करनेवाला और उससे छोटा स्तम्बमित्र तपस्वी और सबसे छोटा द्रोणनामी ब्रह्मज्ञानी होगा हाय मैं अब क्या करूं तुममें से किसको लेजाऊं किसको न लेजाऊं बड़ी विपत्ति है वैशंपायन जी बोले हे राजा जनमेजय! वे शार्ङ्गिक पक्षी अपनी माता की बात सुनकर बोले कि हे माता! तू स्नेह छोड़कर वहां चली जा जहां अग्नि न हो क्योंकि तू बनी रहेगी तो तेरे और पुत्र होजायँगे और तेरे हमारे दोनों के यहां जलजाने से सब कुल नष्ट होजायगा इससे इन दोनों बातों को विचारकर जो तुझे अच्छी दीखे उसे कर यह सुनकर जरिता बोली कि पृथ्वी पर सामने यह चूहेका बिल दिखाई देता है तुम उस बिल में घुसजावो वहां तुम अग्नि से बच जावोगे मैं उस बिलके मुखको धूलिसे ढकदूंगी और अग्नि बुझजाने के पीछे फिर धूलिको हटाकर तुम्हें निकाल लूंगी यह सुनकर शार्ङ्गिक बोले कि हमारे अभी पर नहीं आये हैं हमारा शरीर केवल मांसका पिण्डा है इससे जो हम बिल में घुसजायँगे तो चूहा हमको खाजायगा हमको कोई ऐसा उपाय नहीं दीखता है जिससे हम अग्नि से बचें अथवा बिलमें घुसने से हमें चूहा न खाय और हमारी मा जीती रहे और पिता की संतान बनी रहे इससे चूहे के खाने से तो अग्निही में जलना श्रेष्ठ है १।२१ क्योंकि चूहे के खानेसे मरना निंदित मरण और अग्नि द्वारा शरीर छोड़ना उत्तम है २२॥

इति श्रीभाषामहाभारते आदिपर्वणि द्विशताधिकत्रिंशोऽध्यायः २३०॥

दोसौइकतीस का अध्याय।

पुत्रोंके समझाने पर जरिताका उनको छोड़कर अग्नि के भयसे कहीं अन्तको चला जाना॥

जरिता पुत्रोंकी उक्त बात सुनकर बोली कि इस बिलके चूहेको श्येनपक्षी पैरों से पकड़ कर लेगया है इससे इस बिलमें तुमको किसी प्रकार का भय नहीं है यह सुनकर पुत्र बोले कि हमने तो श्येनको चूहेको लेजाते देखा नहीं है और जो ऐसा हुआभी हो तो इस बिलमें और चूहे होंगे वह हमको कभी नहीं छोड़ेंगे यह बात तो संभवभीहै कि जो वायु फिरजावे तो अग्नि हमतक न

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पहुँचे परन्तु चूहेसे बचना किसी प्रकार से नहीं दिखाई देताहै इससे हे माता! निश्चय मृत्यु होने के स्थान से संदिग्ध मृत्यु होने के स्थान में रहना अच्छाहै तू चलीजा और जहां इच्छाहो विचर तेरे और पुत्र होजायँगे यह सुनकर जरिता बोली कि बिलपर से चूहेको लेजाते हुये श्येनको मैंने अपनी आंखों से देखाहै मैं उस श्येन पक्षीके पीछे दौड़ती हुई और यह आशीर्वाद देती हुई कि तुमने हमारे शत्रुको माराहै तुम स्वर्ग में शत्रुहीन होकर आनन्दपूर्वक वास करो चलीगई और उस श्येन को चूहा खातेहुये देखकर चली आई यह सुनकर पुत्र बोले कि माता! हमने किसी प्रकार से यह बात नहीं देखी है और विना देखे या जाने हम बिलमें नहीं जासकते जरिताने कहा कि तुम मेरे कहने से बिल में वास करो मैंने तो अपनी आंखसे चूहे का लेजाना और खा लेना देखाहै यह सुनकर पुत्र बोले कि इस मिथ्या उपचारसे हमारा भय दूर नहीं हो सक्ता हमारी बुद्धिमें इस बिल के भीतर रहना नहीं आताहै तू हमको नहीं जानती है कि हम कौनहैं न तू हमारी कोई है न हम तेरे कोई हैं यह माता पिता पुत्र आदि के सम्बन्ध केवल भ्रांतिरूप हैं तू तरुण और स्वरूपवान् है इससे तू यहां से चलीजा और पिता के पास जानेपर तेरे और पुत्र होजायँगे और हम अग्निमें जलकर शुभलोक पावेंगे और जो कदाचित् अग्नि दूसरी ओर को फिरजावे और हम बचजायँ तो तू फिर हमारे पास चली आइयो वैशंपायन जी बोले हे राजा जनमेजय! वह शार्ङ्गिका पुत्रोंकी उक्त बात सुनकर वहांसे उड़कर चलीगई और अग्नि वनको भस्म करती हुई उस स्थानके निकटही आपहुँची जहां वह मन्दपालके पुत्रथे उसको देखकर उन चारों में से जरितारि नाम शार्ङ्गिक जो सबसे बड़ा था कहने लगा १।१६॥

इति श्रीभाषामहाभारते आदिपर्वणि द्विशताधिकैकत्रिंशतितमोऽध्यायः २३१॥

दोसौबत्तीस का अध्याय।

मंदपालके चारों शार्ङ्गिक पुत्रों का अग्निकी स्तुति करना और अग्निदेव का प्रसन्न होकर उनको न जलाना और उनको वरदान देना॥

जरितारि बोला कि जो मनुष्य आनेवाले कष्ट को देखकर जगता रहता है उसे कष्ट नहीं होता और जो कष्ट के आने के समय को नहीं जानता है वह अत्यन्त कष्ट पाताहै और समीप पहुँची हुई मृत्यु को नहीं देखता उसका भी कल्याण नहीं होता है परन्तु सत्संग ऐसा है कि उससे यह सब उपाधि दूर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

होजाती हैं यह सुनकर सारिसृक बोला कि तुम धीर और मेधावी हो निश्चय यह समय हमारे प्राणों को कष्ट देनेवाला आया है संसार में ज्ञानी और शूर वीर सब नहीं होते हैं कोई जैविद्वाहो होताहै इसके पीछे स्तम्बमित्र बोला कि बड़ा भाई पिता के तुल्य होताहै बड़ाही छोटोंको कष्ट से छुटाता है और जिस बातको बड़ाही नहीं जानता उसको छोटा क्योंकर जान सक्ता है यह सुनकर द्रोण बोला कि सुवर्ण रूप वीर्य और सात जिह्वा रखनेवाली अग्नि वन को जलाती हुई चली आती है वैशम्पायनजी बोले हे राजा जनमेजय ! वह मन्दपाल के चारों पुत्र इस प्रकारसे एक दूसरे से कहकर सावधान होकर अग्नि की स्तुति करने लगे उनमें पहिले जरितारि बोला कि हे अग्निदेव ! तुम वायु के आत्मारूप हो पृथ्वी भी तुम्हाराही रूपहै और जल तुम्हारा वीर्य है जिससे सम्पूर्ण विश्व उत्पन्न होता है और आपकी ज्वाला इस प्रकारसे चारों ओरको फैलती जाती है जैसे सूर्य की किरणें चारों दिशाओं में व्याप्त होजाती हैं इसके पीछे सारिसृक बोला कि हे अग्निदेव ! हमारी माता यहां नहीं है पिताको हम जानते नहीं हमारे पक्ष नहीं जमे हैं इससे हम बालकोंपर आप कृपा करें सिवाय आपके हमारा रक्षक कोई नहीं है आप अपने शिव और सप्त ज्वालायुक्त स्वरूप से हमारी रक्षा कीजिये हम आपकी शरण हैं आपही तप्तस्वरूपहैं और सूर्यकी किरणों में भी आपहीका तेजहै हे महाराज ! हम बालक ऋषियों पर कृपा कीजिये और हमारे स्थान से दूरही रहिये इसके उपरान्त स्तंबमित्र ने कहा हे अग्निदेव ! तुम सब जगत् में व्यापकहो संसार में जो कुछ वस्तु है सब तुमहींहो तुमहीं प्राणियों के आधारहो विश्वके पालन करनेवाले भी तुमहींहो हव्यवाहन और परम हविआदि स्वरूप तुम्हारे ही हैं तुमहीं इस संसारको उत्पन्न करके संहार करतेहो और यह संसार नाश होनेपर तुमहीं में लय होजाताहै इसके पीछे द्रोणने कहा कि हे अग्निदेव ! तुम सब प्राणियों के उदर में बसकर खाये हुये अन्नको पचा देते हो और अपने सूर्यरूप से सब पृथ्वीका रस किरणों के द्वारा पीकर समयपर वृष्टि करके सब संसार का पालन करते हो और सब वनस्पतियों के अंकुरोंको हरा करके समुद्र नदी और तालों को जलसे भरदेतेहो हम सब बालक पालने योग्य और पक्षी रूप हैं हमारी मंगलमूर्ति होकर आप रक्षा कीजिये और हमको इस प्रकार से छोड़ दीजिये जैसे मनुष्य जिस राहमें नदी पड़ती है उस राहको छोड़कर दूसरी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

राहसे चलाजाता है हे अग्निदेव ! तुम पिंगाक्ष लोहितग्रीव कृष्णवर्त्मा और हुताशननामों से प्रसिद्धहो वैशम्पायनजी बोले हे राजा जनमेजय ! अग्निदेव द्रोणकी इस प्रकार से स्तुति सुनकर प्रसन्न होकर बोले कि तुम निश्चय ऋषि हो तुमने ब्रह्मका वर्णन किया है इससे तुम अभय रहो तुम किसी बातका भय मत करो तुम्हारे पिता मंदपाल ने तुमको छोड़ने के लिये पहिलेही से मुझ से वर मांग लियाथा अब मैं तुम्हारी स्तुति सुनकर बहुत प्रसन्न हूं जो तुमको इच्छा हो सो मुझसे वरदान मांगो यह सुनकर द्रोण बोला कि महाराज ! ये मार्जारक हमको आ आकर नित्य सताते हैं आप इनको परिवार सहित भस्म कर दीजिये यह सुनकर अग्निदेव द्रोणसे तथास्तु कह कर वन को जलाने लगे १।२५॥

इति श्रीभाषामहाभारते आदिपर्वणि द्विशताधिकद्वात्रिंशतितमोऽध्यायः २३२॥

दोसौतेंतीस का अध्याय।

अग्नि के बढ़नेपर मन्दपालको पुत्रोंका शोच करना और लपिताको छोड़कर पुत्रों को देखने जाना॥

वैशम्पायनजी बोले हे राजा जनमेजय ! इसके पीछे अग्निके बहुत बढ़नेपर मंदपाल यद्यपि अग्निसे अपने पुत्रोंको छोड़ने के लिये कहचुका था उनकी ओरसे बड़ी चिंता करनेलगा और लपितानाम अपनी दूसरी स्त्री से कहने लगा कि मेरे पुत्र न जाने कैसे होंगे मैं जानताहूं कि मेरे पुत्र बालकहैं वे इस वायु सहित बढ़ी हुई अग्नि से अपनी रक्षा न करसकेंगे और उनकी माता उन पुत्रों को रक्षारहित देख २ कर रक्षाके लिये ऊपर नीचे इधर उधर उड़ती फिरती होगी और अपनी सामर्थ्य उनकी रक्षा करने को न देखकर न जाने कैसे दुःख में होगी हाय मेरे पुत्र जरितारि सारिसृक स्तंबमित्र और द्रोण न जाने कैसे होंगे और उस तपस्विनीका क्या हाल होगा लपिता मन्दपालके इस विलापको सुनकर बोली कि जो तुम अपने पुत्रों को शोच करते हो वह तुम्हारे पुत्र ऋषि और तेजस्वी हैं उनको अग्निका भय नहीं है और अग्निने भी मेरे सामने तुमको उन्हें न जलनेका वरदान दिया है इससे तुम पुत्रों की ओरसे तो स्वस्थहो परन्तु तुम मेरी सौतिके पास जाने को दुःख कर रहे हो तुम्हारी प्रीति मुझमें ऐसी नहींहै जैसी उसमेंहै १।११ स्नेहपात्र और सपुत्र स्त्री को छोड़ना न्याय नहीं है इससे तुम जरिता के पास चलेजावो जिसके कारण

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तुमको इतना दुःख होरहाहै मैं भी इस वनमें खोटे पतिकी स्त्री के समान फिरा करूंगी यह सुनकर मंदपाल बोला कि हम ऐसा काम कुछ काम के वश में होकर नहीं करते हैं हमको केवल अपने पुत्रोंका शोच है क्योंकि अब अग्नि अत्यन्त बढ़ गईहै जो मनुष्य प्रत्यक्ष सन्तानको छोड़कर होनेवालीका यत्न करताहै वह मूर्ख है इससे हम अपने पुत्रोंको देखने जाते हैं यह वनको भस्म करनेवाली अग्नि मेरे हृदय में सन्तापको उत्पन्न कररही है तेरी इच्छामें आवे सो तू कर वैशम्पायनजी बोले हे राजा जनमेजय! उस स्थान से अग्निके हटजाने पर जरिता फिर अपने पुत्रोंके पास चली आई और अपने उन पुत्रों को अग्नि से बचेहुये और रोतेहुये देखकर बड़े प्यारसे आंसू छोड़ २ कर एक २ को लालन करनेलगी इसी अवसरमें मंदपाल भी वहां जापहुँचा उसके पुत्रोंने उसे देखकर दण्डवत् नहीं की मंदपाल अपनी स्त्री जरिता और प्रत्येक पुत्र को प्यार करनेलगा परंतु उनमें से कोई उससे न बोला तब मंदपाल आप ही बोला कि कहो इनमें से तेरा बड़ा पुत्र कौनसा है उससे छोटा कौन है और मँझला और कनिष्ठ कौन २ हैं इस परभी जब जरिता न बोली तब मंदपालने कहा कि तू क्यों नहीं बोलती है मैंभी जबसे तुझे छोड़कर गयाहूं प्रसन्न नहीं रहाहूं १२। २३ यह सुनकर जरिता बोली कि तुमको छोटे बड़े और मँझले पुत्रों से क्या कामहै उसी तरुण और सुंदर अपनी स्त्री लपिताके पास जाओ जहां मुझे सब प्रकारसे हीनको पुत्रों सहित छोड़कर चले गये थे यह सुनकर मंदपाल बोले कि स्त्रियोंके परलोककी नाश करनेवाली दोही बात हैं एक व्यभिचार से पतिसे वैर करना और दूसरे सौति के होने से पतिका अनादर करना सब लोकों में विख्यात अरुन्धतीने भी वशिष्ठजी पर शंका करके सप्त ऋषियों में बैठेहुये उनका निरादर कियाथा इसी प्रकार से तूभी ऐसे कहती है मैं यहां केवल पुत्रों को देखने के निमित्त आयाहूं लपिताभी चलते समय तेरीही तरह कहनेलगी थी पुरुषको स्त्रीका कभी विश्वास न करना चाहिये जो स्त्री पुत्रवती होती है वहभी पतिका काम मनसे नहीं करती है वैशम्पायन जी बोले हे राजा जनमेजय! वह मुनिपुत्र मंदपालकी बात सुनकर पिता की सेवा करनेलगे और मंदपाल भी उनपर प्यार करनेलगा २४। ३२॥

इति श्रीभाषामहाभारते आदिपर्वणि द्विशताधिकत्रयस्त्रिंशतितमोऽध्यायः २३३॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दोसौचौंतीस का अध्याय।

मन्दपालका अपनी स्त्री और पुत्रों सहित किसी और स्थानको चलाजाना व इन्द्रका श्रीकृष्ण और अर्जुनको वरदान देना और उन दोनोंका अग्नि से बिदा होकर मयदानव सहित नदीपर चलेआना ॥

इसके पीछे मन्दपालने अपने पुत्रों से कहा कि हमने तुम्हारे न जलाने के लिये अग्नि से पहिलेही प्रार्थना कीथी और अग्निदेवने भी हमारी उस प्रार्थना को अंगीकार कर लिया था इस हेतुसे और तुम्हारी माताकी धर्मज्ञता और तुम्हारे पराक्रम को जानकर हम पहिले से यहां नहीं आये थे तुमको मेरी ओरसे सन्ताप करना उचित नहीं है क्योंकि अग्नि भी ऋषियों को जानता है और यह भी जानताहै कि तुम ब्रह्मज्ञानी हो वैशम्पायनजी बोले हे राजा जनमेजय! मन्दपाल अपने पुत्रोंको इस प्रकारसे आश्वासन करके पुत्र और स्त्री सहित उस स्थान को छोड़कर दूसरी जगह चला गया इसके पीछे अग्नि सब जीवोंकी वसा और मेदाको पी और वनको जलाकर तृप्त हुआ और अर्जुन को अपना दर्शन दिया और उसी समय इन्द्र मरुद्गणोंको साथ लेकर अर्जुन और श्रीकृष्णजीके पास आया और कहने लगा कि तुम दोनों ने यह ऐसा दुष्कर काम किया है कि देवता भी उसे नहीं कर सक्तेहैं मैं तुम दोनोंसे प्रसन्नहूं तुम्हारी दोनोंकी जो इच्छा हो सो वर मांगो यह सुनकर अर्जुन बोला कि मैं आपसे संपूर्ण अस्त्र मांगता हूं यह सुनकर इन्द्र बोला कि मैं उस समय को जानताहूं जो आगे आनेवाला है तुम तपस्या करोगे और महादेवजी को युद्ध से प्रसन्न करोगे उस समय मैं तुमको आग्नेय और वायव्य आदि सब स्वर्ग के अस्त्र दूंगा इसके पीछे श्रीकृष्णचन्द्रने कहा कि मेरी अर्जुन की ऐसेही प्रीति सदा बनी रहे यह सुनकर इन्द्रने कहा तथास्तु ऐसा ही होगा इस प्रकार से इन्द्र उन दोनोंको वरदान देकर स्वर्गको चला गया और अग्निदेव उस वनको सब जीवों सहित सोलह दिनमें भस्म करके रोगमुक्त हो श्रीकृष्ण और अर्जुन से बोले कि हम जीवों के मांसको जलाकर उनकी मेदा और रुधिरको पीकर बहुत अच्छीतरह से तृप्त होगये हैं अब तुम दोनों जाओ और तुम्हारी इच्छा हो तहां बिचरो यह सुनकर वे दोनों मयदानव सहित अग्नि की प्रदक्षिणा करके वहां से नदी के किनारे को चले आये १।१६॥

इति श्रीभाषामहाभारते आदिपर्वणि द्विशताधिकचतुस्त्रिंशोऽध्यायः २३४॥

दो० विक्रमाब्द उनईस सै इकतालीस सुजान। भादौं कृष्णा अष्टमी तीसर भूसुत मान॥
सो० पाय निदेश उदार श्रीयुत नवलकिशोरको। आदिपर्व सुखसार कुञ्जलाल भाषा करी॥

आदिपर्व समाप्तम्॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

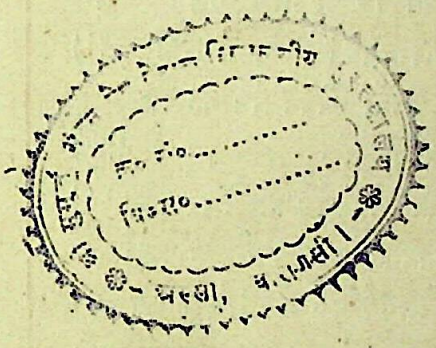

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

विक्रयार्थ पुस्तकों का सूचीपत्र

नाम किताब	क़ीमत
महाभारत भाषा कामिल	२५)
सभापर्वकुञ्जविहारीलालकृत	।।।)
वनपर्वकुञ्जविहारीलालकृत	३)
विराटपर्वकुञ्जविहारीलालकृत	।।।)
उद्योगपर्व पं० महेशदत्तकृत	२)
भीष्मपर्व पं० कालीचरणकृत	१।।।)
द्रोणपर्व पं० कालीचरणकृत	२।।।)
कर्णपर्व पं० कालीचरणकृत	१।।)
शल्यगदापर्व पं० कालीचरणकृत	१)
सौप्तिकपर्व, स्त्रीपर्व पं० कालीचरणकृत	।।=)
अनुशासनपर्व पं० कालीचरणकृत	२)
शान्तिपर्व मय राजधर्म, आपद्धर्म, मोक्षधर्म पं० कालीचरणकृत	४)
अश्वमेधपर्व पं० कालीचरणकृत	१)
आश्रमवासिक, मुशल, महाप्रस्थान, स्वर्गारोहणपं० कालीचरणकृत	।।।)
महाभारतकाशीनरेश दोहा, चौपाई आदि छन्दों में १८ पर्व मय हरिवंशपर्व चार जिल्दों में	१२)
महाभारत सबलसिंह चौहान	३।।)
ग्रन्थ गुरुनानकशाह मुजल्लद कपड़ा वलायती	६।।)

नाम किताब	क़ीमत
योगवाशिष्ठ मुजल्लद	८)
उपनिषद् सटीक पं० यमुनाशंकर	
ईशावास्योपनिषद्	=)
केनोपनिषद्	=)।।
कठवल्लीउपनिषद्	।=)
प्रश्नोपनिषद्	।=)
मुंडकउपनिषद्	।=)
मांडूक्योपनिषद्	।)
तैत्तिरीयोपनिषद्	।।)
ऐतरेयोपनिषद्	।)
छान्दोग्योपनिषद् कामिल	१।।)
उपनिषत्सार	=)।।
उपनिषद् सटीक बाबू ज्वालासिंह	
ईशावास्योपनिषद्	=)
केनोपनिषद्	=)।।
कठवल्लीउपनिषद्	।।=)
प्रश्नोपनिषद्	।।)
मुंडकउपनिषद्	।।)
मांडूक्योपनिषद्	=)
तैत्तिरीयोपनिषद्	।।=)
ऐतरेयोपनिषद्	।)।।
छान्दोग्योपनिषद्	३)
बृहदारण्यकोपनिषद्	३)

मिलने का पता:—

मुंशी विष्णुनारायण भार्गव,

मालिक नवलकिशोर प्रेस—लखनऊ.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

महाभारत भाषा

सभापर्व

क्र० सं०.....
वि०सं०.....
अस्सी, बनारसी।

लेखक

आगरा निवासी

पं० कुंजबिहारीलाल शर्मा

केसरीदास सेठ द्वारा,

नवलकिशोर प्रेस-लखनऊ में मुद्रित व प्रकाशित

चतुर्थावृत्ति]

[सर्वाधिकार रक्षित

सन् १९२२ ई०।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

महाभारत भाषा सभापर्व का सूचीपत्र।

अ०	विषय	पृष्ठ
१	मय दानव को पांडवों के लिये सभा बनाने को स्थान नियत करना	१
२	श्रीकृष्णजी का पांडवों से विदा होकर द्वारकापुरी को जाना	२
३	मय दानव का पांडवों के लिये रत्नजटित सभा बनाना	३
४	युधिष्ठिर कृत ब्राह्मण भोजन व सभा में प्रवेश और अनेक देशके राजा व ऋषियों के आनेपर नृत्य गीतादि होना	५
५	पांडवों की सभा में नारदको आकर नीतिसम्बन्धी प्रश्न करना ...	७
६	नारद से युधिष्ठिर का प्रश्न करना कि आपने ऐसी और सभा देखी है और उनका ब्रह्मादि की सभाओं का वर्णन करना	१५
७	युधिष्ठिर से नारदका इन्द्रकी सभा का वर्णन करना	१६
८	नारदजी का युधिष्ठिर से यमराज की सभाका वृत्तांत कहना	१७
९	नारदका युधिष्ठिर से वरुणकी सभाका वर्णन करना	१९
१०	नारद का युधिष्ठिर से कुबेर की सभा का वृत्तांत वर्णन करना	२०
११	नारद का युधिष्ठिर से ब्रह्माजी की सभा का वृत्तांत वर्णन करना	२२
१२	युधिष्ठिरप्रति नारद का हरिश्चन्द्र नृप का वृत्तांत कथन और राजसूय यज्ञ करने का उपदेश	२४
१३	युधिष्ठिर का धर्म से राजप्रबन्ध करना और अपने भाई सम्बन्धी ऋषि और श्रीकृष्णजी से राजसूय यज्ञ करने की सलाह करना	२६
१४	श्रीकृष्णजी का युधिष्ठिर से राजसूय यज्ञ करने के लिये पहिले जरासन्ध राजाको मारने का उपदेश करना	२९
१५	युधिष्ठिर भीमसेन और कृष्णचन्द्र का जरासंध को मारकर साम्राज्य पदवी पाने का विचार करना	३२
१६	अर्जुन का जरासंध को मारकर साम्राज्य पदवी लेने का मंत्र देना	३३
१७	श्रीकृष्णजी का युधिष्ठिर से जरासंध के उत्पन्न होने की कथा कहना	३४
१८	राजा बृहद्रथ से जरा नाम राक्षसी को अपना वृत्तांत कहना और उसके द्वारा पुत्र मिलने के कारण से अपने पुत्रका नाम जरासंध रखना	३७
१९	चंडकौशिक मुनिका मगध देश में जाना राजा बृहद्रथका उनकी पूजा करना मुनीश्वर का जरासंधको आशीर्वाद देना और बृहद्रथका जरासंधको राज्य देकर तपस्या को चलाजाना	३८
२०	श्रीकृष्णजीका अर्जुन व भीमको साथ लेकर जरासंधके मारनेको मगध देशमें जाना	३९
२१	श्रीकृष्णजीका मय भीम अर्जुनके मगधदेशमें पहुँचना और जरासंधसे प्रश्नोत्तरहोना	४१
२२	श्रीकृष्णजी का जरासंध के वध करने का उद्योग करना	४३
२३	जरासंध और भीमसेन से मल्लयुद्ध होने का वृत्तांत	४६

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अ०	विषय	पृष्ठ
२४	भीमसेन से जरासन्ध वध और श्रीकृष्णजी का सब राजाओं को बन्धन से छुटाकर पांडवों सहित इन्द्रप्रस्थ को आना और पांडवों से विदा होकर द्वारका को चलाआना	४७
२५	अर्जुनादि का चारों दिशाओं के राजाओं को विजय कर बहुतसा धन लाना ...	५०
२६	अर्जुन का उत्तरदिशा में अनेक राजाओं को जीतकर राजा भगदत्तको युद्ध करके जीतना	५०
२७	अर्जुनका उत्तरदिशामें आगे जाना और युद्ध करके पहाड़ीराजाओंको विजय करना	५१
२८	अर्जुनका सम्पूर्ण उत्तर दिशाको जीतकर इन्द्रप्रस्थ को आना और युद्धमें लाये हुये पदार्थों को युधिष्ठिरको निवेदन करना	५३
२९	भीमसेन का पूर्व दिशाको विजय करना और चँदेरी के राजासे कर लेकर आगे को जाना	५४
३०	भीमसेन का दिग्विजय करके बहुतसा धन लेकर इन्द्रप्रस्थको लौटना और सब द्रव्य युधिष्ठिर को निवेदन करदेना	५४
३१	सहदेवका सम्पूर्ण दक्षिण दिशा को विजय करके इन्द्रप्रस्थ लौटकर आना और सब लाये हुये धनको युधिष्ठिरको निवेदन करना	५६
३२	नकुलका पश्चिम दिशाको विजय करना और वहां से लाये हुये धन को युधिष्ठिर को देदेना	५९
३३	युधिष्ठिरका यज्ञकी सब सामग्री मँगाकर यज्ञ करनेको दीक्षित होना और सब राजा और ब्राह्मण आदिको निमन्त्रण भेजना	६०
३४	निमन्त्रण पानेपर युधिष्ठिर के यज्ञ में सहस्रों ब्राह्मणों और राजाओं का आना और राजा युधिष्ठिरका उनको सुन्दर घरों में टिकाकर सत्कार करना	६३
३५	युधिष्ठिरका पृथक् २ कामोंपर पृथक् २ मनुष्यों को नियत करके यज्ञ करना ...	६४
३६	राजा युधिष्ठिर का यज्ञस्थान करना और भीष्मजीके कहने से श्रीकृष्णजीको अर्घ देना	६५
३७	राजा शिशुपाल का श्रीकृष्णचन्द्रकी पूजा होना देखकर युधिष्ठिर भीष्म और श्रीकृष्णजी की निन्दा करना	६७
३८	राजा युधिष्ठिरका शिशुपाल को समझाना और भीष्मजी का श्रीकृष्णजी की महिमा कहकर उनका पूजन होना योग्य बताना	६८
३९	श्रीकृष्णजी की पूजा होने पर सब राजाओं का क्रोध करके यज्ञ विध्वंस करने की सलाह करना और युद्ध के लिये उपस्थित होना	७०
४०	युधिष्ठिर का सब राजाओं को युद्ध के लिये तय्यार देखकर भीष्मजी से उपाय पूछना और भीष्मजीका श्रीकृष्णजीकी महिमा कहकर युधिष्ठिर का भय दूर करना	७१
४१	राजा शिशुपाल का भीष्मजी की मतिकी निन्दा करना	७२
४२	शिशुपालके रूखे वचनों को सुनकर भीमसैन का क्रोध करना और भीष्म का उसके क्रोधको शांत करना	७४
४३	भीष्मजी का भीमसेन से शिशुपाल की उत्पत्ति और श्रीकृष्णजी से वरदान पाने का वृत्तांत कहना	७५
४४	शिशुपाल का भीष्म और कृष्णकी निन्दा करना और शिशुपाल भीष्म और सब राजाओं का आपस में विवाद होना	७६

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अ०	विषय	पृष्ठ
४५	श्रीकृष्णजीका शिशुपालके सौ अपराध पूरे होनेपर मारडालना यज्ञका पूरा होना सब राजाओंका अपने २ घरको चलाजाना और सभामें दुर्योधन और शकुनिका रहजाना	७६
४६	व्यासजी का युधिष्ठिर से उत्पातों का फल कहकर चला जाना और युधिष्ठिर का शोच करना	८२
४७	दुर्योधन का पांडवों की सभा में जाकर धोखेसे गिरना और पांडवों का हँसना और दुर्योधनको रोष होना और शकुनि प्रति सर्व वृत्तांत कहना	८३
४८	शकुनि का दुर्योधनको युधिष्ठिर पर क्रोध करने का उपदेश करना और उसके न मानने पर उसे युधिष्ठिर से जुआ खेलनेकी सलाह देना	८५
४९	दुर्योधन का संताप व शकुनि से सलाह करके पांडवोंकी लक्ष्मी जीतने को छल से पाँसों से युधिष्ठिर को बुलवाना	८७
५०	राजा धृतराष्ट्र का दुर्योधन से दुःखका कारण पूछना और दुर्योधन का युधिष्ठिरके वैभव और भीमसेन आदिकी हँसी से दुःख पाने का वृत्तांत कहना	९०
५१	दुर्योधन का धृतराष्ट्र से युधिष्ठिर के यज्ञ में अनेक देशों से आये हुये धनका वृत्तांत कहना	९२
५२	दुर्योधनका धृतराष्ट्र से उन राजाओंका वृत्तांत कहना जिन्होंने युधिष्ठिर को यज्ञ में कर दिया था	९४
५३	दुर्योधन का धृतराष्ट्र से सब राजाओं को युधिष्ठिर की सेवा करते हुये देखकर संताप होने का हाल वर्णन करना	९७
५४	राजा धृतराष्ट्र का दुर्योधनको पांडवों से द्वेष न करनेको उपदेश करना ...	९८
५५	दुर्योधनका धृतराष्ट्र से अनेक नीति के कारण कहकर यह कहना कि हम को पांडवों की लक्ष्मी लेना ही उचित है नहीं तो मरना अच्छा है	९९
५६	धृतराष्ट्र का दुर्योधन के कहने के अनुसार जुआ खेलने को सभा बनवाना और विदुरको भेजकर पांडवों को बुलवाना	१००
५७	विदुर का राजा धृतराष्ट्र से जुआ का निषेध करना	१०२
५८	विदुरको धृतराष्ट्र की आज्ञा से इन्द्रप्रस्थ जाकर पांडवों को लाना और पांडवों का हस्तिनापुर में आकर सबसे मिलकर वास करना	१०२
५९	युधिष्ठिरका सभा में जाना और शकुनि से वार्त्तालाप होकर जुए का प्रारम्भ होना	१०४
६०	द्यूतसभा में राजा धृतराष्ट्र, भीष्मपितामह, द्रोणाचार्य आदि का आना तथा युधिष्ठिर का कौरवों से जुआ खेलाना	१०६
६१	युधिष्ठिर का शकुनि से जुआ होना और युधिष्ठिर का बहुतसा धन हारना ...	१०६
६२	विदुरजी का धृतराष्ट्र को समझाना और दुर्योधनको त्याग करने का उपदेश देना	१०८
६३	विदुरजीका अनेक पूर्वापर समझाकर धृतराष्ट्रको जुआ बंद करानेका उपदेश करना	१०९
६४	दुर्योधन का क्रोध से विदुरजी की निन्दा करके निकालना व विदुरजीका अनेक हितकारी बातें कहकर चलाआना	११०
६५	युधिष्ठिर का जुएमें राज्य और सब धन हारना और पीछे अपने चारों भाई छोटे और अपने आप और द्रौपदी को भी हारजाना	११२

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अ०	विषय	पृष्ठ
६६	दुर्योधन का विदुरजी को द्रौपदी को दासीकर्म करने के लिये लाने की आज्ञा देना और विदुरजी का उसकी निन्दा करके ऐसा काम न करनेका उपदेश देना ...	११५
६७	दुःशासन का द्रौपदी को बाल पकड़कर सभा में खींचकर लाना और द्रौपदी का दुःखी होकर सभासदों से अपने दासी होने या न होनेका प्रश्न करना	११६
६८	भीमसेनका युधिष्ठिर पर कोप करना और दुःशासनका द्रौपदी को सभा में लाना और द्रौपदी से जीते न जीते जाने का प्रश्न करना उसका उत्तर न मिलना दुःशासनका द्रौपदी के नग्न करनेको वस्त्र खींचना उस समय द्रौपदी का श्रीकृष्णचन्द्र को याद करना और श्रीकृष्णचन्द्रका वहां गुप्त आना और द्रौपदीकी लाज राखना	१२०
६९	द्रौपदी का विलाप करना और कहना कि मेरे प्रश्नका उत्तर मिले और भीष्मजीका यह कहना कि जो उत्तर युधिष्ठिर देवें वही प्रमाण है	१२६
७०	दुर्योधन का द्रौपदी से अपना प्रश्न पांडवों से ही पूछने को कहना और क्रोध से भीमसेनका उत्तर देना	१२७
७१	भीमसेनका प्रण व कौरवों की अनीति और उत्पातसूचक गीदड़ों का बोलना उसे सुन धृतराष्ट्र प्रति द्रौपदी वरदेना और पांडवों से दासी भाव छुड़ाना ...	१२८
७२	भीमको कर्णकी बात सुन क्रोध करना व युधिष्ठिर को उसके क्रोधको शांत करना	१३१
७३	धृतराष्ट्रका युधिष्ठिरकी शिक्षा करना और युधिष्ठिरका इन्द्रप्रस्थको विदा होजाना	१३२
७४	दुर्योधन का धृतराष्ट्र से अनेक कारण कहकर पांडवों को फिर जुआ खेलने के लिये बुलवाना	१३३
७५	गांधारीका धृतराष्ट्रको समझाकर दुर्योधनको त्यागनेका उपदेश करना और धृतराष्ट्र को कहना न मानकर पांडवों को फिर जुआ खेलने को बुलवाना	१३४
७६	धृतराष्ट्र की आज्ञा से युधिष्ठिरका शकुनि का फिर जुआ खेलना और सम्पूर्ण राज्यादि हारजाना	१३५
७७	दुर्योधन व दुःशासनकृत पांडव हँसी और पांडवों का दुर्योधन शकुनि दुःशासन और कर्ण के मारनेका प्रण और मृगचर्म ओढ़कर वन जाना	१३७
७८	युधिष्ठिरका भीष्मपितामह सब बड़ों से बिदा मांगकर वन जाना	१३९
७९	द्रौपदीका कुन्ती से बिदा मांगना कुन्तीका विलाप और विदुरजी का कुन्तीको अपने घर लिवालेजाना और द्रौपदी सहित पांडवोंको वन जाना	१४१
८०	विदुरजीका धृतराष्ट्र के पूछनेपर पांडवों के अनेक रूपों से जाने का वृत्तान्त कहना दुर्योधन का द्रोणाचार्य की शरण में जाना और द्रोणाचार्यको उनकी रक्षा करने की प्रतिज्ञा करना	१४३
८१	पांडवों के वनको चलेजाने पर धृतराष्ट्रको बड़ी चिन्ता करना	१४५

इति ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

महाभारत भाषा

सभापर्व।

सो०। चरण कमलद्युतिधाम धूम्रकेतु गणनाथके।
पद पंकज अभिराम श्रीगुरुके वन्दन करहुँ॥
अव्यय अक्षयधाम जेहि गावत सब वेदविद।
वंदि ताहि निष्काम सभापर्व भाषा करहुँ॥

श्लो०। नारायणं नमस्कृत्य नरं चैव नरोत्तमम्। देवीं सरस्वतीं व्यासं ततो जयमुदीरयेत्॥

पहिला अध्याय।

मय दानव का पांडवों के लिये सभा बनाने को स्थान नियत करना॥

वैशंपायनजी बोले हे राजा जनमेजय! खांडव वनके जलजाने के पीछे मय दानव अर्जुन को कृष्णचन्द्र के पास वारंवार पूजकर मधुर वाणी से हाथ जोड़कर कहनेलगा कि महाराज आपने मुझको इन वासुदेवजी और अग्नि से बचाया है इससे मैं भी आपका कुछ काम किया चाहता हूं जो कुछ आप कहैं वही मनोकामना मैं आपकी पूरी करूं यह सुनकर अर्जुनने कहा कि तुम हमारा सब काम करचुके हम तुमपर प्रसन्न हैं अब तुम कल्याणपूर्वक अपने घर जाओ और हमसे प्रीति रक्खो मय दानव बोला कि आप सत्य कहते हैं आप इसी योग्य हैं परन्तु मैं दैत्यों का विश्वकर्मा हूं और शिल्पविद्या अच्छी तरह जानता हूं इससे मैं प्रीतिपूर्वक आपका कुछ काम किया चाहता हूं १। ६ यह सुनकर अर्जुन बोला कि तुम अपने को हमसे रक्षा किया हुआ मानकर हमारा काम करना चाहते हो परन्तु मेरा कोई ऐसा काम नहीं है जो मैं तुमसे कराऊं इससे जो तुमको हमारा काम करना ही है तो श्रीकृष्णजी से कहो और वे जो कुछ आज्ञा दें सो करो उनका काम करना हमारा ही काम है यह सुनकर मयने श्रीकृष्णजी से कहा और वे क्षणभर विचार करके लोकनाथ प्रजापति की प्रेरणासे बोले कि हे दानव! जो तू धर्मराज का प्रिय करना चाहता है तो एक ऐसी सुंदर सभा बना जिसके सदृश इस संसार में दूसरी सभा न निकले और उसे देख २ कर संपूर्ण असुर और मनुष्य तेरी मतिकी प्रशंसा करें ७। १३ यह सुन-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कर मय दानव ने प्रसन्न होकर सभा बनानी अंगीकार की और विमानप्रतिमा नाम सभाको बनाने का विचार किया इसके पीछे श्रीकृष्ण और अर्जुन मय को युधिष्ठिरके पास लेगये और उनसे सब वृत्तान्त कहकर मय दानव के सभा बनाने का हाल कहा युधिष्ठिरने उस वृत्तांतको सुनकर मयकी यथोचित पूजा की और वह उस पूजा को अंगीकार करके प्रसन्नतापूर्वक वृषपर्वा दानव का चरित्र पांडवों से कहने लगा उपरान्त कुछ दिन स्वस्थ होकर श्रीकृष्ण और अर्जुन की आज्ञा के अनुसार शुभ दिन में मंगलपूर्वक सहस्रों ब्राह्मणों को खीरके भोजन कराके और धन आदि से तृप्त करके उस दैत्यने ऐसी महा रमणीक पृथ्वी देखकर जहां सब ऋतुओं में सुख रहै दश २ सहस्र हाथ पृथ्वी को चारों ओर से नापकर सभा बनाने के लिये स्थान नियत किया १४। २१॥

इति श्रीभाषामहाभारते सभापर्वणि प्रथमोऽध्यायः १॥

दूसरा अध्याय।

श्रीकृष्णजी का पाण्डवों से बिदा होकर द्वारकापुरी को जाना॥

वैशंपायनजी बोले हे राजा जनमेजय! इसके पीछे श्रीकृष्णजी ने पिता के दर्शनों की लालसा से पांडवों के साथ प्रीतिपूर्वक बहुत दिनों तक बसकर द्वारका जाने की इच्छा की और अपनी फूफी कुंती से आज्ञा मांगकर उसके पैरों पर अपना मस्तक रखदिया कुंती ने उनके मस्तक को सूंघकर प्रीतिपूर्वक उठाकर छाती से लगा लिया इसके पीछे श्रीकृष्णजी सुभद्रा के पास गये और प्रेमके आँसू भरकर उससे बहुत सी हितकारी बातें कहीं और उसका संदेशा सुनकर उससे प्रीतिपूर्वक बिदा हुये फिर द्रौपदी के पास गये और उसेभी प्रसन्न करके उससे बिदा हुये उपरांत धौम्य ऋषि के पास गये और उनके चरणों में वंदना करके पांडवों के पास चले गये जब यात्रा का काल आया तब उन्होंने स्नान किया और पवित्रतासे यात्राकालकी आवश्यक कृत्य करके देवता और ब्राह्मणों की गंधादिक से पूजा की और शुभ मुहूर्त्त के आने पर दही फल और अक्षतों से पूजित होकर ब्राह्मणों से स्वस्ति वचन सुनते हुये अच्छे भूषण वसन पहिनकर नगर के बाहर निकले और ब्राह्मणों को धन देकर और उनकी प्रदक्षिणा करके शैव्य सुग्रीव नाम घोड़ों से जुते हुये सुवर्ण के रथ पर शंख चक्र और गदा आदि अस्त्रों को लिये हुये बैठगये उस समय युधिष्ठिरने दारुक सारथी को रथपर से उतार दिया और बागडोर आप हाथ में लेकर श्रीकृष्णजी का रथ हांका और अर्जुन

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सुवर्ण की डंडीका चमर लेकर रथके दाहिनी ओर चढ़गया और चमर ढोरने लगा और भीमसेन नकुल और सहदेव पुरवासी और ऋत्विजों सहित उनके पीछे पीछे हो लिये उस समय श्रीकृष्णजी पाण्डवों सहित ऐसे शोभित मालूम होते थे मानों शिष्यों सहित गुरु बैठे हुये हैं इस प्रकार से श्रीकृष्णजी उन सब पांडवों से अन्वीयमान और पूजित होते हुये सबके साथ साथ उसी रथपर दो कोसतक गये उपरांत युधिष्ठिर के चरणों को छूकर उन्हें लौटने को कहा युधिष्ठिरने श्रीकृष्णके शिर को बड़ी प्रीति से सूंघकर छाती से लगालिया और जाने की आज्ञा दी तब फिर श्रीकृष्णजी अर्जुन आदि सब छोटे भाइयों से यथायोग्य मिले और फिर आनेका नियम करके उन सबको बड़े कष्ट से लौटाकर द्वारकापुरी को चलदिये पाण्डव उनको बड़ी प्रीति से पीछे से खड़े हुये देखा किये और जब उनका रथ दृष्टि से बाहर होगया तब अपने मनको उन के साथ करके आप सब उनकी मूर्तिको प्रीतिपूर्वक मनसे ध्यान करते हुये घरको लौट आये और श्रीकृष्णजी उस रथ पर चढ़े हुये आगे दारुक और पीछे सात्यकी सहित द्वारकापुरी में पहुँचे १। ३० वैशंपायनजी बोले हे राजा जनमेजय! युधिष्ठिर अपने भाई और सुहृज्जनों के साथ लौटकर अपने नगर में पहुँचा और उन सबको बिदा करके द्रौपदी के पास जाकर आनन्द करने लगा और श्रीकृष्णजी भी द्वारकामें पहुँचकर यादवों से पूजित हुये और उग्रसेन वसुदेवजी बलदेवजी और माताको दण्डवत् करके अपने प्रद्युम्न, साम्ब, निशठ, चारुदेष्ण, गद, अनिरुद्ध और भानु आदि पुत्र पौत्रों को गोदमें लेकर प्यार करके रुक्मिणीके भवन में चलेगये यहां इन्द्रप्रस्थ में मय दानवने सब रत्नों से जटित युधिष्ठिरके लिये सभा बनानी आरंभ की ३१। ३६॥

इति श्रीभाषामहाभारते सभापर्वणि द्वितीयोऽध्यायः २॥

तीसरा अध्याय।

मय दानव करके पांडवों के लिये रत्नजटित सभा बनानी॥

वैशंपायनजी बोले हे राजा जनमेजय! मय दानवने अर्जुनसे कहा कि कैलास पर्वतके उत्तर ओर मैनाक पर्वत है और उस पर्वत में एक बिंदुसर है मैंने वहां पहिले दैत्यों के यज्ञ करने की इच्छा करने पर वृषपर्वा दैत्यराज की सभा बनाई थी उसी स्थानके निकट उस सभा के बनाने के द्रव्य अर्थात् अनेक प्रकारकी मणि और रत्नादिक रक्खे हुये हैं सो मैं वहां उन सब वस्तुओं

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

को लेने जाता हूं उनको लाकर आपके लिये बड़ी सुन्दर रत्नजटित और मन को आनन्द देनेवाली सभा बनाऊंगा और उसी बिंदुसर के निकट एक कांचनमयी बड़ी भारी गदा जो इसी प्रकार की है जैसा गांडीवधनुष है राजा वृषपर्वाने शत्रुओंको मारकर रखदी थी और वरुणका देवदत्त नाम बड़ा शङ्ख भी जिसका शब्द बड़ी दूर से सुनाई पड़ता है वहीं रक्खा हुआ है सो मैं उन दोनों को भी लेता आऊंगा वह शङ्ख आपके और गदा भीमसेनके योग्य है यह कहकर वह दैत्य ईशानकोणकी ओर को चलदिया और कैलास पहाड़ की उत्तर ओर मैनाक पर्वत पर पहुँचकर बिंदुसर के निकट जा पहुँचा यह वही स्थान है जहां भगीरथ ने गंगाजी के दर्शनोंकी इच्छा से बहुत वर्ष रहकर तपस्या की थी और प्रजापति ने यज्ञ किया था उस स्थान पर मणिमय यज्ञखम्भ और सुनहरी सींवा वृक्ष लगे हुये हैं और उसी स्थानपर इन्द्रने यज्ञ करके बड़ी सिद्धि पाई थी वहांपर सहस्रों प्राणी शिवजी महाराजका आराधन करते हैं और उसी जगह नर नारायण ब्रह्मा और महादेवजी सहस्र युगों के व्यतीत होने पर यज्ञ किया करते हैं वासुदेवजी ने इसी स्थान पर धर्मप्रवृत्ति के लिये अनन्त यज्ञ किये थे और सुवर्णयुक्त यज्ञखम्भ और दीप्त सींवा वृक्ष दान दिये थे १। १७ वह दैत्य वहां पहुँचकर वह गदा और शङ्ख और सभा बनाने को मणिआदिक नानाप्रकार के द्रव्य जो दैत्यों से रक्षित वहां रक्खे हुये थे लेकर इन्द्रप्रस्थको लौट आया और गदा भीमसेन को और शङ्ख अर्जुनको देकर सभाकी रचना करने लगा थोड़े दिनों में वह सभा मणिमय द्रव्यों से बन कर चारों ओर दश २ सहस्र हाथ लंबी तय्यार होगई वह सभा ऐसी अद्भुत बनी थी कि उसके सदृश श्रीकृष्णकी सुधर्मा नाम सभा और ब्रह्माकी भी सभा न थी और उत्तम २ द्रव्य और रत्नों से ऐसी बनाई गई थी कि सूर्य और चन्द्रमा की भी सभा वैसी न थी उस सभामें ऐसा प्रकाश था कि उसके सामने सूर्य का भी प्रकाश अस्त होगया और ऐसी शोभायमान थी कि मनुष्यकी थकावट वहां जाते ही दूर होजाती थी ऊंची ऐसी थी कि आकाश में लगीहुई जान पड़ती थी उस दैत्यों के विश्वकर्मा मयने उस सभाको बहुत द्रव्यों से बनाकर उसकी रक्षाके लिये आठ सहस्र किंकर नामी दैत्य जो बड़े पराक्रमी लंबी चौड़ी लाल लाल आँखें और शङ्खवत् कान रखनेवाले थे नियत कर दिये वे दैत्य उस सभा को जहाँ चाहैं तहाँ उठाकर लेजासक्ते थे १८। २६

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मयने उस सभामें एक नलिनी अर्थात् कमलयुक्त सरोवर बनाया था उस सरोवर की सीढ़ियाँ स्फटिक की बनी थीं जल उसमें कीच रहित मोती की सदृश झलकता था उसके चारों ओर मणियोंका चौतरा बना दिया था और उस सरोवर में जो कमल थे उनकी पत्तियाँ वैडूर्यमणि की और नालें पद्मराग आदि मणियोंकी बनाई थीं और उसमें अनेक अनेक प्रकार की मणियों से जटित सुनहले कछुये और मछलियाँ फिरते थे और पद्मराग आदि मणियों के बने हुये अनेक प्रकारके पक्षी जहाँ तहाँ बैठे हुये थे वायु वहां शीतल चलती थी उस सभाको बहुत से मनुष्य देखने आये और भ्रांतसे थलको जल और जलको थल जान २ कर गिर २ पड़े उस सभा के चारों ओर बड़े २ सुन्दर और शीतल छाया देनेवाले वृक्ष लगादिये गये और बड़ी सुगन्धि देने वाले बाग कमल हंस और चकवा चकवी आदि से युक्त सरोवरों के होनेसे वह सभा अत्यन्त सुशोभित होगई और वायु वहां सब प्रकार के जलमें उत्पन्न होनेवाले कमलों और थल में फूलनेवाले फूलोंकी सुन्दर गंधको लेकर बहने लगी वैशंपायनजी बोले हे राजा जनमेजय ! मयने उस सभाको १४ महीने में बनाकर युधिष्ठिर को निवेदन करदिया ३०। ३७॥

इति श्रीभाषामहाभारते सभापर्वणि तृतीयोऽध्यायः ३ ॥

चौथा अध्याय।

युधिष्ठिर का सहस्रा ब्राह्मणों को भोजन कराके सभा में प्रवेश करना और सब देशके राजा और ऋषियों के आने पर नृत्य गीतादिक आनन्द होना ॥

वैशंपायनजी बोले हे राजा जनमेजय ! उस सभा के बनजानेपर युधिष्ठिर ने उसमें प्रवेश करने के लिये दशसहस्र ब्राह्मणोंको भोजन कराया और घी और शहद मिलीहुई खीर पूरी मूल और फलों के अनेक शाक, मृग, वाराह और बकरी आदिके अनेक २ प्रकारके मांस और पीने चूसने और खाने के अनेक पदार्थों से नानादिशाओं से आयेहुये ब्राह्मणोंको तृप्तकरके प्रत्येक ब्राह्मण को एक २ गाय और नवीन २ वस्त्र दिये ब्राह्मणों ने उनको लेकर बड़े उच्चस्वर से पुण्याहघोष किया इसके पीछे युधिष्ठिर देवताओंकी स्थापना करके दिव्यगंधों से पूजित होकर उस सभा में विराजमान हुआ और मल्ल, नट, उल्ल, सूत और वैतालिक अपनी २ कृत्य करनेलगे इसके पीछे युधिष्ठिर अपने भाइयों सहित स्वर्ग में इन्द्रके समान उस सभा में विहार करनेलगा और अनेक

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

देशों से आयेहुये ऋषि और राजालोग उस सभा में युधिष्ठिरके पास स्थित हुये उनके नाम ये हैं ऋषियों के नाम असित, देवल, सत्य, सर्पमाली, महाशिरा, अर्वावसु, सुमित्र, मैत्रेय, सुनक, बलिबक, दाल्भ्य, स्थूलशिरा, कृष्णद्वैपायन, शुक, सुमन्त, जैमिनि और पैल आदि व्यासजी के शिष्य और तित्तरि, याज्ञवल्क्य, लोमहर्षण अपने पुत्रों सहित, अशुहोम्य, धौम्य, अणीमांडव्य, कौशिक, दामोष्णीष, त्रैबलिपर्णाद, घृटजानुक, मौंजायन, वायुभक्ष, पराशर्य, सारिक, बलीवाक, सिनीवाक, सत्यपाल, कृतश्रम, जातूकर्ण, शिखावान्, आलंब, पारिजातक, पर्वत, महामुनिमार्कंडेय, पवित्रपाणि, सावर्ण, भालुकि, गालव, जंघाबन्धु, रैभ्य, कोपवेग, भृगु, हरिबभ्रु, कौडिन्य, बभ्रुमाली, सनातन, काक्षीवान्, औषिज, नाचिकेत, गौतम, पैंग, वराह, शुनक, शांडिल्य, कुक्कुर, वेणुजंघ, कालाय और कठ इनके सिवाय और २ बहुत से वेदपारग और पुण्यकथाओं के कहनेवाले ब्राह्मण आये थे राजाओं के नाम ये हैं १। २० मुंजकेतु, विवर्द्धन, संग्रामजित, दुर्मुख, उग्रसेन, राजा कक्षसेन, क्षेमक, कांबोजराज, कमठ, कंपन जिसने बड़े २ अस्त्रवेत्ता यमनों को युद्ध में कँपादिया था कालकेय, मद्रक देशों का राजा जटासुर, कुन्ति, किरातों का राजा पुलिन्द, अंग और वंग देशके राजा पुण्ड्र, पांड्रचोंड्र, अंधृक, अंग, वंग, सुमित्र, कर्शन, शैव्य, किरातोंका राजा सुमना, यमनोंका राजा चाणूर, देवरात, भोज, भीमरथ, श्रुतायुध, राजा कलिंग, जयत्सेन, राजा मगध, सुकर्मा, चेकितान, अमित्र, कर्शनपुरु, केतुमान, वसुदान, वैदेह, कृतक्षण, सुधर्मा, अनिरुद्ध, श्रुतायु, अनूपराज, दुर्धर्ष, क्रमजित, सुदर्शन, शिशुपाल, राजाकरुष, वृष्णिवंशीकुमार, आहुक, विप्रथु, गद, सारण, अक्रूर, कृतवर्मा, सत्यक, भीष्मक, कृतिक, द्युमत्सेन, कैकय, यज्ञसेन, सौमकि, केतुमान, वसुमान और २ बहुत से राजालोग थे परन्तु उनमें से मुख्य मुख्यों के नाम कहेगये हैं इनमें से बहुतसे राजकुमारों और वृष्णिवंशी प्रद्युम्न, साम्ब, युयुधान, सात्यकि, सुधर्मा, अनिरुद्ध, शैव्य आदि अनेकों ने अर्जुन के पास रहकर वहां धनुर्वेद सीखा था इसी सभा में तुम्बुरु नाम गन्धर्व भी जो अर्जुन का मित्र था नित्य अर्जुन के पास रहता था उस सभामें चित्रसेन आदि सत्ताईस गन्धर्व और अनेक अप्सरा आई थीं और मनस्वी और तुम्बुरु की प्रेरणा से किन्नर और गन्धर्वों ने जो गाने बजाने स्वर मिलाने

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

और अलापने में बड़े निपुण थे बड़ी मधुर तानों के साथ सुन्दर सुन्दर भजन गाये और जैसे सब देवता स्वर्ग में ब्रह्माजी की उपासना करते हैं इसी प्रकार से वह सब वहां रहकर युधिष्ठिर और ऋषियों को रमण करा २ कर उनकी उपासना करने लगे २१। ३०॥

इति श्रीभाषामहाभारते सभापर्वणि चतुर्थोऽध्यायः ४॥

पांचवां अध्याय।

नारदजीका सभामें पांडवों के पास आना और उनसे नीतिसम्बंधी प्रश्न करना॥

वैशम्पायनजी बोले हे राजा जनमेजय! जब युधिष्ठिर राजालोग और गंधर्वों सहित सभामें बैठ गया तब वहां नारदजी आये वे वेद, उपनिषद् ऐसे इतिहास और पुराणों की कथा जिनको देवता भी मानते हैं पूर्वकल्प, न्याय-शास्त्र, धर्मतत्त्व और वेदके छःअंगों के जाननेवाले और सबसे श्रेष्ठ एकात्म-भाव रखने और संयोग को पृथक् २ करनेवाले, एक धर्म में अनेक धर्मों का आचरण जाननेवाले, बड़े वक्ता, असंबद्ध न बोलनेवाले, मेधावी, स्मृतियों और दायविभाग आदिके जाननेवाले, कवि, ज्ञान कर्मकाण्ड और हरबात को प्रमाण सहित निश्चय करनेवाले, प्रतिज्ञा आदि पांचों अवयवों से युक्त, हरबातके गुण और दोषको पहचाननेवाले, बृहस्पति के कहेहुये परभी उत्तर देनेवाले, अर्थ धर्म काम और मोक्ष के निर्णयको यथावत् कहनेवाले, सम्पूर्ण विश्वको देखनेवाले, सांख्ययोग के विभागको जाननेवाले, संधि और विग्रह के तत्त्वके ज्ञाता, देवता और असुरोंको विपरीत करनेवाले, छः गुणोंकी विधि और सब शास्त्रों में पंडित, युद्ध और गान्धर्वविद्यामें निपुण और सब जगह विना रोकटोक जानेवाले थे वे अनेक लोकों में घूमतेहुये मन के वेगकी तरह पारिजात, रैवत, सुमुख और सौम्य ऋषियों सहित उस युधिष्ठिरकी सभा में पांडवों के देखनेको अकस्मात् आ पहुँचे और युधिष्ठिरको प्रीति सहित जय का आशीर्वाद दिया उनको देखतेही सब पांडव खड़े होगये और विनययुक्त दण्डवत् करके उनको सुन्दर आसन पर बैठाया और अर्घ्य पाद्य मधुपर्क और रत्नों से उनकी पूजा की १। १५ नारदजी पाण्डवोंकी पूजासे प्रसन्न हुये और उनसे अर्थ धर्म कामयुक्त यह पूछनेलगे कि कहो तुम्हारे अर्थ सिद्ध होते हैं मन प्रसन्न और धर्म में लगा रहता है या नहीं और अंतर आत्मामें ध्यान लगाने पर मन इधर उधर तो नहीं जाता तुम्हारे पहले पुरुषाओं के अर्थ धर्म और

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

काम तीनों से युक्त आचरणों में तुम्हारी वृत्ति रहती है अथवा उससे निवृत्त होगये हो तुम्हारे अर्थ से धर्म और धर्म से अर्थ और काम और प्रीतिसे अर्थ और धर्म दोनोंको बाधा तो नहीं पहुँचती तुमने अर्थ धर्म और कामको करने के लिये कालका विभाग कियाहै या नहीं अर्थात् ब्राह्म मुहूर्त्त में धर्म करना दिन में अर्थ उपार्जन और रात्रि में कामकलोल करनेका नियम कियाहै या नहीं राजाओं के छः गुणोंकी सेवा अर्थात् दूत और मंत्रियों को उपदेश करना १ शत्रुको दबाने में उत्कर्ष दिखाना २ तर्क में कुशल होना ३ स्मृति ४ भूत को शास्त्रसे और भविष्यको बुद्धिबलसे जानना ५ और नीतिशास्त्र को जानना ६ और सात उपायों की साधना अर्थात् साम १ दाम २ दंड ३ भेद ४ मंत्र ५ ओषधी ६ और अपने और शत्रुके बलाबलका विचार ७ और चौदह दोषों की परीक्षा अर्थात् नास्तिकता १ असावधानी २ दीर्घसूत्रता ३ इन्द्रियों के वशमें रहना ४ किसी प्रयोजनको अकेला चिंतन करना ५ ऐसे मनुष्यों के साथ विचार करना जो विपरीत अर्थ देखनेवाले हैं ६ क्रोध ७ ज्ञानियोंका दर्शन करना ८ निश्चित कियेहुये कामको आरम्भ न करना ९ सलाह को सबसे कहदेना १० मंगल कामों को न करना ११ सब शत्रुओंपर एक साथ चढ़ाई करना १२ झूंठ बोलना १३ और आलस्य १४ करते हो या नहीं और इन चौदह बातों को भी देखते हो या नहीं घोड़ा १ हाथी २ किला ३ योधा ४ देश ५ कोष ६ अधिकारी ७ शत्रु ८ शास्त्र ९ व्यवहार १० दूत ११ महल १२ जमाखर्च १३ और रथ आदिकी गणना १४ राज्यका प्रबन्ध अपने और शत्रुओं के बलाबल को विचारकर करते हो या नहीं और आठ कर्म अर्थात् खेती का प्रबन्ध १ व्यापार का प्रबन्ध २ सड़कें बनवाना ३ किले बनवाना ४ पुल बनवाना ५ हाथियोंको बहुत खानेके कारण से ग्राम २ में बँधवाना ६ सोना चाँदी आदिकी खानोंपर कर बाँधना ७ और उजड़े हुये अथवा शून्य देशको बसाना ८ करते हो या नहीं और तुम्हारी सब प्रकृतियां अर्थात् किले का रक्षक १ सेनापति २ धर्माध्यक्ष ३ चमूपति ४ पुरोहित ५ वैद्य ६ ज्योतिषी ७ अमात्य ८ सुहृद ९ कोष १० राष्ट्र ११ दुर्ग १२ और सेना १३ नष्ट तो नहीं हैं अर्थात् ऐसा तो नहीं हुआहै कि धनका लोभ देकर तुम्हारे शत्रुओं ने उनको अपने वशमें करलिया हो और तुम्हारी सलाह को तुम्हारे विश्वासी मनुष्य, दूत और मंत्री प्रकाश तो नहीं करते और तुम अपने मित्र शत्रु और

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उदासीन मनुष्यों और कालके अनुसार संधि और विग्रह को जानते हो या नहीं और जो मनुष्य तुम्हारे मित्रहैं न शत्रु और जो मध्यमहैं अर्थात् तुम से और तुम्हारे शत्रु दोनों से मिलेहुये हैं उनके कर्तबको भी देखते रहते हो या नहीं और तुमने अपने मन्त्री अपनी आत्माके समान, शुद्ध अन्तःकरण, समर्थ, बुद्धिमान्, वृद्ध, कुलीन और प्रीतिमान् मनुष्यों को किया है या नहीं मंत्रीही विजयका मूल गिनाजाताहै और तुम्हारे राज्यको ऐसे मंत्री जो मंत्र को किसी से न कहैं और शास्त्र में पण्डित हो रक्षा करते हैं या नहीं कहीं राज्य को तुम्हारे शत्रु तो नष्ट नहीं करते हैं तुम समय पर जगते हो या निद्रा के वश में रहते हो और अपने कार्य का विचार ब्राह्ममुहूर्त में करते हो या नहीं कहीं ऐसा तो नहीं करते हो कि अकेले २ जो चाहें सो सलाह कर ली अथवा औरों के साथभी की तो बहुतसे मनुष्यो में बैठकर की और सलाह सब राज्य में विख्यात होगई और ऐसे कामों के शीघ्र करने में जिनमें परिश्रम थोड़ा हो और फल बहुत हो विघ्न तो नहीं होजाता है १६ । ३१ तुम्हारे राज काज करनेवाले अविश्वासी और ऐसे तो नहीं हैं जिन को तुम न जानते हो और तुम ऐसा तो नहीं करते हो कि कभी किसी मनुष्य को किसी अधिकार पर कर दिया कभी उसी को दूसरा अधिकार दे दिया तुम्हारी खेती आदि विश्वासी और वृद्ध मनुष्यों के द्वारा होती है या नहीं और तुम्हारे काम कृतप्राय तो नहीं हैं तुम्हारे पुत्रों को सब शास्त्रों में पण्डित और धर्म उपदेश करनेवाले आचार्यलोग शिक्षा करके उनको योधाओं में मुख्य करते हैं या नहीं राजाओं को उचित है कि सहस्र मूर्खों के बदले में एक पण्डित को मोल लेलें क्योंकि पण्डितही सब कामों में कल्याण का करनेवाला होता है तुम भी ऐसा करते हो या नहीं तुम्हारे सब किले धन धान्य आयुध जलयंत्र शिल्पविद्या को जाननेवाले और धनुर्धारी योधाओं से पूरित हैं या नहीं जिस राजाके एक मंत्री भी मेधावी शूर जितेन्द्रिय और चतुर होता है उसकी लक्ष्मी की बहुत वृद्धि होती है तुम्हारे भी मंत्री ऐसे ही हैं या नहीं तुम अपने शत्रु के अठारह अंगों की अर्थात् मंत्री १ पुरोहित २ युवराज ३ चमूपति ४ द्वारपाल ५ अंतर्देशिक ६ कारागृहाधिकारी ७ खजाञ्ची ८ दीवान ९ प्रदेष्टा १० नगराध्यक्ष ११ कार्यनिर्माणकर्त्ता १२ धर्माध्यक्ष १३ सभापालक १४ दंडपाल १५ किलेका रक्षक १६ राष्ट्रांतपालक १७ अटवीपालक १८

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

और अपने पक्षके १५ अंगों की अर्थात् मंत्री युवराज और पुरोहित को छोड़ कर शेष १५ अंगों की खबर विना जाने हुये दूतों के द्वारा रखते हो या नहीं तुम अपने शत्रुओं के नित्य उद्योगी और सावधान दूतों के विना जाने अपने शत्रुओं के मनकी बातको जानते हो या नहीं तुम्हारा पुरोहित शिक्षायुक्त अच्छे कुलमें उत्पन्न, बहुत से शास्त्रों का जाननेवाला व दूसरे के गुण में दोष लगाने वाला, शास्त्रचर्चा में कुशल, श्रौत, स्मार्त अग्नियों से युक्त विधि का जानने वाला, बुद्धिमान्, सीधा और समय पर हुत और होष्यमाण वस्तु को बतानेवाला है या नहीं ३२। ४१ तुम्हारा ज्योतिषी सब ज्योतिष के अंगों में कुशल है या नहीं और तुमको ग्रहों की बाधा का हाल जताता रहता है या नहीं तुम उत्तम कामों में मुख्य २ मध्यम कामों में मध्यम और नीच कामों में नीच मनुष्यों को नियत करते हो या नहीं और श्रेष्ठ कर्मों के करने को तुम अपने छलहीन पिता और बाबाओं को नियत करते हो या नहीं तुम अपनी प्रजा को बड़ा दंड देकर दुःख तो नहीं देते हो और हिंसाकर्म करके राज्य करने से याचकलोग इस प्रकार से तुम्हारा अपमान तो नहीं करते हैं जैसे स्त्रियां उस पतिका अपमान करती हैं जो इच्छाचारी होता है तुम्हारा सेनापति शूर-वीर, बुद्धिमान्, धैर्यवान्, युवा, पवित्र, कुलीन, प्रीतिमान् और दक्ष और सेनाके मुख्य २ योद्धा सब युद्धोंको जाननेवाले, निष्कपट, जय करनेवाले और तुम से सत्कृत हैं या नहीं तुम अपनी सेना आदि का मासिक समय पर दे देते हो या नहीं कहीं ऐसा तो नहीं करते कि समय बहुत बीतजावे और वह लोग अपना मासिक न पावें क्योंकि ऐसा करने से सब चाकर बड़ा अनर्थ करते हैं क्योंकि उनकी जीविका और कुछ नहीं होती है तुम्हारे मन्त्री तुमसे प्रीति रखकर समय पर युद्ध में तुम्हारे लिये अपने प्राणों के देने को उद्यत रहते हैं या नहीं ४२। ५१ तुम ऐसा तो नहीं करते कि शास्त्र की आज्ञा को उल्लंघन करके अपनी इच्छा के अनुसार योद्धाओं को जो चाहे सो आज्ञा दे देते हो और जो मनुष्य अपने पुरुषार्थ से कोई बड़ा काम करै उसको तुम आदरपूर्वक धन से सन्मानते हो या नहीं और ज्ञानी और विद्वानों को पारि-तोषिक आदि देते हो या नहीं और जो मनुष्य तुम्हारा काम करने को दुःख पा रहे हैं अथवा तुम्हारे काम में उनके प्राण जाते रहे हैं उनके कुटुम्ब का पालन करते हो या नहीं और जो शत्रु भयसे अथवा धनहीन होने से अथवा

CC-0, Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

युद्ध में हारजाने के कारण से तुम्हारी शरण आता है उसका तुम पालन पुत्रकी तरह करते हो या नहीं और सब पृथ्वी को माता पिता की तरह एकसा और शंका रहित देखते हो या नहीं और अपने शत्रु को व्यसनी अर्थात् स्त्री, जुआ, अहेर, मद्य, नाच, गीत, वृथा फिरना, वाद्य, निन्दा और दिन में सोना आदि व्यसनों में लिप्त सुनकर और अपने को तीनों बल अर्थात् मंत्री कोश और सेनासे युक्त देखकर वेगसे उस शत्रु को जीतने को जाते हो या नहीं और तुम अपने ज्योतिषियों के द्वारा अपने को हराने वाले पांच दैवी अर्थात् अग्नि १ जल २ व्याधि ३ दुर्भिक्ष ४ और मरण ५ और पांच मानुषी अर्थात् अयुक्त १ चौर २ शत्रु ३ राजवल्लभ ४ और राजा के लाभ से प्रजा को भय होना ५ व्यसनों को जानकर कालके अनुसार मंगलकृत्य करके यात्रा करते हो या नहीं और सेना का मासिक आगे से देकर शत्रुके मुखिया २ सेनापतियों को यथायोग्य विना जाने रत्न आदि देकर अपनी ओर फोड़ लेते हो या नहीं और आप जितेन्द्रिय होकर अजितेन्द्रिय शत्रु को जीतनेका उपाय करते हो या नहीं ५२। ६१ और जब तुम शत्रुके ऊपर चढ़कर जाते हो तब साम १ दाम २ दंड ३ भेद ४ इनका अच्छी तरह बर्ताव करते हो या नहीं राजा को चाहिये कि अपनी जड़ को पक्की करके दूसरे पर चढ़ाई करै और युद्ध में अच्छे प्रकार से पराक्रम करै और विजय होने पर सब की यथायोग्य रक्षा करै तुम भी ऐसा करते हो या नहीं और तुम्हारी सेना में आठ अंग अर्थात् रथ १ हाथी २ घोड़ा ३ योधा ४ पत्ती ५ कर्मकारक ६ चार ७ और दैशिक मुख्य ८ और चार प्रकार का बल अर्थात् मौल १ मैत्र २ भृत्य ३ और आटविक ४ है या नहीं जिसमें वह सेनापतियों के लेजाने पर शत्रुओं का नाश करै कोई राजा ऐसा नहीं है जो खेती काटने और खेती रखाने और दुर्भिक्षके समय को छोड़कर और समय में युद्ध करके शत्रु को जीतै तुम्हारी भी यही वृत्तिहै या नहीं तुम्हारे अधिकारी लोग अपने देश की तरह शत्रु के देशों में भी रहकर परस्पर रक्षा और तुम्हारे अर्थ की साधना करते हैं या नहीं और तुम्हारे भक्ष्य वस्त्र और चन्दन आदि पदार्थों की रक्षा विश्वासी मनुष्य करते हैं या नहीं और तुम्हारे खजाना, अन्न के रखने का स्थान, वाहन, हथियार और लाभस्थानों पर ऐसे मनुष्य नियत हैं या नहीं जो तुम से प्रीति रखते हों और तुम्हारा कल्याण चाहते हों और तुम अपनी रक्षा महल के भीतर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

और बाहर रहनेवाले मनुष्यों से और उन मनुष्यों की रक्षा अपने पुत्र और मंत्रियों से और पुत्र की रक्षा मंत्री से और मंत्री की पुत्र से करते हो या नहीं और पान, द्यूत, क्रीड़ा और स्त्रियों के लिये जो तुम्हारा खर्च होता है वह तुम्हारे चाकर लोग तो नहीं करते हैं और तुम्हारा खर्च लाभ से आधा चौथाई अथवा तीसरे हिस्से में अच्छे प्रकार से होजाता है या नहीं ६२।७१ और तुम दरिद्री, स्वजातीय, गुरु, वृद्ध, व्यापारी और शिल्पविद्या जानने वालों पर धन धान्य देकर कृपा रखते हो या नहीं और आय व्यय अर्थात् जमा खर्च के रखनेवाले गणक और लेखक अर्थात् हिसाब करनेवाले और मुतसद्दी लोग तुमको समय २ पर हिसाब समझाते रहते हैं या नहीं और चतुर और हितकारी मनुष्यों को निरपराध अपने अधिकार से अलग तो नहीं कर देते हो और उत्तम मध्यम और नीच पुरुषों के साथ यथायोग्य बर्ताव करते हो या नहीं और तुम्हारे काम करने को ऐसे मनुष्य तो नियुक्त नहीं हैं जो लोभी चोर और तुमसे वैरभाव मानते हों और तुम्हारा देश लोभी और चोर कुमार्गियों अथवा तुमसे पीड़ा तो नहीं पाता है और तुम्हारे किसान दुष्ट तो नहीं हैं तुम्हारे देशमें तड़ाग जल पूर्ण बड़े २ और भाग युक्त स्थानों पर हैं या नहीं तुम्हारे किसानों की आजीविका और बीज को कोई मनुष्य नष्ट तो नहीं करता है और तुम किसानों को अनुग्रह धन अर्थात् तकावी चौथाई बढ़ोतरी पर देते हो या नहीं और तुम्हारी वार्ता अर्थात् खेती १ वाणिज्य २ पशुपालन ३ और लेन देन में ब्याज का व्यवहार ४ अच्छे मनुष्यों के द्वारा रहती है या नहीं क्योंकि वार्ता के प्रचार से बड़ी वृद्धि होती है और तुम्हारे सम्पूर्ण राज्य में एक २ स्थान पर पांच २ मनुष्य जो शूरवीर और बुद्धिमान् हों क्षेम अर्थात् सुलह रखने के लिये नियत हैं या नहीं ७२।८१ और तुमने नगर की रक्षा के लिये गांवों को नगर के समान और बस्तियों को गांवों के समान कर दिया है या नहीं और वहां के रहनेवाले तुमको कर देते हैं या नहीं और तुम्हारे राज्य में शूरवीर लोग सेना को लेकर सब देश और नगरों में भ्रमण अर्थात् दौरा करते हैं या नहीं और चौर आदिकों को मारते हैं या नहीं और तुम स्त्रियों से मीठी बोली बोलकर उनकी रक्षा करते हो या नहीं स्त्रियों की बातपर विश्वास तो नहीं करते हो और कहीं उनसे गुप्त बात तो नहीं कहदेते हो और ऐसा तो नहीं करते हो कि अपने देशमें किसी विघ्न

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

को सुनकर उसका विना उपाय किये हुये महल में सो रहते हो और रात्रि को दो पहर सोकर पिछले पहर में उठकर अपने हितकी बात को विचारा करते हो या नहीं और समय पर मंत्रियों सहित बाहर आकर सब मनुष्यों की फरियाद सुनते हो या नहीं और चलते और बैठते समय तुम्हारे चारों ओर रक्तवस्त्र अर्थात् लालवरदी पहिरे हुये और हाथ में नंगी तलवार लिये हुये मनुष्य तुम्हारी रक्षाके लिये रहते हैं या नहीं और जो मनुष्य दण्ड देने के योग्य हैं उनको तुम यमराज की समान दण्ड देते हो या नहीं और अपने प्यारे कुप्यारे और पूज्यों के साथ यथायोग्य बर्ताव रखते हो या नहीं और शरीर के दुःखको ओषधियों से और मनकी बाधा को वृद्धों की सेवा से दूर करते हो या नहीं तुम्हारे वैद्य तुमसे प्रीति रखनेवाले हितकारी और आठों प्रकार की चिकित्साओं में प्रवीण हैं या नहीं ८२। ९१ तुम अपने सम्मुख आये हुये अर्थी और याचक को प्रीतिपूर्वक देखते हो या नहीं और लोभ से आश्रित मनुष्यों की आजीविका को तो बन्द नहीं करदेते हो और कहीं ऐसा तो नहीं है कि तुम्हारे देश और पुरवासी तुम्हारे शत्रुओं के अधीन होकर तुमसे विरोध रखते हों और तुम्हारा कोई शत्रु जो निर्बल और तुम्हारी सेना से पीड़ित होके अब अच्छी सलाह और बहुत सी सेना इकट्ठी करके तुमसे बलवान् तो नहीं होगया है और तुमसे प्रधान २ राजाओं से प्रीति है या नहीं और जो राजा तुम्हारे स्वाधीन हैं वह तुम्हारे काम में अपने प्राण देने को तय्यार हैं या नहीं और तुम गुणवान् और विद्वान् ब्राह्मण और साधुओं की पूजा करते हो या नहीं क्योंकि यह तुम्हारे कल्याण की बात है और अपने पुरुषाओं की रीतिपर अर्थ काम और मोक्षका प्रयत्न करते हो या नहीं और तुम गुणवान् ब्राह्मणों को सुन्दर स्वादिष्ठ भोजन कराके दक्षिणा देते हो या नहीं और एकाग्रचित्त होकर वाजपेय और पुण्डरीक आदि यज्ञों के करने में तुम्हारी बुद्धि रहती है या नहीं और अपने वृद्ध और बड़े स्वजातीय देवता और ब्राह्मणों को देखकर नमस्कार करते हो या नहीं ९२। १०१ और तुम हीनजातियों के शोक और उत्तम पुरुषों के क्रोध को दूर करते हो या नहीं और पुरोहित आदि मंगलहस्तजन तुम्हारे पास स्वस्त्ययन पढ़ते रहते हैं या नहीं और तुम्हारी बुद्धि ऐसे ही कामों के करने में रहती है या नहीं जो यश काम धर्म और अर्थ के देनेवाले होवें क्योंकि जिस राजा की

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ऐसी बुद्धि रहती है उसके देश में पीड़ा कभी नहीं होती है और वह राजा पृथ्वी को जीतकर बड़ी वृद्धि को पाता है और किसी विशुद्धात्मा और श्रेष्ठ पुरुष को जिसका धन चोर लेगये हों तुम्हारे मन्त्री लोभ से मारते तो नहीं और ऐसा तो नहीं होता है कि कोई चोर जो चोरी करने के कारण से पकड़ा गया हो धन लेकर छोड़ दिया जाता हो और दुष्ट मनुष्यों के सिखलाने से तुम्हारे मंत्री दरिद्री और धनाढ्य मनुष्यों के अर्थों को मिथ्या उपचार से तो नहीं देखते और नास्तिकता १ झूंठ बोलना २ क्रोध ३ प्रमाद ४ दीर्घसूत्रता ५ स्वजातियों से न मिलना ६ आलस्य ७ क्षिप्तचित्तता ८ अपने अर्थका अकेले ही अकेले विचार करना ९ ऐसे मनुष्यों के साथ सलाह करना जो अनर्थज्ञ हैं १० जिस कामके करने का निश्चय कर लिया है उसको न करना ११ सलाह को गुप्त न रखना १२ अमंगल्य बातें करना १३ और विषय में लिप्त रहना १४ इन चौदहों दोषों को तुमने छोड़ दिया है या नहीं क्योंकि इन दोषों के रहने से बड़े २ राजा भी नाश होजाते हैं और तुम्हारे धन वेद स्त्री और शास्त्र सफल हैं या नहीं १०२। १११ यह सुनकर युधिष्ठिर बोले कि महाराज स्त्री वेद धन और शास्त्र किस प्रकारसे सफल होतेहैं नारदजी बोले कि अग्निहोत्रसे वेद दानसे धन रति और पुत्रोंसे स्त्री और शील स्वभाव से शास्त्र सफल होतेहैं वैशम्पायनजी बोले हे राजा जनमेजय! यह कहकर नारदजीने फिर युधिष्ठिर से पूछा कि जो व्यापारीलोग नफा उठानेको बहुत दूर २ से चीजें लाकर तुम्हारे राज्यमें बेचते हैं उनसे तुम कर लेते हो या नहीं और तुम्हारे नगर और देशमें व्यापारियों से कर उगहने के लिये जो मनुष्य नियत हैं वह उस कर में से कुछ कपट तो नहीं करलेते हैं और तुम धर्म और अर्थ के दिखानेवाले वृद्ध पुरुषों की बातें सुना करते हो या नहीं और तुम्हारे राज्य में प्रजालोग खेतीमें उत्पन्न हुये अन्न गौओं के दुग्ध और घृतमें से भाग निकालकर धर्मके लिये ब्राह्मणों को देतेहैं या नहीं और शिल्प-विद्या जाननेवालों को चातुर्मास में औजार बनवाने के लिये कुछ द्रव्य देते हो या नहीं और जो कोई तुम्हारा उपकार करता है उसके उपकार को मानकर तुम सत्पुरुषों में उसका सत्कार करते हो या नहीं और तुमने घोड़ा हाथी और रथोंका विधिपूर्वक सेवन लक्षण और व्यवहार आचार्यों से सीखा है या नहीं ११२। १२१ तुम्हारे घरमें धनुर्वेद सूत्र यन्त्र सूत्र और नगर सूत्र

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

का अच्छीतरह से अभ्यास होता है या नहीं और तुम उन सब अस्त्र, ब्रह्म-दण्ड और विषयोगों को जानते हो या नहीं जिनसे शत्रुओं का नाश किया जाताहै और तुम अपने देशको अग्नि सर्प रोग और राक्षसों से रक्षा करते हो या नहीं और अन्धे गूंगे लँगड़े अंगहीन और अबान्धव मनुष्यों का पालन पिता के समान करते हो या नहीं और निद्रा, आलस्य, भय, क्रोध, तंद्रा और दीर्घसूत्रता इन छै दोषों को तुमने छोड़ा है या नहीं वैशम्पायनजी बोले हे राजा जनमेजय ! युधिष्ठिर नारदजी के उक्त प्रश्नोंको सुनकर दण्डवत् करके बड़ी नम्रता से बोला कि महाराज मैं आपके प्रश्नों के अनुसार आज से सब कर्म किया करूंगा यह कहकर युधिष्ठिर ने वैसाही बर्ताव किया और इस सागररूपी मेखला अर्थात् खाई रखनेवाली पृथ्वी को विजय किया इसके पीछे नारदजीने फिर कहा कि हे युधिष्ठिर ! जो राजा उक्त रीति से चारों वर्णों की रक्षा करता है वह इस संसार में बड़ा सुख भोग कर इन्द्र की सलोकता को पाता है १२२। १२६॥

इति श्रीभाषामहाभारते सभापर्वणि पञ्चमोऽध्यायः ५ ॥

छठवां अध्याय।

युधिष्ठिरका नारदजी से यह पूछना कि आपने और भी कोई ऐसी सभा देखी है और नारदजीका ब्रह्मा आदि की सभाओं का वर्णन करना ॥

वैशम्पायनजी बोले हे राजा जनमेजय! राजा युधिष्ठिर नारदजी की आज्ञा पाकर कहनेलगा कि महाराज आपने सब बातें धर्म के अनुसार न्याय सहित ठीक २ कही हैं मैं उनको अपनी शक्ति और बुद्धिबल के अनुसार करता हूं और आपने जो जो कर्म राजाओं के करने के योग्य वर्णन किये हैं उन सब को भी मैंने किया है हां हमारे पुरुषा लोगोंने जो जो कर्म किये हैं और जिस २ राहपर वह चले हैं उन्हीं को हमारी भी करने की इच्छा रहती है परन्तु वह हम से हो नहीं सक्तेहैं वैशम्पायनजी बोले हे राजा जनमेजय ! यह कहकर वह बुद्धिमान् युधिष्ठिर उन लोकचर अमितद्युत और देवर्षि नारदजीको विश्रान्त और स्वस्थता से बैठेहुये देखकर और यह जानकर कि यह मुहूर्तभर से अधिक नहीं ठहरसक्ते हैं उनसे पूछने लगा कि महाराज आप इस विश्व के सब लोकों में जिनको ब्रह्माजीने मनुष्यों को उत्पन्न करने के पहले निर्माण किया था मनके वेगके समान घूमा करते हैं भला यह तो कहिये कि आपने

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भी किसी लोकमें ऐसी या इससे श्रेष्ठ सभा देखी है यह सुनकर नारदजी अचंभे के साथ मधुर बोली से कहनेलगे कि मनुष्य लोक में ऐसी मणिजटित सभा हमने तो न देखी है न आजतक सुनी है परन्तु जो तुम सुनना चाहो तो हम यमराज, वरुण, इन्द्र, कुबेर और ब्रह्माजी की सभाओं का हाल वर्णन करैं इनमें ब्रह्माजी की सभा तो अविद्या आदि क्लेशों से रहित, विश्वरूपिणी और दिव्य अर्थात् दैवी और अदिव्य अर्थात् मानुषी अभिप्रायों से युक्त है और देवता, पितृगण, साध्य, यज्ञ करनेवाले, शुद्ध अंतःकरणवाले और ऐसे मुनियों से जिन्होंने बड़ी दक्षिणा सहित वेदयज्ञ कियेहैं सेवित हैं यह सुनकर युधिष्ठिरने अपने भाइयों सहित नारदजी से हाथ जोड़कर कहा कि महाराज हम उक्त सब सभाओंका वृत्तांत विस्तारपूर्वक सुना चाहते हैं कि वह सभायें किन द्रव्यों से बनी हैं और उनकी लम्बाई चौड़ाई कितनी २ है और यह भी वर्णन कीजिये कि उन सभाओं में ब्रह्मा, इन्द्र, वरुण, कुबेर और यमराज की कौन २ सभासद बैठकर सेवा करते हैं यह सुनकर नारदजी बोले कि अच्छा हम उन सब सभाओं का वर्णन क्रमपूर्वक कहते हैं आप सुनिये १। १६॥

इति श्रीभाषामहाभारते सभापर्वणि षष्ठोऽध्यायः ६॥

सातवां अध्याय।

नारदजीका युधिष्ठिर से इन्द्रकी सभाका वर्णन करना॥

नारदजी बोले हे युधिष्ठिर! इन्द्रकी सभा दिव्य, प्रकाशमान और कर्मोंसे जीती हुई है और उस सभाको विश्वकर्मारूप आपही इन्द्रने बनाया है वह सभा सौ योजन लंबी डेढ़सौ योजन चौड़ी और पांच योजन ऊंची है और इच्छा के अनुसार जहां चाहे तहां जासक्ती है वहां बुढ़ापा शोक और ग्लानि नहीं व्यापते हैं वहां का स्थान निर्भय शान्त कल्याणकारी और रमणीक है और वहां दिव्य वृक्ष लगे हुयेहैं उस सभा में देवेन्द्र इन्द्र अपनी शची नाम महेन्द्राणी शोभा और लक्ष्मी के साथ बहुत सुन्दर आसनपर विराजमान हैं इन्द्रका शरीर लक्ष्मी कीर्ति और प्रभायुक्त अनिर्देश्य है और वह वहां किरीट मुकुट लाल बाजूबन्द, निर्मल वस्त्र और चित्रमाला धारण किये हुये हैं उस सभा में मरुत, सब गृहमेधी, सिद्ध, देवर्षि, साध्यगण, देवगण और मरुद्गण सुंदर प्रकाशमान शरीर धारण कियेहुये सुनहरी माला और सुंदर २ वस्त्रों से अलंकृत होकर इन्द्रकी उपासना करते हैं १। ८ और संपूर्ण देवऋषि

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जो निष्पाप और अग्नि की समान प्रकाशमान हैं और सोम यज्ञ करनेवाले पराशर, पर्वत, सावर्णि, गालव, शंखलिखित, गौरशिरा, दुर्वासा, क्रोधन, श्येन, दीर्घतमा, पवित्रपाणि, सावर्णि, याज्ञवल्क्य, भालुक, उद्दालक, श्वेतकेतु, तांड्य, भांडायनि, हविष्मान्, गरिष्ठ, राजा हरिश्चन्द्र, हृद्य, उदरशांडिल्य, पराशर्य, कृषीबल, वातस्कंध, विशाख, विधाता, काल, करालदंत, त्वष्टा, विश्वकर्मा, तुंबुरु ऐसे मुनि जिनका जन्म योनि से हुआहै, वह ऋषि जिनका जन्म योनि से नहीं हुआ है, वायुभक्षी, सहदेव, सुनीथ, वाल्मीक, शमीक, सत्यवाक्, प्रचेता, मेधातिथि, वामदेव, पुलस्त्य, पुलह, क्रतु, मरुत, मरीचि, स्थाणु, गौतम, कक्षीवान्, तार्क्ष्य, वैश्वानर, कालक, वृक्षीय, आश्रव्य, हिरण्मय, संवर्त्त, देवहव्य, विष्वक्सेन, दिव्यजल, दिव्य ओषधी, श्रद्धा, मेधा, सरस्वती, अर्थ, धर्म, काम, बिजली, जल बरसानेवाले मेघ, वायु, पूर्वदिशायज्ञवाह, सत्ताइसों अग्नि, सोमाग्नि, इन्द्राग्नि, मित्र, सविता, अर्यमा, भग, विश्वेदेवा, साध्यगण, बृहस्पति, शुक्र, विश्वावसु, चित्रसेन, सुमनु, तरुण ६।२२ सब यज्ञ सब दक्षिणा ग्रहास्तोम और जितने यज्ञवाह मंत्र हैं सब उस सभा में इन्द्रकी उपासना करते हैं और अप्सरा गन्धर्व नाचने गाने हँसी, स्तुति और अनेक मंगल कर्म कर करके इन्द्र को क्रीड़ा कराया करते हैं और ब्रह्मर्षि राजर्षि और देवर्षि उसके बल और वृत्रासुर को मारने के पराक्रम को कह २ कर इन्द्र को प्रसन्न किया करते हैं वहांपर सब उक्त देवता और ऋषि अग्नि के समान प्रकाशमान विमानों में बैठ बैठकर माला आदि भूषणों से अलंकृत हो होकर आया जाया करते हैं और बृहस्पति शुक्र और अन्य बहुतसे महात्मा, यतव्रत भृगुजी जो ब्रह्मा के समान हैं और सप्तऋषि वहां बने रहते हैं और चन्द्रमा के समान चमकते हुये विमानों में आते जाते हैं हे युधिष्ठिर! मैंने इन्द्रकी पुष्करमालिनी नाम सभा इस प्रकारकी देखी है अब यमराजकी भी सभाका वर्णन करताहूं २३। ३०॥

इति श्रीभाषामहाभारते सभापर्वणि सप्तमोऽध्यायः ७॥

आठवां अध्याय।

नारदजी का युधिष्ठिर से यमराज की सभाका वृत्तान्त कहना॥

नारदजी बोले हे राजा युधिष्ठिर! अब हम तुमसे सूर्य के पुत्र यमराज की सभाका वर्णन करते हैं उस सभाको विश्वकर्मा ने बनाया है और वह तेजोमय

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

और सौ २ योजन लम्बी और चौड़ी है प्रकाश उस सभाका सूर्य के तुल्य है उसमें न बहुत गर्मी है न सरदी वहां जाने से मन बहुत प्रसन्न होजाताहै और उसमें रहने से न शोक होता है न बुढ़ापा व्यापता है और भूख प्यास कुछ नहीं लगती है और वहाँ के रहनेवालों में दीनता ग्लानि और प्रतिकूलता नहीं होती है उस सभा में सब दैवी और मानुषी पदार्थ और भक्ष्य, भोज्य, लेह्य, चोष्य और पेय आदि बड़े २ स्वादिष्ठ खाने के पदार्थ रहते हैं और ऐसे २ वृक्ष लगेहुये हैं कि जिस फलकी इच्छा होवे वही फल उनमें उत्पन्न होजाताहै और ठंढा गरम दोनों प्रकार का जल वहां भरा रहता है उस सभा में यमराज की उपासना बड़े २ ब्रह्मर्षि और राजर्षि किया करते हैं और ययाति, नहुष, पुरु, मांधाता, राजा सोमक, त्रसदस्यु, कृतवीर्य, श्रुतश्रवा, अरिष्टनेमि, कृतवेग, कृतिनिमि, प्रतर्दन, शिबि, मत्स्य, पृथुलाक्ष्य, बृहद्रथ, वार्त, मरुत, कुशिक, सांकाश्य, सांकृति, ध्रुव, चतुरश्व, सदस्योर्मि, कार्तवीर्य, भरत, सुरथ, सुनीथ, निशठ, नल, दिवोदास, सुमना, अंबरीष, भागीरथ, व्यश्वसदश्व, बध्यूश्व, पृथुवेग, पृथुश्रवा १।१२ पृषदश्व, वसुमना, क्षुपरुषद्रु, वृषसेन, पुरुकुत्स, ध्वजीरथी, आर्ष्टिषेण, दिलीप, उशीनर, औशीनरि, पुंडरीक, शर्याति, शरभ, शुचि, अंगुरिष्ट, वेन, दुष्यंत, सृंजय, जय, भांगासुरि, सुनीथ, निषध, वहीनर, करंधम, वाह्लीक, सुद्युम्न, मधु, ऐल, राजा मरुत, कपोतरोमा, तृणक, सहदेव, अर्जुन, व्यश्व, कृशाश्व, शशिबिंदु दशरथ के पुत्र रामचन्द्र, लक्ष्मण, प्रतर्दन, अलर्क, कक्षसेन, गय, गौराश्व, जमदग्निके पुत्र परशुराम, नाभाग, सगर, भूरिद्युम्न, महाश्व, पृथाश्व, जनक, राजा वैन्य, वारिसेन, पुरुजित, जनमेजय, ब्रह्मदत्त, त्रिगर्त, राजा उपरिचर, इन्द्रद्युम्न, भीमजानु, गौरपृष्ठनल, गयपदम, मुचुकुंद, भूरिद्युम्न, प्रसेनजित, अरिष्टनेमि, सुद्युम्न, पृथुलाश्व, अष्टक, मत्स्य नाम के सौ राजा, नीप नामके सौ राजा, हय नाम के सौ राजा, धृतराष्ट्र नाम के सौ राजा, जनमेजय नामके अस्सी राजा, ब्रह्मदत्त नामके सौ राजा, इरिण नाम के सौ राजा, भीष्म नामके दोसौसे अधिक राजा, भीम नामके सौ राजा, प्रतिविंध्य नाम के सौ राजा, नाग नाम के सौ राजा, हय नाम के सौ राजा, पलाश नामके सौ और कास और कुश आदि नामों के सौ २ दिव्य मनुष्य और तुम्हारे पिता राजा शांतनु, उषंगव, शतरथ, देवराज, जयद्रथ, वृषदर्भ, शशिबिंदु और अन्य सहस्रों राजा लोग जो

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अश्वमेध आदिक बड़े २ यज्ञ करके वहां गये हैं सब उसी सभा में यमराज की उपासना किया करते हैं १३। २७ और अगस्त्य मतंग काल मृत्यु यज्ञ करने वाले सिद्ध और योगी और २ शास्त्र जाननेवाले और पुण्यवान् राजऋषि लोग और अग्निष्वात्ता फेनप उष्माप बर्हिषद और २ मूर्तिमान् पितृगण और कालचक्र अग्नि और वे मनुष्य जो पापकर्म करके और दक्षिणायन सूर्य में मरे हैं और काल के नयन में युक्त हैं, शिंशिप, पालाश, काश, कुशा और २ सहस्रों सभासद हैं जिनके नाम असंख्य होने के कारण से वर्णन नहीं किये जासक्ते हैं हे युधिष्ठिर! यह सभा भी बड़ी रम्य और चलायमान है विश्वकर्मा ने बहुत दिनों तक तप करके इसको बनाया है ज्वाला और प्रकाश उसमें स्वतः है और उस सभा में उग्र तपस्वी सुन्दर व्रती और सत्यवादी शांत संन्यासी पुण्य कर्मों के करनेवाले और शुद्ध मनुष्य दिव्य देह धारण करके और उजले २ वस्त्र बाजूबन्द जड़ाऊ माला और ज्वलित कुण्डल आदि से भूषित हो होकर जाते हैं वहां गन्धर्व और अप्सराओं के गण नृत्य गीत हास्य और रहस्य किया करते हैं और सुगन्ध और दिव्यमाला चारों ओर रहती हैं इसप्रकार से हे युधिष्ठिर! एक कोटि धर्मात्मा लोग यमराज की उपासना उस सभा में किया करते हैं यह हमने यमराज की सभा का वृत्तान्त कहा अब वरुण की सभा का हाल भी सुनिये २८। ४१॥

इति श्रीभाषामहाभारते सभापर्वणि अष्टमोऽध्यायः ८॥

नवां अध्याय।

नारदजी का युधिष्ठिर से वरुण की सभा का हाल वर्णन करना॥

नारदजी बोले हे राजा युधिष्ठिर! वरुण की सभा बड़ी दिव्य प्रभा युक्त और प्रमाण में यमराज की सभा के तुल्य है इसको वरुण ने आप जल के बीचमें बनाया है उसमें अनेक २ प्रकार के रत्न जड़े हैं और फल फूल के सदैव देनेवाले वृक्ष लगाये हैं यह सभा नीले पीले काले सपेद और लाल अवतानों और मंजरी जाल धारी गुल्मों से बद्ध हैं और उसमें सहस्रों पक्षी मधुर बोली बोलनेवाले और दिव्य स्वरूपधारी जहां तहां बैठे रहते हैं उसके स्पर्शमात्र से सुख होता है और उसमें रहने से जाड़ा गरमी कुछ नहीं मालूम होते हैं उस सभा का वर्ण श्वेत है और उसमें बहुत श्रेष्ठ २ आसन बिछे हुये हैं वरुण देवता उसमें माध्वी वरुणानी सहित उत्तम वस्त्र और आभ-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रण पहिरे हुये बैठते हैं और वासुकि तक्षक ऐरावत कृष्ण लोहित पद्म चित्र केवल अश्वतर धृतराष्ट्र बलाहक मणिमान कुंडधार कर्कोटक धनंजय अणिमान कुण्डधार प्रह्लाद मूषिकाद और जनमेजय आदि सब ध्वजा मण्डल और फनधारी सर्प और अदिति के सब पुत्र सुन्दर माला और दिव्य सुगन्धित चन्दन लगाये हुये उस सभा में वरुण की उपासना करते हैं और विरोचन का पुत्र राजा बलि नरक पृथिवी जय संह्लाद विप्रचित्त कालखञ्ज नाम के दानव सुहनु दुर्मुख शंख सुनाम सुमति घटोदर महापार्श्व क्रथनपिठर विश्वरूप स्वरूप विरूप महाशिरा दशग्रीव बाली मेघवासा दशावर टिट्टिभ विटभूत संह्लाद इन्द्रतापन और दैत्य जो कुण्डल माला और मुकुट धारण किये हुये हैं और बड़े शूरवीर मृत्यु से मुक्त बड़े व्रती और वरदान पाये हुये उस सभा में वरुण के समीप बैठकर उसकी सेवा किया करते हैं और चारों समुद्र और गङ्गा कालिंदी विदिशा वेण्या नर्मदा वेगवाहिनी विपासा शतद्रू चन्द्रभागा सरस्वती इरावती वितस्ता सिंधु देवनद गोदावरी कृष्णवेगा कावेरी किंपुना विशल्या वैतरणी तृतीया ज्येष्ठला शोणभद्र चर्मण्वती पर्णाशा महानदी सरयू वारवत्या लांगली सरिद्वरा करतोया आत्रेयी लौहित्य नाम महानद लंघती गोमती संध्या त्रिस्रोतसी और २ नदियां और तीर्थ और तालाब कूप झरना तड़ाग दिशा पृथ्वी सब पहाड़ और सब जलचर जीव अपने २ दिव्य स्वरूपों को धारण किये हुये वरुण की सभा में बैठकर वरुण की उपासना किया करते हैं और अप्सरा और गन्धर्वों के गण नाचते गाते और वरुण की स्तुति किया करते हैं और बड़े २ रत्न उत्पन्न करनेवाले पहाड़ अपना स्वरूप धारण किये हुये बड़ी मधुर कथा सुनाया करते हैं और वरुण का सुनाभ नाम मंत्री जिसका नाम गो और पुष्कर है अपने पुत्र पौत्रों सहित वहां रहकर वरुण की उपासना करता है हे युधिष्ठिर ! हमने वरुण की सभा इस प्रकार की देखी है अब तुम कुबेर की सभा का वृत्तान्त सुनो १।३०॥

इति श्रीभाषामहाभारते सभापर्वणि नवमोऽध्यायः ९॥

दशवां अध्याय।

नारदजी का युधिष्ठिर से कुबेर की सभा का वृत्तांत वर्णन करना॥

नारदजी बोले हे राजा युधिष्ठिर ! कुबेर की सभा सौ योजन लंबी और सत्तर योजन चौड़ी है और वर्ण उसका श्वेत है कुबेर ने उस सभा को तपस्या से पाया

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

है उसकी प्रभा के सामने चन्द्रमा की प्रभा अस्त होजाती है और उँचाई उस सभा की कैलास के शिखर की समान है वह सभा गुह्यकों से रक्ष्यमान है और उसमें ऊंचे २ सुनहरे महल बने हुये हैं और चारों ओर रत्न जड़रहे हैं और नानाप्रकार की सुगन्ध वहां उड़ा करती है वह सभा श्वेत बादलों के समान चलती हुई जान पड़ती है और बिजली के समान चमकते हुये दिव्य सुनहरे रंगों से अत्यन्त शोभायमानहै उस सभा में कुबेर दिव्य आभरण और वस्त्रों से अलंकृत होकर कुंडल धारण किये हुये सहस्रों स्त्रियों सहित बड़े दिव्य आसन पर जिसमें पैर रखने का उपधानभी बनाहुआहै बैठाकरते हैंउस सभामें शीतल और मनको आनन्द देनेवाली वायु मंदार आदि सुगन्ध देनेवाले वनों और अलका नाम नलिनी और नंदन वनकी सुगन्धको लियेहुये चला करती है और वहां अप्सरा और गन्धर्वों के गण देवताओं सहित दिव्य तानों से गाया करते हैं १। ९ और मिश्रकेशी, रंभा, चित्रसेना, शुचिस्मिता, चारुनेत्रा, घृताची, मेनका, पुंजिकस्थला, विश्वाची, सहजन्या, प्रम्लोचा, उर्वशी, इरा, वर्गा, सौरभेयी, समीची, बुद्बुदलता और २ सहस्रों अप्सरा और गंधर्वोंके गण जो नाचने गाने और बजाने में बड़े चतुरहैं वहां बनेरहते हैं और गाते बजाते रहते हैं और किन्नर, नर, मणिभद्र, श्वेतभद्र, गुह्यक, कशेरक, गंडकंडु, प्रद्योत, कुस्तुंबुरु, पिशाचा, गजकर्ण, विशालक, वराहकर्ण, ताम्रौष्ठ, फलकक्ष, फलोदक, हंसचूड़, शिखावर्त्त, हेमनेत्र, विभीषण, पुष्पानन, पिंगलक, शोणितोद, प्रवालक, वृक्षवास्य, निकेत, चीरवासा और लाखों गंधर्व, लक्ष्मी नलकूबर मैं और मुझसे और २ पुरुष ब्रह्मर्षि देवर्षि और क्रव्यादि सब वहां रहकर कुबेरकी उपासना किया करते हैं श्रीउमापति महादेवजी जो उग्र धनुष और शूल के धारण करनेवाले और त्र्यंबक हैं पार्वती और विकट क्षतजाक्ष, बड़ा शब्द करनेवाले मेदा मांस के खानेवाले भयानक और अस्त्र शस्त्र लियेहुये भूतोंसहित उस अपने मित्र कुबेरकी सभा में उसके समीप रहते हैं १०। २४ और विश्वावसु, हाहा, हूहू, तुंबुरु, पर्वत, शैलूष, चित्रसेन, गीतज्ञ, चित्ररथ और २ सैकड़ों गंधर्वों के पति और विद्याधरोंका राजा चक्रधर्मा अपने छोटे भाइयों सहित और सैकड़ों किन्नर और भगदत्त आदि राजा और किंपुरुषों का ईश्वर तुम और राक्षसों का राजा और महेन्द्र गन्धमादन, हिमवान्, पारियात्र, विन्ध्य, कैलास, मंदिर, मलय, दर्दुर, महेन्द्र, गन्धमादन,

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इन्द्रकील, सुनाभ और सुमेरु आदि सम्पूर्ण पर्वत यक्ष गन्धर्व और निशाचरों सहित कुबेरका भाई विभीषण और नंदीश्वर महाकाल और शंकुकर्ण आदि दिव्य पार्षद और काष्ठ, कुंभीमुख, दंती, विजया, तपोधिका, श्वेत वृषभ, राक्षस और पिशाच सदा कुबेर की उपासना किया करते हैं वह कुबेर इन सब उक्त पार्षदों सहित देवदेवेश और त्रैलोक्यभावन महादेवजी के पास नित्य जाकर प्रणाम करता है और उनकी आज्ञा पाकर उनके निकट बैठजाता है और कभी २ शिवजी भी सखाभाव से कुबेरकी सभा में जा बैठते हैं और मुख्य २ समुद्र शंख पद्मआदि सब निधियों को लेकर कुबेर की उपासना किया करते हैं हे युधिष्ठिर! हमने अन्तरिक्ष में कुबेर की इसप्रकार की सभा देखी है अब हम ब्रह्माजीकी सभाका वृत्तान्त कहते हैं २५।४०॥

इति श्रीभाषामहाभारते सभापर्वणि दशमोऽध्यायः १०॥

ग्यारहवां अध्याय।

नारदजीका युधिष्ठिर से ब्रह्माजीकी सभाका वृत्तान्त वर्णन करना॥

नारदजी बोले हे युधिष्ठिर! ब्रह्माजीकी सभाका स्वरूप मुझसे वर्णन नहीं होसक्ता है पहिले एक समय सतयुग में श्रीसूर्य देवता ब्रह्माजीकी सभा को देखनेके लिये स्वर्ग से पृथ्वीपर आये थे और उन्होंने उस सभाको मनुष्यरूप धरके पूरा २ देखा था और मुझसे उसका वृत्तान्त कहा था उसके दिव्य अप्रमेय और मानसी प्रभाव रखने के कारण से उसका वर्णन नहीं होसक्ता है मैंने उस सभाके गुणोंको सुनकर उसके देखने की इच्छा से सूर्य से कहा कि महाराज मैं भी ब्रह्माजीकी सभाको देखना चाहताहूं ऐसा कौन सा तप और कर्म कियाजावे जिससे मैं उस सभा को देखसकूं और जो कोई दिव्य औषधी या और कोई पदार्थ ऐसा होवे जिससे मैं उस सभाको देखसकूं तो वह भी कहिये यह सुनकर सूर्य ने मुझसे कहा कि तू सावधान और शुद्ध अन्तःकरण से सहस्र वर्षतक ब्रह्मव्रत कर यह सुनकर मैंने उस महाव्रतको हिमालय की पृष्ठिपर आरम्भ किया और उसके समाप्त होनेपर सूर्य मुझको आप अपने साथ ब्रह्माजीकी सभामें लिवालेगये १।१० मैंने उसको जाकर देखा परन्तु मेरी सामर्थ्य उसके स्वरूप को वर्णन करने की नहीं है क्योंकि वह सभा तो क्षण भरमें ऐसा दूसरा स्वरूप धारण करलेती है कि उसका भी वर्णन नहीं होसक्ता है मैं उसके परिमाण और स्थान को भी नहीं कहसक्ताहूं मैंने तो ऐसा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

स्वरूप पहिले कभी नहीं देखा था उस सभा में जानेवाले का मन सदैव प्रसन्न रहता है शीत और गरमी वहां नहीं सताती है और भूख प्यास और ग्लानि भी नहीं होती है वह सभा नाना प्रकार की अत्यन्त प्रकाशित मणियों की बनी है उसमें खम्भे आदि कुछ नहीं हैं और वह नित्य है उसका नाश कभी नहीं होताहै वह सभा स्वयं प्रकाशित स्वर्ग के ऊपर है और उसकी प्रभाके सामने सूर्य चन्द्रमा और अग्नि का प्रकाश अस्त होजाता है उस सभा में सब सामर्थ्य रखनेवाले और अपनी दैवीमाया से सम्पूर्ण लोकों को धारण करनेवाले ब्रह्माजी बैठा करते हैं और सब प्रजापति अर्थात् दक्ष, प्रचेत, पुलह, मरीचि, कश्यप, भृगु, वशिष्ठ, गौतम, अंगिरा, पुलस्त्य, क्रतु, प्रह्लाद, कर्दम, अथर्वांगिरस, बालखिल्य, मनअंतरिक्ष, विद्या, वायु, अग्नि, जल, पृथ्वी, शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गन्ध, प्रकृति और सृष्टिके कारण अगस्त्य, मार्कण्डेय, जगदग्नि, भरद्वाज, संवर्त्त, च्यवन, दुर्वासा, ऋष्यशृंग, सनत्कुमार, असित, देवल, तत्त्वज्ञाता जैगीषव्य, ऋषभ, जितशत्रु महावीर्य, मणि ११। २४ आयुर्वेद अपने आठों अंगों सहित देह धारण किये हुये, नक्षत्रों सहित चन्द्रमा सूर्य, उच्चासों वायु, सम्पूर्ण यज्ञ, संकल्प और प्राण मूर्तिमान, अर्थ, धर्म, काम, हर्ष, द्वेष, तप, दम, गन्धर्व और अप्सराओं के गण, सत्ताईस नक्षत्र, लोकपाल इन्द्र, बृहस्पति, बुध, मंगल, शनैश्चर, राहु और २ ग्रह, मंत्र, रथन्तर, हरिमाण, वसुमान, सब देवता, मरुत्, विश्वकर्मा, अष्टवसु, सब पितृगण, सब हविष, ऋग्वेद, सामवेद, यजुर्वेद, अथर्ववेद, सब शास्त्र, इतिहास, उपवेद यथा आयुर्वेद, धनुर्वेद, वेदों के सब अंग, ग्रह, यज्ञ, सोम, सावित्री, दुर्गतरणी, सात प्रकारकी वाणी अर्थात् प्रणव जिसमें अकार उकार मकार अर्द्धमात्रा नाद बिंदु और शक्ति ये सात प्रकारें हैं, मेधा, धृति, श्रुति, प्रज्ञा, बुद्धि, यश, क्षमा, सामवेदकी स्तुतियां, सब शास्त्र, नानाप्रकार की गाथा तर्कयुक्त भाष्य ये सब देह धारण किये हुये नाना प्रकार के नाटक, काव्य और कथा आदिक जो बड़े मनुष्योंकी मान्य हैं क्षण, लव, मुहूर्त्त, दिन, रात्रि, अर्द्धमास, षट्ऋतु २५। ३७ प्रभव आदि साठि संवत्सर, पंचयुग, मानुष, पित्र्य, दैव और ब्राह्म चारों प्रकार के अहोरात्र, कालचक्र, जो नित्य अव्यय और अक्षय हैं, धर्मचक्र, अदिति, दिति, दनुसुरसा, विनता, इरा, कालिका, सुरभी, सरमा, सोमती, माधा, कद्रू, रुद्राणी, लक्ष्मी, भद्रा, षष्ठी, परा, पृथ्वी, गांगता, ह्रीः,

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

स्वाहा, कीर्ति, सुरादेवी, शची, पुष्टि, अरुंधती, संवृत्ति, आशा, नियति, सृष्टि-देवी, रति, बारह सूर्य, आठ वसु, ग्यारह रुद्र, ४९ मरुत्, दोनों अश्विनीकुमार, विश्वेदेवा, साध्यगण, मन के तुल्य वेग रखनेवाले पितर, पितरों के सात गण जिनमें चार मूर्तिमान, और ३ विना शरीर के हैं अर्थात् अग्निष्वात्ता, वैराज-गार्हपत्य, सोमय, एकशृंग, चतुर्वेद और कला जो चारों वर्णों के मनुष्यों में पूजे जाते हैं, राक्षस पिशाच, दानव, गुह्यक, नाग, सुपर्ण, पशु, स्थावर जंगम और २ महाभूत पुरंदर, वरुण, कुबेर, यमराज, महादेवजी, महासेन, नारायण, देवर्षि, बालखिल्य, योनि से उत्पन्न हुये और विना योनिसे उत्पन्न हुये, त्रिलोकी के सब जड़ चैतन्य, अट्ठासीसहस्र उर्ध्वरेता ऋषि, पचास प्रजा-वान् ऋषि और २ सम्पूर्ण देवता आदि जो कुछ तीनों लोक में हैं सब वहां आकर ब्रह्माजी की उपासना करते हैं और ब्रह्माजी को प्रणाम कर २ के चले जाते हैं और ब्रह्माजी उन सब देवता, दैत्य, ब्राह्मण, यक्ष, सुपर्ण, कालेय, गन्धर्व और अप्सराओं से यथायोग्य मिलते हैं और उनको बैठाकर अर्थ सं-भोगों से युक्त करते हैं और वह सभा उन सब देवता और ब्रह्मर्षियों के बैठने और लक्ष्मी से दीप्यमान होने के कारण से अत्यन्त सुशोभित होजाती है हे युधिष्ठिर! हमने उस दुर्लभ सभा को देखा है मनुष्यों में ऐसीही दुर्लभ यह तुम्हारी सभा है देवलोक में उस सभासे उत्तम और मनुष्यलोक में इस तुम्हारी सभासे उत्तम सभा नहीं है ३८। ६२॥

इति श्रीभाषामहाभारते सभापर्वणि एकादशोऽध्यायः ११॥

बारहवां अध्याय।

नारदजीका युधिष्ठिर से हरिश्चन्द्र राजाका वृत्तान्त कहना और राजसूय यज्ञ करने का उपदेश करना॥

उक्त कथाको सुनकर युधिष्ठिर ने कहा कि हे नारदजी! आप वक्ताओं में सबसे श्रेष्ठ हैं आपने यमराज की सभा में बहुधा राजा लोगों का रहना और वरुण की सभा में नाग, दैत्येन्द्र, नदियां और समुद्रों का होना और कुबेर की सभा में यक्ष, गुह्यक, राक्षस, गंधर्व, अप्सरा और शिवजी का बैठना और ब्रह्माजी की सभामें महर्षि, सब देवता और सब शास्त्रोंका उपासना करना और इन्द्र की सभामें देवता, गंधर्व और नानाप्रकार के महर्षियों का सेवा करना वर्णन किया है परंतु इन्द्र की सभामें राजर्षियों में से केवल

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

एक राजा हरिश्चन्द्र का ही होना कहाहै इससे मैं पूछता हूं कि उस राजाने ऐसा क्या कर्म अथवा तप किया था जिसके कारण से वह इन्द्र की बराबर बैठता है और यह भी कहिये कि आपने वहां मेरे पिता राजा पांडुको भी देखा था या नहीं यदि उससे आपका मिलाप हुआ हो तो यह कहिये कि आपसे उससे क्योंकर मिलाप हुआ और उसने कुछ कहला तो नहीं भेजाहै यह सुन कर नारदजी बोले कि पहिले मैं तुमसे राजा हरिश्चन्द्र का माहात्म्य कहता हूं राजा हरिश्चन्द्र बड़ा बलवान् और सब राजाओं का सम्राट् था और सब राजा उसकी आज्ञा में रहते थे १। ११ उसने सुवर्ण से भूषित रथपर चढ़के शस्त्र के प्रताप से जंबू, कुश, शाक, क्रौंच, शाल्मलि, गोमेद और पुष्कर आदि सातों द्वीपों को जीता था इस प्रकार से सब पृथ्वी को पहाड़ और वनों सहित जीतकर उसने राजसूय यज्ञ रचा था उस यज्ञमें सब राजा लोग धन ले ले कर उसके पास आये थे और ब्राह्मणों को भोजन कराने पर नियत किये गये थे राजा हरिश्चन्द्रने याचकों को उनके मांगने से पांच २ गुणा धन दिया था और अग्नि के विसर्जन होनेपर उसने देश २ से आये हुये ब्राह्मणोंको नाना प्रकार के धन दे दे कर तृप्त किया था उन ब्राह्मणों ने राजा के दियेहुये भोजन द्रव्य और नाना प्रकार के रत्नों से तृप्त होकर राजाको आशीर्वाद दिये थे इस कारण से राजसूय यज्ञ करनेपर राजा हरिश्चन्द्र दूसरे राजाओं से अधिक तेजस्वी और यशस्वी होगया था और इसी कारण से वह सहस्रों स्वर्गवासी राजाओं से अधिक पदवी को पहुँचा है राजसूय यज्ञ करने के पीछे राजा हरिश्चन्द्रने साम्राज्य पदवी पाई इसी प्रकार से जो दूसरा राजा भी राजसूय यज्ञ करेगा वह भी इन्द्रके साथ आनन्द करेगा और जो मनुष्य संग्राम में भागता नहीं है वहीं सम्मुख लड़कर मरजाता है उसको भी वही लोक प्राप्त होता है और जो अपने शरीर को तपस्या करके त्याग करते हैं उनको भी वही गति मिलती है १२। २२ हे युधिष्ठिर! तुम्हारे पिता राजा पांडुभी हमको मिले थे और उन्होंने हमको नरलोक में आते हुये जानकर राजा हरिश्चन्द्र के विभवको देखकर हमसे कहा था कि जो आप नरलोक में जाइये तो हमारे पुत्र युधिष्ठिर से कहना कि वह सब पृथ्वी को जीत सक्ता है और भाई उसके आज्ञाकारी हैं इससे वह भी राजसूय यज्ञ करे उसके राजसूय यज्ञ करने से हम को भी राजा हरिश्चन्द्रके सदृश इन्द्रलोक में रहनेको वास मिलेगा यह सुनकर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हमने राजा पांडुसे कहा कि बहुत श्रेष्ठ ऐसाही होगा जब हम नरलोकमें जा-यँगे तब युधिष्ठिर से राजसूय यज्ञ करने को कहेंगे इससे हे युधिष्ठिर तू अपने पिताके कहनेके अनुसार राजसूय यज्ञ कर उसके करने से तुमको भी इन्द्रलोक मिलेगा और तुम वहां अपने पुरुषाओं के साथ रहोगे यह यज्ञ बहुत बड़ा है इसमें विघ्न भी बहुतसे होते हैं और यज्ञ के नाश करनेवाले ब्रह्मराक्षस यज्ञ में छिद्र ढूंढ़ा करते हैं और क्षत्रीकुलका नाशक और पृथ्वीका क्षय करने वाला युद्ध होता है और इसमें कोई २ कारण ऐसा भी होजाता है जो क्षयका करने वाला होता है इससे हे युधिष्ठिर ! तुम चारोंवर्ण की रक्षा सावधानी से करते हो विचारकर जैसा उचित जानो तैसा करो और मुझको अब आज्ञा दो मैं द्वारका-पुरी जाना चाहता हूं परमेश्वर करे तुम ऐश्वर्यवान् हो वृद्धि पाओ आनन्द करो और ब्राह्मणों को धन से तृप्त करो २३। ३२ वैशम्पायनजी बोले हे राजा जनमेजय ! नारदजी पांडवों से बिदा होकर उन ऋषियों सहित जिनके साथ आये थे चले गये और युधिष्ठिर अपने भाइयों से राजसूय यज्ञ करनेकी सलाह करने लगा ३३। ३४॥

इति श्रीभाषामहाभारते सभापर्वणि द्वादशोऽध्यायः १२॥

तेरहवां अध्याय।

युधिष्ठिरका धर्म से राज्य प्रबन्ध करना और अपने भाई सम्बन्धी ऋषि और श्रीकृष्णजी से राजसूय यज्ञ करने की सलाह करना॥

वैशम्पायनजी बोले हे राजा जनमेजय ! नारदजी के चले जाने पर राजा युधिष्ठिर श्वास ले ले कर राजसूय यज्ञ करने का विचार करनेलगा और महात्मा राजर्षियों का माहात्म्य और यज्ञद्वारा उनको अच्छे लोक मिलना और उन सबमें हरिश्चन्द्रका विशेष वैभव होना सुनकर उसनेभी यज्ञ करनेकी इच्छा की और उसीके विचारमें वह बेचैन रहनेलगा इसके पीछे युधिष्ठिरने अ-पने सभासद राजा आदिकों का आदर सत्कार करके और उन सबसे आपभी पूज्यमान होकर राजसूय यज्ञ करनेके लिये तैयारी करनेका दृढ़ निश्चय किया और धर्म करने की चिंता करने में यह विचार करनेलगा कि ऐसा क्या काम कियाजावे जिससे सब लोकोंका हित होवे और अपनी प्रजापर अनुग्रह करके उनके हितकी यह बात कहने लगा कि सबको जो वस्तु जिसके योग्य हो देना चाहिये क्योंकि धर्म सबसे श्रेष्ठहै युधिष्ठिर के इसप्रकारसे विचारने पर सब

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection: Digitized by eGangotri

प्रजा उसको पिताके समान माननेलगी और युधिष्ठिर के परिग्रह भीमसेन के प्रजापालन अर्जुन के शत्रुनाश करने सहदेवके धर्म शासन करने और नकुल के नम्रस्वभाव होने से उनका संपूर्ण देश कलहरहित निर्भय और धर्ममें निरत होगया १। ११ वर्षा सब राज्य में इच्छानुसार होनेलगी और ब्याज की जीविका यज्ञों की सामर्थ्य, गोकी रक्षा और बनियोंके व्यापारने बड़ी वृद्धि पाई राज्य का प्रबंध अच्छीतरहसे होनेलगा दरिद्रियोंसे पिछले वर्षका कर मांगना और प्रजा को पीड़ा देना और प्रजापर कर बढ़ाना बंद करदियागया सब प्रजा रोग और अग्नि के भय से विमुक्त होगई युधिष्ठिर के इस प्रकार से धर्मयुक्त होनेपर चोर और ठगोंकी पीड़ा और परस्पर मृषाकर्म करना फिर सुननेमें नहीं आया राजालोग युधिष्ठिर को प्रसन्न करने उसके पास बैठने वार्षिक कर देने और संधिविग्रह आदि छै गुणों में व्यापारियों के तुल्य होगये और उसके राज्यकी बड़ी वृद्धि हुई राजा युधिष्ठिर जिस २ देश का अधिकारी होता था उस २ देश के राजाओं में पितृगुण अर्थात् नीति शिक्षा और मातृगुण अर्थात् वात्सल्यता आदि गुण होजाते थे इस कारण से गोपाल से लेकर ब्राह्मणों तक सब प्रजा युधिष्ठिर से बड़ी प्रीति मानने लगी वैशंपायनजी बोले हे राजा जनमेजय! इस प्रकार से राज्यप्रबन्ध होने पर युधिष्ठिर ने एक दिन सब मंत्री और भाइयों से राजसूय यज्ञ करने की सलाह पूछी उसकी बातको सुनकर मंत्रियों ने कहा कि जिसप्रकारसे राजसूय यज्ञकरके वरुणने सबजलको जीतकर साम्राज्य पदवी पाई थी उसी प्रकार से राजा भी सब पृथ्वी को जीतकर सम्राट् होने की इच्छा करताहै सो आपकोभी आपके सब सुहृद् सम्राट् होनेके योग्य जानकर राजसूय यज्ञ करने के योग्य समझते हैं १२। २२ क्षत्रियों की सत्रसंपत्ति आपके वश में है इससे आप उस यज्ञ को कीजिये जिसमें ब्राह्मणलोग छै अग्नि स्थापन करते हैं और राजा प्रथम दर्वीहोम करके फिर सब यज्ञों को करता है और यज्ञ के अंत में सब को जीतने के कारण से राजा का अभिषेक होता है आप समर्थ हैं और हम सब आपके आज्ञाकारी हैं आप तो थोड़ेही समय में यज्ञ कर सकेंगे इसके पीछे सब सुहृदों ने भी युधिष्ठिर से कहा कि आप राजसूय यज्ञ कीजिये उन सबकी बातको सुनकर युधिष्ठिर ने उस यज्ञ के करने का निश्चय विचार करने को अपने भाई मन्त्री और ऋत्विजों सहित धौम्य और व्यास आदि ऋषियों को बुलाकर मन्त्र किया और उनसे कहा कि मेरी इच्छा सम्राट्

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

के योग्य राजसूय यज्ञ करने की है इससे आप लोगों से पूछता हूं मेरी वह इच्छा क्योंकर पूरी होवै यह सुनकर उन सब ऋषियोंने कहा आप राजसूय यज्ञ करने के योग्य हैं कीजिये इसपर उसके मन्त्री और भाइयों ने भी सम्मत दिया परंतु युधिष्ठिर लोक के हित करने की इच्छा से अपनी सामर्थ्य, धन का संचय, देश और व्यतीत और आनेवाले काल को विचारने लगा क्योंकि जो राजा इन बातों का पहिले से विचार करलेता है उसको दुःख कभी नहीं होता है और यह सोचकर कि अपने ही मन्त्र से यज्ञ करना ठीक नहीं है उस काम के करने का निश्चय करने के लिये उसने श्रीकृष्ण जी को सबसे श्रेष्ठ जगत्कर्त्ता जगन्मय जगदीश और योग्य जानकर उनका ध्यान किया और इन्द्रसेन नाम दूत को उनके बुलाने के लिये द्वारकापुरी को भेजा वह दूत जल्दी चलनेवाले रथ में बैठ कर शीघ्र द्वारकापुरी में पहुँचा और श्रीकृष्ण जी को वन्दना करके उन्हें युधिष्ठिर का संदेशा सुना दिया श्रीकृष्ण जी युधिष्ठिर को अपना दर्शनोत्सुक जान कर द्वारका से उस दूत को साथ लिये हुये चलदिये और अनेक देशों को नांघते हुये इन्द्रप्रस्थ में शीघ्र जा पहुँचे युधिष्ठिर और भीमसेन ने उनका पूजन किया और अर्जुन नकुल और सहदेव ने उनकी उपासना गुरु के तुल्य की और जब वह अपनी फूफी कुन्ती से मिलकर कुछ देर विश्राम करचुके तब युधिष्ठिर उनके पास जाकर अपना प्रयोजन कहनेलगे २३।४५ कि हे श्रीकृष्णजी! मैं राजसूय यज्ञ करना चाहता हूं उसके करने के लिये जो जो बातें होनी चाहियें उन सब को आप जानते हैं अर्थात् राजसूय यज्ञ वही मनुष्य करसक्ता है जो सब राजाओं का स्वामी हो और जिसकी सब जगह मानता हो हमारे सुहृद्लोग तो हमको राजसूय यज्ञ करने के योग्य बताते हैं परन्तु मैं अपनी योग्यता और अयोग्यता को आपके मुखसे सुना चाहता हूं क्योंकि ये सब लोग तो कोई संबंध कोई स्वार्थ कोई किसी प्रयोजन और कोई २ स्नेह के कारण से दोष को नहीं बताते हैं जैसे हम कहते हैं वैसाही सब सम्मत दे देते हैं आप इन सब बातों और काम क्रोध को छोड़कर जो बात श्रेष्ठ और करने के योग्य हो उसे कहिये ४६।५१॥

इति श्रीभाषामहाभारते सभापर्वणि त्रयोदशोऽध्यायः १३॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

चौदहवां अध्याय।

श्रीकृष्णजी का युधिष्ठिर से राजसूय यज्ञ करने के लिये पहिले जरासंध राजा के मारने का उपदेश करना॥

युधिष्ठिर की उक्त बात को सुनकर श्रीकृष्णजी बोले कि तुम सब प्रकार से राजसूय यज्ञ करने के योग्य हो और सब बातों को जानते हो परन्तु मैं कुछ विशेष कहता हूं जिस समय परशुरामजी ने क्षत्रियों का नाश किया था उस समय जो क्षत्री लोग भाग गये थे और परशुरामजी ने नहीं मारे थे उनसे यह क्षत्रीवंश फिर से हुआ है और उनकी बढ़ोतरी होने पर सब ने संकल्प किया था कि हम में से जो क्षत्री सबको जीतलेवै वह सम्राट् होवै हम जानते हैं कि पुराने लोगों से तुमने भी यह सुना होगा सब क्षत्री लोग इला और इक्ष्वाकु वंशकी प्रकृति को मानते हैं अर्थात् इला के पुत्र पुरूरवा आदि जिनसे चन्द्रवंश हुआ और इक्ष्वाकु के पुत्र नाभागआदि जिनसे सूर्यवंश चला है दोनों की यही प्रकृति थी कि वे लोग सब राजाओंको जीत २ कर साम्राज्य पदवीको पहुँचेथे इन्हीं दोनों वंश के राजा लोग कुलीन गिने जाते हैं और ययाति वंश में भोजकी संतान अपने गुणों से यहां तक बढ़ी कि चारों दिशाओं में फैलगई और सब राजा उनकी उपासना करने लगे परन्तु अब आजकल राजा जरासंध उन सब राजाओं की लक्ष्मी को तिरस्कार करके अपने बलसे उन सबको जीतकर उनके मस्तक पर स्थित अर्थात् सम्राट् होरहा है वह सब प्रकार से समर्थ है जगत् उसके वशमें होरहा है और वह सम्राट् होनेवाला है देखो राजा शिशुपाल सब प्रकार से उसके आधीन रहकर उसका सेनापति होगया है और शिष्य की तरह उसके पास बना रहता है और करूष करभ और मेघवाहन देशों का राजा दंतवक्र जो मस्तक पर दिव्य मणि धारण करने से अद्भुतमणि भी विख्यात है और बड़ा पराक्रमी और माया से लड़ने वाला है और हंस और डिंभकनामी दोनों बड़े पराक्रमी राजा जरासंध के आधीन रहते हैं और मुरु नामी यमनों का राजा जो पश्चिम दिशा में वरुण के समान बलवान् है और राजा भगदत्त जो राजा पांडुका मित्र है और हमसे पिता की तुल्य प्रीति मानता है और पश्चिम दिशा में पृथ्वी के दक्षिण देश के अंत तक का राजा है दोनों जरासंध के वश में रहते हैं तुमसे हित मानने वाला उस दिशा में केवल कुंतिभोज नाम तुम्हारा मामा है और चन्देरी देशका राजा पुरुषोत्तम जो अपनी दुर्बुद्धिसे अपने को पुरुषोत्तम मान-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कर मेरे चिह्न अर्थात् शंख चक्र आदि को धारण करता है राजा जरासंध का आज्ञाकारी है मैंने पहले इसको मारते २ छोड़ दिया था और बंग और पुंड्र देशों का राजा पौंड्रक वासुदेव और भोजवंशी राजा भीष्मक जो बड़ा बली और इन्द्रका मित्र है और जिसने अपनी विद्या के बल से पांड्य, क्रथ और कैशिकदेशोंको जय किया था दोनों जरासंध के भक्त होरहे हैं राजा भीष्मकका भाई आकृति नामी परशुरामजी के समान शूरवीर था अब वह अपने कुलकी शूरता को भूलकर जरासंधके वशमें होरहा है और हम सब अपने संबन्धियोंसे द्वेषभाव रखकर हमारा बुरा चीता करता है यद्यपि हम सब सम्बन्धी उसका प्रिय करते रहते हैं १।२४ और राजा भोज के वंश के अठारह कुल जो उत्तर दिशा में राज्य करते थे जरासन्ध के भय से अब पश्चिम दिशा को भाग गये हैं और शूरसेन, भद्रकार, बोध, शाल्व, पटच्चर, सुस्थल, सुकुट्ट, कुलिंद, कुन्ति, शाल्वायन, कोशल जो पांचाल और कुन्तिदेशोंका अधिपति था मत्स्य और सन्यस्तपाद आदि राजा भी उसीके डरसे उत्तर दिशाको छोड़ २ कर दक्षिण दिशा को चलेगये हैं और पांचाल देश के सब राजा लोग भी जरासंध के डरसे अपने २ देशों को छोड़कर जहां तहां भाग गये हैं राजा उग्रसेन के कंस नामी पुत्रने यादवों को जीतकर अपना विवाह जरासन्ध की अस्ति और प्राप्ति नाम दोनों पुत्रियों से किया था और उसके बलसे मोहित होकर वह अपने जातिवालोंको महादुःख देने लगा था उस समय उन स्वजातियोंने दुःखी होकर मेरा स्मरण किया और मैंने बलदेवजी को साथ लेकर कंस को उसके साथियों सहित मारकर जातिवालों की रक्षा की यह सुनकर जरासन्ध बड़ी भारी सेना लेकर हमारे ऊपर चढ़ आया उसकी सेनाको देखकर हम सब अपने मंत्री पुरोहित आदि से सलाह करनेलगे कि जो हम इसकी सेना को अस्त्र शस्त्रों से मारना चाहें तो तीनसौ वर्ष में भी न मार सकेंगे क्योंकि वह हंस और डिम्भक नामी राजाओं से रक्षितहै जो देवताओं के समान बली योद्धा हैं और शस्त्रसे अवध्य हैं यह दोनों और तीसरा जरासन्ध मिल कर तीनों लोकोंको जीतसक्ते हैं यही सलाह और २ राजा लोगों ने दी इस के पीछे जरासन्ध की सेनामें एक हंस नामी बड़ा राजा था वह बलदेवजी के हाथसे मारा गया उसको देखकर किसीने डिम्भक से जाकर कह दिया कि हंस मारागया वह यह सुनकर हंसके विना अपना जीना व्यर्थ जानकर यमुना

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

में डूबकर मरगया पीछे यह हाल हंसको मालूम हुआ और वह भी डिम्भक के शोकमें यमुनामें डूबमरा जरासंध उन दोनोंका मरना सुनकर शून्यचित्त होकर लौटगया २५। ४४ उसके जानेपर हम लोग मथुराजी में सुखपूर्वक रहनेलगे इसके पीछे जरासन्धकी दोनों बेटियां अपने पिताके पास गईं और अपना दुःख उससे कहकर कहा कि तुम हमारे पति के मारनेवालेको मारो इस पर जरासन्ध बड़ी सेना लेकर हमपर चढ़ आया सब लोग पहिलेकी सदृश विचार करके उसके भयके मारे सब भाई बंधु और कुटुम्ब सहित आवश्यक धन लेकर मथुरासे पश्चिम दिशाको चलेगये और कुशस्थली नाम पुरी में रहने लगे और वहां हमलोगों ने एक किला बनवालिया कि उस किले के कारणसे विष्णुवंशी योद्धाओं की तो क्या बातहै स्त्रियां भी लड़सक्ती हैं वहां हमलोग निर्भय होकर रहने लगे और उस पुरी के समीप रैवत नाम पहाड़ को देखकर जहांसे जरासन्धको जय करना कुछ बड़ा काम नहीं है सब मधुपुरीवासी बहुत प्रसन्न हुये वह पहाड़ इक्कीस योजन लम्बा और एक योजन ऊंचा है और उस में तीन शिखरहैं और प्रति योजन के अंतमें शतद्वारहैं और उन द्वारोंपर अष्टादशावर नाम क्षत्री जो युद्धमें बड़े दुर्मदहैं रहकर रक्षा करतेहैं ४५। ५५ हमारे कुल में सब भाई अठारह सहस्रहैं और आहुकके सौ पुत्र देवताओं के समान बलवान्हैं और हम सात रथी हैं अर्थात् चारुदेष्ण १ चारुदेष्णका भाई २ चक्रदेय ३ सात्यकि ४ बलदेवजी ५ साम्ब ६ और मैं ७ और इनके सिवाय कृतवर्मा, अनाधृष्टि, शमीक, समितिंजय, कंकु, शंकु और कुंति ये महारथी हैं और अंधक भोजके दो पुत्र और वृद्धिराजा आदि दश महारथी जिनके शरीर वज्रके तुल्यहैं और बड़े पराक्रमी हैं मध्यदेश की याद कर करके वृष्णियों में रहते हैं इससे हे युधिष्ठिर! तुममें यद्यपि साम्राज्य पदवीके गुण मौजूदहैं और क्षत्रियोंके ऊपर सम्राट् होने के योग्य हो परंतु मेरी मतिसे जब तक राजा जरासन्ध जीता है तबतक तुम राजसूय यज्ञ नहीं करसक्ते हो उसने सब राजाओंको जीतकर पहाड़की कंदरामें बन्द करके इस प्रकारसे रोक रक्खा है जैसे सिंह बलवान् हाथियोंके मार्गको रोक देताहै उसने महादेवजी का तप करके सब राजाओं को सेना सहित जीत २ कर बांध रक्खाहै और अपनी प्रतिज्ञाको पूरा करने के लिये अब उन सब राजाओं को बलि देकर महादेव जीकी पूजा करना चाहताहै इसी कारणसे जरासन्धके भयसे हम भी भागकर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

द्वारकापुरी में जा बसे हैं इससे जो तुम राजसूय यज्ञ किया चाहते हो तो पहिले जरासन्धको मारकर सब राजाओं को छुटानेका यत्न करो नहीं तो किसी उपाय से तुम राजसूय यज्ञ नहीं करसकते हो मेरी बुद्धि में जो कुछ बात आई सो मैं कहचुका अब जैसी तुम्हारी सलाह हो वैसा करो ५६।७०॥

इति श्रीभाषामहाभारते सभापर्वणि चतुर्दशोऽध्यायः १४॥

पन्द्रहवां अध्याय।

युधिष्ठिर भीमसेन और कृष्णचन्द्रका जरासन्ध को मारकर साम्राज्य पदवी पानेका विचार करना॥

श्रीकृष्णजीकी उक्त बात को सुनकर युधिष्ठिर कहने लगा कि आपके सिवाय संशयके दूर करनेवाले ऐसे वचन कौन कहे सब राजा लोग अपने अपने घरोंमें अपने को श्रेष्ठ जानते हैं परन्तु सम्राज्यपदवीको पहुँचना बड़ा कठिनहै जो मनुष्य दूसरेके प्रभाव को नहीं जानताहै वह अपनी बड़ाई क्यों-कर करसक्ताहै यह पृथ्वी रत्नों से पूर्ण बहुत लंबी चौड़ी पड़ीहुई है मनुष्य जब तक दूर २ नहीं जाताहै तबतक उसको घर बैठे २ अपना कल्याण नहीं दीखता है मेरी समझमें यज्ञ करके पारमेष्ट्य पाना कठिनहै इससे शम अर्थात् इन्द्रियों को रोककर रहना अच्छाहै मेरा कल्याण इसी में होगा ये हमारे कुलमें उत्पन्न सभासद मनुष्य यह जानतेहैं कि इनमेंसे कोई न कोई श्रेष्ठही होगा परन्तु अब तो हमको भी जरासन्धसे डर होगया क्योंकि हमको तो बड़ा बल भरोसा आपही का था सो आपभी उसके डरके मारे द्वारकापुरी जा बसे हैं सो अब आप यह बताइये कि आप बलदेवजी भीमसेन और अर्जुन के सिवाय और कौन ऐसा है जो जरासन्ध को मारसकै हमको तो आपही की बात प्रमाण है यह सुनकर भीमसेन बोला कि १।१० जो राजा विना उद्योग के किसी कामको करता है वह राजा बल्मीकि की तरह दुःख पाता है और उद्योगके साथ काम करने वाला राजा दुर्बल भी बलवान् शत्रुको जीत लेता है और उद्योग में आलस्य न करके नीतिपूर्वक अपने इष्टकाम को सिद्ध करलेता है सो श्रीकृष्णजी नीतिमें निपुणहैं मुझमें बल मौजूद है और अर्जुन जीतनेके योग्य है इससे हम तीनों मिलकर जरासन्धको इस प्रकारसे साधन करेंगे जैसे तीनों अग्नि यज्ञकी साधना करती हैं यह सुनकर श्रीकृष्णजी बोले कि बालक फल को विना देखे अपने अर्थका आरंभ करदेता है इससे बालक और स्वकार्यतत्पर मनुष्य बलवान्

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

शत्रुका कुछ विचार नहीं करतेहैं हमने सुना है कि युवनाश्वका पुत्र राजा मान्धाता शत्रुओं को जीतकर राजा भागीरथ प्रजा को पालन करके कार्तवीर्य तप करके राजा भरत अपने बलसे और मरुत अपनी ऋद्धि से साम्राज्य पदवी को पहुँचे थे सो हे युधिष्ठिर! तुममें ये पांचो गुण विद्यमान हैं तुमको साम्राज्य पद क्यों नहीं मिल सक्ताहै जरासन्ध ने सत्पुरुषों में सुकृत साध्य विचार करके धर्म अर्थ और नीतिसे साम्राज्य पदवी पाईहै उसके सम्मुख एक सौ कुल के राजा नहीं पड़ते हैं उसने यह पदवी केवल अपने बलसेही पाई है सब रत्नों के भोगनेवाले राजालोग उसकी आज्ञामें रहते हैं परन्तु वह अपनी अज्ञानता और अनीति के कारण से उस पदवीसे भी तृप्त नहीं होता है ११।२० बड़े २ मूर्द्धाभिषिक्त राजाओं को वह बलसे पकड़कर अपने वशमें करलेता है हमने तो किसी मूर्द्धाभिषिक्त राजाको उससे जीतते नहीं देखा है दुर्बल राजा की किनमें गिनती है उसने बड़े बड़ोंको अपने वशमें कियाहै जैसे बलि करने वाले मनुष्य की प्रीति बलि के पशु से नहीं होती है इसी प्रकार से और राजा लोग भी उससे प्रीति नहीं मानतेहैं क्षत्री वही सत्कृत होताहै जो शस्त्रसे मारा जाताहै इसी कारण से हम जरासन्ध को मारना चाहते हैं उसने छियासी राजाओं को पकड़कर कैद कररक्खाहै और जो १४ और राजा रहगये हैं उनको भी स्ववश करना चाहताहै उसकी इच्छा क्रूरकर्म करनेकी है जो कोई उसके काम में विघ्न करसकैगा उसको बड़ा यश संसार में मिलेगा और जो मनुष्य उसको जीतलेगा उसके साम्राज्य पदवी पाने में कुछ संशय नहीं है २१।२६॥

इति श्रीभाषामहाभारते सभापर्वणि पञ्चदशोऽध्यायः १५ ॥

सोलहवां अध्याय।

अर्जुन का जरासंध को मारकर साम्राज्य पदवी लेने का मंत्र देना ॥

श्रीकृष्णजीकी उक्त बातको सुनकर युधिष्ठिर बोले कि मैं अपने स्वार्थ के लिये तुम लोगों को वहां नहीं भेजसक्ता हूं भीमसेन और अर्जुन दोनों मेरे नेत्रहैं और तुम मेरे मनहो मन और नेत्रों के विना मनुष्य क्योंकर जी सक्ता है राजा जरासन्ध बड़ा बलवान्है उसको यमराज भी नहीं जीत सक्ता है मुझको इस स्वार्थ में अनर्थ दिखाई देताहै इससे मेरे मनमें यह विचार आता है कि राजसूय यज्ञ करने की इच्छा को त्याग करदूं क्योंकि यह इच्छा मुझको दुःख देरही है वैशंपायनजी बोले हे राजा जनमेजय! उसी समय अर्जुन

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

श्रेष्ठ धनुष अक्षय तर्कस धारण कियेहुये और कपिध्वज रथपर सवार सभा में आया और युधिष्ठिर से कहने लगा कि देखो मुझे यह श्रेष्ठ धनुष आदि प्राप्त होगये हैं ये मनवांछित फल के देनेवाले और हरएकको मिलना कठिनहै और श्रीकृष्णजी हमारी रक्षा करनेवाले मौजूद हैं इसके सिंवाय सब विद्वान् पुरुष हमारे श्रेष्ठकुलमें उत्पन्न होनेकी सराहना करतेहैं इससे मुझको तो अपने कुल के अनुसार पराक्रमही करना अच्छा जान पड़ता है हां जो मनुष्य पराक्रमी कुलमें उत्पन्न हो परन्तु आप पराक्रमहीन हो वह कुछ नहीं करसक्ता है परन्तु जब पराक्रमी कुलमें पराक्रमी ही होवै तब क्योंकर पराक्रम न करै और क्षत्री तो वही है जिसकी बुद्धि सदा शत्रुओं के विजय करने में रहै और ऐसाही मनुष्य गुणहीन होनेपर भी शत्रुओंको जीत सक्ताहै १।१० जो मनुष्य सब गुण युक्त होवै परन्तु शत्रुओं को विजय करने का उत्साह उसको न होवै तो उससे क्या होसक्ता है पराक्रम ऐसा पदार्थ है कि सब अवगुण उसमें छिप जाते हैं निर्बल मनुष्यमें दीनता होना और बलवान्में मोह होना दोनों नाशकारक हैं जो राजा जय चाहै वह ऐसे मनुष्यों का त्याग करदे मुझे तो इससे श्रेष्ठ और कुछ नहीं दिखाई देता है कि हम यज्ञके अर्थ जरासन्ध को मारकर सब राजाओं को छुटावें जो काम निश्चय करनाहै उसको न करना बड़ा अवगुण है आप हम लोगों में निस्संदेह गुण होने पर अपने को असमर्थ क्यों जानते हैं मुझको युद्ध करके साम्राज्य पदवी लेना ऐसाही सुलभ दीखता है जैसा शम चाहनेवाले मुनियों को संन्यास लेना ११।१७॥

इति श्रीभाषामहाभारते सभापर्वणि षोडशोऽध्यायः १६॥

सत्रहवां अध्याय।

श्रीकृष्णजी का युधिष्ठिर से जरासन्ध के उत्पन्न होनेकी कथा कहना॥

श्रीकृष्णजी बोले हे युधिष्ठिर! भरत कुलमें उत्पन्न और कुंती के पुत्र की जैसी बुद्धि होनी चाहिये वैसी बुद्धि अर्जुनकी है हमने विना उमरके पूरी होने के रात या दिन में किसीको मरते नहीं देखाहै और न हमने यह सुना है कि देवतालोग युद्ध करने नहीं जातेहैं हर मनुष्यको इतना विचार तो आवश्यक है कि शत्रुपर चढ़ाई विना नीति और अच्छे मंत्रके नहीं होती है क्योंकि विना नीति और उपाय के युद्ध करनेमें बड़ी क्षय होतीहै और कदाचित् दोनों पक्षवाले समान होवें अर्थात् दोनों युद्ध करनेवाले उपाय और नीति से रहित होवें तो

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उसमें जय न होने का संशय रहताहै भला यह कैसे होसकताहै कि हमलोग नीतिपूर्वक शत्रुके पास पहुँचकर उसको नाश न करसकैं कहीं नदीके किनारे के वृक्षभी नदीके पास पहुँचनेपर बचसक्ते हैं क्योंकि हमलोग अपने छिद्रों को छुपाने और शत्रु के छिद्रों को जान लेनेवाले हैं बुद्धिमान् मनुष्यों की यह मतिहै कि प्रबल शत्रु से व्यूह रचित सेनासे न लड़े वही मति मुझको भी अच्छी जान पड़ती है हमारी समझ में हम ऐसे स्वरूपसे शत्रुके पास चलें जिससे वह हमको जानने न पावे और उसके पास पहुँचने पर अपने कार्य का साधन करें जो घट घट में व्यापक अंतरात्मा सबमें है उसकी क्षय कभी नहीं होतीहै इससे कदाचित् हम लोग जरासंध के हाथसे अपने स्वजातियों के कार्य करने में मारेभी जावेंगे तोभी हमारा बड़ा यश होगा और हमको स्वर्ग मिलेगा १। १० यह सुनकर युधिष्ठिर बोले कि यह जरासंध कौन है और इतना पराक्रम इसमें क्योंकर हुआ है जो अग्निसदृश आपको मिलने पर शलभ की समान भस्म नहीं होगया यह सुनकर श्रीकृष्णजी बोले कि जरासन्ध का बल और पराक्रम जिसके कारण से वह सबका आश्रय करताहै और सब उससे डरतेहैं इस कारणसे है कि मगधदेशमें बृहद्बल नाम एक बड़ा युद्ध दर्पित और तीन अक्षौहिणी सेना रखनेवाला राजा था वह स्वरूपवान् श्रीमान् अतुलपराक्रमी और दूसरे इन्द्रके तुल्य था उसका तेज सूर्य, क्षमा पृथ्वी, क्रोध यम और धन कुबेरके समान था और ऐसा गुणवान् था कि उसके गुणों की प्रशंसा पृथ्वीपर इस प्रकारसे फैलगई थी जैसे सूर्यकी किरणैं सब स्थानों में व्याप्त होजाती हैं उसका विवाह राजा काशीकी दो पुत्रियों से जो बड़ी स्वरूपवान् और एक साथ उत्पन्न हुई थीं हुआ उन दोनोंसे उसने यह प्रतिज्ञा की थी कि मैं तुम दोनोंको एकसां बर्तूंगा और विवाह होजाने पर वह उन दोनोंके साथ प्रतिज्ञापूर्वक रमण करने लगा और उनके साथ इस प्रकार से शोभायमान हुआ जैसे गंगा यमुना से समुद्र उसी आनन्द में उस राजाका यौवन व्यतीत होगया परंतु पुत्र की कामना से बहुत यज्ञ आदि करने पर भी उसके वंशका चलानेवाला कोई पुत्र उत्पन्न नहीं हुआ ११। २१ इसके पीछे एक समय ऐसा हुआ कि काक्षीवत गौतम ऋषिका बड़ा तपस्वी चंडकौशिक नाम पुत्र अपनी इच्छासे उस राजाके नगरमें आया और एक वृक्षके नीचे उसने वास किया उसके आने का हाल सुनकर राजा अपनी स्त्री सहित उस

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

के पास गया और उसे रत्न आदिक देकर प्रसन्न किया उस समय उस उत्तम ऋषिने राजासे कहा कि मैं तुम्हारी सेवासे प्रसन्न हुआ जो कुछ तुमको इच्छा हो सो वर मांगो यह सुनकर राजा बृहद्रथ अपनी स्त्री सहित आंखों में आंसू भरकर विनयपूर्वक बोला कि महाराज मैं मंदभागी संतानहीन हूं आपसे क्या वर मांगूं मैं तो राज्य छोड़कर तपोवनमें जानेवाला हूं मुझे वर अथवा राज्य लेकर क्या करना है श्रीकृष्णजी बोले हे युधिष्ठिर! राजाकी बात को सुनकर उन मुनीश्वर का चित्त क्षोभित होगया और वह उसी वृक्षके नीचे बैठगये और ध्यान करने लगे उसी समय उस वृक्षपरसे जो आम का था एक आम टूटकर मुनीश्वरकी गोदी में आपड़ा उन्होंने उस फलको अभिमंत्रित करके राजा को देदिया और कहा कि लो इस फल के प्रभाव से तुम्हारे पुत्र होगा अब तुम अपने घरको जाओ यह सुनकर राजा मुनीश्वर को दंडवत् करके घरको चला आया २२। ३१ और अपने नियम के अनुसार उस फलको अपनी दोनों स्त्रियों को देदिया उन दोनों स्त्रियों ने आधा आधा करके उसे खा लिया और मुनीश्वर के वरदान के प्रभाव से उस फलके खाने पर उन दोनों स्त्रियों को गर्भ रहा राजा यह देखकर बहुत प्रसन्न हुआ जब गर्भ का समय पूरा होगया तब उन दोनों रानियों के आधे २ शरीर रखनेवाले दो पुत्र हुये अर्थात् एक शरीर की दो फांकें जिनमें एक नेत्र एक भुजा एक पैर और आधा पेट आदि अंग थे उत्पन्न हुये रानियां उनको देखकर कांपने लगीं और दोनों ने उन दोनों आधे २ शरीरों को जो सजीव थे त्याग दिया दाइयां उनको ढककर महलके बाहर लेगईं और कहीं डालकर चलीआईं इसके पीछे एक जरा नाम राक्षसी जो मांस और लोहू खाया करती थी वहां आई और उन दोनों आधे २ शरीरों को उठाकर लेजानेकी इच्छा की दैवयोग से उसने उन दोनों आधे २ शरीरोंको एक में मिला दिया कि मिलातेही वे दोनों आधे २ शरीर जुड़गये और वह एक लड़का होगया यह देखकर वह राक्षसी अचरजमें आगई और प्रसन्नता से उस बालकको उठाने लगी परंतु वह बालक उससे न उठा उस समय वह बालक अपने लाल हाथ की मुट्ठी बनाकर मुखमें देकर बादलकी गरज के समान रोने लगा उस शब्दको सुनकर राजसभा से सब मनुष्य राजा सहित बाहर निकल आये और वे दोनों रानियां भी जो पुत्रकी ओरसे निराश हो गई थीं और जिनकी छातियां दूधसे भरीहुई थीं सहसा उठकर वहां चलीगईं

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उसको देखकर वह राक्षसी चिंतित हुई और कहनेलगी ३२। ४६ कि मैं इस राजाके राज्यमें बसती हूं और यह राजा पुत्र चाहता है इससे मुझे इस बालक को मारना उचित नहीं है यह कहकर उस राक्षसी ने अपना स्वरूप स्त्री का रखकर उस बालक को उठा लिया और राजाके पास जाकर बोली कि यह तेरा पुत्रहै ब्राह्मणकी कृपासे यह तेरी दोनों रानियों के उत्पन्न हुआ था परन्तु रानियों ने इसको त्याग दिया था अब मैं इसे तुझे देती हूं तू इसको ले यह सुनकर राजाकी दोनों रानियों ने उस बालकको ले लिया और प्रेम सहित रोने लगीं और राजा ने प्रसन्न होकर उस राक्षसी से जो मनुष्यरूप में थी पूछा कि तू कौनहै जो मुझको तैंने यह पुत्र दियाहै मेरी समझ में तो तू कोई देवकन्या है ४७। ५२ ॥

इति श्रीभाषामहाभारते सभापर्वणि सप्तदशोऽध्यायः १७ ॥

अठारहवां अध्याय।

राजा बृहद्रथसे जरा नाम राक्षसीका अपना वृत्तान्त कहना और उसके द्वारा पुत्र मिलनेके कारणसे अपने पुत्रका नाम जरासंध रखना ॥

राजाकी उक्त बातको सुनकर वह राक्षसी बोली कि मैं जरा नाम राक्षसी हूं तेरे महलमें मैं बहुत दिनोंसे वास करतीहूं और मैं सब मनुष्योंके घरमें नित्य रहती हूं ब्रह्माजीने मुझे गृहदेवी नाम से उत्पन्न कियाहै जो कोई स्त्री पुत्र सहित मेरी मूर्त्ति भीतपर लिखकर भक्ति सहित पूजा करती है उसके कुलकी वृद्धि होती है और जो ऐसा नहीं करती है उसका कुल क्षय होजाता है हे राजा! तेरे घरमें मेरी पूजा बहुत अच्छीतरहसे हुआ की है मेरे स्वरूपको भीतपर पुत्रोंसहित लिख लिखकर गंध पुष्प धूप और नैवेद्य से तेरी रानियां पूजा किया करती थीं इस से तेरा उपकार करने को मुझे नित्य चिंता रहती थी सो आज तेरे इस पुत्रके शरीरकी दोनों फांकोंको यहां पड़ा हुआ देखकर मैंने उठा लिया और दोनोंको मिलाने पर दैवइच्छा से यह लड़का होगया मैं तो इसमें केवल हेतुमात्रही हूं और मुझे मेरुपर्वतको भक्षण करनेकी भी सामर्थ्य है तेरे इस पुत्रको मुझे मारना कितनी बड़ी बात है परन्तु मैंने तेरी गृहपूजा से प्रसन्न होकर तुझे तेरा पुत्र दिया है १। ८ श्रीकृष्णजी बोले हे राजा युधिष्ठिर! वह राक्षसी उक्त प्रकार से कहकर वहीं अंतर्द्धान होगई और राजा उस पुत्रको लेकर अपने घर को आया और उसके जातकर्म आदि संस्कार कराये और अपने

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

देश में उस राक्षसीकी पूजाका बड़ा भारी उत्सव आरम्भ कराया और जरा राक्षसी के द्वारा मिलने के कारण से उस पुत्रका नाम जरासंध रक्खा और वह शुक्लपक्षके चन्द्रमा के समान बढ़कर बड़ा तेजस्वी होगया ६।१२॥

इति श्रीभाषामहाभारते सभापर्वण्यष्टादशोऽध्यायः १८ ॥

उन्नीसवां अध्याय।

चंडकौशिक मुनिका मगधदेश में जाना राजा बृहद्रथका उनकी पूजा करना मुनीश्वरका जरासंधको आशीर्वाद देना और बृहद्रथका जरासन्धको राज्य देकर तपस्याको चला जाना॥

श्रीकृष्णजी बोले कि हे युधिष्ठिर! थोड़े दिनों में चंडकौशिक मुनि फिर मगध देशमें आये उनके आनेका हाल सुनकर राजा बृहद्रथ अपने मंत्री पुत्र और रानियों सहित उनके पास गया और पाद्य अर्घ्य आदिसे उनका पूजन करके अपना राज्य पुत्र सहित निवेदन किया वह ऋषि राजा की पूजा को अंगीकार करके प्रसन्नतापूर्वक बोले कि हमको दिव्य दृष्टिसे तुम्हारे पुत्रकी सब व्यवस्था मालूम होगई थी यह तुम्हारा पुत्र बड़ा पराक्रमी और स्वरूपवान् होगा और इसके घरमें लक्ष्मीका बड़ा प्रकाश होगा इसके पराक्रमके आगे सब राजा लोग इस प्रकारसे अस्त होजायँगे जैसे गरुड़के सामने पक्षी होजाते हैं और इसके सब शत्रु नाश होजायँगे और जैसे नदीका वेग पहाड़को कुछ पीड़ा नहीं देसक्ताहै ऐसेही देवताओंके भी छोड़े हुये अस्त्रों से इसको पीड़ा न होगी और जितने अभिषेकित राजालोग हैं सबका यह मुकुटमणि होगा और उन लोगों का तेज इसके सामने ऐसे अस्त होजायगा जैसे सूर्यके उदय होनेपर सब तारागण क्षीण पड़जाते हैं और जैसे शलभ अग्निमें नाश होजातेहैं उसी प्रकारसे अनेक राजालोग सेना सहित इसके सम्मुख आ आकर नाश होजायँगे और सब राजाओंकी लक्ष्मी ढुल ढुलके इस प्रकारसे इसके घरमें आवैगी जैसे वर्षाऋतु में सब नदियों का पानी समुद्र में चलाजाता है और जैसे पृथ्वी सब खेती और शुभाशुभको धारण कररही है इसी प्रकारसे यह चारों वर्णके मनुष्यों का पालन करैगा और सब राजालोग इसके वश में इस प्रकारसे रहैंगे जैसे वायुके वशमें प्राण रहते हैं और इसको महादेवजीके दर्शन होंगे १।१५ इस प्रकार से कहकर उन मुनीश्वरने राजाको बिदा किया और राजा सब साथियों सहित अपने घर को चला आया और थोड़े दिनों पीछे जरासंध को राज्य

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

देकर अपनी दोनों रानियों सहित तपोवन को चला गया और जरासंध ने राज्याभिषेक पाकर अपने पराक्रम से सब राजाओं को जीतकर अपने वश में कर लिया वैशंपायनजी बोले हे राजा जनमेजय ! राजा बृहद्रथ बहुत दिनों पीछे तपोवन में अपनी दोनों रानियों सहित मरकर स्वर्गवासी हुआ और जरासंधने कौशिक मुनिके कहनेके अनुसार सब राज्यका पालन किया जब कंस श्रीकृष्णजीके हाथसे मारागया तब उसका वैर श्रीकृष्णजीके साथ होगया और उसने अपनी गदाको सौ बार घुमाकर व्रजके ऊपर फेंकी वह गदा मथुरा जीमें जो वहांसे एक कम सौ योजन परहै आकर पड़ी पुरवासियोंने उसको ले कर श्रीकृष्णजीको निवेदन किया और वह स्थान मथुराके निकट जहां वह गदा आकर पड़ी थी गदावसान नामसे विख्यात हुआ १६। २५ जरासंधके हंस और डिम्भक नाम दो सेनापति जिनकी मृत्यु शस्त्रसे नहीं होती थी और दोनों मंत्र और नीतिशास्त्र के परमज्ञाता थे उनका हाल मैं पहिले तुमसे कह चुका हूं कि वे दोनों तीसरे जरासंध सहित तीनोंलोकोंको जीत सक्ते थे इसी बात को जानकर कुकुर, अंधक और वृष्णिवंशी क्षत्रियों ने यह विचार किया था कि जरासन्ध से लड़ना नहीं चाहिये २६। २८॥

इति श्रीभाषामहाभारते सभापर्वण्येकोनविंशोऽध्यायः १९॥

बीसवां अध्याय।

श्रीकृष्णजी का अर्जुन और भीमसेन को साथ लेकर जरासन्ध को मारने के लिये मगध देश को जाना॥

श्रीकृष्णजी बोले हे राजा युधिष्ठिर ! अब हंस और डिंभक दोनों यमुनामें डूबकर मरगये और कंस अपने सब साथियों सहित मारागया केवल यह जरासन्ध रह गया है सो इसके मरनेका भी समय अब आन पहुँचा है युद्धमें तो इसको सब असुर और देवता भी नहीं जीतसक्ते हैं परन्तु इसकी मृत्यु मल्लयुद्ध से होगी सो हम ऐसाही उपाय करेंगे हम नीति अच्छी तरह जानते हैं और जैसा भीमसेन बली है वैसाही हम दोनोंकी रक्षा करनेवाला अर्जुन है हम तीनों मिलकर जरासन्धके वधका साधन इसप्रकार से करेंगे जैसे तीनों अग्नि यज्ञ का साधन करती हैं अकेले में मिलनेपर और युद्ध मांगने पर वह निस्संदेह बल के गर्वसे हमको विना सेना के देखकर भीमसेन से मल्ल युद्ध करेगा सो भीमसेन उसको इसप्रकार से मारसक्ता है जैसे मत्यु बड़े लोक को भी नाश करदेती है इससे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हे युधिष्ठिर! जो तुमको मेरा विश्वास है तो अपने दोनों भाइयों को मेरे साथ करदो वैशम्पायनजी बोले हे राजा जनमेजय! श्रीकृष्णजीकी उक्त बातको सुनकर युधिष्ठिर ने अर्जुन और भीमसेन को प्रसन्नचित्त देखकर कहा कि हे अच्युत! आप ऐसी बात न कहिये आप तो पांडवों के नाथहैं और हम सब आपही के आश्रितहैं अब आप शीघ्र ऐसा यत्न कीजिये जिससे जरासन्ध मारा जाय राजालोग कारागार से छूटें और हमारा राजसूय यज्ञ सिद्ध होवै तुम तीनों के विना मुझको अपना जीना रोग जान पड़ताहै १।१३ जहां आपहैं वहां अर्जुन है और जहां अर्जुन है वहीं आपहैं और भीमसेन बड़ा बलवान् है तुम दोनों के साथ रहकर ऐसा कौनसा कामहै जिसको भीमसेन नहीं कर सक्ताहै हम जानते हैं कि सब उत्तम कार्य बहुतसी आज्ञाकारी सेना से सिद्ध होजाता है परंतु कोई चतुर मनुष्य उसको शिक्षा करने को चाहिये क्योंकि सेना को अन्धा और जड़रूप कहते हैं और चतुर मनुष्य उसको इस प्रकार से लेजाकर अपना अर्थ सिद्ध करते हैं जैसे धीमरलोग जलको उसी राह से लेजाते हैं जिधर निचान अथवा छिद्र होताहै इसीप्रकार से हे श्रीकृष्णजी! आप नीतिविधानमें चतुरहैं हम लोग आपके पीछे २ उसी प्रकार से चलेंगे जिस प्रकारसे आप आज्ञा करेंगे और अपने सब कामों में आप ही को आगे रक्खेंगे क्योंकि आप नीति बुद्धि और उपायके बल से युक्त हैं सो आगे आगे आप चलिये आपके पीछे अर्जुन और अर्जुनके पीछे भीमसेन चलैगा इस प्रकार से नीति, जय और बल तीनों के एक जगह होने पर हमारा काम सिद्ध होगा वैशम्पायनजी बोले हे राजा जनमेजय! इस प्रकार से सब भाई सम्मत करके भीमसेन और अर्जुन श्रीकृष्णजी के साथ २ मगध देश की ओर चलदिये तीनों ने ब्राह्मणों केसे वस्त्र पहनकर अपना वेष बदललिया और अपने जातिवालों के कामको विचारकर क्रोधके कारण से तीनों का शरीर सूर्य चन्द्रमा और अग्निकी समान झलकने लगा १४।२३ मनुष्योंने उन दोनों एक रूप कृष्ण और अर्जुनको जो धर्म और काम के कार्योंमें प्रवृत्त होनेवाले थे भीमसेन के आगे २ जाते हुये देखकर जरासन्धको मरा हुआ समझ लिया वे तीनों, कुरुजांगल देश से चलकर पद्म सरोवर और कालकूट पर्वत और गण्डकी, महाशोण, सदानीरा, एक पर्वतकी नदियां सरयू, कोशला, मिथिला, माला और चर्मण्वती आदि नदियों पर होते हुये गंगा और शोणभद्र

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नदियों को उतरकर पूर्वदिशा की ओर चलेगये और मगधपुर के समीप जा पहुँचे और वहां गोरथ पर्वत पर चढ़कर उस नगरको देखने लगे जो बहुतसी गाय और नाना वृक्षों से सुशोभित था २४। ३०॥

इति श्रीभाषामहाभारते सभापर्वणि विंशोऽध्यायः २०॥

इक्कीसवां अध्याय।

श्रीकृष्णजीका अर्जुन और भीमसेन सहित मगधपुर में पहुँचना और जरासन्ध से प्रश्नोत्तर होना॥

श्रीकृष्णजी कहनेलगे देखो अर्जुन यहां से मगध देशकी सेनाका रहने का स्थान कैसा प्रकाशित दीखरहा है यहांपर जल और पशु सदैव बने रहतेहैं और यह देश बैहार, वृषभ, ऋषि और चैत्यक नाम पांच पहाड़ों से जो एक दूसरे से मिले हुये और ऊंचे २ शिखर और सुन्दर वृक्षों से शोभित होरहे हैं घिरा हुआहै इन पहाड़ों पर पुष्पित और सुगंधित वृक्षों के वन लगे हुये हैं और यहीं पर गौतम ऋषिसे एक शूद्रा स्त्री और राजा उशीनरकी पुत्री के काक्षीवान् आदि पुत्र उत्पन्न हुये थे गौतम के अनुग्रह से यहां के रहनेवाले क्षत्रिय लोग मनुवंशी कहलाते हैं पहिले समयमें गौतम के घरमें अंग और बंग देशों के राजाभी आकर रहे थे और जो ये सामने पिप्पल और लोध्र वृक्षों के वनों की पंक्तियां दिखाई देती हैं वे गौतम ऋषिही के स्थान के निकटहैं इसी स्थानपर अर्बुद, शक्रवापी, स्वस्तिक, मणिनाग और कौशिक नागोंके रहने के स्थानहैं और वे सदैव यहां रक्षा किया करते हैं मनुजीने इस देशको ऐसा बनाया है कि यहां सब कालोंमें वर्षा रहतीहै १। १० जरासन्ध ऐसे रक्षित और रमणीक नगर के पानेही के कारण से अपनेको अर्थ सिद्ध मानता है सो हम मिलकर उसके इस घमंडको तोड़डालेंगे ११ वैशंपायनजी बोले हे राजा जनमेजय! इसप्रकार से कहकर श्रीकृष्णजी वहांसे भीमसेन और अर्जुनके साथ २ मगधपुर की ओर चलदिये और वहां पहुँचकर वहां के प्रसन्नचित्त और पुष्ट मनुष्यों को जो उत्सव के कारण से अच्छे २ वसन और आभरण पहिरेहुये थे देखतेहुये पहाड़ों के समान ऊंचे नगर के द्वारपर जो बृहद्रथवंशी मनुष्य और पुरवासियों से शोभित होरहा था पहुँचकर मगधदेश के रुचिर यज्ञस्थान के समीप जा पहुँचे और वहां के कँगूरे गिरा दिये उसी स्थानपर राजा बृहद्रथ ने वृषासुर दैत्यको मारकर उसके चमड़ेकी तीन भेरियां बनवाकर रखवादी थीं और पुष्प आदि

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

से अलंकृत करके बजाई जाती थीं इन तीनों वीरोंने उनको फोड़डाला और वहां से चैत्यप्राकार अर्थात् यज्ञस्थान के परकोटे के द्वार के सम्मुख चल दिये और वहांपर जो एक बड़ा मोटा और जरासन्धसे पूजित शिखर था उसको अपनी भुजाओं के बलसे गिरादिया और जरासन्धके देखनेकी इच्छा से उसके नगर में प्रवेश किया १२। २१ इसी अवसरमें ब्राह्मणों ने बहुतसे दुष्ट शकुन देखकर राजा जरासन्धको दिखलाये और पुरोहितों ने उसको हाथी पर चढ़ा कर उससे चारों ओर अग्नि फिराकर फेंक दी और राजाने उन दुष्ट शकुनों की शांतिके लिये दीक्षित होकर उपवास किया उसी समय वे तीनों वीर जरासन्धके नगरको भक्ष्य माला आदि संपूर्ण पदार्थों से समृद्धिमान् देखकर नगरके बाजार में से माला और सुन्दर भूषण वसन और कुण्डल बरजोरी ले कर उनसे अपनेको अलंकृत करके जरासन्ध को मारनेकी इच्छा से विना शस्त्र लियेहुये जरासन्ध की सभामें इसप्रकारसे पहुँचे जैसे हिमालय पहाड़ के सिंह गोशालाओं को ढूंढ़तेहुये जातेहैं उनकी भुजा जो तालवृक्ष के समान लम्बी और चन्दन अगरु आदि से चर्चित थीं और हाथियों के से ऊंचे कन्धे और चौड़ी छाती को देख २ कर सब मगधपुरवासी मनुष्य आश्चर्य करने लगे और वे तीनों व्यथारहित तीनों कक्षाओं को नांघकर अहंकार सहित जरासन्धके पास पहुँचे जरासन्ध ने उन्हें पाद्य अर्घ्य से पूजा और गऊ भेंट करने के योग्य देखकर उनका सत्कार किया २२।३१ और यह कहके कि तुम्हारा आना शुभ हो उनसे कुशल प्रश्न पूछी तब अर्जुन और भीमसेन ने कुछ उत्तर न दिया चुपके होरहे उस समय श्रीकृष्णजी बोले कि ये दोनों नियम में स्थित हैं आधीरात तक किसी से नहीं बोलते हैं आधीरातके पीछे तुम से बातचीत करेंगे यह सुनकर जरासन्ध उन तीनोंको यज्ञशाला में टिका कर राजमन्दिर को चलागया और आधीरात के बीतने पर उन तीनों वीरोंके पास आया और उनके अपूर्व वेषको देखकर उनके पास विस्मित होकर बैठगया उसका यह नियम कि वह स्नातक ब्राह्मणों से आधीरात को भी मिलता है पृथ्वीपर विख्यात होगया वे तीनों वीर राजा जरासन्ध को अपने समीप आयाहुआ देखकर बोले कि तेरा कल्याण और कुशल हो यह सुनकर जरासन्ध ने उन तीनों छलवेषधारियों को बैठनेकी आज्ञा दी और वे चारों इस प्रकारसे बैठगये जैसे बड़े यज्ञ में लक्ष्मी सहित तीनों अग्नि स्थापित होती

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हैं ३२।४१ बैठने के पीछे जरासन्धने उन तीनों से कहा कि तुम कहते हो कि हम स्नातक ब्राह्मण हैं सो स्नातक ब्राह्मण विना समावर्तन कर्म किये माला और चन्दन धारण नहीं करते हैं ऐसी कोई बात संसार में नहीं है जो मैं न जानताहूं इससे आप सत्य सत्य कहिये कि आप कौनहैं आपका वेष ब्राह्मणों कासा है परन्तु आप क्षत्रियों कासा तेज धारण किये हैं और आपकी भुजाओं पर ज्याघातका चिह्न बनाहुआ है और आपने विना समावर्तन कर्म किये चित्र विचित्र वस्त्र माला और चन्दन क्यों धारण किये हैं राजाओं के सामने सत्य बोलना श्रेष्ठ होता है इससे हमसे सत्य २ कहो कि तुम द्वार छोड़ कर चैत्यक पहाड़ की शिखर को तोड़कर राजा के अपराध से निडर होकर दूसरी राहसे क्यों आये हो ब्राह्मणों का वचन बलवान् होता है कर्म ब्राह्मणों का बलवान् नहीं होता है सो तुम्हारा कर्म भी तुम्हारे वेषके विपरीत है और तुमने हमसे विधिपूर्वक पूजन क्यों नहीं लिया यह सुनकर श्रीकृष्णजी बोले कि हम स्नातक ब्राह्मण हैं स्नातकव्रत केवल ब्राह्मण ही नहीं करते हैं किन्तु क्षत्रिय और वैश्य भी करते हैं इनमें से कोई तो विशेष नियम और कोई अविशेष नियम को लेनेवाला क्षत्रिय लक्ष्मी पाता है और पुष्प धारण करनेवालों को निश्चय लक्ष्मीकी प्राप्ति होती है इस कारण से हम भी पुष्पधारी हैं यह सत्य है कि क्षत्रियके पास बाहुबल होता है वचनबल उसके पास नहीं होता है ४२। ५१ इसी कारण से क्षत्रियका कहाहुआ वचन अप्रगल्भ होता है धाताने क्षत्रियों की भुजाओं में अपना बल दिया है जो उस बलको तुम्हारी देखनेकी इच्छा होगी तो देखोगे धीरवान् पुरुष शत्रुके घरमें अद्वार से और हितूके घरमें द्वार से प्रवेश किया करते हैं इस कारण से द्वार धर्म को समझकर हमने तुम्हारे पुरमें अद्वार से प्रवेश किया था और हम शत्रुके घरमें पहुँचकर शत्रुकी पूजा को ग्रहण नहीं करते हैं हमारा यही व्रत है इससे हमने तुम्हारी पूजा ग्रहण नहीं की ५२। ५४॥

इति श्रीभाषामहाभारते सभापर्वएकविंशोऽध्यायः २१॥

बाईसवां अध्याय।

श्रीकृष्णजी का जरासन्ध के वध करने का उद्योग करना॥

श्रीकृष्णजीकी उक्त बातको सुनकर जरासन्ध बोला कि मुझे याद नहीं पड़ती है कि मेरा आपसे कभी वैर हुआ था या नहीं और न मुझे तुम्हारा कोई

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अपकार करनेकी यादहै आपलोग मुझ अनपराधी को अपना शत्रु क्यों बताते हैं सत्पुरुषों की यह मर्यादा नहीं है मैंने आजतक कभी अर्थ और धर्म का उपघात नहीं कियाहै न जानें आप किस हेतुसे मुझे अपना शत्रु बताते हैं जो मनुष्य विना बाधा के अपराध लगाता है उसका कल्याण कभी नहीं होता है और उसको पापियोंकी सी गति मिलती है क्षत्रियके धर्मसे शुभकर्म करनेवाले मनुष्यों का कल्याण होता है और धर्म जाननेवाले क्षत्रिय धर्मसे परे दूसरे धर्म की प्रशंसा नहीं करते हैं आप लोग मुझको प्रमाद से ऐसा बताते हैं मैं जितेन्द्रिय रहकर अपने धर्म में स्थित हूं और प्रजाका अपराध नहीं करता हूं यह सुनकर श्रीकृष्णजी बोले कि हमलोग तुम्हारे पास एक ऐसे मनुष्य के कहने से आये हैं जो कुलका पालन और कुल के कार्य का करनेवाला है जो राजा श्रेष्ठ होता है वह दूसरे साधु राजाओं को नहीं मारता है तुमने सब संसारके राजाओं को पकड़कर बांध रक्खा है और उनको शिवजीकी पूजामें बलि दिया चाहते हो ऐसा कर्म करने पर भी तुम अपने को अनपराधी जानते हो जो तुम यह काम करोगे तो हमको भी पाप लगेगा क्योंकि हम धर्म करनेवाले मनुष्यों के धर्मकी रक्षा करने में समर्थ हैं १।१२ हमने आजतक मनुष्यों को देवता के अर्थ बलि चढ़ाना कहीं नहीं सुना है न जानें तुम शिवजी को मनुष्योंका बलि क्यों देना चाहते हो भला तुम्हारी सी खोटी बुद्धि किस की होगी जो तुम अपने सवर्ण अर्थात् हमजिन्सोंको पशुसंज्ञा जानकर बलिप्रदान किया चाहते हो जो मनुष्य जिस २ अवस्थामें जैसा जैसा कर्म करता है उसी उस अवस्था में वह वैसाही फल पाता है हम लोग दुःखी मनुष्योंके दुःख को दूर करनेवाले हैं इससे हमलोग जातिकी वृद्धि करने के लिये तुमको जाति क्षयके अपराधसे दूषित जानकर मारने आये हैं तुम अपने मनमें यह जानते हो कि मेरे समान संसारमें दूसरा क्षत्रिय नहीं है सो यह तुम्हारी बुद्धि की मंदता का कारण है भला ऐसा कौन क्षत्रिय होगा जो रण करके स्वर्ग न जाना चाहे और जातिवालों को न छुटाना चाहे जो क्षत्रिय युद्धरूपी यज्ञमें दीक्षित होताहै वह स्वर्ग में रहकर सम्पूर्ण लोकों को अपने वशमें करलेता है वेद पढ़ना बड़ा यश लेना तप करना और युद्ध में व्यभिचार रहित मरना स्वर्ग की योनि अर्थात् स्वर्ग देनेवाले हैं युद्ध में मृत्यु होने से मनुष्य को इन्द्र के भोगने के पदार्थ मिलते हैं और इन्द्रभी इसीसे असुरों को जीतकर जगत् की रक्षा करता

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

है स्वर्ग का मार्ग मिलने के लिये तुम्हारे समान वैर करनेवाला और कौन होगा तुमको अपने बल और सेना के घमण्ड से दूसरे का अपमान करना उचित नहीं है क्योंकि मनुष्य २ का पराक्रम अलग २ होताहै बहुतसे इस संसार में तुम्हारी समान और बहुतसे तुमसे अधिक बल रखनेवाले होंगे १३। २२ तुम जबतक इस बातको नहीं जानते हो तभीतक ऐसा समझ रहे हो इससे तुम अपने समान पुरुषों के बीच में मान और गर्व करना छोड़ दो और अपने पुत्र और मन्त्रियों सहित यमलोक को मत जाना चाहो देखो दम्भोद्भव कार्तवीर्य उत्तर और बृहद्रथ आदि राजालोग अपने कल्याण का अपमान करने के कारण से नाश होगये हम लोग तुमसे युद्ध चाहने वाले ब्राह्मण नहीं हैं किंतु क्षत्रिय हैं मैं इन दोनों के मामा वसुदेवजी का पुत्र हूं नाम मेरा कृष्ण है और ये दोनों अर्जुन और भीमसेन नामी पांडुनंदन हैं इससे हम तुमसे फिर यही कहते हैं कि या तो तुम सब राजाओं को छोड़ दो नहीं तो हम से स्थिर होकर युद्ध करके यमलोक को चले जाओ यह सुनकर जरासंध बोला कि हमने किसी राजा को विना जीते नहीं पकड़ा है बताओ ऐसा कौनसा है जो हमसे हारा हुआ नहीं है क्षत्रिय का यही धर्म और उपजीवन है कि शत्रु को बलसे अपने वशमें करके इच्छानुसार कर्म करे सो मैं क्षत्रियों के धर्म को स्मरण करके देवता के निमित्त किये हुये राजाओं को भय के कारण से नहीं छोड़सक्ता हूं हां सेना के साथ सेना लेकर अथवा मैं अकेला तुम तीनोंसे पृथक् २ अथवा सबसे एक साथही लड़सकता हूं२३।३० वैशंपायनजी बोले हे राजा जनमेजय! राजा जरासंध ने उक्त प्रकार से कह कर अपने पुत्र सहदेव को राज्याभिषेक किये जाने की आज्ञा दी और अपने कौशिक और चित्रसेन नामी सेनापतियों को जो पूर्व जन्म में हंस और डिंभक नामी जरासंध के सेनापति थे याद किया उस समय समर्थ और सत्य-प्रतिज्ञ श्रीकृष्णजी यह विचारने लगे कि यह पराक्रमी जरासंध यादवों से अवध्यहै क्योंकि जब हमने पहिले युद्धमें इसको मारना चाहा था उस समय यह आकाशवाणी हुई थी कि जरासंध का काल तुम्हारे हाथ से नहीं है इस को भीमसेन मारैगा हमने इसको यह आकाशवाणी सुनकर छोड़ दिया था ३१। ३६॥

इति श्रीभाषामहाभारते सभापर्वणि द्वाविंशोऽध्यायः २२॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तेईसवां अध्याय।

जरासंध और भीमसेनके मल्लयुद्ध होनेका वृत्तान्त ॥

वैशंपायनजी बोले हे राजा जनमेजय! श्रीकृष्णजी उक्त रीतिसे विचार करके युद्धका निश्चय करनेके लिये जरासंधसे कहनेलगे कि तुम हम तीनोंमें से किसके साथ युद्ध करोगे जिससे तुम युद्ध करो वही तुमसे लड़नेको तैयार होजावै यह सुनकर वह तेजस्वी जरासंध बोला कि मैं भीमसेन से युद्ध करूंगा इसके पीछे जरासंधने ब्राह्मणोंसे स्वस्त्ययन सुनकर क्षत्रियधर्मको स्मरण करके अपना किरीट मुकुट उतार डाला और बालोंको बांधकर समुद्रके समान मर्यादा के साथ खड़ा होकर भीमसेनसे बोला कि मैं तेरे साथ युद्ध करूंगा तेरे साथ लड़ने से हारेपर भी मेरा यश होगा यह कहकर जरासन्ध भीमसेनके सम्मुख जा-कर इस प्रकार खड़ा होगया जैसे बलि नाम असुर इन्द्रके सम्मुख जाकर खड़ा हुआ था उस समय जरासंधका पुरोहित माला आदिक अनेक मांगल्य पदार्थ और दुःख और मूर्च्छा के समयपर सुख और संज्ञा करनेवाली ओषधियों को लेकर जरासंध के समीप जा खड़ा हुआ इसके पीछे भीमसेन श्रीकृष्णजी से मंत्र करके और स्वस्त्ययन सुनकर जरासंधके सामने युद्ध करनेको गया और वह दोनों भुजारूपी शस्त्रों से युद्ध करनेवाले और परस्पर जय चाहनेवाले गुरुको दंडवत् करके आपस में हाथ मिलाये और खंब ठोककर एक दूसरे के कन्धे पर हाथ रखके अंगसे अंग मिलाकर लड़ने लगे और दोनों चित्रहस्त अर्थात् मुट्ठी बांधना, कक्षाबंध, गुलगंडाभिघात और बाहुपाश आदि अनेक मल्लयुद्ध के पेचोंको कर २ के एक दूसरे के छाती और शिरपर घूसा मारने लगे १।१४ और हाथ मरोड़कर पीड़ित करनेलगे कभी वह उसके चपेटा मारता कभी वह उसको पकड़कर खींच लेजाता कभी वे दोनों एक दूसरे के हाथ मार २ कर पीड़ित होजाते और कभी अपनी भुजाओंसे कमरको लपेट २ कर एक दूसरे को गिरा देते और दोनों अच्छीप्रकारसे शिक्षा पानेके कारण से अपनी २ देह को सकोड़ लेते और सवारी और कमरपेचा आदि दांवों को करके उदर के नीचे हाथ डालकर कमर पकड़ लेते और कंठ और छाती तक उठा २ कर एक दूसरेको पटक देते कभी पीठको पृथ्वी से रगड़ते कभी उदरमें घूसा मारकर एक दूसरे को मूर्च्छित करदेते इस प्रकारसे वे दोनों एक जगह घूसा मारना दिखलाकर उस जगहको छोड़कर दूसरी जगह घूसा मार मारकर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

और हाथ मरोड़ २ कर युद्ध करनेलगे १५। २० उस समय वहां ब्राह्मण क्षत्री वैश्य और शूद्र आदि सहस्रों पुरवासी स्त्री पुरुष बालक और वृद्ध आकर युद्ध देखने लगे और उन दोनों के भुजासे भुजा लड़ाने और निग्रह अर्थात् ग्रीवा पकड़कर नीचे को दबा देना और प्रग्रह अर्थात् पट्टे खींचकर चित गिरा देना और २ दांवोंके करनेसे ऐसा भयानक शब्द होनेलगा जैसा पहाड़पर बिजुली गिरने से होता है दोनों प्रसन्नचित्त और परस्पर जय करने की इच्छासे लड़ते थे मनुष्य जिधर २ वे दोनों लड़ते २ जाते थे उधरही उधरसे हट जाते थे और उन दोनों का युद्ध उस रणभूमिमें इन्द्र और वृत्रासुर की समान होनेलगा कभी आगे कभी पीछे कभी तिरछे कभी सामने एक दूसरे को खींच लेजाता और एक दूसरे को घुड़क घुड़क कर पत्थर मारने के समान घोंटू आदि से प्रहार करता था और दोनों की भुजा मारने का शब्द ऐसा होता था जैसे लोहे के परिघाओं को मारने से होता है उन दोनों का युद्ध कार्त्तिक बदी प्रतिपदा से प्रारम्भ हुआ और विना आहार और विश्राम के तेरसतक युद्ध हुआ किया चतुर्दशीकी रात्रिको जरासन्ध थककर बैठगया उस समय श्रीकृष्णजी ने भीमसेनको सम्बोधन किया कि थका हुआ शत्रु पीड़ा नहीं दे सकता है और सुगमता से मारा जा सकता है इससे तुम इससे बराबर युद्ध किये जावो यह सुनकर भीमसेन ने जरासन्ध को उस अवस्था में मारना विचारा और क्रोध करके उग्र रूप होगया २१। ३५॥

इति श्रीभाषामहाभारते सभापर्वणि त्रयोविंशोऽध्यायः २३॥

चौबीसवां अध्याय।

भीमसेनका जरासन्ध को मारडालना और श्रीकृष्णजीका सब राजाओंका बन्धनसे छुटाकर पांडवों सहित इन्द्रप्रस्थको आना और पांडवों से विदा होकर द्वारकाको चलाजाना॥

वैशंपायनजी बोले हे राजा जनमेजय! भीमसेन ने जरासन्ध को मारना विचार कर श्रीकृष्णजी से कहा कि महाराज इस पापी की कमर वस्त्र से दृढ़ बँधी हुई है इससे यह मेरे बल से रुकता नहीं है यह सुनकर श्रीकृष्णजी जरासन्ध को मरवाने की इच्छा से शीघ्रता से बोले कि तुममें जो देवता सम्बन्धी वायुका बल है उसको अब जरासन्ध पर प्रकट करो यह सुनकर भीमसेन ने जरासन्ध को पकड़ कर उठा लिया और सौ बार घुमाकर पृथ्वीपर पटककर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पीठ में घोंटू अड़ाकर उसे रगड़ रगड़कर गर्जने लगा और हाथों से दोनों टांगों को पकड़कर चीड़कर बीचमें से दो करडाला उन दोनों की गर्जना से स्त्रियों के गर्भ गिर पड़े और मगधपुरवासी मनुष्य भयभीत होकर कहने लगे कि क्या हुआ हिमालय पर्वत फटता है या पृथ्वी फट गई है १।१० इसके पीछे वे तीनों वीर जरासन्ध के मृतक शरीरको उसके घरके द्वारपर डालकर रात्रि मेंही बाहर चलेगये और जरासन्ध के पताकाधारी रथ को जोतकर उस पर बैठकर वहां गये जहां जरासन्ध ने सब राजाओं को बँधुआ कर रक्खा था वहां जाकर उन्होंने उन राजाओं को कैद से छुटा दिया उन राजाओं ने श्री कृष्णचन्द्रको रत्न आदि भेंट दिये और अर्जुन श्रीकृष्ण और भीमसेन सहित उस सुन्दर और दुर्जय रथपर बैठकर राजाओं को साथ लिये हुये नगर के बाहर आया यह रथ वही था जिसपर चढ़कर इन्द्र और विष्णु ने तारकासुर युद्ध में दैत्योंको मारा था उस रथकी प्रभा तपाये हुये सुवर्णके समान थी और शब्द बादल की गरजके सदृश था और वह रथ शत्रुनाशक और जय का दाता था इन्द्रने इसी रथपर सवार होकर दानवों की निन्यानबे सेना नाश की थीं उस रथ को पाकर पांडव और श्रीकृष्णजी बहुत प्रसन्न हुये और उनको उक्त प्रकार से सब राजाओं सहित देखकर सब मगधदेशवासी चकित होगये ११।२० उस रथ में वायु के समान जल्दी चलनेवाले घोड़े जुते हुये थे और एक ध्वजा देवताओं की बनाई हुई उसपर विना आधार के लगी हुई थी प्रभा उस ध्वजाकी बिजुलीके समान थी और वह एक योजनसे दिखलाई देती थी उस समय श्रीकृष्णजी ने गरुड़जी को स्मरण किया और वह उसी क्षण वहां पहुँचकर उस ध्वजा पर जिसपर भयानक शब्द करनेवाले जीव बैठे थे बैठ गये उनके बैठनेके कारण से वह ध्वजा चैत्य वृक्ष की तरह ऊंची खड़ी होगई उस समय गरुड़जी का प्रकाश दोपहरके सूर्य के तुल्य था और मनुष्य उनकी ओर कष्ट से देख सक्ता था वह ध्वजा न वृक्षों में अटकती थी न शस्त्रसे कटती थी और मनुष्य उसको अच्छे प्रकारसे देखसक्ते थे यह रथ राजा वसुको इन्द्रने दिया था वसुने राजा बृहद्रथको दिया और बृहद्रथ से राजा जरासन्ध ने पाया था श्रीकृष्णजी उस रथ पर बैठे हुये गिरिव्रजदेश अर्थात् पहाड़ी पृथ्वी से चलकर समान पृथ्वी पर आकर ठहर गये वहां श्रीकृष्णजी के पास ब्राह्मण आदि सब नगरवासी आदर करते हुये गये २१।३० और बंधन से छूटे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हुये राजा लोगोंने श्रीकृष्णजीकी पूजा की और विनय युक्त बोले कि आपने हम लोगों को जो दुःखरूपी कीच में फँसे हुये थे धर्मका पालन करके बाहर निकाला है यह आपकी कुछ आश्चर्य की बात नहीं है आप इसी योग्य हैं हमलोगों को मोक्ष करने से आपको संसार में बड़ा यश मिला अब हम सब आपके आधीन हैं जो कुछ आप आज्ञा दें सो ही हम करें जो कठिनता से भी हो सकैगी तो भी हम लोग आपकी आज्ञा का प्रतिपालन करैंगे यह सुनकर श्रीकृष्णजी बोले कि राजा युधिष्ठिर राजसूय यज्ञ करके साम्राज्य पदवी प्राप्त करना चाहता है सो तुम सबलोग उस यज्ञ में राजा युधिष्ठिर की सहायता करो यह सुनकर उन राजा लोगों ने प्रसन्न होकर कहा कि बहुत अच्छा हम सब ऐसा ही करेंगे और श्रीकृष्णजी को रत्न आदि भेंट किये श्रीकृष्णजी ने उन सब राजाओं पर दया करके उनकी दी हुई भेंटों को अंगीकार किया इसके पीछे जरासंधका बेटा सहदेव बड़े २ मोलके रत्न आदि पदार्थों को आगे २ लेकर अपने मंत्री और पुरोहितों सहित श्रीकृष्णजी के पास नम्रतायुक्त आया श्रीकृष्णजी ने उसकी दी हुई भेंट को अंगीकार किया और उसे अभय करके उसी स्थान पर उसके राजतिलक अपनी ओर से कर दिया और वह श्रीकृष्णजी के साथ सखाभाव मानकर पांडवों से सत्कृत होकर पुरोहित आदि सहित अपने नगर को लौट गया ३१। ४४ हे राजा जनमेजय ! इस प्रकार से श्रीकृष्णजी वहां से जरासन्ध को मारकर और भेंटों का बहुतसा धन लेकर पांडवों सहित उक्त रथपर बैठकर इन्द्रप्रस्थ में पहुँचे और युधिष्ठिर से मिलकर कहने लगे कि तुम्हारे भाग्य से भीमसेन ने जरासन्ध को मार डाला और सब राजा लोग बंधन से छुटा दिये गये और तुम्हारे दोनों भाई कुशलपूर्वक लौटकर घर आगये यह सुनकर युधिष्ठिर ने श्रीकृष्णजी की विधिपूर्वक पूजा की और अर्जुन और भीमसेन को छाती से लगा लिया और जरासन्ध से विजय पाकर आनन्द करने लगा इसके पीछे राजा युधिष्ठिर उन सब आये हुये राजा लोगों से अवस्था के अनुसार यथायोग्य मिले और आदर सत्कार करके सबको बिदा कर दिया वे राजा लोग युधिष्ठिर से आज्ञा पाकर छोटी बड़ी सवारियों में बैठ २ कर अपने २ देश को चले गये इस प्रकार से हे राजा जनमेजय ! श्रीकृष्णजी अपने शत्रु जरासन्ध को पांडवों से मरवाकर युधिष्ठिर, कुन्ती, द्रौपदी, सुभद्रा,

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भीमसेन, अर्जुन, नकुल, सहदेव और धौम्य पुरोहित से यथायोग्य मिलकर युधिष्ठिर के दिये हुये उसी रथमें बैठकर जो मनके समान जल्दी चलने वाला था द्वारकापुरी को चले चलते समय पांडवों ने श्रीकृष्णजी की परिक्रमा की और उनके चलेजानेके पीछे युधिष्ठिरने उस पाये हुये यशको अपने धर्म युक्त प्रजापालन आदि कर्मोंसे बढ़ाया और द्रौपदी के साथ प्रीति बढ़ाई ४५। ६०॥

इति श्रीभाषामहाभारते सभापर्वणि चतुर्विंशोऽध्यायः २४ ॥

पच्चीसवां अध्याय।

अर्जुन भीमसेन नकुल और सहदेवका चारों दिशाओं के राजाओं को विजय करके बहुतसा द्रव्य लाना ॥

वैशम्पायनजी बोले हे राजा जनमेजय! इसके पीछे अर्जुनने एक दिन युधिष्ठिर से कहा कि महाराज मुझको श्रेष्ठ धनुष, शस्त्र, बाण, बल, पक्ष, पृथ्वी और सेना प्राप्त होगई है कि जिनका मिलना दूसरेको दुर्लभ है इससे अब मेरी यह इच्छा है कि मैं अभिजित् मुहूर्त और अच्छी तिथि में कुबेरसे पाली हुई उत्तर दिशाको जाकर विजय करूं और सब राजालोगों से कर लूं यह सुनकर युधिष्ठिर बोले कि अच्छा अब तुम ब्राह्मणों से स्वस्तिवाचन सुनकर शत्रुओंको दुःख और मित्रों को आनन्द देनेवाली यात्रा करो तेरी विजय निश्चय होगी यह सुनकर अर्जुन बड़ी सेनाको साथ लेकर अग्निके दियेहुये दिव्य रथमें बैठकर उत्तर दिशाको चलदिया इसी प्रकारसे युधिष्ठिरसे पूजित हो होकर भीमसेन पूर्व दिशा नकुल पश्चिम दिशा और सहदेव दक्षिण दिशाको बहुत सी सेना साथ ले लेकर चल दिये और चारों ने चारों दिशाओं को विजय किया १।१० राजा युधिष्ठिर उन चारों के लाये हुये द्रव्य से बड़ा लक्ष्मीवान् होगया ११ ॥

इति श्रीभाषामहाभारते सभापर्वणि पञ्चविंशोऽध्यायः २५ ॥

छब्बीसवां अध्याय।

अर्जुन का उत्तर दिशामें राजाओं को जीतकर राजा भगदत्त को युद्ध करके जीतना ॥

उक्त कथा को सुनकर राजा जनमेजय ने वैशम्पायनजीसे कहा कि महाराज चारों दिशाओं के विजय करने का वृत्तांत विस्तार सहित वर्णन कीजिये मेरा चित्त पांडवों के चरित्रको सुनने से तृप्त नहीं होताहै यह सुनकर वैशंपायन जी बोले कि चारों पांडवों ने इस पृथ्वीको एकही साथ विजय किया था परन्तु हम पृथक् २ दिशाकी विजयका वृत्तांत कहने के निमित्त पहिले अर्जुन की

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

विजय का हाल कहते हैं अर्जुन पहिले कलिंद देशमें गया और वहांके राजा को उसने बड़ी सुगमता से अपने वश में करलिया इसके पीछे उसने आनर्त्त, कालकूट, कलिंद और सुमंडल देशके राजाओं पर चढ़ाई की और उन सब को सैना सहित जीतलिया उपरांत वह उन सब जीते हुये राजाओं सहित शाकद्वीप आदि सप्त द्वीपों में गया और वहां के प्रतिविंध्य आदि बड़े धनुर्धारी राजाओं से तुमुल युद्ध करके सबको जीतलिया और उन सबको साथ लिये हुये प्राग्ज्योतिष नाम देश में गया वहां का भगदत्त नामी राजा किरात चीन सागर और अनूपवासी योद्धाओं से युक्त होने के कारण बड़ा पराक्रमी था उससे अर्जुन का आठ दिनतक बड़ा युद्ध हुआ उपरांत वह अर्जुन से कहने लगा १।१० कि हे अर्जुन! तुम इन्द्रके पुत्रहो इससे तुममें इन्द्रकासा पराक्रम होना योग्यहै मैं भी इन्द्रका मित्र हूं परन्तु अब मेरी सामर्थ्य तेरे साथ युद्ध करने की नहीं है इससे जो कुछ तुम्हारी मनोकामना हो सो कहो मैं वैसाही करूंगा तुम मेरे पुत्र के समान हो यह सुनकर अर्जुन बोले कि धर्मज्ञ और सत्यवादी राजा युधिष्ठिर राजसूय यज्ञ में बड़ी दक्षिणा देकर साम्राज्य पदवी प्राप्त करना चाहता है सो मैं उसके निमित्त चाहता हूं कि आप अपना हाथ मुझको दीजिये आप मेरे पिता के सखा हैं और मुझसे भी प्रीति मानते हैं इससे मैं आपका करदान प्रीतिपूर्वक मांगता हूं यह सुनकर भगदत्त बोला कि जैसे तुम हमारे पुत्रकी समान हो उसी प्रकारसे राजा युधिष्ठिरभी हैं मैं तुम्हारे कहने के अनुसार सब करूंगा परन्तु करदानके सिवाय और जो कुछ तुम्हारी इच्छा हो सो हमसे कहो ११।१६॥

इति श्रीभाषामहाभारते सभापर्वणि षड्विंशोऽध्यायः २६॥

सत्ताईसवां अध्याय।

अर्जुन को उत्तर दिशामें आगे जाना और युद्ध करके पहाड़ी राजाओंको विजय करना॥

वैशंपायनजी बोले हे राजा जनमेजय! राजा भगदत्त की उक्त बात को सुनकर अर्जुन ने कहा कि आपका करदान देनाही सब कुछ है इसके पीछे अर्जुन वहां से उत्तरकी ओर आगे चला और अन्तर बाहर और उपगिरि आदि देशों के सब पहाड़ी राजाओं को जीतकर और उनसे धन लेकर उलूकवासी राजा बृहंत के देशमें गया और उस देशको मृदंगों के शब्द रथोंकी झंझना-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हट और हाथियों की चिग्घारसे कंपित कर दिया राजा बृहंत उसको सुनकर अपनी चतुरंगिणी सेना लेकर शीघ्र नगर के बाहर चला आया और अर्जुन से युद्ध करने लगा पहिले तो उन दोनों में बड़ा युद्ध हुआ परन्तु अन्त में राजा बृहंत अर्जुनके पराक्रम को न सहकर और उसको अत्यन्त पराक्रमी जानकर बहुतसे रत्न लेकर अर्जुन के समीप चलाआया अर्जुन ने वे रत्न ले लिये और उस राजा को उसके राज्यपर स्थापित करके उलूक सहित आगेको गया और राजा सेनाबिन्दुको युद्धमें पराजय किया १।१० इसके पीछे अर्जुन ने मोदापुर, वामदेव, सुदामा, सुशंकुल और उलूक आदि देशों के राजाओंको बुलाया और उनकी सहायता से पंचगण नाम देशों को विजय किया इसके पीछे उसने राजा सेनाबिंदु के देवप्रस्थ नाम नगरको जीता और वहां से सब राजाओंको साथ लियेहुये राजा विश्वगश्व पौरव के सम्मुख गया और युद्ध करके उसके अति रक्षित नगरको जीतलिया उसको जीतकर अर्जुन ने पर्वतवासी चोर और उत्सव संकेत नामी गणोंको विजय किया और वहां से चलकर काश्मीरी वीर क्षत्रिय और दशमंडल सहित लोहित को विजय किया उनके विजय होनेपर त्रिगर्त्त, दार्व और कोकनद आदि देशों के क्षत्रिय लोग अर्जुन के समीप चले आये फिर अर्जुन ने आगे चलकर अभिसारी नाम नगरी को जो बड़ी रमणीक थी और उरगावासी और रोचामान को विजय किया और वहां से सिंहपुर नाम नगर में जाकर जो चित्र आयुधों से रक्षित था युद्ध किया और वहां के राजाको जीतलिया ११।२० इसके पीछे अर्जुन सेना सहित कुक्ष और चोलनाम देशों में गया और वहां के राजाओं को जीत कर वाह्लीक, काम्बोज और दरद देशों के राजाओं को विजय किया और वहां से ईशान दिशा की ओर जाकर उन चोरोंको जो वन में वहां रहा करते थे मारकर पराजय किया इसके उपरांत अर्जुन ने लोहपरम काम्बोज ऋषिक आदि उत्तर देशके राजाओं को विजय किया ऋषिक देशके राजा से अर्जुन तारकामय युद्ध के समान युद्ध हुआ अन्तमें ऋषिक देशी राजा हारगये और अर्जुन ने उन से आठ घोड़े जिनका वर्ण तोते के उदरके समान और बहुतसे मोरकासा वर्ण रखनेवाले कर में लिये इसके पीछे अर्जुन हिमवंत और विष्कुट पर्वतवासी राजाओं को जीतकर श्वेतपर्वतपर गया और वहां जाकर ठहरगया २१।२६॥

इति श्रीभाषामहाभारते सभापर्वणि सप्तविंशोऽध्यायः २७॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अट्ठाईसवां अध्याय।

अर्जुन का संपूर्ण उत्तर दिशाको जीतकर इन्द्रप्रस्थको आना और युद्ध में लाये हुये पदार्थों को युधिष्ठिर को निवेदन करना ॥

वैशम्पायनजी बोले हे राजा जनमेजय! अर्जुन श्वेत पर्वत से चलकर किम्पुरुषावास देशको गया और वहां द्रुमके पुत्रको बड़ा युद्ध करके जीतकर उससे कर लिया और फिर आगे चलकर हाटक नाम देशको जो गुह्यक से रक्षित था सत्वसे जीतलिया और वहांसे मानसरोवर पर पहुँचा जहां अनेक मुनियोंके आश्रम थे वहां से चलकर अर्जुनने गंधर्वों के देशको विजय किया और गन्धर्वों से तित्तिर, कल्माष और मंडूक नामी घोड़े कर में लिये उपरान्त वहां से भी आगे चला और हरिवर्ष में पहुँचकर उस देशको जीतना चाहा उस समय अर्जुन के पास वहांके द्वारपालक जो बड़े पराक्रमी और दीर्घकाय थे आये और कहने लगे कि यह नगर मनुष्यों से किसी प्रकार से नहीं जीता जासक्ता है तुम अपना कल्याण चाहो तो अब लौट जावो क्योंकि इस नगर में जो घुसता है वही मरजाता है हम तुमसे प्रसन्न हैं इससे तुम अपनी जीतही समझो १।१० यह देश उत्तर कुरुदेश कहलाता है यहां युद्ध नहीं होता है और न कोई पदार्थ इस देशमें जाने से दिखलाई देता है जिसको जीत कर लिया जावै मनुष्य देह से कोई मनुष्य यहां के पदार्थों को नहीं देखसक्ता है इससे जिस बात की तुमको इच्छा हो सो हमसे कहो हम तुम्हारी इच्छाको पूरी करेंगे यह सुनकर अर्जुन बोले कि हम राजा युधिष्ठिरका साम्राज्य किया चाहते हैं सो हम तुम्हारे कहने के अनुसार इस देशमें प्रवेश नहीं करेंगे परन्तु तुम हमको युधिष्ठिर के लिये कर दो यह सुनकर उन द्वारपालकों ने अर्जुनको दिव्य वस्त्र दिव्य आभरण दिव्य मणि और मृगचर्म आदि दिये अर्जुन उनको और अन्य नाना प्रकारके रत्न और घोड़ोंको जो उसने सम्पूर्ण उक्त राजाओं से करमें लिये थे लेकर सम्पूर्ण उत्तरदिशाको विजय करके और राजाओंको सदैव कर देने के नियम में स्थिर करके इन्द्रप्रस्थको लौट आया और सब लाये हुये पदार्थों को राजा युधिष्ठिर को देदिया और युधिष्ठिर से आज्ञा पाकर अपने घर में चलागया ११।२१॥

इति श्रीभाषामहाभारते सभापर्वणि अष्टाविंशोऽध्यायः २८॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उन्तीसवां अध्याय।

भीमसेनका पूर्वदिशाको विजय करना और चंदेरी के राजा से कर लेकर आगे को जाना॥

वैशम्पायनजी बोले हे राजा जनमेजय! जिस समय अर्जुन उत्तर दिशाको गया था उसी समय बलवान् भीमसेन युधिष्ठिर से आज्ञा पाकर अपने साथ बड़ी भारी हाथी घोड़े और रथों सहित सेनाको लेकर पूर्वदिशाको गया था उसने पहिले पांचालदेशके राजाओंको अनेक उपायों से वशमें किया उपरांत गण्डक, विदेह और दशार्ण देशों के राजाओं को विजय किया दशार्ण देशका राजा सुधर्मा नामी था उसने विना शस्त्र के भीमसेन से बड़ा युद्ध किया परन्तु भीमसेनने उसको विजय किया और उसके बलको देखकर उसे अपना सेनापति बनाया इसके पीछे भीमसेन पूर्वदिशामें आगे गया और अश्वमेध देशके रोचमान नाम राजाको सहायकों सहित विजय किया उसको जीतने के पीछे भीमसेनने सम्पूर्ण पूर्वदिशाको बड़ी सुगमतासे विजय करलिया और वहांसे दक्षिणकी ओर जाकर पुलिन्दनामी बड़े नगर को और सुमित्र और सुकुमारनामी राजाओंको वशमें किया १।१० भीमसेन वहां से चलकर युधिष्ठिर की आज्ञा से चंदेरी देशमें गया वहां का राजा शिशुपाल उसके आने की खबर पाकर बाहर चला आया और भीमसेन से आदरपूर्वक मिला और दोनोंने आपसमें क्षेम कुशल पूछकर चंदेरी के राजाने अपना राज्य भीमसेनको निवेदन किया और पूछा कि तुम दिग्विजय क्यों करते हो यह सुनकर भीमसेनने युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ करने का वृत्तान्त कहा उसको सुनकर राजा शिशुपालने भीमसेनको कर देदिया और वह वहां तेरह दिन रहकर शिशुपाल से सत्कृत होकर सेना सहित आगे को चला ११।१६॥

इति श्रीभाषामहाभारते सभापर्वणि एकोनत्रिंशोऽध्यायः २९॥

तीसवां अध्याय।

भीमसेनका दिग्विजय करके बहुतसा धन लेकर इन्द्रप्रस्थ को लौटना और सब द्रव्य युधिष्ठिर को निवेदन करदेना॥

वैशम्पायनजी बोले हे राजा जनमेजय! भीमसेन चंदेरीसे चलकर कुमार और कोशलादेशोंमें गया और वहांके श्रेणिमन्त और बृहद्बल नाम राजाओंको जय किया वहांसे वह अयोध्यामें पहुँचा और वहां के दीर्घयज्ञ नामी राजाको सुग-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मतसे जीतलिया इसके पीछे भीमसेनने आगे चलकर गोपालकक्ष और उत्तर कोशल देशोंको विजय किया और मल्लों के स्वामी राजाको भी पराजय किया वहांसे भीमसेन हिमालयके पार्श्व में चलागया वहांके सम्पूर्ण जलोद्भव देशों को थोड़ेही कालमें अपने वशमें किया इस प्रकारसे भीमसेनने बहुतसे देशोंको विजय करके शुक्तिमंत नामी पहाड़को जो भल्लाट के समीप है विजय किया वहांसे चलकर उसने काशी के सुबाहु नामी राजाको जो युद्ध से विमुख नहीं होता था युद्ध करके पराजय किया और सुपार्श्व के समीप रहनेवाले क्रथ नाम बड़े पराक्रमी राजाको जीतकर मत्स, मलद, अनघ, अभय और पशुभूमि आदि देश और मदधार पहाड़पर रहनेवाले राजाओं को युद्ध कर २ के अपने वश में किया इनको जीतकर भीमसेन उत्तर की ओर चलदिया और वहां वत्सभूमि और भर्ग निषाद और मणिमत आदि बहुत से राजाओं को विजय किया १।११ वहां से चलकर उसने दक्षिण मल्ल और भोगवन्त पर्वतको सुगमतासे विजय किया और शर्मक वर्मक राजाओं को सांत्वनापूर्वक जीतकर आगे को गया और जनकवंशी जगतीपति और वैदेहिक राजाओं को जीतकर शक और वर्षकों को थोड़े ही प्रयास से विजय करलिया और वहां से वैदेह देश में इन्द्रपर्वतके समीप जाकर किरातों के सात राजाओं को अपने वश में किया इसके पीछे भीमसेन, सुह्य, प्रसुह्य और सपक्षों को जीतकर मगधदेश को गया और वहां के दण्ड और दण्डधार राजाओं को जीतकर गिरिव्रज देश में पहुँचा और वहां के राजा सहदेव नामी जरासन्ध के पुत्र से सांत्वनापूर्वक वचन कहकर दण्ड लिया और उसको और दंडधार राजाओं को साथ लेकर सेना सहित कर्णपर चढ़गया और उसको घोर युद्धपूर्वक जीतके पहाड़ी राजाओं को अपने वश में किया १२।२० इसके पीछे भीमसेन ने मेदागिरिके सब बली राजाओं को बाहुबल से मारडाला और पुंड्र देश के राजा वासुदेव और कौशिकीकच्छ में रहने वाले राजाओं को जो बड़े पराक्रमी थे युद्ध में जीतकर राजा वंग के सम्मुख चलागया और समुद्रसेन, चन्द्रसेन, ताम्रलिप्त, कर्वट देश के राजा सुह्य और सागर में रहनेवाले सब म्लेच्छों के गणों को विजय किया इस प्रकार से भीमसेन, बहुत से देशों को जीतकर और वहां के राजाओं से दण्ड लेकर लौहित को गया और वहां से सागर और अनूप देशों में जाकर वहां के म्लेच्छ राजाओं को विजय किया और

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सबसे कर लिया उन राजाओं ने भीमसेन को चन्दन, अगरु, वस्त्र, मणि, मोती, कम्बल, दुशाले, सोना, चांदी और मूंगा आदि कोटिन रत्न दिये भीमसेन उनको लेकर इन्द्रप्रस्थ को लौट आया और सब धन युधिष्ठिर को निवेदन करदिया २१। ३०॥

इति श्रीभाषामहाभारते सभापर्वणि त्रिंशोऽध्यायः ३०॥

इकतीसवां अध्याय।

सहदेवका संपूर्ण दक्षिण दिशा को विजय करके इन्द्रप्रस्थ लौटकर आना और सब लाये हुये धनको युधिष्ठिर को निवेदन करना॥

वैशंपायनजी बोले हे राजा जनमेजय! अब हम सहदेवकी दिग्विजय का वृत्तांत कहते हैं जो राजा युधिष्ठिर की आज्ञा से चतुरंगिणी सेना लेकर दक्षिण दिशाको गया था उसने पहिले शूरसेन और मत्स्य देशके राजाओं को युद्ध करके वश में किया फिर राजा दंतवक्र को जो सब राजाओं का अधिपति था जीता और उससे कर देनेका निबंध करके फिर उसे राजगद्दीपर बैठादिया और सुकुमार, सुमुनि और पटच्चरों सहित मत्स्यों को विजय किया वहां से चलकर सहदेव ने निषाद भूमि गोशृंग पर्वत और राजा श्रेणिमंतको पराजय किया और नाराष्ट्र देशको जीतकर कुंतिभोजके समीप गया उसने सहदेव के शासन को अंगीकार किया फिर वहां से चलकर चर्मण्वती नदी के किनारे पहुँचा जहां जंभक का पुत्र जिसको वासुदेवजीने पहिले मारते २ छोड़ दिया था राजा था सहदेव उसको युद्ध में जीत उससे कर लेकर दक्षिण दिशा को चलदिया वहां उसने युद्ध करके सेकों और अपरसेकों से कर लिया और उनको साथ लेकर नर्मदा नदीके समीप पहुँचा वहां उसने अवंति देशके विंद और अनुविंद नाम राजाओं को विजय किया और वहां से रत्नादिक लेकर भोजकट नाम नगरको गया वहां सहदेव से राजाओं ने दो दिन बराबर युद्ध किया उपरांत उसने राजा भीष्मक, राजा कोशला, राजा वेणुतट, राजा कांतार, पूर्व कोशला देशके राजालोग, नाटक के राजा, राजा हेरंबक, राजा मारुध, राजा रम्यग्राम, राजानीच और राजा आनर्बुक आदिको युद्धमें पराजय किया १।१४ फिर उसने आटविक नाम राजाओं को जीतकर राजा वाताधिप को अपने वशमें किया और राजा पुलिंदको विजय करके दक्षिण ओर को चलागया वहां एक दिन राजा पांडुसे युद्ध हुआ सहदेव उसे जीतकर किष्किन्धा नाम

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

गुफाके समीप पहुँचा और वहांपर वानरों के मयन्द और द्विविद नाम राजाओं से सात दिनतक युद्ध हुआ उपरांत उन दोनों वानरोंके राजाओं ने सहदेव से प्रसन्न होकर कहा कि लो ये संपूर्ण रत्न लेकर तुम चलेजावो हमको युधिष्ठिर के यज्ञ में विघ्न करना अभीष्ट नहीं है १५। २० यह सुनकर सहदेव रत्न लेकर माहिष्मती पुरीको चलागया और वहां उससे राजा नीलसे बड़ा भयानक सेना का क्षय करनेवाला और प्राणोंको संशय देनेवाला युद्ध हुआ अग्निदेव ने उस युद्ध में राजा नीलकी सहायता की और युद्ध करते २ एक साथ सहदेव की सेनाके रथ घोड़े और हाथी जलने लगे सहदेव यह देखकर संभ्रान्तमन होगया और उसको कुछ न कहसका २१। २५ यह सुनकर राजा जनमेजय ने वैशंपायनजी से पूछा कि महाराज सहदेव तो अग्निमें ही यज्ञ करने के लिये यत्न कर रहाथा फिर किस कारणसे अग्नि ने सहदेव की सेना को जलाया था यह सुनकर वैशंपायनजी बोले कि हमने सुना है कि अग्निदेव माहिष्मती पुरी में पहिले से परदाररत थे अर्थात् राजा नील के एक बड़ी स्वरूपवती कन्या थी राजा उसको अग्निहोत्र के समय अपने पास लेकर इस कारण से बैठाकरता था कि जबतक वह कन्या अपने होठों से फूंक नहीं मारती थी तबतक पंखे की भी वायु से अग्नि नहीं जलती थी अग्निदेव उस कन्याके स्वरूप पर कामासक्त होगये और एक दिन सुन्दर ब्राह्मणका स्वरूप धरकर उस कन्यासे रमण करने की इच्छा से कहा कि मेरे साथ संग कर उस कन्याने वह अंगीकार किया और अग्निदेव उसके साथ रमण करने लगे एक दिन राजाने अग्निदेव को उस कन्या से ब्राह्मणस्वरूप से रमण करते हुये देखलिया और उनको केवल ब्राह्मण जानकर आज्ञा दी कि इसको शास्त्र के अनुसार दण्ड दो यह देखकर अग्निदेव प्रज्वलित स्वरूप होगये राजा उनके स्वरूप को देखकर डरगया और दंडवत् प्रणाम करने लगा और समय के आनेपर उस कन्या का विवाह अग्निदेव के साथ करदिया २६। ३३ अग्निदेव उस कन्या को पाकर बहुत प्रसन्न हुये और राजा नील पर कृपा करके कहने लगे कि जो कुछ इच्छा हो सो वरदान मांगो यह सुनकर राजा नील ने कहा कि महाराज मेरी सेनाको किसीका भय न रहै अग्निदेवने राजा को वह वरदान देदिया और उस समय से जो कोई राजा विना जाने उस पुरी को जीतने की इच्छा से जाता है उसको सेना सहित अग्निदेव भस्म

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कर देते हैं अग्निदेव ने वहां की स्त्रियों को यह वरदान दिया कि यहां की सब स्त्रियां आज से स्वैरिणीकी तरह स्वेच्छाचारिणी रहैं तब से वहां की स्त्रियां स्वैरिणी रहती हैं और राजालोग अग्नि के भय से उस पुरीके विजय करने को नहीं जाते हैं सो हे जनमेजय! सहदेव अपनी सेना को अग्नि में जलतीहुई देखकर कम्पित नहीं हुआ किन्तु शुद्ध होकर आचमन करके अग्नि की स्तुति करने लगा ३४। ४० कि हे अग्निदेव! मैं तुमको नमस्कार करता हूं मैंने यह विजय करनेकी इच्छा तुममेंही यज्ञ करने के लिये की है तुम देवताओंका मुख और यज्ञ हो तुम्हारा नाम पवित्र होनेके कारण से पावक और हव्यको धारण करने से हव्यवाहन है और तुम्हारेही अर्थ वेदोंके प्रकट होनेसे तुमको जातवेदस कहते हैं तुम्हारे नाम चित्रभानु, सुरेश और अनल भी हैं तुम स्वर्गके द्वारके देनेवाले हुतके भोजन करनेवाले और ज्वलनस्वरूप हो तुम्हीं वैश्वानर पिंगेश और प्लवंग हो और स्वामिकार्त्तिक को उत्पन्न करनेवाले रुद्र गर्भ और सुवर्ण उत्पन्न करनेवाले हो हे अग्निदेव! तुम मुझको अपना तेज दो वायु मुझको प्राण दे पृथ्वी बल दे और जल कल्याण देवे सो हे अग्निदेव! हे जलगर्भ! हे पराक्रमी! हे जातवेदस! हे देवेश! हे अग्नि! मुझको पवित्र करो तुम ब्राह्मण, देवता, ऋषि और असुरों के यज्ञका कारण हो तुम धूमकेतु, शिखि, पापनाशक, सब प्राणियोंमें स्थित और वायुसे प्रकट होनेवाले हो मुझको अपने सत्य से पवित्र करो हे महाराज! मैं प्रीतिपूर्वक आपकी स्तुति करता हूं आप मुझे बुद्धि, प्रीति, ज्ञान और सुख दीजिये वैशम्पायनजी बोले कि हे राजा जनमेजय! सहदेव ने इस आग्नेय मन्त्राष्टक से अग्नि की स्तुति की जो मनुष्य जितेन्द्रिय होकर इन मन्त्रों से अग्नि में हवन करता है उसके सब पाप दूर होजातेहैं ४१। ५० स्तुति करनेके पीछे सहदेव अग्निदेवसे बोला कि आपको यज्ञमें विघ्न करना योग्य नहीं है और फिर सेना के मुखपर कुशका आसन बिछाकर विधिपूर्वक बैठगया यह देखकर अग्नि आगे को इस प्रकार से नहीं बढ़ी जैसे समुद्र अपनी मर्यादा से आगे को नहीं बढ़ता है और फिर अग्निदेव ने उसके पास आकर सांत्वनापूर्वक धीरेसे कहा कि हे सहदेव! उठ खड़ा हो मैं तेरे और युधिष्ठिर के अभिप्राय को जानता हूं परन्तु इस पुरी की रक्षा करना मुझको उस समय तक अवश्य है जबतक राजा नील का यहां वंश रहेगा तू उठ मैं तेरी मनोकामना को पूरा करूंगा यह सुनकर सहदेव

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्रसन्न हुआ और हाथ जोड़कर नम्रता से उसने अग्नि का पूजन किया इस पर अग्नि निवृत्त होगई और अग्निदेव की आज्ञासे राजा नील सहदेव के पास आया और उसकी सत्कार सहित पूजा की इसके पीछे सहदेव उससे कर लेकर दक्षिण दिशाको चलदिया और त्रैपुर पौरवेश्वर और आकृत कौशिकाचार्य को अपने वशमें किया ५१। ६१ इसके पीछे सहदेव ने सुराष्ट्र देश के राजा को जीता और उस देश में भोजकटपुर के राजा रुक्म और राजा भीष्मक के पास जो इन्द्रका मित्र था अपना दूत भेजा उन दोनों ने श्रीकृष्णजी के प्रभावको समझकर उसके शासनको अंगीकार किया इसके पीछे सहदेवने शूर्पारक, तालाकटक, दंडक, सागर द्वीपवासी राजा जो म्लेच्छयोनि से उत्पन्न निषाद, पुरुषाद, कर्ण, प्रावरण, कालमुख जिनकी उत्पत्ति नर और राक्षस से है, कोलगिरि, सुरभीपट्टन, ताम्राह्वयद्वीप, रामाकपर्वत, तिमिंगिल, एकपादपुरुष, केरलवनवासी, संजयंती नगरी, पाषंड, करहाटक, पांड्य, द्रविड़, उड्र, अंध्र, तालवन, कलिंग, उष्टिकर्णिक, आटवी नाम रम्य पुरी और यवनोंके नगर आदि देशोंके राजाओं को विजय किया और सबसे दंड लेकर कच्छदेश को चलागया और वहां से पुलस्त्यवंशी राजा विभीषणके पास अपना दूत भेजा विभीषणने उसके शासनको प्रीतिपूर्वक अंगीकार किया और उस बातको होनहार जानकर और कुछ नहीं किया इसके पीछे सहदेव विभीषण के भेजेहुये नानाप्रकार के रत्न, चन्दन, अगर, दिव्य आभरण, बड़े मोलवाले वस्त्र और मणि आदि को लेकर और सब राजाओं को कर देने के नियम में स्थापित करके वहांसे लौटकर इन्द्रप्रस्थ को आया और सब धन युधिष्ठिर को निवेदन करके सुखपूर्वक रहनेलगा ६२। ७८॥

इति श्रीभाषामहाभारते सभापर्वणि एकत्रिंशोऽध्यायः ३१॥

बत्तीसवां अध्याय।

नकुल का पश्चिम दिशाको विजय करना और वहांसे लाये हुये धनको युधिष्ठिर को दे देना॥

वैशम्पायनजी बोले हे राजा जनमेजय! अब नकुलके पश्चिम दिशा के विजय करने का वृत्तान्त सुनो इस दिशा को मिथ्या वासुदेव ने भी विजय किया था नकुल राजा युधिष्ठिर से बिदा होकर अपने साथ बड़ी भारी सेना लिये हुये पश्चिम दिशाको चल दिया उसकी सेना में योद्धाओं की गर्ज

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

और रथोंकी झंझनाहट से बड़ा भयानक शब्द होता था पहिले वह रोहीतक पर्वत पर जो धनयुक्त रमणीक गौओं से शोभित और कार्त्तिकेयजीका प्रिय स्थान था पहुँचा वहां उससे मत्तमयूर नाम शूरवीरों से बड़ा युद्ध हुआ अन्त में उसने उन दोनों को और मरुभूमि शैरीषक और महेत्थ पहाड़ों के राजाओं को जीतकर वश में किया इसके पीछे नकुलने बड़ा युद्ध करके आक्रोश नाम राजऋषि को वश में किया और दशार्ण नाम देशों के राजाओं को विजय करके वह आगे चलागया और शिवी, त्रिगर्त, अम्बष्ठ, मालव, पंचकर्पट, मध्यमकेय, वाटवधान और द्विजों को जीतकर उसने पुष्करवनवासियों को अपने वशमें किया और वहां से चलकर उसने उत्सवसंकेत नाम गण समुद्र के किनारे बसनेवाले ग्रामणीय प्रभीर गण जो सरस्वती के किनारे पर बसते थे और मत्स्यदेशके राजाओंकी आज्ञामें रहते थे और सब पर्वतवासी राजाओं को विजय किया १।१० और वहांसे आगे बढ़कर पंचनद अर्थात् पंजाब देश और अमर पर्वत और उत्तर ज्योतिष देश और कटपुर के राजाओं को वशमें किया और रामठ, द्वारपाल, हारहूण आदि पश्चिमदेशी राजाओं को जीत कर वासुदेवजीके पास अपना दूत भेजा उन्होंने नकुल के शासनको अंगीकार किया और वह वहां से चलकर शाकल मद्र देशों की राजधानी पुरभेदन नाम नगर में पहुँचा और प्रीतिपूर्वक अपने मामा राजा शल्यको वशमें किया और वहां से सादर सत्कार पाकर शल्यके दिये हुये रत्नोंको लेकर समुद्रकी ओर मुड़पड़ा और वहांके रहनेवाले म्लेच्छ, पल्हव, वर्वर, किरात, यवन और शकों को विजय करके दशसहस्र ऊंटोंपर रत्न आदि पदार्थों को लादकर इन्द्रप्रस्थ को लौट आया और सब धन युधिष्ठिर को निवेदन करदिया हे राजा जनमेजय! इस प्रकारसे नकुल वासुदेव से निर्जित पश्चिम दिशा को विजय करके अपने घर लौट आया ११।२०॥

इति श्रीभाषामहाभारते सभापर्वणि द्वात्रिंशोऽध्यायः ३२॥

तेंतीसवां अध्याय।

युधिष्ठिर का यज्ञ की सब सामग्री मँगाकर यज्ञ करने को दीक्षित होना और सब राजा और ब्राह्मण आदि को निमन्त्रण भेजना॥

वैशंपायनजी बोले हे राजा जनमेजय! युधिष्ठिरके प्रजापालन सत्य और शत्रुओंके नाश करने से सब प्रजा अपने २ कर्मों को करने लगी और धर्म के

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अनुसार शासन करने और कर लेने से मनमानती वर्षा होने लगी कि उसके कारण से उसके राज्यमें बड़ी वृद्धि हुई लोग गौओं की रक्षा खेती और व्यापार को अच्छे प्रकार से करने लगे और उसके राज्य में चोर ठग और राजवल्लभ अर्थात् मंत्री आदिका परस्पर मिथ्या उपचार सुनने में नहीं आया और वर्षा न होना अथवा अत्यन्त वर्षा होना और आग लगना आदि उपद्रव स्वप्न हो गये और राजालोग युधिष्ठिर के पास कर देने अथवा उसका प्रियकाम करने या पास बैठने को आया जाया करते थे कभी कोई राजा युद्ध आदि की इच्छा से नहीं आता था और धर्मसे लायेहुये धनसे युधिष्ठिरका खजाना इतना बढ़गया कि सैकड़ों वर्षोंमें भी वह खर्च नहीं होसक्ता था जब युधिष्ठिरने अपने कोष को धन धान्य और वस्त्र से इतना बढ़ा हुआ देखा तब उसने यज्ञ करने का विचार किया और उसके सब सुहृदों ने भी उसे यही सम्मत दिया कि अब तुम्हारे यज्ञ करने का समय है उसी समय वहां श्रीकृष्णजी भी जो ऋषि पुराण और वेदों के आत्मा, जगत्कारण, जगन्मय, जगदीश, अव्यय, केशी दैत्यके मारने वाले, १।११ यादवों की रक्षा करनेवाले, आपत्तिमें अभय करनेवाले, पुरुषोत्तम सब राज काज वसुदेवजीको सौंपकर रथमें बैठकर अपने साथ बहुतसी सेना और असंख्य धन लेकर इन्द्रप्रस्थमें आन पहुँचे और सब धन युधिष्ठिर को देदिया और उसका सब प्रकार से भराहुआ खजाना उस समुद्ररूपी धन के आने से परिपूर्ण होगया कि जिसके देखने से पांडवों के शत्रुओं के मन में शोक उत्पन्न होगया और पुरवासी श्रीकृष्णजीको आयाहुआ देखकर इस प्रकारसे उत्पन्न हुये जैसे सूर्य और वायुरहित स्थानसे निकलेहुये को सूर्य के दर्शन और वायु के स्पर्श से सुख होता है युधिष्ठिरने श्रीकृष्णजीसे आदर सहित मिलकर और यथायोग्य सत्कार करके कुशल क्षेम पूछी उपरांत बैठने पर व्यासजी और धौम्य आदि ऋत्विज यथा भीम और अर्जुन आदि भाइयों सहित उनसे कहने लगे कि हे श्रीकृष्णजी ! आपकी कृपा से सब पृथ्वी मेरे वश में है और धन भी बहुत सा इकट्ठा होगया है अब मेरी इच्छा उस सब धनको विधिके अनुसार ब्राह्मणों और अग्नि के निमित्त देनेकी है इस कारण से मैं आपको और अपने छोटे भाइयोंको साथ लेकर यज्ञ किया चाहता हूं आप मुझको आज्ञा दीजिये और अपने को दीक्षित कीजिये आपके यज्ञ करने से मेरे सब पाप दूर होजायँगे और जो आप की इच्छा न हो तो मुझे छोटे भाइयों सहित यज्ञ करनेकी आज्ञा दीजिये मैं ही

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यज्ञ करूंगा १२।२२ यह सुनकर श्रीकृष्णजीने युधिष्ठिरकी प्रशंसा की और कहा कि इस साम्राज्य पदके देनेवाले राजसूय यज्ञको करना तुम्हींको उचित है तुम्हारे यज्ञ करने से हमभी कृतकृत्य हो जायँगे हम तुम्हारा कल्याण चाहनेवाले हैं इससे हम तुम्हारे पास स्थित हैं तुम अपनी इच्छाके अनुसार यज्ञ करो और हमको भी कोई काम बताओ हम तुम्हारी आज्ञा के अनुसार तुम्हारा काम करेंगे यह सुन कर युधिष्ठिर बोले कि मुझको आपके आने से निश्चय विश्वास होगया कि मेरा संकल्प सुफल और यज्ञ सिद्ध होगा वैशंपायनजी बोले हे राजा जनमेजय ! इसके पीछे श्रीकृष्णजीसे आज्ञा पाकर राजा युधिष्ठिर यज्ञकी सब चीजें इकट्ठा करने लगे सहदेव को मंत्रियों सहित यज्ञकी सामग्री संचय करने की आज्ञा देकर कहा कि तुम जो जो सामग्री धौम्य ऋषि कहैं सो सो लेआवो और इन्द्रसेन विशोक और पुरु नाम सारथी इनको आज्ञा दी कि तुम सब अन्न रस और गंधमय चारों प्रकारके भोजन जो ब्राह्मणों को अच्छे लगते हैं इकट्ठा करो २३। ३१ इसके पीछे सहदेव ने आकर युधिष्ठिर से कहा कि यज्ञकी सब सामग्री आगई तब व्यासजीने मूर्तिमान् वेदोंकी तुल्य ब्राह्मण और ऋत्विजों को बुला लिया उस यज्ञमें व्यासजी आप ब्रह्मा और धनंजयगोत्री सुसामा ऋषि सामवेदी और याज्ञवल्क्यजी अध्वर्यु और वसुका बेटा पैल और धौम्य ऋषि होता और इन सबके पुत्र और शिष्य होत्रिक हुये उन सबों ने तब वेदविधि के अनुसार पुण्याहवाचन पढ़ा और ऋत्विजोंने उस यज्ञ स्थानमें शिल्प विद्या जाननेवालोंसे अर्थात् संगतराशोंसे विधिके अनुसार कुण्ड और वेदी और देवताओं के स्थानोंके सदृश सुगंधित स्थान बनवाये इसके पीछे युधिष्ठिरने सहदेव को बुलाकर आज्ञा दी कि तुम जल्दी चलनेवाले दूतोंको भेजकर न्योता भेज दो सहदेवने यह आज्ञा पाकर दूतों को बुलाया और कहा कि तुम सब देशों में जा जाकर ब्राह्मण राजा लोग वैश्य और मान्यशूद्रोंको निमन्त्रण देकर सबको बुलावा देआवो ३२। ४१ वैशम्पायनजी बोले हे राजा जनमेजय ! वे दूत आज्ञा पाकर तुरन्त चल दिये और थोड़ेही काल में न्योता देकर लौट आये इसके पीछे समय के आनेपर ब्राह्मणों ने राजा युधिष्ठिर को यज्ञ करने के लिये दीक्षा दी और वह दीक्षित होकर सहस्रों ब्राह्मण, अपने सब भाई, जातिवाले, सुहृद्, मंत्री और नानादेशों से आयेहुये क्षत्रिय और राजाओं सहित यज्ञशालाको गया सब विद्याओं में परिपूर्ण और वेदांगों के जाननेवाले ब्राह्मणलोग

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वहां अनेक २ देशों से आकर इकट्ठे हुये शिल्पियों ने उनके लिये राजा की आज्ञा से पृथक् २ ऐसे स्थान बना दिये जिनमें सब ऋतुओं में सुख रहे और उन सब स्थानों में अन्न और वस्त्र आदि सब आवश्यक पदार्थ रखवा दिये गये ब्राह्मणलोग उन स्थानोंमें अनेक २ कथा कहते और नट आदि नाचनेवालों की कृत्य अर्थात् तमाशा देखते हुये रहनेलगे ब्राह्मणों के खाने बोलने और प्रसन्न होने में बड़ा भारी शब्द होने लगा जहां देखो तहां यही सुनाई देताथा इनको दो उनको दो भोजन करो राजा युधिष्ठिर ने उस यज्ञ में गोशयन और सुवर्ण की स्त्रियां एक लाख पृथक् २ दान कीं और वह यज्ञ इस पृथ्वीपर ऐसा हुआ जैसा इन्द्रका यज्ञ स्वर्ग में हुआ था इसके पीछे युधिष्ठिर ने नकुल को भीष्म, द्रोणाचार्य, धृतराष्ट्र, विदुर, कृपाचार्य और सब भाइयों को हस्तिनापुर जाकर लाने की आज्ञा दी ४२। ५५ ॥

इति श्रीभाषामहाभारते सभापर्वणि त्रयस्त्रिंशोऽध्यायः ३३ ॥

चौंतीसवां अध्याय।

निमंत्रण पानेपर युधिष्ठिरके यज्ञमें सहस्रों ब्राह्मणों और राजाओंका आना और राजा युधिष्ठिरका उनको सुंदर घरोंमें टिकाकर सत्कार करना॥

वैशम्पायनजी बोले हे राजा जनमेजय ! युधिष्ठिर की आज्ञा पाकर नकुल हस्तिनापुर को गया और भीष्म और धृतराष्ट्र आदि को निमंत्रण दिया तब वहां से द्रोणाचार्य आदि सबलोग ब्राह्मणोंको आगे करके यज्ञशाला को चल दिये और सैकड़ों मनुष्य यज्ञकी खबर पा पाकर प्रसन्नतापूर्वक इन्द्रप्रस्थ में चले आये और बहुतसे क्षत्रियलोग युधिष्ठिर और उसकी सभाको देखने के लिये वहां पर आये और राजा धृतराष्ट्र, भीष्म, विदुर, दुर्योधन आदि सब भाई सुबल, शकुनि, अचल, वृषक, कर्ण, शल्य, वाह्लीक, कौरव, सोमदत्त, भूरिभूरिश्रवा, शल, अश्वत्थामा, कृपाचार्य, द्रोणाचार्य, राजा जयद्रथ, यज्ञसेन, राजा शाल्व अपने पुत्र सहित राजा भगदत्त, पहाड़ी सब राजा जिनके साथ सागर और अनूपवासी म्लेच्छभी थे, राजा बृहद्बल, पौंड्रक, वासुदेव, वंगदेश का राजा, कलिंगदेश का राजा आकर्ष, कुंतल, मालवदेश के राजा लोग, आंध्रक, १। ११ द्राविड़, सिंहल, राजा काश्मीरका, राजा कुंतिभोज, राजा गौरवाहन, वाह्लीकदेशके राजालोग, दोनों पुत्रों सहित राजा विराट, मावेल्ल, नाना देशके राजालोग और राजपुत्र, पुत्र सहित राजा शिशुपाल, बलदेवजी,

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अनिरुद्ध, सारण, कंक, गद, प्रद्युम्न, साम्ब, चारुदेष्ण, उल्मुक, मिषठ, आगावह और वृष्णिवंशी और मध्यदेशवासी राजा लोग अनेक २ प्रकार के रत्न ले ले कर उस युधिष्ठिर के यज्ञमें आये राजा युधिष्ठिरने उन सबका सत्कार यथा योग्य किया और उन सबको पृथक् २ घर रहनेको बता दिये जिनमें कुयें खुदे हुये और वृक्ष लगे हुयेथे और अनेक प्रकार की भोजन की सामग्री रक्खी हुईथी राजा लोग युधिष्ठिर से सत्कार पाकर उन घरोंमें जा टिके ये घर कैलासके शिखरके समान इतने ऊंचे थे कि चार कोस से अच्छे प्रकारसे दिखाई देते थे और सुडौल बने हुये द्रव्य से भूषित और सुवर्ण के जालों से अंकित थे पृथ्वी अर्थात् फर्श उन घरोंका मणिजटित था ऊपर चढ़नेको सुन्दर सीढ़ियां बनी हुई थीं और बड़े २ बिछौने को आसन और फूल माला और अगर आदि सुगंधित पदार्थ वहां स्थापित थे रंग उन घरोंका हंस और चन्द्रमाकी समान श्वेत था सब अंग उनके अनेक २ धातुओं से जटित थे मनुष्योंको वहां रहने से किसी बात की पीड़ा नहीं होती थी राजा लोग उन घरों में विश्राम करके राजा युधिष्ठिर को जो बहुतसे सदस्यों सहित यज्ञशाला में बैठा हुआ था देखने को गये और वह सभा उन सब राजा महर्षि और ब्राह्मणोंसे ऐसी शोभायमान होगई जैसे स्वर्ग देवताओं से सुशोभित होता है १२।२५॥

इति श्रीभाषामहाभारते सभापर्वणि चतुस्त्रिंशोऽध्यायः ३४॥

पैंतीसवां अध्याय।

युधिष्ठिरका पृथक् पृथक् कामोंपर पृथक् पृथक् मनुष्यों को नियत करके यज्ञ करना॥

वैशंपायनजी बोले हे राजा जन्मेजय! सब ब्राह्मण और राजालोगों के जुड़ने पर युधिष्ठिर अपने बाबा भीष्म और गुरु द्रोणाचार्य के पास गया और दंडवत् करके उनसे और कृपाचार्य दुर्योधन और विविंशतिसे कहा कि आप लोग मेरे ऊपर अनुग्रह करके ऐसा काम कीजिये जिससे मेरा कल्याण होवे यह कहकर युधिष्ठिरने उन सबको पृथक् २ अधिकारों पर नियुक्त किया अर्थात् खाने पीने के प्रबन्ध के लिये दुःशासन को ब्राह्मणों के परिग्रह के निमित्त अश्वत्थामा को राजाओं का सत्कार करने के लिये संजयको और विना तैयार पदार्थों को देखने के लिये भीष्मजी और द्रोणाचार्य को रत्न और सुवर्ण आदि को देखने और दक्षिणा बांटने पर कृपाचार्य को और अन्य कामों पर और २

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मनुष्यों को नियत किया और वाह्लीक, धृतराष्ट्र, सोमदत्त और जयद्रथ जिनको नकुल आप जाकर लायाथा वहांपर स्वामी अर्थात् मालिक की तरह रहने लगे उस यज्ञ में सब खर्च विदुरजी करते थे और जो भेंटें राजालोग लाते थे उनको दुर्योधन लेता था और उत्तम फल पाने की इच्छा से श्रीकृष्णजी ब्राह्मणों के चरण धोते थे १। १० युधिष्ठिरको किसी राजाने उस यज्ञ में एक सहस्र से कम भेंट नहीं दी और यह विचार करके कि किसी प्रकार हमारा यह कौरव कुल का राजा रत्नोंको दान देकर राजसूय यज्ञ करै सबोंने रत्न दे दे कर युधिष्ठिर के रत्नोंकी वृद्धि की और जो राजालोग ईर्षी थे उन्होंने भी धन भेंट किया उस समय युधिष्ठिर की सभा उन भवनों से जो रत्नरूपी ऋद्धि ब्राह्मण और बड़े बड़े लक्ष्मीवान् और प्रतापवान् राजाओं से भरेहुये थे और उनके ऊपर इन्द्र आदि लोकपालों के विमान छारहे थे अत्यन्त सुशोभित होगई तब युधिष्ठिरने जिसकी ऋद्धि वरुण के समान थी उस यज्ञ में स्थापित कीहुई छः अग्नियों में हवन किया और सब मनुष्योंको उनकी कामना के अनुसार तृप्त किया उस यज्ञमें इड़ाआज्य नाम होमकी आहुतियों के मंत्रोंको जाननेवाले महर्षियों के द्वारा सब देवता और दक्षिणा अन्न और बहुत धनके दानोंसे ब्राह्मण लोग और अन्य २ वर्ण के मनुष्य तृप्त होगये ११। १६ ॥

इति श्रीभाषामहाभारते सभापर्वणि पंचत्रिंशोऽध्यायः ३५ ॥

छत्तीसवां अध्याय।

राजा युधिष्ठिर का यज्ञस्नान करना और भीष्मजीके कहनेसे श्रीकृष्णजीको अर्घ देना ॥

वैशम्पायनजी बोले हे राजा जनमेजय! अभिषेक अर्थात् यज्ञस्नानके दिन सत्कार के योग्य ब्राह्मण और राजालोग जो महाऋषि थे अन्तरवेदी के भीतर गये उस समय नारदादिक ऋषिलोग उन राजऋषियों के समीप अन्तरवेदी में बैठे हुये ऐसे मालूम होते थे मानो ब्रह्माजी के भवन में देवता और देवऋषि बैठे हुये हैं जब यज्ञस्नान होचुका तब ब्राह्मणलोग आपस में शास्त्र का विचार करनेलगे उनमें बहुत से ब्राह्मण जो वितण्डावादी थे कहने लगे कि यह ऐसेही है तुम कहते हो तैसे नहीं है दूसरे बोले कि यह अन्यथा नहीं होसक्ता है जैसे हम कहते हैं वैसेही है बहुत से ब्राह्मणों ने अनेक हेतु दिखाकर और शास्त्र का प्रमाण दे देकर प्रबल अर्थ को दुर्बल और

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दुर्बल को प्रबल कर दिखाया बहुतसे पण्डितों ने अनेक अर्थ अनुमानसे ऐसे खैंचलिये जैसे आकाश में श्येन पक्षी मांस खैंचकर लेजाता है इस प्रकार से वे ब्राह्मणलोग जिनमें कोई कोई धर्म के अर्थों के और कोई कोई भाष्य आदि के जाननेवाले थे शास्त्रविनोद करते रहे और वह वेदी उन सबसे और महा-ऋषियों से ऐसी प्रकाशमान होगई जैसे आकाश तारागणोंके निकलने से होजाताहै और उस वेदीके पास युधिष्ठिर के बैठने पर कोई शूद्र या अव्रती मनुष्य नहीं जानेपाया नारदजी युधिष्ठिर की लक्ष्मी और यज्ञको देखकर प्रसन्न हुये १।१० उस समय नारदजीको क्षत्रियोंका समागम देखकर वह बात याद आई जो पहिले ब्रह्माजी की सभामें सब देवताओंके पृथ्वी पर अपने २ अंशसे अवतार लेनेके विषयमें हुईथी और विचार करनेलगे कि श्रीहरि भगवान् जो असुरों को नाशकरनेवाले और समर्थ हैं उन्होंने क्षत्रियोंके कुल में जन्म लियाहै उन्होंने देवताओंसे कहा था कि तुम सब जन्म लेकर परस्पर मारकर फिर स्वर्गमें चलेआना सो उस जगदीश्वरने देवताओं से उक्त रीतिसे कहकर आप यदुकुल में जन्म लिया है और उस वंश में इस प्रकार से लक्ष्मी सहित शोभायमान हैं जैसे नक्षत्रों से चन्द्रमा सुशोभित होता है जिस देवता को इन्द्रादिक सब देवता उपासना करतेहैं वही विष्णुभगवान् अब इस क्षत्रियकुल में प्रकट होकर सब क्षत्रियों को अपने रूपमें लय करना चाहते हैं यह बड़ा आ-श्चर्य है यह समझकर नारदजी उस यज्ञशाला में युधिष्ठिरके समीप बैठे हुये चिन्ता करने लगे कि ११।२१ इसी अवसर में भीष्मजी राजा युधिष्ठिर से बोले कि तुमको सब आयेहुये राजाओं की यथायोग्य पूजा करनी उचित है क्योंकि आचार्य, ऋत्विज्, श्वशुर आदि सम्बन्धी स्नातक ब्रह्मचारी मित्र और राजा इन छःको अर्घ देना और इनकी पूजा करना जो वर्षदिन पीछे अपने पास आवे तो उचितहै सो ये लोग तो हमारे पास बहुत दिनों में आये हैं इन प्रत्येक को तुम्हें अर्घ देना उचितहै और इनमें जो श्रेष्ठ और समर्थहैं उनको पहले अर्घ देना चाहिये यह सुनकर युधिष्ठिर बोला कि बहुत श्रेष्ठ है परन्तु अब आप यह बताइये कि इनमेंसे हम पहले अर्घ किसको दें आप किसको सबमें श्रेष्ठ जा-नतेहैं यह सुनकर भीष्मजी बोले कि हमारी समझमें श्रीकृष्णजी सबसे श्रेष्ठ हैं पहिले उनका पूजन होना उचितहै क्योंकि इन सबके बीच में श्रीकृष्णजी अपने तेज और पराक्रम से इस प्रकारसे प्रकाश कर रहे हैं जैसे ज्योतियोंमें सूर्य प्रकाश

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

करताहै और यह हमारी सभा उनके यहां होने से ऐसी प्रकाशित और प्रसन्न है जैसे सूर्य और वायु रहित स्थानमें रहनेवाला मनुष्य सूर्य के प्रकाश और वायुके स्पर्श से प्रसन्न होताहै इसके पीछे भीष्मजीकी आज्ञा से सहदेवने उठकर श्रीकृष्णजीको विधिपूर्वक अर्घ दिया और श्रीकृष्णजीने उसको अंगीकार किया परन्तु इस बातको चन्देरीका राजा शिशुपाल न सहसका और वह युधिष्ठिर और भीष्मपितामहके पास आकर श्रीकृष्णजी की निन्दा करने लगा २२।३२॥

इति श्रीभाषामहाभारते सभापर्वणि षट्त्रिंशोऽध्यायः ३६ ॥

सैंतीसवां अध्याय।

राजा शिशुपालका श्रीकृष्णचन्द्रजीकी पूजा होना देखकर युधिष्ठिर भीष्म और श्रीकृष्णजी की निन्दा करना ॥

शिशुपाल बोला हे युधिष्ठिर! तुमको इस वृष्णिवंशी कृष्णकी पूजा महात्मा राजाओं को छोड़कर राजाओं के समान करना उचित न था तुम राजा पांडुके पुत्र हो तुम्हारा यह आचार तुम्हारे योग्य न था तुम सब अभी बालक अर्थात् अज्ञानी हो धर्मकी गति बड़ी सूक्ष्महै और इस गंगापुत्र भीष्मको वृद्धावस्था के कारणसे शास्त्रका सिद्धांत स्मरण नहीं रहाहै भीष्मसे अधर्मी मनुष्यकी जो अपनी इच्छापूर्वक काम करताहै कौन ऐसा होगा जो निन्दा न करैगा वृष्णिवंशियों में कोई राजा नहीं होताहै उसी वंशका यह कृष्ण भी है फिर राजाओं में उसकी पूजा राजाओं की तरह होना क्योंकर योग्य है जो तुमने कृष्ण की पूजा वृद्ध जानके की है तो उसके पिता वसुदेव के यहां होनेपर उसकी पूजा होना उचित न था जो कृष्ण को तुमने अपना प्रिय करनेवाला समझकर पूजा है तो भी उसकी पूजा होना न चाहिये क्योंकि राजा द्रुपद तुम्हारे सम्बन्धी मौजूद हैं और जो कहो कि श्रीकृष्ण आचार्य हैं तो द्रोणाचार्य के होतेहुये उसकी पूजा करना क्योंकर ठीक है यदि श्रीकृष्णको तुमने ऋत्विज् जानकर पूजा है तो व्यासजी के होतेहुये ऐसा करना तुमको कब उचित था १।९ हे युधिष्ठिर! श्रीकृष्ण न ऋत्विज् है न आचार्य है न राजा है फिर किस कारण और प्रयोजन से तुमने भीष्म, अश्वत्थामा जो सब शास्त्रों में पण्डित है दुर्योधन, कृपाचार्य, द्रोणाचार्य, राजा भीष्मक, राजा रुक्म, राजा एकलव्य, मद्रदेश के राजा शल्य और कर्ण को जो परशुरामजी का शिष्य है और जिसने अपने पराक्रम से सब राजाओंको जीता है छोड़कर इसकी पूजा की है जो

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तुमको कृष्णही की पूजा करनी थी तो हम सब को बुलाना क्या आवश्यक था हमने तुमको कर कुछ तुम्हारे भय या लोभ या तुमसे साम अर्थात् सुलह रखने के लिये नहीं दिया था केवल तुम्हारी प्रीति से और तुमको धर्ममार्ग में प्रवृत्त जानकर दिया था सो तुमने हम सबमें से एकको भी न मानकर कृष्ण की पूजा की १०। २० भला इस अपमान से बढ़कर और क्या होगा कि सब तिलकधारी राजाओं को तिरस्कार करके एक ऐसे मनुष्य की पूजा उन्हीं राजाओं में की जो राजचिह्नों से अत्यन्त हीन था हे युधिष्ठिर! संसार में तुम्हारा यश तो यह होरहाहै कि युधिष्ठिर बड़ा धर्मात्माहै परन्तु अब वह धर्म तुम्हारा कहां गया भला ऐसा कौन धर्मी होगा जो इसकी पूजा करेगा जिसने वृष्णि-वंश में उत्पन्न हो अपने राजाको मारा और जरासन्धको अन्यायसे मरवाया इससे हे युधिष्ठिर! हम जानते हैं कि अब तुम्हारी धर्मात्मता जाती रही और तुम को कृपणता ने घेर लिया है सिवाय इसके जो तपस्वी पांडवों ने भय और कृपणता के कारण से ऐसा भी किया तो हे कृष्ण! तुमको यह समझना उचित था कि मैं इस पूजा के योग्य हूं या नहीं तुमने पूजाके अयोग्य होनेपर इन कृपण पांडवों से अपनी पूजा क्यों कराई है तुम्हारा ऐसा अयोग्य करना ऐसा है जैसे निर्जन स्थानमें हविष्को कुत्तेका निडर होकर खाना इससे तुम यह न समझना कि राजाओं का अपमान हुआ है पांडवों ने पूजा के बहाने से यह तुम्हारी हँसी की है यह तुम्हारी पूजा होना इस प्रकार से है जैसे नपुंसक का विवाह करना अंधेको कुछ दिखाना और जो राजा नहीं है उसको राजा के समान पूजना हम युधिष्ठिर भीष्म और तुम तीनों को देख चुके ये तीनों जैसे हैं तैसे हैं यह कहकर शिशुपाल उस सभा में से उठकर अपने पक्षके राजाओं सहित बाहर चलागया २१। ३१॥

इति श्रीभाषामहाभारते सभापर्वणि सप्तत्रिंशोऽध्यायः ३७॥

अरतीसवां अध्याय।

राजा युधिष्ठिर का शिशुपाल को समझाना और भीष्मजी का श्रीकृष्णजीकी महिमा कहकर उनका पूजन होना योग्य बताना॥

वैशम्पायनजी बोले हे राजा जनमेजय! शिशुपाल के उठकर जाने पर राजा युधिष्ठिर उसके पास गया और सांत्वना के साथ कहनेलगा कि हे शिशुपाल! तुमको ऐसा कहना उचित नहीं है परुष वचन बोलना बड़ा अधर्म और

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

निरर्थकहै तुम कहतेहो कि भीष्मजी धर्म नहीं जानते हैं यह बात कदापि नहीं है तुमको ऐसा अयोग्य अपमान करना उचित नहीं है देखो तुमसे बड़े २ वृद्ध राजालोग यहां बैठेहुये हैं जैसे वे श्रीकृष्णजी की पूजा में तर्क नहीं करते हैं ऐसेही तुमभी मत करो भीष्मजी श्रीकृष्णजी को तत्वपूर्वक जानते हैं तुम उनको उस प्रकार से नहीं समझते हो इतने में भीष्मजी बोले कि हे युधिष्ठिर! यह सांत्वना वचन कहने के योग्य नहीं है क्योंकि यह श्रीकृष्णकी पूजाको जो लोकके वृद्धतम हैं नहीं देख सकताहै जो क्षत्रिय युद्धमें क्षत्रियको जीतकर छोड़ देताहै वह हारेहुये का गुरु अर्थात् बड़ा होता है सो मैं इन सब बैठेहुये राजाओं मेंसे एकको भी ऐसा नहीं देखताहूं जिसको कृष्ण न जीतसकें ये श्रीकृष्ण अच्युतहैं इनका पूजन करना केवल हमको ही उचित नहीं है किन्तु ये तीनों लोकके पूज्यहैं श्रीकृष्णजीने बहुतसे श्रेष्ठ क्षत्रियोंको रणमें जीता है और सम्पूर्ण जगत् इन्हींके शरीरमें व्याप्त है ११।१० इसी कारण से हमने इनको सबसे श्रेष्ठ जानकर इनकी पूजा की है तुमको ऐसा कहना तुम्हारी बुद्धिके योग्य नहीं है हमने बहुत से ज्ञानियोंका सत्संग किया है और उन सबसे श्रीकृष्णजी के बालपनसे लेकर आज तकके चरित्र सुने हैं उन चरित्रोंको बहुतसे श्रेष्ठ पुरुष मानते हैं सो जैसा तुम कहते हो हमने उनकी पूजा किसी कामना के कारण से नहीं की है और यह पूजा किसी प्रकार सम्बन्ध अथवा उपकारको समझकर नहीं हुई है केवल श्रीकृष्णजीके यश, शूरता और जयको मानकर हमने की है इन सब राजाओंमें कोई ऐसा बालक भी नहीं है जिसकी परीक्षा हमने न करली हो सो हमने इनको पूज्यतम वृद्धोंको छोड़कर इनके गुणोंके कारण से माना है ब्राह्मणों में अधिक ज्ञानी क्षत्रियोंमें अधिक बलवान् वैश्योंमें अधिक धनी और शूद्रों में अधिक आयु रखनेवाला पूजन योग्य होताहै सो श्रीकृष्णजीको हमने दो गुणों के कारण से पूज्य मानाहै एक तो श्रीकृष्णजी सबसे बलवान् हैं दूसरे सब वेद और वेदके अंगोंको जानते हैं इनसे बड़ा मनुष्य संसारमें कौन है इनमें धन, चतुराई, शास्त्र, शूरता, लज्जा, कीर्ति, उत्तम बुद्धि, नम्रता, लक्ष्मी, धृति, पुष्टि और तुष्टि आदि सब गुण मौजूदहैं ११।२० इससे इनको चाहे तुम गुरु समझो चाहे आचार्य और पिता ये सब प्रकारसे पूजनके योग्य हैं तुमको इनके पूजन में शंका करना उचित नहीं है ऋत्विज्, गुरु, स्नातक, ब्रह्मचारी, राजा और मित्र सबकी सम्भावना इनमें होसकती है

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इसीसे इनकी पूजा प्रथम की गई है ये श्रीकृष्ण जगत्की उत्पत्ति का कारण, अविनाशी, चराचरमय, अव्यय, सनातन और सब से परे हैं बुद्धि, मन, वायु, तेज, जल, आकाश और पृथ्वी और चारों प्रकारके जीव और सूर्य, चन्द्रमा, नक्षत्र, ग्रह, दिशा और विदिशा सब इन्हींकी शक्ति से स्थित है वेदों में अग्निहोत्र, वेदके छन्दों में गायत्री, मनुष्यों में राजा, नदियोंमें समुद्र, नक्षत्रों में चन्द्रमा, तेजोंमें सूर्य, पर्वतों में मेरु, पक्षियोंमें गरुड़ और जगत्की ऊँची नीची और तिरछी गति और देवताओं और लोकों में श्रीकृष्णजी प्रधान हैं सो यह शिशुपाल अपने अज्ञानके कारण से ऐसा कहता है यह नहीं जानता है कि श्रीकृष्ण सर्वव्यापी हैं २१। ३० इसकी बुद्धिकी गति धर्मके देखने में उतनी नहीं है जितनी बुद्धिमान् और धर्मको जाननेवालेकी होती है भला महात्मा राजाओंमें चाहे बालक हो चाहे वृद्ध ऐसा कौन होगा जो श्रीकृष्ण के पूजन को योग्य न बतावेगा अथवा उनकी पूजा न करेगा और जो यह शिशुपाल उनकी पूजा होनेको खोटा काम बताता है तो इस पापका जो फलहै वह इसको शीघ्र मिलेगा ३१। ३३॥

इति श्रीभाषामहाभारते सभापर्वणि अष्टत्रिंशोऽध्यायः ३८॥

उन्तालीसवां अध्याय।

श्रीकृष्णजीकी पूजा होनेपर सब राजाओंका क्रोध करके यज्ञ विध्वंस करने की सलाह करना और युद्धके लिये उपस्थित होना॥

वैशम्पायनजी बोले हे राजा जनमेजय! भीष्मजी उक्त रीतिसे कहकर जब चुपके होरहे तब सहदेव क्रोध करके बोला कि हमसे पूज्यमान कृष्णकी पूजा को जो राजा न सह सकैगा उसके शिरपर हम लात रक्खेंगे जिस किसीको हमारी इस बातका उत्तर देना हो सो देवै हम उसीको मारडालेंगे हमने श्री कृष्णजी की पूजा पितर, गुरु, आचार्य और सब प्रकारसे बड़ा जानकर की है यह सुनकर सब मानी और बलवान् राजा चुपके बैठरहे किसी ने कुछ उत्तर नहीं दिया तब सहदेवके ऊपर आकाशसे फूलों की वर्षा हुई और साधु २ कह कर आकाशवाणी अन्तरिक्षमें गूंजनेलगी उस समय नारदजी ने जो संशय के दूरकर्ता और सब लोकों के जाननेवाले थे कहा कि जो मनुष्य कमलनयन कृष्णकी पूजा नहीं करता है वह मृतक के समान है और उससे बात करना योग्य नहीं है वैशंपायनजी बोले हे राजा जनमेजय! इसके पीछे सहदेवने

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सब पूजायोग्य ब्राह्मण और क्षत्रियों की पूजा करके उस कर्मको समाप्त किया उस समय श्रीकृष्णजी की पूजा होना देखकर राजा शिशुपाल क्रोधसे लाल २ आँखें करके राजाओं से कहने लगा कि कहो तुम सब लोगों की क्या इच्छा है मेरी समझमें हम सब मिलकर पांडव और यादवों से युद्ध करें और इनके यज्ञको विध्वंस करदें यह सुनकर सब राजा क्रोधसे विवर्ण होगये और शिशुपालके पास जाकर कहने लगे कि ऐसा करो जिसमें युधिष्ठिरका अभिषेक और कृष्णकी पूजा न होने पावै ऐसा निश्चय करके वह सब क्रोधसे मूर्च्छित हो गये और उनका शरीर ऐसा दीखने लगा जैसे मांससे हटाये हुये सिंह गर्जते हैं उस समय श्रीकृष्णजी को यह हाल मालूम हुआ कि समुद्र के समान सब राजाओं के समूह सेना सहित युद्ध करने के लिये उपस्थित हुये हैं १।१८॥

इति श्रीभाषामहाभारते सभापर्वणि एकोनचत्वारिंशोऽध्यायः ३९॥

चालीसवां अध्याय।

युधिष्ठिर का सब राजाओं को युद्धके लिये तय्यार देखकर भीष्मजी से उपाय पूछना और भीष्मजीका श्रीकृष्णकी महिमा कहकर युधिष्ठिरका भय दूर करना॥

वैशंपायनजी बोले हे राजा जनमेजय! राजा युधिष्ठिर उस क्रोध भरे हुये सागररूपी राजमंडल को युद्धके लिये प्रतिज्ञा करते हुये देखकर अपने कुलके वृद्धपितामह भीष्मजीसे इस प्रकारसे पूछने लगा मानो इन्द्र बृहस्पतिसे पूछता है कि हमको अब इस समय क्या करना उचित है जिससे हमारा यज्ञ विध्वंस न हो और सब प्रजाका हित होवे १।४ यह सुन भीष्मजी बोले कि तुम किसी बात का भय मत करो कहीं कुत्तेभी सिंहको मार सकते हैं मैंने तुम्हारे कल्याण की राह पहलेही से विचार रक्खी है ये सब श्वानरूपी राजा जभीतक भूक रहे हैं जबतक सिंहरूपी कृष्ण सोरहे हैं जिस समय श्रीकृष्ण जागेंगे उस समय ये सब राजा कुत्तों की तरह यहां से भागेंगे मेरी समझ में शिशुपाल इन सब राजाओं को यमलोक को पहुँचाना चाहता है और श्रीकृष्णजी इस शिशुपाल के शरीर के तेज को खींचना चाहते हैं शिशुपाल सहित इन सब राजाओं की बुद्धि का नाश होना और कुछ नहीं है केवल इन श्रीकृष्णजीकी वैष्णवी माया है जिस २ मनुष्य को ये अपने में लय करना चाहते हैं उसकी बुद्धि ऐसेही होजाती है जैसी शिशुपालकी बुद्धि इस समय होगई है सो हे युधिष्ठिर!

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तुम भय मत करो इस संसार में चारों प्रकार के जीवों के उत्पन्न और नाशकर्ता श्रीकृष्णजी हैं वैशंपायनजी बोले हे राजा जनमेजय ! राजा शिशुपाल भीष्मजी की उक्त बातको सुनकर रूखेपनसे कहने लगा ५। १५॥

इति श्रीभाषामहाभारते सभापर्वणि चत्वारिंशोऽध्यायः ४०॥

एकतालीसवां अध्याय।

राजा शिशुपाल का भीष्मजी के मतिकी निंदा करना॥

शिशुपाल बोला कि हे भीष्म ! तुम कुल के नाश करनेवाले हो तुमको वृद्ध होकर राजालोगों को बहुत से डर दिखानेवाली बातें कहते हुये लज्जा नहीं आती है तुम तो कौरवों में सब से उत्तम हो इस तीसरेपन में तुमको ऐसी अधर्म की बात कहना उचित नहीं है तुमको आगे करके इस कौरवकुल की गति ऐसी है जैसे नाव नावके पीछे और अंधा अंधेके पीछे चले अर्थात् तुम अज्ञानी हो और तुम्हारे पीछे चलनेवाले सब कौरव भी ऐसे ही हैं तुमने इस श्रीकृष्ण के पूतनावध आदि जो कर्म कहे उनमें क्या ऐसा है जिससे यह ब्रह्म समझा जावै बड़े दुःखकी बात है कि कृष्णके गुणों को ब्रह्मके समान कहने पर तुम्हारी जीभके सौ टुकड़े नहीं होते हैं १। ५ जिस कृष्ण की निंदा बालकों को भी करना उचित है उसकी प्रशंसा तुम वृद्ध और ज्ञानी हो कर कहते हो इसने जो बालकपन में बकासुर, केशी और वृषासुर दैत्यों को जो युद्ध करना नहीं जानते थे मारा है उसमें क्या आश्चर्य की बात है और जो इसने अपने पावँसे शकटको जो जड़ पदार्थ है गिरा दिया उसमें क्या अद्भुत बात इसने की इसने जो बाल्मीकि के समान पहाड़ को उठाकर सात दिनतक अपने हाथ पर धारण किया है उसमें तुमको क्या विचित्र बात जान पड़ती है और जो इसने बालकपन में गोवर्धन पहाड़ पर बहुतसा अन्न खाया है उसमें कौनसी बात आश्चर्यकी है ६। १० जिसके अन्न को खाकर यह बलवान् हुआ था उसी कंस को इसने मार डाला इस निंदित कर्म के करने में भी कोई अद्भुत बात नहीं है हे भीष्म ! तुम अधर्मी और अपने कुलमें अधम हो तुमने अभी संतों का मत नहीं सुना है उसको हम कहते हैं कि मनुष्यको स्त्री, गौ, ब्राह्मण, अन्नदाता और जिसके पास रहै इन पांचों पर शस्त्र चलाना उचित नहीं है संतलोग सबको यही शिक्षा करते हैं परन्तु तुम्हारा आचरण हमको इस धर्म के विपरीत दीख पड़ता है तुम कौरवोंमें नीच हो बेर २ कृष्ण

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

को वृद्ध और ज्ञानवृद्ध कहते हो मानों मैं कृष्ण को जानताही नहीं हूं हे भीष्म! यह कृष्ण गौ अर्थात् वृषासुर और स्त्री अर्थात् पूतना का मारनेवाला है इसकी तुमने पूजा की है ऐसे खोटे काम करने पर यह पूजाके योग्य क्योंकर हो सक्ता है तुम्हारी प्रकृति नीच और बुद्धि अशुद्ध है तुम्हारे ही सत्संग से पांडवों की भी बुद्धि पाप करनेवाली होगई है भला जिन पांडवों के तुमसे उपदेशक और कृष्णसे पूज्य होवें वे पांडव सत्पुरुषोंके मार्गसे भ्रष्ट क्योंकर न होवें ११।२० ऐसा कौन ज्ञानी होगा जो अपने को धर्म का अधिकारी जान कर ऐसा काम करै जैसा तुमने धर्मदर्शी होने पर किया है तुम कहते हो कि हम धर्म को जानते हैं और हमारा बहुत कुछ जाना हुआ है तो तुम राजा काशी की अंबा नाम कन्या को जो दूसरे राजा से अपनी प्रीति रखती थी क्यों हरकर ले आये थे विचित्रवीर्य सत्पुरुषों के मार्ग पर चलनेवाला था जिसने उस तुम्हारी लाई कन्या को अंगीकार नहीं किया और तुम्हारे देखते २ उसकी स्त्रियों के दूसरे मनुष्यों से संतान उत्पन्न हुई तुम्हारा धर्म कुछ नहीं है और ब्रह्मचर्य भी तुम्हारा वृथा है क्योंकि इस ब्रह्मचर्य व्रत को तुमने क्लीव और मोह होनेके कारण से धारण कर रक्खा है मुझको तुम में धर्म का लेशमात्र भी होना नहीं दिखाई देता है और तुम्हारे इस प्रकार से धर्म के कहने से जान पड़ता है कि तुमने वृद्धों की सेवा नहीं की है मनुष्य कहते हैं कि यज्ञ करना, दान देना, वेद पढ़ना और ऐसा यज्ञ करना जिस में बहुतसी दक्षिणा खर्च हो पुत्र के होने के सोलहवें भाग की भी बराबर नहीं होते हैं और यह भी उन लोगों का मत है कि बहुत से व्रत और उपवासों के करने का फल संतानहीन मनुष्यों को नहीं मिलताहै सो हमको ऐसा जान पड़ताहै कि अब तुम संतानहीन और वृद्ध होकर अधर्म पर चलने के कारण से हंस की तरह हम सबके हाथों से मारे जाओगे हमने सब इतिहास पहले ज्ञानियों से सुना था तुमसे भी अब उसको कहते हैं २१।३० पहले समय में समुद्र के किनारे पर एक धर्म का उपदेश करनेवाला हंस रहता था वह पक्षियों को तो उपदेश किया करता था परन्तु आप उसके विपरीत चलता था उसके मुख से पक्षी सदैव यह सुना करते थे कि धर्म करो अधर्म मत करो वे पक्षी उसको धर्मके कारण से भक्ष्य और भोजन ला लाकर दिया करते थे एक समय ऐसा हुआ कि वे सब पक्षी अपने अंडोंको उस हंसके पास छोड़ कर चलेगये

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

और चलते फिरते समुद्र में डूबगये तब वह पापी हंस उन पक्षियों के अंडोंको खागया इसी प्रकार से वह हंस जब पक्षी चले जाते या नष्ट होजाते थे उनके अंडों को खालिया करता था जब बहुत अंडे क्षय होने लगे तब उन पक्षियों में से एक ज्ञानी पक्षी को संदेह हुआ और उसने एक दिन छिपकर उस हंसके खोटे कर्मको देखलिया उसने तब वह हाल दूसरे पक्षियों से कहा जब उन्होंने भी उसके मिथ्या चलन को देख लिया तब सबने मिलकर उस हंसको मार डाला इसी प्रकार से हंस की तरह तुम भी सब जातिवालों के हाथ से मारे जाओगे हे भीष्म ! हम तुमसे अब पुराणों को जाननेवाले मनुष्यों के मतको भी कहते हैं ३१।४० वह यह है कि काम और क्रोध आदि से अंतरात्मा के अभिहत होने पर तुमको धर्म की बातें कहना ऐसी हैं जैसे वह हंस मलिन अंतःकरण होने पर धर्म का उपदेश करता था सो हंस की तरह तुम्हारा अंडोंको खा लेने का कर्म अर्थात् धर्मका उपदेश तो करदेना परंतु उसके अनुसार आप न करना तुम्हारे कहने के विपरीतहै ४१ ॥

इति श्रीभाषामहाभारते सभापर्वणि एकचत्वारिंशोऽध्यायः ४१ ॥

बयालीसवां अध्याय।

शिशुपालके रूखे वचनों को सुनकर भीमसेनका क्रोध करना और भीष्मका उसके क्रोधको शांत करना ॥

शिशुपाल बोला कि राजा जरासंधने जो बड़ा पराक्रमी और ज्ञानी था कृष्णसे यही जानकर युद्ध नहीं किया था कि यह दास है उसके पीछे उसने भीमसेन और अर्जुन को साथ लेजाकर जरासंध के मारने को जो कर्म किया उसको कौन अच्छा जानता है जो कृष्ण छलसे ब्राह्मणरूप धरकर जिधर राह न थी उस राहसे न जाते तो कदापि जरासंधके प्रभावको न देखसक्के और यही कारण था कि उसने इस दुरात्मा कृष्ण को पाद्य अर्घ नहीं दिया केवल इस को भीमसेन और अर्जुन के साथ भोजन करने के निमित्तही पूछा था परन्तु इसने वैर के कारण से भोजन करना अंगीकार नहीं किया जो यह कृष्ण जगत् का कर्ता है जैसा तुम अपनी मूर्खता से कहते हो तो इसने छल करके ब्राह्मण स्वरूप क्यों धारण किया अपने स्वरूप से जरासंधके पास क्यों नहीं गया हम को बड़ा आश्चर्य है कि तुमने पांडवों को धर्ममार्ग से हटा दिया है और वे अभीतक उसी को अच्छा जानते हैं परन्तु ऐसा होना भी कुछ बड़ा अद्भुत

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नहीं है क्योंकि उनके शिक्षक तो तुम हो जिनका शरीर वृद्ध और धर्म स्त्रियों के समान है १। ८ वैशम्पायनजी बोले हे राजा जनमेजय! भीमसेन शिशुपालके उक्त रूखे वचनों को सुनकर अत्यन्त क्रोधित होगया कमल के समान उसकी दोनों आंखें लाल २ होगईं और भृकुटी के टेढ़ेहोने से उस के ललाटपर तीन रेखा ऐसी पड़गईं जैसे त्रिकूट पहाड़पर गंगाजी तीन धारा होकर बहती हैं उस समय भीमसेन क्रोधसे अपने दांतों को पीसने लगा और उसका मुख ऐसा सबको दिखाई दिया मानों प्रलयकारक काल है इस प्रकार से भीमसेन क्रोधित होकर शिशुपाल के मारने को दौड़ा परन्तु उसको भीष्म ने जल्दी से इसप्रकार से पकड़ लिया जैसे देवताओं का ईश्वर महासेन को पकड़े और नाना प्रकार की बातें कहकर उसके क्रोधको शान्त किया और उसने भी यद्यपि शिशुपाल के मारनेको उठा था अपने बड़ेकी आज्ञाको इस प्रकार से उल्लंघन नहीं किया जैसे समुद्र अपनी मर्यादा से नहीं हटता है भीमसेन के क्रोधको देखकर शिशुपाल जरा भी न डरा और उसको अति क्रोध से बार बार उछलते हुये देखकर हँसकर कहनेलगा कि हे भीष्म! तुम इसको छोड़दो आने दो अभी सब राजाओं के देखते २ यह मेरे प्रभावसे इस प्रकार से भस्म होजायगा जैसे अग्नि में पतङ्ग जलमरता है यह सुनकर भीष्मजी भीमसेन से कहने लगे ९। २०॥

इति श्रीभाषामहाभारते सभापर्वणि द्विचत्वारिंशोऽध्यायः ४२॥

तैंतालीसवां अध्याय।

भीष्मजीका भीमसेनसे शिशुपालकी उत्पत्ति और श्रीकृष्णजी से वरदान पानेका वृत्तान्त कहना॥

भीष्मजी बोले हे भीमसेन! यह शिशुपाल राजा चंदेरी के वंशमें जब उत्पन्न हुआ था तब इसके चार भुजा और तीन आंखें थीं उत्पन्न होतेही यह गधेकी समान रेंकने और गर्जने लगा यह देखकर इसके मा बाप और भाई बन्धु डर गये और उन्होंने इसे त्याग करने का विचार किया परन्तु उसी समय यह आकाशवाणी हुई कि तुमलोग डरो मत यह राजाही का पुत्र है यह बड़ा बलवान् और श्रीमान् होगा तुम इसका पालन करो इसकी मृत्यु और काल नहीं है इसका मारनेवाला केवल महाकाल है कि वह संसारमें प्रकट होचुका है इसपर इसकी माने हाथ जोड़कर विनय की कि जिसने मेरे इस पुत्रके विषय में उक्त बातें कही हैं वह कृपा करके मुझको यह भी बतावै कि देवता आदि किसके

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हाथसे इसकी मृत्यु होगी यह सुनकर फिर आकाशवाणी हुई कि जिसकी गोद में जाने से इसकी दो भुजा गिर पड़ें और ललाट का तीसरा नेत्र बैठजाय उसी के हाथ से इसकी मृत्यु होगी १।१० इसके पीछे यह खबर देश २ में पहुँची कि राजा चंदेरी के एक पुत्र ऐसा हुआ है जिसके चार भुजा और तीन नेत्र हैं और उसने उत्पन्न होतेही गधे के समान शब्द किया था यह सुन२ कर सब देशोंके सहस्रों राजालोग इसे देखने को आये और इसके बापने उन सब का आदर सत्कार करके इसे प्रत्येक की गोदमें बैठाया परन्तु किसी की गोदमें बैठने से इसकी न भुजा गिरी न नेत्र बैठा इसके पीछे इस वृत्तान्त को सुनकर बलदेवजी और श्रीकृष्णचन्द्रजी अपनी फूफी अर्थात् इसकी माको देखने को आये और विधिपूर्वक अपने फूफा अर्थात् इसके बापको दंडवत् करके बैठ गये उस समय इसकी माने उन दोनों अपने भतीजों का विशेष आदर सत्कार करके श्रीकृष्णजीकी गोदमें इसको बैठा दिया बैठाते ही इसकी दोनों अधिक भुजा गिर पड़ीं और वह नेत्र भी बैठगया तब इसकी माने भयभीत होकर श्रीकृष्णजी से कहा हे श्रीकृष्ण! तुम भयसे डरे हुये मनुष्यों को अभय और आसरा देनेवाले हो मैं भी भयसे दुःखी हूं इससे मुझको जो मैं वर माँगूं सो दो यह सुनकर श्रीकृष्णजी बोले ११।२० कि हे फूफी! तू डरै मत मुझ से तुझको किसी प्रकारका भय नहीं पहुँच सक्ता है जो तू कहै सो वर मैं तुझको दूं जो काम करने के योग्य भी न होगा तो भी मैं करूंगा यह सुनकर इसकी मा ने कहा कि तुम मेरे इस पुत्रके अपराधों को क्षमा करना यही वर मैं तुमसे माँगती हूं तब श्रीकृष्णजी ने कहा कि हे फूफी! अब तू शोच करना छोड़ दे मैं इसके सौ अपराध यदि ऐसे भी होंगे कि जिनके कारण से इसका वध करना उचित समझा जावै क्षमा करूंगा सो हे भीमसेन! यही कारण है कि यह मंदबुद्धि शिशुपाल श्रीकृष्ण के वरदान से गर्वित होकर तुझको युद्ध करने के लिये बुलाता है २१।२५॥

इति श्रीभाषामहाभारते सभापर्वणि त्रिचत्वारिंशोऽध्यायः ४३॥

चवालीसवां अध्याय।

शिशुपालका भीष्मकी और कृष्णकी निंदा करना और शिशुपाल भीष्म और सब राजाओंका आपस में विवाद होना॥

भीष्मजी बोले कि हे भीमसेन! शिशुपाल यह अच्छा नहीं करता है जो

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जगन्नाथ श्रीकृष्णजीकी निंदा करता है और ऐसा कौनसा राजा पृथ्वी पर होगा जो काल के वशमें होकर मेरी निंदा इस प्रकार से करै जैसे यह कुल-कलंक शिशुपाल करता है परंतु कारण इसका यह है कि यह श्रीकृष्णजी का अंश है और श्रीकृष्णजी अपने अंशको अपने में लय करना चाहते हैं और इसी कारण से यह दुर्बुद्धि हम सबकी निंदा निर्भय होकर कर रहा है १।४ वैशंपायनजी बोले हे राजा जनमेजय! शिशुपाल भीष्मजी की उक्त बात को सुनकर सह न सका और अत्यंत क्रोध करके कहने लगा कि हे भीष्म! जिस कृष्णकी स्तुति तुम बंदीजनों की तरह करते हो उसका जो कुछ प्रभाव हो सो मुझ द्वेष करनेवाले पर प्रकट होवै मेरा क्या कर सक्ता है जो तुमको दूसरे की स्तुति ही करना अच्छा लगता है तो तुम इस कृष्ण को छोड़कर जो अन्य राजाओं की स्तुति करो राजा दरद, राजा वाह्लीक जिसके उत्पन्न होनेपर पृथ्वी फटगई थी और राजा कर्ण जो इन्द्रकी समान बलवान् और कुण्डल कवच सहित उत्पन्न हुआ था और जिसने मल्लयुद्ध करके जरासंध को प्रसन्न किया था स्तुति करने के योग्य हैं इनके सिवाय ये दोनों उत्तम और महारथी द्रोणाचार्य तथा अश्वत्थामा कि जो सब संसार को चर और अचर जीवों सहित नाश कर सक्ते हैं और जिनके समान कोई राजा पृथ्वीतल पर बलवान् नहीं है स्तुति क्यों नहीं करते हो राजा दुर्योधन को जिसकी समान इस पृथ्वी पर दूसरा नहीं है राजा जयद्रथको जो अस्त्र शस्त्रोंका परम वेत्ता है और तुमको जो कि पुरुषोंका आचार्य है छोड़कर इस कृष्ण की क्या स्तुति करते हो ५।१६ और कृपाचार्य जो भरतवंशियोंके आचार्य हैं, राजा रुक्म, राजा भीष्मक, राजा दंतवक्र, राजा भगदत्त, राजा यूपकेतु, राजा जयत्सेन, राजा विराट, राजा द्रुपद, शकुनि, राजा बृहद्बल, अवंति देशके राजा बिंदु और अनुबिंदु, राजा पांड्य, राजा श्वेत, राजा उत्तम, राजा वृषसेन, राजा विक्रांत, राजा एकलव्य, कलिंगदेश का राजा, राजा शल्य और २ बहुतसे महाबली और महारथी राजा लोग जो यहां बैठेहुये हैं उनको छोड़कर इस कृष्णकी जो राजा नहीं है क्यों प्रशंसा करते हो हां मेरे पास इसका तो अलबत्ता कुछ उपाय नहीं है कि तुमने धर्मवादी और वृद्धों की शिक्षा नहीं सुनी हमने तुम्हीं से सुना है कि अपनी अथवा पराई निन्दा और स्तुति करना अच्छे मनुष्योंका काम नहीं है फिर यह कृष्ण तो किसी प्रकार से स्तुति करने के योग्य नहीं है और जो तुम

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इसकी प्रशंसा अपने मोह या भक्ति से करते हो उसको कोई अच्छा नहीं कह सक्ता है १७। २५ सब यादव राजा भोजकी प्रजा हैं फिर इस यादव कृष्ण को जो राजा कंसकी गौओंका पालनेवाला है जगत् की उत्पत्तिका कारण कैसे बताते हो तुम्हारी बुद्धि पृथ्वीके बिलमें सोनेवाले भूलिंग पक्षीके समान डामाडोल है कहते कुछ हो और करते कुछ हो यह पक्षी हिमालय पहाड़के पार्श्व में रहताहै और सदैव यह कहा करताहै कि विना विचारे कोई काम मत करो परन्तु आप विना विचारेही साहस करने लगताहै अर्थात् सिंहकी डाढ़में लगेहुये मांसको खानेकी इच्छा करताहै सो हे भीष्म ! जैसे वह पक्षी दूसरोंको तो साहस न करने का उपदेश करता रहता है और आप सिंहकी डाढ़मेंसे भी मांस निकालने का साहस करता है तैसेही तुम्हारे भी वचनहैं तुम अब केवल इन राजाओंकी ही इच्छा से जीतेहुये बैठेहो तुम्हारी बराबर दुष्ट कर्म का करनेवाला इस संसार में कोई नहीं है वैशम्पायनजी बोले हे राजा जनमेजय ! भीष्मजी शिशुपालके उक्त कड़वे वचनों को सुनकर कहनेलगे कि जिन राजाओं की इच्छासे तुम हम को जीताहुआ बतातेहो उन सबको हम तृणवत् समझतेहैं २६। ३४ यह सुनकर सब राजा क्रोधित होगये उनमें से कोई २ तो हँसनेलगे कोई भीष्मकी निन्दा करनेलगे और कोई २ यह कहनेलगे कि यह वृद्ध भीष्म विषयों में लिप्त होरहा है क्षमा करने के योग्य नहीं है इसको हम सब मिलकर पशुकी तरह मारडालें और अग्निमें जला दें यह सुनकर भीष्मजी बोले कि मुझको यहां प्रश्न करने और उत्तर देनेका अंत नहीं दीखताहै इससे तुम सब अब कहना सुनना तो छोड़ दो और जैसा कहतेहो उसीप्रकार सम्मुख आकर मेरा वध अग्निमें जलाकर या पशुकी तरह मारकर करो मैं तुम सबके शिर पर लात रखता हूं और ये श्रीकृष्णचन्द्र हमारे और सब जगत् के पूज्य बैठेहुये हैं जिसका काल निकट आगयाहो वह इन चक्र और गदाधारीको युद्धके लिये बुलावै हम जानते हैं कि जबतक ये श्रीकृष्ण इस शिशुपाल को मारकर इसके तेजको अपने में लय नहीं करेंगे तबतक ये राजालोग नहीं मानेंगे ३५। ४२ ॥

इति श्रीभाषामहाभारते सभापर्वणि चतुश्चत्वारिंशोऽध्यायः ४४ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पैंतालीसवां अध्याय।

श्रीकृष्णजीका शिशुपालको सौ अपराध पूरा होनेपर मारडालना यज्ञका पूरा होना सब राजाओं का अपने २ घर को चलाजाना और सभामें दुर्योधन और शकुनिका रहजाना ॥

वैशम्पायनजी बोले हे राजा जनमेजय ! राजा शिशुपाल भीष्म के उक्त वचनोंको सुनकर कृष्णचन्द्र से लड़नेकी इच्छा से बोला कि हे कृष्ण ! आवो मुझसे युद्ध करो अभी तुमको पांडवों सहित मारता हूं तुम्हारे कारण से ये सब पांडव भी वध करने के योग्यहैं क्योंकि इन्होंने सब राजाओंको छोड़कर राजा न होने पर तुम्हारी पूजा की है मेरी मति में जो मनुष्य तुमसे दास, अराजा, दुष्ट बुद्धि और पूजन के अयोग्य मनुष्यकी पूजा करे वह मारडालने के योग्यहै यह कहकर शिशुपाल गर्जनेलगा और श्रीकृष्णजी उसकी बात को सुनकर सब राजाओं से मृदुताके साथ कहनेलगे कि यह शिशुपाल यद्यपि यादवकुलकी माता से उत्पन्न है परन्तु यादवों से द्वेष रखताहै और हिंसकहै इसने भानजा होने पर हम सबके प्राग्ज्योतिषनगरको चलेजाने पर द्वारकामें आग लगादी और रैवत पहाड़ पर क्रीड़ा करतेहुये भोजराज को यह साथियों सहित मार बांधकर लेगया इसके पीछे यह हमारे पिताका अश्वमेध यज्ञ विध्वंस करने को रक्षकों को मारकर घोड़ा हरकर लेगया और तपस्वी बभ्रु की स्त्री को जो सौवीर देशों को जाती थी अधर्म से हरण किया फिर इसने अपने मामा की पोती भद्रा नाम को जो राजा विशालापुरकी बेटी थी और राजा करूष के पास जाती थी करूष का रूप धरकर हरलिया सो ये बातें तो इसने हमारे पीठ पीछे की थीं और अब आज तुम सब लोगों के सामने जो जो इसने कहा है सो सब तुम लोगोंने सुनाही है अबतक मैंने यह सब कष्ट अपनी फूफी अर्थात् इसकी माके कारण से सहा है परन्तु अब इसका अपराध हमसे क्षमा नहीं होसक्ता है इस दुष्टका अब काल आ पहुँचा है इसने पहले रुक्मिणी से अपना विवाह करना चाहा था परन्तु उसको इसने इस प्रकार से नहीं पाया जैसे शूद्र वेदकी श्रुतियों को नहीं पासक्ताहै १। १५ वैशम्पायनजी बोले कि जब कृष्णचन्द्रने उक्त रीति से बहुतसी बातें कहीं तब सब राजा शिशुपाल की निन्दा करनेलगे और शिशुपाल उसको सुनकर खिलखिलाकर हँसउठा और कहनेलगा कि हे कृष्ण ! तुम मुझको रुक्मिणीका पहिला पति बतलाते हो तुमको ऐसी बात कहते लज्जा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नहीं आती है ऐसी सभा में तुम्हारे सिवाय कौन ऐसा निर्लज्ज होगा जो दूसरे मनुष्यको अपनी स्त्री का पहिला पति बतावे तुम जो फूफी अर्थात् हमारी माका हाल कहतेहो सो हमको उसकी कुछ परवाह नहीं है तुमचाहे क्षमा करो चाहे क्रोध तुम्हारे क्षमा और क्रोध करनेसे मेरा कुछ भला या बुरा नहीं होसक्ताहै यह सुनकर कृष्णचन्द्रने अपनेचक्रको याद किया और उसके हाथमें आनेपर सब राजाओं से पुकारकरकहा कि मैंने इसकी माको यह वरदान दियाथा कि मैं तेरे पुत्रके सौ अपराध तक क्षमाकरूंगा सो अब वह सब अपराध पूरेहोगये अब मैं इसको मारताहूं यह कहकर श्रीकृष्णजीने क्रोध करके चक्रको छोड़दिया और उससे शिशुपाल का शिर कटकर पृथ्वीपर गिरपड़ा १६।२५ तब उस राजाका शरीर इस प्रकार से पृथ्वीपर गिरपड़ा जैसे बिजली के गिरनेसे पहाड़ गिरपड़े और उसके शरीर में से सूर्य के समान चमकता हुआ तेज निकलकर कृष्णचन्द्रको वंदना करके उन्हीं के शरीर में लय होगया यह देखकर सब राजालोग आश्चर्य करनेलगे उससमय आकाशमें से विना बादलके वर्षा होनेलगी बिजली भी पृथ्वी पर गिरी और पृथ्वी कांपनेलगी उससमय बहुतसे राजालोग तो चुपके होकर बैठेहुये कृष्णको देखते रहे बहुतसे क्रोधके कारण से हाथ से हाथ मलनेलगे और बहुत से अपने दांत पीसने लगे उनमें से किसी २ ने कृष्णचन्द्रकी प्रशंसा की किसी २ ने क्रोध किया और कोई कोई मध्यस्थ होगये इसके पीछे महर्षि और महात्मालोग ब्राह्मण और राजाओंसहित श्रीकृष्णजी के पास स्तुति करते हुये गये और उनकी प्रशंसा करनेलगे फिर युधिष्ठिरकी आज्ञासे उसके छोटे भाइयोंने विधिपूर्वक शिशुपाल के शरीर का संस्कार किया और युधिष्ठिरने शिशुपाल के बेटे को सब राजाओं सहित चंदेरीदेशकी गद्दी का राजातिलक दिया २६।३५ इस प्रकारसे युधिष्ठिरका वह यज्ञ जिसका प्रारम्भ सुखपूर्वक हुआथा निर्विघ्न ऋद्धि और धन धान्यसे युक्त समाप्त हुआ श्रीकृष्णजी उस यज्ञकी रक्षा समाप्त होनेतक करतेरहे इसके पीछे युधिष्ठिरके अवभृथ नाम यज्ञ स्नान करनेपर सब राजालोग उसके पास आये और कहनेलगे कि तुमने प्रारब्धसे साम्राज्यपद पाकर अजमीढ़वंशी राजाओं के यशको बढ़ाया तुमने यह बड़ा भारी धर्म कियाहै और हम सबका भी अच्छी तरहसे आदर सत्कार किया अब हम सब अपने २ देशों को जाना चाहते हैं सो आप हमको जानेकी आज्ञा दीजिये यह सुनकर युधिष्ठिरने सब राजाओं की यथायोग्य पूजा की और अपने भाइयों से कहा कि ये

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सब राजालोग हमारी प्रीतिके कारणसे यहां आये थे अब ये सब जाना चाहते हैं सो तुम इनके साथ जाकर अपने राज्यकी सीमातक इनको पहुँचा आओ यह सुनकर वे सब प्रत्येक राजाके साथ अपने राज्यकी सीमातक पहुँचाने को गये धृष्टद्युम्न राजा विराटके साथ अर्जुन राजा द्रुपदके साथ भीष्म और धृतराष्ट्रके साथ भीमसेन सहदेव द्रोणाचार्य और अश्वत्थामा के साथ नकुल राजा सुबल और उसके पुत्रके साथ द्रौपदी और सुभद्राके पुत्र पहाड़ी राजाओं के साथ और क्षत्रिय लोग दूसरे क्षत्रियोंके साथ जाजाकर सबको राज्यकी सीमातक पहुँचा २ आये इसी प्रकारसे सहस्रों ब्राह्मणलोग जो अनेक २ देशों से आये थे चलेगये उनके चलेजानेपर श्रीकृष्णजीने युधिष्ठिर से कहा ३६। ५० कि प्रारब्ध से तुम्हारा राजसूय यज्ञ अब समाप्त हुआ मैं भी अब द्वारकाको जाना चाहता हूं यह सुनकर युधिष्ठिर बोले कि आपकी कृपासे मेरा यज्ञ समाप्त हुआ और आपहीकी कृपा से सब क्षत्रियोंने मेरे वशमें होकर मुझको कर दिया है परन्तु मैं आपको जानेके लिये क्योंकर कहूं आपके विना मुझे आनन्द नहीं रहता है और यह भी मैं जानता हूं कि आपको द्वारकापुरी को भी जाना अवश्यही है यह सुनकर कृष्णचन्द्र प्रसन्नतापूर्वक युधिष्ठिरके साथ २ कुन्ती के पास गये और कहनेलगे कि हे फूफी! तेरे बेटे साम्राज्यपदवीको पाकर सिद्धमनोरथ और धनवान् हुये अब तू प्रसन्न रह और मुझे द्वारका जानेकी आज्ञा दे ५१। ५७ इसी प्रकारसे फिर द्रौपदी और सुभद्रा से मिले उपरांत युधिष्ठिर के साथ महलके बाहर आकर स्नान करके और ब्राह्मणों से स्वस्तिवाचन सुनके दारुकि सारथी के लायेहुये रथपर जिसमें गरुड़ के चिह्नकी ध्वजा लगीहुई थी प्रदक्षिणा करके चढ़े और द्वारकाकी ओर चले युधिष्ठिर आदिक सब भाई उनके साथ २ पैदल हो लिये यह देखकर कृष्णचन्द्र ने अपने रथको रोकलिया और युधिष्ठिरसे कहनेलगे कि तुम सावधान रहकर प्रजाकी रक्षा करते रहना और आपसमें सब भाई प्रीतिपूर्वक इस प्रकारसे रहना जैसे देवता इन्द्रके समीप रहते हैं यह कहकर श्रीकृष्ण और पांडव परस्पर एक दूसरे से पूछ और मिलकर पांडव अपने स्थान को चलेआये और श्रीकृष्णजी द्वारका को चलेगये उनके चलेजाने पर उस युधिष्ठिर की सभामें केवल एक दुर्योधन और सुबलका बेटा शकुनि रहगये ५८। ६७॥

इति श्रीभाषामहाभारते सभापर्वणि पंचचत्वारिंशोऽध्यायः ४५॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

छियालीसवां अध्याय।

व्यासजी का युधिष्ठिरसे उत्पातोंका फल कहकर चला जाना और युधिष्ठिरका शोच करना ॥

वैशम्पायनजी बोले हे राजा जनमेजय ! उस दुर्लभ राजसूय यज्ञके समाप्त होनेपर युधिष्ठिर के पास व्यासजी अपने शिष्यों सहित आये युधिष्ठिर उनको देखकर भाइयों सहित खड़ा होगया और विधिपूर्वक उनकी पूजा करके उन्हें बैठने को सुन्दर आसन दिया व्यासजी उस सुवर्ण के आसन पर बैठगये और युधिष्ठिर आदि को बैठने की आज्ञा दी और युधिष्ठिर से कहनेलगे कि तुमने प्रारब्ध से दुर्लभ साम्राज्यपदवी पाई और तुम्हारे कारण से कौरवों की बढ़ोतरी हुई अब मैं जाना चाहता हूं मुझे जानेकी आज्ञा दो यह सुनकर युधिष्ठिरने व्यासजी को उठकर दंडवत् की और फिर पास बैठकर कहा कि महाराज मुझे बड़ा भारी संदेह होगया है आपके सिवाय मेरे उस संदेहको और कोई दूर नहीं करसक्ताहै मैंने नारदजी से सुनाहै कि तीन उत्पात बड़े भारी होते हैं एक दिव्य अर्थात् वज्रपात आदि, दूसरा अन्तरिक्ष अर्थात् धूमकेतु आदि और तीसरा पार्थिव अर्थात् भूकंप आदि सो ये उत्पात शिशुपालके मारेजानेपर हुये थे उनके होनेका क्या कारण है यह सुनकर व्यासजी बोले १।१० कि इन उत्पातोंका फल यह है कि आज से तेरहवर्ष के बीतनेपर सब क्षत्रियों के कुलका नाश होगा और तुमको कारण बनाकर दुर्योधन के अपराध से सब राजालोग इकट्ठे होकर भीमसेन अर्जुन के बलसे मारे जायँगे और आज रातको तुमको स्वप्न में नीलकंठ शिवजी के दर्शन जो भव, स्थाणु, कपाली, त्रिपुरांतक, उग्र, रुद्र, पशुपति, महादेव, उमापति, शर्व, वृष, शूली, पिनाकी और कृत्यवास आदि नामों से विख्यातहैं नन्दीपर सवार दक्षिणकी ओर देखतेहुये होंगे सो तुम इस बातका कुछ संदेह मत करो क्योंकि इस संसारमें कालका उल्लंघन कोई नहीं करसक्ताहै अब तुम सावधान रहकर पृथ्वी का पालन करो और मुझको जानेकी आज्ञा दो मैं कैलास पर्वत पर जाना चाहता हूं वैशम्पायनजी बोले हे राजा जनमेजय ! व्यासजी उक्त रीति से कहकर शिष्यों सहित कैलास को चलेगये उनके जानेपर युधिष्ठिर शोक और चिंतामें मग्न होकर बार बार गरम गरम श्वास ले लेकर विचारने लगा कि यह भावी अर्थात् होनहार किसी प्रकारसे मनुष्यके उपायसे नहीं रुकसकती है व्यासजी का कहना अवश्य होगा ११।२० ऐसा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

विचारकर युधिष्ठिरने अपने भाइयोंसे कहा कि तुमने भी जो व्यासजीने मुझसे कहाथा सुनाहै मेरे मनमें अब यह आताहै कि मैं अपने प्राण छोड़दूं क्योंकि कालने मुझको क्षत्रियकुलके नाश होनेका हेतु निर्माण किया है मेरा अब जीना व्यर्थ है यह सुनकर अर्जुन बोला कि आप शोच को छोड़कर जो करना उचितहै वह कीजिये क्योंकि शोच करने से बुद्धि जातीरहती है यह सुनकर युधिष्ठिर व्यासजीकी बात को याद करके कहने लगा कि मेरे जीने से अब कोई अर्थ नहीं है इससे आजसे मैं यह प्रतिज्ञा करता हूं कि तेरह वर्षतक कभी अपने भाई या दूसरे राजाओं से कठोर वचन नहीं कहूंगा और अपने स्वजातियों की आज्ञा मानकर उनकी सेवा करूंगा ऐसा करने से हम सबमें आपसमें फूट न होगी फूटही लड़ाईका घरहै जब मैं लड़ाईके पास न जाऊंगा और ऐसे काम करूंगा जो सबको अच्छे मालूमहों तब लोक में कोई मेरी निंदा न करैगा यह सुनकर युधिष्ठिर के सब भाई भी उक्त बात पर बर्ताव करने लगे २१। ३० इसप्रकारसे युधिष्ठिर अपने भाइयोंसहित सम्मत करके मंगल स्नान और देवता तथा पितरों को तृप्त करके प्रसन्नतापूर्वक सब राजाओं को बिदा करके अपने भाई पुरोहित और मंत्रियों सहित अपने नगर के भीतर गया और दुर्योधन तथा शकुनि उसी सभा में निवास करते रहे ३१। ३३॥

इति श्रीभाषामहाभारते सभापर्वणि षट्चत्वारिंशोऽध्यायः ४६॥

सैंतालीसवां अध्याय।

दुर्योधनका पांडवोंकी सभा देखना और धोखेसे कई बार गिर २ पड़ने के कारण से भीमसेन आदिका उसकी हँसी करना और पांडवोंके वैभवको देखकर दुर्योधन को बड़ी डाह होना और सब वृत्तान्त शकुनिसे कहना॥

वैशंपायनजी बोले हे राजा जनमेजय! युधिष्ठिर की सभा में रहने पर दुर्योधन और शकुनि धीरे २ सभाको घूमकर देखने लगे और उन्होंने उसमें ऐसी २ दिव्य चीजें देखीं जिनको उन्होंने पहले कभी हस्तिनापुर में नहीं देखाथा फिर एक स्थान पर स्फटिक के स्थलको देखकर दुर्योधनको यह जान पड़ा कि यहां जल है और ऐसा जानकर वह उस स्थल में कपड़े उतारकर गया और वहां जल न देखकर लज्जित होकर आगे बढ़ा और दूसरी जगह फिर स्थलको जल जानकर स्थलपर गिरपड़ा और आगे बढ़कर एक स्फटिक की बावड़ी को जिसमें स्फटिक के समान कमल लगेहुये थे और जल

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

से भरी थी स्थल समझकर उसमें चलागया और वस्त्रों सहित उसके जल में भीगगया भीमसेन अर्जुन नकुल और सहदेव अपने नौकरोंसहित दुर्योधनकी यह दशा देखकर हँसपड़े यह देखकर दुर्योधन उनकी हँसीको न सहसका और अत्यंत मलिन चित्त होगया युधिष्ठिरकी आज्ञासे दुर्योधनको और सुन्दर वस्त्र पहिरने को दियेगये तब दुर्योधन उन वस्त्रोंको पहिर कर उन हँसनेवालों की ओर न देखकर आगे चला और स्फटिकस्थल को जल जानकर उसके पार जानेकी इच्छा से वस्त्र उठाकर चलने लगा और जल समझकर उसमें कूद पड़ा और स्थलपर जापड़ा यह देखकर सबलोग फिर हँसपड़े तब दुर्योधन फिर लज्जित होकर वहां से आगे चला और एक स्फटिक के द्वारमें जो बन्द था परंतु खुला हुआ दिखाई देता था घुसने लगा और टक्कर लगने के कारण से घूर्मित होगया और आगे चल कर एक ऐसे दरवाजे में घुसने लगा जो खुला हुआ था परन्तु बन्द दिखाई देता था घुसने के समय भ्रम से वह दोनों हाथों से दरवाजा खोलने लगा परन्तु वहां कुछ आधार न होने के कारण से गिरपड़ा और वहां से आगे को गया और फिर एक द्वार को कपाट लगाहुआ देखकर वहां खड़ारहा भ्रमके कारण से खोल न सका इस प्रकार से अनेक स्थलों में भ्रम खा २ कर दुर्योधन राजा युधिष्ठिर से बिदा होकर अप्रसन्न मन हस्तिनापुरको चल दिया और युधिष्ठिर की लक्ष्मी और वैभवको देखकर पाप बुद्धि विचारने लगा और पांडवों को प्रसन्नमन और यह जानकर कि सब राजा पांडवों के वशमें हैं और पांडव पुत्र परिवार और बड़ी लक्ष्मी युक्तहैं विवर्ण होगया और पांडवोंका वैभव तथा लक्ष्मी और सभाको बेर २ विचार २ कर व्याकुल होनेलगा यह देखकर शकुनि उससे बार बार पूछने लगा कि तू उदास क्यों है परन्तु दुर्योधन ने कुछ उत्तर नहीं दिया तब शकुनिने कहा कि मुझसे तो बता कि तेरे इस दुःखका कारण क्याहै और तू श्वास लेलेकर क्यों बिमन होताहै १। २० यह सुनकर दुर्योधन कहनेलगा मैं सब पृथ्वी को अर्जुनके शस्त्रके प्रताप से युधिष्ठिरके वशमें और देवताओं के बीचमें जैसे इन्द्र यज्ञ करै उसी प्रकारसे युधिष्ठिर को राजसूय यज्ञ करते देखकर अप्रसन्न हुआहूं क्रोध और ईर्षा दिन रात मुझको जलातेहैं और उनके कारण से मैं इस प्रकार से सूखता जाताहूं जैसे गरमी में जल दिन २ सूखता चलाजाता है देखो श्री कृष्णने शिशुपाल को मारडाला सब राजा उसको देखते रहे परन्तु किसीने

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पांडवों के भयसे उसका प्रतीकार नहीं किया भला ऐसा कौन होगा जिससे ऐसी बातें सही जायँगी श्रीकृष्णका यह महा अयोग्य कर्म पांडवों के प्रतापसे सिद्ध होगया और सब राजाओं ने पांडवोंको बनियों के समान रत्न ला लाकर भेंट किये ये सब बातें देख २ कर मेरे हृदयमें ऐसा क्रोध व्याप्त हुआहै कि उसके कारण से मेरा शरीर दिन रात जलाकरता है सो हे मामा शकुनि ! अब मैं इस दुःखको सह नहीं सक्ता हूं या तो जलमें डूब मरूंगा या अग्निमें जलमरूंगा नहीं तो विष खाकर सो रहूंगा २१।३० क्योंकि न मैं स्त्री हूं जो पराधीन होकर रहूं न अस्त्रज्ञ हूं जो शत्रुको जीतूं न पुरुष हूं जो शत्रु के अस्त्रोंको सहसकूं और न नपुंसक हूं जो शत्रुकी लक्ष्मी को देखकर ईर्षा न करूं भला ऐसा कौन होगा जो पाण्डवों का ईश्वरत्व धन और यज्ञको देखकर दुःखी न होवे सो मैं अपनी सामर्थ्य ऐसी लक्ष्मी को इकट्ठा करने को न देखकर मरना चाहता हूं युधिष्ठिरकी लक्ष्मी को देखकर मैंने यहही निश्चय करलिया है कि पौरुष अर्थात् उपाय निष्फल है और दैव अर्थात् प्रारब्ध श्रेष्ठ है क्योंकि मैंने पाण्डवों के नाश करने के लिये अनेक प्रकार के उपाय किये परन्तु कोई नहीं चला और उसके बदले में वे ऐसे बढ़गये जैसे जल में कमल बढ़ता है हमलोग दिन २ कम होतेजाते हैं और पाण्डवों की दिनप्रति बढ़ोतरी होती है इससे और क्या समझा जावे सिवाय इसके कि प्रारब्ध पौरुष से प्रबलहै इसके सिवाय पाण्डवों की सभा में रक्षकों ने मेरी हँसी की वह हँसी मुझको दिन रात अग्नि की समान जलाती रहती है सो हे मामा ! अब तुम हमारे पिता धृतराष्ट्र से कहदो कि मैं क्रोध के कारण से अपने प्राण छोड़ना चाहता हूं और तुम मुझको मरने की आज्ञा दो ३१। ३९ ॥

इति श्रीभाषामहाभारते सभापर्वणि सप्तचत्वारिंशोऽध्यायः ४७ ॥

अरतालीसवां अध्याय।

शकुनिका दुर्योधनको युधिष्ठिरपर क्रोध न करने का उपदेश करना और उसके न मानने पर उसे युधिष्ठिर से जुआ खेलने की सलाह देना ॥

दुर्योधनकी उक्त बातको सुनकर शकुनि बोला कि हे दुर्योधन ! तुझको युधिष्ठिर पर क्रोध करना उचित नहीं है क्योंकि पाण्डव केवल अपने भाग्य ही से उत्तम भोग भोगरहे हैं देखो पहले तुमने उनके मारने को अनेक उपाय किये परन्तु कोई उपाय न चला वे अपने प्रारब्ध से जीते रहे और जितने फंदे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तुमने डाले सब में से निकल गये अपने प्रारब्धही से उनको द्रौपदी सी स्त्री द्रुपदसा श्वशुर धृष्टद्युम्न सा साला और कृष्णसे बलवान् सहायक मिले हैं उन के पिता के अंश में जो श्री थी उसी के तेजसे उनकी इतनी बढ़ोतरी हुई है इसमें तुमको रोना क्या है अर्जुन ने अग्निदेवको प्रसन्न किया और उन से गांडीव धनुष् और दो ऐसे तर्कस जिनके बाण कभी कम नहीं होते हैं पाये हैं उसने उनके और अपने बाहुबल के प्रतापसे राजाओं को जीतकर अपने वश में कियाहै तुमको उसे देखकर खेद करना क्योंकर उचित है अर्जुन ने मय दानवको अग्नि में जलने से बचाया था और उस उपकार के बदले में उसने सभा बनाई है कि जिसको किंकर नाम राक्षस उसकी आज्ञासे रक्षा करते हैं और जहां चाहैं तहां लेजासक्तेहैं तुमको उसके विषय में रोना झीखना क्या है तेरी यह बात मिथ्या है कि मेरा कोई सहायक नहींहै ये सब तेरे भाई तेरी आज्ञा के प्रतिकूल नहीं हैं १।१० इनके सिवाय द्रोणाचार्य, अश्वत्थामा, कृपाचार्य, कर्ण, राजा सोमदत्त और अपने भाइयों सहित मैं तेरी सहायता करने को मौजूद हूं इन सबको साथ लेकर तू सम्पूर्ण पृथ्वी को जीतसक्ता है यह सुनकर दुर्योधन बोला कि जो तुम्हारी सलाह हो तो मेरी यह इच्छा है कि मैं इन सब उक्त सहायकों को साथ लेकर पांडवों को विजय करूं क्योंकि इनको जीतलेने पर सब पृथ्वी अशेष राजा और संपूर्ण धनाढ्यलोग आप से आप मेरे वश में होजायँगे यह सुनकर शकुनि ने उत्तर दिया कि जिस समय श्रीकृष्ण, अर्जुन, भीमसेन, युधिष्ठिर, नकुल, सहदेव, राजा द्रुपद और द्रुपदके धृष्टद्युम्न आदि पुत्र युद्ध करने को आवेंगे उस समय उनको तेरी तो क्या सामर्थ्य है देवता भी नहीं जीतसकेंगे क्योंकि ये सबके सब बड़े धनुर्धारी और अस्त्रज्ञहैं परंतु युधिष्ठिर को सहज में ज़ीतने का उपाय मैं जानता हूं उसको सुनो और उसीके अनुसार करो यह सुनकर दुर्योधन बोला कि हे मामा! जो ऐसा कोई उपाय निकल आवै कि हमारी सेना और सुहृदों में से कोई न मरे और पाण्डव हमारे अधीन होजायँ तो क्याही बात है आप ऐसे उपायको मुझ से अवश्य कहिये शकुनि बोला कि युधिष्ठिर को जुआ खेलनेका बड़ा व्यसन अर्थात् शौक है उसको जुआ खेलना तो आता नहीं है परंतु जो कोई उसको जुआ खेलने को बुलाता है उससे वह अवश्य खेलता है और खेल से निवृत्त नहीं होता है और मैं जुआ खेलना बहुत अच्छी तरह से जानता हूं इस खेलका

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जाननेवाला मेरी बराबर तीनों लोक में नहीं है इससे तुम युधिष्ठिर को जुआ खेलने को धृतराष्ट्रसे कहकर बुलवाओ उनकी आज्ञासे मैं युधिष्ठिरसे जुआ खेलकर तेरे लिये उसका सब राज्य और लक्ष्मी जीत लूंगा ११। २२ यह सुनकर दुर्योधन बोला कि आपही इस बातको हमारे पिता धृतराष्ट्र से कहिये मेरी सामर्थ्य कहने की नहीं है २३॥

इति श्रीभाषामहाभारते सभापर्वणि अष्टचत्वारिंशोऽध्यायः ४८॥

उञ्चासवां अध्याय।

दुर्योधन का सन्ताप करना और शकुनि से सलाह करके पाण्डवों की लक्ष्मी को छलके पांसों से जीतने के लिये युधिष्ठिर को बुलवाना॥

वैशम्पायनजी बोले हे राजा जनमेजय! शकुनि युधिष्ठिरके राजसूय यज्ञ से लौटकर दुर्योधनकी प्रीति के कारण से उक्त अध्याय में कहीहुई रीति से दुर्योधन से सलाह करके राजा धृतराष्ट्र के समीप जो अन्धा और ज्ञानी था गया और कहने लगा कि महाराज दुर्योधन अत्यन्त दुर्बल और पीला पड़गया है न जाने उसको क्या चिंता है और किस शत्रु के प्रकट होने के कारण से वह ऐसा दुःखी है आपका वह ज्येष्ठ पुत्र है आप भी उसके मनकी चिंता को नहीं पूछते हैं यह सुनकर धृतराष्ट्रने दुर्योधन को बुलाकर कहा कि हे पुत्र! तू अत्यन्त दुःखी है इसका कारण क्या है जो मेरे आगे कहने योग्य हो तो मुझसे भी कह आज मुझको शकुनि से मालूम हुआहै कि तू बहुत दुर्बल और पीला पड़गया है परन्तु मुझे ऐसी कोई बात नहीं देख पड़ती जिसके कारण से मैं तेरे दुःखका अनुमान करूं क्योंकि तेरे पास बड़ाभारी ऐश्वर्य है और सब भाई तेरे आज्ञाकारी हैं इसके सिवाय पहरने को उत्तमवस्त्र, खानेको मांसमय अन्न, चढ़ने को सुन्दर २ घोड़े, सोनेको उत्तम शयन, विहार को मनोरमा स्त्रियां, रहने को दिव्य मकान और क्रीड़ा करनेको अनेक क्रीड़ाके स्थान मौजूदहैं और देवताओं की तरहसे तेरी बातकाभी कोई उल्लंघन नहीं करताहै फिर क्या कारणहै जो तू इतना शोच करता है और लटकर पीला पड़गयाहै १। १० यह सुनकर दुर्योधन बोला कि हां मैं कुपुरुषकी भांति भोजन तो करलेताहूं और वस्त्रभी पहर लेताहूं परन्तु मुझको ऐसा भयानक क्रोध होरहा है कि उसके कारण से अब केवल अपने समयकोही पूरा कर रहाहूं संसारमें वही मनुष्य पुरुष कहाजाताहै जो शत्रुके वशमें होनेपर भी शत्रु से निडर होकर अपनी प्रजा को उस भयसे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

छुड़ाने का प्रयत्न करे जो मनुष्य संतोष, दया, गर्व और भय करता है उसको लक्ष्मी प्राप्त नहीं होती है मैं नित्य सुन्दर पदार्थों को भोगता हूं परन्तु युधिष्ठिर के वैभव के डाहसे वह भोग मुझ को गुण नहीं करते हैं और शत्रुओं की वृद्धि और अपने को हीन देख २ कर दिनप्रति दुबला हो होकर पीला पड़ता जाताहूं देखो युधिष्ठिर अट्ठासी सहस्र स्नातक ब्राह्मणोंको पालन करताहै और उन प्रत्येककी सेवाके लिये तीस २ दासी नियत करदी हैं और सोनेके पात्रों में दश सहस्र ब्राह्मण नित्य भोजन किया करते हैं राजा काम्बोज ने युधिष्ठिर के पास कदलीवन के मृगों के चित्र विचित्र साबर बड़े मोलके कम्बल तीनसौ ऊंट और खच्चर भेजे हैं और सब राजाओं ने उसके स्थानपर आ आकर अनेक रत्न भेंट किये हैं ११। २१ मैं ने तो ऐसा धनका आगम आज तक न देखा था न सुना है सो उस बड़े धन को देखकर मेरा चित्त आनन्द रहित रहताहै देखो खेती करनेवाले ब्राह्मण, गौपालक वैश्य और सैकड़ों और मनुष्य उस यज्ञमें तीन खर्ब धन भेंटके लिये देनेको हाथों में सुवर्ण के कलश लियेहुये द्वार पर खड़ेरहे परन्तु इतनी भेंट लाने पर भी भीतर न जाने पाये और वरुण देवता ने सहस्र रुक्मकी कांवर में अमृतरूपी जल से भरा हुआ कांसे का पात्र जो बहुत से रत्नों से भूषित था रखवाकर युधिष्ठिर को भेंट करने के लिये भेज दिया उसमें वह अमृतरूपी जल युधिष्ठिर के लिये इस प्रकारसे भराहुआ था जैसे इन्द्रके लिये सम्पूर्ण ओषधी अमृतरूपी रस धारण किये रहती हैं उन रत्नोंमें से श्रीकृष्णचन्द्र ने श्रेष्ठ शंख लेलिया और उससे वह जल भर २ के युधिष्ठिरका अभिषेक किया उसी वक्त कांवर में पूर्व, पश्चिम और दक्षिण के समुद्रों का जल मँगवाया गया और उत्तर के समुद्रका जलभी जिस को सिवाय देवताओं के और कोई नहीं लासक्ता है उसी कांवरमें युधिष्ठिर के लिये लायागया इन सब बातोंको देख कर मेरे शरीर में शोकरूपी ज्वर हो आया इसके सिवाय अर्जुन उत्तर दिशा को विजय करके बहुतसा धन लाया और यह एक बड़ी अद्भुत बात थी कि उस यज्ञमें एक लक्ष ब्राह्मण परोसने वाले थे और उनकी संख्या शंखध्वनि से मालूम होजाती थी २२। ३१ उन शंखों के शब्दों को सुन २ कर मेरे रोयें खड़े होजाते थे और जैसे निर्मल आकाश तारागणों के निकलने से सुशोभित होजाता है उसी प्रकारसे यज्ञशाला के निकट के स्थान देश २ के राजाओं से शोभित होगये थे और सब

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

के सब राजा भेंट दे देकर ब्राह्मणों को भोजन परोस रहे मेरी समझ में तौ ऐसा वैभव इन्द्र, यम, वरुण और कुबेरका भी नहीं है उसी वैभव को देख २ कर मेरे हृदय में ऐसी आग लग गई कि वह शान्त नहीं होती है यह सुनकर शकुनि कहने लगा कि इस लक्ष्मी की प्राप्ति के लिये एक उपाय तो मैं जानता हूँ कि मुझको जुआ खेलना बहुत अच्छी तरह आता है मेरी बराबर इस काम में तीनों लोक में कोई नहीं है मुझे पाँसों को बनाकर फेंकना उनके अनुसार दांव लगाना और देशकाल के अनुसार चालको चलना बहुत अच्छी तरह से आता है और युधिष्ठिर को जुए का व्यसन अर्थात् शौक़है परन्तु उसे खेलना नहीं आता है जिस समय तुम उसको जुआ खेलने या रण करने को बुलाओगे उसी समय वह चला आवेगा सो तुम उसको बुलवावो मैं छलके पाँसों से उसकी सब लक्ष्मीको खींच लूंगा ३२। ४० यह सुनकर दुर्योधन जल्दीसे धृतराष्ट्र से बोला कि महाराज मामाजी युधिष्ठिर के सब धनको पाँसोंसे जीतही देने कहते हैं आप पांडवों को जुआ खेलने को बुलवाइये यह सुनकर धृतराष्ट्र बोला कि हम अभी कुछ नहीं कहसक्ते हैं पहले हम अपने धर्मदर्शी और बुद्धिमान् मन्त्री विदुर से सलाह करलें तब कुछ कहेंगे क्योंकि विदुरजी दोनों ओर के कल्याण होनेवाली बात करने की सलाह देंगे यह सुनकर दुर्योधन बोला कि जो आप विदुर जी से सलाह लीजियेगा तो वह जुआ खेलने की आपको कभी सलाह न देंगे और आपके निषेध करने पर मैं अपने प्राण छोड़दूंगा मेरे मरने पर आप विदुर जी के साथ अच्छी तरह आनन्द और पृथ्वी का राज्य कीजियेगा वैशम्पायनजी बोले हे राजा जनमेजय! धृतराष्ट्र ने दुर्योधन की उक्त पीड़ायुक्त और नम्र बातको सुनकर उसके दुःख को दूर करने के लिये दूतों और कारीगरों को बुला कर आज्ञा दी कि तुम लोग बहुत जल्दी एक रमणीक सभा जिसमें सहस्र खम्भे और सौ द्वार हों बनाओ और उसे रत्न जटित करके तय्यार होने पर हम से खबर करो यह आज्ञा देकर धृतराष्ट्रने दूत भेजकर विदुरजीको बुलवाया ४१। ५० क्योंकि विदुरजीसे विना सलाह लिये वह कोई काम नहीं करता था और यद्यपि जुआ खेलने के दोषों को आप अच्छी तरह जानता था परन्तु पुत्र का स्नेह उसकी बुद्धिपर प्रबल होगया था विदुरजी उस कलह और विनाश के मूलको सुनकर धृतराष्ट्र के पास गये और धृतराष्ट्र को दंडवत् करके कहने लगे कि

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आपको जुआ खिलाने का निश्चय मेरा प्रिय नहीं है आपको वह बात करना उचित है जिससे पुत्रोंमें आपसमें फूट न होवे धृतराष्ट्र बोला कि दैव कृपा करेगा तो पुत्रोंमें फूट न होगी परन्तु शुभ या अशुभ हित या अनहित कैसा ही हो हमको जुआ खिलाना दैवके योग से आवश्यक है सो तुम किसी बातकी चिन्ता मत करो हमारे तुम्हारे और भीष्म तथा द्रोणाचार्य के बैठनेपर कोई अनीति दैवकी रची हुई भी न होने पावेगी अब तुम जल्दी चलनेवाले घोड़ों को रथमें जोत कर इन्द्रप्रस्थ को चलेजाओ और युधिष्ठिर को लिवालाओ वहां उन लोगों से इस मंत्रका प्रकाश मत करना जिस दैवकी प्रेरणा से मेरे हृदय में यह बात समाई है वही जो कुछ चाहेगा सो ही होगा यह सुनकर विदुरजी चिंता करने लगे और भीष्मजी के पास गये ५१। ६०॥

इति श्रीभाषामहाभारते सभापर्वणि एकोनपंचाशत्तमोऽध्यायः ४९॥

पचासवां अध्याय।

राजा धृतराष्ट्रका दुर्योधनसे दुःखका कारण पूछना और दुर्योधनका युधिष्ठिरके वैभव और भीमसेन आदिकी हँसी से दुःख पानेका वृत्तान्त कहना॥

उक्त कथाको सुनकर जनमेजय पूछनेलगा कि हे वैशम्पायनजी! वह भाई बंधोंका नाश करनेवाला जुआ जिसमें मेरे पुरुषा पांडवोंने अत्यन्त दुःख पाया था कैसे हुआ था उस समय सभामें कौन २ राजालोग थे और उनमेंसे किस २ ने जुआ खेलना अंगीकार और किसने निषेध किया था मैं इस जुएके सम्पूर्ण वृत्तान्त को विस्तारपूर्वक सुना चाहता हूं मेरी समझ में यह जुआ ही पृथ्वीके नाश होने का मूल था १। ३ यह सुनकर वैशम्पायनजी बोले कि हम इस कथा को विस्तार सहित कहते हैं सुनो विदुरजीके चलेजाने पर धृतराष्ट्र यह जानकर कि जुआ खेलने में विदुरका सम्मत नहीं है दुर्योधनसे एकान्त में कहनेलगा कि हे पुत्र! तू जुआ मत खेले विदुरजी इस कर्मको अच्छा नहीं बताते हैं वह बड़े बुद्धिमान् हैं और हमारे अहितकी बात कभी न कहेंगे विदुर को वह सब शास्त्र अच्छी तरह आता है जिसमें बृहस्पतिजीने इन्द्रको उपदेश किया है इससे मैं विदुरके कहनेको अपना परमहित मानता हूं तुझे भी उसके प्रतिकूल करना उचित नहीं है ४। ९ विदुरजी सब शास्त्रों के मतको जानने के कारणसे बड़े बुद्धिमान् और कौरवोंमें श्रेष्ठ हैं उसी प्रकारसे उद्धव भी अपनी बुद्धिके कारण से वृष्णिवंशियों में पूजित रहता है और सब उसकी सलाह के

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अनुसार काम करते हैं मुझे जुआ खेलने में सिवाय वैरके और कुछ नहीं दीखता है इससे तू इस कर्मकी इच्छाको अब छोड़दे माता और पिताको पुत्र के लिये जो जो काम करना कहे हैं वह सब हम करचुके हैं अर्थात् इस लोक और परलोक की कामनाओं को देनेवाले सब शास्त्र तुझे पढ़ाये गये और बालकपन से घर में बड़े लाड़से रक्खा गया और अपने सब भाइयोंमें बड़ा होनेके कारण से राज्य भी तुझको मिला और उत्तम वस्त्र पहिरनेको और उत्तम भोजन खाने को और संसार में ऐसे अलभ्य पदार्थ जिनका मिलना दूसरेको दुर्लभ है तेरे लिये भोगने को मौजूद हैं अब तुझे शोच करना निरर्थक है अब तो तुझे चाहिये कि राज्य पाकर प्रसन्नता से रहै और अपने राज्य के बढ़ाने का प्रयत्न करै और जैसे इन्द्र स्वर्गमें रहकर शासन करता है उसीप्रकार से तू भी अपने राज्य पर शासन करै ऐसी अवस्था में तेरे हृदय में इस दुःख की मूलके जमने का क्या कारण है १०। १६ यह सुनकर दुर्योधन बोला कि आपका कहना सत्य है मेरे लिये भोजन वस्त्र आदि सुंदर २ भोग मौजूद हैं परन्तु जो पुरुष दूसरे की लक्ष्मी को देखकर सहमता है वह अधम गिना जाता है इससे मैं अपनी साधारण लक्ष्मी के सामने युधिष्ठिरके परम वैभव को देखकर अत्यन्त दुःख पाता हूं कि हाय युधिष्ठिर ने सब पृथ्वी को अपने वश में कर लिया है और मैं पत्थरकी तरह बैठा हुआ देख रहा हूं युधिष्ठिर की सभा में नीपु, चित्रक, कौंकुर, कारस्कट और लोहजंघ नाम राजा दासों की तरह टहल करते हैं और हिमालय और समुद्र और अनूप देशके राजा लोग अनेक २ रत्न ले लेकर द्वार पर आते थे और हटा दिये जाते थे युधिष्ठिर ने मुझे ज्येष्ठ और श्रेष्ठ जानकर भेंट लेने के कामपर नियुक्त किया था सो मैं असंख्य रत्न लेते २ थक गया परन्तु उनका पार नहीं पाया अन्त को थककर जब मैं खड़ा होरहा तब राजालोग जो दूर २ से रत्न लाये थे प्रतीक्षा करने लगे १७। २४ इस धनका तो डाह मुझे होई रहा था कि उसमें दानव की बनाई हुई सभा में स्फटिक की बनी हुई नलिनी को जो पानी से भरी हुई दीखती थी देखने लगा मैंने वहां पानी समझकर अपने वस्त्र ऊंचे को उठा लिये परन्तु वहां जल न था मेरी उस भ्रान्ति को देखकर भीमसेन हँसने लगा उस समय मेरा चित्त एक तो अपने को रत्न सहित और शत्रु की बड़ी लक्ष्मी को देखने से व्याकुल होही रहा था दूसरे भीमसेनकी हँसीको देखकर और हृदय जलनेलगा मैंने भीमसेन

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

के मारने का भी विचार किया परन्तु अपने को असमर्थ देखकर और यह जानकर कि कहीं मेरी भी गति शिशुपाल की सी न हो मैं चुपका हो रहा इसके पीछे उसी सभा में मैं एक बावली के पास जिसमें कमल लगे हुये थे गया उसे देखकर मुझको यह भ्रांति हुई कि यहां जल नहीं है स्थल है और मैं उसमें गिरपड़ा और मेरे सब कपड़े भीगगये इस बात को देखकर अर्जुन और श्रीकृष्ण ठट्ठा मारकर हँसपड़े और द्रौपदी भी अपने साथ की स्त्रियों सहित हँसी उस हँसी को देखकर मैं परम दुःखी होगया उसी समय युधिष्ठिरकी आज्ञा से नौकरों ने मुझे सूखे वस्त्र लाकर पहिरनेको दिये उनको लेकर मैं और भी पीड़ावान् होगया इसके पीछे मैं एक स्थानके भीतर घुसनेलगा उस स्थान में कोई द्वार न था परन्तु ऐसा जान पड़ता था कि द्वारहै द्वार न होने के कारण से घुसतेमें मेरे माथे में स्फटिक की शिलाकी ठोकर लगी मैं उससे घायल होगया इस बात को नकुल और सहदेव देखकर दौड़े और मुझे पकड़कर सहदेव आश्चर्यसे कहनेलगा कि हे राजा! द्वार इधर होकर है इधरसे चलो उसी समय भीमसेनने मुझे यह कहकर पुकारा हे राजा! हे धृतराष्ट्र के पुत्र! और खिलखिलाके हँसके बोला कि द्वार इधर है इसके सिवाय मैंने उस सभामें वे रत्न देखे जिनके नामभी नहीं सुने थे सो हे पिता! इन सब कारणों से मैं अत्यन्त दुःखी होरहा हूं २५। ३६॥

इति श्रीभाषामहाभारते सभापर्वणि पञ्चाशत्तमोऽध्यायः ५०॥

इक्यावनवां अध्याय।

दुर्योधन का धृतराष्ट्र से युधिष्ठिर के यज्ञमें अनेक देशोंसे आये हुये धनका वृत्तांत कहना॥

दुर्योधन बोले हे पिता! अब मैं आपसे पांडवों के धनका हाल कहता हूं कि कहां कहां से और कौन २ लाया था यद्यपि मुझको यह अच्छी तरह मालूम नहीं है कि किस २ देशसे कितना २ धन आया था राजा काम्बोजने ये चीजें राजा युधिष्ठिर को भेंट की थीं, बिडाल और मेषके रोमसे बुनेहुये वस्त्र जिनपर सुनहरी काम होरहा था मृगचर्म, तीनसौ घोड़े जो तीतरकी समान विचित्र थे और रंग जिनका तोतेकी नाकके समान था और तीनसौ खच्चर जो पीलू, छोंकर और इंगुद वृक्षों के पत्तोंको खानेके कारणसे पुष्ट होरहे थे और मैंने यह देखा कि युधिष्ठिर के द्वारपर खेती करनेवाले ब्राह्मण और बहुतसे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

शूद्र जो दास करनेके योग्य थे तीन वर्षके मालके धनको युधिष्ठिरको भेंट देने के लिये खड़ेरहे परन्तु उनको भीतर जानेकी आज्ञा नहीं मिली और दूसरे किसान और गौ पालनेवाले ब्राह्मण सुनहरी कमंडलों में घृत आदि लियेहुये आये परन्तु भीतर वे भी नहीं जाने पाये सब भेंटको लिये हुये बाहरही खड़ेरहे और मरुकच्छ देश के रहनेवालों ने कर्पासिक देशकी रहनेवाली एक लक्ष दासी जो श्याम वर्ण सूक्ष्मअंग अर्थात् पतली देह बड़े २ बाल और सोने के आभरणों से भूषित थीं और राकव नाम मृगों के चरसे जो ब्राह्मणों से लेकर शूद्रों तकके कामके थे और कंधार देश के घोड़े भेंट किये १।१० और समुद्र के निष्कुट और पार बसनेवाले मनुष्य जो उन धान्योंको खाकर रहते हैं जो नदीके जल अथवा वर्षा में स्वतः ही उत्पन्न होते हैं अपने साथ बैराम, पारद, आभीर और कितव देशों के मनुष्यों को लियेहुये नाना प्रकार के रत्न, भेड़, बकरी, सुवर्ण, खच्चर, ऊंट, मधु और अनेक २ प्रकार के कम्बलों को ले लेकर भेंट देनेको आये और द्वारपर रोंके हुये खड़ेरहे इनके सिवाय प्राग्ज्योतिषका राजा भगदत्त जो म्लेच्छों का अधिपति और महारथीहै यवनों को साथ लिये हुये आजानेय जातिके बड़े शीघ्र चलनेवाले घोड़े आदि अनेक प्रकारकी भेंटें ले ले कर आया परन्तु द्वारपर रोंक दिया गया और पीछे से हीरा और पद्मराग मणियों से जड़े हुये वस्त्र और शुद्ध हाथीदांतकी मूठ लगी हुई तलवारें भेंट देकर भीतर प्रवेश करने पाया उस समय मैंने उस द्वारपर औष्णीक, अंतिवास, रोमक, पुरुषादक और एकपाद नाम मनुष्यों को जिनमें किसीके दो और किसीके तीन आँखें थीं और किसी २ की आँखें माथेमें थीं देखा था बहुतसे राजा लोग अनेक प्रकार की भेंट और दश सहस्र खच्चर जो अनेक देशों में उत्पन्न होनेके कारण से अनेक रंगके और सिखाये हुये विख्यात थे लेकर आये और जब उन्होंने वह सब और बहुत सा सोना चांदी युधिष्ठिर को भेंट करदिया तब भीतर सभामें जाने पाये इसी प्रकार से एकपाद नाम मनुष्यों ने अमूल्य सुवर्ण बहुतसे सुंदर घोड़े जिनका रंग तोते की नाक और बीरबहूटी के समान और चाल मनके वेगके समान थी भेंट दिये ११।२३ और चीन, शक, ओड्र, बर्बर, बार्षणेय, हारहूण, कृष्ण, हैमवत, नीप और अनूप देशों के मनुष्य अनेक प्रकार के घोड़े और दश सहस्र बड़े २ खच्चर जिनकी गर्दन काली रंग सुंदर सिखाये हुये पुष्ट और सौकोस

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

चलनेवाले थे भेंट देनेको लेकर आये और सभाके द्वारपर रोंकेजाने के कारण से खड़ेरहे और कंबूतीर के रहनेवाले राकब नाम मृगचर्म, रेशमी दुशाले, उत्तर देशके बनेहुये अनेक प्रकार के रेशमी गुच्छे लगे हुये चित्र विचित्र ऐसे चिकने वस्त्र जिनमें सूतकी बुनावट मालूम नहीं पड़ती थी, भेड़ों के रोम के बनेहुये कम्बल, सावर, तीक्ष्ण धारवाली बड़ी २ तलवारें, दुधारा खड्ग, शक्ति, परश्वध, पश्चिमदेश के बनेहुये फरसे अनेक प्रकार के रस और बहुत से रत्न ले ले कर युधिष्ठिर के भेंट देनेको आये परन्तु द्वारपर रोंक दिये गये और वहीं खड़ेरहे और शक, तुषार, कंक, रोमश और सींग रखनेवाले अनेक देशोंके मनुष्य बड़ी २ दूर जानेवाले हाथी अर्बुद घोड़े और सुवर्ण आदि अनेक चीजें लेकर वहां आये परन्तु भीतर जाने की उन लोगों को भी आज्ञा न मिली द्वारही पर खड़े रहे २४। ३१ और पूर्व देश के राजा लोग मणि और सुवर्ण से भूषित हाथीदांत के आसन रथ आदि शयन और विचित्र कवच अनेक प्रकार के शस्त्र रथ जो सुवर्ण से जटित अच्छे सिखाये हुये घोड़ों से युक्त और मृगचर्म से मढ़े हुये और चित्र विचित्र झूलें अनेक प्रकार के रत्न, नाराच बाण, अर्द्ध नाराच बाण और नाना प्रकार के शस्त्र युधिष्ठिरको भेंट करने पर भीतर घुसने पाये थे ३२। ३५॥

इति श्रीभाषामहाभारते सभापर्वणि एकपंचाशत्तमोऽध्यायः ५१॥

बावनवां अध्याय।

दुर्योधनका धृतराष्ट्र से उन राजाओंका वृत्तांत कहना जिन्होंने युधिष्ठिर को यज्ञ में कर ला लाकर दिया था॥

दुर्योधन बोला कि उक्त लोगों के सिवाय और जिन २ राजाओंने युधिष्ठिर को यज्ञ में धन ला लाकर दिया उनका भी वृत्तांत मैं कहता हूं खस, एकासन, ह्यर्ह, प्रदर, दीर्घवेणु, पारद, कुलिंद, तंगण और परतंगण नाम पहाड़ी देशों के राजा लोग जो मेरु और मन्दर पर्वतों के बीच में शैलोदा नदी के तटपर कीचक और वेणु नाम वृक्षों की छाया में बसते हैं नम्रतापूर्वक युधिष्ठिर को भेंट करने के लिये एक द्रोण पिपीलकजाति का सुवर्ण और काले तथा लाल रंगके चमर और शुक्ल आदि मणि जिनका प्रकाश चन्द्रमा के समान था और हिमालय पहाड़ के पुष्पों के मधु और कैलास पर्वत के उत्तर ओर की बड़ी बल करनेवाली ओषधियां और अन्य बहुत प्रकार की चीजें

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ले लेकर आये और रोंके जाने के कारण से सब पदार्थ लिये हुये द्वारपर खड़े रहे १।७ और हिमालय पहाड़ के परार्द्ध और उदयाचल का रूप देश समुद्र और लौहित्य पर्वतपर रहनेवाले राजा लोग जो फल और मूल खाते चमड़े के वस्त्र पहिनते हैं और क्रूर शस्त्रधारी तथा क्रूरकर्मा कहलाते हैं उन को भी मैंने देखा कि चन्दन, अगरु, काला अगरु आदि काष्ठों के भार और चर्म, रत्न, सुवर्ण अनेक सुगन्ध देनेवाले पदार्थ दश सहस्र दासियां दूर २ के मृग पक्षी और अनेक पहाड़ी पदार्थों को लिये हुये युधिष्ठिर के द्वारपर खड़े हुये थे और कैरात, दर्द, दर्व, शूर, यमक, औदुंबर, दुर्विभाग, पारद, वाह्लीक, काश्मीर, कुमार, घोरक, हंसकायन, शिवि, त्रिगर्त्त, औधेष्ठ, मद्र, कैकय, अंबष्ट, कौंकुर, तार्क्ष्य, वस्त्रप, पल्हव, वशाती, मौलेय, क्षुद्रक, मालव, पौंड्रक, कुकुर, शक, अंग, वंग, पुंड्र, शाणवति और गय आदि देशों के कुलीन और शस्त्रधारी क्षत्रियों ने सैकड़ों प्रकार के धन ला लाकर युधिष्ठिरको भेंट किये ८।१७ और कलिङ्ग, मगध, ताम्रलिप्त, पुंड्रक, दौवालिक, सागरिक, पत्तोर्ण, शैवव, कर्ण और प्रावर्ण आदि देशों के राजा लोग युधिष्ठिर के द्वारपर आकर खड़े रहे युधिष्ठिर ने उन सबको एक २ करके द्वारपालकों के हाथोंसे बुलवाया और वे लोग एक २ सहस्र हाथी जिनके बड़े २ दांत थे और सुनहरी डोरियों और कमल के रंगकीसी झूलों से शोभित थे भेंट दे देकर सभा के भीतर गये ये हाथी काम्यक सरके समीपी देश के थे और उन पर कवच पड़े हुये थे १८।२१ इनके सिवाय और भी बहुत से देश देशांतरों से आये हुये राजाओं ने युधिष्ठिर को भेंटें दीं और चित्ररथ नाम गन्धर्वों के राजाने चार सहस्र ऐसे घोड़े जो वायु की समान चलते थे दिये और तुंबुरु नाम गन्धर्व ने सौ घोड़े जिनका रंग आम्रके पत्तोंके सदृश था और प्रत्येक घोड़े के गले में एक २ सोने का हार पड़ा हुआ था युधिष्ठिर को भेंट किये और राजा कृतिने शूकर देशके कईसौ हाथी निवेदन किये बिटस और मत्स्य देशके राजाओंने सहस्र २ मतवाले हाथी जिनके गले में सोने की माला पड़ीहुई थीं देकर युधिष्ठिर को प्रसन्न किया और पांशु देश के वसुदान नाम राजा ने छब्बीस हाथी और कांचन मालाधारी दो सहस्र घोड़े जो जवान बलवान् और शीघ्रगामी थे युधिष्ठिर की भेंट किये उस यज्ञ में राजा द्रुपद ने चार सहस्र दासी दश सहस्र दास जिनके स्त्रियांभी थीं और कई सौ हाथी और हाथियों सहित छब्बीस रथ

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

युधिष्ठिरको दिये और कहा कि पाण्डवों के यज्ञके लिये मैं अपना सब राज्य देता हूं और अर्जुनका मान रखनेके लिये श्रीकृष्णचन्द्रने भी चार सहस्र हाथी दिये ये दोनों एक दूसरे की आत्माहैं और आपसमें प्राणों से अधिक प्रीति रखते हैं श्रीकृष्णचन्द्र अर्जुन के लिये स्वर्ग भी छोड़सक्ते हैं और अर्जुन भी उनके लिये अपने प्राण देने को तय्यार हैं २२। ३३ मलयागिरि और दर्दुर पर रहनेवाले क्षत्रियों ने सुगन्धित चन्दन के रसोंसे भरेहुये सुवर्ण के कलश, प्रकाशयुक्त मणि अगरु और चन्दन के भार रत्न सुवर्ण और महीन २ वस्त्र युधिष्ठिर को भेंट किये और चोल व पांड्य देश के मनुष्य द्वारपर भी न पहुँचने पाये और सिंहल देश के क्षत्रियों ने समुद्रमें उत्पन्न होनेवाली चीजें वैडूर्यमणि, मोती, सैकड़ों झूलैं, मणि और सुन्दर वस्त्र पहिनेहुये दासियां लाकर भेंट कीं और ब्राह्मण, वैश्य और शूद्रलोग भी बहुत से प्रीति और बहुत से मान के कारणसे वहां भेंट ले ले कर आये और सब म्लेच्छ सब वर्ण और नाना देशों के नाना जातिके मनुष्य उस यज्ञ में आये कि जिनके कारण से वह युधिष्ठिर का यज्ञस्थान स्वर्ग के तुल्य होगया उन सबको और राजा लोगों की लाई हुई भेंट को देख कर मेरे मन में प्राण छोड़ देने की इच्छा होगई मैं आपसे युधिष्ठिर का वैभव कहां तक कहूं एक छोटी सी बात है कि उसके यहां तीन पद्म और दश सहस्र तो केवल हाथी और घोड़ों पर चढ़ने वाले दास हैं कि जिनको युधिष्ठिर कच्चा और पक्का दोनों प्रकार का भोजन देता है और एक अर्बुद रथ और अनगिनती प्यादे हैं उनके भोजनका प्रबन्ध इस प्रकार से है कि तुले हुये सीधे और पक्के भोजन और एक स्थान पर इकट्ठा किया हुआ अन्न तय्यार रहता है और बांटने के समय पुण्याह शब्द किया जाता है ३४। ४४ मैंने युधिष्ठिर के घर में किसी वर्ण के किसी आदमी को ऐसा नहीं देखा जिसने भोजन और पान न किये हों अथवा जो संस्कृत और अलंकृत न होवें और अट्ठासी सहस्र स्नातक गृहस्थ ब्राह्मणों को युधिष्ठिर नित्य भोजन देता है और उनकी सेवाको प्रत्येक के लिये तीस ३ दासी नियत कर रक्खी हैं वे लोग भोजन करके नित्य युधिष्ठिर को शत्रुनाश होनेका आशीर्वाद देते हैं और दशसहस्र यतीलोग जो ऊपर को वीर्य रखते हैं युधिष्ठिरके घरमें नित्यप्रति सुवर्ण के पात्रों में भोजन करते हैं और द्रौपदी इन सब लोगोंके भोजन करने और न करनेकी खबर रखती है और जबतक ये

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सब नहीं खालेते तबतक आप भोजन नहीं करती है यज्ञमें ऐसा कोई राजा न था जिसने युधिष्ठिर को कर न दिया हो हां एक राजा द्रुपदने सम्बन्ध और कृष्णने मित्रता के कारण से तो अलबत्ता कर नहीं दिया ४५। ५०॥

इति श्रीभाषामहाभारते सभापर्वणि द्विपंचाशत्तमोऽध्यायः ५२॥

तिरपनवां अध्याय।

दुर्योधन का धृतराष्ट्र से सब राजाओं को युधिष्ठिरकी सेवा करते हुये देखकर संताप होने का हाल वर्णन करना॥

दुर्योधन बोला हे पिता! बहुत से श्रेष्ठ, सत्यप्रतिज्ञ, महाव्रत, विद्यावान्, वेदांत के वक्ता, अवभृथ नाम यज्ञ स्नानके करनेवाले, धृतिमान्, लज्जावान्, धर्मात्मा, यशस्वी और मूर्द्धाभिषिक्त राजालोग युधिष्ठिर की सेवा किया करते हैं मैंने उन लोगों को दक्षिणा में देने के लिये कांशी की दोहनी और सहस्रों गौ और अभिषेक के लिये छोटे बड़े पात्र लाते और युधिष्ठिर को भेंट देते हुये देखा है १। ४ राजा वाह्लीकने जांबूनद के सुवर्ण से भूषित रथ लाकर दिया और राजा सुदक्षिण काम्बोज देश के श्वेत घोड़े उस रथ में जोतने को लाया और राजा सुनीथ अनुकर्ष नाम रथको लेकर आया और चंदेरी देश के राजा ने आप अपने हाथ में ध्वजा लाकर दी ५। ६ राजा दाक्षिणात्यने शस्त्र और मगध देश के राजाने माला और पगड़ी, राजा वसुदान ने हाथी, राजा मत्स्यने धनसे भरे हुये छकड़े, राजा एकलव्यने जूते, राजा अवन्तीने अभिषेक के लिये अनेक प्रकार के जल, राजा चेकितान ने निषंग, राजा काशी ने धनुष् और राजा शलने एक तलवार जिसकी मूठ बहुत सुन्दर थी और सुनहरे भूषण अपने हाथों से ला लाकर राजा युधिष्ठिर को दिये ७। ९ और व्यासजी समेत धौम्य ऋषिने युधिष्ठिर को अभिषेक कराया उस समय उसके पास देवल, असित, परशुरामजी और २ बड़े २ तपस्वी ऋषि इस प्रकार से खड़े रहे मानों महेन्द्रके पास सप्तऋषि खड़े हुये हैं अभिषेक के पीछे सात्यकि ने युधिष्ठिरके ऊपर छत्र लगाया अर्जुन और भीमसेन पंखा हांकने नकुल और सहदेव चमर ढरने और जिस वारुणि नाम शंखको पूर्व कल्पमें प्रजापति ने इन्द्रको दिया था और अब समुद्र ने युधिष्ठिर के पास भेजा था उससे श्री कृष्णचन्द्रने विश्वकर्मा की बनाई हुई कांवर में से जल ले लेकर युधिष्ठिर को यज्ञ स्नान कराया मैं यह सब देखकर कल्मष के कारण से मूर्च्छित होगया

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इसके पीछे जो सबने मिलकर मंगलकारी शंखध्वनि की उसको सुनते ही मेरे रोम खड़े होगये १०।१८ उस समय जो राजा तेजहीन थे मूर्च्छित हो २ कर गिरपड़े और धृष्टद्युम्न, सब पांडव, सात्यकि और श्रीकृष्णजी मेरी और उन गिरेहुये राजाओं की गति को देखकर हँसने लगे इसके पीछे अर्जुन ने पांचसौ बैल जिनके सींग सुवर्ण से मढ़े हुये थे ब्राह्मणों को दिये सो हे पिता ! राजा रन्तिदेव, नाभाग, यौवनाश्व, मनु, पृथु, वैन्य, भगीरथ, ययाति और नहुष भी युधिष्ठिरकी बराबरी नहीं करसक्ते हैं और की तो किनमें गिनती है उसकी लक्ष्मी और यह राजसूय यज्ञ राजा हरिश्चन्द्र की समान है हे तात ! इसको देखकर मुझे अपना जीना व्यर्थ जान पड़ता है विधाताने यह द्वापरयुग अंधे की तरह होकर बनाया है इसी कारणसे विपरीत बातें होती हैं बड़े तो घटते जाते हैं और छोटों की बढ़ोतरी है सो हे पिता ! यही कारण है कि मेरा चित्त स्वस्थ नहीं रहताहै और मैं शोच ही शोच में पीला पड़गया हूं १९।२६॥

इति श्रीभाषामहाभारते सभापर्वणि त्रिपंचाशत्तमोऽध्यायः ५३॥

चौवनवां अध्याय।

राजा धृतराष्ट्रका दुर्योधन को पांडवों से द्वेष न करनेको उपदेश करना॥

दुर्योधन की उक्त बातोंको सुनकर राजा धृतराष्ट्र बोला कि हे पुत्र ! निस्संदेह तू ज्येष्ठ और बड़ाई के योग्यहै परन्तु तू पांडवोंसे द्वेष मत करे द्वेष करनेवाले को मरने के समान दुःख होता है युधिष्ठिर निष्कपट है तुझसे कुछ द्वेष नहीं रखता है बल और धनमें तेरी समानहै तुझको उससे वैर करना उचित नहीं है तेरा पराक्रम और कुल उससे कुछ अधिक नहीं है फिर क्यों तू मोहके वशमें होकर भाईकी लक्ष्मीको लेना चाहताहै इससे तू शांत हो शोच को छोड़दे जो तेरी इच्छा यज्ञ करनेकी होवे तो तूभी अपने ऋत्विजों को बुलाकर सप्ततंतु यज्ञ कर तेरे पास भी राजा लोग धन रत्न और आभरणों को लेकर आवेंगे परन्तु पराये धनके लेने की इच्छा करना नीचों का काम है इस संसारमें वृद्धि उसी मनुष्य की होती है जो धर्म से रहता है और अपनेही धन में संतोष करता है परायें धन की इच्छा न करना अपने काम का उद्योग करना और शरणागत को पालना ये तीनों वैभव के लक्षण हैं १।७ जो मनुष्य चतुर, विनीत, नित्य प्रसन्न और आपत्ति में दुःख को नहीं मानता है

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उसका सदैव कल्याण होता है सो हे पुत्र! इन पांडवों को जो तेरी बांह के समान हैं छेदन करके अपने स्वार्थ के लिये मित्रवर्गों से द्रोह उत्पन्न मत करै पांडव तेरे भाई हैं उनके पास जो धनहै सो तेराही है उनसे तुझको द्रोह करना उचित नहीं है हमारे और पांडवों के पिता और पितामह एकही थे हम में उनमें कुछ भेद नहीं है इससे तुझको उचित है कि अपने चित्तको सावधान करके मनमानता दान दे मनमानते भोग भोग और जैसी स्त्रियों से इच्छा हो वैसी स्त्रियों से क्रीड़ा कर ८। ११ ॥

इति श्रीभाषामहाभारते सभापर्वणि चतुःपंचाशत्तमोऽध्यायः ५४ ॥

पचपनवां अध्याय।

दुर्योधनका धृतराष्ट्रसे अनेक नीतिके कारण कहकर यह कहना कि हमको पाण्डवों की लक्ष्मी लेना ही उचितहै नहीं तो मरना अच्छा है ॥

धृतराष्ट्रकी उक्त बातोंको सुनकर दुर्योधन बोला कि जिस मनुष्यमें अपनी कुछ बुद्धि नहीं होती है केवल सुनी हुई बातोंको जानता है वह शास्त्रके अर्थ को इस प्रकारसे नहीं जान सकता है जैसे चमचा किसी भोजन के पदार्थ के स्वादको नहीं पहचानता है जैसे एक नावमें बँधी हुई दूसरी नाव स्वतंत्र नहीं होती है इसी प्रकार से आप मुझको सब पूर्वापर जाननेपर भी मोहित बतलाते हैं न जाने आप अपने स्वार्थ को क्यों नहीं पहचानते हैं मुझे बड़ा आश्चर्य है कि आप भी मुझसे द्वेष करते हैं १। २ आप अपने पुत्रोंको मरे की समान जानते हैं और अपने स्वार्थ के काममें भविष्य अर्थात् होनहार को आरोपण कर देते हैं जिस मनुष्य का आगे चलनेवाला ही दूसरे की शिक्षा के अनुसार चलता है वह भला क्योंकर न भूलै और उसे क्योंकर ठीक मार्ग मिलै सो आप पंडित, बुद्धिमान्, वृद्धसेवी और जितेन्द्रिय होकर हमलोगों को भुलाते हैं बृहस्पतिजी ने राजाओं की वृत्ति को संसार की वृत्ति से भिन्न कहा है इससे सावधान राजा को अपने कार्य का विचार सदैव करना उचित है सो क्षत्रियों की वृत्ति केवल विजय करना है चाहे उसमें धर्म हो या अधर्म इससे विजय के विषय में और बातें शोचनी ठीक नहीं हैं जो राजा शत्रुकी लक्ष्मी को हरने का विचार करता है वह सब दिशाओं को इस प्रकार से चलायमान कर देता है जैसे चाबुक सवार घोड़े को करता है ३। ८ वही उपाय राजा का शस्त्र है चाहे गुप्त हो चाहे प्रकट जिससे शत्रु को बाधा पहुँचै कुछ युद्ध करके

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लेना ही शास्त्रसे लेना नहीं कहाता है और शत्रु मित्रका कुछ लेख किसी जगह नहीं है शत्रु वही है जो अपनेको दुःख देवे लक्ष्मी का मूल असंतोष है और अपने को बढ़ानेका यत्न करना यही श्रेष्ठ नीति है सो ऐश्वर्य और धन के विषय में ममता करना बुद्धिमानों का काम नहीं है क्योंकि इन दोनों को एक दूसरे से बल करके लेता चला आया है राजाओंका यही परमधर्म है देखो इन्द्रने नमुचि दैत्यसे मित्रता करके उसके शिरको काट डाला था आजतक शत्रु के जीतने को वही सनातन वृत्ति चली आती है शत्रु से विरोध न करने वाले राजा और देशोंमें न घूमनेवाले संन्यासीको पृथ्वी इस प्रकारसे ग्रस लेती है जैसे बिल में रहनेवाले जीवों को सर्प ग्रस लेता है ६।१४ कुछ शत्रुता जातिपर नहीं है जिसकी जीविका अपने तुल्य होय वही अपना वैरी है जो राजा मोहसे अपने शत्रुके पक्षकी बढ़ोतरी चाहा करता है उसकी जड़ इस प्रकारसे कटती जाती है जैसे रोग के बढ़ने से दिन २ शरीर क्षय होता चला जाता है और जो शत्रु छोटासा भी है परन्तु पराक्रममें बढ़ गया है तो वह भी इस प्रकारसे जड़ काट देता है जैसे जड़ में लगी हुई दीमक और पासके वृक्षों को भी खाजाती है इस कारणसे हे पिता! आपको भी शत्रुकी लक्ष्मीकी वृद्धि चाहना उचित नहीं है जातिवालोंमें वृद्धि उसी मनुष्यकी होती है जो अपने अर्थ की बढ़ोतरी इस प्रकारसे किया करता है जैसे जन्म होने के पीछे मनुष्य का शरीर दिन दिन बढ़ता है शीघ्र वृद्धि करनेवाला संसारमें पराक्रम ही है सो पाण्डवोंकी लक्ष्मीको देखकर मैं अत्यन्त दुःखी हूं या तो उस सब लक्ष्मी को लिये ही लेता हूं नहीं तो युद्ध में मरकर सुखपूर्वक सोऊंगा भला आप भी तो बताइये कि मेरे इस प्रकारके जीने से क्या अर्थ निकलता है कि पाण्डव तो दिनप्रति बढ़ते जाते हैं और मेरी दिन दिन घटोतरी होती है १५।२१॥

इति श्रीभाषामहाभारते सभापर्वणि पञ्चपञ्चाशत्तमोऽध्यायः ५५॥

छप्पनवां अध्याय।

धृतराष्ट्रका दुर्योधनके कहने के अनुसार जुआ खेलने को सभा बनवाना और विदुरजी को भेजकर पांडवोंको बुलवाना॥

दुर्योधनकी उक्त बातों को सुनकर शकुनि बोला कि जिस युधिष्ठिर की लक्ष्मी को देखकर तुम इतने दुःखी होरहे हो उसको मैं जुयेमें जीतकर तुमको देसक्ता हूं तुम युधिष्ठिर को बुलवाओ मैं उसको जुआरूपी युद्धमें विना सेना

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

के जीत सक्ता हूं क्योंकि वह खेलना नहीं जानता है और मैं पाँसा फेंकने में बड़ा विद्वान् हूं इस जुआरूपी युद्ध में तुम मेरे पाँसों को बाण, दाउँ लगानेको धनुष् और पाँसों के फेंकने को रथ समझो यह सुनकर दुर्योधन बोला कि हे पिता ! हमारे मामा पाण्डवों की लक्ष्मीको पाँसों से जीत लेने को कहते ही हैं आप पाण्डवों को जुआ खेलने को बुलवाइये यह सुनकर धृतराष्ट्र बोला कि पहले हम अपने बुद्धिमान् भाई विदुर से सलाह करलें तब कुछ आज्ञा देंगे दुर्योधन बोला कि विदुरजी जैसा पाण्डवों को चाहते हैं वैसा मुझको नहीं चाहते हैं इस कारण से वह जुआ कराने की कभी सलाह न देंगे किसी मनुष्य को कोई काम दूसरे के आश्रित होकर करना उचित नहीं है क्योंकि दो मनुष्यों की एकसी बुद्धि कभी नहीं होती है १।८ जो मनुष्य निर्भय रहकर पालन करता है वह सदैव पीड़ा पाता है जैसे वर्षा में चटाई भीज जाने से गल जाती है मनुष्य को उचित है कि जब तक सामर्थ्य हो तब तक अपने कल्याण का उपाय करै यह सुनकर धृतराष्ट्र बोला कि हमको बलवानों के साथ विग्रह करना अच्छा नहीं दीखता है तू अनर्थको अर्थ मानकर कलहके बीज बुआना चाहताहै कि जिसमें आगे तीक्ष्ण तलवारें और बाण उत्पन्न होवें ९।१२ यह सुनकर दुर्योधन बोला कि जूआ खेलने में नाश और युद्ध होने की कोई बात नहीं है नल आदि पुराने मनुष्योंने भी जूआ खेला था इससे अब आप शकुनि की बातको अंगीकार कीजिये और सभाके बनने की आज्ञा दीजिये जूआ खेलना सुखका द्वारहै जो खेलता है उसको बड़ा सुख होता है इससे हमको पांडवोंके साथ जूआ खेलना योग्य है यह सुनकर धृतराष्ट्र बोला कि जो कुछ तू कहता है हमको उसमें से कुछ अच्छा नहीं मालूम होता है अब तेरी इच्छा में आवे सो तू कर आगे तुझे हमारा समझाना याद आवेगा क्योंकि यह बात कदापि कल्याणकारी और धर्मके अनुकूल नहीं है हम जानते हैं कि जो विदुरजीने कहा था कि इस दुर्योधन के कारण से सब कुलका नाश होगा वही अब मेरे सामने आवेगा वैशंपायनजी बोले हे राजा जनमेजय ! राजा धृतराष्ट्र ने उक्त प्रकार से कहकर और दैव को अमिट जानकर दुर्योधन की सलाह के अनुसार मनुष्यों को चिल्लाकर आज्ञा दी कि बहुत जल्दी हमारे लिये एक सभा ऐसी तय्यार करो जो एक कोस लम्बी और एक कोस चौड़ी हो और उसमें सहस्र खम्भे और सौ द्वार होवें

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बाहर का दरवाजा उस सभा का स्फटिकमणिका बनाया जावे और सब जगह वैडूर्यमणि जड़ीजावै यह आज्ञा पाकर सहस्रों कारीगरोंने जो बड़े बुद्धिमान् और चतुर थे थोड़े ही काल में वह सभा बनाकर तय्यार करदी और अनेक प्रकार के रत्नों से उसे जटित करके बड़ी मनोहर करदी और उसमें सुन्दर २ सुवर्ण के आसन बिछवा दिये गये जब उस सभा के बनचुकने का हाल राजा धृतराष्ट्र से कहागया तब राजा धृतराष्ट्र ने विदुरजी को बुलाकर आज्ञा दी कि तुम इन्द्रप्रस्थ जाकर पांडवों को मेरी आज्ञा कहकर लिवा लाओ पांडवों से कहदेना कि तुमको सभा देखने को बुलाया है जो चित्र विचित्र आसन और रत्नों से युक्त है उस सभा में तुम सब भाई मिलकर मित्रता का जूआ खेलना १३। २२॥

इति श्रीभाषामहाभारते सभापर्वणि षट्पञ्चाशत्तमोऽध्यायः ५६॥

सत्तावनवां अध्याय।

विदुरका राजा धृतराष्ट्र से जुआ का विरोध करना॥

वैशम्पायनजी बोले हे राजा जनमेजय! राजा धृतराष्ट्र अपने पुत्र दुर्योधन के मतको जानकर और भाग्य को अटल समझकर यह करने को तत्पर हुआ किन्तु विद्वानों में श्रेष्ठ विदुरजी अपने भाई धृतराष्ट्र की इस अन्यायरूपी आज्ञा से प्रसन्न नहीं हुये और कहने लगे कि हे राजा! मैं तुम्हारी इस आज्ञा को अच्छा नहीं समझता हूं, ऐसा मत करो, मैं कुल नाश से डरता हूं क्योंकि जुए में आपके पुत्रों से अवश्य कलह होने की आशंका है १। ३ धृतराष्ट्र बोला कि हे विदुर यदि भाग्य सीधा है तो कलह मुझको दुःख नहीं दे सक्ता है क्योंकि यह संपूर्ण संसार भाग्यही के अनुसार ब्रह्मा से रचा जाताहै स्वतन्त्र नहीं है इसलिये हे विदुर! वहां जाकर मेरी आज्ञा से दुःसह तेज वाले कुन्ती के पुत्र युधिष्ठिर को जल्दी यहां बुलालाओ ४। ५॥

इति श्रीभाषामहाभारते सभापर्वणि सप्तपञ्चाशत्तमोऽध्यायः ५७॥

अट्ठावनवां अध्याय।

विदुरजीका धृतराष्ट्रकी आज्ञा से इन्द्रप्रस्थ जाकर पांडवोंको लाना और पांडवों का हस्तिनापुर में आकर सबसे मिलकर वास करना॥

वैशम्पायनजी बोले हे राजा जनमेजय! राजा धृतराष्ट्र से आज्ञा पाकर विदुरजी शीघ्र चलनेवाले रथमें सवार होकर पांडवों के पास गये और ब्राह्मण

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आदि वर्णों से पूजित होकर नगर में होते हुये युधिष्ठिर के महलों में जो कुबेर के भवनों के सदृश बनेहुये थे गये युधिष्ठिर ने विदुरजीकी यथायोग्य पूजा की और आदर सहित बैठाकर धृतराष्ट्र की क्षेम कुशल पूछने लगा कि महाराज आपका मन कुछ उदास जान पड़ता है कहिये आप हमारी कुशल के लिये आये हैं या कुछ और प्रयोजन है और यह भी कहिये कि धृतराष्ट्र के पुत्र धृतराष्ट्र की आज्ञा में चलते हैं या नहीं और प्रजा उनके वश में है या नहीं यह सुनकर विदुरजी बोले कि राजा धृतराष्ट्र अपने पुत्र सहित कुशल हैं और पुत्र के गुणों से विनीत प्रसन्न और शोकरहित हैं उसने तुम्हारी सब की क्षेम कुशल पूछकर यह कहला भेजा है कि तुम्हारे भाइयों ने भी एक सभा तुम्हारी सभा के सदृश बनवाई है उसको तुम सब भाई आकर देखो और भाई २ मिलकर मित्रता का जुआ खेलो यहां सब कौरवकुल के मनुष्य इकट्ठे हैं और तुम्हें देखने की अभिलाषा रखते हैं सो हे राजा युधिष्ठिर ! तुम वहां पहुँचने पर उन कपटी खिलाड़ियों को जिनको राजा धृतराष्ट्र ने जुआ खेलने को नियत किया है देखोगे १। ६ यह सुनकर युधिष्ठिर बोले कि जुआ खेलने में हमको कल्याण दिखाई नहीं देताहै ज्ञानवान् मनुष्य जान बूझ कर जुआ कभी नहीं खेलते हैं परन्तु हम सब तो आपकी आज्ञा के अनुसार चलनेवाले हैं आप कहिये कि आपकी समझ में यह काम कैसा है विदुरजी बोले कि मैं तो जुए को सदैव अनर्थ की जड़ समझता हूं मैंने इसके निवारण करने के अनेक यत्न किये परन्तु मेरा कोई उपाय न चला अन्तको धृतराष्ट्र का भेजाहुआ तुमको बुलाने को यहां चला आया सो तुमको जिस बात में कल्याण दीखे वही करो युधिष्ठिर बोले कि धृतराष्ट्र के पुत्रों के सिवाय और कौन कौन कपटी खिलाड़ी हैं कि जिनके साथ हम असंख्य धन लेकर जुआ खेलें विदुर जी बोले कि कन्धार का राजा शकुनि नाम बड़ा खिलाड़ी है वह मर्यादा छोड़ कर खेलता है और पांसे अपनी इच्छा के अनुसार डालसक्ता है और इसके सिवाय राजा विविंशति, चित्रसेन, सत्यव्रत, पुरुमित्र और जयभी बड़े खिलाड़ी हैं युधिष्ठिर बोला कि आप सत्य कहते हैं वहां बड़े २ छली कपटी और भय देनेवाले खिलाड़ी इकट्ठे हुये हैं परन्तु मनुष्य कोई स्वाधीन नहीं हैं सब प्रारब्धाधीन हैं इससे मैं धृतराष्ट्र की आज्ञाके अनुसार जुए में जाऊंगा बड़ों की आज्ञाका पालन करना सदैव श्रेष्ठ होताहै परन्तु जो मुझको कोई बुलावैगा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नहीं तो मैं शकुनि से जुआ नहीं खेलूंगा और बुलाने पर हटूंगा भी नहीं मेरा सनातन का यही व्रतहै १०।१६ वैशम्पायनजी बोले हे राजा जनमेजय! युधिष्ठिर ने विदुरजी से उक्त प्रकार से कहकर यात्राकी सामग्री करने की आज्ञा दी और प्रातःकाल होते ही सब भाई सेवक और द्रौपदी आदि स्त्रियों सहित हस्तिनापुरको यात्रा की देखो मनुष्यको जब दैवगति प्राप्त होनेवाली होती है तब उसकी बुद्धि और तेज सब जाता रहताहै और पाँसों से बँधेहुये मनुष्य की तरह वह ईश्वरके आधीन रहताहै इसी कारण से युधिष्ठिर ने भी धृतराष्ट्र के बुलाने को अंगीकार कर लिया और विदुरजीके साथ २ भाइयों सहित वाह्लीक के दियेहुये रथपर चढ़कर हस्तिनापुर पहुँचा और वहां धृतराष्ट्र, भीष्म, द्रोणाचार्य, कर्ण, कृपाचार्य, अश्वत्थामा, सोमदत्त, दुर्योधन, शल्य, शकुनि, दुःशासन, जयद्रथ और अन्य राजालोग भाई बंधु तथा कौरवकुलके लोगों से यथायोग्य मिलकर भाइयों सहित धृतराष्ट्रके महलके भीतर गया वहां जाकर उसने गांधारी को दण्डवत् की और उससे आशीर्वाद पाकर उस वृद्ध अंधे राजा धृतराष्ट्रके पास गया राजा धृतराष्ट्रने उनको प्यार किया और सब कौरवकुल के मनुष्य उनको देखकर प्रसन्न हुये १७।३१ इसके पीछे युधिष्ठिर आदि पांचो भाई द्रौपदी आदि स्त्रियों सहित रत्नजटित मकानों में आज्ञा पाकर टिक गये उस समय धृतराष्ट्रके पुत्रोंकी स्त्रियां द्रौपदी के वैभव को देखकर अप्रसन्न हुईं पांडवों ने उन स्थानों में बसकर विश्राम किया और स्त्रियोंसे बातचीत करके सन्ध्यावन्दन आदि रात्रिके सब कर्म किये उपरान्त ब्राह्मणों से स्वस्त्ययन कराके सुन्दर २ भोजन खा पीकर आनन्दपूर्वक सोगये और प्रातःकाल होनेपर उठकर नित्यकर्म किया और जुआ खेलनेवालोंके साथ २ सभा में गये ३२।३८॥

इति श्रीभाषामहाभारते सभापर्वणि अष्टपंचाशत्तमोऽध्यायः ५८॥

उनसठवां अध्याय।

युधिष्ठिरका सभामें जाना और शकुनिसे वार्तालाप होकर जुएका आरम्भ होना॥

वैशम्पायनजी बोले हे राजा जनमेजय! राजा युधिष्ठिर अपने भाइयों सहित सभामें गया और सब राजा और छोटे बड़ोंसे यथायोग्य अवस्थाके अनुसार मिलकर सुन्दर आसनों पर भाइयों सहित बैठगया इसके पीछे जब सब राजालोग भी बैठगये तब राजा सुबलके पुत्र शकुनिने युधिष्ठिर से कहा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कि इस सभामें चौपड़ बिछी हुई है और पाँसेभी रक्खेहुये हैं आइये जुआ खेलें यह समयभी अच्छाहै सब मनुष्य आपकी बाट देखरहे हैं यह सुनकर युधिष्ठिर बोला कि जुआ छलरूप और पापकी जड़ है न इसमें कुछ क्षत्रियोंका पराक्रम है और न यह नीतिके ही अनुसार है इससे जुएकी प्रशंसा करना तुमको उचित नहीं है सज्जनलोग जुआरियों की प्रशंसा नहीं करते हैं इससे हे शकुनि ! तुमको निर्दयी होकर हमको कुमार्ग से जीतना उचित नहीं है १।६ शकुनि बोला कि जो जुआ खेलना अच्छे प्रकारसे जानताहै वह सब क्रियाओं में चतुर होजाता है और जीतना हारना तो केवल पाँसोंके आधीन है आप कुछ किसी बातकी शंका न कीजिये और अपने योग्य दावँ लगाकर जुआ खेलिये यह सुनकर युधिष्ठिर बोला कि असित और देवल आदि बड़े २ ऋषियोंने कहाहै कि छलियोंके साथ छलसे जुआ खेलना बड़ा पापहै युद्ध करके जीतना ही श्रेष्ठ है ७।१० जो मनुष्य श्रेष्ठ हैं वे मुखसे नहीं बकते हैं और न किसी काममें कपट करते हैं केवल युद्धहीकी इच्छा करते हैं जो सत्पुरुषोंका व्रत है हे शकुनि जिस धन से ब्राह्मणों के प्रयोजन निकलते हैं और विद्या सीखने का यत्न कियाजाता है उस धन से जुआ खेलकर तुमको दूसरों को जीतना उचित नहीं है मेरी इच्छा नीच कर्म करके सुख भोगने और पराये धन को लेने की नहीं है यह काम कपटी मनुष्यों का है सत्पुरुष इसको अच्छा नहीं बताते हैं यह सुनकर शकुनि बोला कि जो आप जुआ खेल में छल बताते हैं तो ऐसा कौनसा काम है जिसमें छल नहीं है देखो जब पण्डित का अपंडित से वेदपाठी का वेद न जाननेवाले से और अस्त्रविद्या जानने वाले का विना अस्त्र जाननेवाले से सामना होताहै तब एक दूसरे को अपने २ काम में अपनी २ शिक्षाकी प्रबलता के अनुसार जीतलेता है इसी प्रकार से जुए में भी जो मनुष्य पाँसों के फेंकने की गति को अच्छे प्रकार से जानता है वह न जाननेवाले को जीत लेता है इसमें छल का क्या काम है और जो छल है तो सभी बातों में छल है इससे जो आप खेलना नहीं चाहते हैं और खेलने को छल समझकर भयभीत हैं तो जाने दीजिये न खेलिये ११।१७ यह सुनकर युधिष्ठिर बोला कि मेरा सनातन व्रत यह है कि जो कोई मुझको जुआ खेलने को बुलाता है उससे मैं अवश्य जुआ खेलता हूं इससे दैव करेगा सोई होगा मैं भी होनहार के वश में हूं अब आप बताइये कि कौन मनुष्य

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हमसे जुआ खेलेगा हम उसको जानकर खेलना आरम्भ करें यह सुनकर दुर्योधन बोला कि दावँ लगाने को रत्न और धन तो मैं दूंगा और हमारे मामा जी तुमसे जुआ खेलैंगे युधिष्ठिर ने कहा कि यह जुआ मुझको विषम मालूम होता है कि जिसमें दावँ कोई लगावेगा और खेलेगा कोई परन्तु विद्वान् इस को अंगीकार करें अच्छा आइये खेल प्रारम्भ कीजिये १८। २१॥

इति श्रीभाषामहाभारते सभापर्वणि एकोनषष्टितमोऽध्यायः ५९॥

साठवां अध्याय।

धूतसभामें राजा धृतराष्ट्र, भीष्मपितामह, द्रोणाचार्य आदिका आना तथा युधिष्ठिर का कौरवों से जुआ खेलना॥

इसके पीछे युधिष्ठिर के जुआ खेलने को तय्यार होने पर राजा धृतराष्ट्र सब राजाओं सहित उस सभा में गया और उसके पीछे भीष्म, द्रोणाचार्य, कृपाचार्य और विदुरजी भी गये और एक २ सुन्दर २ सिंहासनों पर दो दो और एक २ होकर बैठगये उनके बैठने पर वह सभा ऐसी शोभायमान दीखने लगी मानों स्वर्ग में सब देवता इकट्ठे हुये हैं सबके सब शूरवीर और तेजस्वी थे उनके बैठ जाने पर जुआ प्रारम्भ हुआ युधिष्ठिर बोले कि यह सागरावर्त्तमें उत्पन्न हुई मणिकी माला जो स्वर्णजटित और बहुत मोल की है हम दावँ पर धरते हैं तुमभी कहो कि इसके बराबर क्या धन लगातेहो दुर्योधन बोला कि हमारे पास बहुत सा धन और मणिहैं आप किसी बातका संदेह न कीजिये और दावँ जीतिये वैशम्पायनजी बोले हे राजा जनमेजय! इसके पीछे शकुनि ने पाँसे उठालिये और उनको फेंककर बोला कि मैं जीता १। ९॥

इति श्रीभाषामहाभारते सभापर्वणि षष्टितमोऽध्यायः ६०॥

इकसठवां अध्याय।

युधिष्ठिर का शकुनि से जुआ होना और युधिष्ठिर का बहुत सा धन हारना॥

इसके पीछे युधिष्ठिर बोला कि जो मेरे दावँको कपट और छलसे जीताहै तो मैं और दावँ लगाता हूं ये सहस्र कुंभ सोने और चांदीसे भरेहुये हैं इनकी बराबर तुम भी दावँ लगाओ यह सुनकर शकुनि ने पाँसा फेंका और कहा कि मैंने यह भी जीता तब युधिष्ठिर बोला कि यह जड़ाऊ रथ जिसपर हम चढ़कर आये हैं और जो सहस्र रथों की समान, व्याघ्र के चर्म से मढ़ा हुआ घंटालियों से युक्त और आठ श्वेतरेतके बहुत श्रेष्ठ घोड़ोंसे जुता हुआ और जिसके चलने

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

में झंझनाहट मेघकी गरजना के समान होती है हम दावँ पर लगाते हैं वैशम्पायनजी बोले कि छली शकुनिने यह सुनकर पाँसा फेंका और कहा कि मैं जीता फिर युधिष्ठिर बोला कि जो मेरी एक लाख तरुण दासियां मेरी आज्ञासे स्नातक ब्राह्मण मन्त्री और राजा लोगों की सेवा करती हैं और माला कंगन घुंघरू आदि अनेक मणिजटित सुवर्ण के गहनों और सुन्दर २ वस्त्रों से अलंकृत हैं और चौंसठकला और गाने बजाने में बड़ी प्रवीण हैं उनको मैं दावँ पर लगाता हूं वैशम्पायनजी बोले कि उस छली शकुनि ने उक्त दावँ को सुनकर पाँसे फेंके और कहा कि यह भी मैंने जीता १।११ तब युधिष्ठिर बोले कि जितनी दासी हैं उतनेही मेरे दास भी अनुलोम और प्रदक्षिण जाति के हैं वे सब बड़े ज्ञानी जितेन्द्रिय और युवा हैं और रेशमी वस्त्र और कुण्डल धारण किये हुये दिन रात हाथों में सुवर्णकी झारियां लेकर अतिथियों को भोजन कराया करते हैं मैं उन सबको दावँ पर लगाता हूं वैशम्पायनजी बोले कि वह छली शकुनि यह सुनकर पाँसा फेंककर बोला कि मैं जीता १२।१४ तब युधिष्ठिर बोले कि जो मेरे पास सहस्रों मतवाले हाथी सुनहरी झूल और माला धारण किये हुये अच्छी तरह सिखाये हुये राजाओं की सवारी के योग्य युद्धमें किसी शब्द से न डरनेवाले आठ आठ हथिनियों से युक्त और मेघ की समान गर्जनेवाले हैं और जिनके शरीर बड़े बड़े और दांत लम्बे २ हैं उनको मैं दावँ पर लगाता हूं वैशम्पायनजी बोले कि शकुनि ने यह सुनके हँसकर पाँसा फेंका और कहा कि मैंने यह भी जीत लिया १५।१८ तब युधिष्ठिर बोले कि हाथियों की संख्याके समान जो मेरे रथ हैं जिनमें सुनहरी पताका और ध्वजा लगी हुई हैं और सिखाये हुये घोड़े जुते हुये हैं और जिनपर चित्रयोधी रथी जो सहस्र २ मुद्रा मासिक पाते हैं रहते हैं उन को मैं दावँ पर लगाता हूं वैशम्पायनजी बोले कि यह सुनकर उस दुष्ट और वैर रखनेवाले शकुनि ने पाँसा फेंककर कहा कि मैं जीता १९।२१ तब युधिष्ठिर बोले कि मेरेपास जो तित्तर वर्णके गंधर्वोंके देशके सुनहरी माला पहिरे हुये सौ घोड़े हैं जिनको चित्ररथ गंधर्वने युद्धमें जीते जाने के कारण से अर्जुनको प्रीतिपूर्वक दिये थे उनको मैं दावँ पर धरता हूं वैशम्पायनजी बोले कि यह सुनकर उस छली शकुनिने पाँसा फेंककर कहा यह भी मैं जीता २२।२४ तब युधिष्ठिर बोले कि हमारे पास अयुत रथ और छकड़े हैं जिनमें छोटे बड़े

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

घोड़े जुते हुये हैं और वर्ण वर्णके साठ सहस्र वीर और पुष्ट योद्धा जो नित्य चावल और दूधका भोजन करते हैं उन पर सवार हैं मैं उन रथों को दावँ पर लगाता हूं वैशम्पायनजी बोले कि वह छली शकुनि पाँसा फेंककर बोला कि मैं जीता २५। २८ तब युधिष्ठिर बोले हमारे पास तांबे और लोहेके चार सौ घड़े जिनमें एक २ द्रोण उत्तम सुवर्ण भराहुआहै रक्खेहुये हैं उनको मैं दावँ पर लगाता हूं वैशम्पायनजी बोले उस छली शकुनि ने यह सुनकर पाँसा फेंकदिया और बोला कि मैं जीता २९। ३१ ॥

इति श्रीभाषामहाभारते सभापर्वणि एकषष्टितमोऽध्यायः ६१ ॥

बासठवां अध्याय।

विदुरजीका धृतराष्ट्र को समझाना और दुर्योधन को त्याग करनेका उपदेश देना ॥

वैशम्पायनजी बोले हे राजा जनमेजय! जब उक्त रीतिसे घोर जुआ होने लगा तब सब संशयोंको दूर करनेवाले विदुरजी बोले कि हे राजा धृतराष्ट्र! जो कुछ मैं आपसे कहता हूं उसको समझिये मैंने आपसे पहले भी वही कहा था पर मेरा कहना आपको अच्छा नहीं मालूम हुआ सचहै कि जब रोगी असाध्य होजाता है तब उसको कोई दवा गुण नहीं करती है अब मैंने निश्चय समझ लिया कि जो इस पापी दुर्योधन ने उत्पन्न होते ही गीदड़ के रोने कासा शब्द किया था उसका फल अब आन पहुँचा है यही आप सब लोगों के कालका हेतु होगा आपने इस दुर्योधन को मोहसे अपने घरमें पुत्र नहीं किन्तु गीदड़ पाला है अब इसके विषयमें जो कुछ करना उचित है वह मैं शुक्रजीकी कही हुई नीतिके अनुसार कहता हूं १। ४ जैसे मधु अर्थात् शहदका व्यापार करनेवाला मनुष्य शहद लगाहुआ देखकर वृक्षपर उसे लेने को चढ़जाता है परन्तु यह नहीं जानताहै कि इसपर चढ़कर मैं गिरूंगा और अन्तमें उसकी यही गति होती है कि वह गिरपड़ता है इसी प्रकारसे यह दुर्योधन पूर्वापरको न जानकर इन महारथियों के साथ जुआ खेलकर वैर बिसाता है मेरी जान में एक समय भोजके वंशमें एक राजाने अपने पुरवासियों के हितके लिये अपने पुत्रको जो अयोग्य था त्याग दिया था उस पुत्रका नाम कंस था और सब अंधक यादव और भोजवंशियों के त्याग करने पर श्रीकृष्णजी ने उसे मारडाला और उसके मारेजाने पर सब स्वजातीय प्रसन्न हुये और उन

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

को आनन्द करते हुये सौ वर्ष बीतगये इसी प्रकारसे आप अर्जुन को आज्ञा दे दीजिये कि वह दुर्योधन को निग्रहण अर्थात् गिरिफ्तार करलेवे ऐसा करने से सब कौरवों को बड़ा आनन्द होगा इससे हे राजा धृतराष्ट्र ! आपको उचित है कि इस काग और गीदड़रूपी दुर्योधन के बदले में इन मयूर और शार्दूलरूपी पांडवों को मोल लेलेवें और अपने को शोकके सागर में न डुबावें ५। १० मनुष्य को कुलके लिये एक आदमी को ग्रामके लिये एक कुलको देशके लिये एक ग्राम को और अपनी आत्माके लिये पृथ्वी का त्याग देना उचित है देखो शुक्रजीने जो सर्वज्ञ और सबके चित्त की वृत्तिके जानने वाले हैं असुरों से यह कहकर कि यह पुत्र तुम सबका शत्रु और सबको भय दिलानेवाला होगा जंभको त्याग करवा दिया इसी प्रकार से आपको भी इस दुर्योधन को त्याग देना उचित है किसी राजाने मांस और सुवर्ण के लोभसे एक पक्षीको जो वनमें अपने घोंसले में रहता था और नित्य सुवर्ण उगिलता था मारडाला ऐसा करने से उस राजा के यह लोक और परलोक दोनों नाश होगये इससे आप भी पांडवों से द्रोह न कीजिये नहीं तो आपको भी उस पक्षी के मारनेवाले राजाकी समान दुःख होगा आपको उचित है कि जैसे माली बागों में फूल बड़े स्नेह से तोड़लेता है उसी प्रकार से आपभी इन काम-रूपी वृक्षकी समान पांडवों में से गुणरूपी पुष्प चुन लीजिये आप वायु की समान एक डाली को दूसरी डाली में भिड़ाकर अग्नि उत्पन्न करते हैं इन पांडवरूपी वृक्षों में जुआरूपी अग्नि लगाकर पुत्र और मंत्रियों सहित क्यों मरना चाहते हैं क्योंकि जो इन्द्र भी मरुद्गणों सहित पांडवों से युद्ध करे तो वह भी नहीं जीतसक्ता है ११। १७॥

इति श्रीभाषामहाभारते सभापर्वणि द्विषष्टितमोऽध्यायः ६२॥

तिरसठवां अध्याय।

विदुरजीका अनेक पूर्वापर समझाकर धृतराष्ट्र को जुआ बंद कराने का उपदेश करना॥

विदुरजी उक्त बातें कहकर फिर कहने लगे कि हे राजा धृतराष्ट्र ! यह जुआ कलहकी जड़ और आपस में फूट डालनेवाला है आपका पुत्र जुआ नहीं खेलता है किन्तु वैरकी जड़ जमारहा है इसके अपराध से प्रतीप शंतनु और वाह्लीकवंशी सब मनुष्य महाकष्ट भोगेंगे यह दुष्ट मदोन्मत्त होकर क्षेम को देशके बाहर इस प्रकारसे निकाले देता है जैसे गाय मतवाली होने पर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अपने सींगों को आपही पीड़ित करती है सुनिये जो मनुष्य बुद्धिमान् होकर दूसरे की मतिपर चलता है वह दुःखरूपी समुद्र में इस प्रकारसे डूबजाता है जैसे बाल मल्लाह की नाव पर चढ़कर मनुष्य घोर समुद्र में डूबमरता है १।४ आप तो यह जानकर प्रसन्न होतेहैं कि मेरा पुत्र जुएमें जीतता जाताहै परन्तु इससमय तो यह आपको विनोद दीख पड़ता है और इसके अंतमें यही जुआ युद्धरूप होकर मनुष्योंका नाश करेगा आपने तो सब भाइयों के सम्मत के अनुसार यह नियम किया था कि हम पांडवों से अब विरोध न करेंगे फिर आप इस कलहके मूल जुएको क्यों कराते हैं हे प्रतीपवंशियो ! है शांतनुवंशियो ! तुम तो सब दीर्घदर्शी हो मैं शुक्रजीकी कहीहुई नीतिको कहता हूं उसको सुनो और मन्दबुद्धियों की मतिपर चलकर अपने को घोर अग्नि में मत जलाओ भला यह तो बताओ कि जब इस जुए के मदसे मतवाले होकर युधिष्ठिर भीमसेन अर्जुन नकुल और सहदेव क्रोध को न रोककर तुमुलयुद्ध करेंगे तब तुम लोगोंकी कौन रक्षा करेगा तुम्हारे जुआ खेलने के पहिले किस बातकी कमी थी और जो अब तुम जुआ खेलकर पांडवों का धन जीत भी लोगे तो तुम्हारा क्या प्रयोजन निकलेगा तुम सबको तो पांडवों को ही अपना धन जानना चाहिये हम शकुनि को अच्छी तरह से जानते हैं यह छलसे जुआ खेलना अच्छी तरह जानता है सो इसको जहां से आया है तहीं जाने दो और पांडवों को मत लड़ाओ ५।१०॥

इति श्रीभाषामहाभारते सभापर्वणि त्रिषष्टितमोऽध्यायः ६३॥

चौंसठवां अध्याय।

दुर्योधन का क्रोधकरके विदुरजीकी निंदा करना और निकाल देना और विदुरजीका अनेक हितकारी बातें कहकर चलाजाना॥

विदुरजी की उक्त बातों को सुनकर दुर्योधन बोला कि तुम सदैव हम लोगों की निन्दा करके दूसरों की श्लाघा किया करते हो हम अच्छी तरह जानतें हैं कि तुम दूसरों ही के हित में अनुरक्त रहते हो हमलोगों का मूर्खों कासा अपमान किया करते हो जो मनुष्य अपने स्वामीकी निन्दा और दूसरों की बड़ाई करताहै उसको समझना चाहिये कि यह अपने स्वामीको नहीं चाहताहै तुम्हारी जीभ ही तुम्हारे मन और अंतःकरणकी द्वेषताको प्रकट करती है परन्तु हमको बड़ा आश्चर्य यह है कि जो मनुष्य द्वेष भी रखताहै वह भी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लोकलज्जा से उस द्वेषको प्रकट नहीं करताहै परन्तु तुमको लोकलज्जा भी नहीं है तुम सर्प की समान गोदमें और बिल्लीकी तरह हमारे घरमें रहकर हमारा ही गला काटते हो स्वामी के साथ द्रोह करना बड़ा पापहै परन्तु आश्चर्यहै कि तुम पापसे नहीं डरते हो हमने तो अपने शत्रुओंको जीतकर बड़ा लाभ उठायाहै तुम हमसे खोटे वचन मत कहो तुमको हमसे मित्रता करके शत्रुसे मिलाप रखना और अंतःकरणमें हमसे द्वेष मानना उचित नहींहै १।४ जो मनुष्य क्षमाके अयोग्य वचन कहताहै उसको शत्रु समझना चाहिये शत्रु की श्लाघा करने से तुम्हारा छिपाहुआ वैर ठीक २ प्रकट होताहै तुमको लज्जा नहीं है और हमारे पिताके आश्रित होकर हमसे जो चाहे सो कहरहे हो अब तुम हमारा अपमान मत करो हम तुमको अच्छी तरह जानते हैं वृद्ध मनुष्यों के पास बैठकर बुद्धि सीखो और शत्रुकी ओर मत लो करनेवाला तो मैं हूं तुमको हमारा अपमान करने और परुष वचन बोलनेसे क्या प्रयोजनहै हम तुमसे कुछ हितकी सलाह नहीं पूछते हैं इससे तुम हमको बेर २ दुःख मत दो इस संसारमें शासन करनेवाला एक ईश्वर ही है दूसरा कोई नहीं है वही गर्भ में भी बालकको शासन करताहै और उसीकी इच्छासे मैं भी यह कर्म कररहा हूं देखो जो मनुष्य सांपको खिलाता और पहाड़की चोटी पर चढ़कर चोटीको ही गिराताहै वह भी तो बुद्धि रखताहै जो दूसरा कोई उसकी बुद्धिका प्रेरक न हो तो क्या वह यह नहीं जान सकता है कि सांप को खिलाने से सांप काट खायेगा और पहाड़परसे गिरपड़ूगा अच्छे लोग अपने पालन करनेवाले को कभी शिक्षा नहीं करते हैं और जो कोई मनुष्य कपूरमें आग लगादे और शीघ्र उस आगको बुझाने का यत्न न करे तो उस कपूरकी उसको फिर राख भी नहीं मिलती है ५। १० इसी प्रकारसे जो मनुष्य अपना शत्रु और द्रोही हो उसको अपने पास बसाकर कपूररूपी कल्याण में आग लगवाना उचित नहीं है इससे अब तुम हमारे यहां से चलेजाओ और जहां चाहे तहां रहो ११ यह सुनकर विदुरजी बोले कि जो मनुष्य इतनी ही बातपर दूसरे का त्याग करता है उसके साथ मित्रता सदैव नहीं रहती है हमें अब निश्चय होगया कि राजालोगों के चित्त द्वेष से भरेहुये रहते हैं पहिले तो वे मिलकर मित्र बना लेतेहैं और पीछे से उसीको मूसलों से मारते हैं तुम मुझको अज्ञानी जानकर अपनेको पण्डित समझते हो परंतु अज्ञानी वही है जो पहिले तो किसी को

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सुहृद् माने और पीछे उसीमें दोष लगाकर उसकी बातका विश्वास न करे जो मनुष्य मन्दबुद्धि होता है वह किसीप्रकार से कल्याणकारी काम में नहीं लगाया जासकता है जैसे वेदपाठी के घरमें दुष्ट स्त्री होने से योग्यकर्म नहीं करती है तुमको हमारा हितकारी उपदेश इस प्रकार से अच्छा नहीं मालूम होता है जैसे कुमारी स्त्री साठवर्ष के पति को नहीं चाहती है इससे जो तुमको हित और अहित काम अपनी इच्छा के अनुसार ही करना है तो हमसे सलाह मत लो स्त्री मूर्ख और लूले लँगड़े मनुष्यों से पूछकर जो इच्छा हो सो करो इसमें संदेह नहीं है कि इस संसार में ऐसे पापी मनुष्य जो मुँहदेखी प्रिय बात को कहते हैं बहुतसे मिलेंगे परन्तु कड़ुआ बोलनेवाला कि जिसका परिणाम हितकारी हो और उस कड़ुये वाक्यको सुननेवाला संसार में होना कठिन है १२।१६ राजाकी सहाय वही मनुष्य करसक्ता है जो राजा के प्रिय अप्रिय काम को करने के भयको छोड़कर और धर्म को श्रेष्ठ मानकर परिणाम में हित करनेवाले कड़ुये वचन कहताहै १७ सो जैसे रोगी मनुष्य कड़ुई तीक्ष्ण और कषैली ओषधियों को पीकर आरोग्य होजाता है इसी प्रकारसे तुम भी हमारे कड़ुये तीक्ष्ण कषैले यश करनेवाले और सुख देनेवाले औषधरूपी मंत्रको पीकर इस कल्मषरूपी रोगको शांत करो ईश्वर करे तुम्हारा कल्याण उसी प्रकार से होवे जैसे मैं धृतराष्ट्र के कल्याण को चाहा करता हूं तुमको अब मेरी नमस्कार है ब्राह्मण मुझे कल्याण होने का आशीर्वाद देवें जो मनुष्य पंडित होते हैं वे सर्पों को और नेत्रों में विष रखनेवाले पुरुषों को क्रोध नहीं दिलाते हैं १८।२० ॥

इति श्रीभाषामहाभारते सभापर्वणि चतुःषष्टितमोऽध्यायः ६४ ॥

पैंसठवां अध्याय।

युधिष्ठिरका जुए में सब राज्य और धन हारना और पीछे अपने चारों छोटे भाई और अपने आप और द्रौपदी कोभी हारजाना ॥

उक्त बातों के समाप्त होने पर जुआ फिर होने लगा उस समय शकुनि युधिष्ठिरसे बोला कि आप बहुतसा धन हारचुके हैं अब जो कुछ आपके पास और धन विना हारा हुआ हो उसे लगाइये यह सुनकर युधिष्ठिर बोला कि मेरे धनकी संख्या नहीं होसकती है मैं हारे और विना हारे धनको अच्छी तरह जानता हूं तुम्हारे कहनेकी कुछ आवश्यकता नहीं है अच्छा अब मेरे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पास जो अयुत, प्रयुत, पद्म, खर्ब, अर्बुद, शंख, महापद्म, निखर्ब, कोटि और इससे भी अधिक जितना धनहै सबको दावँ पर लगाता हूं तुम पाँसा फेंको वैशंपायनजी बोले कि वह छली शकुनि उक्त बातको सुनकर पाँसे डालकर बोला कि मैं यह सब धन जीता १। ५ तब युधिष्ठिर बोला कि अब मेरे पास जो बैल, घोड़े, गौ और असंख्य भेड़, बकरियां यहां और पर्णासा नदी और समुद्रके पास हैं उन सबको मैं दावँ पर लगाता हूं वैशंपायनजी बोले कि उस छली शकुनि ने यह प्रण सुनकर पाँसे फेंके और बोला कि मैं जीता तब युधिष्ठिर बोला कि नगर, देश, पृथ्वी, ब्राह्मणों के धनके सिवाय सब वर्णों का धन और ब्राह्मणों के सिवाय सब मनुष्योंको मैं दावँ पर लगाता हूं तुम पाँसा फेंको वैशंपायनजी बोले कि वह छली शकुनि उक्त प्रणको सुन कर प्रसन्न हुआ और पाँसा फेंककर बोला कि मैं जीता इसके पीछे युधिष्ठिर बोला कि ये हमारे भाई राजपुत्र जो कुण्डल आदि आभूषण पहिरे हुये बैठे हैं उन सबको मैं दावँ पर लगाता हूं वैशंपायनजी बोले कि उस छली शकुनिने यह सुनकर पाँसे फेंके और कहा कि मैं जीता ६। ११ तब युधिष्ठिर बोला मैं अपने नकुल नाम भाई को जो श्याम वर्ण और जवान है नेत्र जिसके लाल लाल कंधे सिंह केसे और बाहें लम्बी २ हैं दावँ पर लगाता हूं वैशंपायनजी बोले कि शकुनि यह सुनकर बोला कि अपने प्यारे भाई नकुल को हारकर फिर काहे से खेलोगे यह कहकर उसने पाँसे फेंके और कहा कि मैं जीता १२। १४ तब युधिष्ठिर बोला अब मैं अपने इस सहदेव भाई को जो धर्म का उपदेश करनेवाला और पंडित है दावँ पर रखता हूं यद्यपि यह इस योग्य नहीं है वैशंपायनजी बोले कि वह छली शकुनि यह सुनकर और पाँसे फेंक कर बोला कि मैं जीता १५। १६ सहदेव को जीतकर शकुनि बोला कि मैंने आपके दोनों प्यारे भाई नकुल और सहदेव जीतलिये अब ये भीमसेन और अर्जुन आपके पास बड़े धनरूप हैं इनको भी दावँ पर रखकर खेलिये १७ यह सुनकर युधिष्ठिर बोला कि तू बड़ा मूढ़ है अधर्म तो करता है और नीति को नहीं देखता है और हम एक चित्तवाले भाइयों में फूट डालना चाहता है १८ यह सुनकर शकुनि बोला कि आप बड़ेहैं इससे मैं आपको नमस्कार करके कहता हूं कि धन में चित्त लगाकर अधर्म करनेवाला मनुष्य नरकगामी होता है और जिन २ बातों को मतवाले ज्वारीलोग कहते हैं वे बातें स्वप्न अथवा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जाग्रत् अवस्था में भी दिखाई नहीं देती हैं १९। २० यह सुनकर युधिष्ठिर बोला कि अच्छा हम अपने अर्जुन भाईको जो हम सब को युद्ध में नावकी तरह पार उतारनेवाला और शत्रुओं को जीतनेवाला है उसको मैं दावँ पर लगाता हूं यद्यपि वह इस योग्य नहीं है २१ वैशंपायनजी बोले कि उस छली शकुनि ने उक्त प्रणको सुनकर पाँसा फेंका और कहा कि मैं जीता २२ और उसको जीतकर कहने लगा कि मैं पांडवों के बड़े धनुर्धारी अर्जुनको तो जीत चुका अब तुम्हारे पास भीमसेनरूपी धन और रहगया है उसको भी दावँ पर लगादो वह धन भी खिलाड़ियों से जीतने के योग्य है २३ यह सुनकर युधिष्ठिर बोला कि हम अपने भीमसेन नाम गदाधारियों में श्रेष्ठ भाई को जो अकेला हम सबको लेचलनेवाला इन्द्रकी समान हमको युद्धमें पारकरनेवाला क्रोधी महात्मा और महाबलवान् है और जिसके कंधे सिंहकेसे भौंहें टेढ़ी और चितवन तिरछी है दावँ पर लगाते हैं यद्यपि वह इस योग्य नहीं है २४। २५ वैशंपायनजी बोले कि वह शकुनि यह सुनकर और पाँसा फेंककर बोला कि मैं जीता २६ और फिर कहने लगा कि आप घोड़ा हाथी और सब धन सहित अपने भाइयों को हारचुके अब जो कुछ धन आपके पास हारा हुआ न हो उसे दावँ पर लगाइये यह सुनकर युधिष्ठिर बोला कि मैं सब भाइयों का प्यारा और इस जुये में हारनेवाला शेष रह गया हूं सो मैं अपने आपको अब दावँ पर लगाता हूं २७। २८ वैशंपायनजी बोले उस छली शकुनि ने यह सुनकर पाँसा फेंका और कहा कि मैं जीता २९ इसके पीछे शकुनि कहने लगा कि तुमने यह बड़ा नीच काम किया जो धनके शेष रहने पर अपने आप को हार दिया धन शेष रहने पर अपने को हारना पाप का हेतु होताहै ३० वैशंपायनजी बोले इसके पीछे शकुनि पाँसों को अलग अलग फेंक २ कर उन हारेहुये लोकवीर पांडवों से कहने लगा कि हे युधिष्ठिर! तुम्हारी स्त्री पांचाली विना जीती हुई एक दावँ पर लगाने को और शेषहै उसको दावँ पर लगाकर अपने को जीत लीजिये ३१। ३२ यह सुनकर युधिष्ठिर बोला कि जो द्रौपदी छोटी बड़ी अथवा दुबली नहीं है केश जिसके नील कुंचित हैं ३३ शरीर में सुगंधि कमलों कीसी आती है नेत्र शरदृतु के फूले हुये कमलों के समानहैं स्वरूप लक्ष्मी का सा है ३४ और शील सम्पत्ति रूप सम्पत्ति और दया भी लक्ष्मी के समान है उसके गुण आज्ञा का पालन मीठा बोल और धर्म अर्थ और काम

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

की सिद्धि को देखकर ऐसा कोई मनुष्य नहीं है जो उसे न चाहे ३५। ३६ वह कामको पहिले से पहिले ही जान लेती है और गोपाल और-छागपाल आदि सबके कियेहुये और नहीं कियेहुये कामों को देखती रहती है ३७ उस का कमल तुल्य मुख पसीना निकलने से मल्लिका के समान दीखताहै कमर उसकी पतली बाल लम्बे २ और मुख अरुणाई लिये हुये है और उसके शरीर पर रोम बहुत नहीं हैं ३८ यद्यपि उस सुन्दर अंग और कमर रखनेवाली द्रौपदी को दावँ पर लगाना बड़े दुःखकी बात है परन्तु मैं इसे भी दावँ पर धर कर खेलता हूं वैशंपायनजी बोले हे राजा जनमेजय! युधिष्ठिर की उक्त बात को सुन उस सभा के वृद्धलोग धिक् धिक् कहने लगे ३९। ४० उस समय सब राजालोग शोच करने लगे और भीष्म द्रोणाचार्य और कृपाचार्य की देह में से पसीना निकलने लगा ४१ और विदुरजी शिर पकड़ कर नीचे को मुख कियेहुये सर्पकी समान श्वास लेने लगे ४२ और धृतराष्ट्र प्रसन्न हो हो कर बार २ पूछने लगा कि क्या जीता है क्या जीता है उस समय कर्ण दुःशासन आदि हँसने लगे और २ सभामें बैठेहुये मनुष्योंकी आंखों से आंसू गिरनेलगे ४३। ४४ इसके पीछे उस छली शकुनि ने द्रौपदी को दावँ पर धराहुआ सुनकर पाँसे उठालिये और फेंककर कहने लगा कि मैं जीता ४५॥

इति श्रीभाषामहाभारते सभापर्वणि पंचषष्टितमोऽध्यायः ६५॥

छाछठवां अध्याय।

दुर्योधनका विदुरजीको द्रौपदी को दासीकर्म करने के लिये लानेकी आज्ञा देना। और विदुरजीका उसकी निंदा करके ऐसा काम न करनेका उपदेश देना॥

युधिष्ठिर के सर्वस्व हारने पर दुर्योधनने विदुरजी से कहा कि तुम आकर अब द्रौपदी को जो पांडवों की प्यारी स्त्री है यहां लेआओ जिसमें वह अपुण्यशीला दासियोंके साथ रहकर हमारे घरकी बुहारी दियाकरै १ यह सुनकर विदुरजी बोले कि तू यमराज की पाशमें बँधा होनेके कारण से अचेत होरहा है जो ऐसे दुर्वचन कहता है मृगरूप होकर तू क्यों व्याघ्रों को क्रोध दिलारहा है तू यह नहीं जानताहै कि तेरे शिरपर बड़े विषधर सर्प बैठे हुये हैं उनको क्रोधित करके अपने हठसे यमलोकको क्यों जाना चाहताहै २। ३ द्रौपदी दासी किसी प्रकारसे नहीं होसक्ती है क्योंकि युधिष्ठिरने पहिले अपनेको हार कर फिर द्रौपदी को दावँ पर रक्खाहै अपने हारनेपर युधिष्ठिर द्रौपदी का ईश

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नहीं रहा मुझे दीखता है कि यह दुर्योधन राजा वेणुकी तरह शीघ्र नष्ट होनेवाला है इस जुए से बड़ा भारी वैर उत्पन्न होगया और दुर्योधन अन्त समय आने के कारणसे मतवाला होरहाहै मनुष्य को परुष वचन बोलना मर्मों को छेदना नीचकर्म से शत्रुको वश में करना और दूसरे को जलानेवाली और उद्वेग करनेवाली बात कहना उचित नहीं है ऐसा करने से मनुष्य नरकगामी होता है ४। ६ जो मनुष्य मर्यादाके विपरीत ऐसे वचन दूसरे से कहता है जिनके कारणसे दूसरेको दिन रात शोच रहताहै उसका फल कहनेवाला ही भोगता है दूसरेका उससे कुछ बिगाड़ नहीं होसक्ता जो पण्डित हैं वे ऐसे वचन दूसरे से कभी नहीं कहते हैं ७ देखो जैसे मछली आटेके लोभ से बंसी को निगल जाती है और वह बंसी उसीके गले को छेद डालती है इसी प्रकारसे तुम अपनी भी गति जानकर पांडवोंसे वैर मत करो पांडवों ने तुमसे कोई बात ऐसी नहीं कही है जैसी तुम कहरहे हो जो मनुष्य कुत्तों के समान हैं वे सदैव तुम्हारी तरह वानप्रस्थ और तपस्वियोंको देख २ भूंका करते हैं ८। ६ नरक का बड़ा द्वार कुटिलताहै दुर्योधन इस बात को नहीं जानताहै और दुःशासन आदि बहुत से मनुष्य इस द्यूत आदि कामों में उसके साथी हैं ये सब डूबना चाहते हैं और मेरे पथ्यरूपी वचनों को नहीं सुनते अब इस दुर्योधनके कारण से सर्व हरण और कुरुवंशियों का नाश होना चाहता है सब सुहृदों को पथ्य के समान जो हमने शुक्रके कहेहुये वाक्य सुनाये हैं उनको यह लोग नहीं सुनते हैं और अपने लोभको बढ़ाते जाते हैं १०। १२ ॥

इति श्रीभाषामहाभारते सभापर्वणि षट्षष्टितमोऽध्यायः ६६ ॥

सरसठवां अध्याय।

दुःशासनका द्रौपदीको बाल पकड़कर सभामें खींचकर लाना और द्रौपदी का दुःखी होकर सभासदों से अपने दासी होने या न होनेका प्रश्न करना ॥

वैशंपायनजी बोले हे राजा जनमेजय! दुर्योधन विदुरजी की उक्त बात को सुनकर धिक्कार देकर सब सभा के श्रेष्ठ मनुष्यों के बीच में प्रातिकामी सूतको देखकर कहने लगा १ कि हे प्रातिकामी! तू जाकर द्रौपदीको यहां ले आ पांडवोंसे अब मत डर ये विदुरजी डरेहुये हैं सदैव विपरीत ही कहतेहैं और हमारी वृद्धि कभी नहीं चाहते २ वैशम्पायनजी बोले हे राजा जनमेजय! वह प्रातिकामी दुर्योधन की आज्ञा पाकर पांडवोंके रहने के स्थान में इस प्रकार से घुस

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

गया जैसे कुत्ता सिंहोंके घरमें घुस जावे और द्रौपदी के पास जाकर ३ कहने लगा कि युधिष्ठिर जुए के मदमें मतवाले होरहे हैं उन्होंने तुमको हार दिया है और दुर्योधन ने तुमको जीता है सो तुम अब दुर्योधनके घरको चलो और वहां दासियों के साथ काम काज करो ४ यह सुनकर द्रौपदी बोली कि ऐसा कौन राजपुत्र मूढ़ जुए के मदसे मतवाला होगा जो स्त्रीरूपी धनसे जुआ खेलेगा तू क्या बकरहाहै क्या युधिष्ठिरके पास जुआ खेलनेको और कुछ धन नहीं है ५ प्रातिकामी बोला कि युधिष्ठिर जुए में सब राज्य और धन हारगये अन्त में जब कुछ न बचा तब उन्होंने पहिले अपने भाई और अपने को हार दिया और पीछे तुमको भी हार गया ६ द्रौपदी बोली कि अच्छा तू सभा में जाकर खिलाड़ी राजासे यह पूछिआ कि तुमने पहिले मुझको हारा है या अपने को ७ उसके उत्तर को सुनकर फिर तेरे साथ चलूंगी यद्यपि इसमें मुझको बड़ा दुःखहै ८ वैशम्पायनजी बोले कि द्रौपदीकी बातको सुनकर वह प्रातिकामी सभामें गया और युधिष्ठिर से पूछने लगा ९ कि आपसे द्रौपदी ने पूछाहै कि आपने पहिले किसको हाराहै मुझको या अपनेको १० यह सुन कर युधिष्ठिर ने अच्छा अथवा बुरा कुछ उत्तर नहीं दिया चुपका बैठारहा तब दुर्योधन बोला कि द्रौपदी से कहदो कि तू यहीं आकर यह प्रश्न कर जिसमें जो कुछ बात हो यहां सब लोग सुनें ११। १२ वैशम्पायनजी बोले हे राजा जनमेजय! वह प्रातिकामी दुर्योधन की आज्ञा पाकर फिर द्रौपदी के पास गया और कहने लगा १३ कि हे राजपुत्री! तुझको सभासद्लोग सभाही में बुलाते हैं मैं जानता हूं कि अब कौरवों के नाश होनेका समय आगयाहै दुर्योधन अपनी बुद्धि अब नहीं चाहताहै इसी कारणसे तुझको वहीं बुलाताहै १४ द्रौपदी बोली कि हां तू सच कहता है ईश्वरने ऐसा ही रचरक्खा था मूर्ख और पण्डित सब किसी पर दुःख और सुख दोनों पड़ते हैं परन्तु संसार में धर्म बड़ा श्रेष्ठहै मुझे निश्चयहै मेरा धर्म ही मेरी रक्षा करेगा १५ सो तू अब फिर सभामें जाकर सब नीति जाननेवाले और गुणवान् श्रेष्ठ सभामें बैठेहुये मनुष्यों से कहदे कि कौरवोंको अपना धर्म छोड़ना उचित नहीं है मुझे निश्चय करके ठीक २ उत्तर दें उत्तर पानेपर मैं जैसा वे कहेंगे वैसाही करूंगी १६ यह सुनकर वह प्रातिकामी फिर सभामें गया और जो कुछ द्रौपदीने कहा था कह सुनाया परन्तु पांडवोंने उसको दुर्योधनकी हठको जानकर कुछ उत्तर नहीं दिया नीचेको गर्दन

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

झुकाये हुये बैठे रहे १७ वैशम्पायनजी बोले कि इसके पीछे राजा युधिष्ठिर ने उस बात को सुनकर जो दुर्योधन किया चाहता था द्रौपदी के पास दूत भेज कर कहलाभेजा कि तू यद्यपि रजस्वला और एक वस्त्र ही पहिरे हुये है परन्तु अब यहां आकर अपने श्वशुर राजा धृतराष्ट्र के सम्मुख खड़ी होजा १८।१९ यह सुनकर वह दूत द्रौपदी के पास गया और जो कुछ युधिष्ठिर ने कहा था कह सुनाया २० उस समय पाण्डवों ने दुःखी दीन और सत्यसे पूर्ण होकर लज्जाके मारे ऊपर को दृष्टि नहीं की २१ इसके पीछे दुर्योधनने पाण्डवों का मुख देखकर प्रसन्न होकर प्रातिकामी को आज्ञा दी कि तू द्रौपदी को यहीं ले आ यहां सब कौरववंशियों के सामने जो कुछ उसको कहना हो सो प्रत्यक्ष कहै २२ यह सुनकर उस सूतने द्रौपदी के कोपसे भयभीत होकर और दुर्योधन की आज्ञाको तिरस्कार करके सभावाले मनुष्यों से पूछा कि मैं द्रौपदी से क्या जाकर कहूं २३ यह सुनकर दुर्योधन ने दुःशासन को आज्ञा दी कि यह मेरे सूतका बेटा भीमसेन से डराहुआ है तेरा अब शत्रु कुछ नहीं कर सकते हैं तू आप जाकर द्रौपदी को पकड़ला २४ यह आज्ञा पाकर दुःशासन सभामें से उठकर उन महारथी पाण्डवों के घरके भीतर चलागया और द्रौपदी से बोला २५ कि हे पांचाली! हे कृष्णा! तुझको कौरवों ने जुए में जीता है और धर्म से पाया है अब तू लज्जा छोड़कर दुर्योधन के सामने अपनेको धिक्कार देतीहुई चल और कौरवोंकी सेवा कर २६ यह सुनकर द्रौपदी अत्यन्त दुःखी होकर अपने मुखको हाथों से पोंछकर चिल्लाती हुई उधरको भागी जिधर राजा धृतराष्ट्र के घरकी स्त्रियां थीं २७ यह देखकर दुःशासन क्रोध करके उसके पीछे गर्जता हुआ दौड़ा और उसके शोभायमान केश पकड़लिये २८ देखो ईश्वर की क्या गति है कि जो बाल राजसूय यज्ञ में अवभृथ नाम स्नान में मंत्रोंके जल से सींचेगये थे उन्हीं को दुःशासनने पाण्डवों के पराक्रम को कुछ न समझकर पकड़कर मरोरडाला २९ और खींचकर उस दुःखी द्रौपदी को सभाकी ओर लेचला ३० तब द्रौपदी ने उस खींचने और झुकने की अवस्था में धीरे से कहा कि अरे मंदबुद्धि! अरे नीच! मैं रजस्वला हूं और एक वस्त्र पहिरे हुये हूं तू मुझको सभा में मत लेचल ३१ और हे कृष्ण! हे विष्णु! हे हरि! हे नर! कह २ कर रक्षाके लिये पुकारा और रोनेलगी तब दुःशासन बोला कि ३२ चाहे तू रजस्वला हो चाहे एक वस्त्र पहिरे हो चाहे नंगी हो तुझको हम

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ने जुए में जीतकर दासी किया है सो तेरा रहना दासियों में ही योग्य है ३३ वैशंपायनजी बोले तब वह द्रौपदी जिसका आधा वस्त्र गिरगया था बाल फैलगये थे और दुःशासन के खींचने के कारण से काँप रही थी क्रोध करके धीरेसे बोली ३४ कि इस सभा में सब बड़े बूढ़े गुरुकी समान सब शास्त्र जानने वाले बैठेहुये हैं उनके आगे मैं इस प्रकार से क्योंकर जासकती हूं अरे निर्दयी! अरे नीच! मुझको नंगी क्यों करताहै और क्यों खींचताहै जो इन्द्र भी तेरी सहायताको आजावेगा तो इन राजपुत्रों के क्रोध करनेपर तू नहीं बचेगा ३५।३६ अरे दुष्ट! इस समय युधिष्ठिर धर्म के विचार में है जोकि बड़ा सूक्ष्म है उस धर्म को वही लोग जानते हैं जिनकी बड़ी सूक्ष्म बुद्धि होती है सो मैं उस युधिष्ठिर में सिवाय गुणों के दोष तो यत्किंचित् भी नहीं देखती हूं ३७ हाय! तू मुझको इस रजस्वलाकी अवस्था में कौरवों के सामने खींचेहुये लिये जाता है इनमें से इस बात को देखकर किसीको लज्जा नहीं आती है मुझे अब निश्चय होगया कि ये सब भी तेरी ही सलाह में हैं ३८ देखो सब कौरव इस अधर्म और मर्यादारहित कामको देख रहे हैं और कौरवोंको धिक्कारहै निश्चय अब इन सब भरतवंशियों का धर्म और चलन नष्ट होगयाहै ३९ आज द्रोणाचार्य, भीष्म, विदुर और धृतराष्ट्र सब पराक्रमरहित होगये हैं जो कुरुवंशियों में वृद्ध और मुख्य होकर ऐसा अधर्म देखतेहैं ४० वैशंपायनजी बोले हे राजा जनमेजय! इसके पीछे द्रौपदी ने उक्त प्रकार से कह २ कर अपने पतियोंकी ओर क्रोधसे कटाक्ष करके देखा उस कटाक्षों को देखकर सब पांडव जो क्रोध में भरेहुये थे क्रोधसे महादीप्त होगये ४१ और उनको ऐसा दुःख हुआ कि ऐसा राज्य और सर्व खजाने का भी नहीं हुआ था ४२ दुःशासन ने द्रौपदी को अपने दीन पतियों की ओर देखते हुये देखकर उसके बाल पकड़कर उसे हिलाया और बड़े शब्द से हँसकर कहा अरे दासी! अरे दासी! ४३ यह देखकर कर्ण ने भी हँसकर उस बातको माना और सुबल के पुत्र राजा कंधार ने दुःशासनकी बड़ाई की ४४ उस समय कर्ण दुर्योधन और दुःशासनको छोड़कर जितने सभामें बैठेहुये मनुष्य थे सबको बड़ा दुःख हुआ ४५ उस समय भीष्मजी द्रौपदी से बोले कि हे सुन्दरि! यद्यपि निर्द्धनी दूसरे के धन को जुए में दावँ पर नहीं लगा सकता है परंतु स्त्रीको अपने पति के वशमें समझकर धर्मकी सूक्ष्मताको विचारकर मैं तेरे प्रश्नका ठीक २ उत्तर नहीं दे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सकता हूं ४६ हां युधिष्ठिर ने यह तो सबके सामने कहा था कि पहिले मैं जीतागया हूं परन्तु युधिष्ठिर चाहे सब पृथ्वी छोड़दे परन्तु धर्मको नहीं छोड़ेगा इससे मैं तेरे प्रश्नका क्या उत्तर दूं ४७ यह शकुनि जुआ खेलने में अपनी समान दूसरा नहीं रखताहै युधिष्ठिरने तुझे दावँ पर इसी की प्रेरणासे लगाया था परन्तु यह कहता है कि तू छलसे दावँ पर नहीं लगाई गई इससे मैं तेरे प्रश्नका यथोचित उत्तर नहीं देसकता हूं ४८ यह सुनकर द्रौपदी बोली इस राजाने जो जुआ खेलना नहीं जानता है दूसरों की प्रेरणासे जुआ खेलकर इन नीच दुष्टात्मा और जुआ खेलने को अच्छा जाननेवाले ज्वारियों के कहने से मुझे क्यों सभामें बुलवाया है ४९ और युधिष्ठिर जो सब पांडव और कौरवों में श्रेष्ठ हैं इन नीच और छलसे खेलनेवाले ज्वारियों से जुआ खेलकर अपने को हारने पर मुझे क्योंकर हारकर इनको दे सकते हैं ५० सो मैं इन सब कौरवोंसे जो सब पुत्र और पुत्रोंकी स्त्रियों के स्वामी हैं अपने उक्त प्रश्न को पूछती हूं सबजने इसको विचारकर ठीक २ कहैं ५१ वैशम्पायनजी बोले हे राजा जनमेजय! उस समय उस दीन वचन कहती रोती और अपने पतियोंकी ओर देखतीहुई द्रौपदी से दुःशासन ने बहुत परुष और कठोर वचन कहे ५२ और भीमसेन ने द्रौपदीको जो दुःखके योग्य न थी और जिसका उत्तरीय वस्त्र गिरपड़ा था खैंचीहुई देखकर युधिष्ठिरपर क्रोध किया ५३॥

इति श्रीभाषामहाभारते सभापर्वणि सप्तषष्टितमोऽध्यायः ६७॥

अरसठवां अध्याय।

भीमसेनका युधिष्ठिर पर कोप करना और दुःशासन का द्रौपदी को सभामें लेजाना द्रौपदी का सभामें अपने जीते जाने अथवा न जीते जाने का प्रश्न करना उसका उत्तर न मिलना और दुःशासन का द्रौपदी को नंगा करने को उसका वस्त्र खींचना उस समय द्रौपदी का कृष्णचन्द्र को याद करना और कृष्णचन्द्रका वहां गुप्त आना और द्रौपदीकी लज्जा रखना॥

भीमसेन बोला हे युधिष्ठिर! ज्वारियों के घरमें जो कोई दासी भी होतीहै तो उसपर भी दया करके उसको जुएमें दावँ पर नहीं लगाते हैं १ राजा काशी आदिने जो जो धन रत्न और और द्रव्य भेंट किये थे २ उनको और सब वाहन, शस्त्र, राज्य और हम सब और अपने आपको जिनको इन छलियोंने छलसे आपसे जीत लिया है जुए में दावँ पर लगाते हुये देखकर मुझको क्रोध

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नहीं हुआ क्योंकि आप इन सबके ईशहैं परन्तु आपने जो द्रौपदीको दावँ पर लगाया यह बड़ा मर्यादा के विपरीत काम किया ३। ४ यह द्रौपदी जो दुःखके योग्य नहीं है पाण्डवों से विवाहे जाने पर आपके कारण से इतना क्लेश पारही है ५ इस कारणसे मैं अब तुमपर क्रोध करता हूं और तुम्हारी दोनों भुजाओं को अग्नि में जलाऊंगा हे सहदेव ! उठ और अग्नि लेआ ६ यह सुनकर अर्जुन बोला कि हे भीमसेन ! तुमने ऐसी बात जैसी अब कही है कभी नहीं कही थी हम जानते हैं कि इन निर्दयी शत्रुओं ने तुम्हारे धर्म और गौरव को बिगार डालाहै ७ तुमको धर्म पर रहना उचित है भला ऐसा कौन होगा जो धर्मात्मा और शीलवान् बड़े भाई को छोड़कर जैसा मनमें आवे वैसा करे ८ और जो शत्रुके बुलाने पर राजाने क्षत्रियोंका धर्म विचारकर यह जुआ खेला है वह भी कीर्तिका करनेवाला है ९ भीमसेन बोला कि हे अर्जुन ! तू सच कहता है जो मैं इस प्रकार का धर्म न समझता होता तो इनकी दोनों बाहों को अवश्य अग्नि में जलादेता १० वैशम्पायनजी बोले हे राजा जनमेजय ! इसके पीछे विकर्ण नामी धृतराष्ट्र का पुत्र पाण्डवों को दुःखी और द्रौपदी को क्लिश्यमान देखकर कहने लगा ११ कि हे राजा लोगो ! जिस बात को द्रौपदी पूछती है उसको विचारकर स्पष्ट कहो नहीं तो वचनके विवेक न करने से नरकगामी होगे १२ हमारे कुल में जो वृद्धलोग भीष्मपितामह धृतराष्ट्र और विदुरजी हैं उन्होंने और हम सबके गुरु द्रोणाचार्य और कृपाचार्यने कुछ उत्तर नहीं दिया १३। १४ इससे आप सब राजालोग जो दिशा दिशासे आकर यहां इकट्ठे हुयेहैं काम और क्रोधको छोड़कर अपनी अपनी बुद्धि से विचार कर जैसा उचित हो वैसा उत्तर दीजिये १५ देखिये इस द्रौपदी ने आपसे वारंवार इस प्रश्नको किया है सो आपको विचारकर उसका उत्तर ही देना उचित है १६ इस प्रकारसे विकर्ण ने बहुतसी बातें उन राजाओं से कहीं परन्तु किसी ने कुछ बुरा भला जवाब नहीं दिया १७ तब विकर्ण श्वास ले ले कर और हाथ मल मलकर कहने लगा १८ कि हे राजाओ ! तुमलोग स्पष्ट कहो चाहे मत कहो मेरी समझ में जैसा कुछ उत्तर आता है वह मैं कहता हूं १९ राजा के व्यसन अर्थात् शौक चार हैं मृगया अर्थात् शिकार खेलना १ मद्यपान २ पाँसोंका खेल ३ और स्त्रीभोग ४। २० इन चारों कर्मों में राजा सदैव धर्म मार्गको छोड़कर बर्ताव करता है और इन कर्मोंमें लिप्त होने पर जो कुछ काम,

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

राजा करता है उसको कोई नहीं मानता है २१ इस खेल में युधिष्ठिर को ज्वारियोंने खेलनेको बुलाया था अपने आप युधिष्ठिर खेलने नहीं आया और जिस समय युधिष्ठिर खेलमें सर्वस्व हारकर अपने आपको भी भाइयों सहित हारगया उस समय उस जुएकी आगमें इसने शकुनि आदि और खिलाड़ियों की प्रेरणा से द्रौपदी को जो साधारणमात्र पांचों पांडवोंकी पत्नी है दावँ पर लगा दिया इससे मेरे विचार में द्रौपदी नहीं जीती गई २२।२४ यह सुनकर सभामें बैठेहुये मनुष्य विकर्णकी प्रशंसा और शकुनि की निन्दा कर करके बड़ा शब्द करने लगे २५ जब वह शब्द बन्द होगया तब कर्ण क्रोधित होकर विकर्णकी बांह पकड़कर कहनेलगा २६ कि हे विकर्ण! तू बड़ी विपरीत बात कहता है हम जानते हैं कि जैसे अरणीकाष्ठसे अग्नि उत्पन्न होकर उसी काष्ठको जला देती है उसी प्रकार से तू भी जिस कुलमें उत्पन्न हुआहै उसीको नाश करना चाहता है २७ देखिये सब बड़े २ लोग यहां बैठेहुये हैं वे सब द्रौपदी को जीती हुई मानकर उसके बार बार पूछने पर भी कुछ नहीं कहते हैं २८ तू अज्ञान बालक होकर क्यों निकला पड़ता है और वृद्धोंकी तरह बोलताहै २९ तेरा यह कहना कि द्रौपदी जीती नहीं गई है केवल तेरे धर्म न जानने का कारणहै ३० भला हमें भी तो बता कि तू द्रौपदी को विना जीती क्योंकर समझता है इस पांडव युधिष्ठिर ने सब सभाके सामने सब धन दावँ पर लगा दिया क्या द्रौपदी सब धनमें नहीं है जो तू उस को विना जीती हुई कहता है ३१।३२ जब पांडवों ने आपही कहदिया और आज्ञा दे दी फिर कौनसी बात ऐसी रही जिससे तैंने उसको विना जीती समझा ३३ और जो तू इस द्रौपदी को एक वस्त्र पहिरे हुये सभा में लाना अधर्म जानता है तो उसका उत्तर यह है ३४ कि देवताओं ने स्त्रीका पति एकही कहाहै इससे जो स्त्री एक पतिसे दूसरा पति भी करती है वह बंधकी कहलाती है सो द्रौपदी तो अनेक पतियों से रमण करती है इसका सभामें लाना और एक वस्त्र पहिरे हुये होना तो कुछ बात नहीं है जो इसको नंगा भी कियाजावे तो भी कुछ आश्चर्य की बात नहीं है ३५।३६ शकुनि ने इन सब पाण्डव और द्रौपदी को सब धन सहित धर्म से जुये में जीता है ३७ सो हे दुःशासन यह विकर्ण तो अज्ञानी है तुम इन पाण्डव और द्रौपदी के वस्त्रों को भी उतार लो ३८ यह सुनकर सब पाण्डवोंने अपने अपने वस्त्र उतारकर अलग रख

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दिये और सभामें बैठगये ३९ और दुःशासन बलसे द्रौपदी के वस्त्रों को खैंच कर नंगी करनेलगा ४० वैशंपायनजी बोले हे राजा जनमेजय ! उस समय द्रौपदी हरिका स्मरण करके कहने लगी हे गोविंद ! हे द्वारकावासी ! हे कृष्ण ! हे गोपीजनप्रिय ! हे केशव ! हे नाथ ! हे रमानाथ ! हे व्रजनाथ ! हे आर्त्तिनाशन ! हे जनार्दन ! हे महायोगी ! हे विश्वके अंतर्यामी ! हे विश्वकर्त्ता ! क्या तुम मेरे इस दुःखको नहीं जानते हो मैं तुम्हारी शरणहूं मेरी रक्षा कीजिये और इस कौरव-रूपी समुद्र में डूबती हुई को बाहर निकालिये ४१।४३ हे जनमेजय ! द्रौपदी इस प्रकारसे कृष्णचन्द्र का स्मरण कर करके अपना मुख ढांपकर बड़े दुःखसे विलाप करने लगी ४४ उसकी आरतवाणी को सुनकर श्रीकृष्णचन्द्र गद्गद होगये और अपनी कमलासन शय्या को छोड़कर तुरन्त द्वारका से द्रौपदी के पास आनपहुँचे ४५ जब उसका धर्मरूपी वस्त्र जिसको वह पहिरेहुये थीं गिरपड़ा तब कृष्णचन्द्रने उसको नाना प्रकार के उत्तम वस्त्रों से ढक दिया ४६ ज्यों ज्यों दुःशासन उसके वस्त्र को खींचता जाता था त्यों त्यों श्वेत काले पीले अनेक रंगों के वस्त्र निकलते आते थे यहांतक कि द्रौपदी के धर्म के कारण से सैकड़ों वस्त्र प्रकट होगये ४७ । ४८ उस समय चारों ओरसे बड़ा हलहला शब्द होने लगा और सब राजा लोग दुर्योधन की निन्दा कर करके द्रौपदी की प्रशंसा करने लगे ४९ और भीमसेन ने अपने हाथ से हाथ मल कर सब राजाओं के बीचमें यह सौगंद खाई और कहा ५० कि मैं सब राजाओं को सुनाकर प्रतिज्ञा करता हूं कि युद्ध में मैं इस नीच और पापी दुःशासन के हृदय को फोड़कर इसका लोहू पीऊंगा आजतक ऐसी प्रतिज्ञा न किसी ने की है न कोई करेगा परन्तु जो मैं इस अपनी प्रतिज्ञा को सत्य न करूं तो मुझको मेरे पहिले पुरुषाओं की गति न मिले ५१ । ५३ वैशंपायनजी बोले हे राजा जनमेजय ! भीमसेन की भयानक प्रतिज्ञा को सुनकर सब राजा लोग उसकी प्रशंसा करके दुर्योधन की निन्दा करने लगे ५४ इसके पीछे जब वस्त्रों का ढेर छकड़े के अनुमान होगया तब दुःशासन वस्त्र खींचते खींचते थककर बैठ गया ५५ और सभा में बैठेहुये राजालोग पाण्डवों की गति को देखकर धिक्कार दे दे कर बड़ा शब्द करने लगे कि जिसके सुनने से रोम खड़े होगये ५६ इसके पीछे सुजन मनुष्यों ने धृतराष्ट्र की निन्दा करके पुकार कर कहा कि बड़े दुःखकी बात है कि द्रौपदी के प्रश्न का उत्तर अभीतक

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कौरवों ने स्पष्ट नहीं दिया ५७ और विदुरजी ने सब सभावालों को जो एक २ दो दो करके चलने लगे थे रोककर दोनों हाथ उठाकर पुकार कर कहा ५८ कि देखो द्रौपदी अपना प्रश्न करके अनाथ की तरह रो रही है सो तुम्हारे स्पष्ट उत्तर न देने के कारण से धर्मपीड़ा पारहा है ५९ जो मनुष्य दुःखी और पीड़ावान् होता है वह सभा में आता है और सभा के मनुष्य अपने सत्य और धर्म से उसके दुःखको दूर कियाकरते हैं ६० इससे मेरी प्रार्थना है कि इस सभा के श्रेष्ठ मनुष्य इस धर्मरूपी प्रश्नका उत्तर काम क्रोध और बलको छोड़कर सत्य २ देवें ६१ जैसे विकर्ण ने अपनी बुद्धिके अनुसार उत्तर दिया है इसी प्रकार से आप लोग भी अपनी २ बुद्धि के अनुसार इसका उत्तर दीजिये ६२ जो सभामें बैठनेवाले धर्मदर्शी मनुष्य किसी प्रश्नका स्पष्ट उत्तर नहीं देते हैं उनको झूंठ बोलनेका पाप लगता है ६३ और जो मनुष्य धर्मदर्शी होकर सभामें बैठकर धर्मविपरीत बात कहता है उसको मिथ्या बोलने का पूरा २ पाप लगता है ६४ देखो हम अब तुमको अंगिरावंशी सुधन्वा मुनि और प्रह्लाद का संवाद जो इस समय के योग्य है सुनाते हैं ६५ प्रह्लाद नामी एक दैत्यों का राजा था उसका विरोचन नामी एक पुत्र था एक समय वह अंगिरावंशी सुधन्वा मुनि के पास उनकी कन्या को मांगने गया ६६ उस समय केशिनी नाम कन्याने उन दोनों अर्थात् सुधन्वा और विरोचन से पूछा कि तुम दोनों में से कौन श्रेष्ठहै वे दोनों अपने २ को श्रेष्ठ बतानेलगे और दोनोंने प्रण किया कि जो हारजावे अर्थात् जो एककी अपेक्षा में दूसरा श्रेष्ठ न ठहरे वह दूसरे को मार डाले ६७ तब वे दोनों विवाद करतेहुये प्रह्लाद के पास गये और उससे पूछा कि आप सच २ कहिये कि हम दोनों में से कौन श्रेष्ठहै ६८ यह सुनकर प्रह्लाद डरकर सुधन्वा को देखने लगा तब सुधन्वाने क्रोधित होकर कहा कि जो तू झूठ बोलेगा अथवा प्रश्नका उत्तर न देगा तो इन्द्र अपने वज्र से तेरे शिर के सौ टुकड़े करेगा ६९।७० यह सुनकर प्रह्लाद डरके मारे इस प्रकारसे कांपनेलगा जैसे हवासे पीपलका पत्ता हिलताहै और कश्यपजी के पास जाकर पूछने लगा ७१ महाराज आप इस लोकमें देवता असुर और ब्राह्मण सबके कर्मोंको जानते हैं इससे इस धर्मसंकटमें मुझे यह बताइये ७२ जो मनुष्य प्रश्नका उत्तर न दे अथवा दे भी तो विपरीत उत्तर दे तो उसकी कैसी गति होती है ७३ कश्यपजी बोले कि जो कोई जान बूझकर प्रश्नका उत्तर स्पष्ट नहीं देता है

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उसकी आत्मा वरुणकी सहस्र पाशों से बांधी जाती है ७४ और जो साक्षी होकर दोनों ओर मिलकर ठीक २ नहीं कहता है उसकी भी यही गति होती है ७५ जब एक वर्ष होजाता है तब उसकी एक पाश छूटती है इसी प्रकार से सहस्र वर्षों में वह उन पाशों से छूटता है इससे जो सत्यवादी हैं सो सत्य ही सदैव कहदेते हैं ७६ जिस सभा में धर्म की बातको अधर्म की बातोंसे और की और कह देते हैं उस सभा के बैठनेवाले धर्म को दूर करने के कारणसे पाप के भागी होते हैं ७७ और बुरे को बुरा न कहने के कारण से आधा पाप सभापति को चौथाई पाप करनेवाले को और चौथाई सभामें बैठनेवालों को लगता है ७८ और जिस सभा में बुरे को बुरा कहकर निन्दा करते हैं उस सभा के बैठनेवाले पापसे छूटजाते हैं और वह पाप केवल करनेवाले ही को लगता है ७९ सो हे प्रह्लाद जो मनुष्य पूछेजाने पर धर्म के विपरीत बात कहता है उसकी अगली और पिछली सात २ पीढ़ी और सब कियेहुये शुभकर्म नष्ट होजाते हैं ८० देवतालोग इन नीचे लिखेहुये दुःखों को एकसा ही जानते हैं अर्थात् जिसका धन जाता रहता है, जिसका पुत्र मरगया है, जो ऋणी है, जिसका काम बिगड़ गया है, जिस स्त्री का पति मरगया है, जिसको राजा ने ग्रस्त अर्थात् गिरफ़्तार किया है, जिस स्त्री के पुत्र नहीं है, जिसको व्याघ्र ने घेर लिया है, जिस स्त्रीके सौत है और जिसको साक्षी ने मारा है ८१।८३ सो जो मनुष्य झूठ बोलता है उसको ये ऊपर लिखेहुये सम्पूर्ण दुःख प्राप्त होते हैं और साक्षी अर्थात् गवाह दो प्रकार के होते हैं एक तो आँख के देखनेवाले दूसरे कान से सुननेवाले ८४ इस कारण से साक्षी को सदैव सत्य ही बोलना चाहिये सत्य बोलने से उसका धर्म और अर्थ नहीं बिगड़ता है ८५ कश्यप जी की उक्त बात को सुनकर प्रह्लाद ने अपने पुत्र विरोचन से कहा कि सुधन्वा तुझसे श्रेष्ठ है और सुधन्वा का पिता अंगिरा ऋषि और उसकी माता मुझसे और तेरी माता से श्रेष्ठ है इससे सुधन्वा अब तेरे प्राणोंका स्वामी है ८६ यह सुनकर सुधन्वा बोला कि हे प्रह्लाद तुमने पुत्रके स्नेह को छोड़कर धर्मसे सत्य को नहीं छोड़ा इससे अब मैं आज्ञा देता हूं कि तेरा यह पुत्र सौ वर्षतक जिये मैं हारने के कारण से इसको नहीं मारूंगा ८७ विदुरजी बोले हे राजाओ! इसी प्रकार से तुम सब भी धर्म के अनुसार द्रौपदी के प्रश्नका ठीक २ उत्तर दो ८८ वैशम्पायनजी बोले हे राजा जनमेजय! विदुरजीकी बात को सुनकर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

किसीने कुछ उत्तर नहीं दिया इसके पीछे कर्ण ने दुःशासन से कहा कि इस द्रौपदी दासीको घर लेजाओ ८९ यह सुनकर दुःशासन उस कंपित लज्जित और विलाप करती हुई द्रौपदी को खींचकर लेजाने लगा ९० ॥

इति श्रीभाषामहाभारते सभापर्वणि अष्टषष्टितमोऽध्यायः ६८ ॥

उनहत्तरवां अध्याय।

द्रौपदी का विलाप करना और कहना कि मेरे प्रश्नका उत्तर मिले और भीष्मजी का यह कहना कि जो उत्तर युधिष्ठिर देवैं वही प्रमाण है ॥

द्रौपदी उस समय बोली कि अरे दुष्ट दुःशासन! जबतक मेरे प्रश्न का उत्तर न मिले तबतक दया कर १ मैं इन कौरवों की सभा में दुःशासन से अत्यन्त विह्वल और दुःखी होरही हूं कौरवों को मैं नमस्कार करती हूं मेरा अपराध क्षमा हो मैंने पहले नमस्कार नहीं की थी इसके पीछे वह द्रौपदी जो दुःख के योग्य न थी पृथ्वीपर पड़ी हुई विलाप करने लगी २। ३ और कहने लगी कि मुझको केवल स्वयंवर में ही राजालोगोंने देखा था उसके पहले और पीछे किसी ने भी किसी स्थानपर नहीं देखा सो अब मैं सभा में पड़ी हुई हूं ४ हाय! मुझको कभी सूर्य और वायु ने भी घरमें नहीं देखा था अब मुझको सभा में सैकड़ों मनुष्य देख रहे हैं ५ ये पाण्डव मुझे वायु भी स्पर्श करती थी तो नहीं सहसक्के थे हाय अब वेही पाण्डव इस दुरात्मा के हाथ से मेरी ऐसी गति देख रहे हैं ६ हाय मैं इन कौरवों की पुत्रवधू और इस दुःखको सहने के योग्य नहीं हूं सो ये कौरव भी काल की विपरीतता से मेरी यह गति अपनी आँखों से देख रहे हैं ७ इससे और क्या बुरी बात होगी कि इस सभामें मुझको चारों ओर से सब मनुष्य देखरहे हैं हाय इन राजाओं का धर्म कहां गया पहले धर्मात्मा लोग स्त्री को सभा में कभी नहीं लाते थे ८ हाय कौरवों का सनातन धर्म नष्ट होगया है मैं पांडवों की पटरानी धृष्टद्युम्न की बहिन और कृष्णकी सखी होनेके कारण से सभा में आने के योग्य नहीं हूं ९ सो हे कौरवो! अब यह कौरवों के यशको दूर करनेवाला दुष्ट दुःशासन मुझको बड़ा क्लेश देरहा है मैं उस क्लेशको अब सह नहीं सक्ती हूं इससे मुझको जीती या मरी हुई जानकर जैसा उचित समझो दो में से एक बात कहदो कि मैं दासी हूं कि अदासी मैं फिर उसीके अनुसार करूंगी १०। १२ यह सुन कर भीष्मजी बोले कि हे द्रौपदी! मैं पहले ही कहचुका हूं कि धर्म की गति

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बड़ी सूक्ष्म है उसको महात्मा लोग भी नहीं जानते हैं १३ इस लोक में बलवान् मनुष्य जिस धर्मको मानता है वही धर्म है और उस धर्म की मर्यादपर दूसरा चलनेवाला अधर्मी गिना जाता है १४ इससे मैं तेरे गहन गौरव और सूक्ष्म प्रश्नका उत्तर यथोचित नहीं देसक्ता हूं १५ ये कौरव लोभ और मोह के वश में हो रहे हैं अब निश्चय इनका नाश होगा १६ और तेरे पति ये सब पाण्डव धर्म के मार्गसे अलग होना नहीं चाहते हैं १७ हे द्रौपदी! मैं जानता हूं कि तुझको यहां बड़ा कष्ट होरहाहै परन्तु इस कष्ट पर भी तू अपने धर्म को नहीं छोड़ती है ऐसा काम सिवाय तेरे और कौन करसक्ता है १८ देख ये द्रोणाचार्य आदि वृद्धलोग जो धर्मके जाननेवाले हैं नीचेको मुख किये हुये मुरदे के समान बैठे हुये हैं कहते कुछ नहीं हैं इससे हमारी समझ में यह युधिष्ठिर ही कहै कि तू जीतीगई है या नहीं १९। २०॥

इति श्रीभाषामहाभारते सभापर्वणि एकोनसप्ततितमोऽध्यायः ६९॥

सत्तरवां अध्याय।

दुर्योधन का द्रौपदी से अपना प्रश्न पांडवोंही से पूँछने को कहना और भीमसेन का क्रोध करके उत्तर देना॥

वैशम्पायनजी बोले हे राजा जनमेजय! द्रौपदी अत्यन्त विलाप करती रही परन्तु किसी राजाने दुर्योधन के भयसे कुछ उत्तर नहीं दिया १ दुर्योधन उनको चुप देखकर हँसता हुआ द्रौपदी से बोला २ कि तू अपना यह प्रश्न भीमसेन अर्जुन नकुल और सहदेव से पूँछ वही निश्चय करके इसका उत्तर देंगे ३ जो ये लोग युधिष्ठिर को झूंठा ठहराकर यह कहदें कि युधिष्ठिर तेरा स्वामी नहीं है तौ तू दासीभाव से छुटादी जावेगी ४ अथवा युधिष्ठिर आप ही जो धर्मात्मा और इन्द्रकी तुल्यहै इस प्रश्नके उत्तर में कहे कि मैं द्रौपदी का स्वामीहूं या नहीं इन दोनों बातोंमें से जिसे चाहे तिसे अङ्गीकार कर ५ देख तेरे दुःखके कारण से ये सब कौरव दुःखी होरहे हैं और पांडवों का अल्पभाग्य देखकर कुछ नहीं कहते हैं ६ वैशम्पायनजी बोले हे राजा जनमेजय दुर्योधन की बात को सुनकर सब सभाके मनुष्य ऊँचे स्वर से दुर्योधनकी प्रशंसा करने लगे और प्रसन्न होकर पांडवों की ओर देखने लगे और कहनेलगे कि देखो अब युधिष्ठिर, भीमसेन, अर्जुन, नकुल और सहदेव क्या उत्तर देते हैं ७। १० उस समय राजाओं के चुप होने पर भीमसेन अपनी दोनों भुजाओं को पकड़

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कर बोला कि हे दुर्योधन! जो हमारा यह बड़ा भाई युधिष्ठिर हमारे कुलका स्वामी न होता तो हम तेरे इस दोषको कभी क्षमा नहीं करते ११। १२ हमारे पुण्य तप और प्राणोंका यही स्वामी है जो यहअपने को हारा हुआ माने तो हम सबको भी जीता हुआ समझो १३ जो मनुष्य इस प्रकार से द्रौपदी के बालों को खींचे और पृथ्वी पर डालकर पैर लुआवै वह मेरे हाथों से जीता हुआ किसी प्रकार से नहीं बच सक्ताहै १४ देखो ये मेरी दोनों भुजा लम्बी चौड़ी परिघकी समान हैं जो इन्द्र भी इन भुजाओं के बीचमें आजावै तो वह भी नहीं बच सक्ताहै १५ परन्तु क्या कहूं मैं अब धर्म के बंधनमें पड़ा होने और युधिष्ठिर के गौरव और अर्जुन के रोकने के कारण से इस संकट के पार नहीं होसक्ताहूं १६ नहीं तो युधिष्ठिर जो आज्ञा दे देवें तो अभी इन धृतराष्ट्रके पुत्रोंको इस प्रकारसे पीसकर मारडालूं जैसे सिंह नीच मृग को मारडाले १७ यह सुनकर भीष्म द्रोणाचार्य और विदुरजी बोले कि तुम क्षमा करो तुम इसी योग्य हो १८॥

इति श्रीभाषामहाभारते सभापर्वणि सप्ततितमोऽध्यायः ७०॥

इकहत्तरवां अध्याय।

भीमसेनका युद्धमें दुर्योधनकी जाँघ तोड़नेका प्रण करना कौरवोंका द्रौपदीके साथ बहुत अनीति करना उस अनीतिसे धृतराष्ट्र की सभाके पास उत्पातसूचक गीदड़ोंका बोलना उसको सुनकर धृतराष्ट्रका द्रौपदीको वर देना और पांडवोंका दासभावसे छूटना॥

कर्ण बोला कि इस सभामें भीष्म विदुर और द्रोणाचार्य ये तीनों धर्मवान्हैं क्योंकि ये तीनों अपने स्वामी को बड़ा दुष्ट बताते हैं और पाप करने से नहीं डरते हैं १ हे द्रौपदी! शिष्य, अस्वतंत्र स्त्री, दासकी स्त्री और दासका सब धन यह स्वतंत्र नहीं होतेहैं इससे तू दुर्योधन के घरमें रहकर सब परिवारकी सेवा कर अब पांडव तेरे स्वामी नहीं हैं ये धृतराष्ट्र के सब पुत्रही तेरे स्वामी हैं २।३ और इन राजपुत्रों में से जिसको चाहे उसीको वरले जिससे तू दासीभावसे मुक्त होजावे क्योंकि जिस दासीके बहुतसे पति होते हैं वह दासी निंदित होतीहै ४ ये युधिष्ठिर आदि पांचों पांडव हारकर दास होगये हैं तू भी इनकी स्त्री होनेसे दासी है इससे ये पांडव अब तेरे स्वामी नहीं रहे ५ जो ऐसा नहीं होता तो क्या ये पांडव जिन्होंने तुझको जुए में हारदिया है पराक्रम और यत्न न करते ६ वैशम्पायनजी बोले हे राजा जनमेजय! भीमसेन कर्णकी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उक्त बातको सुनकर क्रोध के मारे भयानक स्वरूप होगया और लाल लाल आँखें निकालकर धर्म की फाँसीमें बँधा हुआ होनेके कारणसे गरम श्वास ले ले कर कहने लगा ७ कि हे युधिष्ठिर ! मैं इस सूतके बेटेपर क्रोध नहीं करता हूं क्योंकि यह सत्य है कि हम दास होगये हैं परंतु जो तुम द्रौपदीको दावँपर लगा कर जुआ न खेलते तो शत्रु हमसे ऐसे क्यों कहते ८ वैशम्पायनजी बोले हे राजा जनमेजय ! दुर्योधन भीमसेनकी बातको सुन राजा युधिष्ठिरसे जो अचेत और चुप बैठा था कहने लगा ९ कि ये चारों भाई अर्थात् भीमसेन अर्जुन नकुल और सहदेव तुम्हारे आज्ञाकारी हैं इससे तुम द्रौपदीके प्रश्नका उत्तर दो कि तुम उसको जीती हुई मानते हो या नहीं १० यह कहकर दुर्योधन ने जो ऐश्वर्य के मदसे मोहित होरहा था कर्णकी ओर इशारा करके और मुसकरा के द्रौपदीको अपनी जाँघ जो केलेके खंभ हाथीकी सूंड़ और वज्रके समान गौरवयुक्त थी वस्त्रको हटाकर दिखलाई ११। १३ यह देखकर भीमसेन ने अपनी लाल २ आँखें निकालकर सब राजाओंको सुनाकर कहा कि जो मैं तेरी इस जाँघको युद्धमें गदा मारकर न तोड़डालूं तो मुझको पितृलोक न मिले १४। १५ उस समय भीमसेनके कान नाक आदि स्थानों में से क्रोधकी अग्नि इस प्रकार से निकलने लगी जैसे जलते हुये वृक्षके कोटर अर्थात् खवालों में से अग्नि निकलती है १६ इसके पीछे विदुरजी बोले कि हे प्रतीपवंशी राजाओ ! अब भी समझो भीमसेनका बड़ा डर है इन भरतवंशियों की मति तो देवताओं ने पहिले ही हरली है जिसके कारण से ऐसी २ अनीति करते हैं १७ हे दुर्योधन ! यह जुआ मर्यादा से आगे बढ़गया जिसके कारण से तुम स्त्री को सभा में लाकर विवाद कररहे हो और कुमंत्र ही करते चलेजाते हो मुझे तुम सबका कल्याण दिखाई नहीं देता है १८ हे कौरवो ! आप लोगों को इस धर्मको समझना उचित है क्योंकि धर्मको न समझने से सभाको दूषण लगता है जो युधिष्ठिर अपने को विना हारे द्रौपदी को हारदेता तो निस्सन्देह वह उस का स्वामी रहता और ऐसे ज्वारी से धन जीतना जो उस धनका स्वामी नहीं है स्वप्नमें मिलेहुये धनकी समान है इससे तुम लोगोंको राजा कंधारकी सलाह को छोड़कर धर्म से हटना उचित नहीं है १९। २० यह सुनकर दुर्योधन बोला कि अच्छा अब मैं इस झगड़े को भीमसेन अर्जुन नकुल और सहदेव के ही ऊपर डालेदेता हूं येही अपने मुखसे कहदें कि युधिष्ठिर इसका स्वामी नहीं है

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मैं अभी द्रौपदी को दासीभाव से मुक्त करदूंगा २१ यह सुनकर अर्जुन बोला कि ये युधिष्ठिर हम सबके स्वामी थे परन्तु तुमलोग इस बातको समझो कि अपने को हारनेपर किसी के स्वामी रहे २२ वैशम्पायनजी बोले हे राजा जनमेजय! इसके पीछे धृतराष्ट्र के यज्ञस्थान के निकट गीदड़ बड़े शब्द से रोने लगे कि जिसको सुनकर भयानक पक्षी बोलने और गधे रेंकने लगे २३ उस शब्दको सुनकर विदुर भीष्म द्रोणाचार्य और कृपाचार्य यह कहनेलगे कि कल्याण हो कल्याण हो २४ और विदुरजी और गांधारी ने धृतराष्ट्र के पास जाकर उस उत्पातको जनादिया वह सुनते ही कहनेलगा २५ कि अरे दुर्बुद्धि दुर्योधन! तू बड़ा नीच है जो श्रेष्ठ कुरुवंशियों की सभामें स्त्री से बात करता है विशेष कर के इस धर्मपत्नी द्रौपदी से २६ वैशम्पायनजी बोले हे राजा जनमेजय! धृतराष्ट्र दुर्योधन से इस प्रकार से कहकर द्रौपदी के पास आये और शांतिपूर्वक कहने लगे २७ कि हे द्रौपदी! तू बहुओं में सबसे श्रेष्ठ सती और पतिव्रता है जो कुछ तेरी इच्छा हो हमसे मांग २८ यह सुनकर द्रौपदी बोली कि जो आप मुझको वरदान देना चाहतेहैं मेरे पति धर्मात्मा युधिष्ठिरको अदास करदीजिये और मेरे मनस्वी प्रतिबिंध पुत्रको कोई दासपुत्र न कहे जैसा वह राजाओं से लालित होकर राजपुत्र कहाता था वैसा ही रहे २९।३१ धृतराष्ट्र बोले कि अच्छा हमने यह वरदान दिया ऐसा ही होगा परन्तु तू एकही वरदान के योग्य नहीं है मैं तुझको और वरदान देना चाहता हूं जो इच्छा हो सो मांग ३२ द्रौपदी बोली अच्छा महाराज भीमसेन अर्जुन नकुल और सहदेव अदास होवें और उनको उनके रथ और धनुष् दे दिये जावें ३३ धृतराष्ट्र बोले कि ऐसा ही होगा अब तू तीसरा वर मुझसे और मांग तुझे दो वरदान देने से मेरी तृप्ति नहीं हुई है क्योंकि तू धर्मचारिणी और मेरी सब बहुओंमें श्रेष्ठ है ३४ यह सुनकर द्रौपदी बोली कि महाराज बहुत लोभ करने से धर्मका नाश होता है इससे मैं अब तीसरा वर मांगना नहीं चाहती हूं ३५ शास्त्र में वैश्यको एक क्षत्रियको दो राजाको तीन और ब्राह्मणों को सौ वरतक लिखा है सो ये मेरे पति अब दासभावसे छूटकर शुभ कर्म करके बहुत कल्याण पायेंगे ३६। ३७॥

इति श्रीभाषामहाभारते सभापर्वणि एकसप्ततितमोऽध्यायः ७१ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बहत्तरवां अध्याय।

भीमसेनका कर्णकी बात सुनकर क्रोध करना और युधिष्ठिरका उसके क्रोधको शांत करना॥

कर्ण बोला कि हमने आजतक जितनी स्वरूपवान् स्त्रियां सुनी हैं उनमेंसे ऐसा कर्म किसी स्त्री का नहीं सुनाहै १ इस द्रौपदीने पांडव और धृतराष्ट्र के पुत्रों के क्रोधको शांत करके पांडवों को महा दुःखरूपी समुद्र में से नौकारूप होकर निकाला है २। ३ वैशम्पायनजी बोले हे राजा जनमेजय! भीमसेन यह बात सुनकर कि पांडवों की गति स्त्री हुई बड़ा क्रोधित हुआ और दुःखी होकर कहने लगा ४ कि हमने देवलऋषिसे सुनाहै कि संतान, शुभकर्म और विद्या ये तीनों लोककी प्रकाश करनेवाली हैं अर्थात् इन्हीं तीनों रूप रखने वाली ज्योति से प्रजा उत्पन्न होती है ५ और ये ही तीनों उन मनुष्यों का जिनकी देह अपवित्रता से छूटी है या जिनको जातिवालों ने छोड़दिया है अथवा जो शून्य स्थान में हैं उपकार करनेवाले हैं ६ सो वह संतान विना स्त्री के कैसे होसक्ती है इस कारणसे स्त्री ही सबकी परमगति है हे अर्जुन! सत्यहै कि जो मनुष्य परपुरुषकी संगतिसे उत्पन्न होवे वह ऐसा क्यों न कहे जैसा कर्ण कहता है ७ अर्जुन बोला कि हे भीमसेन! जो अच्छे पुरुष होते हैं वे नीच आदमी से बात नहीं करते हैं चाहे वह कुछ कहे या न कहे ८ और संतलोग दूसरे के किये हुये उपकार को जानकर सदैव सुकृतही का स्मरण करते हैं और किये हुये वैरको कभी हृदय में नहीं आनेदेते हैं ९ तब भीमसेन बोला कि हे युधिष्ठिर! यहां विवाद वृथा बात करने से क्या लाभ है आप आज्ञा दीजिये तो हम बाहर निकल कर इन सब शत्रुओं को मारकर निर्मूल करदें फिर आप इस पृथ्वी का शासन अच्छी प्रकार से कीजियेगा १०। ११ यह कहकर भीमसेन वहां भाइयों सहित इस प्रकार से देखने लगा जैसे मृगों में सिंह देखता है १२ उस समय भीमसेन युधिष्ठिर के शांतस्वरूप को देखकर दुःखित हुआ और क्रोधके कारण से उसके कान नाक आदि मार्गों से ज्वाला निकलने लगी और प्रलय कालके रुद्र स्वरूपके सदृश उसका मुख भौं आदि के चढ़ाने से ऐसा भयानक होगया कि उसके सम्मुख मनुष्य नहीं देखसकता था १३। १५ तब युधिष्ठिरने उसके ऐसे स्वरूप को देखकर हाथ पकड़कर कहा कि भाई ऐसा मत कहो चुपके होकर बैठो १६ इसके पीछे युधिष्ठिर अपने दोनों हाथ

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जोड़कर धृतराष्ट्र के सम्मुख खड़ा हो गया और कहने लगा १७ ॥

इति श्रीभाषामहाभारते सभापर्वणि द्विसप्ततितमोऽध्यायः ७२ ॥

तिहत्तरवां अध्याय।

धृतराष्ट्रका युधिष्ठिर को शिक्षा करना और युधिष्ठिर का इन्द्रप्रस्थ को बिदा होकर जाना ॥

युधिष्ठिर बोला कि महाराज मेरे लिये क्या आज्ञा है मैं आपहीकी आज्ञा में रहना चाहता हूं १ यह सुनकर धृतराष्ट्रने कहा कि अब तुम निर्विघ्न और कल्याणपूर्वक अपने घरको जाओ और धन सहित आनन्दसे राज्य करो २ और मुझे वृद्ध जानकर मेरी आज्ञाको हितकारी और कल्याणकारी समझो ३ तुम धर्मकी सूक्ष्मगतिको पहिचानते हो और ज्ञानी नम्र और वृद्धोंकी सेवा करनेवाले हो ४ बुद्धिमान् मनुष्यों में सदैव क्षमा रहती है इससे तुम भी अब शांत होकर रहो देखो शस्त्र पत्थर आदि कड़ी वस्तुओं पर नहीं चलता है और जो वस्तु नरम होती है उसको काट डालता है ५ उत्तम मनुष्य वैरको अपने मनमें नहीं रखते हैं और न विरोध करते हैं किन्तु गुणोंपर ही ध्यान करते हैं ६ हे युधिष्ठिर ! जो मनुष्य संत होतेहैं वे दूसरे के वैरको याद करके बदला लेने का उपाय नहीं करते हैं ७ जो मनुष्य बातचीत करने में खोटा वचन बोलते हैं वे महानीच होते हैं और जो उस खोटे वचनको सुनकर खोटा ही उत्तर देते हैं वे मध्यम पुरुष हैं ८ परन्तु जो उत्तम और धैर्यवान् मनुष्य होते हैं वे अप्रिय और मर्म छेदनेवाले वचन कह सुनकर विषाद नहीं करते हैं ९ और जो सन्त लोग हैं वे अपनी आत्माकी समान दूसरे का भला चाहकर सदैव शुभ कर्म करने में मन रखते हैं और जो कोई उनके साथ वैर भी करता है उसको कभी मनपर नहीं लाते हैं १० सच है कि साधुलोग चाहे जैसा हो अपनी मर्यादा से बाहर नहीं होते हैं वैसा ही इस सभामें तुमने भी किया कि अपनी धर्म की मर्यादासे बाहर नहीं हुये ११ सो हे युधिष्ठिर ! तुम अब मुझे वृद्ध अंधे और अपनी माता गांधारी की ओर देखकर इस दुर्योधनके कियेहुये कर्म को अपने मनसे निकाल दो यह जुआ मेरी ही प्रेरणासे हुआ था १२। १३ मुझे पुत्रों का बल अबल और मित्रोंको देखना था तुम कौरवों के राजा हो तुमको किसी बात का शोच करना उचित नहीं है १४ निस्सन्देह हमारे मंत्री विदुर जी बड़े पण्डित और बुद्धिमान् हैं और तुम धर्मात्मा अर्जुन धैर्यवान् भीमसेन

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पराक्रमी और नकुल सहदेव बड़ोंकी शुश्रूषा करनेवाले हैं ईश्वर करै तुम्हारा कल्याण हो तुम्हारी बुद्धि धर्म में रहै और दुर्योधन आदि भाइयों से तुम्हारी प्रीति रहै अब तुम खांडवप्रस्थ को जाओ १५। १६ वैशम्पायनजी बोले हे राजा जनमेजय! उक्त बातों को सुनकर युधिष्ठिरने सब बातों के करनेकी प्रतिज्ञा की और वहां से भाई और द्रौपदी सहित इन्द्रप्रस्थको रथों में सवार हो हो कर चलदिये १७। १८॥

इति श्रीभाषामहाभारते सभापर्वणि त्रिसप्ततितमोऽध्यायः ७३॥

चौहत्तरवां अध्याय।

दुर्योधनका धृतराष्ट्र से अनेक कारण कहकर पांडवोंको फिर जुआ खेलने के लिये बुलवाना॥

उक्त कथाको सुनकर राजा जनमेजय ने वैशम्पायनजी से पूछा कि महाराज जब धृतराष्ट्रने पाण्डवों को सब रत्न देकर चले जानेको आज्ञा दे दी तब धृतराष्ट्र के पुत्रों के मनकी कैसी गति हुई १ वैशम्पायनजी बोले हे राजा जनमेजय! दुःशासन पाण्डवोंको धन सहित जाने की आज्ञा दिया हुआ जानकर महादुःखी हुआ और अपने भाई दुर्योधनके पास जो उसे श्रेष्ठ जानता था जाकर कहनेलगा २। ३ कि देखो भाई किस दुःखसे तो शत्रुको वश में करके हमने धन लिया था परन्तु इस बुड्ढेने सब किया कराया व्यर्थ कर दिया ४ यह सुनकर दुर्योधन शकुनि और कर्ण तीनों पाण्डवों से बदला लेने के लिये धृतराष्ट्र के पास जल्दी से पहुँचे और स्नेह सहित कहनेलगे ५। ६ पहिले दुर्योधन बोला कि हे पिता! आपने जो शुक्रकी कही हुई नीति बृहस्पतिजीने देवताओं से कही थी वह नहीं सुनी है ७ मनुष्यको चाहिये कि अपने अहितकारी शत्रुको युद्ध और पराक्रम करने के पहिलेही जिस उपाय से होसके मारडाले ८ हमारी इच्छा थी कि हम पाण्डवों के धनसे सब राजाओं को अपने वशमें करलें ऐसा करने पर जो पाण्डवोंसे हमसे युद्ध भी होता तो हमारी कुछ हानि नहीं थी ९ भला ऐसा कौन मनुष्य होगा जो विषधारी सांपों को अपने आपको नाश करने के लिये अपने कंधों और पीठपर छोड़ैगा १० सो हे पिता! पाण्डव भी सांपोंकी समान क्रोधित होरहे हैं जिस समय रथों में चढ़कर शस्त्र लियेहुये आवेंगे उसी समय सब को मारकर एक को न छोड़ेंगे ११ देखो अर्जुन चलते समय रथ में बैठकर तरकसों को बांध

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कर बेर २ गाण्डीव धनुष् को उठाता था और चारों ओर श्वास ले ले कर देखता था १२ और भीमसेन भी अपनी भारी गदाको उठाकर रथको जोत कर जल्दी से चलदिया १३ नकुलने भी अपनी ढाल और तलवार ले ली और सहदेव और युधिष्ठिर यों ही गये हैं उनकी चेष्टा से ऐसा जानाजाता है कि वे रथोंको दौड़ाते हुये सेना लेने को गये हैं सेना लाकर अवश्य उत्पात करेंगे क्योंकि हमने उनके साथ जो २ उत्पात किये हैं और द्रौपदीको जो जो क्लेश दिये हैं उनको वे कभी न सह सकेंगे १४। १६ इससे मैं चाहता हूं कि आप फिर उनको लौटाकर जुआ कराइये अब की हम उनसे यह प्रण अर्थात् दावँ बदेंगे कि जो पाँसा डालकर जीते वह दोनों का राज्य करे और हारनेवाला मृगछाला ओढ़कर बारह वर्ष तक वनमें वास करे और तेरहवें वर्ष में गुप्त रहे और जो उस तेरहवें वर्ष में कोई उसको यह जानले कि यह फलाने हैं तो वह फिर बारह वर्ष तक वनमें बसे ऐसा करने से हम पाण्डवों को अपने वशमें करसकेंगे क्योंकि यह शकुनि पाँसों की विद्या को अच्छीतरह से जानता है १७। २१ और जो पाण्डव तेरह वर्ष का व्रत पूरा भी कर आवेंगे तो उतने काल में हम सब मित्रों को वशमें करके और बहुत सी सेनाको आदर सहित इकट्ठी करके हाथों हाथ उनको युद्ध में जीतलेंगे इससे हे पिता! आपको हमारा उक्त कहा करना उचितहै २२। २३ यह सुनकर धृतराष्ट्र बोला कि अभी जाकर पाण्डवोंको जो दूर भी निकलगये हों तो भी शीघ्र लिवा लाओ जिसमें वे आकर फिर उक्त दावँ बदकर जुआ खेलें २४ वैशम्पायनजी बोले हे राजा जनमेजय! इसके पीछे द्रोणाचार्य, सोमदत्त, वाह्लीक, कृपाचार्य, विदुर, अश्वत्थामा, युयुत्सु, भूरिश्रवा, भीष्मपितामह और विकर्ण ने पृथक् पृथक् कहा कि अब जुआ होना उचित नहीं है २५। २६ परन्तु धृतराष्ट्रने उनके कहने पर ध्यान न करके अपने बड़े पुत्रका प्रिय करने के लिये उन पाण्डवों को फिर बुलवाया जो जुआ खेलना नहीं चाहते थे २७॥

इति श्रीभाषामहाभारते सभापर्वणि चतुःसप्ततितमोऽध्यायः ७४॥

पचहत्तरवां अध्याय।

गांधारीका धृतराष्ट्र को समझाकर दुर्योधन को त्यागने का उपदेश करना और कहना न मानकर धृतराष्ट्र का पांडवोंको फिर जुआ खेलनेको बुलवाना॥

वैशम्पायनजी बोले हे राजा जनमेजय! इसके पीछे गांधारी पुत्र के स्नेह

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

से धृतराष्ट्रके पास आई और शोकयुक्त होकर धर्मके अनुसार कहने लगी १ कि आपको वह बात अब समझना चाहिये जो विदुरजी ने दुर्योधन के जन्म लेने के समय कही थी कि इस कुलकलङ्की को त्याग करदो क्योंकि इसने उत्पन्न होते ही गीदड़के रोनेका सा शब्द किया था मुझे दीखता है कि अब कुलका नाश होनेवालाहै आप तो बूढ़े बड़े हैं आप क्यों इन बालकोंकी बातों में आकर गहरे पानी में डूबते हैं २। ४ आपको इस कुल के नाश होनेका कारण बनकर बँधे हुये पुलको गिराना और बुझी हुई अग्नि को जलाना उचित नहीं है ५ भला ऐसा कौन काल का मारा होगा जो शांत हुये पांडवों को फिर कोपित करके अपना नाश कराना चाहे आप वृद्ध हैं आपको बालकों की सी बुद्धि करना उचित नहीं है हां जो दुर्बुद्धि हो उसको तो अलबत्ता शास्त्र का देखना भी गुणकारक नहीं होसक्ता है इससे आप मेरे कहने से इस कुलके नाश करनेवाले दुर्योधनको त्याग दीजिये ६। ८ आपने पुत्रके स्नेह से पहिले इसको नहीं त्यागा था सो अब उसका फल आन पहुँचा है आप तो धर्मात्मा, ब्रह्मज्ञानी और शमपरायण हैं आप अपनी बुद्धिको असावधान न कीजिये जो मनुष्य क्रूर होते हैं उनके घरकी लक्ष्मी शीघ्र नष्ट होजाती है और शीलवान् पुरुषों के घर में लक्ष्मी दिन दिन बढ़कर बेटे पोते तक को मिलती है ९। १० यह सुनकर धृतराष्ट्र बोला कि जो इस कुलका नाश ही होनेवाला है तो मैं उसको नहीं रोकसक्ता हूं जो तू कहती है वह सब होय परन्तु पाण्डव यहां आकर हमारे पुत्रों से जुआ खेलें ११। १२॥

इति श्रीभाषामहाभारते सभापर्वणि पंचसप्ततितमोऽध्यायः ७५॥

छिहत्तरवां अध्याय।

धृतराष्ट्र की आज्ञासे युधिष्ठिरका शकुनि से फिर जुआ खेलना और सम्पूर्ण राज्य आदि हारजाना॥

वैशम्पायनजी बोले हे राजा जनमेजय! इसके पीछे प्रातिकामी धृतराष्ट्र की आज्ञा से पांडवों के पास जो दूर निकल गये थे पहुँचा और कहनेलगा १ आपको धृतराष्ट्रने बुलाया है और यह कहाहै कि सभा में चौपड़ बिछरही है यहां आकर पाँसे फेंककर जुआ खेलो २ यह सुनकर युधिष्ठिर बोला कि मनुष्य को बुरी और भली दोनों प्रकार की गति ईश्वर ही की इच्छा से मिलती है उसको कोई मनुष्य दूर नहीं करसक्ता है इससे यद्यपि मैं जानता हूं कि

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जुआ खेलने में क्षयके सिवाय कोई लाभ नहीं है परन्तु मैं वृद्ध धृतराष्ट्र की आज्ञाको उल्लंघन न करसकने के कारण से जुआ खेलूँगा ३। ४ वैशम्पायन जी बोले हे राजा जनमेजय! जब विपत्ति मनुष्य के निकट आजाती है तब उसकी बुद्धि भी विपरीत होजाती है देखो सुनहरे हरिण का होना असम्भव होने पर भी रामचन्द्र का मन लोभित होगया था ५ पांडव उक्त रीति से कहते हुये और शकुनि के छलको विचारतेहुये जुआ खेलनेको फिर लौट पड़े और हस्तिनापुर में आकर सभामें दैवकी प्रेरणासे सब संसार का नाश करने के लिये फिर जुआ खेलने को बैठगये उनको देख २ कर सब लोग बहुत दुःखी हुये ६। ८ बैठ जाने पर शकुनि बोला कि जो धन वृद्धने छोड़दियाहै उसका हम तुमसे एक दावँ बदकर खेलना चाहते हैं वह यह है कि एक ओर तो दोनों का राज्य और सब धन घोड़ा हाथी बैल बकरी आदि रखदिया जावे और दूसरी ओर बारह वर्ष का वनवास और तेरहवें वर्ष में गुप्त रहना इस नियम से कि उस तेरहवें वर्ष में जो कोई बराबर वाला मनुष्य यह जानलेवे कि ये फलाने हैं तो फिर वह बारह वर्ष तक वनमें वास करै सो हम तुममें से जो जीते सो दोनों ओर का राज्य करे और हारनेवाला हमारे में से हो चाहे तुम मृगचर्म ओढ़कर उक्त रीतिसे वनमें वास करे हे युधिष्ठिर! आओ उक्त दावँ बदकर हमसे जुआ खेलो ९। १५ यह सुनकर सब सभाके मनुष्य ऊपरको हाथ उठा २ कर कहने लगे कि हे धृतराष्ट्र! इन बान्धवोंको धिकार है कोई इस कामसे उत्पन्न होने वाले भय को न जानकर नहीं समझाता है १६। १७ युधिष्ठिर उन मनुष्यों की बात को सुनकर धर्म और लोकलाजके वश में होकर कौरवों का नाश होना निकट जानकर जुआ खेलनेकी इच्छा करके कहनेलगा १८। १९ कि मुझसा धर्मको पालनेवाला राजा जुआ खेलने को बुलाया हुआ क्योंकर लौट सक्ता है अच्छा आवो जुआ खेलें २० यह सुनकर शकुनि बोला कि आप दावँ को फिर समझ लीजिये कि एक ओर तो हम तुम दोनों का राज्य घोड़ा हाथी बैल बकरी और खजाना सहित रक्खा हुआ है और दूसरी ओर बारह वर्षका वनवास और तेरहवें वर्षमें गुप्तवास करना है और जो उस तेरहवें वर्ष कोई बराबर वाला मनुष्य वनवास करने वाले को जान जाय तो वह फिर बारह वर्ष तक वनमें बसे सो हम तुम दोनोंमें से जो हार जायगा वह उक्त रीति से वनवास करेगा और जीतनेवाला दोनों ओर का राज्य करेगा यह सुनकर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

युधिष्ठिर ने एक बारके ही कहने से उस दावँको अंगीकार किया और शकुनि पाँसा फेंककर बोला कि मैं जीता २१। २५॥

इति श्रीभाषामहाभारते सभापर्वणि षट्सप्ततितमोऽध्यायः ७६॥

सतहत्तरवां अध्याय।

दुःशासन और दुर्योधनका पांडवों की हँसी करना और पांडवों का दुर्योधन शकुनि दुःशासन और कर्णके वधकी प्रतिज्ञा करना और पांडवोंका मृगचर्म ओढ़कर वनको चलना॥

वैशम्पायनजी बोले हे राजा जनमेजय! पांडवों ने सर्वस्व हारकर वनको जानेके लिये मृगचर्म लेलिये उस समय उनको राज्यहीन और मृगचर्म लिये हुये वन को जाने के लिये तैयार देखकर दुःशासन कहनेलगा १। २ आहा अब दुर्योधन चक्रवर्ती राजा होगया और पांडव सब हारकर विपत्ति में पड़ गये ३ देवताओंने सब ओर से हमपर कृपा की जो आज हम अपने शत्रुओं से गुणोंमें अधिक और श्रेष्ठ होगये ४ अब पांडव बहुत दिनों तक नरक भोगेंगे और सुख और राज्य से हीन होकर नष्ट होकर फिरेंगे ५ ये ही पांडव थे जिन्होंने धन के मदसे धृतराष्ट्रके पुत्रोंकी हँसी की थी देखो अब ये धन और सर्वस्व हारकर वनको जाते हैं ६ अब इनके सुन्दर वस्त्र और कवचों को उतार कर इन्हें मृगछाला ओढ़नेको दे दो क्योंकि शकुनि से जुये के दावँमें इन्होंने यही प्रण किया था ७ आज हमारी समान इस संसार में कौन है ये पांडव जो सदा विचार किया करते रहते थे अब थोथे तिलोंकी समान पराक्रम हीन हो गये ८ इनके ये मृगछालाके वस्त्र यज्ञमें दीक्षित होकर पहननेके नहीं हैं किन्तु ये मृगचर्म अदीक्षित मनुष्यों केसे हैं ९ राजा द्रुपद तो बड़ा बुद्धिमान् था उस ने यह काम अच्छा नहीं किया जो द्रौपदीसी सुंदर कन्याको इन नपुंसक पांडवोंको ब्याह दिया १० हे द्रौपदी! इन पांडवोंके साथ वन में जाकर तुझ को क्या सुख मिलेगा ये बिचारे धन और स्थानसे हीन होकर मृगछाला ओढ़े हुये आपही दीन होरहे हैं इससे तू हम सब कौरवोंमें से जो क्षमावान् जितेन्द्रिय और धनवान् हैं जिसको चाहे अपना पति कर ले जिसमें तुझे वनका दुःख न सतावे ११। १२ अब ये पांडव ऐसे हैं जैसे थोथे तिल अथवा चमड़े के बनाये हुये मृग अथवा चावल रहित धान १३ सो जैसे थोथे तिलोंको बटोरने से कुछ लाभ नहीं होता है इसी प्रकार से इन पतित पांडवोंकी सेवा करने से तुझको कोई सुख नहीं मिलेगा १४ भीमसेन उस दयाहीन दुःशासन के उक्त

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

परुष वचनों को सुनकर क्रोध से भर गया और उसके पास जाकर उसे इस प्रकार से पकड़कर जैसे सिंह किसी मृगको पकड़ लेवे कहनेलगा १५ कि अरे दुष्ट! अरे पापी! तू ऐसे निष्फल वचन शकुनि की छलकी विद्यासे धन जीतकर कहता है और इन वचनरूपी बाणों से हमारे मर्मस्थानों को छेदे डालता है क्यों घबराता है मैं तेरे भी मर्मस्थानों को युद्धमें काट तेरे क्रोधी और लोभी सब सहायकों को मारकर तुझे इन बातों की याद दिलाऊंगा १६।१८ वैशम्पायनजी बोले हे राजा जनमेजय! वह नीच दुःशासन जिसने लज्जा छोड़ दी थी उस मृगचर्म ओढ़े हुये भीमसेन की उक्त बात को सुनकर तीनबेर गौ २ कह २ कर नाचने लगा जिसके कहनेसे यह प्रयोजन था कि हम तुझे गौ जानकर छोड़े देते हैं १९ यह सुनकर भीमसेन बोला कि अरे दयाहीन! तू क्यों ऐसे परुष वचन बकता है तू छल से धन को जीतकर बरबरा रहा है २० मैं यह सत्य प्रतिज्ञा करता हूं कि युद्ध में मैं तेरी छाती को फाड़कर तेरे लोहू को पीऊंगा और तेरे सब भाइयों को मारकर अपनी छाती ठंढी करूंगा जो ऐसा मैं न करूं तो मुझको जो लोक अच्छे कर्मों के करने से मिलते हैं सो न मिलें २१।२२ वैशम्पायनजी बोले हे राजा जनमेजय! इसके पीछे जब पाण्डव वन को चलने लगे तब दुर्योधन खेल की तरह अपनी चाल भीमसेनकी सी बनाकर चलने लगा २३ तब भीमसेन उसको मुख फेरकर नकल बनाते हुये देखकर कहने लगा कि चाल बनाने से तू भीमसेन नहीं हो सकता है तुझे भाई बेटों सहित मारकर इस बात को याद कराऊंगा और इस तेरी हँसी का उत्तर दूंगा २४ फिर भीमसेन ने सभा से निकलने के समय युधिष्ठिर के पीछे २ चलकर दुर्योधन की हँसी को याद करके और क्रोध को रोककर कहा २५ मैं तो दुर्योधनको मारूंगा अर्जुन कर्ण को मारेगा और इस ज्वारी शकुनिको सहदेव मारेगा और मैं दूसरी यह प्रतिज्ञा भी करता हूं देवता मेरी इस प्रतिज्ञाको युद्धके आनेपर सत्य करें कि मैं दुर्योधन को पृथ्वीपर गिराकर इसके शिरको अपने पावँसे रगड़ूंगा और इस दुरात्मा दुःशासनकी छातीको सिंहके समान फाड़कर इसका लोहू पीऊंगा २६।२९ इसके पीछे अर्जुनने कहा कि हे भीमसेन सत्पुरुषोंका निश्चय बातोंसे नहीं जाना जाताहै अबसे चौदह वर्षके पीछे जो कुछ होगा ३०सो होगा तब भीमसेन बोला कि दुर्योधन शकुनि दुःशासन और कर्ण इन चारों दुरात्माओं के लोहूको पृथ्वी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पीवेगी ३१ तब अर्जुनने भीमसेन को प्रसन्न करनेकी इच्छा से प्रतिज्ञा की कि मैं तुम्हारी आज्ञासे इस नीच और कुबुद्धि कर्ण को और इसके साथी सब राजाओं को जो मेरे सम्मुख आवेंगे मारकर यमलोक में पहुँचाऊंगा ३२।३४ जो आजसे चौदहें वर्ष में यह नीच दुर्योधन हमारे राज्यको हमें न देगा तो निस्संदेह मैं इन सब बातों को सच करके दिखाऊंगा चाहे हिमालय पहाड़ चलनेलगे सूर्य की प्रभा जाती रहे और चन्द्रमा में शीतलता न रहे परन्तु मैं अपनी प्रतिज्ञासे नहीं डोलूंगा ३५। ३६ वैशम्पायनजी बोले हे राजा जनमेजय इसके पीछे प्रतापवान् सहदेव क्रोधसे लाल २ आँखें कियेहुये और सांपकी तरह श्वास लेताहुआ शकुनि को मारनेकी इच्छा से अपनी भुजाओं को पकड़कर कहने लगा ३७। ३८ कि अरे गान्धारदेशी मनुष्यों के यशको दूर करनेवाले शकुनि ये पाँसे जिनके बल तू नाच रहाहै पाँसे नहीं हैं किंतु ये तेरे प्राणको नाश करनेवाले तीक्ष्ण बाणहैं ३९ जो तू क्षत्रियधर्म को छोड़कर युद्धमें भाग न जायगा तो जैसी भीमसेन ने आज्ञा दी है उसी प्रकार से मैं तुझको तेरे भाई बंधु और साथियों सहित मारूंगा ४०। ४१ इसके पीछे सहदेव की प्रतिज्ञा सुनकर नकुलने कहा ४२ कि इन धृतराष्ट्र के पुत्रों को जिन्हों ने कालसे प्रेरित होकर मरने की इच्छा से द्रौपदी को रूखे वचन सुनाये हैं मैं युधिष्ठिर की आज्ञा से मारकर यमलोक में पहुँचाऊंगा और द्रौपदीको प्रसन्न करने के लिये पृथ्वीपर धृतराष्ट्र के पुत्रोंका बीज नाश करदूंगा ४३। ४५ वैशम्पायनजी बोले हे राजा जनमेजय ! इसके पीछे वे लंबी भुजा रखनेवाले पांडव उक्त रीति से प्रतिज्ञा करके धृतराष्ट्र के पास गये ४६ ॥

इति श्रीभाषामहाभारते सभापर्वणि सप्तसप्ततितमोऽध्यायः ७७ ॥

अठहत्तरवां अध्याय।

युधिष्ठिर का भीष्मपितामह आदि सब बड़े बूढ़ों से विदा मांग कर वनको चलना ॥

युधिष्ठिर ने धृतराष्ट्रकी सभामें जाकर कहा कि मैं सब भरतवंशी मनुष्य, भीष्मपितामह, राजा सोमदत्त, राजा वाह्लीक, द्रोणाचार्य, कृपाचार्य, दूसरे राजा अश्वत्थामा, विदुर, धृतराष्ट्र के सब पुत्र, युयुत्सु, संजय और अन्य मनुष्यों से जो इस सभा में बैठेहुये हैं जाने की आज्ञा मांगता हूं और थोड़े दिनों में समय बिताकर फिर आकर आपलोगोंको देखूंगा १। २ वैशम्पायनजी बोले हे राजा जनमेजय ! युधिष्ठिरकी बातको सुनकर किसीने कुछ उत्तर नहीं दिया लज्जासे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सब नीचेको मुख कियेहुये बैठेरहे परन्तु उन सबोंने मनमें पांडवोंको आशीर्वाद दिया ४ इसके पीछे विदुरजीने कहा कि यह कुंती वृद्ध सुकुमारी और सुख भोगने के योग्यहै वन जानेके योग्य नहीं है सो उसको यहीं छोड़ जाओ वह मेरे घर में रहेगी और परमेश्वर तुम्हारा सब तरह कल्याण करे ५। ६ यह सुनकर पांडव बोले कि आप हमारे चचा और बापकी समान हैं हम आपकी शरण हैं जैसा आप कहते हैं वैसा ही होगा आप हमारे परमगुरु हैं और जो कुछ आप हमको आज्ञा दें सो हम करें ७। ८ यह सुनकर विदुरजी बोले कि हे युधिष्ठिर! जिसको कोई अनीति और अधर्मसे जीत लेताहै उसको विपत्ति पाकर दुःखी होना उचित नहीं है ९ तुम तो धर्मको सब प्रकारसे जानते हो यह अर्जुन जय करनेवाला भीमसेन शत्रुओंको मारनेवाला नकुल अर्थ संग्रह करनेवाला सहदेव दंड देनेवाला धौम्य पुरोहित ब्रह्मज्ञानियों में श्रेष्ठ और द्रौपदी धर्मचारिणी है १०। ११ तुम सब आपस में प्रीतिपूर्वक संतुष्ट होकर रहना शत्रु तुम्हारे बीच में फूट न डालने पावे तुमको सब चाहते हैं और तुम्हारे इस जत्थेके कारणसे इन्द्र के समान प्रबल शत्रु भी तुम्हारा कुछ नहीं करसकताहै १२। १३ तुमने पहले हिमालय पहाड़में सावर्ण ऋषि से वारणावत नगरमें व्यासजी से १४ भृगुतुंग पर्वत पर परशुरामजी से दृषद्वती नदीपर शिवजी से अंजन पर्वतपर असित नाम महाऋषिसे कल्माष नदीके किनारे भृगुजीसे और सदैव नारदजीसे शिक्षा पाई है और सिवाय इसके धौम्य ऋषि तुम्हारे पुरोहित हैं सो तुमको अपनी बुद्धिका मलीन करना उचित नहीं है तुम्हारी बुद्धि ऐलवंशी राजा पुरूरवा से भी अधिक है १५।१७ तुम्हारी शक्तिसे सब राजा जीते जा सकते हैं और धर्म तुम्हारा ऐसा है कि ऋषिलोग भी वैसा धर्म नहीं करसकते हैं सो तुमको अपना मन उस जयमें जो इन्द्र और यमराजके अधीनहै और कोप करने के नियम में लगाना चाहिये १८ परमेश्वर करे तुम दान करने में कुबेर के समान और वशीकरण में वरुणके समान हो जल तुमको सौम्यता परोपकार और सबका उपजीवन होनेके गुण देवे १९ पृथ्वी क्षमा देवे सूर्यमंडलसे तुमको सब प्रकारका तेज मिले वायु तुमको पराक्रम देवे और पंचभूत तुमको सब प्रकार की संपत्ति देवें २० अब हम तुमको जानेकी आज्ञा देते हैं जाओ तुम्हारा कल्याण होगा परमेश्वर करे तुम आरोग्य रहो और तुम्हारे सब काम सिद्ध होवें इस धर्म संकट की विपत्ति को सहकर जब फिर लौट कर तुम आवोगे तब हम तुमको

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

देखेंगे २१। २३ वैशम्पायनजी बोले हे राजा जनमेजय! युधिष्ठिर उक्त बातों को सुनकर और तथास्तु कहकर भीष्म और द्रोणाचार्य को नमस्कार करके चलदिया २४॥

इति श्रीभाषामहाभारते सभापर्वणि अष्टसप्ततितमोऽध्यायः ७८॥

उन्नासीवां अध्याय।

द्रौपदी का कुंतीसे विदा मांगना कुन्तीका विलाप करना और विदुरजी का कुंतीको अपने घर लिवालेजाना और पांडवों का द्रौपदी सहित वनको जाना॥

वैशम्पायनजी बोले हे राजा जनमेजय युधिष्ठिरके चलने पर द्रौपदी कुंती आदि जो जो स्त्रियां वहांपर मौजूद थीं सबको नमस्कार करके सबसे जाने की आज्ञा मांगी उस समय पांडवों के महलों में रोनेका बड़ा भारी शब्द हुआ और कुंती द्रौपदीको जातेहुये देखकर शोकसे विह्वल होकर बड़े दुःख से कहने लगी १। ३ कि हे पुत्री! तुझे इस विपत्ति को देखकर शोच करना उचित नहीं है तू स्त्रीके धर्म को अच्छी तरह जानती है और सुशीला है ४ और तुझसे पतियोंकी सेवा आदि धर्म के कहनेकी भी मुझे कुछ आवश्यकता नहीं है क्योंकि तू आप पतिव्रता और दोनों कुलोंकी भूषणहै ५ ये कौरव बड़े भाग्यवान् हैं जो तेरे तेजसे जल नहीं मरे अच्छा अब तू निर्विघ्न होकर जा मेरे हृदयमें से तू कभी नहीं उतरेगी ६ जो स्त्रियां श्रेष्ठ होती हैं उनका चलन कैसी ही होनहार विपत्ति पड़ै नहीं बिगड़ताहै तू अपने धर्म पर चलनेवाली है इससे तेरा कल्याण बहुत जल्दी होगा ७ हे सहदेव! वन में तुम इस द्रौपदी की सदैव रक्षा करते रहियो इसको कोई दुःख न होने पावे ८ यह सुन कर द्रौपदी जो रजस्वला थी और जिसके शिरके बाल खुले हुये थे यह कहकर कि ऐसा ही होवे रोती हुई चल दी ९ उसके पीछे २ कुंती भी महादुःखी होकर चली और आगे जाकर उसने अपने पुत्रों को जिनके सब वस्त्र और गहने उतार लिये थे देखा १० कुंती ने उन सबको मृगछाला ओढ़ेहुये और लज्जासे नीचेको शिर झुकायेहुये देखकर सबको छाती से लगाया और महादुःखी होकर विलाप करती हुई कहने लगी ११। १२ कि तुमने सदैव दृढ़ भक्तिसे देवताओंकी पूजा की है और सत्य धर्म और मर्यादा के विपरीत कभी कोई काम नहीं किया है तुमको यह दुःख कैसे प्राप्त हुआ हाय यह विधाता की विपरीत गति है मैं नहीं जानतीहूं कि किसके शापसे तुमको यह दुःख मिला

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

है १३। १४ यह मेरेही भाग्य का दोष है मैंने तो तुम सबको उत्तम पुरुषों से उत्पन्न कियाहै तुम सब पराक्रमी बली सच्चे और तेजस्वी हो हाय तुम सब वनके कठिन २ स्थानों में विना धन के दुर्बल होकर कैसे रहोगे १५। १६ जो मुझे ऐसा मालूम होता कि तुमको वनवास होगा तो शतशृंग पर्वत परसे पांडुके मरनेपर यहां कभी न आती १७ तुम्हारा पिता जो तपस्वी और बड़ा बुद्धिमान् था धन्य था जिसने इन पुत्रोंकी पीड़ाको नहीं देखा और स्वर्ग में रहना अंगीकार किया १८ और माद्री भी जो इस धर्मको जाननेवाली ब्रह्मज्ञानी कल्याणी और परमगति थी धन्यहै जो पतिके संग मरकर चली गई मैं भी सब बातों में उसी की समान हूं परन्तु मैंने जीकर यह क्लेश पाया मुझको धिक्कार है १९। २० मैं तुम सब दुःखी महात्मा और प्यारे पुत्रोंको नहीं छोड़ूंगी मैं भी वनको चलूंगी हाय द्रौपदी मुझे क्यों छोड़े जाती है २१ क्या विधाताने मेरे शरीरका अन्त नहीं लिखाहै जो ऐसी विपत्ति में भी मेरे प्राण नहीं निकलते हैं २२ हे कृष्ण, द्वारकावासी! हे बलदेवजी के छोटेभाई! इस समय तुम कहां हो जो मेरी और इनकी इस दुःखसे रक्षा नहीं करते हो २३ यह बात विख्यातहै कि जो कोई तुमको आदि और सनातन जानकर तुम्हारा ध्यान करता है उसको तुम अपना दर्शन देकर उसके दुःखको दूर करते हो अब क्या कारणहै जो सहाय नहीं करते २४ हे द्वारकावासी! ये पांडव धर्मात्मा, महात्मा, यशस्वी और पराक्रमी हैं दुःख पाने के योग्य नहीं हैं इनपर अपनी दया कीजिये २५ हाय इन पांडवों पर यह आपत्ति भीष्म द्रोणाचार्य और कृपाचार्य के बैठे रहने पर जो नीतिके जाननेवाले और इस कुलके शिरोमणि हैं कैसे पड़ी २६ हाय हे महाराज पांडु अब तुम कहां हो इन अपने पुत्रों को जो जूएमें हारेहुये और वनवास करनेको आज्ञा दियेहुये हैं क्या शिक्षा करते हो २७ हे माद्रीके पुत्र, सहदेव! तू मत जाय लौटआ तू मुझको अपने शरीर से भी अधिक प्याराहै मुझे कुपुत्रकी तरह छोड़कर मत जा २८ तेरे ये सब भाई सत्यप्रतिज्ञ हैं इससे तू इनको ही जानेदे तू यहां रहकर मेरी रक्षा कर तुझे मेरी रक्षा करनेका यही फल प्राप्त होगा २९ वैशम्पायनजी बोले हे राजा जनमेजय! इसके पीछे पांडव उस विलाप करती हुई कुन्ती से आज्ञा लेकर उसे प्रणाम करके आनन्दरहित होकर वनको चल दिये ३० और विदुरजी महादुःखी होकर उस विलाप करतीहुई कुन्ती को अनेक प्रकारसे धैर्य देकर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

घरको लिवालेगये ३१ और धृतराष्ट्र के पुत्रोंकी स्त्रियां द्रौपदी के सभामें ले जाने और वस्त्र उतारने के हालको सुनकर कौरवोंकी निन्दा कर २ के रोने लगीं और अपने २ मुखोंपर हाथ रख रख कर चिन्ता करने लगीं ३२। ३३ और धृतराष्ट्रको भी अपने पुत्रों की अनीतिको याद कर कर के दुःख के कारणसे चैन नहीं पड़ा ३४ उस समय उसने शोच और चिन्ता से व्याकुल होकर विदुरजीको शीघ्र बुलाने की आज्ञा दी ३५ विदुरजी सुनते ही धृतराष्ट्र के पास गये तब वह महादुःखी होकर विदुरजी से कहनेलगा ३६ ॥

इति श्रीभाषामहाभारते सभापर्वणि नवसप्ततितमोऽध्यायः ७९ ॥

अस्सीवां अध्याय।

विदुरजीका धृतराष्ट्रके पूछनेपर पांडवोंके अनेक रूपों से जाने का वृत्तान्त कहना दुर्योधनका द्रोणाचार्यकी शरणमें जाना और द्रोणाचार्यका उनकी रक्षा करनेकी प्रतिज्ञा करना ॥

वैशम्पायनजी बोले हे राजा जनमेजय! धृतराष्ट्र विदुरजीको देखकर शोक युक्त होकर पूछनेलगा कि युधिष्ठिर भीमसेन अर्जुन नकुल सहदेव धौम्य पुरोहित और द्रौपदी किस प्रकारसे वनको जारहे हैं १। ३ विदुरजी बोले कि युधिष्ठिर अपने मुखको कपड़े से ढके हुये भीमसेन अपनी भुजाओं को देखता हुआ अर्जुन बालूको पृथ्वीपर फेंकता हुआ सहदेव मुखपर भस्म लगाता हुआ नकुल अपने शरीरमें धूल मलता हुआ द्रौपदी अपने शिरके खुले हुये बालोंसे मुखको ढके हुये और रोती हुई और धौम्य पुरोहित हाथमें कुशा लिये हुये साम वेद के उन मंत्रों को पढ़ता हुआ जिनके देवता यम और रुद्र हैं जारहे हैं युधिष्ठिर सबके आगे २ है और युधिष्ठिरके पीछे और सब हैं ४। ८ यह सुनकर धृतराष्ट्र बोला कि पाण्डव इस प्रकारसे नाना रूप बनाकर क्यों जा रहे हैं ९ विदुरजी बोले कि यद्यपि आपके पुत्रोंने युधिष्ठिरका धन और राज्य छल करके लेलिया है परन्तु युधिष्ठिर अपने धर्मको छोड़ना नहीं चाहता है इससे उसने तुम्हारे पुत्रों पर दया करके इस विचारसे कि जो मैं अपनी क्रोध भरी हुई आँखें खोल दूंगा तो सब मनुष्य भस्म होजायँगे अपने मुखको कपड़े से ढक लिया है १०। १२ और भीमसेन अपनी भुजाओं के बलसे गर्वित होकर इस विचार से भुजाओं को देखता जाता है कि मेरी समान किसीकी भुजाओंमें बल नहीं है मैं अपनी भुजाओं के अनुरूप शत्रुओं को मारने में कर्म करूंगा १३। १५

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

और अर्जुन क्रोधसे बालू इस कारण से बखेरता जाता है कि युद्ध में मैं इसी प्रकारसे बाणोंके समूह के समूह शत्रुओं पर छोड़ूंगा और सहदेवने मुख पर भस्म इस प्रयोजन से लगाई है कि मुझको इस समय कोई न पहिचान सके १६। १७ और नकुल का स्वरूप बहुत सुन्दर है सो उसने सब देह में धूल इस कारणसे लगा ली है कि राहमें मुझे देखकर कोई स्त्री मुझपर कामासक्त न होजावे १८ और द्रौपदी महादुःखी रोती हुई एक वस्त्र पहिरे हुये रजस्वलाकी अवस्था में रजसे गीले वस्त्रको लिये हुये यह कहती हुई जा रही है कि जिनके कारण से मुझको यह दुःख प्राप्त हुआ है उनकी स्त्रियां अब से चौदहवें वर्ष में रांड़ होकर अपने अपने पतियों को रजके लोहू से भरी हुई जलदान देकर हस्तिनापुरको जावेंगी १९। २१ और धौम्यऋषि कुशाओं को नैर्ऋत्यकोणकी ओर किये हुये यमसम्बन्धी सामवेदके मंत्रोंको गाता हुआ इस प्रयोजनसे जाता है कि कौरवोंके नाश होनेपर मैं इसी प्रकार से सामवेद पढ़ता हुआ पाण्डवों के आगे २ चलूंगा २२। २३ और सब पुरवासी बार २ यह कहते हैं हाय २ हमारा स्वामी इस प्रकारसे जाता है कुरुओं को धिक्कार है जिनकी बुद्धि वृद्ध होनेपर भी बालकोंकीसी है २४ और जो हम सबको अनाथ करके लोभके कारणसे पाण्डुके पुत्रोंको देशसे निकाले देते हैं २५ इन लोभी और क्रूर कौरवोंसे हम क्या प्रीति करें २६ सो हे राजा धृतराष्ट्र! वे पांडव उक्त रीति से अपने मनकी बातको रूप और चिह्नोंसे दर्शाते हुये वनकी ओर चले गये २७ हस्तिनापुरसे निकलते ही विना बादलके आकाशसे पानी की वर्षा हुई पृथ्वी में भूकम्प हुआ राहुने विना पर्वके सूर्यको ग्रस लिया और नगर के दहिनी ओर उल्कापात हुआ २८। २९ और देवताओंके मंदिर अँटारियां और यज्ञस्थानकी सीवोंके वृक्षोंपर मांस खानेवाले गृध्र और काक आदि पक्षी और गीदड़ बोलने लगे ३० सो हे धृतराष्ट्र! ये सम्पूर्ण उत्पात तुम्हारे खोटे मंत्रके कारण से भरतकुलके नाश होनेके निमित्त हुये हैं ३१ वैशम्पायनजी बोले हे राजा जनमेजय! जिससमय विदुरजी धृतराष्ट्रसे उक्त प्रकारसे कह रहे थे उसी समय उन कौरवों की सभामें नारदजी महर्षियोंको साथ लिये हुये आये और कहनेलगे ३२। ३३ कि आजसे चौदहवें वर्षमें दुर्योधनके अपराधके कारणसे भीमसेन और अर्जुनके बलसे सब कौरवोंका नाश होगा ३४ यह कहकर नारदजी ब्राह्मीसिद्धिको धारण किये हुये स्वर्गको चढ़कर अन्तर्द्धान होगये ३५

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वैशम्पायनजी बोले हे राजा जनमेजय ! इसके पीछे कर्ण दुर्योधन और शकुनि द्रोणाचार्य को आश्रय लेकर उनके पास गये और सब राज्य उनको देने लगे ३६ तब द्रोणाचार्य ने क्रोधसे दुर्योधन दुःशासन और कर्ण और सब भरतवंशियों से कहा कि ३७ इन देवपुत्र पाण्डवों को सब ब्राह्मण अवध्य कहते हैं अर्थात् वे मारे नहीं जासक्ते हैं परन्तु हम इन शरण आये हुये धृतराष्ट्रके पुत्रोंकी सब राजाओं सहित अपने बलके अनुसार रक्षा करेंगे इनको त्यागेंगे नहीं देखो होनहार बड़ा बलवान् है अब तो पाण्डव हारजाने के कारण से धर्म के अनुसार वनको चले गये हैं परन्तु तेरह वर्ष व्यतीत होनेपर जब लौटेंगे तब इस वैरका बदला अवश्य लेंगे ३८। ४० मैंने पहिले राजा द्रुपद को मित्रता की लड़ाई में भ्रंसित किया था सो उसने मेरे मारने के लिये पुत्र होने के निमित्त याज और उपयाज नामी ऋषियोंसे यज्ञ कराया था उस यज्ञमें अग्निकुंड से धृष्टद्युम्न पुत्र और द्रौपदी नाम कन्या प्रकट हुई ४१। ४२ सो वह धृष्टद्युम्न पांडवों का साला है और उनसे बड़ी प्रीति रखता है मुझको उससे बड़ा भय है ४३ क्योंकि वह ज्वालाके वर्णके सदृश देवताओं का दिया हुआ धनुष बाण और कवच सहित प्रकट हुआ है ४४ वह पांडवों के पक्षमें रहेहीगा और दूसरे अर्जुन सब रथी और महारथियों में श्रेष्ठ है इससे उसके साथ युद्ध होनेपर हमारे प्राणों का नाश होगा इससे बढ़कर और कौन सी दुःखकी बातहै सब लोकोंमें यह विख्यात है कि धृष्टद्युम्न द्रोणाचार्य के मारने को उत्पन्न किया गयाहै और द्रोणाचार्य की मृत्युहै ४५। ४७ हे दुर्योधन ! यह काल तेरे कारण से प्राप्त हुआ है यह तेरा सुख हिमऋतुमें ताड़ के पेड़की छायाके समान एक मुहूर्त मात्रकाहै अच्छा अब तुम यज्ञ करो दान दो और सुख भोगो ४८। ४९ चौदहवें वर्ष में तो तुम्हारा नाश होहीगा यह सुनकर धृतराष्ट्र बोला कि हे विदुर ! आचार्य ठीक कहते हैं तुम जल्दी से जाकर पांडवोंको लौटा लावो ५० जो वे न लौटें तो फिर इस प्रकार से न जाने पावें जैसे अब जारहे हैं यहां से सत्कार पाकर रथोंपर सवार होकर शस्त्र लियेहुये प्यादों के साथ जावें ५१ ॥

इति श्रीभाषामहाभारते सभापर्वणि अशीतितमोऽध्यायः ८० ॥

इक्यासीवां अध्याय।

पांडवों के वनको चलेजाने पर धृतराष्ट्र को बड़ी चिन्ता करना ॥

वैशम्पायनजी बोले हे राजा जनमेजय ! जब पांडव जुएमें हारकर वनको

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

चले गये तब धृतराष्ट्र बड़ी चिन्ता करनेलगा १ संजय उसको व्याकुलचित्त और चिन्तासे श्वास लेतेहुये बैठाहुआ देखकर कहनेलगा २ कि धन सहित पृथ्वी को पाकर और पाण्डवों को वनवास देकर अब किस बातका शोच कररहे हो ३ धृतराष्ट्र बोला कि जिन मनुष्योंका उन पांडवों से जो महारथी बलवान् और चतुरहैं वैर होजावे वे निधड़क क्योंकर बैठसक्ते हैं ४ संजय बोला कि यह वैर भी तो आपहीका किया हुआ है जिसके कारण से अब सब लोक का नाश होगा ५ देखो तुम्हारे निर्लज्ज और मंदबुद्धि पुत्र दुर्योधन ने भीष्म द्रोणाचार्य और विदुरजी के मना करने पर भी प्रातिकामी को भेजकर धर्म-चारिणी द्रौपदी को सभा में बुलवाया ६।७ सत्य है जिसको देवता पराभव देना चाहते हैं उस की बुद्धि पहिले ही से हर लेतेहैं ८ और जब नाश होने वाला होता है तब बुद्धि के पापरूप होजाने से अनीति ही नीति जानपड़ती है ९ और हित अनहित और अनहित हित दिखाई देताहै और वही उसको अच्छा जान पड़ताहै १० कुछ काल दण्डा लेकर किसी के शिरको नहीं फोड़ता है विपरीत बातोंको अनुकूल मानने ही से यह जाना जाता है कि यह काल के वशमें होरहाहै ११ यह रोगरूपी युद्ध सभामें द्रौपदी को लानेवालोंने खड़ा कियाहै १२ भला वह द्रौपदी इस योग्य थी जो विना योनि के अग्निकुंडमें से प्रकट हुई और सब धर्मों की जाननेवाली और स्वरूपवान् थी १३ सिवाय ज्वारियों के उसको सभामें बुलाने का कौन साहस करसक्ताहै इसके सिवाय जब वह द्रौपदी अपने रजस्वला धर्म में रुधिरसे भरी हुई एक वस्त्र पहिरे हुये अपने पतियों को जो धन राज्य और वस्त्रोंको हारजाने के कारण से दास होकर धर्म की फांसी में बँधे होने के कारण से पराक्रम नहीं करसक्ते थे देखरही थी १४।१६ उस समय दुर्योधन और कर्ण ने उस दुखिया से जो अनादर करने के योग्य न थी कड़ुये वचन कहे १७ यह सुनकर धृतराष्ट्र बोला कि हे संजय! तुम सत्य कहते हो वह द्रौपदी अपनी क्रोध भरी हुई आँखों से देखकर पृथ्वी को भी भस्म करसक्ती है और मेरे पुत्र भी मुझे उस भस्म के शेष से मालूम होते हैं १८ देखो जब सब भरतवंश की स्त्रियां गांधारी सहित उस धर्मिष्ठा युवान धर्मपत्नी और स्वरूपवान् द्रौपदी को सभा में आई हुई देखकर रो रही थीं और अपने २ पुत्रों के पास बैठ २ कर सोच कररही थीं और ब्राह्मणों ने उसके सभामें लानेको देखकर क्रोध किया था और सायंकाल

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

को अग्निहोत्र भी नहीं किया था तब प्रलयकी दुंदुभी बजने लगी वज्र के गिरने का सा शब्द हुआ दिनमें उल्का गिरे और पर्व न होनेपर भी राहुने सूर्यको ग्रसलिया इसी प्रकारसे रथशाला में अपने आप आग लग गई १९।२३ ध्वजा गिरपड़ी और दुर्योधनकी यज्ञशाला के पास सियार बड़े भयानक शब्द से बोलनेलगे २४ यह देखकर भीष्म द्रोणाचार्य वाह्लीक सोमदत्त और कृपाचार्य तो चलदिये और विदुरजी की प्रेरणा से मैंने कहा कि हे द्रौपदी ! तू मुझसे वर मांग मैं जो तेरी इच्छा होगी सो ही दूंगा तब द्रौपदीने मुझसे यह मांगा कि सब पाण्डव अदास करदिये जावें २५।२७ मैंने वह वरदान उसको देदिया और पाण्डवोंको धनुष और रथों सहित जानेकी आज्ञा दे दी इसके पीछे मुझसे विदुरजीने कहा २८ कि भरतवंशियों का अन्त यहीं तक है ये द्रौपदी राजा पांचालकी बेटी स्वर्गकी लक्ष्मी है इसके समान दूसरी उत्तम स्त्री नहीं है पाण्डवोंने इसको दैवकी इच्छासे पायाहै सो इसको सभा में लाने के क्लेश को पाण्डव कभी नहीं सह सकेंगे २९।३० और न राजा द्रुपद जो महारथी हैं और वृष्णिवंशी लोग इस द्रौपदी के दुःखको जिसकी रक्षा कृष्ण करते हैं सहेंगे ३१ जिस समय अर्जुन पांचाल देशकी सेना लेकर आवेगा और भीमसेन उस सेनामें अपनी गदाको घुमाता हुआ युद्ध के लिये खड़ा होगा उस समय कोई राजा अर्जुन के गांडीवधनुष के शब्दको सुनकर भीमसेनकी गदाके वेगको न सह सकेगा इससे मैं पांडवों के साथ विग्रह करना अच्छा नहीं जानता हूं मेरी समझसे आप पाण्डवों से संधि कर लीजिये ३२।३४ मैं पाण्डवों को कौरवों से सदैव अधिक बलवान् जानताहूं देखो राजा जरासंध जो बड़ा तेजस्वी और बलवान् था भीमसेनके हाथों से मारागया इससे पांडवों से आपकी संधि ही रहे तो ही अच्छा है ३५।३६ आप दोनों ओरके बलाबलको विचार कर शंका छोड़कर जैसा उचित जानिये वैसा कीजिये ऐसा करने से तुम्हारा कल्याण होगा ३७ सो हे संजय! विदुरजीने उक्त प्रकार से कह २ कर मुझको बहुत समझाया परन्तु मैंने अपने हित करने के लिये उनकी सलाहको अंगीकार नहीं किया ३८ ॥

इति श्रीभाषामहाभारते सभापर्वणि एकाशीतितमोऽध्यायः ८१ ॥

इति सभापर्व समाप्तम् ॥

मुमुक्षु भवन वेद वेदाङ्ग पुस्तकालय
आगत क्र. 0260
दिनांक 26/5

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

श्री मुमुक्षु भवन वेद वेदान्त विद्यालय
ल० सं०.....
वि०सं०.....
अस्सी, वाराणसी।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

विक्रयार्थ पुस्तकों का सूचीपत्र

नाम किताब	क़ीमत
महाभारत भाषा कामिल	२५)
आदिपर्वकुञ्जविहारीलालकृत	३)
वनपर्वकुञ्जविहारीलालकृत	३।)
विराटपर्वकुञ्जविहारीलालकृत	।।।)
उद्योगपर्व पं० महेशदत्तकृत	२।)
भीष्मपर्व पं० कालीचरणकृत	१।।।)
द्रोणपर्व पं० कालीचरणकृत	२।।।)
कर्णपर्व पं० कालीचरणकृत	१।।)
शल्य व गदापर्व पं० कालीचरणकृत	१।)
सौप्तिकपर्व, स्त्रीपर्व पं० कालीचरणकृत	।।=)
अनुशासनपर्व पं० कालीचरणकृत	२।)
शान्तिपर्व मय राजधर्म, आपद्धर्म, मोक्षधर्म पं० कालीचरणकृत	४।)
अश्वमेधपर्व पं० कालीचरणकृत	१।)
आश्रमवासिक, मुशल, महाप्रस्थान, स्वर्गारोहणपं० कालीचरणकृत	।।।)
महाभारतकाशीनरेश दोहा, चौपाई आदि छन्दों में १८ पर्व मय हरिवंशपर्व चार जिल्दों में	१२)
महाभारत सबलसिंह चौहान	२।।)
ग्रन्थ गुरुनानकशाह मुजल्लद कपड़ा बलायती	६।।)

नाम किताब	क़ीमत
योगवाशिष्ठ मुजल्लद	८)
उपनिषद् सटीक पं० यमुनाशंकर	
ईशावास्योपनिषद्	=)
केनोपनिषद्	=)।।
कठवल्लीउपनिषद्	।=)
प्रश्नोपनिषद्	।=)
मुंडकउपनिषद्	।=)
मांडूक्योपनिषद्	।)
तैत्तिरीयोपनिषद्	।।)
ऐतरेयोपनिषद्	।)
छान्दोग्योपनिषद् कामिल	१।।)
उपनिषत्सार	=)।।
उपनिषद् सटीक बाबू ज्वालासिंह	
ईशावास्योपनिषद्	=)
केनोपनिषद्	=)।।
कठवल्लीउपनिषद्	।।=)
प्रश्नोपनिषद्	।।)
मुंडकउपनिषद्	।।)
मांडूक्योपनिषद्	=)
तैत्तिरीयोपनिषद्	।।=)
ऐतरेयोपनिषद्	।)।।
छान्दोग्योपनिषद्	१।)
बृहदारण्यकोपनिषद्	१)

मिलने का पता:—

मुंशी विष्णुनारायण भार्गव,

मालिक नवलकिशोर प्रेस—लखनऊ.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

श्री मदन वेद वेदांग विद्यालय
ग्रन्थालय
आगत क्रमांक ... 90
क्रमांक ...

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri